पवित्र बाइबल

नया नियम

पवित्र बइबल

नया नियम

The Holy Bible, New Testament
A New Hindi Translation

NHBC 1-1982-2

INDIA BIBLE PUBLISHERS

510/44 New Hyderabad
Lucknow, U.P. 226 007

70 Janpath,
New Delhi 110 001

Computerized phototypesetting in Devanagari 0-43395 on the Addressograph Multigraph Varityper Compset 3560. Typeset and printed by Ambassador Press, New Delhi, India.

CA

प्रस्तावना

बाइबल का एक और नया अनुवाद क्यों?

बाइबल का प्रथम अनुवाद एक विदेशी मिशनरी श्री विलियम कैरी ने सन् 1805 ई० में किया था। यह समय हिन्दी साहित्य के विकास का था और बाइबल के इस हिन्दी अनुवाद ने हिन्दी साहित्य के विकास में भी बड़ा योगदान दिया जो सर्व-विदित है। कालान्तर में बाइबल सोसाइटी ने इस प्राचीन अनुवाद के कई संशोधन किये और परिमार्जित स्वरूप में बाइबल को हम तक पहुँचाया। भारतीय कलीसिया बाइबल सोसाइटी द्वारा प्रकाशित बाइबल का पठन-पाठन कर के आत्मिक लाभ प्राप्त करती रही। हम परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं कि इस अनुवाद के द्वारा असंख्य आत्माओं को उद्धार का आनन्द प्राप्त हुआ। बड़ी संख्या में बाइबल का वितरण भी किया गया।

इतना सब कुछ होने पर भी रोमन कैथोलिक कलीसिया के फ़ादर वाल्द तथा फ़ादर साह ने बाइबल का एक नया अनुवाद करने की आवश्यकता अनुभव की। फ़ादर बुल्के ने भी नए नियम का एक व्याख्यात्मक नया अनुवाद किया। बाइबल सोसाइटी ने भी एक नया अनुवाद, अर्थात् 'नयी हिन्दी बाइबिल' को हाल ही में प्रकाशित किया। लिविंग बाइबल इण्डिया द्वारा एक अन्य नए नियम का व्याख्यात्मक (पैराफ्रेज़्ड) अनुवाद प्रकाशित किया गया। जनता तक बाइबल को सरल, स्पष्ट तथा आधुनिक भाषा में पहुंचाने के अभिप्राय से अन्य संस्थाएं भी बाइबल का हिन्दी अनुवाद करने में लगी रही हैं।

एक नया कदम

सन् 1974 में प्रथम बार विभिन्न कलीसियाओं के अगुवे नई दिल्ली में एकत्रित हुए। उनके विचार-विमर्श का विषय था, बाइबल का सरल, सटीक, श्रेष्ठ और आधुनिक 'हिन्दी अनुवाद'। नए-नए अनुवादों के उपलब्ध होते हुए भी बाइबल का गहन

अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को एक ऐसे अनुवाद की आवश्यकता अनुभव हुई जो मूल-भाषा यूनानी और इब्रानी के निकट हो। इसके अतिरिक्त सुसमाचार-प्रचार के लिए विभिन्न संस्थाओं को बड़ी संख्या में बाइबल उपलब्ध कराना लगातार एक समस्या बनी हुई थी। आशा व्यक्त की गई कि नए अनुवाद कार्य के उठाए जाने वाले इस कदम के द्वारा इस समस्या का किसी सीमा तक समाधान हो सकेगा। इसके साथ ही साथ निम्न अनेक कारणों से हिन्दी में इस नए अनुवाद के लिए कदम उठाने की आवश्यकता अनुभव की गई। इसी के परिणामस्वरूप 'पवित्र बाइबल' के नया नियम का यह नया अनुवाद आप के समक्ष प्रस्तुत है, और पुराना नियम का अनुवाद कार्य प्रगति पर है।

इस अनुवाद की विशेषताएं

(अ) सरलता

1. अनुवाद ऐसी सरल भाषा में किया गया है कि सातवीं कक्षा का छात्र भी इसे आसानी से समझ सकता है।
2. आराधना के समय बाइबल का पठन करने पर भाषा के सहज और स्वाभाविक होने के कारण सभी आराधक सरलता से इसे समझ सकते हैं।
3. भाषा को क्लिष्टता से बचाने के लिए कठिन और जटिल शब्दों का प्रयोग नहीं किया गया है। बल्कि इस बात का ध्यान रखा गया है कि वाक्य लम्बे तथा अस्पष्ट न हों।
4. मौलिकता की रक्षा करने के लिए कहीं-कहीं भाषा के प्रवाह और उसके सौंदर्य की भी उपेक्षा की गई है।
5. वाक्य-रचना में सरल शब्दों का प्रयोग किया गया है। शब्द-चयन में अधिकतर पुराने और अप्रचलित शब्दों की उपेक्षा की गई है। भाषा ओजपूर्ण है — इस में प्रवाह लाने का भरसक प्रयत्न किया गया है, तथा आधुनिक विराम-चिन्हों का प्रयोग किया गया है।
6. उन पदों को जिन्हें सण्डे-स्कूल छात्र, शिक्षक, प्रचारक, पास्टर्स् तथा बाइबल के विद्यार्थी साधारणतः कंठस्थ करते हैं, उन्हें जहां तक संभव हुआ पुराने अनुवाद के अति निकट रखा गया है।

(ब) सटीकता

यूनानी भाषा का 'नेसलीज़ तेइसवां संस्करण' हमारे इस नए अनुवाद का मूल आधार है। 'न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल' से भी, जो मूल-भाषा के अति निकट तथा विश्वसनीय अंग्रेज़ी अनुवाद है, भरपूर सहायता ली गई है। इसके अतिरिक्त पुरानी हिन्दी बाइबल और विभिन्न प्रकार की टीकाओं से भी सहायता ली गई है।

1. यूनानी भाषा में उपलब्ध उत्कृष्ट मूल-ग्रंथों से इसकी तुलना की गई है। इस कार्य को करने के लिए एक यूनानी विशेषज्ञ की भी विशेष रूप से सहायता ली गई है जिससे कि शब्दों का मूल-अर्थ अनुवाद में प्रकट हो।
2. अनुवाद करते समय सर्वोत्तम टीकाकारों की टीका-टिप्पणियों पर भी ध्यान दिया गया है।
3. अंग्रेज़ी में उपलब्ध विभिन्न बाइबल-अनुवादों की भी सहायता ली गई है।
4. हिन्दी बाइबल के उपलब्ध अनुवादों की भी अवहेलना नहीं की गई है। बाइबल के पुराने और प्रचलित अनुवाद को विशेष रूप से ध्यान में रखा गया है। इसलिए पुरानी बाइबल में जहां विभेद प्रकट होता है, वहां संकेत-चिन्हों की सहायता से पृष्ठ के नीचे टिप्पणी दे दी गई है।

(स) प्रमाणिकता

1. प्रार्थना के साथ और पवित्र आत्मा की सहायता से अनुवाद करने में पूर्ण सतर्कता बरती गई है। पवित्रशास्त्र अर्थात् परमेश्वर का वचन, प्रभु यीशु मसीह को जो स्थान देता है, वहीं स्थान इस अनुवाद में भी उसे दिया गया है।
2. यह अनुवाद अनावश्यक और स्वच्छन्द रूप से व्याख्यात्मक नहीं है। अर्थ को प्रकट करने के लिए अनुवाद को मूल-भाषा के निकट रखने का हर सम्भव प्रयत्न किया गया है।
3. अनुवाद करते समय स्पष्टता पर भी ध्यान दिया गया है कि परमेश्वर के सत्य का प्रकाशन पाठक पर पूरी रीति से प्रकट हो।

4. प्रचलित पुराने अनुवाद की हिन्दी बाइबल में पदों की संख्या में जहां अव्यवस्था है वहां उन्हें इस नए अनुवाद में क्रमबद्ध कर व्यवस्थित कर दिया गया है। इससे अब बाइबल का गहन अध्ययन करने वाले छात्रों को अत्यधिक सुविधा होगी।
5. अनुवाद करते समय कलीसिया के पासबानों, शिक्षकों, अगुवों, बाइबल-विद्यार्थियों तथा सण्डे-स्कूल शिक्षकों को विशेष रूप से ध्यान में रखा गया है।

(द) संस्थागत विश्वसनीय अनुवाद

1. यह अनुवाद उत्तम और विश्वसनीय है क्योंकि यह किसी एक व्यक्ति द्वारा नहीं, परन्तु समूहों और समितियों द्वारा किया गया है। अनुवाद की प्रक्रिया में, चाहे कोई अनुवाद समूहों द्वारा अथवा किसी व्यक्ति द्वारा भी किया गया हो, जब तक केन्द्रीय जांच समिति ने उसका सूक्ष्म परीक्षण, विश्लेषण और संशोधन नहीं कर लिया, वह स्वीकार नहीं किया गया। अन्त में इस अनुवाद को सम्पादकीय-मण्डल की पैनी दृष्टि से गुज़रना पड़ा। यूनानी-इब्रानी विशेषज्ञ की सहायता से एक बार फिर उस अनुवाद की जांच-पड़ताल और काट-छांट की गई। इस प्रकार इस अनुवाद में किसी व्यक्ति-विशेष के व्यक्तित्व का प्रभाव न पड़ सका, और इसका अन्तिम स्वरूप संशोधित और परिमार्जित होकर पूर्णत: संस्थागत अनुवाद बनकर उभर आया।

2. समिति गठन : इस बात का विशेष ध्यान रखा गया कि बाइबल अनुवाद के लिए ऐसे व्यक्तियों का समिति में चयन किया जाए जो नया-जन्म-प्राप्त, बाइबल-सिद्धान्तों के विद्वान्, थियोलोजियन्स्, पास्टर्स्, प्रचारक, भाषाविद् तथा अनुवाद कार्य में कुशल और अनुभवी व्यक्ति हों। ये लोग किसी एक विशेष कलीसिया से सम्बद्ध नहीं, परन्तु विभिन्न कलीसियाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

(ई) छपाई

बाइबल' की छपाई के लिए 'कम्प्यूटर फोटो सैटर' का प्रयोग किया गया है। प्रथम बार हिन्दी बाइबल के छापने के लिए इसका प्रयोग किया गया है।

2. बाइबल के अध्याय एवं पृष्ठ इस प्रकार व्यवस्थित किए गए हैं कि बाइबल में उनको खोज लेने में सुविधा होगी।
3. अध्याय एवं पदों की संख्या के लिए अंग्रेज़ी अंकों का प्रयोग किया गया है।
4. प्रत्येक अध्याय का शीर्षक तथा उप-शीर्षक दिया गया है जिससे पाठक को किसी विशेष वर्णन या घटना-क्रम को खोजने में सहायता मिलेगी।
5. शब्दों के मूल-अर्थों को प्रकट करने के लिए संकेत-चिन्हों के साथ पृष्ठ के नीचे टिप्पिणियां दी गई हैं।
6. छपाई के लिए 'बाइबल पेपर' का प्रयोग किया गया है जो पतला होने पर भी मज़बूत और छपाई के लिए उपयुक्त होता है।
7. नए नियम की प्रतियां आकर्षक और सुदृढ़ विभिन्न ज़िल्दों में उपलब्ध हैं।
8. छपाई को आकर्षक, स्पष्ट और आसानी से पढ़े जाने योग्य बनाया गया है।

निष्कर्ष

'इण्डिया बाइबल पब्लिशर्स्' के सम्पादक-मण्डल ने नए नियम के अनुवाद को पवित्र आत्मा की प्रेरणा और सहायता से लगभग चार वर्षों की अवधि में पूर्ण किया है। अनुवाद समितियों तथा सम्पादक-मण्डल के सदस्यों की प्रभु से प्रार्थना है कि उनके इस प्रयास के द्वारा न केवल भारतीय कलीसिया परमेश्वर के सन्देश को और भी अधिक स्पष्टता से समझ सके, परन्तु यह भी कि असंख्य आत्माएं जो शान्ति की भूखी-प्यासी हैं इसके पठन-पाठन तथा अध्ययन से प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण कर सच्चा आनन्द प्राप्त करें।

सूचीपत्र
नया नियम

पुस्तकों के नाम | पृष्ठ संख्या

मत्ती रचित सुसमाचार	1
मरकुस रचित सुसमाचार	50
लूका रचित सुसमाचार	81
यूहन्ना रचित सुसमाचार	136
प्रेरितों के काम	176
रोमियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री	228
कुरिन्थियों के नाम पौलुस प्रेरित की पहिली पत्री	250
कुरिन्थियों के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री	271
गलातियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री	285
इफिसियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री	293
फिलिप्पियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री	300
कुलुस्सियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री	305
थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस प्रेरित्त की पहिली पत्री	310
थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री	315
तीमुथियुस के नाम पौलुस प्रेरित की पहिली पत्री	318
तीमुथियुस के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री	324
तीतुस के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री	328
फिलेमोन के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री	331
इब्रानियों के नाम पत्री	332
याकूब की पत्री	348
पतरस की पहिली पत्री	354
पतरस की दूसरी पत्री	360
यूहन्ना की पहिली पत्री	364
यूहन्ना की दूसरी पत्री	369
यूहन्ना की तीसरी पत्री	371
यहूदा की पत्री	372
यूहन्ना का प्रकाशितवाक्य	374

मत्ती
रचित सुसमाचार

यीशु की वंशावली

1 इब्राहीम के वंशज दाऊद की सन्तान यीशु *मसीह की वंशावली की पुस्तक।

[2]इब्राहीम से इसहाक उत्पन्न हुआ, इसहाक से याकूब, और याकूब से यहूदा और उसके भाई उत्पन्न हुए, [3]तथा यहूदा और तामार से फिरिस व जोरह उत्पन्न हुए, फिरिस से हिस्रोन और हिस्रोन से एराम, [4]तथा एराम से अम्मीनादाब उत्पन्न हुआ, अम्मीनादाव से नहशोन और नहशोन से सलमोन उत्पन्न हुआ, [5]सलमोन और राहब से बोअज उत्पन्न हुआ, बोअज और रूथ से ओबेद उत्पन्न हुआ और ओबेद से यिशै, [6]और यिशै से दाऊद राजा उत्पन्न हुआ।

दाऊद से सुलैमान उस स्त्री से उत्पन्न हुआ जो पहिले उरिय्याह की पत्नी थी, [7]सुलैमान से रहबाम उत्पन्न हुआ, और रहबाम से अबिय्याह तथा अबिय्याह से आसा, [8]आसा से यहोशाफात उत्पन्न हुआ, और यहोशाफात से योराम तथा योराम से उज्जियाह, [9]उज्जियाह से योताम उत्पन्न हुआ, और योताम से आहाज तथा आहाज से हिजकिय्याह, [10]हिजकिय्याह से मनश्शिह उत्पन्न हुआ, और मनश्शिह से आमोन तथा आमोन से योशिय्याह; [11]और बाबुल को निर्वासित होते समय योशिय्याह से यकुन्याह और उसके भाई उत्पन्न हुए।

[12]बाबुल को निर्वासित होने के पश्चात् यकुन्याह से शालतिएल उत्पन्न हुआ, और शालतिएल से जरुब्बाबिल, और [13]जरुब्बाबिल से अबीहूद उत्पन्न हुआ, अबीहूद से इल्याकीम तथा इल्याकीम से अजोर, [14]अजोर से सदोक उत्पन्न हुआ, और सदोक से अखीम तथा अखीम से इलीहूद, [15]इलीहूद से इलियाजार उत्पन्न हुआ, और इलियाजार से मत्तान तथा मत्तान से याकूब, [16]याकूब से यूसुफ उत्पन्न हुआ जो मरियम का पति था, और मरियम से यीशु उत्पन्न हुआ जो मसीह कहलाता है।

[17]इस प्रकार इब्राहीम से दाऊद तक सब चौदह पीढ़ी हुई, और दाऊद से बाबुल के निर्वासन तक चौदह पीढ़ी तथा बाबुल निर्वासन से मसीह तक चौदह पीढ़ी हुई।

---

1 *अक्षरशः, ख्रिस्तौस अर्थात् अभिषिक्त

यीशु का जन्म

[18]अब मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ कि जब उसकी माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हुई, तो उनके समागम से पूर्व ही वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई। [19]उसके पति यूसुफ ने धर्मी होने के कारण उसे बदनाम न करने की इच्छा से चुपचाप उसे त्याग देने का विचार किया। [20]पर जब वह यह सब सोच रहा था तो प्रभु का एक स्वर्गदूत उसे स्वप्न में यह कहता दिखाई पड़ा, "हे यूसुफ, दाऊद के पुत्र, तू मरियम को अपनी पत्नी बनाने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है वह पवित्र आत्मा की ओर से है। [21]वह पुत्र को जन्म देगी, और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।" [22]अब यह सब इसलिए हुआ कि प्रभु ने जो वचन नबी के द्वारा कहा था, वह पूरा हो: [23]"**देखो, एक कुंवारी गर्भवती होगी, वह एक पुत्र को जन्म देगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा,**" जिसका अर्थ है, 'परमेश्वर हमारे साथ।' [24]तब यूसुफ नींद से जाग उठा और परमेश्वर के स्वर्गदूत के आज्ञानुसार *उसे ब्याह कर ले आया, [25]और मरियम के पास तब तक नहीं गया जब तक वह पुत्र न जनी, और यूसुफ ने उसका नाम यीशु रखा।

ज्योतिषियों का आगमन

2 राजा हेरोदेस के दिनों में जब यहूदिया के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ, तो देखो, पूर्व दिशा से ज्योतिषी यरूशलेम में पहुंचकर पूछने लगे, [2]"यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ, कहां है? क्योंकि हमने पूर्व में उसका तारा देखा है, और उसको दण्डवत् करने आए हैं।" [3]जब राजा हेरोदेस ने यह सुना तो वह और उसके साथ सारा यरूशलेम घबरा गया। [4]तब उसने लोगों के सब मुख्य याजकों और शास्त्रियों को एकत्रित करके उनसे पूछा कि मसीह का जन्म कहां होना चाहिए। [5]उन्होंने उस से कहा, "यहूदिया के बैतलहम में, क्योंकि नबी के द्वारा ऐसा लिखा गया है:

[6]'**हे बैतलहम, तू जो यहूदा के प्रदेश में है, तू यहूदा के अधिकारियों में किसी से भी छोटा नहीं, क्योंकि तुझ में से एक शासक निकलेगा, जो मेरी प्रजा इस्राएल का रखवाला होगा**'।"

[7]तब हेरोदेस ने ज्योतिषियों को चुपचाप बुलाकर उनसे इस बात का निश्चय किया कि तारा ठीक किस समय दिखाई दिया था [8]और यह कहकर उन्हें बैतलहम भेजा, "जाओ, उस बालक का सावधानी से पता लगाओ, और जब वह तुम्हें मिल जाए तो मुझे समाचार दो कि मैं भी जाकर उसे दण्डवत् करूं।" [9]राजा की बात सुनकर वे चल पड़े, और देखो, जिस तारे को उन्होंने पूर्व में देखा था, वह उनके आगे आगे तब तक चलता रहा जब तक कि वहां पहुंचकर उस स्थान के ऊपर ठहर न गया जहां बालक था। [10]वे उस तारे को देख कर अति आनन्दित हुए। [11]उन्होंने घर में पहुंचकर उस बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा, और भूमि पर गिर कर उसको दण्डवत् किया, और अपना अपना संदूक खोल कर उसे सोना, लोबान और गन्धरस की भेंट चढ़ाई। [12]तब स्वप्न में परमेश्वर से यह

*या, अपनी पत्नी को अपने यहां ले आया

चेतावनी पाकर कि हेरोदेस के पास न लौटना, वे दूसरे मार्ग से अपने देश को चले गए।

मिस्र में आश्रय पाना

13जब वे चले गए तो देखो, प्रभु के दूत ने स्वप्न में यूसुफ को दिखाई देकर कहा, "उठ और बालक तथा उसकी माता को लेकर मिस्र को भाग जा, और जब तक मैं न कहूं वहीं रहना; क्योंकि हेरोदेस इस बालक को खोजने पर है कि उसे मरवा डाले।" 14वह रात ही को उठकर बालक और उसकी माता को लेकर मिस्र को चला गया 15और हेरोदेस की मृत्यु तक वहीं रहा, कि जो वचन प्रभु ने नबी द्वारा कहा था पूरा हो: **"मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया।"**

16जब हेरोदेस ने देखा कि ज्योतिषियों ने मेरे साथ चाल चली है तो वह आग-बबूला हो गया। उसने आज्ञा देकर ज्योतिषियों से निश्चित किए हुए समय के अनुसार बैतलहम तथा उसके आस पास के स्थानों के सब लड़कों को जो दो वर्ष या इस से कम के थे, मरवा डाला। 17तब जो वचन यिर्मयाह नबी के द्वारा कहा गया था पूरा हुआ :

18**"रामाह में एक चीत्कार, रोना और बड़ा विलाप, राहेल अपने बालकों के लिए रोते रोते सांत्वना नहीं चाहती, क्योंकि अब वे न रहे।"**

19जब हेरोदेस की मृत्यु हो गई, तो देखो, मिस्र में प्रभु के दूत ने यूसुफ को स्वप्न में दिखाई देकर कहा, 20"उठ और बालक तथा उसकी माता को लेकर इस्राएल के देश में चला जा, क्योंकि वे जो उसका प्राण लेना चाहते थे, मर चुके हैं।" 21वह उठा और बालक तथा उसकी माता को साथ लेकर इस्राएल के देश में आया, 22परन्तु यह सुनकर कि अरखिलाउस अपने पिता हेरोदेस के स्थान पर यहूदिया में राज्य कर रहा है, वहां जाने से डरा। फिर स्वप्न में परमेश्वर से चेतावनी पाकर वह गलील के प्रदेश में चला गया 23और नासरत नामक एक नगर में जाकर रहने लगा, जिससे कि नबियों के द्वारा कहा गया वचन पूरा हो, **"वह नासरी कहलाएगा।"**

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला

3 उन दिनों यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला यहूदिया के जंगल में आया। वह यह कहकर प्रचार किया करता था: 2"मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।" 3यह वही है जिसका वर्णन यशायाह नबी ने यह कहते हुए किया है, **"जंगल में एक पुकारने वाले की आवाज़, 'प्रभु का मार्ग तैयार करो, उसके पथ सीधे बनाओ'!"** 4यूहन्ना स्वयं तो ऊंट के रोम का वस्त्र पहिने और कमर में चमड़े का कटिबंध बांधे हुए था तथा टिड्डियां व वनमधु उसका आहार था। 5तब उसके पास यरूशलेम, समस्त यहूदिया और यरदन के आस पास स्थित सारे प्रदेश के लोग निकल आए। 6जैसे जैसे उन्होंने अपने पापों का अंगीकार किया, उसने उन्हें यरदन नदी में बपतिस्मा दिया।

7परन्तु जब उसने बहुत से फरीसियों और सदूकियों को बपतिस्मा लेने के लिए आते देखा तो उनसे कहा, "हे सांप के बच्चो, तुम्हें किसने सचेत कर दिया कि आने वाले प्रकोप से भागो? 8इसलिए अपने पश्चात्ताप के योग्य फल भी ला 9और अपने मन में यह न सोचो, '

पिता इब्राहीम है,' क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि परमेश्वर इन पत्थरों से भी इब्राहीम के लिए संतान उत्पन्न कर सकता है। [10]कुल्हाड़ा अब भी पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है, और प्रत्येक पेड़ जो अच्छा फल नहीं लाता, काटा और आग में झोंका जाता है। [11]मैं तो तुम्हें पानी *से मन-फिराव के लिए बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे पश्चात् आ रहा है—वह मुझ से इतना अधिक सामर्थी है कि मैं उसकी चप्पल भी उठाने के योग्य नहीं हूं—वह स्वयं तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। [12]उसका सूप उसके हाथ में है। वह अपना खलिहान पूर्णतः साफ करेगा, और अपना गेहूं भण्डार में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं।"

यीशु का बपतिस्मा

[13]तब यीशु गलील से यरदन के किनारे यूहन्ना के पास आया कि उस से बपतिस्मा ले। [14]परन्तु यूहन्ना यह कह कर उसे रोकने लगा, "मुझे तो तुझ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और क्या तू मेरे पास आया है?" [15]परन्तु यीशु ने उत्तर दिया, " इस समय ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमारे लिए उचित है कि इसी प्रकार सारी धार्मिकता को पूर्ण करें।" तब उसने उसकी बात मान ली। [16]बपतिस्मा लेने के पश्चात् यीशु तुरन्त पानी से बाहर आया, और देखो, आकाश खुल गया, और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की भांति उतरते और अपने ऊपर आते देखा। [17]और देखो, यह आकाशवाणी हुई: "यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं अति प्रसन्न हूं।"

यीशु की परीक्षा

4 तब आत्मा यीशु को जंगल में ले गया कि *शैतान द्वारा उसकी परीक्षा हो। [2]जब वह चालीस दिन और चालीस रात उपवास कर चुका तब उसे भूख लगी। [3]और परखने वाले ने निकट आकर उस से कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो आज्ञा दे कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं।" [4]पर उसने उत्तर दिया, "यह लिखा है, '**मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा**'।" [5]तब शैतान उसे पवित्र नगर में ले गया और मन्दिर के शिखर पर खड़ा करके, [6]उसने उस से कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो अपने आप को नीचे गिरा दे; क्योंकि लिखा है, '**वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आदेश देगा, और वे तुझे हाथों-हाथ उठा लेंगे, कहीं ऐसा न हो कि तेरे पैरों में पत्थर से ठेस लगे**'।" [7]यीशु ने उस से कहा, "यह भी लिखा है: '**तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर**'।" [8]फिर शैतान उसे एक बहुत ऊंचे पर्वत पर ले गया, और संसार के सारे राज्य और वैभव को दिखाकर [9]उसने कहा, "यदि तू गिरकर मुझे दण्डवत् करे तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा।" [10]तब यीशु ने उस से कहा, "हे शैतान, दूर हट, क्योंकि लिखा है, '**तू प्रभु अपने परमेश्वर को दण्डवत् कर — और केवल उसी की सेवा कर**'।" [11]तब शैतान उसे छोड़ कर चला गया, और देखो, स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा-टहल करने लगे।

---

11 *इसका अनुवाद में, साथ या द्वारा भी हो सकता है

1 *अक्षरशः, वह निन्दक

यीशु के उपदेश का आरम्भ

12और जब उसने सुना कि यूहन्ना बंदी बना लिया गया है, तो वह गलील को चला गया। 13और वह नासरत को छोड़ कर कफरनहूम में, जो झील के किनारे जबूलून और नप्ताली के क्षेत्र में है, रहने लगा 14जिस से कि वह बात जो यशायाह नबी द्वारा कही गई थी पूरी हो:

15"**जबूलून और नप्ताली के देश, झील के मार्ग से यरदन के पार, गैर-यहूदियों का गलील — 16जो *लोग अन्धकार में बैठे थे उन्होंने बड़ी ज्योति देखी। जो मृत्यु के देश और छाया में बैठे थे, उन पर एक ज्योति चमकी।**"

17उस समय से यीशु ने यह प्रचार करना और कहना आरम्भ किया: "मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।"

प्रथम चेलों का बुलाया जाना

18गलील की झील के किनारे चलते हुए उसने दो भाइयों को अर्थात् शमौन जो पतरस कहलाता था तथा उसके भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा; वे तो मछुए थे। 19उसने उनसे कहा, "मेरे पीछे चलो। मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुए बनाऊंगा।" 20वे तुरन्त जालों को छोड़कर उसके पीछे चल पड़े। 21वहां से आगे बढ़कर उसने अन्य दो भाइयों, अर्थात् जब्दी के पुत्र याकूब और उसके भाई यूहन्ना को देखा जो अपने पिता जब्दी के साथ नाव पर जालों को सुधार रहे थे, और उसने उन्हें बुलाया। 22वे तुरन्त अपनी नाव और पिता को छोड़कर उसके पीछे चल पड़े।

यीशु का रोगी को चंगा करना

23यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनके आराधनालयों में उपदेश करता, राज्य का सुसमाचार प्रचार करता और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और हर प्रकार की दुर्बलता को दूर करता फिरा। 24और उसकी चर्चा सम्पूर्ण सूरिया में फैल गई और लोग सब बीमारों को जो विभिन्न प्रकार की बीमारियों तथा दुखों से ग्रसित थे, और जिनमें दुष्टात्माएं थीं, मिर्गी वालों को, लकवे के मारे हुओं को—सब को उसके पास लाए, और उसने उन्हें चंगा किया। 25और गलील और दिकापुलिस और यरूशलेम और यहूदिया और यरदन नदी के पार से भीड़ की भीड़ उसके पीछे चल पड़ी।

पहाड़ी उपदेश—धन्य वचन

5 इस भीड़ को देख कर वह पर्वत पर चढ़ गया, और जब बैठ गया तो उसके चेले उसके पास आए। 2तब वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा: 3"धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। 4धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि वे सान्त्वना पाएंगे। 5धन्य हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के उत्तराधिकारी होंगे। 6धन्य हैं वे जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे। 7धन्य हैं वे जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी। 8धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। 9धन्य हैं वे जो मेल कराने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे। 10धन्य हैं वे जो

16 *या, जाति

सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। [11]धन्य हो तुम, जब लोग मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, तुम्हें यातना दें और झूठ बोल बोल कर तुम्हारे विरुद्ध सब प्रकार की बातें कहें— [12]आनन्दित और मग्न हो, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हारा प्रतिफल महान् है। उन्होंने तो उन नबियों को भी जो तुमसे पहिले हुए इसी प्रकार सताया था।

नमक और प्रकाश

[13]तुम पृथ्वी के नमक हो। पर यदि नमक अपना स्वाद खो बैठे तो वह फिर किस से नमकीन किया जाएगा? वह किसी काम का नहीं रह जाता केवल इसके कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए। [14]तुम जगत की ज्योति हो। पर्वत पर बसा हुआ नगर छिप नहीं सकता। [15]लोग दीपक को जलाकर टोकरी के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, और वह घर के सब लोगों को प्रकाश देता है। [16]तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के सम्मुख इस प्रकार चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देख कर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, महिमा करें।

व्यवस्था का पूरा होना

[17]यह न समझो कि मैं व्यवस्था या नबियों की पुस्तकों को नष्ट करने आया हूं। नष्ट करने नहीं, परन्तु पूर्ण करने आया हूं। [18]क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, व्यवस्था में से एक मात्रा या बिन्दु भी, जब तक कि सब कुछ पूरा न हो जाए, नहीं टलेगा। [19]इसलिए जो भी इन छोटी से छोटी आज्ञाओं को तोड़ेगा और ऐसी ही [illegible]ा दूसरों को देगा, वह परमेश्वर के राज्य में छोटे से छोटा कहलाएगा; परन्तु जो उनका पालन करेगा और दूसरों को भी सिखाएगा, वह परमेश्वर के राज्य में महान् कहलाएगा। [20]क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि जब तक तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो तो तुम परमेश्वर के राज्य में कभी प्रवेश न कर पाओगे।

हत्या — व्यभिचार — तलाक

[21]तुम सुन चुके हो कि पूर्वजों से कहा गया था, 'हत्या न करना' और 'जो हत्या करेगा, वह न्यायालय में दण्ड के योग्य ठहरेगा।' [22]पर मैं तुम से कहता हूं कि हर एक जो अपने भाई पर क्रोधित होगा वह न्यायालय में दण्ड के योग्य ठहरेगा; और जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहेगा वह सर्वोच्च न्यायालय में दोषी ठहरेगा; और जो कोई कहेगा, 'अरे मूर्ख,' वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा। [23]इसलिए यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए और वहां तुझे स्मरण आए कि मेरे भाई को मुझ से कोई शिकायत है, [24]तो अपनी भेंट वेदी के सामने छोड़ दे और जाकर पहले अपने भाई से मेल कर ले और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा। [25]जबकि तू अपने वादी के साथ मार्ग पर ही है तो उस से शीघ्र मित्रता कर ले, कहीं ऐसा न हो कि वादी तुझे न्यायाधीश को सौंप दे, और न्यायाधीश तुझे अधिकारी को, और तू बन्दीगृह में डाल दिया जाए। [26]मैं तुझ से सच कहता हूं, जब तक तू पैसा पैसा चुका न देगा तब तक वहां से छूटने न पाएगा।

[27]"तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, **'व्यभिचार न करना,'** [28]परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई किसी स्त्री को कामुकता से देखे, वह अपने मन में उस से

व्यभिचार कर चुका। [29]यदि तेरी दाहिनी आंख तुझ से *पाप करवाए तो उसे निकालकर दूर फेंक दे, क्योंकि तेरे लिए यही उत्तम है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो इसकी अपेक्षा कि तेरा सारा शरीर नरक में डाला जाए। [30]यदि तेरा दाहिना हाथ तुझ से *पाप करवाए तो उसे काट कर दूर फेंक दे, क्योंकि तेरे लिए यही उत्तम है कि तेरा एक अंग नाश हो जाए, अपेक्षा इसके कि तेरा सारा शरीर नरक में डाला जाए। [31]यह कहा गया था: '**जो कोई अपनी पत्नी को तलाक देना चाहे वह उसे त्याग-पत्र दे,**' [32]परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि प्रत्येक जो व्यभिचार को छोड़ अन्य किसी कारण से अपनी पत्नी को तलाक देता है, तो वह उस से व्यभिचार करवाता है। और जो कोई किसी तलाक दी हुई से विवाह करता है, वह व्यभिचार करता है।

शपथ — बदला — शत्रुओं से प्रेम

[33]फिर, तुम सुन चुके हो कि पूर्वजों से कहा गया था, '**तुम झूठी शपथ न खाना, पर प्रभु के लिए अपनी शपथें पूरी करना।**' [34]परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि कभी शपथ न खाना; न तो स्वर्ग की, क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है; [35]न ही धरती की, क्योंकि वह उसके चरणों की चौकी है; न ही यरूशलेम की, क्योंकि **यह महाराजाधिराज का नगर है।** [36]अपने सिर की भी शपथ न खाना, क्योंकि तू अपने एक बाल को भी सफेद या काला नहीं कर सकता। [37]परन्तु तुम्हारी बात हां की हां अथवा नहीं की नहीं हो, क्योंकि जो कुछ इनसे अधिक होता है, *शैतान की ओर से होता है।

[38]"तुमने सुना है कि कहा गया था, '**आंख के बदले आंख और दांत के बदले दांत।**' [39]परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि बुरे का सामना न करना वरन् जो तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे उसकी ओर दूसरा भी फेर दे। [40]और यदि कोई तुझ पर नालिश करके तेरा कुरता लेना चाहे तो उसे कोट भी ले लेने दे। [41]और यदि कोई तुझे बेगार में एक *किलोमीटर ले जाए तो उसके साथ दो *किलोमीटर चला जा। [42]जो तुझ से मांगे उसे दे, और जो तुझ से उधार लेना चाहे उस से मुंह न मोड़।

[43]"तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, '**तू अपने पड़ोसी से प्रेम करना** और शत्रु से बैर।' [44]परन्तु मैं तुमसे कहता हूं, अपने शत्रुओं से प्रेम करो और जो तुम्हें सताते हैं, उनके लिए प्रार्थना करो [45]जिस से कि तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान बन सको, क्योंकि वह अपना सूर्य भलों और बुरों दोनों पर उदय करता है, और धर्मियों तथा अधर्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है। [46]क्योंकि यदि तुम उनसे प्रेम रखते हो जो तुमसे प्रेम रखते हैं तो तुम्हें क्या प्रतिफल मिलेगा? क्या महसूल लेने वाले भी ऐसा ही नहीं करते? [47]यदि तुम केवल अपने भाइयों को ही नमस्कार करते हो तो कौन सा बड़ा कार्य करते हो? क्या गैरयहूदी भी ऐसा ही नहीं करते? [48]अतः तुम सिद्ध बनो, जैसा कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।

दान

6 "सावधान! तुम अपनी धार्मिकता के कार्य मनुष्यों को दिखाने के लिए न करो, अन्यथा अपने स्वर्गीय पिता से कोई भी प्रतिफल प्राप्त न करोगे।

29 *या, ठोकर खिलाए 30 *या ठोकर खिलाए 37 *या, बुराई से (अक्षरशः, उस दुष्ट से)
41 *यूनानी में, मिलियॉन

2"इसलिए जब तू दान करे तो अपने आगे तुरही मत बजवा, जैसे पाखण्डी लोग, सभाओं और गलियों में करते हैं कि लोग उनका सम्मान करें। मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि वे अपना प्रतिफल पूर्ण रूप से पा चुके हैं। 3परन्तु जब तू दान करे तो तेरा बायां हाथ जानने न पाए कि तेरा दाहिना हाथ क्या कर रहा है 4जिस से तेरा दान गुप्त रहे, और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है तुझे प्रतिफल देगा।

प्रार्थना तथा उपवास

5"जब तू प्रार्थना करे तो पाखण्डियों के सदृश न हो, क्योंकि लोगों को दिखाने के लिए आराधनालयों और सड़कों के मोड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना उनको प्रिय लगता है। मैं तुमसे सच कहता हूं कि वे अपना पूरा प्रतिफल पा चुके। 6परन्तु तू जब प्रार्थना करे **तो अपने भीतरी कक्ष में जा और द्वार बन्द करके** अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर, और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है तुझे प्रतिफल देगा। 7और जब तू प्रार्थना करे तो गैरयहूदियों की तरह अर्थहीन बातें न दोहरा, क्योंकि वे सोचते हैं कि उनके अधिक बोलने से उनकी सुनी जाएगी। 8इसलिए उनके सदृश न बनना, क्योंकि तुम्हारा पिता मांगने से पूर्व ही तुम्हारी आवश्यकता को जानता है।

9अत: तुम इस प्रकार प्रार्थना करना: 'हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र माना जाए। 10तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही पृथ्वी पर भी पूरी हो। 11हमारे दिन भर की रोटी आज हमें दे। 12और जैसे हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है वैसे ही तू भी हमारे *अपराधों को क्षमा कर; 13और हमें परीक्षा में न ला परन्तु *बुराई से बचा, †[क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं। आमीन।'] 14यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा करोगे तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। 15परन्तु यदि तुम मनुष्यों को क्षमा न करो तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा नहीं करेगा।

16"जब कभी तुम उपवास करो तो पाखण्डियों के समान उदास दिखाई न दो, क्योंकि वे अपना मुंह म्लान बनाए रहते हैं जिससे कि मनुष्यों को उपवासी दिखाई दें। मैं तुमसे सच कहता हूं कि वे अपना पूरा पूरा प्रतिफल पा चुके। 17परन्तु तू जब उपवास करे तो अपने सिर पर तेल लगा और मुंह धो, 18जिस से कि तू मनुष्यों को उपवासी दिखाई न दे, परन्तु अपने पिता को जो गुप्त में है; और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।

स्वर्गीय धन और चिन्ता

19"अपने लिए पृथ्वी पर धन-संचय मत करो, जहां कीड़ा और जंग नष्ट करते हैं और जहां चोर सेंध लगाकर चोरी करते हैं। 20परन्तु अपने लिए स्वर्ग में धन-संचय करो, जहां न कीड़ा और न जंग नष्ट करते हैं और न ही चोर सेंध लगाकर चोरी करते हैं, 21क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा। 22देह का दीपक आंख है। इसलिए यदि तेरी आंख निर्मल है, तो तेरी समस्त देह प्रकाशमान होगी। 23परन्तु यदि तेरी आंख बुरी हो तो तेरी समस्त देह अन्धकारमय होगी। इसलिए जो ज्योति तुझ में है यदि वही अन्धकार है, तो यह अन्धकार कैसा घोर

[illegible] 13 *या, उस दुष्ट †सब से प्राचीन हस्तलेखों में यह भाग नहीं मिलता

होगा! [24]कोई भी व्यक्ति दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह या तो एक से वैर और दूसरे से प्रेम करेगा, या एक से घनिष्टता रखेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।" [25]इस कारण मैं तुमसे कहता हूं कि अपने प्राण के लिए यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे या क्या पीएंगे: और न ही अपनी देह के लिए कि क्या पहिनेंगे। क्या प्राण भोजन से या देह वस्त्र से बढ़कर नहीं? [26]आकाश के पक्षियों को देखो कि वे न तो बोते हैं, न काटते हैं और न ही खलिहानों में इकट्ठा करते हैं, फिर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको खिलाता है। क्या तुम्हारा मूल्य उनसे बढ़कर नहीं? [27]तुम में से कौन है जो चिन्ता करके अपनी आयु एक घड़ी भी बढ़ा सकता है? [28]वस्त्र के लिए तुम क्यों चिन्ता करते हो? वन के फूलों को देखो कि वे कैसे बढ़ते हैं! वे न तो परिश्रम करते और न कातते हैं, [29]फिर भी मैं तुमसे कहता हूं कि सुलैमान भी, अपने सारे वैभव में उनमें से एक के समान भी वस्त्र पहिने हुए नहीं था। [30]इसलिए यदि परमेश्वर वन की घास को जो आज है और कल भट्ठी में झोंक दी जाएगी, इस प्रकार सजाता है, तो हे अल्पविश्वासियो, वह तुम्हारे लिए क्यों न इस से अधिक करेगा? [31]इसलिए यह कह कर चिन्ता न करो, 'हम क्या खाएंगे?' अथवा 'क्या पीएंगे?' या, 'हम क्या पहिनेंगे?' [32]क्योंकि गैरयहूदी उत्सुकता से इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं, पर तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं की आवश्यकता है। [33]परन्तु तुम पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज में लगे रहो तो ये सब वस्तुएं तुम्हें दे दी जाएंगी। [34]इसलिए कल की चिन्ता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा। आज के लिए आज ही का दुख बहुत है।

दोषारोपण

7 "दोष न लगाओ जिस से तुम पर भी दोष न लगाया जाए। [2]क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा। और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी नाप से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा। [3]तू क्यों अपने भाई की आंख के तिनके को देखता है, और अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता? [4]अथवा तू अपने भाई से कैसे कह सकता है, 'ला, मैं तेरी आंख से तिनका निकाल दूं,' जबकि देख, लट्ठा तो स्वयं तेरी आंख में है? [5]हे पाखण्डी, पहिले अपनी आंख का लट्ठा निकाल ले, तब अपने भाई की आंख का तिनका निकालने के लिए तू स्पष्ट देख सकेगा।

[6]"पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो, और अपने मोती सूअरों के आगे मत फेंको, कहीं ऐसा न हो कि वे उनको पैरों तले रौंदें और पलटकर तुम को फाड़ डालें।

मांगो तो पाओगे

[7]"मांगो तो तुम्हें दिया जाएगा, ढूंढ़ो तो तुम पाओगे, खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा। [8]क्योंकि प्रत्येक जो मांगता है उसे मिलता है, और जो ढूंढ़ता है वह पाता है, और जो खटखटाता है उसके लिए खोला जाएगा। [9]तुम में से कौन है जो अपने पुत्र को [illegible] मांगे तो पत्थर दे? [illegible] मांगे तो सांप दे? [illegible] होकर अपने बच्चों [illegible]

देना जानते हो तो तुम्हारा पिता जो स्वर्ग में है अपने मांगने वालों को अच्छी वस्तुएं और अधिक क्यों न देगा? 12इसलिए जैसा तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो, क्योंकि व्यवस्था और नबी यही सिखाते हैं।

सकरा मार्ग

13"सकरे फाटक से प्रवेश करो; क्योंकि विशाल है वह फाटक और चौड़ा है वह मार्ग जो विनाश की ओर ले जाता है, और बहुत से हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। 14परन्तु छोटा है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन की ओर ले जाता है और थोड़े ही हैं जो उसे पाते हैं।

जैसा पेड़ वैसा फल

15"झूठे नबियों से सावधान रहो जो भेड़ों के वेश में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु भीतर से वे भूखे, फाड़-खाने वाले भेड़िए हैं। 16उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या कंटीली झाड़ियों से अंगूर या कांटों से अंजीर तोड़ते हैं? 17इसी प्रकार प्रत्येक अच्छा पेड़ अच्छा फल देता है, परन्तु निकम्मा पेड़ बुरा फल देता है। 18अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं दे सकता और न ही निकम्मा पेड़ अच्छा फल दे सकता है। 19प्रत्येक पेड़ जो अच्छा फल नहीं देता, काटा और आग में डाल दिया जाता है। 20अतः तुम उनके फलों से उन्हें पहिचान लोगे। 21प्रत्येक जो मुझ से, "हे प्रभु! हे प्रभु!" कहता है, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेगा, परन्तु जो मेरे स्वर्गीय पिता इच्छा पर चलता है, वही प्रवेश करेगा। दिन बहुत लोग मुझ से कहेंगे, 'हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला और तेरे नाम से बहुत से आश्चर्यकर्म नहीं किए?' 23तब मैं उनसे स्पष्ट कहूंगा, 'मैंने तुम को कभी नहीं जाना; हे कुकर्मियो, मुझ से दूर हटो।'

24"इसलिए जो कोई मेरे इन वचनों को सुनकर उन पर चलता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान है जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया। 25और मेंह बरसा, बाढ़ें आईं, आंधियां चलीं और उस घर से टकराईं; फिर भी वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर डाली गई थी। 26परन्तु जो कोई मेरे इन वचनों को सुनता है और उनका पालन नहीं करता, वह उस मूर्ख के समान है जिसने अपना घर बालू पर बनाया। 27और मेंह बरसा, बाढ़ें आईं, आंधियां चलीं और उस घर से टकराईं; तब वह गिर पड़ा, और पूर्णतः ध्वस्त हो गया।"

28इसका परिणाम यह हुआ कि जब यीशु यह बातें कह चुका तो भीड़ उसके उपदेश से चकित हुई, 29क्योंकि वह उन्हें उनके शास्त्रियों के समान नहीं, वरन् अधिकार सहित उपदेश दे रहा था।

कोढ़ी का शुद्ध किया जाना

8 जब वह पर्वत पर से उतरा, तो एक विशाल जनसमूह उसके पीछे चल पड़ा। 2और देखो, एक कोढ़ी उसके पास आया और दण्डवत् करके उस से कहने लगा, "हे प्रभु, यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।" 3यीशु ने हाथ बढ़ा कर उसे छुआ और कहा, "मैं चाहता हूं। तू शुद्ध हो जा।" और वह कोढ़ से तुरन्त शुद्ध हो गया। 4और यीशु ने उस से कहा, "देख, किसी से न कहना, परन्तु जाकर

अपने आप को याजक को दिखा, और मूसा के द्वारा निर्धारित भेंट चढ़ा कि उन पर साक्षी हो।"

सूबेदार का विश्वास

5और जब उसने कफरनहूम में प्रवेश किया तो एक सूबेदार उसके पास आया और विनती करके 6कहने लगा, "हे प्रभु, मेरा सेवक लकवे का मारा घर में पडा हुआ अत्यन्त पीड़ा में तड़प रहा है।" 7उसने उस से कहा, "मैं आकर उसे चंगा करूंगा।" 8परन्तु सूबेदार ने उत्तर दिया, "हे प्रभु, मैं इस योग्य नहीं कि तू मेरी छत तले आए, परन्तु केवल वचन कह दे और मेरा सेवक चंगा हो जाएगा। 9क्योंकि मैं भी शासन के आधीन हूं, और मेरे आधीन सिपाही हैं। जब मैं एक से कहता हूं, 'जा!' तो वह जाता है, और दूसरे से, 'आ!' तो वह आता है, और जब अपने दास से कहता हूं, 'यह कर!' तो वह करता है।" 10जब यीशु ने यह सुना तो अचम्भा किया और अपने पीछे आने वालों से कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूं, मैंने इस्राएल के किसी व्यक्ति में भी ऐसा बड़ा विश्वास नहीं पाया। 11मैं तुम से कहता हूं कि पूर्व और पश्चिम से बहुत से लोग आकर इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में भोजन करने बैठेंगे, 12परन्तु राज्य के सन्तान बाहर अन्धकार में फेंक दिए जाएंगे; और वहां रोना और दांत पीसना होगा।" 13और यीशु ने सूबेदार से कहा, "जा, तेरे विश्वास के अनुसार ही तेरे लिए हो।" और सेवक उसी क्षण चंगा हो गया।

रोगियों की चंगाई

14और जब यीशु पतरस के घर आया, तो उसकी सास को ज्वर से पीड़ित बिस्तर पर पड़े देखा। 15उसने उसका हाथ छुआ और उसका ज्वर उतर गया, और वह उठकर उसकी सेवा-टहल करने लगी। 16और जब संध्या हुई, तो वे बहुत से दुष्टात्मा-ग्रस्त लोगों को उसके पास लाए; और उसने वचन मात्र से ही उन दुष्टात्माओं को निकाला और उन सब को चंगा किया जो बीमार थे, 17जिससे कि जो वचन यशायाह नबी द्वारा कहा गया था वह पूरा हो: "**उसने स्वयं हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारे रोगों को उठा लिया।**"

18यीशु ने जब अपने चारों ओर भीड़ को देखा, तो उस पार जाने का आदेश दिया। 19और किसी शास्त्री ने आकर उस से कहा, "गुरु, जहां कहीं तू जाएगा, मैं तेरे पीछे चलूंगा।" 20यीशु ने उस से कहा, "लोमड़ियों की मांदें और आकाश के पक्षियों के घोंसले होते हैं, परन्तु मनुष्य के पुत्र के लिए सिर रखने को भी कहीं स्थान नहीं है।" 21उसके चेलों में से किसी ने उस से कहा, "प्रभु, पहिले मुझे अनुमति दे कि मैं जाकर अपने पिता को दफ़न करूं।" 22परन्तु यीशु ने उस से कहा, "मेरे पीछे चला आ और मुर्दों को अपने मुर्दे दफ़न करने दे।"

आंधी को शान्त करना

23जब वह नाव पर चढ़ गया तो उसके चेले उसके पीछे चल पड़े। 24और देखो, समुद्र में एक बड़ी आंधी उठी जिससे कि नाव लहरों से ढंक गई; परन्तु वह सो रहा था। 25वे उसके पास आए और उन्होंने यह कहकर उसे जगाया, "प्रभु, हमें बचा! हम नाश हुए जाते हैं।" 26उसने उनसे कहा, "हे अल्प-विश्वासियो, तुम

इतने भयभीत क्यों हो?" तब उठकर उसने आंधी और समुद्र को डांटा, और पूर्णतः शान्ति छा गई। 27और वे विस्मित होकर कहने लगे, "यह कैसा मनुष्य है, कि आन्धी और समुद्र भी इसकी आज्ञा मानते हैं?"

दुष्टात्मा-ग्रस्त मनुष्यों की चंगाई

28और जब वह दूसरी ओर गदरेनियों के प्रदेश में पहुंचा, तो दो मनुष्य जिनमें दुष्टात्माएं थीं कब्रों से निकल कर उस से मिले। वे इतने उग्र थे कि कोई भी उस मार्ग से नहीं निकल सकता था। 29और देखो, उन्होंने चिल्लाकर कहा, "हे परमेश्वर के पुत्र, हमारा तुझ से क्या काम? क्या तू यहां हमें समय से पहले यातना देने आया है?" 30कुछ दूरी पर बहुत से सूअरों का एक झुण्ड चर रहा था। 31दुष्टात्माएं उस से यह कहकर विनती करने लगीं, "यदि तू हमें निकालना चाहता है तो हमें सूअरों के झुण्ड में भेज दे।" 32उसने उनसे कहा, "जाओ!" और वे निकलकर सूअरों में समा गईं, और देखो, वह पूरा झुण्ड वेगपूर्वक ढालू किनारे से समुद्र में जा पड़ा और डूब मरा। 33चरवाहे भाग कर नगर में गए तथा दुष्टात्मा-ग्रस्त मनुष्यों पर जो कुछ बीता था तथा इसी के साथ साथ सारा हाल कह सुनाया। 34और देखो, सारे नगर के लोग निकल कर यीशु से मिलने आए, और जब उन्होंने उसे देखा, तो उस से विनती की कि हमारे प्रदेश से बाहर चला जा।

लकवा के रोगी की चंगाई

9 वह नाव पर बैठ कर पार गया और अपने नगर में आया। 2और देखो कुछ लोग एक लकवे के मारे हुए को खाट पर लिटा कर उसके पास लाए। यीशु ने उनका विश्वास देख कर उस लकवे के रोगी से कहा, "मेरे पुत्र, साहस रख, तेरे पाप क्षमा हुए।" 3और देखो, शास्त्रियों में से कुछ आपस में कहने लगे, "यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है।" 4यीशु ने उनके मन के विचार जान कर कहा, "तुम अपने मनों में बुरे विचार क्यों कर रहे हो? 5सहज क्या है? यह कहना, 'तेरे पाप क्षमा हुए,' या यह, 'उठ और चल-फिर'? 6परन्तु इसलिए कि तुम जान जाओ कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है"—तब उस ने लकवे के रोगी से कहा—"उठ, अपनी खाट उठा और घर जा।" 7वह उठकर अपने घर चला गया। 8जब भीड़ ने यह देखा, तो उन पर भय छा गया और लोग परमेश्वर की महिमा करने लगे जिसने मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया है।

मत्ती का बुलाया जाना

9जैसे ही यीशु वहां से आगे बढ़ा उसने मत्ती नाम के एक मनुष्य को चुंगी चौकी में बैठे देखा, और उसने उस से कहा, "मेरे पीछे आ!" वह उठा और उसके पीछे चल दिया।

10फिर ऐसा हुआ कि जब वह घर में भोजन करने बैठा था, तो देखो, बहुत से चुंगी लेने वाले और *पापी आकर यीशु और उसके चेलों के साथ भोजन करने लगे। 11और जब फरीसियों ने यह देखा तो उसके चेलों से कहा, "तुम्हारा गुरु चुंगी लेने वालों और पापियों के साथ क्यों खाता है?" 12परन्तु जब उसने यह सुना तो कहा, "भले चंगों को वैद्य की आवश्य-

*अर्थात्, विधर्मी (यहूदी)

कता नहीं, परन्तु बीमारों को होती है। [13]परन्तु जाओ और इसका अर्थ सीखो: **'मैं बलिदान नहीं पर दया चाहता हूं।'** क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने आया हूं।"

उपवास का प्रश्न

[14]तब यूहन्ना के चेले उसके पास आकर कहने लगे, "क्या कारण है कि हम और फरीसी तो उपवास करते हैं, परन्तु तेरे चेले उपवास नहीं करते?" [15]यीशु ने उनसे कहा, "जब तक दूल्हा बारातियों के साथ है, क्या वे शोक कर सकते हैं? परन्तु वे दिन आएंगे जब दूल्हा उनसे अलग कर दिया जाएगा, और तब वे उपवास करेंगे। [16]पुराने वस्त्र पर कोरे कपड़े का पैवन्द कोई नहीं लगाता, क्योंकि पैवन्द उस वस्त्र को खींच लेता है, और वह पहिले से भी अधिक फट जाता है। [17]न ही लोग पुरानी मशकों में नया दाखरस भरते हैं, क्योंकि ऐसा करने से मशकें फट जाती हैं और दाखरस बह जाता है और मशकें नष्ट हो जाती हैं; परन्तु नया दाखरस नई मशकों में भरते हैं और दोनों ही सुरक्षित बने रहते हैं।"

मृत लड़की और रोगी स्त्री

[18]जब वह उनसे ये बातें कह ही रहा था तो देखो, आराधनालय का एक अधिकारी आया और उसे दण्डवत् करके कहने लगा, "मेरी पुत्री अभी अभी मरी है, परन्तु चल कर अपना हाथ उस पर रख, तो वह जीवित हो जाएगी।" [19]यीशु उठा और इसके पीछे चल पड़ा और उस के चेलों ने भी ऐसा ही किया। [20]और देखो, एक स्त्री ने जो बारह वर्ष से लहू बहने के रोग से पीड़ित थी, उसके पीछे आकर उसके चोगे का किनारा स्पर्श किया; [21]क्योंकि वह अपने मन में कहती थी, "यदि मैं उसके वस्त्र को ही स्पर्श करूं तो चंगी हो जाऊंगी।" [22]यीशु ने मुड़कर उसे देखा और कहा, "पुत्री, साहस रख, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है।" वह स्त्री उसी घड़ी चंगी हो गई।

[23]जब यीशु उस अधिकारी के घर पहुंचा तो उसने बांसुरी बजाने वालों और भीड़ को कोलाहल करते देखा। [24]उसने उनसे कहा, "चले जाओ, क्योंकि लड़की मरी नहीं परन्तु सो रही है।" इस पर वे उसकी हंसी उड़ाने लगे। [25]परन्तु जब भीड़ बाहर निकाल दी गई, तो यीशु भीतर गया और उसने हाथ पकड़ कर लड़की को उठाया, और लड़की उठ बैठी। [26]यह समाचार उस सारे प्रदेश में फैल गया।

दो अंधों और एक गूंगे की चंगाई

[27]जब यीशु वहां से आगे बढ़ा तो दो अंधे उसके पीछे यह चिल्लाते और पुकारते हुए चले, "हे दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर!" [28]और जब वह घर में प्रवेश कर चुका तो वे अंधे उसके पास आए। यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुम विश्वास करते हो कि मैं यह कर सकता हूं?" उन्होंने उस से कहा 'हां, प्रभु।' [29]तब उसने यह कहते हुए उनकी आंखों को स्पर्श किया, "तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो जाए।" [30]और उनकी आंखें खुल गईं। यीशु ने उन्हें कड़ी चेतावनी देते हुए उनसे कहा, "देखो, यह किसी को न बताना।" [31]परन्तु उन्होंने जाकर समस्त प्रदेश में उसकी चर्चा की।

[32]जब वे बाहर जा रहे थे, तो लोग एक गूंगे को, जो दुष्टात्मा-ग्रस्त था, यीशु के

पास लाए। [33]और जब दुष्टात्मा निकाल दी गई, तो गूंगा बोलने लगा। इस पर भीड़ विस्मित होकर कहने लगी, "इस्राएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया।" [34]परन्तु फरीसी कहने लगे, "वह तो दुष्ट आत्माओं के सरदार की सहायता से दुष्ट आत्माओं को निकालता है।"

[35]यीशु सब नगरों और गांवों में जा जाकर, उनके आराधनालयों में उपदेश देता और राज्य के सुसमाचार का प्रचार करता और सब प्रकार के रोग तथा हर प्रकार की दुर्बलता को चंगा करता रहा। [36]और जनसमूह को देखकर उसे लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों की तरह पीड़ित और उदास थे जिनका कोई चरवाहा न हो। [37]तब उसने अपने चेलों से कहा, "पकी फसल तो बहुत है, परन्तु मज़दूर थोड़े हैं। [38]इसलिए फसल के स्वामी से विनती करो कि वह फसल काटने के लिए मज़दूर भेज दे।"

चेलों का सेवा के लिए भेजा जाना

10 तब यीशु ने अपने बारह चेलों को बुलाकर, उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया कि उन्हें निकालें और सब प्रकार की बीमारी तथा सब प्रकार की दुर्बलता को चंगा करें।

[2]अब बारह प्रेरितों के नाम ये हैं: पहिला, शमौन, जो पतरस कहलाता है, और उसका भाई अन्द्रियास; जब्दी का पुत्र याकूब और उसका भाई यूहन्ना; [3]फिलिप्पुस, बरतुल्मै, थोमा और चुंगी लेने वाला मत्ती; हल्फै का पुत्र याकूब और तद्दै; [4]शमौन कनानी और यहूदा इस्करियोती, जिसने उसे पकड़वा भी दिया।

[5]इन बारहों को यीशु ने यह निर्देश देकर भेजा: "गैरयहूदियों के पास न जाना, और न सामरियों के किसी नगर में प्रवेश करना। [6]इसकी अपेक्षा इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास जाना। [7]और जाते हुए तुम प्रचार करके कहना, 'स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।' [8]बीमारों को चंगा करो, मृतकों को जिलाओ, कोढ़ियों को शुद्ध करो, दुष्ट आत्माओं को निकालो। तुमने मुफ़्त पाया है, मुफ़्त में दो। [9]अपनी कमर की अंटी में न सोना, न चांदी और न तांबा रखना। [10]यात्रा के लिए न झोली, यहां तक कि दो कुरते भी नहीं, न चप्पल और न लाठी लो, क्योंकि मज़दूर भोजन का अधिकारी है। [11]जिस किसी नगर या गांव में तुम प्रवेश करो तो पूछताछ करो कि वहां कौन योग्य है, और विदा होने तक वहीं ठहरे रहो। [12]जब तुम उस घर में प्रवेश करो तो शान्ति की आशिष दो। [13]यदि वह घर योग्य हो तो तुम्हारी शान्ति उस पर बनी रहेगी, परन्तु यदि न हो तो शान्ति का तुम्हारा अभिवादन तुम्हारे पास लौट आएगा। [14]जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे और न तुम्हारी बातों पर ध्यान दे, जब तुम उस घर या नगर से जाओ, तो अपने पैरों की धूल झाड़ डालना। [15]मैं तुम से सच कहता हूं कि न्याय के दिन उस नगर की अपेक्षा सदोम और अमोरा देश की दशा अधिक सहनीय होगी।

भावी संकट

[16]"देखो, मैं तुम्हें भेड़ों के समान भेड़ियों के बीच में भेजता हूं। इसलिए सर्प के समान चतुर और कबूतरों के समान भोले बनो। [17]परन्तु मनुष्यों से सावधान रहो, क्योंकि वे तुम्हें कचहरियों में सौंपेंगे और अपने आराधनालयों में तुम्हें कोड़े मारेंगे। [18]तुम मेरे कारण राज्यपालों और

राजाओं के सामने भी उपस्थित किए जाओगे कि उन पर और गैरयहूदियों पर साक्षी बनो। [19]परन्तु जब वे तुम्हें पकड़वाएं तो चिन्तित न होना कि हम क्या और कैसे कहेंगे, क्योंकि जो कुछ तुम्हें कहना है वह उसी घड़ी तुम्हें बता दिया जाएगा। [20]क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं हो, परन्तु यह तुम्हारे पिता का आत्मा है जो तुम में बोलता है। [21]भाई अपने भाई को और पिता अपने बच्चे को मार डाले जाने के लिए सौंपेंगे, '**और सन्तान माता पिता के विरुद्ध खड़े होकर उन्हें मरवा डालेंगे।**' [22]मेरे नाम के कारण सब तुम से घृणा करेंगे, परन्तु जो अन्त तक धीरज रखेगा उसी का उद्धार होगा। [23]जब कभी वे तुम्हें इस नगर में सताएं तो दूसरे में भाग जाना; क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं कि इस से पूर्व कि तुम इस्राएल के सब नगरों में फिरना समाप्त करो, मनुष्य का पुत्र आ जाएगा।

[24]"न चेला अपने गुरु से और न दास अपने स्वामी से बढ़कर होता है। [25]चेले का अपने गुरु के, और दास का अपने स्वामी के बराबर होना ही पर्याप्त है। यदि उन्होंने घर के स्वामी को *बालजबूल कहा तो घर के सदस्यों को क्या कुछ न कहेंगे!

किस से डरें?

[26]"इसलिए उनसे मत डरो, क्योंकि कुछ ढंका नहीं जो खोला न जाएगा, और न कुछ छिपा है जो जाना न जाएगा। [27]जो मैं तुमसे अन्धकार में कहता हूं उसे तुम प्रकाश में कहो और जो कुछ तुम कानों कान सुनते हो, उसे छत पर चढ़कर प्रचार करो। [28]उनसे न डरो जो शरीर को घात करते हैं पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, वरन् उस से डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है। [29]क्या एक पैसे में दो गौरैएं नहीं बिकतीं? फिर भी तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना उनमें से एक भी भूमि पर नहीं गिर सकती। [30]तुम्हारे सिर के बाल तक भी गिने हुए हैं। [31]इसलिए डरो मत। तुम बहुत सी गौरैयों से भी कहीं अधिक मूल्यवान् हो। [32]अतः प्रत्येक जो मनुष्यों के सम्मुख मुझे स्वीकार करेगा, मैं भी उसे अपने पिता के सम्मुख, जो स्वर्ग में है, स्वीकार करूंगा। [33]पर जो मनुष्यों के सम्मुख मुझे अस्वीकार करेगा, मैं भी उसे अपने पिता के सम्मुख, जो स्वर्ग में है अस्वीकार करूंगा।

[34]"यह न सोचो कि मैं पृथ्वी पर मेल कराने आया हूं। मैं मेल कराने नहीं, वरन् तलवार चलवाने आया हूं। [35]मैं तो इसलिए आया कि **मनुष्य को उसके पिता, पुत्री को उसकी माता, और बहू को उसकी सास के विरुद्ध कर दूं;** [36]**और मनुष्य के शत्रु उसके घर ही के लोग होंगे।** [37]जो मुझ से अधिक अपने माता या पिता से प्रेम करता है, वह मेरे योग्य नहीं। जो मुझ से अधिक अपने पुत्र या पुत्री से प्रेम करता है, वह मेरे योग्य नहीं; [38]और जो अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे नहीं चलता, वह मेरे योग्य नहीं। [39]जो अपना प्राण बचाता है वह उसे खोएगा, और जो कोई मेरे कारण अपना प्राण खोता है वह उसे पाएगा।

[40]"जो तुम्हें ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है, और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजने वाले को ग्रहण करता है। [41]जो नबी को नबी जानकर ग्रहण

25 *या, बालजबूब, अर्थात् शैतान

करे, वह नबी का प्रतिफल पाएगा, और जो धर्मी को धर्मी व्यक्ति मानकर ग्रहण करे, वह धर्मी का प्रतिफल पाएगा। [42]जो कोई इन छोटों में से किसी एक को चेला जान कर ठण्डे पानी का एक गिलास भी पीने को दे तो मैं तुम से सच कहता हूं कि वह अपना प्रतिफल कदापि नहीं खोएगा।"

यीशु और यूहन्ना

11 ऐसा हुआ कि जब यीशु अपने बारह चेलों को निर्देश दे चुका, तो वहां से वह उनके नगरों में शिक्षा देने और प्रचार करने चला गया।

[2]जब बन्दीगृह में यूहन्ना ने मसीह के कार्यों की चर्चा सुनी तो अपने चेलों को उसके पास यह पूछने भेजा, [3]"क्या आने-वाला तू ही है, या हम किसी और की प्रतीक्षा करें?" [4]यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "जो कुछ तुम सुनते और देखते हो जाकर उसका समाचार यूहन्ना को दो: [5]कि **अन्धे दृष्टि पाते**, लंगड़े चलते, कोढ़ी शुद्ध किए जाते, बहिरे सुनते, मुर्दे जिलाए जाते और **कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है।** [6]और धन्य है वह जो मेरे कारण ठोकर खाने से बचा रहता है।"

[7]उनके जाते समय यीशु भीड़ के लोगों से यूहन्ना के विषय में कहने लगा, "तुम जंगल में क्या देखने गए थे? हवा से हिलते हुए सरकण्डे को? [8]फिर तुम क्या देखने गए थे? कोमल वस्त्र पहिने हुए मनुष्य को? देखो, कोमल वस्त्र पहिनने वाले राजभवनों में रहते हैं। [9]फिर तुम क्यों गए थे? किसी नबी को देखने के लिए? हां, और मैं तुम से कहता हूं, नबी से भी बड़े व्यक्ति को। [10]यह वही है जिसके विषय में लिखा है, '**देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं, जो तेरा मार्ग तेरे आगे तैयार करेगा।**' [11]मैं तुम से सच कहता हूं कि स्त्रियों से जन्म लेने वालों में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से बड़ा कोई भी नहीं हुआ, फिर भी जो स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा है, वह उस से बड़ा है। [12]यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के दिनों से लेकर अब तक स्वर्ग के राज्य में बलपूर्वक प्रवेश होता जा रहा है, और प्रबल मनुष्य उस पर बलपूर्वक अधिकार कर लेते हैं। [13]क्योंकि सब नबी और व्यवस्था, यूहन्ना के आने तक भविष्यद्वाणी करते रहे। [14]यदि तुम इस बात को मानना चाहो तो यही एलिय्याह है, जो आने वाला था। [15]जिसके सुनने के कान हों, वह सुन ले। [16]मैं इस पीढ़ी की तुलना किस से करूं? ये लोग बाज़ार में बैठने वाले बच्चों के समान हैं, जो दूसरे बच्चों को पुकारते, [17]और कहते हैं, 'हमने तुम्हारे लिए बांसुरी बजाई, पर तुम न नाचे; और हम ने शोकगीत गाया, पर तुमने विलाप न किया।' [18]क्योंकि यूहन्ना न तो खाता और न पीता आया, पर वे कहते हैं, 'उस में दुष्टात्मा है।' [19]मनुष्य का पुत्र खाता-पीता आया और वे कहते हैं, 'देखो, एक पेटू और पियक्कड़, चुंगी लेने वालों और पापियों का मित्र!' फिर भी बुद्धि अपने कार्यों से प्रमाणित होती है।"

अविश्वास पर हाय

[20]तब वह उन नगरों को जिनमें अधि-कांश आश्चर्यकर्म किए गए थे, उलाहना देने लगा क्योंकि उन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया था। [21]"हे खुराजीन, तुझ पर हाय! हे बैतसैदा, तुझ पर हाय! क्योंकि जो आश्चर्यकर्म तुम में किए गए, यदि वे सूर और सैदा में किए जाते तो वे बहुत पहिले

टाट ओढ़कर और राख पर बैठकर पश्चात्ताप कर लेते। [22]फिर भी मैं तुमसे कहता हूं कि न्याय के दिन सूर और सैदा की दशा तुम्हारी अपेक्षा अधिक सहनीय होगी। [23]और हे कफरनहूम, क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा उठाया जाएगा? **तू अधोलोक तक उतरेगा**, क्योंकि जो आश्चर्यकर्म तुझ में किए गए, यदि वे सदोम में किए जाते, तो वह आज तक बना रहता। [24]फिर भी मैं तुझ से कहता हूं, न्याय के दिन तेरी दशा की अपेक्षा सदोम की दशा अधिक सहनीय होगी।"

विश्राम की प्रतिज्ञा

[25]उसी समय यीशु ने कहा, "हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरी स्तुति करता हूं, कि तू ने ये बातें ज्ञानियों और बुद्धिमानों से छिपाकर रखीं और बच्चों पर प्रकट की हैं। [26]हां, पिता, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा। [27]मेरे पिता के द्वारा मुझे सब कुछ सौंपा गया है। पिता के अतिरिक्त पुत्र को कोई नहीं जानता, न पुत्र के अतिरिक्त पिता को कोई जानता है, या वही जिस पर पुत्र उसे प्रकट करना चाहता है। [28]हे सब थके और बोझ से दबे लोगो, मेरे पास आओ: मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। [29]मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं, **और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे**। [30]क्योंकि मेरा जुआ सहज और मेरा बोझ हल्का है।"

सब्त का प्रभु

12 तब यीशु सब्त के दिन खेतों में से होकर निकला; उसके चेलों को भूख लगी और वे बालें तोड़ तोड़ कर खाने लगे। [2]परन्तु जब फरीसियों ने यह देखा तो उस से कहा, "देख, तेरे चेले वह काम कर रहे हैं जो सब्त के दिन करना उचित नहीं।" [3]इस पर उसने उनसे कहा, "क्या तुमने नहीं पढ़ा कि जब दाऊद और उसके साथियों को भूख लगी तो उसने क्या किया? [4]उसने तो परमेश्वर के भवन में प्रवेश कर के अर्पण की रोटियां खाईं, जिन्हें खाना न तो उसके लिए और न उसके साथियों के लिए पर केवल याजकों के लिए उचित था। [5]अथवा क्या तुमने व्यवस्था में नहीं पढ़ा कि याजक सब्त के दिन मन्दिर में सब्त की विधि को तोड़ते हैं, फिर भी निर्दोष ठहरते हैं? [6]परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि यहां वह है जो मन्दिर से भी बढ़कर है। [7]यदि तुम इसका अर्थ समझते, '**मैं दया चाहता हूं, बलिदान नहीं**,' तो निर्दोष को दोषी न ठहराते। [8]क्योंकि मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी प्रभु है।"

[9]वहां से निकल कर वह उनके आराधनालय में गया। [10]देखो, वहां सूखे हाथ वाला एक मनुष्य था। उन्होंने यीशु पर दोष लगाने के अभिप्राय से यह कहते हुए प्रश्न किया, "क्या सब्त के दिन चंगा करना उचित है?" [11]उसने उनसे कहा, "तुम में से ऐसा कौन है, जिसकी एक भेड़ हो, और वह सब्त के दिन गड्ढे में गिर जाए तो वह उसे पकड़ कर बाहर न निकाले? [12]तो एक मनुष्य का मूल्य, भेड़ से कितना बढ़कर है! इसीलिए सब्त के दिन भलाई करना उचित है।" [13]तब उसने उस मनुष्य से कहा, "अपना हाथ बढ़ा!" इसने बढ़ाया, और वह दूसरे हाथ के समान अच्छा हो गया। [14]तब फरीसी बाहर निकले और विरोध में सम्मति की कि प्रकार नाश करें।

परमेश्वर के चुने हुए सेवक

[15]परन्तु यीशु यह जानकर वहां से निकल गया। वहुत से लोग उसके पीछे चल पड़े, और उसने उन सव को चंगा किया, [16]और उन्हें चेतावनी दी कि मुझे प्रकट न करना, [17]जिससे कि यशायाह नवी द्वारा जो कहा गया था, वह पूरा हो: [18]"**देखो, मेरा सेवक जिसे मैंने चुना है, मेरा प्रिय जिस से मेरा मन अति प्रसन्न है। मैं उस पर अपना आत्मा डालूंगा और वह गैरयहूदियों पर उचित न्याय की घोषणा करेगा।** [19]**वह न तो विवाद करेगा और न चिल्लाएगा, और न कोई उसकी आवाज़ गलियों में सुनेगा।** [20]**वह कुचले हुए सरकण्डे को न तोड़ेगा और टिमटिमाती हुई बत्ती को न बुझाएगा, जब तक कि वह न्याय को विजयी न बनाए।** [21]**और उसी के नाम में गैरयहूदी आशा रखेंगे।**"

[22]यीशु के पास एक दुष्टात्मा-ग्रस्त मनुष्य लाया गया जो अन्धा और गूंगा था, और उसने उसे चंगा किया, और वह गूंगा मनुष्य बोलने और देखने लगा। [23]इस पर सारा जनसमूह चकित होकर कहने लगा, "क्या यह मनुष्य दाऊद की सन्तान हो सकता है?" [24]परन्तु जब फरीसियों ने यह सुना तो कहा, "यह मनुष्य दुष्टात्माओं को केवल उनके सरदार बालजबूल की सहायता से निकालता है।" [25]उनके विचार जानकर उसने कहा, "जिस राज्य में फूट पड़ जाए वह नष्ट हो जाता, और जिस नगर या घर में फूट पड़े वह स्थिर नहीं रहेगा, [26]और यदि शैतान ही शैतान को निकाले तो वह अपना ही विरोधी हो गया है—फिर उसका राज्य कैसे स्थिर रहेगा? [27]फिर यदि मैं बालजबूल की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं तो तुम्हारे पुत्र किसकी सहायता से निकालते हैं? इसलिए वे ही तुम्हारा न्याय करेंगे। [28]परन्तु यदि मैं परमेश्वर के आत्मा के द्वारा दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे मध्य आ पहुंचा है। [29]अथवा किसी बलवान मनुष्य के घर में घुस कर कोई उसकी सम्पत्ति कैसे उठा ले सकता है जब तक कि वह पहिले उस बलवान को बांध न ले? और तब वह उसका घर लूटेगा। [30]जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरुद्ध है; और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह बिखेरता है। [31]इसलिए मैं तुमसे कहता हूं, मनुष्य का हर पाप और निन्दा क्षमा की जाएगी, परन्तु पवित्र आत्मा की निन्दा क्षमा न की जाएगी। [32]और जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा उसका यह अपराध क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ बोलेगा, उसका यह अपराध न तो इस युग और न आने वाले युग में क्षमा किया जाएगा।

[33]"या तो पेड़ को अच्छा कहो और उसके फल को भी, या पेड़ को निकम्मा कहो और उसके फल को भी, क्योंकि पेड़ अपने फल ही से पहिचाना जाता है। [34]हे सांप के बच्चो, तुम दुष्ट होते हुए अच्छी बातें कैसे कह सकते हो? क्योंकि जो हृदय में भरा होता है, वही मुंह पर आता है। [35]भला मनुष्य अपने भले भण्डार से भली बातें निकालता है; और बुरा मनुष्य अपने बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है। [36]मैं तुमसे कहता हूं, जो भी निकम्मी बात मनुष्य बोलेंगे, न्याय के दिन वे उसका लेखा देंगे। [37]क्योंकि अपने शब्दों के द्वारा

तू निर्दोष और अपने शब्दों ही के द्वारा तू दोषी ठहराया जाएगा।

स्वर्गीय चिन्ह की मांग

[38]तब कुछ शास्त्रियों और फरीसियों ने उस से कहा, "गुरु, हम तुझ से कोई चिन्ह देखना चाहते हैं।" [39]परन्तु उसने उत्तर दिया, "यह दुष्ट और व्यभिचारिणी पीढ़ी चिन्ह देखने को इच्छुक रहती है, फिर भी योना नबी के चिन्ह को छोड़ और कोई चिन्ह नहीं दिया जाएगा, [40]क्योंकि जैसे **योना तीन दिन और तीन रात विशाल मच्छ के पेट में रहा,** उसी प्रकार मनुष्य का पुत्र भी तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के गर्भ में रहेगा। [41]न्याय के दिन नीनवे के लोग इस पीढ़ी के लोगों के साथ उठ खड़े होंगे और उन्हें दोषी ठहराएंगे, क्योंकि उन्होंने योना का प्रचार सुनकर पश्चात्ताप किया; और देखो, यहां वह है जो योना से भी बढ़कर है। [42]न्याय के दिन, दक्षिण की रानी इस पीढ़ी के लोगों के साथ उठ खड़ी होगी और इन्हें दोषी ठहराएगी, क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने को पृथ्वी के छोर से आई। देखो, यहां वह है जो सुलैमान से भी बढ़कर है।

[43]"जब अशुद्ध आत्मा किसी मनुष्य में से निकलती है, तो विश्राम की खोज में निर्जल स्थानों में भटकती फिरती है, पर नहीं पाती। [44]तब वह कहती है, 'जिस घर से मैं आई थी अपने उसी घर को लौट जाऊंगी,' और जब वह लौटकर आती है तो उसे खाली, झाड़ा-बुहारा और सजा-सजाया पाती है। [45]तब वह जाकर अपने से अधिक दुष्ट, अन्य सात आत्माओं को ले आती है और वे प्रवेश करके वहां रहने लगती हैं; और उस मनुष्य की पिछली दशा पहिले से भी बुरी हो जाती है। इस दुष्ट पीढ़ी के लोगों के साथ भी ऐसा ही होगा।"

यीशु के भाई और उसकी माता

[46]जब वह जनसमूह से बातें कर रहा था, तो देखो, उसकी माता और भाई बाहर खड़े थे और उस से बातें करना चाहते थे। [47]और किसी ने यीशु से कहा, "देख, तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हैं और तुझ से बातें करना चाहते हैं।" [48]परन्तु उस कहने वाले को उत्तर देते हुए उसने कहा, "कौन है मेरी माता और कौन हैं मेरे भाई?" [49]और अपने चेलों की ओर हाथ बढ़ा कर उसने कहा, "देखो, मेरी माता और मेरे भाई! [50]क्योंकि जो कोई मेरे पिता की जो स्वर्ग में है इच्छा पूरी करता है, वही मेरा भाई, मेरी बहिन और मेरी माता है।"

बीज बोने वाले का दृष्टान्त

13 उसी दिन यीशु घर से बाहर निकल कर झील के किनारे जा बैठा। [2]और उस के आस पास एक विशाल जनसमूह एकत्रित हुआ, अतः वह नाव पर चढ़कर बैठ गया और सारा जनसमूह किनारे पर ही खड़ा रहा। [3]उसने यह कहते हुए उनसे दृष्टान्तों में बहुत सी बातें कहीं: "देखो, एक बोने-वाला बीज बोने निकला। [4]बोते समय कुछ बीज मार्ग के किनारे गिरे और चिड़ियों ने आकर उन्हें चुग लिया। [5]कुछ पथरीली भूमि पर गिरे जहां उन्हें अधिक मिट्टी नहीं मिली; और गहरी मिट्टी न होने के कारण वे शीघ्र उग आए। [6]परन्तु सूर्य उदय होने पर वे झुलस गए और न पकड़ने के कारण सूख गए। [7] बीज कटीली झाड़ियों में

झाड़ियों ने बढ़कर उन्हें दबा दिया। [8]परन्तु कुछ बीज अच्छी भूमि पर गिरे और फल लाए, कोई सौ गुणा, कोई साठ गुणा और कोई तीस गुणा। [9]जिसके पास कान हों वह सुन ले।"

दृष्टान्त क्यों?

[10]चेलों ने आकर उस से कहा, "तू क्यों उनसे दृष्टान्तों में बातें करता है?" [11]उसने उन्हें उत्तर दिया, "तुम्हें यह प्रदान किया गया है कि स्वर्ग के राज्य के भेदों को जानो, परन्तु उन्हें नहीं। [12]क्योंकि जिसके पास है, उसे और भी दिया जाएगा, और उसके पास बहुत अधिक हो जाएगा; परन्तु जिसके पास नहीं है, उस से वह भी जो उसके पास है ले लिया जाएगा। [13]इसलिए मैं उन से दृष्टान्तों में बातें करता हूं, क्योंकि वे देखते हुए भी नहीं देख पाते और सुनते हुए भी नहीं सुन पाते, और न ही वे समझते हैं। [14]और उनके सम्बन्ध में यशायाह की यह भविष्यद्वाणी पूर्ण होती जा रही है अर्थात्, **'तुम सुनते तो रहोगे, पर न समझोगे; और देखते तो रहोगे, पर तुम्हें सुझाई न पड़ेगा; [15]क्योंकि इस जाति का मन मोटा हो गया है, और अपने कानों से लोग कठिनाई से सुनते हैं, और उन्होंने अपनी आंखें बन्द कर ली हैं कहीं ऐसा न हो कि वे अपनी आंखों से देखें, और कानों से सुनें, और मन से समझें और परिवर्तित हो जाएं, और मैं उन्हें चंगा करूं।'** [16]पर धन्य हैं तुम्हारी आंखें क्योंकि वे देखती हैं, और तुम्हारे कान कि वे सुनते हैं। [17]क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं कि बहुत से नबियों और धर्मी पुरुषों ने चाहा कि जो तुम देख रहे हो उसे देखें, परन्तु न देखा; और जो तुम सुन रहे हो सुनें, पर न सुना।

[18]"अब बोने वाले का दृष्टान्त सुनो: [19]जब कोई व्यक्ति राज्य का वचन सुनता है और उसे नहीं समझता, तो वह दुष्ट आकर, जो कुछ उसके हृदय में बोया गया था, छीन ले जाता है। यह मार्ग के किनारे की वह भूमि है जिस पर बीज बोया गया था। [20]और पथरीली भूमि जिस पर बीज बोया गया था, यह वह मनुष्य है जो वचन सुनता है और तुरन्त आनन्दपूर्वक ग्रहण करता है, [21]फिर भी अपने आप में गहरी जड़ नहीं रखता इसलिए थोड़े समय का है, और जब वचन के कारण क्लेश या सताव आता है तो वह तुरन्त ठोकर खाता है। [22]और कटीली झाड़ी में बोया गया, वह मनुष्य है जो वचन सुनता है, और संसार की चिन्ता और धन का धोखा वचन को दबा देता है और वह निष्फल हो जाता है। [23]अच्छी भूमि में बोया गया,वह मनुष्य है जो वचन को सुनकर और समझकर वास्तव में फल लाता है, कोई सौ गुणा, कोई साठ गुणा और कोई तीस गुणा।"

जंगली बीज का दृष्टान्त

[24]उसने एक और दृष्टान्त कहा: "स्वर्ग के राज्य की तुलना उस मनुष्य से की जा सकती है जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया। [25]परन्तु जब लोग सो रहे थे, तब उसका शत्रु आया और गेहूं के बीच जंगली बीज बोकर चला गया। [26]पर जब गेहूं में अंकुर निकले और फिर बालें आईं तो जंगली घास भी दिखाई दी। [27]तब दासों ने आकर स्वामी से कहा, 'हे स्वामी, क्या तू ने अपनी भूमि में अच्छा बीज नहीं बोया था? फिर उसमें जंगली घास कहां से आई?' [28]और उसने उनसे कहा, 'यह किसी शत्रु का काम है!' दासों ने उस से कहा, 'क्या तू चाहता है कि हम

जाकर उन्हें बटोर लें?' [29]परन्तु उसने कहा, 'नहीं, ऐसा न हो कि जंगली घास बटोरते समय कहीं तुम उसके साथ गेहूं भी उखाड़ दो। [30]कटनी तक दोनों को एक साथ बढ़ने दो, और कटनी के समय मैं काटने वालों से कहूंगा, "पहिले जंगली घास बटोर कर जलाने के लिए उसके गट्ठे बांध लो, परन्तु गेहूं को मेरे खलिहान में एकत्रित करो"।' "

राई के बीज और ख़मीर का दृष्टान्त

[31]उसने एक और दृष्टान्त देकर उनसे कहा, "स्वर्ग का राज्य राई के दाने के समान है जिसे एक मनुष्य ने लेकर अपने खेत में बो दिया। [32]यह अन्य सब दानों से छोटा होता है, परन्तु पूर्णतः बढ़कर बगीचे के सब पौधों से बड़ा हो जाता है और ऐसा वृक्ष बन जाता है कि **आकाश के पक्षी आकर उसकी डालियों पर बसेरा करते हैं।**"

[33]उसने एक और दृष्टान्त उनसे कहा: "स्वर्ग का राज्य ख़मीर के समान है जिसे एक स्त्री तीन पसेरी आटे में तब तक मिलाती रही जब तक आटा ख़मीरा न बन गया।"

[34]यीशु ने ये सब बातें भीड़ से दृष्टान्तों में कहीं, और वह दृष्टान्त के बिना उनसे कुछ नहीं कहता था [35]जिस से कि नबी द्वारा जो वचन कहा गया था वह पूरा हो: **"मैं दृष्टान्तों में बोलने को अपना मुंह खोलूंगा। मैं उन बातों को कहूंगा जो जगत की सृष्टि से गुप्त थीं।"**

जंगली बीज के दृष्टान्त की व्याख्या

[36]फिर वह भीड़ को छोड़कर घर आया। तब उसके चेले उसके पास आकर कहने लगे, "खेत के जंगली घास का दृष्टान्त हमें समझा दे।" [37]उसने उत्तर दिया, "जो अच्छा बीज बोता है वह मनुष्य का पुत्र है, [38]खेत तो संसार है। अच्छे बीज राज्य की सन्तान हैं। जंगली बीज दुष्ट की सन्तान हैं, [39]और शत्रु जिसने उन्हें बोया वह शैतान है। कटनी इस युग का अन्त है और फसल काटने वाले स्वर्गदूत हैं। [40]जिस प्रकार जंगली घास बटोरकर आग में जला दी जाती है, उसी प्रकार युग के अन्त में भी होगा। [41]मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा जो उसके राज्य में से सब **ठोकर के कारणों तथा कुकर्मियों** को एकत्रित करेंगे [42]और उन्हें आग के भट्ठे में डालेंगे। वहां रोना और दांत पीसना होगा। [43]तब धर्मी अपने पिता के राज्य में **सूर्य के समान चमकेंगे**। जिसके कान हों वह सुन ले।

गुप्त धन और अमूल्य रत्न

[44]"स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाया और छिपा दिया, और उसके कारण आनन्दित होकर उसने अपना सब कुछ बेच दिया और उस खेत को मोल ले लिया।

[45]"फिर स्वर्ग का राज्य सच्चे मोतियों को खोजने वाले एक व्यापारी के समान है। [46]जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला तो उसने जाकर अपना सब कुछ बेच दिया और उस मोती को खरीद लिया।

जाल का दृष्टान्त

[47]"फिर स्वर्ग का राज्य उस महाजाल के समान है जो समुद्र में डाला [illegible] हर प्रकार की मछलियों को [illegible] [48]और जब जाल भर [illegible] तट पर खींच ला[illegible] और [illegible]

अच्छी मछलियों को तो टोकरियों में इकट्ठा किया पर बुरी को फेंक दिया। 49इस युग के अन्त में ऐसा ही होगा। स्वर्गदूत आकर दुष्टों को धर्मियों से अलग करेंगे, 50और उन्हें आग के भट्ठे में डाल देंगे जहां रोना और दांत पीसना होगा।

51"क्या तुम्हारी समझ में ये सब बातें आ गईं?" उन्होंने उसको उत्तर दिया, "हां।" 52और उसने उनसे कहा, "इस लिए प्रत्येक शास्त्री जो स्वर्ग के राज्य की *शिक्षा पा चुका है, उस गृहस्थ के समान है जो अपने भण्डार से नई और पुरानी वस्तुएं निकालता है।"

53और ऐसा हुआ कि जब यीशु ये सब दृष्टान्त कह चुका तो वहां से चला गया। 54वह अपने नगर में आकर लोगों को उन के आराधनालयों में उपदेश देने लगा, और वे चकित होकर कहने लगे, "इस मनुष्य को ऐसा ज्ञान और ऐसी आश्चर्य-जनक सामर्थ कहां से प्राप्त हुई? 55क्या यह बढ़ई का पुत्र नहीं? क्या इसकी माता का नाम मरियम और इसके भाइयों के नाम याकूब, यूसुफ, शमौन और यहूदा नहीं? 56और क्या इसकी सब बहिनें हमारे बीच में नहीं रहतीं? तो इस मनुष्य को यह सब कहां से प्राप्त हुआ?" 57और उसके कारण लोगों को ठोकर लगी, पर यीशु ने उनसे कहा, "अपने नगर और अपने घर ही में नबी का निरादर होता है।" 58और लोगों के अविश्वास के कारण उस ने वहां सामर्थ के अधिक कार्य नहीं किए।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की हत्या

14 उस समय देश के चौथाई भाग के राजा हेरोदेस ने यीशु की चर्चा सुनी, 2और अपने सेवकों से कहा, "यह तो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला है। यह मृतकों में से जी उठा है, इसीलिए इसके द्वारा ये सामर्थ के कार्य हो रहे हैं।" 3क्योंकि हेरोदेस ने यूहन्ना को पकड़वाकर बन्धवा दिया था। उसने अपनी पत्नी हेरोदियास के कारण उसे जेल में डलवा दिया था। 4क्योंकि यूहन्ना उस से कहा करता था कि उसे रखना तेरे लिए न्यायोचित नहीं, 5और यद्यपि वह उसे मरवा डालना चाहता था, फिर भी लोगों से डरता था, क्योंकि वे उसे नबी मानते थे। 6पर जब हेरोदेस का जन्मदिन आया तो हेरोदियास की पुत्री ने उत्सव में नृत्य करके हेरोदेस को प्रसन्न कर दिया। 7इस पर शपथ खाकर उसने वचन दिया कि जो कुछ तू मांगे, मैं दूंगा। 8और मां के द्वारा उकसाए जाने पर उसने कहा, "एक थाल में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर मुझे यहीं दे।" 9यद्यपि वह शोकित हुआ, फिर भी अपनी शपथ तथा भोज में बैठे अतिथियों के कारण, राजा ने आदेश दिया कि दे दिया जाए। 10उसने किसी को भेजकर जेल में यूहन्ना का सिर कटवा दिया। 11और उसका सिर एक थाल में लाया गया और लड़की को दे दिया गया जिसे वह अपनी मां के पास ले गई। 12फिर यूहन्ना के चेले आकर शव को ले गए और उन्होंने उसे दफ़ना दिया। तब उन्होंने जाकर यीशु को समाचार दिया।

पांच हज़ार को खिलाना

13जब यीशु ने यह सुना, तो वह वहां से नाव पर चढ़ कर अकेले किसी निर्जन स्थान को चला गया। यह सुनकर भीड़ के लोग नगरों से पैदल उसके पीछे चल दिए। 14जब वह नाव पर से उतरा तो

52 *या, का चेला बन चुका है

उसने एक विशाल जनसमूह को देखा और उन पर तरस खाया और उनके बीमारों को चंगा किया।

[15]जब सन्ध्या हुई तो चेले उसके पास आकर कहने लगे, "यह स्थान सुनसान है और दिन ढल चुका है; इसलिए भीड़ को विदा कर कि लोग गांव में जाकर अपने लिए भोजन मोल लें।" [16]पर यीशु ने उनसे कहा, "उनको जाने की आवश्यकता नहीं: तुम्हीं उन्हें खाने को दो।" [17]उन्होंने उस से कहा, "हमारे पास यहां केवल पांच रोटियां और दो मछलियां हैं।" [18]उसने कहा, "उन्हें यहां मेरे पास ले आओ।" [19]तब लोगों को घास पर बैठाकर उसने पांच रोटियों और दो मछलियों को लिया और स्वर्ग की ओर देख कर आशिष मांगी और रोटियां तोड़ तोड़कर चेलों को दीं और चेलों ने लोगों को। [20]सब खाकर तृप्त हुए। तब उन्होंने बचे हुए टुकड़ों से भरी हुई बारह टोकरियां उठाईं। [21]खाने वालों में से, स्त्रियों और बच्चों को छोड़, पुरुषों की संख्या लगभग पांच हज़ार थी।

पानी पर यीशु का चलना

[22]तब उसने शीघ्र ही अपने चेलों को नाव पर चढ़ने के लिए विवश किया कि वे उस से पहिले उस पार जाएं, जबकि वह स्वयं ही भीड़ को विदा करने लगा। [23]भीड़ को विदा करने के पश्चात् वह पर्वत पर अकेले प्रार्थना करने के लिए चला गया। जब सन्ध्या हुई तो वह वहां अकेला था। [24]परन्तु नाव किनारे से कुछ *किलोमीटर दूर लहरों में डगमगा रही थी, क्योंकि हवा विपरीत थी। [25]सुबह के *लगभग तीन बजे झील पर चलते हुए वह उनके पास आया। [26]जब चेलों ने उसे झील पर चलते हुए देखा तो घबराकर कहने लगे, "यह तो कोई भूत है!" और डर के मारे चिल्ला उठे। [27]परन्तु यीशु ने तुरन्त उनसे बातें कीं और कहा, "साहस रखो! मैं हूं। डरो मत!" [28]तब पतरस ने उस से कहा, "प्रभु, यदि तू ही है तो मुझे पानी पर चलकर अपने पास आने की आज्ञा दे।" [29]उसने कहा, "चला आ!" और पतरस नाव से उतरकर पानी पर चलता हुआ यीशु की ओर बढ़ा। [30]परन्तु हवा को देख कर वह डर गया, और डूबने लगा तो चिल्लाया, "प्रभु, मुझे बचा!" [31]यीशु ने तुरन्त अपना हाथ बढ़ा कर उसे थाम लिया और उस से कहा, "हे अल्पविश्वासी, तू ने क्यों सन्देह किया?" [32]और जब वे नाव पर चढ़ गए तो हवा थम गई। [33]और जो लोग नाव में थे उन्होंने उसे दण्डवत् किया और कहा, "तू निश्चय ही परमेश्वर का पुत्र है!"

[34]वे पार होकर गन्नेसरत पहुंचे, [35]और वहां के लोगों ने जब उसे पहिचाना तो उन्होंने आस पास के क्षेत्रों में समाचार भेजा, और लोग बीमारों को उसके पास लाए। [36]वे उस से विनती करने लगे कि वह उन्हें उसके वस्त्र के सिरे को ही छू लेने दे और जितनों ने छुआ, वे स्वस्थ हो गए।

परम्परा का प्रश्न

15 तब यरूशलेम से कुछ फरीसी और शास्त्री यीशु के पास आकर कहने लगे, [2]"तेरे चेले पूर्वजों की परम्परा का उल्लंघन क्यों करते हैं? वे तो रोटी खाते समय हाथ नहीं धोते।" [3]उसने उत्तर दिया, "अपनी परम्परा के लि[ए] स्वयं परमेश्वर की आज्ञा का

24 *अक्षरशः, स्तादिया (एक स्तादियोन लगभग 185 मीटर के बराबर) 25 *अक्षरशः, रात्रि का

क्यों करते हो? [4]क्योंकि परमेश्वर ने कहा है, **'अपने पिता और अपनी माता का आदर कर,'** और, **'जो कोई पिता या माता को बुरा कहे वह मार डाला जाए।'** [5]परन्तु तुम कहते हो कि यदि कोई अपने पिता या माता से कहे, 'तुम्हें मुझ से जो भी लाभ पहुंच सकता था, वह परमेश्वर को अर्पित किया जा चुका है,' [6]तो उसे अपने पिता या अपनी माता का आदर करना आवश्यक नहीं, और इस प्रकार तुमने अपनी परम्परा के लिए परमेश्वर के वचन को व्यर्थ कर दिया। [7]हे पाखण्डियो! यशायाह ने तुम्हारे विषय में यह नबूवत ठीक ही की है: [8]**'ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, परन्तु इनका हृदय मुझ से दूर है। [9]ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं; और मनुष्यों की शिक्षाओं को धर्म-सिद्धान्त करके सिखाते हैं'।"**

[10]उसने भीड़ को अपने पास बुला कर उनसे कहा, "सुनो और समझो: [11]जो मुंह में जाता है, वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता, परन्तु जो मुंह से बाहर निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है।" [12]तब चेलों ने आकर उस से कहा, "क्या तू जानता है कि इस कथन को सुन कर फरीसियों ने ठोकर खाई?" [13]परन्तु उसने उत्तर दिया, "प्रत्येक पौधा जिसे मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया, उखाड़ दिया जाएगा। [14]उन्हें रहने दो; वे अन्धे मार्ग-दर्शक हैं और अन्धा यदि अन्धे को मार्ग दिखाए तो दोनों ही गड़हे में गिरेंगे।"

[15]पतरस ने कहा, "यह दृष्टान्त हमें समझा दे।"

[16]उसने कहा, "क्या तुम लोग भी अब तक नहीं समझते? [17]क्या तुम नहीं जानते कि जो कुछ मुंह में जाता है, वह पेट में जाकर मल के द्वारा निकल जाता है? [18]पर जो मुंह से बाहर आता है, वह हृदय से निकलता है, और वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। [19]क्योंकि हृदय ही से बुरे बुरे विचार, हत्याएं, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरियां, झूठी साक्षी और निन्दा निकलती हैं। [20]ये ही वे बातें हैं जो मनुष्य को अशुद्ध करती हैं, परन्तु हाथ धोए बिना भोजन करना मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता।"

[21]यीशु वहां से निकलकर सूर और सैदा के प्रदेश में चला गया। [22]और देखो, उस प्रदेश की एक कनानी स्त्री आई और चिल्लाकर कहने लगी, "हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर। मेरी पुत्री बुरी तरह से दुष्टात्मा-ग्रस्त है।" [23]परन्तु उसने उसे कुछ उत्तर न दिया। चेले उसके पास आकर कहने लगे, "इसे भेज दे, क्योंकि यह चिल्लाती हुई हमारे पीछे लगी है।" [24]परन्तु उसने उनसे कहा, "मैं केवल इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास भेजा गया हूं।" [25]परन्तु वह आई और दण्डवत् करके उस से कहने लगी, "प्रभु, मेरी सहायता कर।" [26]उसने उस से कहा, "बच्चों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे फेंकना ठीक नहीं।" [27]इस पर स्त्री ने कहा, "हां प्रभु, पर कुत्ते भी तो स्वामी की मेज़ से गिरा हुआ चूर-चार खाते हैं।" [28]तब यीशु ने कहा, "हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है। जैसा तू चाहती है, वैसा ही तेरे लिए हो।" उसकी बेटी तत्काल ही चंगी हो गई।

चार हज़ार को खिलाना

[29]वहां से चलकर यीशु गलील की झील के किनारे गया और वहां पर्वत पर चढ़कर बैठ गया। [30]और विशाल जन-

समूह उसके पास आया और वे अपने साथ लंगड़े, लूले, अन्धे, गूंगे और बहुत से अन्य लोगों को लेकर आए और उन्हें उसके चरणों में रख दिया और उसने उन्हें चंगा किया। [31]इसलिए जब भीड़ ने देखा कि गूंगे बोलते, लूले चंगे होते, लंगड़े चलते और अन्धे देखते हैं तो लोग आश्चर्यचकित हुए और उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर की महिमा की।

[32]यीशु ने अपने चेलों को पास बुलाकर कहा, "मुझे भीड़ पर तरस आता है क्योंकि ये लोग तीन दिन से मेरे साथ हैं और इनके पास खाने को कुछ भी नहीं है। मैं उन्हें भूखे भेजना नहीं चाहता, कहीं ऐसा न हो कि वे मार्ग में ही मूर्छित हो जाएं।" [33]चेलों ने उस से कहा, "हम इस निर्जन स्थान में ऐसे विशाल जनसमूह को तृप्त करने के लिए इतनी अधिक रोटियां कहां से पाएंगे?" [34]यीशु ने उनसे कहा, "तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं?" उन्होंने कहा, "सात, और थोड़ी सी छोटी मछलियां भी।" [35]तब उसने जनसमूह को भूमि पर बैठने का आदेश दिया। [36]फिर उसने सात रोटियों और मछलियों को लिया और धन्यवाद देकर उन्हें तोड़ा और चेलों को देना आरम्भ किया, और चेलों ने भीड़ को। [37]वे सब खाकर तृप्त हुए और उन्होंने बचे हुए टुकड़ों से भरे सात टोकरे उठाए। [38]जितनों ने खाया, उनमें स्त्रियों और बच्चों के अतिरिक्त चार हज़ार पुरुष थे। [39]तब भीड़ को विदा करके वह नाव पर चढ़ गया और मगदन के क्षेत्र में आया।

स्वर्गीय चिन्ह की मांग

16 फरीसियों और सदूकियों ने पास आकर उसकी परीक्षा करने के लिए उस से कहा, "हमें आकाश से कोई चिन्ह दिखा।" [2]परन्तु उसने उत्तर दिया, "जब सन्ध्या होती है तो तुम कहते हो, 'मौसम अच्छा रहेगा, क्योंकि आकाश लाल है,' [3]और प्रातःकाल, 'आज आंधी आएगी, क्योंकि आकाश लाल और डरावना है।' तुम आकाश के लक्षणों को पहिचानना तो जानते हो, पर क्या समयों के चिन्हों को नहीं पहिचानते? [4]दुष्ट और व्यभिचारिणी पीढ़ी चिन्ह ढूंढ़ती है, परन्तु योना के चिन्ह को छोड़ उसे अन्य कोई चिन्ह न दिया जाएगा।" तब वह उन्हें छोड़कर चला गया।

फरीसियों की शिक्षा का ख़मीर

[5]फिर चेले उस पार पहुंचे, परन्तु वे रोटी लेना भूल गए थे। [6]यीशु ने उनसे कहा, "देखो, फरीसियों और सदूकियों के ख़मीर से सावधान रहना।" [7]वे आपस में बातचीत करते हुए कहने लगे, "वह इसलिए कहता है क्योंकि हम रोटी नहीं लाए।" [8]परन्तु यीशु ने यह जानते हुए कहा, "हे अल्पविश्वासियो, तुम क्यों आपस में विवाद कर रहे हो कि हमारे पास रोटी नहीं है? [9]क्या तुम अब भी नहीं समझते या स्मरण करते कि जब पांच हज़ार लोगों के लिए पांच रोटियां थीं तो तुमने कितने टोकरे उठाए थे? [10]और चार हज़ार के लिए सात रोटियां थीं तो तुमने कितने टोकरे उठाए? [11]तुम क्यों नहीं समझते कि मैंने तुमसे रोटी के विषय में नहीं कहा था पर यह कि तुम फरीसियों और सदूकियों के ख़मीर से सावधान रहो?" [12]तब उनकी समझ में आया कि उसने रोटी के ख़मीर के विषय में नहीं, परन्तु फरीसियों तथा सदूकियों की शिक्षा से सावधान रहने को कहा

पतरस का यीशु को मसीह मानना

[13]जब यीशु कैसरिया फिलिप्पी के प्रदेश में आया तो अपने चेलों से यह पूछने लगा: "मनुष्य का पुत्र कौन है? लोग क्या कहते हैं?" [14]उन्होंने कहा, "कुछ तो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहते हैं, कुछ एलिय्याह और अन्य यिर्मयाह अथवा नबियों में से एक।" [15]उसने उनसे कहा, "पर तुम क्या कहते हो? मैं कौन हूं?" [16]शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र *मसीह है।"

[17]यीशु ने उस से कहा, "हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है, क्योंकि मांस और लहू ने इसे तुझ पर प्रकट नहीं किया, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है। [18]मैं तुझ से यह भी कहता हूं कि तू पतरस है और इसी चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। [19]मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा, और जो कुछ तू पृथ्वी पर बांधेगा वह स्वर्ग में बंधेगा, और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा वह स्वर्ग में खुलेगा।" [20]तब उसने चेलों को चेतावनी दी कि वे किसी से न कहें कि मैं *मसीह हूं।

मृत्यु के सम्बन्ध में भविष्यद्वाणी

[21]उस समय से यीशु मसीह अपने चेलों को बताने लगा कि अवश्य है कि मैं यरूशलेम को जाऊं और प्राचीनों, मुख्य याजकों और शास्त्रियों द्वारा बहुत दुख उठाऊं और मार डाला जाऊं और तीसरे दिन जिलाया जाऊं। [22]इस पर पतरस उसे अलग ले गया और यह कहते हुए झिड़कने लगा: "हे प्रभु, परमेश्वर न करे! तुझ पर यह कभी न होने पाए!" [23]तब उसने मुड़कर पतरस से कहा, "हे शैतान, मुझ से दूर हो! तू मेरे लिए ठोकर का कारण है, क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, परन्तु मनुष्य की बातों पर मन लगाता है।"

[24]तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे चले। [25]क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरे लिए अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा। [26]यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण खोए तो उसे क्या लाभ? अथवा मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा? [27]क्योंकि मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ पिता की महिमा में आने वाला है। **तब वह प्रत्येक मनुष्य को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा।** [28]मैं तुमसे सच कहता हूं कि यहां खड़े हुओं में से कुछ जब तक मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आता हुआ न देख लें, मृत्यु का स्वाद न चखेंगे।"

यीशु का रूपान्तर

17 यीशु छः दिन के पश्चात् पतरस और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को अपने साथ लेकर एकान्त में एक ऊंचे पर्वत पर गया। [2]उनके सामने उसका रूपान्तर हुआ। और उसका मुख सूर्य के समान चमक उठा, और उसके वस्त्र प्रकाश के समान श्वेत हो गए। [3]और देखो, मूसा और एलिय्याह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए। [4]पतरस ने यीशु से कहा, "हे प्रभु, हमारे लिए यहां रहना अच्छा है। यदि

*अक्षरशः, ख्रिस्तौस अर्थात् अभिषिक्त 20 *अक्षरशः, ख्रिस्तौस अर्थात् अभिषिक्त

तेरी इच्छा हो तो मैं यहां तीन मण्डप बनाऊं, एक तेरे लिए, एक मूसा के लिए और एक एलिय्याह के लिए।" [5]वह बोल ही रहा था कि देखो, एक उज्ज्वल बादल ने उन्हें छा लिया। और देखो, बादल में से यह वाणी हुई: "यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं। इसकी सुनो!" [6]जब चेलों ने यह सुना तो वे मुंह के बल गिरे और अत्यन्त डर गए। [7]यीशु ने पास आकर उन्हें छुआ और कहा, "उठो, डरो मत।" [8]तब उन्होंने ऊपर दृष्टि की और यीशु को छोड़ किसी को न देखा।

[9]जब वे पर्वत से नीचे उतर रहे थे, यीशु ने उन्हें आज्ञा देकर कहा, "जब तक मनुष्य का पुत्र मृतकों में से जी न उठे, इस दर्शन के विषय में किसी से न कहना।" [10]फिर उसके चेलों ने उस से पूछा, "अब शास्त्री क्यों कहते हैं कि एलिय्याह का पहिले आना अवश्य है?" [11]उसने उत्तर दिया, "एलिय्याह का आना अवश्य तो है और वह सब कुछ सुधारेगा। [12]परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि एलिय्याह आ चुका है और लोगों ने उसे नहीं पहिचाना। जो कुछ उन्होंने चाहा उसके साथ किया। इसी प्रकार मनुष्य का पुत्र भी उनके हाथों से दुख उठाएगा।" [13]तब वे समझ गए कि उसने हम से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के विषय में कहा था।

मिर्गी से पीड़ित बालक की चंगाई

[14]जब वे भीड़ के पास आए तो एक मनुष्य यीशु के पास आया और उसके सामने घुटने टेककर कहने लगा, [15]"प्रभु, मेरे पुत्र पर दया कर क्योंकि उसे मिर्गी आती है और बहुत बीमार है। वह बार बार आग में और पानी में गिर पड़ता है। [16]मैं उसे तेरे चेलों के पास लाया था पर वे उसे चंगा नहीं कर सके।" [17]यीशु ने उत्तर दिया, "हे अविश्वासी और भ्रष्ट पीढ़ी के लोगो, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा? मैं कब तक तुम्हारी सहूंगा? उसे यहां मेरे पास लाओ।" [18]यीशु ने दुष्ट आत्मा को डांटा और वह उसमें से निकल गई—और लड़का उसी घड़ी चंगा हो गया।

[19]तब चेलों ने एकान्त में यीशु के पास आकर कहा, "हम उसे क्यों न निकाल सके?" [20]उसने उनसे कहा, "अपने विश्वास की कमी के कारण, क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं कि यदि तुम में राई के दाने के बराबर भी विश्वास हो तो इस पहाड़ से कहोगे, 'यहां से हट कर वहां जा,' और वह हट जाएगा, और तुम्हारे लिए कुछ भी असम्भव न होगा। [21]*[परन्तु यह जाति प्रार्थना और उपवास के अतिरिक्त अन्य किसी उपाय से नहीं निकलती।]

[22]जब वे गलील में एकत्रित हो रहे थे, यीशु ने उनसे कहा, "मनुष्य का पुत्र लोगों के हाथों में पकड़वाया जाने वाला है, [23]और वे उसे मार डालेंगे, पर तीसरे दिन वह जिलाया जाएगा।" इस पर वे बहुत उदास हुए।

मन्दिर का कर

[24]जब वे कफरनहूम पहुंचे, तब *मन्दिर का कर वसूल करने वालों ने पतरस के पास आकर पूछा, "क्या तेरा गुरु कर नहीं चुकाता?" [25]उसने कहा, "हां, चुकाता है।" जब वह घर आया, तो यीशु ने पहिले उस से पूछा, "शमौन, तू क्या सोचता है? पृथ्वी के राजा चुंगी या

21 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में यह पद नहीं मिलता

24 *अक्षरशः, दो द्राख्मा (कर स्वरूप देना) अर्थात्, चांदी के दो सिक्के या दो दिन की मज़दूरी

कर किस से लेते हैं, अपने पुत्रों से या परायों से?" [26]उसके यह कहने पर, "परायों से," यीशु ने उस से कहा, "तब तो पुत्र कर से मुक्त हुए। [27]परन्तु ऐसा न हो कि हम उनके लिए ठोकर का कारण बनें, तू झील पर जाकर वंसी डाल, और जो मछली पहिले ऊपर आए उसे ले और उसका मुंह खोलने पर तुझे उसमें एक *सिक्का मिलेगा। उसे लेकर अपने और मेरे लिए चुका दे।"

स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन?

18 उस समय चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे, "स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा कौन है?" [2]तब उसने एक बच्चे को अपने पास बुलाया और बीच में खड़ा करके कहा, [3]"मैं तुम से सच कहता हूं कि जब तक तुम न फिरो और बच्चों के समान न बनो, तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने नहीं पाओगे। [4]जो कोई अपने आप को इस बच्चे के समान दीन बनाता है वही स्वर्ग के राज्य में सब से बड़ा है। [5]और जो कोई मेरे नाम से ऐसे एक बच्चे को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है। [6]परन्तु जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास रखते हैं, एक को भी ठोकर खिलाए तो उचित होता कि उसके गले में चक्की का भारी पाट लटकाकर उसे समुद्र की गहराई में डुबा दिया जाता।

[7]"ठोकरों के कारण संसार पर हाय! ठोकरों का आना तो अनिवार्य है, पर हाय उस मनुष्य पर जिसके द्वारा ठोकर आती है! [8]यदि तेरा हाथ या तेरा पैर तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काटकर फेंक दे; क्योंकि तेरे लिए लूला या लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना इस से कहीं उत्तम है कि तू, दो हाथ या दो पैर होते हुए, अनन्त आग में डाला जाए। [9]यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकालकर फेंक दे, क्योंकि तेरे लिए काना होकर जीवन में प्रवेश करना इस से कहीं उत्तम है कि तू दो आंख रखते हुए नरक की अग्नि में डाला जाए।

खोई हुई भेड़ का दृष्टान्त

[10]"देखो, तुम इन छोटों में से किसी एक को भी तुच्छ न जानना, क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि स्वर्ग में उनके दूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुंह सर्वदा देखते रहते हैं। [*11] [12]तुम क्या सोचते हो? यदि किसी मनुष्य की सौ भेड़ें हों और उनमें से एक भटक जाए, तो क्या वह निन्यानवे को पहाड़ पर छोड़ कर उस एक को ढूंढ़ने न जाएगा जो भटक रही है? [13]और यदि ऐसा हो कि वह उसे पा ले तो मैं तुम से सच कहता हूं कि वह उसके लिए उन निन्यानवे की अपेक्षा जो नहीं खोई थीं अधिक आनन्द मनाता है। [14]अतः तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है ऐसी इच्छा नहीं कि इन छोटों में से कोई एक भी नाश हो।

अपराधियों के प्रति व्यवहार

[15]"यदि तेरा भाई पाप करे तो जाकर उसे अकेले में समझा। यदि वह तेरी सुने तो तू ने अपने भाई को पा लिया है। [16]परन्तु यदि वह तेरी न सुने तो अपने साथ एक या दो व्यक्ति और ले जा, **जिससे कि दो या तीन गवाहों के मुंह से प्रत्येक तथ्य की पुष्टि हो जाए।** [17]यदि वह उनकी भी न सुने तो कलीसिया से कह। यदि वह कलीसिया की भी न सुने तो

27 *अक्षरशः स्तातेर अर्थात्, चांदी का एक सिक्का, 4 दिन की मजदूरी   11 *अधिकतर प्राचीन हस्तलेखों में 11 नहीं मिलता जो इस प्रकार है : क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुए को बचाने आया है।

वह तेरे लिए अन्यजाति और कर वसूल करने वाले के समान ठहरे। [18]मैं तुम से कहता हूं, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे, वह स्वर्ग में बंधेगा। और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा। [19]मैं तुम से फिर कहता हूं, यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी विनती के लिए एकमत हों, तो वह मेरे स्वर्गीय पिता की ओर से उनके लिए पूरी हो जाएगी। [20]क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम में एकत्रित होते हैं, वहां मैं उनके बीच में हूं।"

निर्दयी सेवक का दृष्टान्त

[21]तब पतरस ने आ कर उस से कहा, "प्रभु, मेरा भाई कितनी बार मेरे विरुद्ध अपराध करता रहे कि मैं उसे क्षमा करूं? क्या सात बार तक?" [22]यीशु ने उस से कहा, "मैं तुझ से यह नहीं कहता कि सात बार तक ही, वरन् सात बार के सत्तर गुने तक। [23]इसलिए स्वर्ग के राज्य की तुलना किसी ऐसे राजा से की जा सकती है जिसने अपने दासों से लेखा लेना चाहा। [24]जब वह लेखा लेने लगा तो उसके सामने एक मनुष्य लाया गया जिस पर *करोड़ों रुपए का ऋण था। [25]पर जब उसके पास ऋण चुकाने को कुछ न था तो उसके स्वामी ने आज्ञा दी कि उसे और उसकी स्त्री, बच्चे तथा जो कुछ उसके पास है, सब बेचकर ऋण चुका दिया जाए। [26]इस पर दास ने गिरकर उसे दण्डवत् किया और कहा, 'स्वामी, धैर्य रख। मैं सब कुछ चुका दूंगा।' [27]तब उस दास के स्वामी ने तरस खाकर उसे छोड़ दिया और उसका ऋण भी क्षमा कर दिया। [28]परन्तु वह दास बाहर निकला और उसकी भेंट संगी दासों में से एक से हुई जो उसका *सौ रुपए का ऋणी था। उसने इसे पकड़ा और इसका गला दबाकर कहा, 'मेरा ऋण चुका!' [29]इस पर उसका संगी दास गिरकर अनुनय-विनय करने लगा, 'धैर्य रख, मैं सब चुका दूंगा।' [30]फिर भी वह न माना और उसे तब तक के लिए बन्दीगृह में डाल दिया जब तक कि वह ऋण न चुका दे। [31]यह देख कर उसके संगी दास अत्यन्त दुखी हुए और उन्होंने जाकर अपने स्वामी को यह घटना सुनाई। [32]तब उसके स्वामी ने उसे बुलाकर कहा, 'हे दुष्ट दास! इसलिए कि तू ने मुझ से विनती की, मैंने तेरा सारा ऋण क्षमा कर दिया था। [33]तो फिर मैंने जिस प्रकार तुझ पर दया की, क्या उसी प्रकार तुझे भी अपने संगी दास पर दया नहीं करनी चाहिए थी?' [34]और उसके स्वामी ने क्रोध से भरकर उसे यातना देने वालों को सौंप दिया कि ऋण चुकाने तक उन्हीं के हाथों में रहे। [35]इसी प्रकार यदि तुम में से प्रत्येक अपने भाई को हृदय से क्षमा न करे तो मेरा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे साथ वैसा ही करेगा।"

तलाक का प्रश्न

19

फिर ऐसा हुआ कि जब यीशु ये बातें कह चुका तो गलील से विदा होकर यरदन के पार यहूदिया के प्रदेश में आया। [2]तब एक विशाल जनसमूह उसके पीछे चल पड़ा, और उसने वहां उन्हें चंगा किया।

[3]फिर कुछ फरीसी उसकी परीक्षा करने के लिए उसके पास आए और कहने लगे, "क्या पुरुष के लिए अपनी पत्नी को किसी भी कारण से तलाक देना उचित

24 *अक्षरशः दस हज़ार तोड़े, यूनानी. तालन्तोन (एक तलन्त बराबर 20 या 30 किलो वज़न की चांदी).
28 *अक्षरशः, 100 दीनार, अर्थात् चांदी के 100 सिक्के, 1 दीनार बराबर 1 दिन की मज़दूरी

है?" [4]उसने उत्तर दिया, "क्या तुमने नहीं पढ़ा कि सृष्टिकर्त्ता ने आरम्भ ही से **उन्हें नर और नारी बनाया,** [5]और कहा, **'इस कारण पुरुष अपने माता पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के प्रति आसक्त होगा और वे दोनों एक तन होंगे?'** [6]फलतः अब वे दो नहीं, परन्तु एक तन हैं। इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे कोई मनुष्य अलग न करे।" [7]उन्होंने उस से कहा, "तो फिर मूसा ने क्यों आज्ञा दी कि **उसे तलाक-पत्र देकर त्याग दे?"** [8]उसने उनसे कहा, "तुम्हारे मन की कठोरता के कारण मूसा ने पत्नी को तलाक देने की अनुमति तुम्हें दी, परन्तु आरम्भ से ऐसा नहीं था। [9]और मैं तुम से कहता हूं कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ अन्य किसी कारण से अपनी पत्नी को तलाक देकर दूसरी से विवाह करे, तो वह व्यभिचार करता है।" [10]चेलों ने उस से कहा, "यदि पुरुष का अपनी पत्नी के साथ ऐसा ही सम्बन्ध है तो अविवाहित रहना ही अच्छा है। [11]परन्तु उसने कहा, "इस बात को सब नहीं पर केवल वे ही ग्रहण कर सकते हैं, जिन्हें यह दिया गया है । [12]क्योंकि कुछ नपुंसक हैं जो अपनी माता के गर्भ से ही ऐसे जन्में। कुछ नपुंसक हैं जिन्हें मनुष्यों ने नपुंसक बना दिया, और कुछ नपुंसक ऐसे भी हैं जिन्होंने स्वर्ग के राज्य के लिए अपने आप को नपुंसक बना लिया है। जो इसे ग्रहण कर सकता है, वह ग्रहण करे।"

बच्चों को आशीर्वाद

[13]तब कुछ बच्चे उसके पास लाए गए कि वह उन पर हाथ रख कर प्रार्थना करे, परन्तु चेलों ने उन्हें झिड़का। [14]तब यीशु ने कहा, "बच्चों को मेरे पास आने दो। उन्हें मना न करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है।" [15]उन पर हाथ रखने के पश्चात् वह वहां से चला गया।

धनी नवयुवक

[16]देखो, एक मनुष्य ने उसके पास आकर कहा, "हे गुरु, मैं कौन सा भला कार्य करूं कि अनन्त जीवन पाऊं?" [17]उसने कहा, "तू मुझ से भले के विषय में क्यों पूछता है? केवल एक ही है जो भला है। यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता है तो आज्ञाओं का पालन कर।" [18]उसने पूछा, "कौन सी आज्ञाएं?" तब यीशु ने कहा, "**हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी साक्षी न देना,** [19]**अपने पिता और अपनी माता का आदर करना और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।"** [20]नवयुवक ने उस से कहा, "इन सब का तो मैं पालन करता आया हूं; फिर मुझ में क्या कमी है?" [21]यीशु ने उस से कहा, "यदि तू सिद्ध होना चाहता है तो जा, अपनी सम्पत्ति बेचकर, कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा। तब आकर मेरे पीछे चल।" [22]पर जब नवयुवक ने यह सुना तो शोकित होकर चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था।

[23]तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, "मैं तुम से सच कहता हूं कि धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है। [24]मैं तुमसे फिर कहता हूं कि किसी धनवान का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की अपेक्षा ऊंट का सुई के छिद्र में से निकल जाना अधिक सरल है।" [25]जब चेलों ने यह सुना तो वे बहुत चकित हुए और कहने लगे, "तो फिर किस का उद्धार हो सकता है?" [26]यीशु ने उनकी ओर देख

कर कहा, "मनुष्यों के लिए यह असम्भव है, परन्तु परमेश्वर के लिए सब कुछ सम्भव है।" [27]इस पर पतरस ने कहा, "देख, हम तो सब कुछ छोड़कर तेरे पीछे चल पड़े हैं। हमें क्या मिलेगा?" [28]यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम जो मेरे पीछे चले आए हो उस समय जब सब कुछ फिर नया हो जाएगा और मनुष्य का पुत्र अपने महिमामय सिंहासन पर बैठेगा तो तुम भी बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे। [29]और प्रत्येक जिसने मेरे नाम के लिए घरों, या भाइयों, या बहिनों, या पिता, या माता, या बच्चों, या खेतों को छोड़ दिया है, वह इस से कई गुना अधिक पाएगा और अनन्त जीवन का उत्तराधिकारी होगा। [30]परन्तु अनेक जो प्रथम हैं अन्तिम होंगे, और जो अन्तिम हैं, वे प्रथम होंगे।

बारी के मज़दूरों का दृष्टान्त

20 स्वर्ग का राज्य उस स्वामी के समान है जो सुबह इसलिए निकला कि मज़दूरों को अपनी दाख की बारी में काम करने के लिए लगाए। [2]उसने प्रति मज़दूर *एक रुपया प्रतिदिन ठहराकर उन्हें अपनी दाख की बारी में भेजा। [3]फिर सुबह लगभग *नौ बजे जब वह बाहर आया तो दूसरों को बाज़ार में बेकार खड़े देखा, [4]और उनसे कहा, 'तुम भी दाख की बारी में जाओ। जो ठीक है वही मैं तुम्हें दूंगा।' और वे चले गए। [5]फिर *बारह बजे और †तीन बजे के लगभग उसने बाहर निकल कर वैसा ही किया। [6]लगभग *पांच बजे फिर बाहर निकलकर उसने दूसरों को वहां खड़े पाया और उनसे कहा, 'तुम यहां दिन भर बेकार क्यों खड़े रहे?' [7]उन्होंने उस से कहा, 'क्योंकि किसी ने हमें मज़दूरी पर नहीं लगाया।' उसने कहा, 'तुम भी दाख की बारी में जाओ।'

[8]सन्ध्या होने पर दाख की बारी के स्वामी ने प्रबंधक को बुलाकर कहा, 'मज़दूरों को बुला और अन्त में आने वालों से आरम्भ करके पहिले आने वालों तक सब को मज़दूरी दे दे।' [9]लगभग पांच बजे सन्ध्या समय जो मज़दूरी पर लगाए गए थे, जब वे आए तो उन्हें एक एक *रुपया मिला। [10]जब पहिले लगाए गए मज़दूर आए तो उन्होंने समझा कि हमें अधिक मिलेगा, परन्तु उन्हें भी एक एक *रुपया ही मिला। [11]जब उन्हें *रुपया मिला तो वे यह कहकर स्वामी पर बुड़बुड़ाने लगे; [12]'ये जो बाद में आए, इन्होंने तो एक ही घंटा काम किया और तू ने उन्हें हमारे ही बराबर कर दिया, जिन्होंने दिन भर का भार उठाया और कड़ी धूप सही।' [13]पर उसने उनमें से एक को उत्तर दिया, 'मित्र, मैं तेरे साथ कोई अन्याय नहीं कर रहा हूं। क्या तू ने मेरे साथ एक रुपया मज़दूरी तय नहीं की थी? [14]जो तेरा है उसे ले और चला जा। यह मेरी इच्छा है कि जितना तुझे दिया है उतना ही इस बाद में आने वाले को भी दूं। [15]क्या मेरे लिए उचित नहीं कि जो मेरा है उस से जो चाहूं सो करूं? क्या मेरा उदार होना तेरी आंखों में खटकता है?' [16]इस प्रकार जो अन्तिम हैं, वे प्रथम होंगे। और जो प्रथम हैं, वे अन्तिम होंगे।"

पुनरुत्थान की भविष्यद्वाणी

[17]जब यीशु यरूशलेम जाने को था तो

2 *अक्षरशः, 1 दीनार 3 *अक्षरशः, तीसरे पहर 5 *अक्षरशः, छठवें घंटे †अक्षरशः, नवें घंटे
6 *अक्षरशः, ग्यारहवें घंटे 9-11 *अक्षरशः, दीनार (चांदी का सिक्का, 1 दीनार बराबर 1 दिन की मज़दूरी)

बारह चेलों को एकान्त में ले जाकर मार्ग में उनसे कहने लगा, [18]"देखो, हम यरूशलेम जा रहे हैं। मनुष्य का पुत्र मुख्य याजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़-वाया जाएगा, और वे उसे मृत्यु-दण्ड के योग्य ठहराएंगे। [19]वे उसे गैरयहूदियों के हाथों में सौंपेंगे कि उसका उपहास करें, कोड़े मारें, उसे क्रूस पर चढ़ाएं, और तीसरे दिन वह जिलाया जाएगा।"

एक मां की विनती

[20]तब जब्दी के पुत्रों की माता अपने पुत्रों के साथ उसके पास आई और दण्डवत् करके निवेदन करने लगी। [21]यीशु ने उस से कहा, "तू क्या चाहती है?" वह बोली, "आज्ञा दे कि तेरे राज्य में मेरे ये दोनों पुत्र एक तेरे दाहिने और एक तेरे बाएं बैठे।" [22]परन्तु यीशु ने उत्तर दिया, "तुम नहीं जानते कि क्या मांग रहे हो। क्या तुम वह प्याला पी सकते हो जिसे मैं पीने पर हूं?" उन्होंने कहा, "हम पी सकते हैं।" [23]उसने उनसे कहा, "मेरा प्याला तो तुम पीओगे; पर अपने दाहिने और बाएं बैठने देना मेरे अधिकार में नहीं है। यह तो उन्हीं के लिए है जिनके लिए मेरे पिता के द्वारा तैयार किया गया है।" [24]यह सुनकर दसों चेले उन दोनों भाइयों पर क्रुद्ध हुए। [25]परन्तु यीशु ने उन्हें अपने पास बुलाकर कहा, "तुम जानते हो कि गैरयहूदियों के अधिकारी उन पर प्रभुता करते हैं, और उनके बड़े लोग उन पर अधिकार जताते हैं। [26]तुम में ऐसा न हो। जो कोई तुम में बड़ा बनना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने, [27]और जो तुम में प्रधान होना चाहे वह तुम्हारा दास बने—[28]जिस प्रकार मनुष्य का पुत्र भी अपनी सेवा-टहल कराने नहीं वरन् सेवा करने और बहुतों के छुटकारे के मूल्य में अपना प्राण देने आया।

दो अन्धों को दृष्टिदान

[29]जब वे यरीहो से निकलकर जा रहे थे तो एक विशाल जनसमूह उसके पीछे चल पड़ा। [30]और देखो, मार्ग के किनारे बैठे दो अन्धे यह सुनकर कि यीशु जा रहा है, पुकार कर कहने लगे, "हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर!" [31]भीड़ के लोगों ने उन्हें डांट कर कहा कि चुप रहें, पर वे और भी ज़ोर से चिल्लाकर कहने लगे, "हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।" [32]तब यीशु ने रुक कर उन्हें बुलाया, और कहा, "तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूं?" [33]उन्होंने उस से कहा, "प्रभु, हम चाहते हैं कि हमारी आंखें खुल जाएं।" [34]यीशु ने तरस खाकर उनकी आंखों को छुआ, और तत्काल ही वे देखने लगे और उसके पीछे चल दिए।

यरूशलेम में विजय प्रवेश

21 जब वे यरूशलेम के निकट पहुंचकर जैतून पर्वत पर बैतफगे को आए, तो यीशु ने दो चेलों को भेजा, [2]और उनसे कहा, "अपने सामने के गांव में जाओ। वहां पहुंचते ही तुम्हें एक गदही के साथ उसका बच्चा बन्धा हुआ मिलेगा। उनको खोलकर मेरे पास लाओ। [3]यदि कोई तुम से कुछ कहे तो कहना, 'प्रभु को इनकी आवश्यकता है,' और वह तुरन्त उन्हें भेज देगा।" [4]यह इसलिए हुआ कि जो वचन नबी के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो: [5]"**सिय्योन की पुत्री से कहो, 'देख, तेरा राजा तेरे पास आता है; वह नम्र है, और गदहे पर, अर्थात् गदही के बच्चे पर वरन् लद्दू के**

बच्चे पर बैठा है'।" [6]चेलों ने जाकर जैसा यीशु ने उन्हें निर्देश दिया था, वैसा ही किया। [7]उन्होंने गदही और उसके बच्चे को लाकर उन पर अपने वस्त्र डाले, और वह सवार हो गया। [8]भीड़ में से बहुतों ने अपने वस्त्र मार्ग में बिछाए और दूसरों ने पेड़ों से डालियां काटकर मार्ग में बिछाईं। [9]जो भीड़ उसके आगे जा रही थी और वे भी जो उसके पीछे चले आते थे पुकार पुकारकर कह रहे थे, "दाऊद की सन्तान को होशन्ना! **धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है!** सर्वोच्च स्थान में होशन्ना!" [10]जब उसने यरूशलेम में प्रवेश किया तो सारे नगर में हलचल मच गई और सब कहने लगे, "यह कौन है?" [11]और भीड़ के लोग कह रहे थे, "यह गलील के नासरत का नबी यीशु है।"

मन्दिर से व्यापारियों का निष्कासन

[12]यीशु ने मन्दिर में प्रवेश करके उन सब को जो मन्दिर में लेन-देन कर रहे थे निकाल दिया, और सर्राफों की मेज़ों और कबूतर बेचने वालों की चौकियां उलट दीं। [13]और उसने उनसे कहा, "लिखा है, **'मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा,'** पर तुम उसे डाकुओं की खोह बनाते हो।" [14]तब अन्धे और लंगड़े, उसके पास मन्दिर में आए और उसने उन्हें चंगा किया। [15]परन्तु जब मुख्य याजकों और शास्त्रियों ने उन आश्चर्यकर्मों को जो उसने किए थे देखा और बच्चों को जो मन्दिर में यह पुकार रहे थे, 'दाऊद की सन्तान को होशन्ना,' तो वे क्रोधित हो गए, [16]और उन्होंने उस से कहा, "क्या तू सुनता है कि ये क्या कह रहे हैं?" यीशु ने उनसे कहा, "हां, पर क्या तुमने यह कभी नहीं पढ़ा: **'शिशुओं और दुधमुंहे बच्चों से तू ने अपने लिए स्तुति तैयार की है'?"** [17]तब वह उन्हें छोड़कर नगर के बाहर बैतनिय्याह को गया और वहां ठहरा।

अंजीर के पेड़ से शिक्षा

[18]प्रातःकाल नगर को लौटते समय उसे भूख लगी। [19]तो वह मार्ग के किनारे एक अंजीर के पेड़ को देखकर उसके पास गया, परन्तु उस पर पत्तों को छोड़ कुछ नहीं पाया। तब उसने उस से कहा, "अब से तुझ में कभी फल नहीं लगेंगे।" अंजीर का पेड़ उसी क्षण सूख गया। [20]यह देखकर चेले विस्मित होकर कहने लगे, "अंजीर का पेड़ तुरन्त कैसे सूख गया?" [21]यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच कहता हूं कि यदि तुम विश्वास रखो और संदेह न करो तो न केवल यह करोगे जो इस अंजीर के पेड़ के साथ किया गया, परन्तु यदि इस पर्वत से भी कहो, 'उखड़ जा और समुद्र में जा पड़,' तो यह हो जाएगा। [22]और जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास करके मांगोगे वह तुम्हें मिलेगा।"

यीशु के अधिकार पर सन्देह

[23]जब वह मन्दिर में आकर उपदेश दे रहा था तो मुख्य याजकों और प्राचीनों ने उसके पास आकर कहा, "तू किस अधिकार से यह कार्य कर रहा है, और किसने तुझे यह अधिकार दिया है?" [24]परन्तु यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं भी तुमसे एक बात पूछता हूं। यदि तुम मुझे उसका उत्तर दोगे, तो मैं भी तुम्हें बताऊंगा कि मैं किस अधिकार से ये काम करता हूं। [25]यूहन्ना का बपतिस्मा किसकी ओर से था, स्वर्ग की ओर से या मनुष्यों की ओर से?" और वे यह कहकर आपस में

विचार-विमर्श करने लगे, "यदि हम कहें, 'स्वर्ग की ओर से' तो वह हम से कहेगा, 'तब फिर तुमने उसका विश्वास क्यों नहीं किया?' [26]पर यदि हम कहें, 'मनुष्यों की ओर से,' तो हमें भीड़ का डर है, क्योंकि वे सब यूहन्ना को नबी मानते हैं।" [27]तब उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, "हम नहीं जानते।" तो उसने भी उनसे कहा, "मैं भी तुम्हें यह नहीं बताऊंगा कि किस अधिकार से ये कार्य करता हूं।

दो पुत्रों का दृष्टान्त

[28]"परन्तु तुम क्या सोचते हो? किसी मनुष्य के दो पुत्र थे और उसने पहिले के पास जाकर कहा, 'बेटे, जा, आज दाख की बारी में काम कर।' [29]और उसने उत्तर दिया, 'अच्छा, मैं जाऊंगा,' परन्तु वह नहीं गया। [30]फिर पिता ने दूसरे के पास जाकर वैसा ही कहा, परन्तु उसने उत्तर दिया, 'मैं नहीं जाऊंगा।' फिर भी इसके बाद वह पछताया और गया। [31]इन दोनों में से किसने अपने पिता की इच्छा पूरी की?" उन्होंने कहा, "दूसरे ने।" यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम से पहिले, कर वसूल करने वाले और वेश्याएं परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे। [32]क्योंकि यूहन्ना तुम्हारे पास *धार्मिकता का मार्ग दर्शाने आया और तुमने उसका विश्वास न किया। परन्तु कर वसूल करने वालों और वेश्याओं ने उसका विश्वास किया, पर यह देखकर भी तुम्हें बाद में पश्चात्ताप नहीं हुआ कि उसका विश्वास करते।

ज़मींदार और मज़दूरों का दृष्टान्त

[33]"एक और दृष्टान्त सुनो। एक स्वामी था जिसने **दाख की बारी लगाई और बाड़ा लगाकर उसे घेरा। उसने उसके अन्दर रस-कुण्ड खोदा और एक मचान बनाया** तथा उसे किसानों को ठेके पर देकर यात्रा पर चला गया। [34]जब कटनी का समय आया तो उसने अपने दासों को किसानों के पास फसल लेने के लिए भेजा। [35]परन्तु किसानों ने उसके दासों को पकड़कर एक को पीटा, दूसरे को मार डाला और तीसरे का पथराव किया। [36]फिर उसने दासों का एक और झुण्ड भेजा जो पहिले से अधिक बड़ा था, और उन्होंने उनके साथ भी वैसा ही किया। [37]परन्तु अन्त में उसने अपने पुत्र को इस आशा से उनके पास भेजा कि, 'ये मेरे पुत्र का आदर करेंगे।' [38]परन्तु जब किसानों ने पुत्र को देखा तो आपस में कहा, 'यह तो उत्तराधिकारी है। आओ, हम इसे मार डालें और इसकी मीरास छीन लें।' [39]अतः उन्होंने उसे पकड़ा और दाख की बारी के बाहर निकालकर मार डाला। [40]इसलिए जब दाख की बारी का स्वामी आएगा तो उन किसानों के साथ क्या करेगा?" [41]उन्होंने उस से कहा, "वह उन दुष्टों को बुरी रीति से नाश करेगा और दाख की बारी का ठेका दूसरे किसानों को दे देगा जो उचित समय पर उसे फल दिया करेंगे।" [42]यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुम ने पवित्रशास्त्र में कभी नहीं पढ़ा, **'जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया, वही कोने का पत्थर बन गया। यह प्रभु की ओर से हुआ और हमारी दृष्टि में अद्भुत है'**? [43]इसलिए मैं तुमसे कहता हूं कि परमेश्वर का राज्य तुमसे ले लिया जाएगा और एक ऐसी जाति को जो उसका फल लाए दे दिया

* धार्मिकता के मार्ग में आया

जाएगा। 44जो कोई इस पत्थर पर गिरेगा वह चूर-चूर हो जाएगा, परन्तु जिस किसी पर यह गिरेगा, उसे पीस कर धूल बना डालेगा।" 45जब मुख्य याजकों और फरीसियों ने उसके दृष्टान्तों को सुना तो समझ गए कि वह हमारे ही विषय में कह रहा है। 46और जब उन्होंने उसे पकड़ना चाहा तो वे भीड़ से डर गए क्योंकि लोग उसे नबी मानते थे।

विवाह-भोज का दृष्टान्त

22 यीशु ने फिर उनसे दृष्टान्तों में कहा, 2"स्वर्ग के राज्य की तुलना एक राजा से की जा सकती है जिसने अपने पुत्र के विवाह का भोज दिया। 3उसने भोज में आमन्त्रित लोगों को बुलाने के लिए अपने दास भेजे, परन्तु उन लोगों ने आना नहीं चाहा। 4फिर उसने अन्य दासों को यह कहकर भेजा: 'अतिथियों से कहो, "देखो, मैं भोज तैयार कर चुका हूं। मेरे बैल और पाले हुए पशु काटे जा चुके हैं और सब कुछ तैयार है। विवाह-भोज में आओ"।' 5परन्तु उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया और अपने मार्ग पर चल दिए, एक अपने खेत को तो दूसरा अपने व्यापार को, 6और शेष ने उसके दासों को पकड़ा और उनसे दुर्व्यवहार करके उन्हें मार डाला। 7तब राजा ने क्रोधित होकर अपनी सेना भेजी और उन हत्यारों को नाश करके उनके नगर में आग लगा दी। 8तब उसने अपने दासों से कहा, 'विवाह-भोज तो तैयार है, परन्तु वे जो बुलाए गए थे योग्य न निकले। 9इसलिए मुख्य चौराहों पर जाओ और जितने भी तुम्हें मिलें, विवाह-भोज में बुला लाओ।' 10वे दास गलियों में गए और जो भी भला या बुरा उन्हें मिला, सब को एकत्रित किया; और विवाह का घर भोज के अतिथियों से भर गया। 11पर जब भोज में सम्मिलित अतिथियों को देखने के लिए राजा आया, तो उसने वहां एक मनुष्य को देखा जो विवाह का वस्त्र पहिने हुए न था, 12और उसने उस से कहा, 'मित्र, तू यहां विवाह का वस्त्र पहिने बिना कैसे आ गया?' और वह कुछ न कह सका। 13तब राजा ने अपने नौकरों से कहा, 'उसके हाथ और पैर बान्धकर उसे बाहर अन्धकार में डाल दो। वहां रोना और दांत पीसना होगा।' 14क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं, परन्तु चुने हुए थोड़े हैं।"

कैसर को कर चुकाना

15तब फरीसियों ने जाकर आपस में विचार-विमर्श किया कि किस प्रकार उसको उसी की बातों में फंसाएं। 16अत: उन्होंने अपने चेलों को हेरोदियों के साथ उसके पास यह कहने को भेजा: "हे गुरु, हम जानते हैं कि तू सच्चा है और परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से सिखाता है, और किसी के प्रभाव में नहीं आता; क्योंकि तू किसी का पक्षपात नहीं करता। 17इसलिए हमें बता कि तू क्या सोचता है: कैसर को कर चुकाना उचित है या नहीं?" 18यीशु ने उनकी कुटिलता जानकर कहा, "हे कपटियो, तुम मुझे क्यों परख रहे हो? 19मुझे वह सिक्का दिखाओ जिस से कर चुकाया जाता है।" और वे उसके पास *एक दीनार ले आए। 20उसने उनसे कहा, "यह आकृति और लेख किसके हैं?" 21उन्होंने उस से कहा, "कैसर के।" तब उसने उनसे कहा, "जो कैसर का है वह कैसर को दो, और जो

19 *चांदी का सिक्का, 1 दिन की मजदूरी

परमेश्वर का है वह परमेश्वर को दो।" [22]यह सुनकर वे आश्चर्यचकित हुए और उसे छोड़कर चले गए।

पुनरुत्थान और विवाह

[23]उसी दिन कुछ सदूकी—जो कहते हैं कि पुनरुत्थान है ही नहीं—उसके पास आए और उस से पूछने लगे, [24]"गुरु, मूसा ने कहा था, '**यदि कोई पुरुष निःसन्तान मर जाए तो उसका भाई उसकी पत्नी से विवाह करके अपने भाई के लिए सन्तान उत्पन्न करे।**' [25]अब हमारे यहां सात भाई थे। पहिला, विवाह करके मर गया और सन्तान न होने के कारण अपनी पत्नी को अपने भाई के लिए छोड़ गया। [26]इसी प्रकार दूसरे और तीसरे ने भी किया, और सातवें तक यही हुआ। [27]और अन्त में वह स्त्री भी मर गई। [28]अतः पुनरुत्थान होने पर वह सातों में से किसकी पत्नी होगी? क्योंकि वह सब की पत्नी हो चुकी थी।" [29]परन्तु यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "तुम भूल में पड़े हो क्योंकि पवित्रशास्त्र या परमेश्वर की सामर्थ को नहीं जानते। [30]क्योंकि पुनरुत्थान होने पर लोग न तो विवाह करते और न ही विवाह में दिए जाते हैं, परन्तु स्वर्ग में वे दूतों के समान होते हैं। [31]क्या मृतकों के पुनरुत्थान के विषय में तुमने यह वचन नहीं पढ़ा जो परमेश्वर ने तुम से कहा था: [32]'**मैं इब्राहीम का परमेश्वर और इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूं**'? वह मृतकों का नहीं, परन्तु जीवतों का परमेश्वर है।" [33]जब लोगों ने यह सुना तो वे उसके उपदेश से चकित रह गए।

सब से बड़ी आज्ञा

[34]जब फरीसियों ने सुना कि उसने सदूकियों का मुंह बन्द कर दिया है तो वे एकत्रित हुए। [35]और उनमें से एक ने, जो व्यवस्थापक था, परखने के लिए उस से प्रश्न किया, [36]"हे गुरु, व्यवस्था में कौन सी आज्ञा प्रमुख है?" [37]उसने उस से कहा, "**तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे हृदय और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम कर।**" [38]यही बड़ी और प्रमुख आज्ञा है। [39]और इसी के समान दूसरी यह है: '**तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम कर।**' [40]यही दो आज्ञाएं सम्पूर्ण व्यवस्था और नबियों का आधार हैं।"

मसीह किस का पुत्र?

[41]जब फरीसी इकट्ठे थे, तब यीशु ने उनसे एक प्रश्न पूछा: [42]"*मसीह के बारे में तुम क्या सोचते हो? वह किसका पुत्र है?" उन्होंने उस से कहा, "दाऊद का।" [43]उसने उनसे कहा, "तब दाऊद आत्मा में उसे 'प्रभु' क्यों कहता है, अर्थात् [44]'**प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, "मेरे दाहिने बैठ, जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पैर तले न कर दूं"?**' [45]यदि दाऊद उसे 'प्रभु' कहता है तो वह उसका पुत्र कैसे हुआ?" [46]कोई भी उसे कुछ उत्तर न दे सका, और उस दिन से किसी को उस से और प्रश्न करने का साहस न हुआ।

शास्त्रियों और फरीसियों की भर्त्सना

23 तब यीशु ने भीड़ से और अपने चेलों से कहा, [2]"शास्त्री

*22:42 ख्रिस्तोस अर्थात्, अभिषिक्त

और फरीसी स्वयं मूसा की गद्दी पर बैठ गए हैं। [3]इसलिए जो कुछ वे तुमसे कहें उसे करना और मानना, परन्तु उनके जैसे कार्य मत करना; क्योंकि वे कहते तो हैं पर करते नहीं। [4]वे भारी बोझों को बान्धकर मनुष्यों के कन्धों पर तो लाद देते हैं, परन्तु स्वयं उन्हें अपनी उंगली से भी छूना नहीं चाहते। [5]वे अपने सब काम मनुष्यों को दिखाने के लिए करते हैं। वे अपने ताबीज़ों को चौड़ा करते, और अपने वस्त्रों की झालरें लम्बी करते हैं। [6]और भोजों में सम्मानित स्थान तथा आराधनालयों में मुख्य आसन, [7]और बाज़ारों में आदर-सत्कार पाना तथा लोगों से 'रब्बी' कहलाना उन्हें प्रिय लगता है। [8]परन्तु तुम 'रब्बी' न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरु है और तुम सब भाई हो। [9]पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है। [10]तुम अगुवे न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही अगुवा है, अर्थात् *मसीह। [11]परन्तु जो तुम में सबसे बड़ा है वह तुम्हारा सेवक होगा। [12]जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा वह नीचा किया जाएगा, और जो स्वयं को नीचा बनाएगा वह बड़ा किया जाएगा।

[13]"हे पाखण्डी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! क्योंकि तुम मनुष्यों के लिए स्वर्ग के राज्य का द्वार बन्द कर देते हो। तुम न तो स्वयं प्रवेश करते हो और न ही प्रवेश करने वालों को भीतर जाने देते हो। [14]*[हे पाखण्डी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! क्योंकि दिखावे के लिए लम्बी लम्बी प्रार्थनाएं करते हुए भी तुम विधवाओं के घरों को निगल जाते हो, इसलिए तुम्हें भारी दण्ड मिलेगा।]

[15]"हे पाखण्डी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम एक मनुष्य को अपने मत में लाने के लिए जल-थल में फिरते हो, और जब वह आ जाता है तो उसे अपने से दूना नारकीय बना देते हो।

[16]"हे अन्धे अगुवो, तुम पर हाय जो कहते हो, 'यदि कोई मन्दिर की शपथ खाए, तो कुछ नहीं, परन्तु यदि कोई मन्दिर के सोने की शपथ खाए तो वह बन्ध जाएगा।' [17]हे मूर्खो और अन्धो, क्या महत्वपूर्ण है, सोना या वह मन्दिर जो सोने को पवित्र करता है? [18]फिर कहते हो, 'यदि कोई वेदी की भेंट की शपथ खाएगा तो वह बन्ध जाएगा।' [19]हे अन्धो, क्या महत्वपूर्ण है, भेंट या वह वेदी जो भेंट को पवित्र करती है? [20]इसलिए जो शपथ खाता है, वह वेदी और उस पर रखी भेंट दोनों ही की शपथ खाता है। [21]जो मन्दिर की शपथ खाता है, वह मन्दिर व उसमें रहने वाले परमेश्वर की भी शपथ खाता है, [22]और जो स्वर्ग की शपथ खाता है, वह परमेश्वर के सिंहासन और उस पर बैठने वाले दोनों की शपथ खाता है।

[23]"हे पाखण्डी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम पोदीने, सौंफ और जीरे का दसवां अंश तो देते हो, परन्तु व्यवस्था की गंभीर बातों अर्थात् न्याय, दया और विश्वास की उपेक्षा करते हो, परन्तु चाहिए था कि इन बातों को करते हुए अन्य बातों की भी उपेक्षा न करते। [24]हे अन्धे अगुवो, तुम मच्छर को तो छान डालते हो, परन्तु ऊंट को निगल जाते हो!

[25]"हे पाखण्डी शास्त्रियो और फरी-

---

10 *अक्षरशः, ख्रिस्तौस अर्थात्, अभिषिक्त

14 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में यह पद नहीं मिलता

सियो, तुम पर हाय! तुम कटोरे और थाली को बाहर से तो मांजते हो, परन्तु भीतर से वे हर प्रकार की लूट और असंयम से भरे हुए हैं। [26]हे अन्धे फरीसी, पहिले कटोरे और थाली को भीतर से मांज जिससे कि वे बाहर से भी स्वच्छ हो जाएं।

[27]"हे पाखण्डी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम चूने से पुती हुई कबरों के समान हो जो बाहर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सारी अशुद्धता से भरी पड़ी हैं। [28]इसी प्रकार तुम भी बाहर से मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो, परन्तु भीतर पाखण्ड और अधर्म से भरे हुए हो।

[29]"हे पाखण्डी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम नबियों की कब्रें तो बनाते और धर्मियों के स्मारक सजाते हो, [30]और कहते हो, 'यदि हम अपने पूर्वजों के समय में होते, तो नबियों की हत्या में साझीदार न होते।' [31]फलतः तुम अपने विरुद्ध साक्षी देते हो कि नबियों के हत्यारों की सन्तान हो। [32]अतः तुम अपने पूर्वजों के पाप का घड़ा भर दो। [33]हे सांपो, हे करैतों के बच्चो, तुम नरक के दण्ड से कैसे बचोगे? [34]इसलिए देखो, मैं तुम्हारे लिए नबियों और ज्ञानियों और शास्त्रियों को भेज रहा हूं। तुम उनमें से कुछ की हत्या करोगे और कुछ को क्रूस पर चढ़ाओगे, फिर कुछ को अपने आराधनालयों में कोड़े मारोगे और नगर नगर सताते फिरोगे, [35]कि जितने धर्मियों का लहू पृथ्वी पर बहाया गया है, वह तुम्हारे सिर पर पड़े, अर्थात् धर्मी हाबिल से लेकर बिरिक्याह के पुत्र जकरयाह तक, जिसे तुम ने मन्दिर और वेदी के बीच मार डाला था। [36]मैं तुम से सच कहता हूं, ये सब बातें इस पीढ़ी के सिर पर पड़ेंगी।

यरूशलेम के लिए विलाप

[37]"हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! तू नबियों को मार डालता है और जो तेरे पास भेजे जाते हैं, उनका पथराव करता है। मैंने कितनी बार चाहा कि जैसे मुर्गी बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बच्चों को इकट्ठा करूं, परन्तु तुम ने न चाहा। [38]देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिए उजाड़ छोड़ा जाता है। [39]क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि अब से तुम मुझे तब तक नहीं देखोगे जब तक यह न कहोगे: '**धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है**'।"

मन्दिर के विनाश की भविष्यद्वाणी

24 जब यीशु मन्दिर से निकल कर बाहर जा रहा था तो उसके चेले मन्दिर के भवन को दिखाने उसके पास आए। [2]तब उसने उनसे कहा, "क्या तुम यह सब नहीं देखते? मैं तुमसे सच कहता हूं, यहां एक पत्थर के ऊपर दूसरा पत्थर भी न रहेगा जो ढाया न जाएगा।"

[3]जब वह जैतून पर्वत पर बैठा था तो उसके चेले एकान्त में उसके पास आकर कहने लगे, "हमें बता ये बातें कब होंगी, और तेरे आने का तथा इस युग के अन्त का क्या चिन्ह होगा?" [4]इस पर यीशु ने उत्तर दिया, "सावधान रहो, कोई तुम्हें धोखा न दे, [5]क्योंकि बहुत लोग मेरे नाम से यह कहते आएंगे, 'मैं *मसीह हूं,' और बहुतों को धोखा देंगे। [6]तुम लड़ाइयों की चर्चा और लड़ाइयों की अफ़वाह सुनोगे। देखो, भयभीत न होना, क्योंकि इनका होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न

*, ख्रिस्तौस अर्थात्, अभिषिक्त

होगा। [7]क्योंकि जाति, जाति के विरुद्ध और राज्य, राज्य के विरुद्ध उठ खड़े होंगे और बहुत से स्थानों पर अकाल पड़ेंगे और भूकम्प आएंगे। [8]परन्तु ये सब बातें तो पीड़ाओं का आरम्भ ही होंगी। [9]तब वे क्लेश दिलाने के लिए तुम्हें पकड़वाएंगे और मार डालेंगे और मेरे नाम के कारण समस्त जातियां तुमसे घृणा करेंगी। [10]उन दिनों में बहुत से लोग ठोकर खाएंगे और एक दूसरे से विश्वासघात और एक दूसरे से घृणा करेंगे। [11]तब बहुत से झूठे नबी उठ खड़े होंगे और बहुतों को भरमाएंगे। [12]अधर्म के बढ़ने के कारण बहुतों का प्रेम ठंडा पड़ जाएगा। [13]परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा। [14]राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा कि सब जातियों पर साक्षी हो, और तब अन्त आ जाएगा।

महासंकट का आरम्भ

[15]"अत: जब तुम उस **उजाड़ने वाली घृणित वस्तु को**, जिसकी चर्चा दानिय्येल नबी के द्वारा हुई थी, पवित्रस्थान में खड़ी देखो—पाठक समझ ले—[16]तो वे जो यहूदिया में हों, पर्वतों पर भाग जाएं। [17]जो घर की छत पर हो, वह घर में से कुछ लेने के लिए नीचे न उतरे। [18]जो खेत में हो, वह अपना वस्त्र लेने के लिए पीछे न लौटे। [19]उनके लिए हाय जो उन दिनों में गर्भवती होंगी और जो दूध पिलाती होंगी! [20]प्रार्थना करो कि तुम्हें शीत ऋतु में या सब्त के दिन भागना न पड़े। [21]क्योंकि ऐसा भारी क्लेश होगा जैसा न तो जगत के आरम्भ से अब तक हुआ और न कभी होगा। [22]और यदि वे दिन घटाए न जाते तो एक भी प्राणी न बचता, परन्तु चुने हुओं के कारण वे दिन घटा दिए जाएंगे। [23]तब यदि कोई तुमसे कहे, 'देखो, *मसीह यहां है' या, 'वह वहां है,' तो विश्वास न करना। [24]क्योंकि झूठे मसीह और झूठे नबी उठ खड़े होंगे तथा बड़े बड़े चिन्ह और अद्‌भुत काम दिखाएंगे, यहां तक कि यदि सम्भव हो तो चुने हुओं को भी भरमा दें। [25]देखो, मैंने पहिले ही तुम को बता दिया है। [26]इसलिए, यदि कोई तुम से कहे, 'वह जंगल में है,' तो बाहर न निकल जाना, या, 'देखो, वह कोठरियों में है,' तो विश्वास न करना। [27]क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती है, वैसे ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा। [28]जहां शव हो, वहीं गिद्ध इकट्ठे होंगे।

मनुष्य के पुत्र का पुनरागमन

[29]"उन दिनों के क्लेश के तुरन्त पश्चात् **सूर्य अन्धकारमय हो जाएगा तथा चन्द्रमा अपना प्रकाश न देगा, और आकाश से तारागण गिरेंगे, तथा आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी।** [30]तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा, और पृथ्वी की सब जातियां विलाप करेंगी, और लोग **मनुष्य के पुत्र** को सामर्थ तथा बड़े वैभव सहित आकाश **के बादलों पर आते** देखेंगे। [31]और वह **तुरही की घोर ध्वनि के साथ** अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे **चारों *दिशाओं में आकाश के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक**, उसके चुने हुओं को **एकत्रित करेंगे।**

[32]"अंजीर के वृक्ष से यह दृष्टान्त सीखो: जब उसकी डाल कोमल हो जाती और उसमें पत्तियां निकलने लगती हैं तो

23 *अक्षरश:, ख्रिस्तौस अर्थात्, अभिषिक्त 31 *अक्षरश:, वायु

तुम जान लेते हो कि ग्रीष्म ऋतु निकट है। [33]इसी प्रकार जब तुम इन सब बातों को होते देखो तो जान लेना कि वह निकट है, वरन् द्वार पर ही है। [34]मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो जाएं इस पीढ़ी का अन्त न होगा। [35]आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरे वचन कभी न टलेंगे।

जागते रहो

[36]उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता—न तो स्वर्गदूत और न ही पुत्र, परन्तु केवल पिता। [37]मनुष्य के पुत्र का आना ठीक नूह के दिनों के समान होगा। [38]क्योंकि जलप्रलय के पूर्व के दिनों में जिस प्रकार **नूह के जहाज़ में प्रवेश करने** के दिन तक लोग खाते-पीते रहे, और उनमें ब्याह-शादियां हुआ करती थीं, [39]और जब तक जलप्रलय उनको बहा न ले गया वे इसे समझ न सके, उसी प्रकार मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा। [40]उस समय दो मनुष्य खेत में होंगे; एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। [41]दो स्त्रियां चक्की पीसती होंगी; एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी। [42]इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आ जाएगा। [43]परन्तु यह निश्चय जानो कि यदि घर के स्वामी को पता होता कि चोर रात में किस समय आएगा तो वह जागता रहता और अपने घर में सेंध लगने न देता। [44]इस कारण तुम भी तैयार रहो। मनुष्य का पुत्र उस घड़ी आ जाएगा जबकि तुम सोचते भी नहीं।

[45]"ऐसा विश्वासयोग्य और बुद्धिमान कौन है, जिसे उसका स्वामी सेवकों के ऊपर अधिकारी नियुक्त करे कि ठीक समय पर उन्हें भोजन दे? [46]धन्य है वह दास जिसका स्वामी आकर उसे ऐसा ही करता पाए। [47]मैं तुमसे सच कहता हूं कि वह उसे अपनी सारी सम्पत्ति पर अधिकारी नियुक्त करेगा। [48]पर यदि वह दुष्ट दास अपने मन में कहे, 'मेरे स्वामी के आने में अभी बहुत देर है,' [49]और अपने संगी दासों को पीटने लगे और शराबियों के साथ खाने-पीने लगे, [50]तब उस दास का स्वामी ऐसे दिन आएगा जब वह उसके आने की आशा न करता हो और ऐसी घड़ी आएगा जिसे वह जानता भी न हो। [51]तब वह उसे कठोर दण्ड देगा और पाखण्डियों के साथ उसे डाल देगा। वहां रोना और दांत पीसना होगा।

दस कुंवारियों का दृष्टान्त

25 "तब स्वर्ग के राज्य की तुलना उन दस कुँवारियों से की जाएगी जो अपने दीपक लेकर दूल्हे से मिलने को निकलीं। [2]उनमें से पांच मूर्ख और पांच बुद्धिमान थीं। [3]क्योंकि मूर्खों ने जब दीपक लिए तो उन्होंने अपने साथ तेल नहीं लिया, [4]परन्तु बुद्धिमानों ने अपने दीपकों के साथ कुप्पियों में तेल भी लिया, [5]जब दूल्हे के आने में देर हो रही थी तो वे सब ऊंघने लगीं और सो गईं। [6]परन्तु आधी रात को पुकार मची: 'देखो, दूल्हा आ रहा है! उस से भेंट करने चलो!' [7]तब वे सब कुंवारियां उठ बैठीं और अपना अपना दीपक ठीक करने लगीं। [8]और मूर्खों ने बुद्धिमानों से कहा, 'हमें भी अपने तेल में से कुछ दो, क्योंकि हमारे दीपक बुझने पर हैं।' [9]परन्तु बुद्धिमानों ने उत्तर दिया, 'नहीं, यह हमारे लिए और तुम्हारे लिए पूरा न होगा। अच्छा है कि

तुम दुकानदारों के पास जाकर अपने लिए मोल लो।' [10]जब वे मोल लेने को चली गईं तो दूल्हा आ गया, और जो तैयार थीं, वे उसके साथ विवाह-भोज में अन्दर चली गईं। तब द्वार बन्द कर दिया गया। [11]बाद में वे दूसरी कुंवारियां भी आकर कहने लगीं, 'स्वामी, हे स्वामी, हमारे लिए द्वार खोल दे!' [12]परन्तु उसने उत्तर दिया, 'मैं तुमसे सच कहता हूं, मैं तुम्हें नहीं जानता।' [13]इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम न तो उस दिन को जानते हो और न ही उस घड़ी को।

तोड़ों का दृष्टान्त

[14]"फिर, यह उस मनुष्य के समान है जो यात्रा पर जाने को था और जिसने अपने दासों को बुलाकर अपनी सम्पत्ति उनको सौंप दी। [15]उसने एक को पांच *तोड़े, दूसरे को दो, और तीसरे को एक, अर्थात् प्रत्येक को उसकी योग्यता के अनुसार दिया, और यात्रा पर चला गया। [16]जिसे पांच तोड़े मिले थे, उसने तुरन्त जाकर उनसे व्यापार किया और पांच तोड़े और कमाए। [17]इसी प्रकार जिसे दो तोड़े मिले थे, उसने भी दो और कमाए। [18]पर वह जिसे एक मिला था, उसने जाकर भूमि खोदी और अपने स्वामी के तोड़े को उसमें छिपा दिया।

[19]"बहुत दिनों के पश्चात् उन दासों का स्वामी आया और उनसे लेखा लेने लगा। [20]तब वह जिसे पांच तोड़े मिले थे, उसने पांच तोड़े और लाकर कहा, 'स्वामी, तू ने मुझे पांच तोड़े सौंपे थे। देख, मैंने इनसे पांच और कमाए हैं।' [21]उसके स्वामी ने उस से कहा, 'शाबाश, हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास! तू थोड़े ही में विश्वासयोग्य रहा, मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी ठहराऊंगा। अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।'

[22]"वह जिसे दो तोड़े मिले थे, उसने आकर कहा, 'स्वामी, तू ने मुझे दो तोड़े सौंपे थे। देख, मैंने दो और कमाए हैं।' [23]स्वामी ने उस से कहा, 'शाबाश, अच्छे और विश्वासयोग्य दास! तू थोड़े ही में विश्वासयोग्य रहा, मैं तुझे बहुत सी वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा। अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।'

[24]"तब वह भी जिसे एक तोड़ा मिला था आकर कहने लगा, 'हे स्वामी, मैं जानता था कि तू कठोर मनुष्य है; जहां नहीं बोता वहां काटता है और जहां नहीं बिखेरता वहां से बटोरता है। [25]अत: मैं डर गया और जाकर तेरे तोड़े को मैंने भूमि में छिपा दिया। देख, जो तेरा है उसे ले ले।' [26]परन्तु उसके स्वामी ने उसे उत्तर दिया, 'हे दुष्ट और आलसी दास, तू यह जानता था कि जहां मैं नहीं बोता वहां से काटता हूं, और जहां बीज नहीं बिखेरता वहां से बटोरता हूं; [27]तब तो तुझे चाहिए था कि मेरा धन साहूकारों के पास रख देता, जिससे कि मैं आकर अपना धन ब्याज समेत उनसे ले लेता। [28]इसलिए इस से वह तोड़ा भी ले लो, और जिसके पास दस हैं, उसे दे दो। [29]क्योंकि प्रत्येक जिसके पास है उसको और भी दिया जाएगा और उसके पास बहुत हो जाएगा। परन्तु जिसके पास नहीं है, उस से वह भी ले लिया जाएगा जो उसके पास है। [30]इस निकम्मे दास को बाहर के अन्धियारे में डाल दो, जहां रोना और दांत पीसना होगा।'

15 *यूनानी में, तालंतीन, (एक तालंतीन बराबर २० या ३० किलो वज़न की चांदी)

न्याय का दिन

[31]"पर जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएंगे, तो वह अपने महिमामय सिंहासन पर विराजमान होगा। [32]और सब जातियां उसके सम्मुख एकत्रित की जाएंगी; और वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा, जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग करता है। [33]वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर, तथा बकरियों को बाईं ओर करेगा। [34]तब राजा अपने दाहिने हाथ वालों से कहेगा, 'हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी बनो जो जगत की उत्पत्ति से तुम्हारे लिए तैयार किया गया है। [35]क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे खाने को दिया। मैं प्यासा था और तुम ने मुझे पानी पिलाया। मैं परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया। [36]मैं नंगा था, तुम ने मुझे कपड़े पहिनाए; बीमार था, तुम ने मेरी सुधि ली; बन्दीगृह में था, तुम मुझ से मिलने आए।'

[37]"तब धर्मी उसे उत्तर देंगे, 'प्रभु, हमने तुझे कब भूखा देखा और भोजन कराया, या प्यासा देखा और पानी पिलाया? [38]और हम ने कब तुझे परदेशी देखा और अपने घर में ठहराया या नंगा देखा और कपड़े पहिनाए? [39]हम ने कब तुझे बीमार या बन्दीगृह में देखा और तुझसे मिलने आए?'

[40]"इस पर राजा उन्हें उत्तर देगा, 'मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो कुछ तुमने मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी भी एक के साथ किया, वह मेरे साथ किया।'

[41]"तब वह बाएं हाथ वालों से कहेगा, 'हे शापित लोगो, मुझ से दूर होकर उस अनन्त अग्नि में जा पड़ो जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है! [42]मैं भूखा था, तुमने मुझे कुछ खाने को नहीं दिया; प्यासा था, तुमने मुझे पानी नहीं पिलाया; [43]परदेशी था, तुमने मुझे अपने घर में नहीं ठहराया; नंगा था, तुमने मुझे कपड़े नहीं पहिनाए; बीमार और बन्दीगृह में था, तुम मेरी सुधि लेने नहीं आए।'

[44]"इस पर वे उस से पूछेंगे, 'प्रभु, हम ने कब तुझे भूखा या प्यासा, या परदेशी, या नंगा, या बीमार, या बन्दीगृह में देखा, और तेरी सेवा न की?'

[45]"तब वह उन्हें उत्तर देगा, 'मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो तुमने इन छोटे से छोटों में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया।' [46]ये लोग अनन्त दण्ड भोगेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।"

यीशु की हत्या का षड्यंत्र

26 ऐसा हुआ कि जब यीशु ये सब बातें कह चुका, तो उसने अपने चेलों से कहा, [2]"तुम जानते हो कि दो दिन के पश्चात् फसह का पर्व आ रहा है और मनुष्य का पुत्र क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए पकड़वाया जाएगा।"

[3]तब मुख्य याजक और लोगों के प्राचीन, काइफा नाम महायाजक के आंगन में एकत्रित हुए, [4]और उन्होंने आपस में यीशु को चुपचाप पकड़ने और मार डालने का षड्यंत्र रचा। [5]परन्तु वे कहते थे, "पर्व के समय नहीं, कहीं ऐसा न हो कि लोगों में दंगा हो जाए।"

बहुमूल्य इत्र

[6]जब यीशु बैतनिय्याह में शमौन

कोढ़ी के घर में था, 7तो एक स्त्री संगमरमर के पात्र में बहुमूल्य इत्र लेकर उसके पास आई, और जब वह भोजन करने बैठा तो उसे उसके सिर पर उंडेल दिया। 8परन्तु चेले यह देखकर क्रोधित हुए और कहने लगे, "यह बरबादी क्यों? 9इस इत्र को ऊंचे दाम में बेचकर कंगालों को पैसा दिया जा सकता था।" 10यह जानकर यीशु ने उनसे कहा, "तुम इस स्त्री को क्यों परेशान करते हो? क्या इसलिए कि उसने मेरे साथ भलाई की है? 11कंगाल तो तुम्हारे साथ सदा रहते हैं, परन्तु मैं तुम्हारे साथ सदा न रहूंगा। 12जब उसने मेरी देह पर यह इत्र उंडेला तो इसलिए उंडेला कि मेरे गाड़े जाने के लिए मुझे तैयार करे। 13मैं तुम से सच कहता हूं कि समस्त संसार में जहां कहीं यह सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहां इस स्त्री के कार्य का वर्णन भी उसकी स्मृति में किया जाएगा।"

यहूदा इस्करियोती का विश्वासघात

14तब बारहों में से एक, जिसका नाम यहूदा इस्करियोती था, मुख्य याजकों के पास गया, 15और उसने कहा, "यदि मैं यीशु को तुम्हारे हाथ पकड़वा दूं तो मुझे क्या दोगे?" और उन्होंने उसे चांदी के तीस सिक्के तौल कर दे दिए। 16तब से वह उसे पकड़वा देने के लिए उपयुक्त अवसर ढूंढ़ने लगा।

अन्तिम भोज

17फिर चेले अखमीरी रोटी के पर्व के पहिले दिन, यीशु के पास आकर पूछने लगे, "तू कहां चाहता है कि हम तेरे लिए फसह खाने की तैयारी करें?" 18उसने कहा, "नगर में अमुक व्यक्ति के पास जाकर उस से कहो, 'गुरु कहता है, "मेरा समय निकट है। मुझे अपने चेलों के साथ तेरे यहां फसह का पर्व मनाना है"'। 19तब यीशु की आज्ञा के अनुसार चेलों ने फसह की तैयारी की।

20जब सन्ध्या हुई तो वह बारह चेलों के साथ भोजन करने बैठा। 21जब वे भोजन कर रहे थे तो उसने कहा, "मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा।" 22इस पर वे अत्यन्त व्यथित होकर एक एक करके उस से पूछने लगे, "प्रभु, मैं तो नहीं हूं, न?" 23उसने कहा, "वह जिसने मेरे साथ कटोरे में हाथ डाला है, वही मुझे पकड़वाएगा। 24मनुष्य के पुत्र को तो, जैसा उसके विषय में लिखा गया है, जाना ही है, परन्तु हाय उस पर जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाएगा! उस मनुष्य के लिए अच्छा होता यदि वह जन्म ही न लेता।" 25तब उसके पकड़वाने वाले अर्थात् यहूदा ने कहा, "रब्बी, क्या वह मैं हूं?" उसने कहा, "तू ने स्वयं ही कह दिया।"

26जब वे भोजन कर रहे थे, यीशु ने रोटी ली और आशिष मांगकर तोड़ी और चेलों को देकर कहा, "लो, खाओ; यह मेरी देह है।" 27फिर उसने प्याला लेकर धन्यवाद दिया और उन्हें देते हुए कहा, "तुम सब इसमें से पियो, 28क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लहू है जो बहुत लोगों के निमित्त पापों की क्षमा के लिए बहाया जाने को है। 29परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि दाख का यह रस अब से लेकर उस दिन तक नहीं पीऊंगा, जब तक अपने पिता के राज्य में तुम्हारे साथ नया न पीऊं।"

[30]भजन गाने के पश्चात् वे जैतून पर्वत पर चले गए।

[31]तब यीशु ने उनसे कहा, "आज रात तुम सब मेरे कारण ठोकर खाओगे, क्योंकि लिखा है, '**मैं चरवाहे को मारूंगा और झुण्ड की भेड़ें तित्तर-बित्तर हो जाएंगी।**' [32]परन्तु जीवित होने के पश्चात् मैं तुम से पहिले गलील को जाऊंगा।" [33]इस पर पतरस ने उस से कहा, "चाहे सब के सब तेरे कारण ठोकर खाएं तो खाएं, पर मैं कभी नहीं खाऊंगा।" [34]यीशु ने कहा, "मैं तुझ से सच कहता हूं कि आज ही रात को, मुर्ग के बांग देने से पहिले, तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।"

[35]पतरस ने उस से कहा, "चाहे मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े, मैं तेरा इन्कार नहीं करूंगा।" सब चेलों ने भी यही बात कही।

गतसमनी के बगीचे में

[36]तब यीशु उनके साथ गतसमनी नामक स्थान में आया, और उसने अपने चेलों से कहा, "जब तक मैं वहां जाकर प्रार्थना करता हूं, तुम यहीं बैठो।" [37]उसने अपने साथ पतरस और जब्दी के दो पुत्रों को लिया, और व्यथित तथा व्याकुल होने लगा। [38]फिर उसने उनसे कहा, "मेरा मन बहुत उदास है, यहां तक कि मैं मरने पर हूं। यहीं ठहरो और मेरे साथ जागते रहो।" [39]फिर वह उनसे थोड़ा आगे बढ़ा और मुंह के बल गिरकर यह प्रार्थना करने लगा: "हे मेरे पिता, यदि सम्भव हो तो यह प्याला मुझ से टल जाए। फिर भी मेरी नहीं, पर तेरी इच्छा पूरी हो।" [40]तब वह चेलों के पास आया, और उन्हें सोते पाकर उसने पतरस से कहा, "क्या तुम लोग मेरे साथ एक घड़ी भी न जाग सके? [41]जागते रहो और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, परन्तु देह दुर्बल है।" [42]फिर उसने दूसरी बार जाकर यह प्रार्थना की: "हे मेरे पिता, यदि यह मेरे पीए बिना नहीं टल सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो।" [43]उसने फिर आकर उन्हें सोते पाया क्योंकि उनकी आंखें नींद से भारी थीं। [44]वह उन्हें फिर छोड़कर चला गया और फिर वही बात कहकर तीसरी बार प्रार्थना करने लगा। [45]फिर उसने चेलों के पास आकर उनसे कहा, "क्या तुम अब तक आराम से सो रहे हो? देखो, घड़ी आ पहुंची है और मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथों में पकड़वाया जाता है। [46]उठो, चलें। देखो, मेरा पकड़वाने वाला निकट आ पहुंचा है।"

यीशु की गिरफ़्तारी

[47]जब वह यह कह ही रहा था तो देखो, यहूदा जो बारहों में से एक था आ गया, और उसके साथ तलवारें और लाठियां लिए हुए एक बड़ी भीड़ थी जिसे मुख्य याजकों और लोगों के प्राचीनों ने भेजा था। [48]पकड़वाने वाले ने उन्हें यह कहकर संकेत दिया था: "जिसको मैं चूमूं, वही है। उसे पकड़ लेना।" [49]वह तुरन्त यीशु के पास आकर बोला, "हे रब्बी, नमस्कार!" और उसे चूमा। [50]यीशु ने उस से कहा, "मित्र, जिस काम के लिए तू आया है, उसे कर।" तब उन्होंने पास आकर यीशु को पकड़ा और गिरफ़्तार किया। [51]फिर देखो, यीशु के साथियों में से एक ने तलवार निकालकर महायाजक के दास पर चलाई और उसका कान काट डाला। [52]तब यीशु ने उस से कहा,

"अपनी तलवार म्यान में रख, क्योंकि जो तलवार उठाते हैं वे सब तलवार से नाश किए जाएंगे। [53]क्या तू सोचता है कि मैं अपने पिता से विनती नहीं कर सकता? और क्या वह तुरन्त ही बारह सेनाओं से अधिक स्वर्गदूतों को मुझे नहीं सौंप सकता? [54]परन्तु तब पवित्रशास्त्र का लेख कैसे पूरा होगा कि ऐसा ही होना अवश्य है?" [55]तब यीशु ने भीड़ से कहा, "क्या तुम तलवार और लाठियां लिए मुझे पकड़ने आए हो मानो कि मैं कोई डाकू हूं? मैं प्रतिदिन मन्दिर में बैठकर उपदेश दिया करता था और तुमने मुझे नहीं पकड़ा। [56]परन्तु यह सब इसलिए हुआ कि नबियों के लेख पूरे हों।" तब सब चेले उसे छोड़कर भाग गए।

कैफा के सामने यीशु

[57]जिन्होंने यीशु को पकड़ा था, वे उसे महायाजक काइफा के पास ले गए, जहां शास्त्री और प्राचीन इकट्ठे थे। [58]पतरस भी कुछ दूरी पर उसके पीछे पीछे चलकर महायाजक के आंगन तक पहुंचा और प्रवेश करके परिणाम देखने के लिए पहरेदारों के साथ बैठ गया। [59]मुख्य याजक और सारी महासभा यीशु के विरुद्ध झूठी साक्षी पाने का प्रयत्न करते रहे, जिससे कि वे उसे मार डालें। [60]परन्तु बहुत से झूठे गवाहों के आने पर भी, वे कुछ न पा सके। अन्त में दो ने आकर कहा, [61]"इस मनुष्य ने कहा है, 'मैं परमेश्वर के मन्दिर को ध्वस्त करके उसे तीन दिन में पुनः बना सकता हूं'।" [62]तब महायाजक ने खड़े होकर उस से कहा, "क्या तू उत्तर नहीं देता? ये लोग तेरे विरुद्ध क्या साक्षी दे रहे हैं?" [63]परन्तु यीशु चुप रहा। इस पर महायाजक ने उस से कहा, "मैं जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूं, कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र *मसीह है, तो हम से कह दे।" [64]यीशु ने उस से कहा, "तू ने स्वयं ही कहा। फिर भी मैं तुझ से कहता हूं कि अब से तुम **मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान के दाहिनी ओर बैठा हुआ और स्वर्ग के बादलों पर आता हुआ देखोगे।**" [65]इस पर महायाजक अपने वस्त्र फाड़कर कहने लगा, "इसने परमेश्वर की निन्दा की है! अब हमें और गवाहों की क्या आवश्यकता है? देखो, तुम यह निन्दा सुन चुके हो। [66]अब तुम्हारा क्या विचार है?" उन्होंने उत्तर दिया, "वह मृत्युदण्ड के योग्य है!" [67]तब उन्होंने उसके मुंह पर थूका, उसे घूसों से मारा और कुछ ने थप्पड़ मारकर कहा, [68]"हे मसीह, भविष्यद्वाणी करके हमें बता, किसने तुझे मारा?"

[69]पतरस आंगन में बाहर बैठा हुआ था कि एक दासी ने उसके पास आकर कहा, "तू भी तो गलील के यीशु के साथ था!" [70]परन्तु इस से इन्कार करते हुए उन सब के सामने उसने कहा, "मैं नहीं जानता कि तू क्या कह रही है।" [71]जब वह बाहर ड्योढ़ी पर गया तो एक और दासी ने उसे देख कर उनसे कहा जो वहां पर थे, "यह भी तो नासरत के यीशु के साथ था।" [72]तब उसने शपथ खाकर फिर इन्कार किया: "मैं इस मनुष्य को नहीं जानता।" [73]थोड़ी देर के बाद उन्होंने जो वहां खड़े थे पतरस के पास आकर उस से कहा, "निश्चय ही तू भी उनमें से है, क्योंकि तेरी बोली तुझे प्रकट करती है।" [74]तब वह धिक्कारने और शपथ खाने लगा:

---

63 *अक्षरशः, ख्रिस्तोस अर्थात्, अभिषिक्त

"मैं उस मनुष्य को नहीं जानता।" और तुरन्त मुर्ग ने बांग दी। [75]तब पतरस को वह बात जो यीशु ने कही थी स्मरण हो आई: "मुर्ग के बांग देने से पहले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।" और वह बाहर जाकर फूट फूट कर रोने लगा।

पिलातुस के सामने यीशु

27 जब सुबह हुई तो सब मुख्य याजकों और लोगों के प्राचीनों ने यीशु के विरुद्ध सम्मति की, कि उसे मार डालें। [2]फिर उन्होंने उसे बान्धा और ले जाकर राज्यपाल पिलातुस के हाथों में सौंप दिया।

यहूदा इस्करियोती द्वारा आत्महत्या

[3]जब यहूदा ने, जिसने उसे पकड़वाया था, यह देखा कि यीशु दोषी ठहराया गया है, तो वह पछताया, और चांदी के तीस टुकड़ों को मुख्य याजकों और प्राचीनों को लौटाकर उसने कहा, [4]"मैंने पाप किया है। मैंने निर्दोष लहू का सौदा किया है।" परन्तु उन्होंने कहा, "इस से हमें क्या? तू ही जान।" [5]तब वह उन चांदी के सिक्कों को मन्दिर में फेंक कर चला गया और उसने जाकर फांसी लगा ली। [6]तब मुख्य याजकों ने चांदी के उन सिक्कों को लेकर कहा, "इन्हें मन्दिर के कोष में रखना उचित नहीं, क्योंकि यह लहू का मूल्य है।" [7]और उन्होंने आपस में सलाह की और उन पैसों से परदेशियों को दफनाने के लिए कुम्हार का खेत मोल लिया। [8]इसी कारण से वह खेत आज भी 'लहू का खेत' कहलाता है। [9]तब वह वचन जो यिर्मयाह नबी के द्वारा कहा गया था पूरा हुआ: **"उन्होंने चांदी के तीस सिक्के, अर्थात् वह मूल्य जिसे इस्राएल की सन्तानों ने उसके लिए ठहराया था, [10]और उन्होंने उसे कुम्हार के खेत के लिए दे दिया, जैसा कि प्रभु ने मुझे निर्देश दिया था।"**

प्राणदण्ड की आज्ञा

[11]तब यीशु राज्यपाल के सामने खड़ा हुआ और राज्यपाल ने उस से पूछा, "क्या तू यहूदियों का राजा है?" तो यीशु ने उस से कहा, "ठीक, तू स्वयं ही कहता है।" [12]और जब मुख्य याजक तथा प्राचीन उस पर दोष लगा रहे थे तो उसने कोई उत्तर नहीं दिया। [13]तब पिलातुस ने उस से कहा, "क्या तू नहीं सुनता, ये तेरे विरुद्ध कितनी बातों की गवाही दे रहे हैं?" [14]परन्तु उसने उसको एक भी बात का उत्तर नहीं दिया। इस से राज्यपाल को बड़ा आश्चर्य हुआ। [15]राज्यपाल की यह रीति थी कि पर्व के समय किसी एक बन्दी को, जिसे लोग चाहते थे, छोड़ दिया करता था। [16]और उस समय उनकी कैद में बरअब्बा नामक एक कुख्यात बन्दी था। [17]जब वे इकट्ठे हुए तो पिलातुस ने उनसे कहा, "तुम किसको चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए छोड़ दूं? बरअब्बा को, या यीशु को जो मसीह कहलाता है?" [18]क्योंकि वह जानता था कि उन्होंने उसे ईर्ष्यावश पकड़वाया है। [19]और जब वह न्याय-आसन पर बैठा तो उसकी पत्नी ने उसे कहला भेजा, "इस धर्मी मनुष्य के मामले में हाथ न डालना, क्योंकि आज रात को मैंने स्वप्न में उसके कारण बहुत दुख उठाया है।" [20]परन्तु मुख्य याजकों और प्राचीनों ने भीड़ को भड़काया कि वे बरअब्बा को छोड़ने और यीशु को मार डालने की मांग करें। [21]तब राज्यपाल ने उत्तर दिया, "इन दोनों में से किसको

चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए छोड़ दूं?" उन्होंने कहा, "बरअब्बा को।" [22]पिलातुस ने उनसे कहा, "फिर मैं यीशु का, जो *मसीह कहलाता है, क्या करूं?" उन सब ने कहा, "वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।" [23]उसने कहा, "क्यों? उसने क्या बुराई की है?" परन्तु वे और भी अधिक चिल्लाकर कहने लगे, "वह क्रूस पर चढ़ाया जाए!" [24]जब पिलातुस ने देखा कि मुझ से कुछ भी बन नहीं पड़ता वरन् दंगा होने पर है, तो उसने पानी लिया और भीड़ के सामने अपने हाथ धोकर कहा, "मैं *इस मनुष्य के लहू से निर्दोष हूं। तुम्हीं जानो।" [25]इस पर लोगों ने उत्तर दिया, "इसका लहू हम पर और हमारी सन्तान पर हो!" [26]तब उसने बरअब्बा को तो उनके लिए छोड़ा, पर यीशु को कोड़े लगवाकर क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए सौंप दिया।

सैनिकों द्वारा उपहास

[27]तब राज्यपाल के सैनिक, यीशु को *प्रेटोरियुम में ले गए, और वहां उसके चारों ओर समस्त रोमी सैन्य-दल को एकत्रित कर लिया। [28]फिर उसके वस्त्र उतारकर उन्होंने उसे गाढ़े लाल रंग का चोगा पहिनाया। [29]और कांटों का मुकुट गूंथकर उन्होंने उसके सिर पर रखा और उसके दाहिने हाथ में सरकण्डा दिया। फिर उसके आगे घुटने टेक कर वे उसका उपहास करके कहने लगे, "हे यहूदियों के राजा, तेरी जय हो!" [30]उन्होंने उस पर थूका, और सरकण्डा लेकर वे उसके सिर पर मारने लगे। [31]उपहास करने के बाद उन्होंने उसका चोगा उतारा और उसी के वस्त्र उसे पहिना दिए, और क्रूस पर चढ़ाने के लिए ले चले।

यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना

[32]जब वे बाहर निकल रहे थे तो उन्हें शिमौन नामक एक कुरेनी मिला। उन्होंने उसे बेगार में पकड़ा कि उसका क्रूस उठाकर ले चले।

[33]और जब वे उस स्थान पर आए जो गुलगुता कहलाता है, अर्थात् 'खोपड़ी का स्थान,' [34]तो **उन्होंने उसे पित्त मिला हुआ दाखरस पीने को दिया,** परन्तु उसने चख कर पीना न चाहा। [35]और जब वे उसे क्रूस पर चढ़ा चुके **तो उन्होंने चिट्ठियां डाल कर उसके कपड़ों को आपस में बांट लिया।** [36]और वहां बैठकर, वे उसका पहरा देने लगे। [37]और उन्होंने उसके सिर के ऊपर उसका दोषपत्र लगाया जिसमें लिखा था, "**यह यहूदियों का राजा यीशु है।**" [38]उस समय उन्होंने उसके साथ दो डाकुओं को भी क्रूस पर चढ़ाया, एक को उसकी दाहिनी, और दूसरे को उसकी बाईं ओर। [39]वहां से आने-जाने वाले उसकी निन्दा कर रहे थे और **सिर हिला हिला कर,** [40]कह रहे थे, "हे मन्दिर को ढाने वाले और तीन दिन में बनाने वाले, अपने आप को बचा! यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो क्रूस पर से उतर आ।" [41]इसी प्रकार मुख्य याजक भी शास्त्रियों और प्राचीनों के साथ उसका ठट्ठा करते हुए कह रहे थे, [42]"इसने दूसरों को बचाया, पर अपने को नहीं बचा सकता। यह इस्राएल का राजा है—अब क्रूस पर से उतरे तब हम इस पर विश्वास करेंगे। [43]**यह परमेश्वर पर**

22 *अक्षरशः, ख्रिस्तौस अर्थात, अभिषिक्त
27 *अर्थात् राजभवन
24 *कई पाण्डुलिपियों में यह पाया जाता है: इस धर्मीजन के लहू से

भरोसा रखता है; यदि वह इस से प्रसन्न है तो अभी छुड़ा ले, क्योंकि इसने कहा था, 'मैं परमेश्वर का पुत्र हूं'।" [44]जो डाकू उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे, वे भी इसी प्रकार उसकी निन्दा कर रहे थे।

यीशु का प्राण देना

[45]*दोपहर से लेकर †तीन बजे तक सारे देश में अन्धकार छाया रहा। [46]*तीन बजे के लगभग यीशु ऊंची आवाज़ से चिल्लाया, "**एली, एली, लमा शबक्तनी?**" अर्थात्, "**हे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?**" [47]वहां खड़े हुओं में से कुछ ने यह सुनकर कहा, "यह मनुष्य एलिय्याह को पुकार रहा है।" [48]उनमें से एक ने तुरन्त दौड़कर स्पंज को सिरके में डुबाया और सरकण्डे पर रख कर उसे चूसने को दिया। [49]परन्तु शेष लोगों ने कहा, "देखें एलिय्याह उसे बचाने के लिए आता है या नहीं।" [50]तब यीशु ने फिर ऊंची आवाज़ से चिल्लाकर प्राण त्याग दिया। [51]और देखो, मन्दिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया। पृथ्वी डोल उठी, और चट्टानें भी तड़क गईं, [52]तथा कबरें खुल गईं, और सोए हुए बहुत से पवित्र लोगों के शव जीवित हो उठे। [53]और उसके पुनरुत्थान के बाद वे कब्रों में से निकलकर पवित्र नगर में गए और बहुतों को दिखाई दिए। [54]तब सूबेदार और जो लोग उसके साथ यीशु का पहरा दे रहे थे, जब उन्होंने भूकम्प तथा इन घटनाओं को देखा तो अत्यन्त भयभीत होकर कहा, "सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था!" [55]और वहां बहुत सी स्त्रियां जो यीशु की सेवा करती हुई गलील से उसके पीछे चली आई थीं, दूर से यह देख रही थीं। [56]उनमें मरियम मगदलीनी, याकूब और यूसुफ की माता मरियम, और जब्दी के पुत्रों की माता थीं।

यीशु का दफ़नाया जाना

[57]जब सन्ध्या हुई तो अरिमतियाह का यूसुफ नामक एक धनी पुरुष आया। वह भी यीशु का चेला था। [58]जब उसने पिलातुस के पास जाकर यीशु का शव मांगा तो पिलातुस ने उसे दिलवा दिया। [59]तब यूसुफ ने शव को ले जाकर स्वच्छ मलमल के कपड़े में लपेटा, [60]तथा उसे अपनी नई कबर में रखा, जो उसने चट्टान में खुदवाई थी। फिर एक भारी पत्थर को कबर के द्वार पर लुढ़काकर वह चला गया। [61]मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम वहां कबर के सामने बैठी थीं।

कबर पर पहरा

[62]दूसरे दिन, अर्थात् तैयारी के दिन के एक दिन पश्चात्, मुख्य याजकों और फरीसियों ने पिलातुस के पास इकट्ठे होकर कहा, [63]"महोदय, हमें स्मरण है कि उस धोखेबाज़ ने अपने जीते जी कहा था, 'तीन दिन के बाद मैं फिर जी उठूंगा।' [64]अतः आज्ञा दे कि तीसरे दिन तक कब्र की रक्षा की जाए, कहीं ऐसा न हो कि चेले आकर शव को चुरा ले जाएं और लोगों से कहें, 'वह मृतकों में से जी उठा है।' तब पिछला धोखा पहिले से भी बुरा होगा।" [65]पिलातुस ने उनसे कहा, "तुम्हारे पास पहरेदार हैं; जाओ, जैसे भी उसे सुरक्षित रख सको, वैसा ही करो। [66]अतः उन्होंने

*अक्षरशः, छटे घंटे †अक्षरशः नौवें घंटे 46 *अक्षरशः, नौवें घंटे

जाकर कब्र की रखवाली करवाई तथा पहरेदार बैठाकर पत्थर पर मुहर भी लगा दी।

यीशु का पुनरुत्थान

28 सब्त के बीतने पर, सप्ताह के पहिले दिन पौ फटते ही मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र देखने आईं। [2]और देखो, एक बहुत ही भारी भूकम्प हुआ, क्योंकि परमेश्वर का एक दूत स्वर्ग से उतरकर आया और पत्थर को अलग लुढ़का कर उस पर बैठ गया। [3]उसका स्वरूप बिजली का सा और उसके वस्त्र हिम के समान श्वेत थे। [4]पहरुए उसके भय से कांप उठे और मृतक से हो गए। [5]स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, "डरो मत, क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम यीशु को जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था ढूंढ़ रही हो। [6]वह यहां नहीं है, क्योंकि वह अपने कहने के अनुसार जी उठा है। आओ, उस जगह को देखो जहां वह पड़ा हुआ था। [7]उसके चेलों को शीघ्र जाकर बताओ कि वह मरे हुओं में से जी उठा है: और देखो, वह तुमसे पहिले गलील को जाएगा—वहां तुम उसे देखोगे। देखो, मैंने तुम्हें बता दिया है।" [8]इस पर वे भय और बड़े आनन्द के साथ शीघ्र कब्र से लौटीं और चेलों को यह समाचार देने के लिए दौड़ पड़ीं। [9]तब देखो, यीशु उनसे मिला और उन्हें नमस्कार कहा। वे उसके पास आईं और उन्होंने उसके पैर पकड़कर उसको दण्डवत् किया। [10]तब यीशु ने उनसे कहा, "डरो मत, जाओ और मेरे भाइयों से कहो कि वे गलील को चले जाएं, और वहां वे मुझे देखेंगे।"

पहरेदारों की सूचना

[11]वे मार्ग ही में थीं कि देखो, पहरुओं में से कुछ ने नगर में जाकर पूरा हाल मुख्य याजकों से कह सुनाया। [12]तब उन्होंने प्राचीनों के साथ एकत्रित होकर सम्मति की और सैनिकों को बहुत रुपए देकर [13]कहा, "लोगों से कहना, 'रात को जब हम सो रहे थे तो उसके चेले आकर उसे चुरा ले गए।' [14]और यदि राज्यपाल के कानों तक यह बात पहुंची तो हम उसे समझा देंगे और तुम्हें संकट से बचा लेंगे।" [15]उन्होंने रुपए लेकर, जैसा बताया गया था, वैसा ही किया। यह बात यहूदियों में दूर दूर तक फैल गई और अब तक प्रचलित है।

चेलों को दर्शन और अन्तिम आज्ञा

[16]तत्पश्चात् ग्यारह चेले गलील के उस पर्वत पर गए जिसे यीशु ने बताया था, [17]और जब उन्होंने उसे देखा तो उसको दण्डवत् किया, पर किसी किसी को सन्देह हुआ। [18]तब यीशु ने उनके पास आकर कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। [19]इसलिए जाओ और सब जातियों के लोगों को चेले बनाओ तथा उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, [20]और जो जो आज्ञाएं मैंने तुम्हें दी हैं उनका पालन करना सिखाओ। और देखो, मैं युग के अन्त तक सदैव तुम्हारे साथ हूं।"

मरकुस
रचित सुसमाचार

यीशु का अग्रदूत

1 परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ। [2]जैसा कि यशायाह नबी ने लिखा है, "**देख, मैं तेरे आगे अपना दूत भेजता हूं, जो तेरा मार्ग तैयार करेगा;** [3]**जंगल में पुकारने वाले की यह आवाज़, 'प्रभु का मार्ग तैयार करो, उसकी सड़कें सीधी करो'।**" [4]यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला पापों की क्षमा के लिए मन-परिवर्तन के बपतिस्मा का प्रचार करता हुआ जंगल में आया। [5]और यहूदिया का सारा प्रदेश और यरूशलेम के समस्त निवासी उसके पास आने, और अपने पापों का अंगीकार कर के यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लेने लगे। [6]यूहन्ना तो ऊंट के रोएं का वस्त्र पहिना करता और कमर में चमड़े का कटिबन्ध बान्धा करता तथा टिड्डियां और वनमधु खाया करता था। [7]और यह कहते हुए प्रचार किया करता था, "मेरे पश्चात् एक आता है जो मुझ से अधिक सामर्थी है, और मैं इस योग्य भी नहीं कि झुक कर उसकी चप्पल के बन्ध खोलूं। [8]मैंने तो तुम्हें पानी *से बपतिस्मा दिया है, परन्तु वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा।"

यीशु का बपतिस्मा और परीक्षा

[9]उन दिनों ऐसा हुआ कि यीशु ने गलील के नासरत से आकर यूहन्ना से यरदन में बपतिस्मा लिया। [10]और जैसे ही वह पानी में से निकला तो उसने आकाश को खुलते हुए और आत्मा को कबूतर की भांति अपने ऊपर उतरते देखा; [11]तब स्वर्ग से यह आवाज़ आई: "तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से अति प्रसन्न हूं।"

[12]और आत्मा ने तुरन्त उसे जंगल की ओर जाने को प्रेरित किया। [13]और चालीस दिन तक जंगल में उसकी परीक्षा शैतान द्वारा होती रही। वह वहां जंगली जन्तुओं के साथ रहा और स्वर्गदूत उसकी सेवा-टहल करते थे।

प्रथम चेलों का बुलाया जाना

[14]यूहन्ना के बन्दी बना लिए जाने के बाद यीशु तो परमेश्वर का सुसमाचार

*: अनुवाद में, साथ या द्वारा भी हो सकता है

सुनाता हुआ गलील को आया, [15]और यह कहने लगा, "समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट है, मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।"

[16]जब वह गलील की झील के किनारे किनारे जा रहा था, तो उसने शमौन तथा उसके भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा, क्योंकि वे मछुए थे। [17]यीशु ने उनसे कहा, "मेरे पीछे चलो, मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुए बनाऊंगा।" [18]वे तुरन्त जालों को छोड़कर उसके पीछे चल पड़े। [19]कुछ आगे बढ़ने पर उसने जब्दी के पुत्र याकूब और उसके भाई यूहन्ना को नाव में जालों को सुधारते देखा। [20]उसने तुरन्त उन्हें बुलाया; और वे अपने पिता जब्दी को मज़दूरों के साथ नाव पर छोड़कर उसके पीछे चल पड़े।

दुष्टात्मा का निकाला जाना

[21]फिर वे कफरनहूम में आए, और तुरन्त सब्त के दिन वह आराधनालय में जाकर उपदेश देने लगा। [22]और वे उसके उपदेश से चकित हुए, क्योंकि वह उन्हें शास्त्रियों के समान नहीं, वरन् अधिकार से उपदेश दे रहा था। [23]उसी समय उनके आराधनालय में एक मनुष्य था जिसको अशुद्ध आत्मा लगी थी। वह यह कहकर चिल्ला उठी, [24]"हे यीशु नासरी, हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नाश करने आया है? मैं जानती हूं तू कौन है—परमेश्वर का पवित्र जन!" [25]यीशु ने उसे डांट कर कहा, "चुप रह, और उस में से निकल जा।" [26]तब अशुद्ध आत्मा उसको मरोड़कर ऊंचे स्वर से चिल्लाते हुए उसमें से निकल गई! [27]वे सब आश्चर्यचकित रह गए, और आपस में वाद-विवाद करते हुए कहने लगे, "यह क्या बात है? अधिकारपूर्ण नई शिक्षा! वह अशुद्ध आत्माओं तक को आज्ञा देता है, और वे उसकी मानती हैं।" [28]अतः उसके बारे में यह समाचार तुरन्त ही गलील के आसपास के सारे प्रदेश में फैल गया।

बहुतों को चंगा करना

[29]वे आराधनालय से निकलने के पश्चात् तुरन्त याकूब और यूहन्ना के साथ शमौन और अन्द्रियास के घर आए। [30]वहां शमौन की सास ज्वर से पीड़ित पड़ी थी; और उन्होंने तुरन्त उसके विषय में उसे बताया। [31]उसने उसके पास आकर उसे हाथ पकड़कर उठाया। उसका ज्वर उतर गया, और वह उनकी सेवा-टहल करने लगी।

[32]सन्ध्या समय, सूर्यास्त के पश्चात् लोग सब बीमारों को और जिनमें दुष्टात्माएं समाई हुई थीं यीशु के पास लाने लगे। [33]और सारा नगर द्वार पर इकट्ठा हो गया। [34]उसने बहुतों को जो विभिन्न प्रकार की बीमारियों से पीड़ित थे, चंगा किया, और बहुत सी दुष्टात्माओं को निकाला; और वह दुष्टात्माओं को बोलने की अनुमति नहीं देता था, क्योंकि वे उसे जानती थीं कि वह कौन है।

एकान्त में प्रार्थना

[35]भोर को जब अन्धेरा ही था वह उठा और बाहर निकल कर एकान्त में गया और वहां प्रार्थना करने लगा। [36]तब शमौन और उसके साथी उसको खोजने लगे, [37]और उन्होंने उसे पाकर "सब लोग तुझे ढूंढ़ रहे हैं" उनसे कहा, "आओ हम और

पास की बस्तियों में जाएं, कि मैं वहां भी प्रचार कर सकूं; क्योंकि मैं इसीलिए निकला हूं।" 39अत: वह सारे गलील में उन के आराधनालयों में जाकर प्रचार करता और दुष्टात्माओं को निकालता रहा।

कोढ़ी का शुद्ध किया जाना

40एक कोढ़ी उसके पास आया और उसके सम्मुख घुटने टेक कर उस से विनती करके कहने लगा, "यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।" 41उसने उस पर तरस खाकर अपना हाथ बढ़ाया, और उसे छूकर उससे कहा, "मैं चाहता हूं; तू शुद्ध हो जा।" 42और तुरन्त उसका कोढ़ जाता रहा और वह शुद्ध हो गया। 43फिर उसने कड़ी चेतावनी देकर उसे तुरन्त भेज दिया, 44और उससे कहा, "देख, किसी से कुछ न कहना, परन्तु जाकर अपने आप को याजक को दिखा और शुद्ध होने के विषय में मूसा ने जो कुछ आज्ञा दी है उसे भेंट चढ़ा जिससे उन पर साक्षी हो।" 45परन्तु वह बाहर जाकर इस विषय का यहां तक प्रचार करने लगा कि यीशु फिर खुले आम किसी नगर में प्रवेश न कर सका, परन्तु जंगली स्थानों में रहा; और चारों ओर से लोग उसके पास आते रहे।

लकवे के रोगी का चंगा किया जाना

2 कई दिनों के पश्चात् जब वह कफरनहूम को लौटा तो सुना गया कि वह घर में है। 2और बहुत से लोग एकत्रित हो गए, यहां तक कि द्वार के पास भी जगह नहीं थी, और वह उन्हें वचन सुना रहा था। 3और लोग लकवे के एक रोगी को चार मनुष्यों द्वारा उठवाकर उसके पास लाए। 4पर जब भीड़ के कारण उसके पास तक न पहुंच सके, तो वे उस छत को जहां वह था हटाने लगे; और जब उन्होंने खोदकर जगह बना ली, तो उस खाट को जिस पर लकवे का रोगी पड़ा था, नीचे उतार दिया। 5और यीशु ने उनके विश्वास को देख कर लकवे के उस रोगी से कहा, "हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए।" 6वहां पर कुछ शास्त्री बैठे हुए अपने अपने मन में तर्क-वितर्क कर रहे थे, 7"यह मनुष्य ऐसा क्यों बोलता है? यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है; परमेश्वर के अतिरिक्त और कौन पाप क्षमा कर सकता है?" 8यीशु ने तुरन्त अपने आत्मा में यह जानकर कि वे अपने मन में इस तरह तर्क-वितर्क कर रहे हैं, उनसे कहा, "तुम क्यों अपने अपने मन में इन बातों के विषय तर्क कर रहे हो? 9सहज क्या है, इस लकवे के रोगी से यह कहना, 'तेरे पाप क्षमा हुए' या यह, 'उठ और अपनी खाट उठाकर चल?' 10परन्तु इसलिए कि तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को इस पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है," उसने लकवे के रोगी से कहा, 11"मैं तुझसे कहता हूं, 'उठ, अपनी खाट उठा और घर जा'।" 12वह उठा और तुरन्त अपनी खाट उठाकर सब लोगों के देखते हुए बाहर चला गया; और वे सब चकित हुए और परमेश्वर की महिमा करते हुए कहने लगे, "ऐसा तो हमने कभी नहीं देखा।"

लेवी का बुलाया जाना

13वह फिर बाहर निकलकर झील के किनारे गया, और बड़ी भीड़ उसके पास आती थी, और वह उन्हें उपदेश देता था। 14जाते समय उसने हलफई के पुत्र लेवी को चुंगी-चौकी में बैठे देखा, और उसने

उससे कहा, "मेरे पीछे आ।" वह उठा और उसके पीछे चल दिया।

[15]फिर ऐसा हुआ कि जब वह उसके घर में भोजन कर रहा था तो अनेक चुंगी लेने वाले और पापी भी, यीशु और उसके चेलों के साथ भोजन कर रहे थे; क्योंकि वे बहुत थे और उसके पीछे चल पड़े थे। [16]जब फरीसियों में से कुछ शास्त्रियों ने देखा कि वह पापियों और चुंगी लेने वालों के साथ भोजन कर रहा है तो उसके चेलों से कहने लगे, "वह चुंगी लेने वालों और पापियों के साथ क्यों खाता-पीता है?" [17]यह सुनकर यीशु ने उनसे कहा, "भले चंगों को वैद्य की आवश्यकता नहीं, परन्तु बीमारों को है। मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने आया हूं।"

उपवास का प्रश्न

[18]यूहन्ना के चेले और फरीसी उपवास किया करते थे; और वे आकर उससे कहने लगे, "यूहन्ना के चेले और फरीसियों के चेले तो उपवास रखते हैं, परन्तु तेरे चेले क्यों उपवास नहीं रखते?" [19]यीशु ने उनसे कहा, "जब तक दूल्हा बरातियों के साथ रहता है, तो क्या बराती उपवास करते हैं? जब तक दूल्हा उनके साथ है वे उपवास नहीं कर सकते। [20]परन्तु वे दिन आएंगे जब दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा, और तब उस दिन वे उपवास करेंगे। [21]कोरे कपड़े का पैवन्द पुराने वस्त्र पर कोई नहीं लगाता; नहीं तो पैवन्द उसमें से खींच लेगा अर्थात् नया पुराने में से और वह पहिले से भी अधिक फट जाएगा। [22]नए दाखरस को पुरानी मशकों में कोई नहीं भरता, नहीं तो दाखरस मशकों को फाड़ देगा और दाखरस और मशकें दोनों नष्ट हो जाएंगे; परन्तु नए दाखरस को नई मशकों में भरा जाता है।"

सब्त का प्रभु

[23]ऐसा हुआ कि वह सब्त के दिन खेतों में से होकर जा रहा था, और उसके चेले चलते-चलते बालें तोड़ने लगे। [24]और फरीसी उससे कहने लगे, "देख ये ऐसा काम क्यों कर रहे हैं जो सब्त के दिन करना उचित नहीं?" [25]तब उसने उनसे कहा, "क्या तुमने कभी यह नहीं पढ़ा कि जब दाऊद और उसके साथियों को भूख लगी और आवश्यकता पड़ी तो दाऊद ने क्या किया? [26]उसने कैसे अबियातार महायाजक के समय में, परमेश्वर के भवन में जाकर अर्पण की रोटियां खाईं जिनका खाना याजकों को छोड़ और किसी को उचित नहीं, और उसने अपने साथियों को भी दीं?" [27]फिर उसने उनसे कहा, "सब्त मनुष्यों के लिए बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के लिए। [28]इसलिए मनुष्य का पुत्र सब्त का भी स्वामी है।"

सूखे हाथ वाले की चंगाई

3 और वह फिर आराधनालय में गया। वहां एक मनुष्य था जिसका हाथ सूख गया था। [2]वे उस पर दोष लगाने के लिए उसकी ताक में थे कि देखें, वह सब्त के दिन उसे चंगा करता है या नहीं। [3]उसने सूखे हाथ वाले मनुष्य से कहा, "उठ, बीच में खड़ा हो।" [4]उसने उनसे कहा, "सब्त के दिन भला करना उचित है या बुरा करना, प्राण को बचाना या घात करना?" परन्तु वे चुप रहे। [5]उसने चारों ओर उनको क्रोध भरी दृष्टि से देखा और उनके हृदय की दुखी होकर उसने उस

"अपना हाथ बढ़ा।" उसने उसे बढ़ाया, और उसका हाथ फिर अच्छा हो गया। [6]तब फरीसी बाहर निकले और तुरन्त यीशु के विरुद्ध हेरोदियों के साथ सम्मति करने लगे कि किस प्रकार उसे नाश करें।

[7]यीशु अपने चेलों के साथ झील को चला गया। गलील से एक विशाल जन-समूह उसके पीछे चला तथा यहूदिया, [8]यरूशलेम, इदूमिया, यरदन के उस पार तथा सूर और सैदा के आसपास से भी बड़ी भीड़ उसके सब कार्यों के विषय में सुनकर उसके पास आई। [9]उसने अपने चेलों से कहा कि भीड़ के कारण एक नाव उसके लिए तैयार रखी जाए जिससे कि भीड़ उसे घेर न ले, [10]क्योंकि उसने बहुतों को चंगा किया था, और परिणामस्वरूप वे सब जो रोग-ग्रस्त थे, उसे स्पर्श करने के लिए उसके चारों ओर गिरे पड़ते थे। [11]और जब कभी अशुद्ध आत्माएं उसे देखतीं थीं तो उसके आगे गिर पड़ती थीं, और चिल्लाकर कहती थीं, "तू परमेश्वर का पुत्र है।" [12]और वह उन्हें बार बार चिताया करता था कि उसे प्रकट न करें।

बारह प्रेरितों की नियुक्ति

[13]फिर वह पहाड़ पर चढ़ गया और जिन्हें चाहा उन्हें अपने पास बुलाया, और वे उसके पास आए। [14]तब उसने उनमें से बारह को नियुक्त किया कि वे उसके साथ रहें और कि वह उन्हें प्रचार करने के लिए भेजे, [15]और वे दुष्टात्माओं को निकालने का अधिकार रखें। [16]फिर उसने इन बारहों को नियुक्त किया: शमौन, जिसका नाम उसने पतरस रखा, [17]और जब्दी का पुत्र याकूब, और याकूब का भाई यहन्ना जिसका नाम उसने बूअनरगिस अर्थात् गर्जन का पुत्र रखा; [18]और अन्द्रियास, और फिलिप्पुस, और बरतुल्मै, और मत्ती, और थोमा, और हलफई का पुत्र याकूब और तद्दै और शमौन कनानी, [19]और यहूदा इस्क-रियोती, जिसने उसे पकड़वा भी दिया।

पवित्र आत्मा की शक्ति

[20]और वह घर आया और फिर एक ऐसा विशाल जनसमूह एकत्रित हो गया कि वे भोजन भी न कर सके। [21]जब यीशु के कुटुम्बियों ने यह सुना, तो वे उसे पकड़ने के लिए निकले, क्योंकि उनका कहना था, "उसका चित्त ठिकाने नहीं।" [22]तब शास्त्री जो यरूशलेम से आए हुए थे, कह रहे थे, "इसमें *बालजबूल समाया है," और, "वह दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है।" [23]तब उसने उन्हें अपने पास बुलाया और उनसे दृष्टान्तों में कहने लगा, "शैतान कैसे शैतान को निकाल सकता है? [24]यदि किसी राज्य में ही फूट पड़ जाए, तो वह राज्य स्थिर नहीं रह सकता। [25]यदि किसी घर में फूट पड़ जाए तो वह घर स्थिर नहीं रह सकता। [26]और यदि शैतान अपने ही विरुद्ध उठ खड़ा हो और उसमें फूट पड़ जाए, तो वह स्थिर नहीं रह सकेगा, परन्तु यह उसका अन्त होगा! [27]परन्तु कोई मनुष्य किसी बलवान मनुष्य के घर में घुसकर उसकी सम्पत्ति नहीं लूट सकता जब तक कि वह उस बलवान मनुष्य को पहिले बांध न ले। इसके बाद ही वह उसके घर को लूट सकेगा। [28]मैं तुम से सच कहता हूं, मनुष्यों की सन्तान के सब पाप और निन्दा जो वे करते हैं क्षमा किए जाएंगे, [29]परन्तु

* [illegible], शैतान

जो कोई पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा करता है उसे कभी भी क्षमा न किया जाएगा, परन्तु वह अनन्त पाप का दोषी ठहरता है"—30क्योंकि वे यह कह रहे थे, "उसमें अशुद्ध आत्मा है।"

यीशु के भाई और उसकी माता

31तब उसकी माता और उसके भाई वहां पहुंचे, और बाहर खड़े होकर उसे बुलवा भेजा। 32और भीड़ उसके चारों ओर बैठी थी, और उन्होंने उस से कहा, "देख, तेरी माता और तेरे भाई बाहर तुझे ढूंढ़ रहे हैं।" 33उसने उत्तर देते हुए उनसे कहा, "मेरी माता और मेरे भाई कौन हैं?" 34और अपने चारों ओर बैठे हुए लोगों की ओर दृष्टि डालकर उसने कहा, "देखो, मेरी माता और मेरे भाई! 35क्योंकि जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वही मेरा भाई और बहिन और माता है।"

बीज बोने वाले का दृष्टान्त

4 वह फिर झील के किनारे उपदेश देने लगा। और उसके पास इतना विशाल जनसमूह एकत्रित हो गया कि वह झील में एक नाव पर चढ़कर बैठ गया, और सारा जनसमूह झील के किनारे भूमि पर खड़ा रहा। 2वह दृष्टान्तों में उन्हें बहुत सी बातें सिखाने लगा और वह अपने उपदेश में उनसे कह रहा था, 3"सुनो! देखो, एक बीज बोने वाला बीज बोने निकला 4जब वह बो रहा था तो कुछ बीज मार्ग के किनारे गिरे और चिड़ियों ने आकर उन्हें चुग लिया। 5और कुछ बीज पथरीली भूमि पर गिरे जहां उन्हें अधिक मिट्टी न मिली, और गहरी मिट्टी न मिलने के कारण वे शीघ्र उग आए, 6और जब सूर्य उदय हुआ तो झुलस गए और जड़ न पकड़ने के कारण सूख गए। 7कुछ बीज कटीली झाड़ियों में गिरे और झाड़ियों ने बढ़कर उनको दबा दिया, और उनमें फसल न लगी। 8परन्तु कुछ बीज अच्छी भूमि पर गिरे, और जब वे उग कर बढ़े तो फलवन्त होकर कोई तीस गुणा, कोई साठ गुणा और कोई सौ गुणा फल लाए।" 9और वह कह रहा था, "जिसके पास सुनने के लिए कान हों, वह सुन ले।"

10जैसे ही वह अकेला रह गया, उसके अनुयायी तथा बारह चेले उस से दृष्टान्तों के सम्बन्ध में पूछने लगे। 11उसने उनसे कहा, "तुम पर तो परमेश्वर के राज्य का भेद प्रकट किया गया है, परन्तु बाहरवालों के लिए प्रत्येक बात दृष्टान्तों में कही जाती है, 12जिससे कि वे **देखते हुए तो देखें पर उन्हें सूझ न पड़े, और सुनते हुए सुनें पर समझ न सकें कि कहीं ऐसा न हो कि वे फिरें और क्षमा प्राप्त करें।**" 13फिर उसने उनसे कहा, "क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं समझते? तो फिर सब दृष्टान्तों को कैसे समझोगे? 14बोने वाला वचन बोता है। 15और ये वे हैं जो मार्ग के किनारे के हैं जहां वचन बोया जाता है, और जब वे सुनते हैं, तो शैतान तुरन्त आकर उनमें बोए गए वचन को उठा ले जाता है। 16उसी प्रकार ये लोग बीज बोई गई पथरीली भूमि के समान हैं। जब वे वचन को सुनते हैं तो तुरन्त उसे आनन्दपूर्वक ग्रहण कर लेते हैं, 17वे अपने आप में गहरी जड़ नहीं रखते और थोड़े ही समय के लिए रहते हैं, परन्तु जब वचन के कारण उन पर कष्ट या सताव आता है तो वे तुरन्त ठोकर खाते हैं। 18और कुछ वे हैं जो कटीली झाड़ी में बीज बोई गई भूमि के समान हैं, जो वचन को सुनते

[19]पर संसार की चिन्ताएं और धन का धोखा और अन्य वस्तुओं का लोभ उनमें समाकर वचन को दवा देता है और वह निष्फल हो जाता है। [20]और ये वे हैं जो बोई गई अच्छी भूमि के समान हैं और वे वचन को सुनते और उसे ग्रहण करते हैं और तीस गुणा, साठ गुणा और सौ गुणा फल लाते हैं।"

दीपक का दृष्टान्त

[21]वह उनसे कह रहा था, "क्या दीपक को इसलिए लाते हैं कि उसे टोकरी या पलंग के नीचे रखा जाए? क्या इसलिए नहीं लाया जाता कि उसे दीवट पर रखा जाए? [22]क्योंकि कुछ भी छिपा नहीं जो प्रकट नहीं किया जाए; न ही कुछ गुप्त है जो प्रकाश में न आए। [23]यदि किसी के पास सुनने के कान हों, तो वह सुन ले।" [24]फिर यीशु ने उनसे कहा, "चौकस रहो कि क्या सुनते हो। जिस माप से तुम मापते हो उसी माप से तुम्हारे लिए मापा जाएगा; और इससे भी अधिक तुम को दिया जाएगा। [25]क्योंकि जिसके पास है उसे और दिया जाएगा; और जिसके पास नहीं है, उससे जो कुछ उसके पास है वह भी ले लिया जाएगा।"

उगने वाले बीज का दृष्टान्त

[26]उसने कहा, "परमेश्वर का राज्य ऐसा है जैसे कोई मनुष्य भूमि पर बीज डाले, [27]और रात को सो जाए और दिन को जाग जाए और वह बीज अंकुरित होकर बढ़े—वह व्यक्ति स्वयं नहीं जानता कि यह कैसे होता है। [28]भूमि अपने आप फसल उपजाती है, पहिले अंकुर, तब बालें, और तब बालों में तैयार । [29]परन्तु जब फसल पक जाती है, तो वह तुरन्त हंसिया लगाता है, क्योंकि कटनी आ पहुंचती है।"

राई के दाने का दृष्टान्त

[30]और उसने कहा, "परमेश्वर के राज्य की उपमा हम किस से दें, अथवा किस दृष्टान्त के द्वारा हम उसका वर्णन करें? [31]वह राई के बीज के समान है। जब वह भूमि में बोया जाता है यद्यपि भूमि के सब बीजों से छोटा होता है, [32]फिर भी जब वह बोया जाता है तो उग कर बगीचे के सब पौधों से बड़ा हो जाता है, और उसमें बड़ी बड़ी शाखाएं निकल आती हैं, जिससे कि आकाश के पक्षी भी उसकी छाया में बसेरा कर सकते हैं।"

[33]वह उन्हें ऐसे कई दृष्टान्तों के द्वारा वचन सुनाता था जैसे वे सुनने के योग्य थे। [34]और वह दृष्टान्त के बिना उनसे कुछ नहीं बोलता था, परन्तु एकान्त में वह अपने चेलों को सब कुछ समझाता था।

आन्धी को शान्त करना

[35]उसी दिन जब सन्ध्या हुई तो उसने उनसे कहा, "आओ हम उस पार चलें।" [36]और भीड़ को छोड़कर उन्होंने जैसा वह था, उसे अपने साथ नाव में ले लिया और वहां उसके साथ और भी नावें थीं। [37]और तब एक भयानक आंधी आई और लहरें नाव से टकराने लगीं यहां तक कि पानी नाव में भरने लगा। [38]और वह स्वयं नाव के पिछले भाग में गद्दी पर सो रहा था, और उन्होंने उसे जगाया और कहा, "हे गुरु, क्या तुझे चिन्ता नहीं कि हम नाश हुए जाते हैं?" [39]तब जगाए जाने पर उसने आंधी को डांटा, और झील से कहा, "शान्त हो, थम जा!" और आंधी थम गई और सब कुछ शान्त हो गया।

[40]उसने उनसे कहा, "तुम इतने डरपोक क्यों हो? यह कैसी बात है कि तुम में विश्वास नहीं? [41]और वे अत्यन्त भयभीत हुए और आपस में कहने लगे, "आख़िर यह है कौन कि आंधी और लहरें भी इसकी आज्ञा मानती हैं?"

दुष्टात्मा-ग्रस्त की चंगाई

5 वे झील के दूसरी ओर गिरासेनियों के देश में पहुंचे। [2]और जब वह नाव पर से उतरा तो तुरन्त एक व्यक्ति जिसमें अशुद्ध आत्मा थी कब्रों से निकलकर उस से मिला। [3]वह कब्रों के बीच रहता था, और अब कोई उसे जंजीरों से भी बांध कर नहीं रख सकता था, [4]क्योंकि बेड़ियों और जंजीरों से तो वह प्रायः बांधा गया था परन्तु वह जंजीरों को तोड़ दिया करता, और बेड़ियों के टुकड़े टुकड़े कर दिया करता था, और कोई इतना शक्तिशाली नहीं था कि उसे वश में कर सके। [5]वह लगातार रात-दिन कब्रों और पहाड़ों में चिल्लाता और पत्थरों से स्वयं को घायल करता था। [6]वह दूर से यीशु को देखकर दौड़ा, और झुक कर उसे प्रणाम करने लगा। [7]और ज़ोर से चिल्लाकर उसने कहा, "परम प्रधान परमेश्वर के पुत्र यीशु, मेरा तुझ से क्या काम? मैं तुझे परमेश्वर की शपथ देता हूं कि मुझे यातना न दे!" [8]क्योंकि वह उस से कह रहा था, "हे अशुद्ध आत्मा, इस मनुष्य में से निकल जा!" [9]उसने उस से पूछा, "तेरा नाम क्या है?" उसने उस से कहा, "मेरा नाम 'सेना' है; क्योंकि हम बहुत हैं।" [10]और उसने उस से गिड़गिड़ाकर विनती की कि हमें इस प्रदेश से बाहर न भेज। [11]वहां पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था। [12]और उन्होंने उस से विनती करते हुए कहा, "हमें उन सूअरों में भेज कि हम उनमें समा जाएं।" [13]उसने उन्हें अनुमति दे दी। अशुद्ध आत्माएं उसमें से निकलकर सूअरों में समा गईं। और सूअरों का झुण्ड जो लगभग दो हज़ार का था ढलान पर से झपटा, और झील में गिरकर डूब मरा। [14]उनके चरवाहों ने भागकर नगर तथा गांवों में यह समाचार सुनाया, और लोग जो कुछ हुआ था उसे देखने को आए। [15]फिर वे यीशु के पास आए, और उस मनुष्य को जिसमें दुष्टात्मा थी अर्थात् उसी को जिसमें 'सेना' समाई थी, कपड़े पहिने तथा सचेत बैठे देखा और डर गए। [16]जिन्होंने यह देखा था उन्होंने दुष्टात्मा-ग्रस्त मनुष्य तथा सूअरों के विषय में सब कुछ जो हुआ था, उन्हें बताया। [17]वे उस से अपने क्षेत्र से चले जाने के लिए विनती करने लगे। [18]और जब वह नाव में चढ़ने लगा तो वह मनुष्य जो पहिले दुष्ट आत्मा-ग्रस्त था विनती करने लगा कि मुझे अपने साथ रहने दे। [19]परन्तु उसने उसे आने न दिया और उस से कहा, "अपने लोगों के पास घर जा और उन्हें बता कि प्रभु ने तेरे लिए कैसे महान् कार्य किए हैं, और उसने तुझ पर कैसी दया की।" [20]वह चला गया और *दिकापुलिस में प्रचार करने लगा, कि यीशु ने मेरे लिए कैसे महान् कार्य किए; और सब लोग आश्चर्यचकित हुए।

मृत लड़की और एक रोगी स्त्री

[21]जब यीशु नाव से फिर उस पार गया, तो एक विशाल जनसमूह उसके चारों ओर एकत्रित हो गया,

20 *अर्थात्, दस शहर

झील के किनारे ठहर गया। [22]फिर आराधनालय के अधिकारियों में याईर नामक एक व्यक्ति आया और उसे देखकर उसके पांवों पर गिर पड़ा, [23]और गिड़गिड़ाकर उस से विनती करके कहने लगा, "मेरी छोटी बेटी मरने पर है, कृपया चलकर उस पर हाथ रख कि वह चंगी हो जाए और जीवित रहे।" [24]वह उसके साथ चला, और एक विशाल जनसमूह भी उसके पीछे चल पड़ा, यहां तक कि लोग उस पर गिरे पड़ते थे।

[25]एक स्त्री जिसे बारह वर्ष से लहू बहने का रोग था, [26]और जिसने बहुत से वैद्यों के हाथ से दुख उठाया था, और अपना सब कुछ व्यय करने पर भी उसे कुछ लाभ न हुआ था परन्तु और अधिक बीमार हो गई थी, [27]उसने यीशु के विषय में सुनकर, भीड़ में से उसके पीछे आकर उसके चोगे को स्पर्श किया। [28]क्योंकि वह कहती थी, "यदि मैं उसके वस्त्र को ही छू लूंगी तो स्वस्थ हो जाऊंगी।" [29]और तुरन्त उसका लहू बहना बन्द हो गया, और उसने अपनी देह में अनुभव किया कि मैं अपने रोग से चंगी हो गई हूं। [30]उसी क्षण यीशु ने यह अनुभव किया कि मुझ में से सामर्थ निकली है, उसने भीड़ में पीछे मुड़कर पूछा, "मेरे वस्त्रों को किसने छुआ?" [31]उसके चेलों ने उस से कहा, "तू तो देख ही रहा है कि भीड़ तुझ पर गिरी पड़ती है, और तू कहता है, 'किसने मुझे छुआ'?" [32]तब उसने उस स्त्री को जिसने यह किया था देखने के लिए चारों ओर दृष्टि डाली। [33]परन्तु वह स्त्री जो कुछ उसके साथ हुआ था उसे जानकर डरती और कांपती हुई आई और उसके सामने गिर पड़ी, और उसे सब कुछ सच सच बता दिया। [34]उसने उस से कहा, "बेटी, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है। कुशल से जा और अपनी बीमारी से चंगी हो जा।"

[35]वह यह कह ही रहा था, तभी आराधनालय के अधिकारी के घर से लोगों ने आकर कहा, "अब गुरु को और कष्ट क्यों देता है—तेरी बेटी तो मर गई है?" [36]परन्तु यीशु ने उस बात को सुन लिया और आराधनालय के अधिकारी से कहा, "मत डर, केवल विश्वास रख।" [37]और उसने पतरस, और याकूब और याकूब के भाई यूहन्ना को छोड़, अन्य किसी को अपने साथ आने न दिया। [38]और वे आराधनालय के अधिकारी के घर आए, तो उसने लोगों को कोलाहल मचाते और ज़ोर से रोते और विलाप करते देखा। [39]तब उसने भीतर जाकर उनसे कहा, "क्यों रोते और हल्ला मचाते हो? बच्ची मरी नहीं, परन्तु सोती है।" [40]और वे उसकी हंसी करने लगे। परन्तु सब को बाहर निकाल कर बच्ची के माता-पिता और अपने साथियों को लेकर उसने उस कमरे में जहां बच्ची थी प्रवेश किया। [41]और बच्ची का हाथ पकड़कर उसने उस से कहा, "तलीथा कूमी!" जिसका अर्थ है, "हे लड़की, मैं तुझ से कहता हूं, उठ!" [42]और लड़की तुरन्त उठकर चलने-फिरने लगी, क्योंकि वह बारह वर्ष की थी। और तुरन्त वे अत्यन्त चकित हो गए। [43]उसने उन्हें दृढ़ आज्ञा दी कि इस बात को कोई जानने न पाए, और उसने कहा, "लड़की को कुछ खाने को दिया जाए।"

नबी का आदर कहां?

6 और वहां से निकलकर वह अपने नगर में आया, और उसके चेले

उसके पीछे चले। [2]और जब सब्त का दिन आया तो वह आराधनालय में उपदेश देने लगा, और सब सुनने वाले चकित होकर कहने लगे, "इस मनुष्य को ये बातें कहां से आ गईं और यह कैसा ज्ञान है जो इसे दिया गया है, और इसके हाथों से कैसे आश्चर्यकर्म प्रकट होते हैं? [3]क्या यह वही बढ़ई नहीं जो मरियम का पुत्र है और जो याकूब, योसेस, यहूदा और शमौन का भाई है? क्या उसकी बहिनें यहां हमारे बीच में नहीं?" और लोगों ने उसके कारण ठोकर खाई। [4]यीशु ने उनसे कहा, "नबी अपने नगर, अपने कुटुम्ब और अपने घर के अतिरिक्त और कहीं निरादर नहीं होता।" [5]कुछ बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा करने के अतिरिक्त वह वहां और कोई आश्चर्यकर्म न कर सका। [6]और उसे उनके अविश्वास पर बड़ा आश्चर्य हुआ।

फिर वह गांव-गांव उपदेश देता फिरा।

[7]बारहों को अपने पास बुलाकर वह उन्हें दो दो करके भेजने और अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार देने लगा, [8]तथा उन्हें आदेश दिया कि अपनी यात्रा के लिए वे लाठी को छोड़ और कुछ न लें; न तो रोटी, न झोली और न कमरबन्द में पैसे, [9]परन्तु चप्पल पहिनें, और यह भी कहा, "दो दो कुरते न पहिनना।" [10]उसने उनसे कहा, "जहां कहीं तुम किसी घर में प्रवेश करो, तो नगर छोड़ने तक वहीं रहो। [11]और जहां तुम्हें लोग स्वीकार न करें या तुम्हारी न सुनें, तो वहां से निकलते समय तुम अपने पैरों के तलवों की धूल झाड़ दो कि उनके विरुद्ध गवाही हो।" [12]और उन्होंने जाकर प्रचार किया कि मन फिराओ। [13]और वे बहुत सी दुष्टात्माओं को निकालते तथा बहुत से बीमारों पर तेल मल कर उन्हें चंगा किया करते थे।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की हत्या

[14]राजा हेरोदेस ने भी चर्चा सुनी, क्योंकि उसका नाम प्रसिद्ध हो चुका था; और लोग कह रहे थे, "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला मरे हुओं में से जी उठा है, इसीलिए ये सामर्थ उसमें कार्य कर रही हैं।" [15]परन्तु कुछ लोग कह रहे थे, "वह एलिय्याह है।" और अन्य कुछ कह रहे थे, "वह नबी है, प्राचीन काल के नबियों के समान एक।" [16]परन्तु जब हेरोदेस ने यह सुना तो कहता रहा, "यूहन्ना जिसका सिर मैंने कटवाया, जी उठा है।" [17]हेरोदेस ने तो स्वयं लोगों को भेजकर यूहन्ना को पकड़वाया और जेल में डाल दिया था, क्योंकि हेरोदेस ने अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास को ब्याह लिया था। [18]इसलिए कि यूहन्ना हेरोदेस से कहा करता था, "तुझे अपने भाई की पत्नी को रखना न्यायोचित नहीं।" [19]अतः हेरोदियास उस से शत्रुता रखती थी और चाहती थी कि उसे मरवा डाले; पर ऐसा न कर सकी, [20]क्योंकि हेरोदेस यह जानकर यूहन्ना से डरता था कि वह एक धर्मी और पवित्र व्यक्ति है; और उसकी रक्षा करता था। और जब वह उसकी सुनता था तो बहुत ही घबरा जाता था, फिर भी प्रसन्नता से सुना करता था। [21]और उचित अवसर तब आया जब हेरोदेस ने अपने जन्म दिन पर प्र[illegible] सेनापतियों और गलील के [illegible] को भोज में आमन्त्रित किया। [illegible] स्वयं हेरोदियास की पुत्री ने [illegible] नृत्य किया और उसने हेरोदेस

अतिथियों को प्रसन्न किया, तब राजा ने लड़की से कहा, "तू जो चाहे मुझ से मांग और मैं तुझे दूंगा।" [23]तथा उसने शपथ खाकर कहा, "तू मुझ से आधा राज्य तक जो कुछ भी मांगे, मैं तुझे दूंगा।" [24]उसने बाहर जाकर अपनी माता से पूछा, "मैं क्या मांगूं?" और उस ने कहा, "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर!" [25]उसने तुरन्त राजा के पास दौड़ते हुए अन्दर आकर विनती की, "मैं चाहती हूं कि तू यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर एक थाल में रखकर अभी मुझे दे दे।" [26]यद्यपि राजा बहुत उदास हुआ, फिर भी अपनी शपथ और अतिथियों के कारण वह उसकी विनती को अस्वीकार करना नहीं चाहता था। [27]राजा ने तुरन्त एक जल्लाद को भेजा और आज्ञा दी कि उसका सिर ले आए। उसने जाकर जेल में उसका सिर काटा, [28]तथा उसे थाल में रखकर और लाकर लड़की को दिया, और लड़की ने अपनी मां को। [29]जब उसके चेलों ने यह सुना तो आकर उसके शव को ले गए और उसे एक कब्र में रखा।

पांच हज़ार को खिलाना

[30]प्रेरित, यीशु के पास आकर एकत्रित हुए और जो कुछ उन्होंने किया तथा सिखाया था, सब का वर्णन किया। [31]उसने उनसे कहा, "आओ और एकान्त में चलकर कुछ देर विश्राम करो"—क्योंकि वहां बहुत से लोग आ और जा रहे थे, यहां तक कि उनको भोजन करने का भी अवसर नहीं मिलता था—[32]अत: वे अकेले नाव पर चढ़कर एकान्त में चले गए। [33]और लोगों ने उन्हें जाते देखा और बहुतों ने उन्हे पहिचान लिया, और सब नगरों से लोग पैदल दौड़कर उनसे पहिले ही उस स्थान पर जा पहुंचे। [34]और नाव से उतरकर उसने विशाल जनसमूह को देखा और उन पर उसे तरस आया क्योंकि वे ऐसी भेड़ों के समान थे जिनका कोई रखवाला न हो; और वह उन्हें बहुत सी बातें सिखाने लगा। [35]जब दिन बहुत ढल गया तो उसके चेले उसके पास आए और कहने लगे, "यह स्थान सुनसान है और दिन बहुत ढल चुका है; [36]उन्हें जाने दे कि वे आसपास की बस्तियों और गांवों में जाकर अपने लिए कुछ खाने को मोल ले सकें।" [37]परन्तु उसने उत्तर देते हुए कहा, "तुम ही उन्हें कुछ खाने को दो!" उन्होंने उस से कहा, "क्या हम जाकर दो सौ *दीनार की रोटियां मोल लाएं और उन्हें खाने को दें?" [38]उसने उनसे कहा, "तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं? जाकर देखो।" उन्होंने मालूम कर के कहा, "पांच—और दो मछलियां।" [39]और उसने सब को आज्ञा दी कि भोजन करने पंक्तियों में हरी घास पर बैठ जाएं। [40]और लोग पचास-पचास और सौ-सौ की पंक्तियों में बैठ गए। [41]उसने पांच रोटियों और दो मछलियों को लिया और स्वर्ग की ओर देखते हुए भोजन पर आशिष मांगी और रोटियां तोड़ीं और उन्हें चेलों को देता गया कि वे उनमें बांटें। और उसने दो मछलियों को भी उन सब में बांट दिया। [42]और उन सब ने खाया और तृप्त हुए। [43]उन्होंने रोटी के टुकड़ों और मछलियों से भरी हुई बारह टोकरियां उठाईं। [44]और रोटी खाने वाले पुरुषों की संख्या पांच हज़ार थी।

---

[37] *एक दीनार लगभग एक दिन की मजदूरी

यीशु का पानी पर चलना

[45]तब उसने तुरन्त चेलों को नाव पर चढ़ने और अपने से पहिले बैतसैदा की दूसरी ओर जाने को कहा जबकि वह स्वयं भीड़ को विदा करने लगा। [46]और जब वह उन्हें विदा कर चुका तो वह पर्वत पर प्रार्थना करने को चला गया। [47]जब सन्ध्या हुई तो नाव झील के बीच में थी, और वह किनारे पर अकेला था। [48]जब उसने उन्हें बड़े परिश्रम से खेते देखा, क्योंकि हवा उनके विपरीत थी, तो रात के चौथे पहर के लगभग वह उनके पास झील पर चलते हुए आया, और उनसे आगे निकल जाना चाहा। [49]परन्तु जब उन्होंने उसे झील पर चलते देखा तो समझा कि भूत है और चिल्ला उठे; [50]क्योंकि सब ने उसे देखा और डर गए थे। परन्तु उसने तुरन्त उनसे बातें कीं और कहा, "साहस रखो: मैं हूं, डरो मत।" [51]तब वह उनके साथ नाव पर चढ़ गया, और आंधी थम गई, और वे बहुत विस्मित हुए, [52]क्योंकि रोटियों की घटना से कुछ समझने के बदले उनके मन कठोर हो गए थे।

[53]जब वे पार होकर गन्नेसरत के तट पर पहुंचे तो नाव किनारे पर लगाई। [54]और जब वे नाव से उतरे, तो लोगों ने तुरन्त उसे पहिचान लिया, [55]और सारे प्रदेश में चारों ओर भाग-भाग कर रोगियों को खाटों पर उन उन स्थानों पर लिए फिरे, जहां भी सुना कि वह है। [56]और गांवों नगरों या वस्तियों में जहां कहीं वह प्रवेश करता था, लोग रोगियों को बाज़ारों में रख कर उस से विनती करते थे कि वह उन्हें अपने चोगे के आंचल को ही छू लेने दे; और जितने उसे स्पर्श करते थे, वे चंगे हो जाते थे।

परम्परा का प्रश्न

7 तब फरीसी और कुछ शास्त्री जो यरूशलेम से आए थे उसके चारों ओर एकत्रित हुए [2]और उन्होंने उसके कुछ चेलों को अशुद्ध हाथों से अर्थात् बिना हाथ धोए रोटी खाते देखा। [3]क्योंकि फरीसी और सब यहूदी तब तक नहीं खाते हैं, जब तक कि वे भली-भांति हाथ न धो लें; और इस प्रकार वे पूर्वजों की परम्परा पर चलते हैं—[4]जब वे बाज़ार से आते हैं, तो जब तक अपने को पानी से शुद्ध न कर लें भोजन नहीं करते; और ऐसी बहुत सी अन्य परम्पराएं भी उनको पालन करने के लिए मिली हैं, जैसे, कटोरों, घड़ों, तांबे के बर्तनों को धोना और मांजना। [5]फरीसियों और शास्त्रियों ने उस से पूछा, "ऐसा क्यों है कि तेरे चेले पूर्वजों की परम्परा के अनुसार नहीं चलते और अशुद्ध हाथों से रोटी खाते हैं?" [6]उसने उनसे कहा, "यशायाह ने तुम पाखंडियों के लिए ठीक ही भविष्यद्वाणी की थी, जैसा कि लिखा है, '**ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, परन्तु इनका हृदय मुझ से दूर है।** [7]**ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, और मनुष्यों की शिक्षाओं को धार्मिक सिद्धान्त के रूप में सिखाते हैं।**' [8]परमेश्वर की आज्ञा को टाल कर तुम मनुष्यों की परम्परा का पालन करते हो।" [9]उसने उनसे यह भी कहा, "तुम अपनी परम्परा का पालन करने के लिए परमेश्वर की आज्ञा को कैसी अच्छी तरह टाल देते हो! [10]क्योंकि मूसा ने कहा है, '**अपने पिता और अपनी माता का आदर**

कर'; और, **जो कोई पिता या माता को बुरा कहे, मार डाला जाए।'** [11]परन्तु तुम कहते हो, यदि कोई मनुष्य अपने पिता और अपनी माता से कहे, 'मुझ से तुम्हें जो कुछ भी लाभ हो सकता था वह "कुर्बान" अर्थात् परमेश्वर को अर्पित है,' [12]तो तुम ऐसे मनुष्य को उसके पिता या उसकी माता के लिए कुछ भी करने नहीं देते, [13]इस प्रकार तुम परमेश्वर के वचन को अपनी परम्परा के द्वारा जो तुम ने ठहराई है अमान्य करते हो। और तुम बहुत से ऐसे ही काम करते हो।" [14]और भीड़ को वह फिर अपने पास बुलाकर लोगों से कहने लगा, "तुम अब मेरी सुनो और समझो: [15]ऐसी कोई वस्तु नहीं जो मनुष्य में बाहर से समाकर उसे अशुद्ध करे; परन्तु जो वस्तुएं मनुष्य में से बाहर निकलती हैं, वे ही हैं जो उसे अशुद्ध करती हैं। [16]*[यदि किसी के सुनने के कान हों तो सुन ले।]" [17]और जब भीड़ को छोड़ कर उसने घर में प्रवेश किया, तो उसके चेलों ने इस दृष्टान्त के विषय में उस से पूछा। [18]उसने उनसे कहा, "क्या तुम इतनी भी समझ नहीं रखते? क्या तुम नहीं देखते कि जो कुछ बाहर से मनुष्य के भीतर जाता है, वह उसे अशुद्ध नहीं कर सकता? [19]क्योंकि वह उसके मन में नहीं परन्तु उसके पेट में जाता है, और बाहर निकल जाता है"—इस प्रकार उसने सब भोजन वस्तुओं को शुद्ध ठहराया—[20]फिर उसने कहा, "जो मनुष्य में से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। [21]क्योंकि भीतर से अर्थात् मनुष्यों के मन से कुविचार, व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, [22]लोभ और दुष्टता के काम तथा छल, कामुकता, ईर्ष्या, निन्दा, अहंकार और मूर्खता निकलती है। [23]ये सब बुराइयां भीतर से निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।"

गैरयहूदी स्त्री का विश्वास

[24]और वहां से उठकर वह सूर के क्षेत्र को चला गया। और जब उसने एक घर में प्रवेश किया तो नहीं चाहता था कि कोई यह जाने; फिर भी वह छिप न सका। [25]परन्तु उसके बारे में सुनकर एक स्त्री जिसकी छोटी बेटी में अशुद्ध आत्मा थी, तुरन्त आकर उसके पैरों पर गिर पड़ी। [26]यह स्त्री सुरूफिनीकी जाति की गैर-यहूदी थी। और वह उस से बार बार विनती करने लगी कि मेरी पुत्री में से दुष्टात्मा निकाल दे। [27]उसने, उस से कहा, "पहिले बच्चों को तृप्त होने दे, क्योंकि बच्चों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे फेंकना उचित नहीं।" [28]परन्तु उसने उत्तर दिया, "सच है प्रभु, पर मेज़ के नीचे कुत्ते भी तो बच्चों के जूठन पर पलते हैं।" [29]उसने उस से कहा, "इस उत्तर के कारण चली जा, दुष्टात्मा तेरी बेटी में से निकल गई है।" [30]और घर लौटकर उसने देखा कि लड़की बिस्तर पर लेटी हुई है और दुष्टात्मा उसमें से निकल चुकी है।

बहिरे-गूंगे की चंगाई

[31]तब वह फिर सूर के प्रदेश से निकलकर सैदा होते हुए गलील की झील पर आया जो दिकापुलिस के क्षेत्र में है। [32]और वे उसके पास एक मनुष्य को लाए जो बहिरा था और कठिनाई से बोलता था, और उस से विनती की, कि उस पर अपना हाथ रखे। [33]उसने उसे भीड़ से

*यह पद कुछ हस्तलेखों में नहीं मिलता

अलग एकान्त में ले जाकर अपनी उंगलियां उसके कानों में डालीं, और थूक कर उसकी जीभ को छुआ; [34]और स्वर्ग की ओर आह भर कर देखते हुए उस मनुष्य से कहा, "इप्फत्तह!" अर्थात् "खुल जा!" [35]उसके कान खुल गए, और उसकी जीभ की गांठ खुल गई, और वह स्पष्ट बोलने लगा। [36]तब उसने उन्हें आदेश दिया कि किसी को न बताएं; परन्तु जितना ही वह मना करता रहा, इस से भी अधिक वे उसका प्रचार करने लगे। [37]वे अत्यन्त आश्चर्य चकित होकर कहने लगे, "इसने जो कुछ किया अच्छा किया है; वह बहिरों को भी सुनने की और गूंगों को बोलने की शक्ति देता है।"

चार हज़ार को खिलाना

8 उन दिनों में फिर जब एक बड़ी भीड़ एकत्रित हुई और उनके पास खाने को कुछ न था, तो उसने अपने चेलों को बुलाकर उनसे कहा, [2]"मुझे इस भीड़ पर तरस आता है, क्योंकि ये लोग तीन दिन से मेरे साथ हैं, और उनके पास खाने को कुछ भी नहीं। [3]यदि मैं उन्हें भूखा ही घर भेज दूं, तो वे मार्ग में ही थक कर रह जाएंगे, और इनमें से कुछ तो बहुत दूर से आए हैं।" [4]उसके चेलों ने उत्तर दिया, "इन्हें तृप्त करने के लिए इस जंगल में कोई इतनी रोटी कहां से ला सकता है?" [5]उसने उनसे पूछा, "तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं?" उन्होंने कहा, "सात"। [6]तब उसने भीड़ को भूमि पर बैठने के लिए कहा, और उन सात रोटियों को लेकर धन्यवाद दिया और उन्हें तोड़कर लोगों को परोसने के लिए चेलों को देता गया और उन्होंने भीड़ में परोस दिया। [7]उनके पास कुछ छोटी मछलियां भी थीं; और उन पर आशिष मांग कर, उसने उन्हें भी लोगों को बांटने को कहा। [8]और वे खाकर तृप्त हुए, और उन्होंने बचे हुए टुकड़ों से भरे सात टोकरे उठाए। [9]और वहां लगभग चार हज़ार लोग थे। उसने उन्हें विदा किया, [10]और वह तुरन्त अपने चेलों के साथ नाव पर चढ़कर दलमनूता प्रदेश को चला गया।

[11]फिर फरीसी आकर उस से विवाद करने लगे, और उसकी परीक्षा करने के लिए उन्होंने उस से एक स्वर्गीय चिन्ह मांगा। [12]उसने अपनी आत्मा में गहरी आह भरकर कहा, "इस पीढ़ी के लोग चिन्ह क्यों ढूंढ़ते हैं? मैं तुम से सच कहता हूं, इस पीढ़ी को कोई चिन्ह नहीं दिया जाएगा।" [13]और वह उन्हें छोड़कर फिर नाव पर चढ़ा और दूसरे किनारे पर चला गया।

फरीसियों की शिक्षा का खमीर

[14]और वे रोटी लेना भूल गए थे, तथा नाव में उनके पास केवल एक ही रोटी थी। [15]उसने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा, "देखो, फरीसियों के खमीर तथा हेरोदेस के खमीर से सावधान रहना।" [16]और वे रोटी न होने के विषय में आपस में बातचीत करने लगे। [17]यीशु ने यह जानकर उनसे कहा, "तुम इस सोच-विचार में क्यों पड़ गए कि तुम्हारे पास रोटी नहीं है? क्या तुम अब तक नहीं देखते या नहीं समझते? क्या तुम्हारा मन कठोर नहीं हो गया है? [18]**आंखें होते हुए क्या तुम नहीं देखते? और कान रखते हुए क्या तुम नहीं सुनते?** और क्या तुम स्मरण नहीं करते? [19]जब मैंने पांच हज़ार के लिए पांच रोटियां तोड़ी थीं, तब तुमने टुकड़ों से भरी, बड़ी बड़ी कितनी

टोकरियां उठाई थीं?" उन्होंने उस से कहा, "बारह।" [20]"और जब मैंने चार हज़ार के लिए सात रोटियां तोड़ी थीं तब तुम ने टुकड़ों से भरी कितनी टोकरियां उठाई थीं?" उन्होंने उस से कहा, "सात।" [21]उसने उनसे कहा, "क्या तुम अब भी नहीं समझते?"

बैतसैदा में अन्धे की चंगाई

[22]वे बैतसैदा को आए और लोग एक अन्धे को उसके पास लाए और उस से विनती करने लगे कि उसे छुए। [23]वह अन्धे का हाथ पकड़कर उसे गांव के बाहर ले गया और उसकी आंखों पर थूका तथा उस पर अपना हाथ रख कर उस से पूछा, "क्या तुझे कुछ दिखाई दे रहा है?" [24]उसने ऊपर देख कर कहा, "मैं मनुष्यों को देखता हूं, परन्तु वे मुझे चलते फिरते पेड़ों के समान दिखाई देते हैं।" [25]तब उसने पुनः उसकी आंखों पर हाथ रखे और वह बड़ी उत्सुकता से देखने लगा, और उसे फिर से दृष्टि प्राप्त हुई और वह सब कुछ साफ साफ देखने लगा। [26]उसने उसे यह कहकर घर भेजा, "इस गांव में पैर भी न रखना।"

पतरस का यीशु को मसीह मानना

[27]और यीशु अपने चेलों के साथ कैसरिया फिलिप्पी के गांव में गया। मार्ग में उसने अपने चेलों से यह कहते हुए पूछा, "लोग क्या कहते हैं—मैं कौन हूं?" [28]उन्होंने कहा, "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, और कुछ लोग एलिय्याह कहते हैं और कुछ अन्य लोगों के अनुसार नबियों में से एक।" [29]और वह उनसे प्रश्न पूछता रहा, "परन्तु तुम क्या कहते हो? मैं कौन हूं?" पतरस ने उत्तर देकर कहा, "तू मसीह है।" [30]तब उसने उन्हें चिताया कि वे उसके बारे में किसी से न कहें।

मृत्यु के सम्बन्ध में भविष्यद्वाणी

[31]तब वह उन्हें उपदेश देने लगा कि अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र बहुत दुख उठाए और प्राचीनों, महायाजकों और शास्त्रियों द्वारा तिरस्कृत किया जाकर मार डाला जाए तथा तीन दिन के बाद पुनः जीवित हो उठे। [32]वह यह बात स्पष्ट रूप से कह रहा था। इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर झिड़कने लगा, [33]परन्तु उसने मुड़कर चेलों की ओर देखा और पतरस को डांटकर कहा, "हे शैतान, मेरे आगे से हट। तू तो परमेश्वर की बातों पर नहीं वरन् मनुष्य की बातों पर मन लगाता है।" [34]उसने जनसमूह सहित चेलों को पास बुलाया और लोगों से कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो वह अपने आप का परित्याग करे, और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछे चले। [35]क्योंकि जो अपने प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा; परन्तु जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिए अपना प्राण खोता है, वह उसे बचाएगा। [36]क्योंकि यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त कर ले और अपने प्राण को खो दे तो उसे क्या लाभ? [37]क्योंकि मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा? [38]इसलिए जो कोई इस व्यभिचारी और पापी पीढ़ी में मुझ से और मेरे वचनों से लज्जित होता है, मनुष्य का पुत्र भी, जब अपने पिता की महिमा में पवित्र स्वर्गदूतों के साथ आएगा, तब वह उस से भी लजाएगा।"

9 उस ने उनसे यह भी कहा, "मैं तुम से सच कहता हूं, यहां जो खड़े हैं उनमें से कुछ लोग मृत्यु का स्वाद न

चखेंगे जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्थ सहित आया हुआ न देख लें।"

यीशु का दिव्य रूपान्तर

[2]यीशु छः दिन के बाद पतरस और याकूब और यूहन्ना को अपने साथ लेकर, एक ऊंचे पर्वत पर एकान्त में आया; और उन के सामने उस का रूपान्तर हुआ। [3]और उसके वस्त्र इतने चमकदार तथा श्वेत हो गए जितना कि पृथ्वी पर कोई धोबी श्वेत नहीं कर सकता। [4]और मूसा के साथ उन्हें एलिय्याह दिखाई दिया, और दोनों यीशु के साथ बातचीत कर रहे थे। [5]पतरस ने यीशु से कहा, "हे रब्बी, हमारे लिए यहां रहना अच्छा है; अतः हम तीन मण्डप बनाएं, एक तेरे लिए, एक मूसा के लिए और एक एलिय्याह के लिए।" [6]वह तो नहीं जानता था कि क्या कहे; क्योंकि वे बहुत डर गए थे। [7]तब एक बादल उठा जिसने उन्हें घेर लिया, और उस बादल में से यह आवाज़ आई, "यह मेरा प्रिय पुत्र है, इसकी सुनो।" [8]और उन्होंने सहसा चारों ओर दृष्टि की तो अपने साथ यीशु को छोड़ अन्य किसी को न देखा।

[9]जब वे पर्वत से नीचे उतर रहे थे तो उसने उन्हें आज्ञा दी कि जब तक मनुष्य का पुत्र मृतकों में से जी न उठे तब तक जो कुछ तुमने देखा है उसे किसी से न कहना। [10]और वे इस कथन को लेकर आपस में वाद-विवाद करने लगे कि मृतकों में से जी उठने का अर्थ क्या हो सकता है। [11]और वे उस से यह कहकर पूछने लगे, "शास्त्री क्यों कहते हैं कि एलिय्याह का पहिले आना अवश्य है?" [12]उसने उनसे कहा, "एलिय्याह को पहिले आकर सब कुछ सुधारना था। फिर भी मनुष्य के पुत्र के लिए यह क्यों लिखा है कि वह बहुत दुख उठाएगा और तुच्छ समझा जाएगा? [13]परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि एलिय्याह वास्तव में आ चुका है, और जैसा उसके विषय में लिखा है लोगों ने जो चाहा उसके साथ किया।"

दुष्टात्मा-ग्रस्त लड़के की चंगाई

[14]और जब वे चेलों के पास लौटे तो देखा कि उनके चारों ओर विशाल भीड़ लगी है और कुछ शास्त्री उनसे विवाद कर रहे हैं। [15]परन्तु जब भीड़ ने उसे देखा तो सब लोग चकित हुए और दौड़कर उन्होंने उसे नमस्कार किया। [16]उसने पूछा, "तुम उनके साथ क्या विवाद कर रहे हो?" [17]भीड़ में से एक ने उसे उत्तर दिया, "हे गुरु, मैं तेरे पास अपने पुत्र को लाया हूं जिसमें ऐसी आत्मा समाई है जो उसे गूंगा बना देती है; [18]और जब कभी वह उसे पकड़ती है तो भूमि पर पटक देती है और वह मुंह में फेन भर लाता और दांत पीसता और ऐंठ जाता है। मैंने तेरे चेलों से उसे निकालने को कहा पर वे उसे न निकाल सके।" [19]उसने उत्तर देते हुए उनसे कहा, "हे अविश्वासी पीढ़ी, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा? मैं कब तक तुम्हारी सहूंगा? उसे मेरे पास लाओ।" [20]वे लड़के को उसके पास लाए। और जब उसने उसे देखा तो तुरन्त उस आत्मा ने उसे मरोड़ा और वह भूमि पर गिरकर मुंह से झाग निकालते हुए इधर उधर लोटने लगा। [21]और उसने उसके पिता से पूछा, "इसे कब से ऐसा हो रहा है?" उसने उत्तर दिया, "बचपन से। [22]उसने इसे नाश करने के लिए कभी आग में तो कभी पानी में गिराया। परन्तु यदि तू कुछ कर सकता है तो हम पर तरस खाकर

हमारी सहायता कर।" [23]यीशु ने उस से कहा, "क्या? 'यदि तू कर सकता है!' विश्वास करने वाले के लिए सब कुछ सम्भव है।" [24]बालक के पिता ने तुरन्त चिल्लाकर कहा, "मैं विश्वास करता हूं, मेरे अविश्वास का उपचार कर।" [25]और जब यीशु ने देखा कि भीड़ बहुत शीघ्र बढ़ती जा रही है तो उसने अशुद्ध आत्मा को यह कहकर डांटा, "ऐ गूंगी और बहरी आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूं कि इसमें से निकल आ और फिर कभी उसमें प्रवेश न करना।" [26]और वह चिल्लाकर और उसे बहुत मरोड़कर उसमें से निकल गई; और बालक ऐसा मरा हुआ सा हो गया कि उनमें से अधिकांश ने कहा, "वह तो मर गया।" [27]परन्तु यीशु ने उसका हाथ पकड़कर उसे उठाया और वह उठ खड़ा हुआ। [28]जब वह घर में आया, तो उसके चेले एकान्त में उस से पूछने लगे, "हम उसे क्यों नहीं निकाल सके?" [29]उसने उनसे कहा, "यह जाति *प्रार्थना के अतिरिक्त अन्य किसी उपाय से नहीं निकल सकती।"

[30]फिर वे वहां से निकले और गलील में से होकर जाने लगे। वह नहीं चाहता था कि किसी को इसका पता लगे। [31]क्योंकि वह अपने चेलों को शिक्षा दे रहा था और उन्हें बता रहा था, "मनुष्य का पुत्र, मनुष्यों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उसे मार डालेंगे; पर मार डाले जाने के तीन दिन बाद वह फिर जी उठेगा।" [32]परन्तु वे इस बात को न समझ सके और उस से पूछने से डरते थे।

सब से बड़ा कौन?

[33]फिर वे कफरनहूम पहुंचे, और जब वह घर में था तो उसने उनसे पूछा, "मार्ग में तुम क्या विवाद कर रहे थे?" [34]परन्तु वे चुप रहे, क्योंकि मार्ग में उन्होंने आपस में वाद-विवाद किया था कि सबसे बड़ा कौन है। [35]बैठने के पश्चात् उसने बारहों को बुलाया और उनसे कहा, "यदि कोई प्रथम स्थान चाहे तो सबसे अन्तिम हो और सबका सेवक बने।" [36]तब उसने एक बच्चे को लेकर उनके मध्य में खड़ा किया, और उसे गोद में लेकर, उनसे कहा, [37]"जो कोई मेरे नाम से किसी ऐसे बच्चे को ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है, और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मुझे नहीं परन्तु उसे ग्रहण करता है जिसने मुझे भेजा है।"

[38]यूहन्ना ने उस से कहा, "हे गुरु, हम ने किसी को तेरे नाम से दुष्टात्माएं निकालते देखा और उसे रोकने का प्रयत्न किया, क्योंकि वह हमारा साथी नहीं था।" [39]परन्तु यीशु ने कहा, "उसे मत रोको, क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो मेरे नाम से आश्चर्यकर्म करे और इसके तुरन्त बाद मुझे बुरा कह सके। [40]क्योंकि जो हमारे विरोध में नहीं वह हमारे साथ है। [41]जो कोई तुम्हें मसीह का होने के कारण एक गिलास पानी पिलाए, तो मैं तुम से सच कहता हूं कि वह अपना प्रतिफल कदापि न खोएगा। [42]और जो कोई विश्वास करने वाले इन छोटों में से एक को भी ठोकर खिलाए तो अच्छा होता कि उसके गले में भारी चक्की का पाट लटका कर उसे समुद्र में डाल दिया जाता। [43]और यदि तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे काटकर फेंक दे; तेरे लिए यह भला है कि तू अंगहीन होकर जीवन में प्रवेश करे इसकी अपेक्षा कि दो हाथ रहते

*हस्तलेखों में यह भी जोड़ा गया है: और उपवास

हुए तू नरक में अर्थात् उस न बुझने वाली आग में डाला जाए। 44* 45यदि तेरा पैर तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काटकर फेंक दे; लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना इस से उत्तम है कि तू दो पैर रखते हुए नरक में डाला जाए। 46* 47यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकाल फेंक; दो आंख रखते हुए नरक में डाले जाने से उत्तम है कि तू काना होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करे, 48**जहां उनका कीड़ा नहीं मरता और न आग ही बुझती है।** 49क्योंकि प्रत्येक जन आग से नमकीन किया जाएगा। 50नमक अच्छा है; परन्तु यदि नमक का स्वाद मिट जाए तो उसे फिर कैसे नमकीन करोगे? अपने में नमक रखो और आपस में मेल-मिलाप से रहो।"

तलाक का प्रश्न

10 वह वहां से उठकर यरदन के पार यहूदिया के क्षेत्र में आया; और भीड़ फिर उसके पास इकट्ठी हो गई, और अपनी रीति के अनुसार, वह उन्हें फिर से उपदेश देने लगा।

2तब कुछ फरीसी उसकी परीक्षा करने के लिए उसके पास आए और उस से पूछने लगे कि क्या किसी पुरुष के लिए अपनी पत्नी को त्याग देना न्यायोचित है। 3उसने उनसे कहा, "मूसा ने तुम्हें क्या आज्ञा दी है?" 4उन्होंने कहा, "मूसा ने मनुष्य को आज्ञा दी है कि वह त्याग-पत्र लिख कर स्त्री को निकाल दे।" 5परन्तु यीशु ने उनसे कहा, "उसने यह आज्ञा तुम्हारे मन की कठोरता के कारण लिखी। 6परन्तु सृष्टि के आरम्भ से, परमेश्वर ने उन्हें नर और नारी बनाया। 7इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता को छोड़ेगा और अपनी पत्नी के साथ रहेगा। 8और वे दोनों एक तन होंगे; फलतः अब वे दो नहीं पर एक तन हैं। 9इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे कोई मनुष्य अलग न करे।" 10और चेले घर में आकर इस विषय में उस से फिर पूछने लगे। 11उसने उनसे कहा, "जो कोई अपनी पत्नी को तलाक देकर दूसरी स्त्री से विवाह करे, वह उसके विरुद्ध व्यभिचार करता है। 12और स्त्री भी अपने पति को तलाक देकर यदि दूसरे पुरुष से विवाह करती है तो वह व्यभिचार करती है।"

बच्चों को आशीर्वाद

13फिर लोग बच्चों को उसके पास लाने लगे कि वह उन्हें स्पर्श करे परन्तु चेलों ने उन्हें डांटा। 14यीशु ने जब यह देखा तो क्रुद्ध होकर उनसे कहा, "बच्चों को मेरे पास आने दो, उन्हें मना न करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है। 15मैं तुम से सच कहता हूं, जो कोई परमेश्वर के राज्य को बच्चे की भांति ग्रहण नहीं करता, वह उसमें कदापि प्रवेश करने न पाएगा।" 16तब वह उनको गोद में लेकर और उन पर हाथ रख कर उन्हें आशिष देने लगा।

धनी नवयुवक

17और जब वह यात्रा पर जाने को था तो एक मनुष्य दौड़ता हुआ उसके पास आया और घुटने टेक कर उस से पूछने लगा, "हे उत्तम गुरु तू भला है। अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिए मैं क्या करूं?" 18यीशु ने उस से कहा, "तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? परमेश्वर के

44 *पद 44 और 46, *पद 48 ही के समान हैं और श्रेष्ठ पाण्डुलिपियों में नहीं मिलते

अतिरिक्त कोई उत्तम नहीं। [19]तू आज्ञाओं को तो जानता है, **'हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी साक्षी न देना, छल न करना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना,''** [20]उसने उस से कहा, ''हे गुरु, मैं वचपन से ही इन सब वातों का पालन करता आया हूं।'' [21]उसे देख कर यीशु को प्यार आया और उसने कहा, ''तुझ में अब भी एक वात की कमी है। जा, जो कुछ तेरा है उसे वेचकर गरीवों में वांट दे और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे चल।'' [22]यह वचन सुनकर उसका मुंह म्लान हो गया और वह दुखी होकर वहां से चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था।

[23]यीशु ने चारों ओर देख कर अपने चेलों से कहा, ''धनवानों के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है!'' [24]चेले उसके शब्दों से चकित हुए। परन्तु यीशु ने उनसे फिर कहा, ''हे बच्चो, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है! [25]परमेश्वर के राज्य में किसी धनवान का प्रवेश करने की अपेक्षा ऊंट का सुई के नाके में से निकल जाना अधिक सरल है।'' [26]वे और भी अधिक विस्मित होकर पूछने लगे, ''तब किसका उद्धार हो सकता है?'' [27]यीशु ने उनकी ओर देख कर कहा, ''मनुष्यों के लिए यह असम्भव है, परन्तु परमेश्वर के लिए नहीं, क्योंकि परमेश्वर के लिए सब कुछ सम्भव है।'' [28]पतरस उस से कहने लगा, ''देख, हम तो सब कुछ छोड़कर तेरे पीछे हो लिए हैं।'' [29]यीशु ने कहा, ''मैं तुम से सच सच कहता हूं, ऐसा कोई नहीं जिसने मेरे और ... के कारण घर या भाइयों या वहिनों, या माता या पिता या वच्चों या खेतों को छोड़ दिया हो, [30]और वह वर्तमान समय में घरों, और भाइयों और वहिनों, और माताओं, और वच्चों और खेतों को सौ गुना अधिक न पाए, पर सताव के साथ, तथा आने वाले युग में अनन्त जीवन। [31]परन्तु बहुत से जो प्रथम हैं, अन्तिम होंगे और जो अन्तिम हैं, प्रथम होंगे।''

अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान की भविष्यद्वाणी

[32]और वे यरूशलेम को जाते हुए मार्ग में थे। और यीशु उनके आगे आगे चल रहा था। वे चकित थे, और जो पीछे चले आए थे वे भयभीत थे। वह फिर वारहों को अलग ले गया और जो कुछ उसके साथ घटने वाला था, उन्हें बताने लगा। [33]''देखो हम यरूशलेम जा रहे हैं, और मनुष्य का पुत्र मुख्य याजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा; और वे उसे प्राणदण्ड के योग्य ठहराकर गैरयहूदियों को सौंपेंगे। [34]और वे उसका उपहास करेंगे, उस पर थूकेंगे, उसे कोड़े मारेंगे और मार डालेंगे और वह तीन दिन के बाद पुनः जी उठेगा।''

[35]तब जब्दी के दो पुत्र, याकूब और यूहन्ना उसके पास आकर कहने लगे, ''हे गुरु, हम चाहते हैं कि जो कुछ हम तुझ से मांगें वही तू हमारे लिए करे।'' [36]और उसने कहा, ''तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूं?'' [37]उन्होंने उस से कहा, ''तेरी महिमा में हम में से एक को तेरे दाहिने और दूसरे को बाएं वैठने दे।'' [38]परन्तु यीशु ने उनसे कहा, ''तुम नहीं जानते कि क्या मांग रहे हो। जो प्याला मैं पीने पर हूं क्या तुम पी सकते हो? या जो

बपतिस्मा मैं लेने पर हूं, क्या तुम ले सकते हो?" [39]और उन्होंने उस से कहा, "हम कर सकते हैं।" और यीशु ने उन से कहा, "वह प्याला जो मैं पीने पर हूं, तुम पीओगे, और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूं उसे भी तुम लोगे। [40]परन्तु अपने दाहिने या बाएं बैठना मेरा काम नहीं, यह उन्हीं के लिए है जिनके लिए तैयार किया गया है।" [41]यह सुनकर दसों चेले, याकूब और यूहन्ना पर खिसिया गए। [42]अतः यीशु ने उनको पास बुलाकर उनसे कहा, "तुम जानते हो कि जो गैरयहूदियों के अधिकारी समझे जाते हैं वे उन पर प्रभुता करते हैं; और उनमें जो बड़े हैं उन पर अधिकार जताते हैं। [43]परन्तु तुम में ऐसा नहीं है, वरन् जो कोई तुम में बड़ा बनना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने; [44]और जो तुम में प्रधान होना चाहे, वह सब का दास बने। [45]क्योंकि मनुष्य का पुत्र भी अपनी सेवा कराने नहीं वरन् सेवा करने और बहुतों की *फिरौती के मूल्य में प्राण देने आया।

अन्धे बरतिमाई को दृष्टिदान

[46]वे यरीहो पहुंचे। और जब वह अपने चेलों और एक विशाल भीड़ के साथ यरीहो से बाहर जा रहा था तो बरतिमाई नाम का एक अन्धा भिखारी, जो तिमाई का पुत्र था, सड़क के किनारे बैठा हुआ था। [47]जब उसने सुना कि यह नासरत निवासी यीशु है तो पुकारकर कहने लगा, "हे यीशु, दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर!" [48]बहुतों ने डांटकर कहा कि वह चुप रहे, परन्तु वह और ज़ोर से चिल्लाने लगा, "दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर!" [49]तब यीशु ने रुक कर कहा, "उसे बुलाओ।" और लोगों ने उस अन्धे को यह कहते हुए बुलाया, "साहस रख, उठ! वह तुझे बुला रहा है।" [50]और वह अपना चोगा एक तरफ फेंक कर उछल पड़ा और यीशु के पास आया। [51]यीशु ने उत्तर देते हुए कहा, "तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूं?" और अन्धे ने उस से कहा, "मेरे गुरु, मैं चाहता हूं कि देखने लगूं!" [52]यीशु ने उस से कहा, "चला जा, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है।" वह तुरन्त देखने लगा और मार्ग में उसके पीछे चलने लगा।

यरूशलेम में विजय प्रवेश

11 जब वे यरूशलेम के निकट, जैतून पर्वत के किनारे बैतफगे और बैतनिय्याह को पहुंचे तो उसने अपने चेलों में से दो को भेजा, [2]और उनसे कहा, "अपने सामने के गांव में जाओ और प्रवेश करते ही तुम्हें एक गदही का बच्चा बंधा हुआ मिलेगा, जिस पर अब तक कोई सवार नहीं हुआ। उसे खोलकर ले आओ। [3]यदि कोई तुम से कहे, 'ऐसा क्यों करते हो?' तो तुम कहना, 'प्रभु को इसकी आवश्यकता है,' और वह तुरन्त ही उसे यहां भेज देगा।" [4]वे गए और उन्होंने बाहर, गली में द्वार के पास एक गदही के बच्चे को बंधा हुआ पाया, और वे उसे खोलने लगे। [5]वहां खड़े कुछ लोगों ने उनसे कहा, "यह क्या कर रहे हो, गदही के बच्चे को क्यों खोलते हो?" [6]और यीशु ने जैसा बताया था उन्होंने वैसा ही उनसे कह दिया; तब उन्होंने उसे ले जाने दिया। [7]उन्होंने गदही के बच्चे को लाकर उस पर अपने वस्त्र डाले; और वह उस पर बैठ गया। [8]और बहुतों ने अपने वस्त्र मार्ग

---

45 *अर्थात्, छुटकारे

पर बिछाए, और अन्य लोगों ने खेतों से डालियां काट कर फैला दीं। [9]वे जो उसके आगे आगे जाते और जो पीछे पीछे चले आते थे, पुकारकर कह रहे थे, "**होशन्ना! धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है!** [10]हमारे पिता दाऊद का आने वाला राज्य धन्य है! सर्वोच्च स्थान में होशन्ना!"

[11]वह यरूशलेम में प्रवेश कर के मन्दिर में आया; और चारों ओर देखकर बारहों के साथ बैतनिय्याह को चल दिया क्योंकि सन्ध्या हो चुकी थी।

[12]और दूसरे दिन जब वे बैतनिय्याह से निकले तो उसे भूख लगी। [13]और पत्तों से भरे एक अंजीर के पेड़ को दूर से देख कर, वह उसके पास गया कि कदाचित् कुछ मिल जाए। पर वहां पहुंचकर पत्तों को छोड़ और कुछ न पाया, क्योंकि फल लगने का मौसम न था। [14]तब उसने उस से कहा, "अब से कोई तेरा फल कभी खाने न पाए!" और उसके चेले सुन रहे थे।

मन्दिर से व्यापारियों का निष्कासन

[15]फिर वे यरूशलेम में आए और वह मन्दिर में जाकर वहां लेन-देन करने वालों को निकालने लगा, और सर्राफों की मेज़ें और कबूतर बेचने वालों की चौकियां उलट दीं; [16]और उसने किसी को भी मन्दिर में से होकर सामान ले जाने की आज्ञा न दी। [17]और वह उन्हें उपदेश देने लगा, "क्या यह नहीं लिखा है, **'मेरा घर सब जातियों के लिए प्रार्थना का घर कहलाएगा'**? पर तुमने उसे डाकुओं की खोह बना रखा है।" [18]और याजकों तथा शास्त्रियों ने जब यह सुना तो उसे नाश करने का अवसर ढूंढ़ने लगे, क्योंकि वे उस से डरते थे इसलिए कि सब लोग उसकी शिक्षा से चकित थे।

[19]और सन्ध्या होते ही, वे नगर से बाहर जाया करते थे।

अंजीर के पेड़ से शिक्षा

[20]फिर प्रातःकाल जब वे उधर से जा रहे थे, तो उन्होंने उस अंजीर के पेड़ को जड़ तक सूखा हुआ देखा। [21]पतरस ने स्मरण करके कहा, "रब्बी, देख, यह अंजीर का पेड़ जिसे तू ने शाप दिया था सूख गया है।" [22]यीशु ने उस से कहा, "परमेश्वर पर विश्वास रख। [23]मैं तुम से सच कहता हूं, जो कोई इस पर्वत से कहे, 'उखड़ जा और समुद्र में जा पड़,' और अपने मन में सन्देह न करे, परन्तु जो कुछ उसने कहा, विश्वास करता है कि हो जाएगा तो उसके लिए वह हो जाएगा। [24]इसलिए मैं तुम से कहता हूं, कि जो कुछ तुम प्रार्थना में मांगते हो विश्वास करो कि उसे पा चुके हो, और वह तुम्हें मिल जाएगा। [25]और जब कभी तुम खड़े होकर प्रार्थना करो तो यदि तुम्हारे मन में किसी के प्रति कुछ विरोध है तो क्षमा करो, जिससे कि तुम्हारा पिता जो स्वर्ग में है तुम्हारे भी अपराध क्षमा करे। [26]*[यदि तुम क्षमा नहीं करोगे तो तुम्हारा पिता भी जो स्वर्ग में है तुम्हारे अपराध क्षमा नहीं करेगा।]"

यीशु के अधिकार पर सन्देह

[27]वे फिर यरूशलेम में आए। और जब वह मन्दिर में टहल रहा था, तो मुख्य याजक, शास्त्री और प्राचीन उसके पास आए, [28]वे उस से पूछने लगे, "तू ये काम किस अधिकार से कर रहा है, या इन

की पाण्डुलिपियों में पद 26 सम्मिलित है

कामों को करने का अधिकार तुझे किसने दिया है?" 29और यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे एक प्रश्न पूछता हूं। तुम मुझे उत्तर दो, फिर मैं भी तुम्हें बताऊंगा कि ये काम किस अधिकार से करता हूं। 30यूहन्ना का बपतिस्मा स्वर्ग की ओर से था या मनुष्यों की ओर से? मुझे उत्तर दो।" 31वे यह कहकर आपस में विवाद करने लगे, "यदि हम कहें, 'स्वर्ग से,' तो वह कहेगा, 'तो तुमने उसका विश्वास क्यों नहीं किया?' 32फिर क्या हम यह कहें, 'मनुष्यों की ओर से'?"— वे लोगों से डरते थे क्योंकि सब यह मानते थे कि यूहन्ना सचमुच एक नबी था। 33यीशु को उत्तर देते हुए उन्होंने कहा, "हम नहीं जानते।" और यीशु ने उनसे कहा, "मैं भी तुम्हें नहीं बताऊंगा कि ये काम किस अधिकार से करता हूं।"

दाख की बारी का दृष्टान्त

12 फिर वह उनसे दृष्टान्तों में कहने लगा: "**एक मनुष्य ने दाख की बारी लगाई, और बाड़ा लगाकर उसे घेरा, और दाख के कोल्हू के नीचे एक रस-कुण्ड खोदा, और एक मचान बनाया,** और किसानों को ठेका देकर यात्रा पर चला गया। 2फसल के मौसम में उसने एक दास को किसानों के पास भेजा कि उन किसानों से दाख की बारी की कुछ फसल प्राप्त करे। 3पर उन्होंने उसे पकड़कर पीटा और उसे खाली हाथ लौटा दिया। 4उसने उनके पास फिर एक दास को भेजा, और उन्होंने उसका सिर फोड़ दिया और उसका अपमान किया। 5फिर उसने एक और को भेजा, उन्होंने उसे मार डाला; और इसी प्रकार अन्य बहुतों को भी, कुछ को पीटा और कुछ को मार डाला। 6अब भेजने को उसके पास एक और रह गया, अर्थात् उसका प्रिय पुत्र। यह सोचकर उसने अन्त में उसे भी भेजा कि 'वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे।' 7परन्तु उन किसानों ने आपस में कहा, 'यही तो उत्तराधिकारी है; आओ, हम इसे मार डालें, तब सम्पत्ति हमारी हो जाएगी।' 8और उन्होंने उसे पकड़कर मार डाला और दाख की बारी के बाहर फेंक दिया। 9इसलिए दाख की बारी का स्वामी क्या करेगा? वह आकर किसानों को नाश करेगा और दाख की बारी दूसरों को दे देगा। 10क्या तुम ने पवित्रशास्त्र का यह वचन नहीं पढ़ा: **'जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया, वही कोने का प्रमुख पत्थर बना; 11यह प्रभु की ओर से हुआ और हमारी दृष्टि में अद्भुत है?"** 12वे उसे पकड़ना चाहते थे, फिर भी लोगों से डरते थे, क्योंकि वे समझ गए थे कि उसने यह दृष्टान्त उनके विरोध में कहा था। इसलिए वे उसे छोड़कर चले गए।

कैसर को कर चुकाना

13उन्होंने कुछ फरीसियों और हेरोदियों को उसके पास भेजा कि उसी की बातों में उसे फंसाएं। 14और उन्होंने आकर उस से कहा, "हे गुरु, हम जानते हैं कि तू सच्चा है, और तू किसी के प्रभाव में नहीं आता। तू तो किसी का पक्षपात नहीं करता, परन्तु परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से सिखाता है। क्या कैसर को कर चुकाना उचित है या नहीं? 15हम कर चुकाएं या न चुकाएं?" परन्तु उसने उनके पाखण्ड को भांपकर उनसे कहा, "तुम मुझे क्यों परखते हो? एक दीनार मेरे पास लाओ कि मैं उसे देखूं।" 16वे

और उसने उनसे कहा, "इस पर किसकी आकृति व लेख हैं?" उन्होंने कहा, "कैसर के।" [17]और यीशु ने उनसे कहा, "जो कैसर का है वह कैसर को दो, और जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर को दो।" और वे चकित हुए।

पुनरुत्थान और विवाह

[18]फिर कुछ सदूकी—जो कहते हैं कि पुनरुत्थान है ही नहीं—उसके पास आकर पूछने लगे, [19]"गुरु, हमारे लिए मूसा ने एक व्यवस्था लिखी है कि **यदि किसी का भाई निःसन्तान मर जाए,** और अपने पीछे पत्नी को छोड़ जाए **तो उसका भाई उसकी पत्नी को ब्याह ले और अपने भाई के लिए सन्तान उत्पन्न करे।** [20]सात भाई थे। पहिला भाई विवाह करके निःसन्तान मर गया। [21]तब दूसरे भाई ने उस स्त्री से विवाह किया और बिना सन्तान मर गया, और तीसरे ने भी ऐसा ही किया। [22]और सातों से कोई सन्तान न हुई। अन्त में वह स्त्री भी मर गई। [23]पुनरुत्थान होने पर जब वे जीवित हो उठेंगे तो वह किसकी पत्नी होगी? क्योंकि वह सातों की पत्नी बनी थी।" [24]यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुम इस कारण भूल में नहीं पड़े हो कि तुम न तो पवित्रशास्त्र को समझते हो और न ही परमेश्वर की सामर्थ को? [25]क्योंकि जब लोग मृतकों में से जी उठते हैं तो वे न विवाह करते और न ही विवाह में दिए जाते हैं वरन् वे स्वर्ग में दूतों के समान होते हैं। [26]और इस तथ्य के विषय में कि मृतक पुनः जी उठते हैं, क्या तुमने मूसा की पुस्तक में जलती हुई झाड़ी का वर्णन नहीं पढ़ा? कि परमेश्वर ने किस प्रकार उस से कहा, '**मैं इब्राहीम का, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं**'? [27]वह मृतकों का नहीं परन्तु जीवितों का परमेश्वर है। तुम बड़ी भूल में पड़े हो।"

सब से बड़ी आज्ञा

[28]शास्त्रियों में से एक ने आकर उन्हें वाद-विवाद करते सुना, और यह जानकर कि उसने कैसे सुन्दर ढंग से उन्हें उत्तर दिया है, उस से पूछा, "सब से प्रमुख आज्ञा कौन सी है?" [29]यीशु ने उत्तर दिया, "प्रमुख आज्ञा यह है, '**हे इस्राएल सुन, प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है,**' [30]**और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे हृदय, और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि और अपनी सारी शक्ति से प्रेम करना।** [31]और दूसरी यह है, '**तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना।**' इन से बढ़कर कोई और आज्ञा नहीं।" [32]शास्त्री ने उस से कहा, "हे गुरु, बिल्कुल ठीक, तू ने सच ही कहा **कि वह एक ही है; और उसको छोड़ कोई दूसरा नहीं;** [33]**और उस से सारे हृदय, सारी बुद्धि और सारी शक्ति से प्रेम करना और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना, सारे होमबलि और बलिदानों से बढ़कर है।**" [34]जब यीशु ने देखा कि उसने समझदारी से उत्तर दिया है, तो उस से कहा, "तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं," और इसके बाद किसी को उस से कुछ पूछने का साहस न हुआ।

मसीह किसका पुत्र?

[35]यीशु मन्दिर में उपदेश दे रहा था तो उसने कहा, "शास्त्री कैसे कहते हैं कि मसीह दाऊद का पुत्र है? [36]क्योंकि दाऊद ने स्वयं पवित्र आत्मा में होकर कहा है, '**प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, "मेरे दाहिने बैठ**

जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पांव तले न कर दूं"।' [37]दाऊद स्वयं उसे 'प्रभु' कहता है; अत: वह उसका पुत्र कैसे हुआ?" विशाल जनसमूह बड़े आनन्द से उसकी सुन रहा था।

[38]और वह अपने उपदेश में कह रहा था, "शास्त्रियों से सावधान रहो, जो लम्बे चोगे पहिनकर घूमना और बाज़ारों में आदर-सत्कार पाना पसन्द करते हैं, [39]तथा आराधनालयों में प्रमुख आसन और भोजों में सम्मानित स्थान। [40]ये ही वे हैं जो विधवाओं के घरों को निगल जाते हैं, और दिखावे के लिए लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएं करते हैं। ये भारी दण्ड पाएंगे।"

कंगाल विधवा का दान

[41]वह मन्दिर के खजाने के सामने बैठ गया और देखने लगा कि लोग किस प्रकार मन्दिर के कोष में पैसे डाल रहे थे; और बहुत से धनवान बड़ी बड़ी रकम डाल रहे थे। [42]इतने में एक कंगाल विधवा ने आकर तांबे के दो छोटे छोटे *सिक्के डाले जिनका मूल्य लगभग एक †पैसे के बराबर होता है। [43]तब यीशु ने अपने चेलों को पास बुलाकर उनसे कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि कोष में डालने वालों में से इस कंगाल विधवा ने सब से बढ़कर डाला है; [44]क्योंकि अन्य सब ने अपनी बहुतायत में से डाला है, परन्तु इसने अपनी दरिद्रता में से जो कुछ उसका था अर्थात् अपनी सारी जीविका डाल दी है।"

युग के अन्त का चिन्ह

13 जब वह मन्दिर से बाहर निकल रहा था तो उसके चेलों में से एक ने उस से कहा, "हे गुरु, देख, कैसे विशाल पत्थर और कैसे भव्य भवन!" [2]और यीशु ने उस से कहा, "तुम इन विशाल भवनों को देखते हो? एक पत्थर भी पत्थर पर न छूटेगा जो ढाया न जाएगा।"

[3]जब वह मन्दिर के सामने जैतून पर्वत पर बैठा था तो पतरस, याकूब, यूहन्ना और अन्द्रियास ने एकान्त में उस से पूछा, [4]"हमें बता कि ये बातें कब होंगी और जब ये सब बातें पूरी होने पर हों तो इनका चिन्ह क्या होगा?" [5]और यीशु उनसे कहने लगा, "सावधान रहो कि कोई तुम्हें धोखा न दे। [6]अनेक मेरे नाम से यह कहते हुए आएंगे, 'मैं वही हूं!' और वे बहुतों को धोखा देंगे। [7]जब तुम लड़ाइयों की चर्चा और लड़ाइयों की अफ़वाह सुनो तो भयभीत न होना; इन बातों का होना अवश्य है। फिर भी उस समय अन्त न होगा। [8]क्योंकि एक जाति के विरुद्ध दूसरी जाति और एक राज्य के विरुद्ध दूसरा राज्य उठ खड़ा होगा। बहुत से स्थानों पर भूकम्प आएंगे और अकाल भी पड़ेंगे। ये सब बातें पीड़ाओं का आरम्भ ही होंगी।

[9]"परन्तु तुम सावधान रहो। क्योंकि लोग तो तुम्हें न्यायालयों में सौंपेंगे और आराधनालयों में कोड़े मारेंगे, और तुम मेरे कारण शासकों एवं राजाओं के सामने खड़े होगे कि उनके सम्मुख साक्षी हो। [10]और अवश्य है कि पहिले सुसमाचार सब जातियों में प्रचार किया जाए। [11]वे जब तुम्हें बन्दी बनाकर सौंप दें, तो पहिले से चिन्ता न करना कि हम क्या कहेंगे परन्तु उसी घड़ी तुम्हें जो कुछ दिया जाए वही कहना; क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं

42 *यूनानी में, लेप्टा †यूनानी में, कौद्रान्तेस अर्थात्, दीनार का 1/64 भाग

हो, परन्तु पवित्र आत्मा है। 12भाई, भाई को और पिता, पुत्र को मृत्यु के लिए सौंपेगा; और बच्चे अपने माता-पिता के विरोध में उठ खड़े होंगे और उन्हें मरवा डालेंगे। 13और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से घृणा करेंगे, परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा उसी का उद्धार होगा। 14परन्तु जब तुम **उस उजाड़ने वाली घृणित वस्तु** को वहां खड़ी देखो जहां उसे नहीं होना चाहिए—पाठक समझ ले—तो जो यहूदिया में हों वे पर्वतों पर भाग जाएं। 15और वह जो घर की छत पर हो, नीचे न उतरे और न कुछ लेने के लिए घर के भीतर जाए, 16और वह जो खेत में हो, अपना चोगा लेने के लिए पीछे न लौटे। 17परन्तु उनके लिए हाय जो उन दिनों में गर्भवती होंगी और जो शिशुओं को दूध पिलाती होंगी! 18प्रार्थना करो कि यह शीत ऋतु में न हो। 19क्योंकि वे दिन ऐसे क्लेश के होंगे जैसे सृष्टि के आरम्भ से, जिसे परमेश्वर ने सृजा, अब तक न तो हुए और न फिर कभी होंगे। 20और यदि प्रभु ने उन दिनों को घटाया न होता, तो कोई भी प्राणी न बचता, परन्तु उन चुने हुओं के कारण जिन्हें उसने चुन लिया है, उसने इन दिनों को घटाया। 21तब यदि कोई तुम से कहे, 'देखो, मसीह यहां है,' या, 'देखो, वह वहां है,' तो विश्वास न करना; 22क्योंकि झूठे मसीह और झूठे नबी उठ खड़े होंगे, और चिन्ह और अद्भुत काम दिखाएंगे कि यदि सम्भव हो तो चुने हुओं को भी भटका दें। 23परन्तु सावधान रहना; देखो, मैंने पहिले ही तुम्हें सब कुछ बता दिया है।

24"परन्तु उन दिनों में, उस क्लेश के पश्चात्, **सूर्य अन्धकारमय हो जाएगा, या चन्द्रमा अपना प्रकाश न देगा,** 25**और आकाश से तारागण गिरते रहेंगे, तथा आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी।** 26**तब लोग मनुष्य के पुत्र को** बड़ी सामर्थ और महिमा के साथ **बादलों में आता हुआ देखेंगे।** 27उस समय वह अपने स्वर्गदूतों को भेजकर, **पृथ्वी के इस छोर से लेकर आकाश के उस छोर तक, चारों दिशाओं से अपने चुने हुओं को एकत्रित करेगा।**

28"अंजीर के वृक्ष से यह दृष्टान्त सीखो: जब उसकी शाखा कोमल हो जाती है, और उसमें पत्तियां निकलने लगतीं हैं, तो तुम जान लेते हो कि ग्रीष्म ऋतु निकट है। 29इसी प्रकार तुम भी जब इन बातों को होते देखो तो जान लेना कि वह निकट है वरन् द्वार पर ही है। 30मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें इस पीढ़ी का अन्त न होगा। 31आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरे वचन कभी न टलेंगे। 32परन्तु उस दिन या घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत, न ही पुत्र, परन्तु केवल पिता।

जागते रहो

33"सावधान हो जाओ, जागते रहो और प्रार्थना करो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह निर्धारित समय कब आएगा? 34यह उस मनुष्य के समान है, जो अपना घर छोड़कर यात्रा पर बाहर गया। अपने दासों को अधिकार देकर उसने प्रत्येक को उसका काम बताया तथा द्वारपाल को भी जागते रहने की आज्ञा दी।

35"इसलिए जागते रहो—क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का स्वामी कब आएगा, सायंकाल, मध्यरात्रि या मुर्ग के बांग देने के समय अथवा प्रातःकाल—

[36]कहीं ऐसा न हो कि वह अचानक आकर तुम्हें सोता हुआ पाए। [37]और जो मैं तुमसे कहता हूं, वही सब से कहता हूं : 'जागते रहो'।"

बहुमूल्य इत्र

14 फसह और अखमीरी रोटी के पर्व के लिए दो दिन शेष रह गए थे; और महायाजक और शास्त्री इस बात की खोज में थे कि उसे कैसे चुपके से पकड़ें और मार डालें; [2]परन्तु वे कह रहे थे, "पर्व के समय नहीं, कहीं ऐसा न हो कि लोगों में दंगा हो जाए।"

[3]जब वह बैतनिय्याह के शमौन नामक कोढ़ी के घर में भोजन करने बैठा था, तो वहां एक स्त्री संगमरमर के पात्र में जटामांसी का बहुमूल्य शुद्ध इत्र लेकर आई; और उसने पात्र को तोड़कर इत्र को उसके सिर पर उण्डेल दिया। [4]परन्तु कुछ लोग खिसियाकर आपस में कहने लगे, "यह इत्र किस लिए नष्ट किया गया? [5]क्योंकि यह इत्र तो तीन सौ दीनार से अधिक मूल्य में बेचा जाकर कंगालों को दिया जा सकता था।" और वे उसे झिड़कने लगे। [6]परन्तु यीशु ने कहा, "उसे छोड़ दो, उसे क्यों तंग करते हो? उसने तो मेरे साथ भलाई की है। [7]क्योंकि कंगाल तो सदैव तुम्हारे साथ रहते हैं, और जब तुम चाहो तब उनके साथ भलाई कर सकते हो, परन्तु मैं तुम्हारे साथ सदैव नहीं रहूंगा। [8]जितना वह कर सकती थी, उसने किया, उसने मेरे गाड़े जाने के लिए पहिले ही से मेरी देह पर इत्र मला है। [9]मैं तुम से सच कहता हूं कि समस्त संसार में जहां कहीं सुसमाचार का प्रचार होगा, वहां इस स्त्री ने जो किया है वह भी उसकी स्मृति में कहा जाएगा।"

[10]और यहूदा इस्करियोती जो बारहों में से एक था महायाजकों के पास गया कि उसे उनके हाथ पकड़वा दे। [11]और जब उन्होंने यह सुना तो प्रसन्न हुए, और उसे रुपए देने का वचन दिया। अतः वह अवसर ढूंढ़ने लगा कि उसे किसी प्रकार पकड़वा दे।

प्रभु भोज

[12]अखमीरी रोटी के पर्व के पहिले दिन, जब फसह के मेम्ने का बलिदान किया जाता था तो उसके चेलों ने उस से पूछा, "तू कहां चाहता है कि हम जाकर तेरे लिए फसह खाने की तैयारी करें?" [13]उसने अपने चेलों में से दो को यह कहकर भेजा, "नगर में जाओ, और एक मनुष्य जल का घड़ा उठाकर लाते हुए तुम्हें मिलेगा; उसके पीछे हो लेना; [14]और जहां वह प्रवेश करे, उस घर के स्वामी से कहना, 'गुरु कहता है, "मेरा अतिथि-कक्ष कहां है जिसमें मैं अपने चेलों के साथ फसह खाऊं"?' [15]वह स्वयं तुम्हें एक बड़ा, सुसज्जित ऊपरी कक्ष दिखाएगा, वहां हमारे लिए तैयारी करना।" [16]चेले गए और नगर में जाकर जैसा उसने कहा था वैसा ही पाया, और फसह की तैयारी की।

[17]जब सन्ध्या हो गई तो वह बारहों के साथ आया। [18]और जब वे बैठकर भोजन कर रहे थे, तब यीशु ने कहा, "मैं तुम से सच कहता हूं, तुम में से एक—जो मेरे साथ भोजन कर रहा है—मुझे पकड़वाएगा।" [19]वे उदास हुए और एक एक करके उस से पूछने लगे, "क्या वह मैं हूं?" [20]और उसने उनसे कहा, "वह बारह में से एक है जो मेरे साथ कटोरे में हाथ डालता है। [21]क्योंकि मनुष्य का

जैसा उसके विषय में लिखा है, जाता ही है; परन्तु हाय उस मनुष्य पर जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है! उस मनुष्य के लिए अच्छा होता यदि उसका जन्म ही न हुआ होता।"

22जब वे भोजन कर रहे थे, उसने रोटी ली और आशिष मांगकर तोड़ी और उन्हें देकर कहा, "इसे लो; यह मेरी देह है।" 23फिर उसने प्याला लिया और धन्यवाद देकर उन्हें दिया और उन सबने उसमें से पीया। 24तब उसने उनसे कहा, "यह वाचा का मेरा वह लहू है जो बहुतों के लिए बहाया जाता है। 25मैं तुम से सच कहता हूं, मैं दाख का रस उस दिन तक फिर कभी नहीं पीऊंगा, जब तक परमेश्वर के राज्य में नया न पीऊं।"

26भजन गाने के पश्चात् वे जैतून पर्वत पर चले गए।

27तब यीशु ने उनसे कहा, "तुम सब ठोकर खाओगे, क्योंकि यह लिखा है, '**मैं चरवाहे को मारूंगा, और भेड़ें तित्तर-बित्तर हो जाएंगी।**' 28परन्तु अपने जीवित होने के पश्चात् मैं तुम से पहिले गलील को जाऊंगा।" 29पतरस ने उस से कहा, "चाहे सब छोड़ दें, मैं नहीं छोडूंगा।" 30तब यीशु ने उस से कहा, "मैं तुझ से सच कहता हूं: आज ही रात को मुर्ग के दो बार बांग देने से पहिले तू स्वयं तीन बार मेरा इन्कार करेगा।" 31परन्तु पतरस दृढ़ता से यही कहता रहा, "चाहे मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े, फिर भी मैं तेरा इन्कार नहीं करूंगा!" और वे सब यही बात कर रहे थे।

गतसमनी के बगीचे में

32और वे 'गतसमनी' नामक स्थान में आए; और उसने अपने चेलों से कहा, "तुम यहां बैठे
करूं।" 33और
याकूब और यू
ही व्यथित
34और उसने
उदास है, यहां
यहीं ठहरो और
उनसे थोड़ा
गिरकर प्रार्थन
सम्भव हो, तो
वह कहने लगा
लिए सब कुछ
से हटा ले। फिर
इच्छा पूरी हो।
उन्हें सोते पाय
"शमौन, तू सो
भी न जाग सक
करते रहो कि प
तो तैयार है
उसने
की।

थीं,

42

था। [44]उसके पकड़वाने वाले ने उन्हें यह कह कर संकेत दिया था, कि जिसे मैं चूमूं वही है; उसे पकड़ कर सावधानी से ले जाना।" [45]वहां पहुंचकर और तुरन्त उसके पास जाकर, उसने कहा, "रब्बी!" और उसे चूमा। [46]तब उन्होंने उसे पकड़कर गिरफ़्तार कर लिया। [47]इस पर पास खड़े लोगों में से एक ने तलवार खींचकर महायाजक के दास पर चलाई और उसका कान उड़ा दिया। [48]यीशु ने उत्तर देते हुए उनसे कहा, "क्या तुम तलवार और लाठियां लेकर मुझे बन्दी बनाने आए हो? क्या मैं कोई डाकू हूं? [49]मैं तो तुम्हारे साथ प्रतिदिन मन्दिर में उपदेश दिया करता था और तुमने मुझे नहीं पकड़ा, परन्तु यह इसलिए हुआ कि पवित्रशास्त्र का लेख पूरा हो।" [50]इस पर सब ने उसे त्याग दिया और भाग गए।

[51]एक नवयुवक उसके पीछे चल रहा था। वह अपने नंगे शरीर पर केवल मलमल की चादर ओढ़े हुए था। उन्होंने उसे पकड़ा, [52]परन्तु वह मलमल की चादर छोड़कर नंगा ही भाग निकला।

महासभा के सामने यीशु

[53]वे यीशु को महायाजक के पास ले गए; और सब मुख्य याजक, प्राचीन और शास्त्री इकट्ठे हो गए। [54]पतरस तो दूर ही दूर से महायाजक के आंगन तक उसके पीछे पीछे चला गया था। वह पहरेदारों के साथ बैठकर वहां आग तापने लगा। [55]मुख्य याजक और सारी महासभा यीशु को मार डालने के लिए उसके विरुद्ध साक्षी ढूंढ़ने का प्रयास करते रहे, परन्तु उन्हें एक भी साक्षी न मिली। [56]क्योंकि बहुत से लोग उसके विरुद्ध झूठी साक्षी दे रहे थे, परन्तु उनकी साक्षी एक दूसरे से मिलती न थी। [57]तब कुछ लोग खड़े होकर उसके विरुद्ध यह साक्षी देने लगे, [58]"हमने इसे यह कहते सुना है, 'मैं हाथों से बनाए गए इस मन्दिर को ध्वस्त कर दूंगा और तीन दिन में दूसरा खड़ा कर दूंगा जो हाथों से बनाया हुआ न होगा'।" [59]इस पर भी उनकी साक्षी एक समान न थी। [60]फिर महायाजक उठा और उसने आगे आकर यीशु से पूछा, "जो साक्षी ये लोग तेरे विरुद्ध दे रहे हैं क्या तू उसका उत्तर नहीं देता?" [61]परन्तु वह चुप रहा और उसने कोई उत्तर न दिया। महा-याजक ने फिर उस से यह कहते हुए पूछा, "क्या तू उस परम धन्य का पुत्र मसीह है?" [62]यीशु ने कहा, "मैं हूं! और तुम **मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठा हुआ और स्वर्ग के बादलों के साथ आता हुआ देखोगे।** [63]इस पर महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़कर कहा, "अब हमें और साक्षियों की क्या आवश्यकता है? [64]तुम यह निन्दा सुन चुके हो। इस पर तुम्हारा क्या मत है?" और उन सब ने उसे प्राण-दण्ड के योग्य दोषी ठहराया। [65]तब कुछ उस पर थूकने लगे, और उसकी आंखों पर पट्टी बांध कर घूंसे मारने लगे और उस से कहने लगे, "भविष्यद्वाणी कर!" और पहरेदारों ने पकड़कर उसके मुंह पर थप्पड़ मारे।

पतरस का इन्कार

[66]जब पतरस नीचे आंगन में था, तो महायाजक की दासियों में से एक वहां आई, [67]और पतरस को आग तापते देखा और उस पर दृष्टि गड़ाकर कहने लगी, "तू भी तो यीशु नासरी के साथ था," [68]परन्तु उसने इन्कार करते हुए कहा,

जैसा उसके विषय में लिखा है, जाता ही है; परन्तु हाय उस मनुष्य पर जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है! उस मनुष्य के लिए अच्छा होता यदि उसका जन्म ही न हुआ होता।"

22जब वे भोजन कर रहे थे, उसने रोटी ली और आशिष मांगकर तोड़ी और उन्हें देकर कहा, "इसे लो; यह मेरी देह है।" 23फिर उसने प्याला लिया और धन्यवाद देकर उन्हें दिया और उन सबने उसमें से पीया। 24तब उसने उनसे कहा, "यह वाचा का मेरा वह लहू है जो बहुतों के लिए बहाया जाता है। 25मैं तुम से सच कहता हूं, मैं दाख का रस उस दिन तक फिर कभी नहीं पीऊंगा, जब तक परमेश्वर के राज्य में नया न पीऊं।"

26भजन गाने के पश्चात् वे जैतून पर्वत पर चले गए।

27तब यीशु ने उनसे कहा, "तुम सब ठोकर खाओगे, क्योंकि यह लिखा है, '**मैं चरवाहे को मारूंगा, और भेड़ें तित्तर-बित्तर हो जाएंगी।**' 28परन्तु अपने जीवित होने के पश्चात् मैं तुम से पहिले गलील को जाऊंगा।" 29पतरस ने उस से कहा, "चाहे सब छोड़ दें, मैं नहीं छोड़ूंगा।" 30तब यीशु ने उस से कहा, "मैं तुझ से सच कहता हूं: आज ही रात को मुर्ग के दो बार बांग देने से पहिले तू स्वयं तीन बार मेरा इन्कार करेगा।" 31परन्तु पतरस दृढ़ता से यही कहता रहा, "चाहे मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े, फिर भी मैं तेरा इन्कार नहीं करूंगा!" और वे सब यही बात कर रहे थे।

गतसमनी के बगीचे में

32और वे 'गतसमनी' नामक स्थान में उसने अपने चेलों से कहा, "तुम यहां बैठे रहो, जब तक मैं प्रार्थना करूं।" 33और उसने अपने साथ पतरस, याकूब और यूहन्ना को लिया, और बहुत ही व्यथित और व्याकुल होने लगा। 34और उसने उनसे कहा, "मेरा मन बहुत उदास है, यहां तक कि मैं मरने पर हूं। यहीं ठहरो और जागते रहो।" 35फिर वह उनसे थोड़ा आगे बढ़ा, और भूमि पर गिरकर प्रार्थना करने लगा कि यदि सम्भव हो, तो यह घड़ी टल जाए। 36और वह कहने लगा, "हे अब्बा! पिता! तेरे लिए सब कुछ सम्भव है। यह प्याला मुझ से हटा ले। फिर भी मेरी नहीं परन्तु तेरी इच्छा पूरी हो।" 37और उसने आकर उन्हें सोते पाया और पतरस से कहा, "शमौन, तू सो रहा है? क्या तू एक घड़ी भी न जाग सका? 38जागते और प्रार्थना करते रहो कि परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, परन्तु देह दुर्बल है।" 39और उसने फिर जाकर इन्हीं शब्दों में प्रार्थना की। 40और उसने फिर आकर उन्हें सोते पाया क्योंकि उनकी आंखें नींद से बोझिल थीं, और वे नहीं जानते थे कि उसे क्या उत्तर दें। 41फिर उसने तीसरी बार आकर उनसे कहा, "क्या तुम अब तक सो रहे हो और विश्राम कर रहे हो? बहुत हो चुका! घड़ी आ पहुंची है। देखो, मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथों में पकड़वाया जाता है। 42उठो, चलें! देखो, मेरा पकड़वाने वाला निकट है!"

यीशु की गिरफ़्तारी

43जब वह यह कह ही रहा था तो यहूदा, जो बारहों में से एक था, तुरन्त आ पहुंचा, और उसके साथ तलवारें और लाठियां लिए हुए एक भीड़ थी जिसे मुख्य याजकों, शास्त्रियों और प्राचीनों ने भेजा

था। 44उसके पकड़वाने वाले ने उन्हें यह कह कर संकेत दिया था, कि जिसे मैं चूमूं वही है; उसे पकड़ कर सावधानी से ले जाना।" 45वहां पहुंचकर और तुरन्त उसके पास जाकर, उसने कहा, "रब्बी!" और उसे चूमा। 46तब उन्होंने उसे पकड़कर गिरफ्तार कर लिया। 47इस पर पास खड़े लोगों में से एक ने तलवार खींचकर महायाजक के दास पर चलाई और उसका कान उड़ा दिया। 48यीशु ने उत्तर देते हुए उनसे कहा, "क्या तुम तलवार और लाठियां लेकर मुझे बन्दी बनाने आए हो? क्या मैं कोई डाकू हूं? 49मैं तो तुम्हारे साथ प्रतिदिन मन्दिर में उपदेश दिया करता था और तुमने मुझे नहीं पकड़ा, परन्तु यह इसलिए हुआ कि पवित्रशास्त्र का लेख पूरा हो।" 50इस पर सब ने उसे त्याग दिया और भाग गए।

51एक नवयुवक उसके पीछे चल रहा था। वह अपने नंगे शरीर पर केवल मलमल की चादर ओढ़े हुए था। उन्होंने उसे पकड़ा, 52परन्तु वह मलमल की चादर छोड़कर नंगा ही भाग निकला।

महासभा के सामने यीशु

53वे यीशु को महायाजक के पास ले गए; और सब मुख्य याजक, प्राचीन और शास्त्री इकट्ठे हो गए। 54पतरस तो दूर ही दूर से महायाजक के आंगन तक उसके पीछे पीछे चला गया था। वह पहरेदारों के साथ बैठकर वहां आग तापने लगा। 55मुख्य याजक और सारी महासभा यीशु को मार डालने के लिए उसके विरुद्ध साक्षी ढूंढ़ने का प्रयास करते रहे, परन्तु उन्हें एक भी साक्षी न मिली। 56क्योंकि बहुत से लोग उसके विरुद्ध झूठी साक्षी दे रहे थे, परन्तु उनकी साक्षी एक दूसरे से मिलती न थी। 57तब कुछ लोग खड़े होकर उसके विरुद्ध यह साक्षी देने लगे, 58"हमने इसे यह कहते सुना है, 'मैं हाथों से बनाए गए इस मन्दिर को ध्वस्त कर दूंगा और तीन दिन में दूसरा खड़ा कर दूंगा जो हाथों से बनाया हुआ न होगा'।" 59इस पर भी उनकी साक्षी एक समान न थी। 60फिर महायाजक उठा और उसने आगे आकर यीशु से पूछा, "जो साक्षी ये लोग तेरे विरुद्ध दे रहे हैं क्या तू उसका उत्तर नहीं देता?" 61परन्तु वह चुप रहा और उसने कोई उत्तर न दिया। महा-याजक ने फिर उस से यह कहते हुए पूछा, "क्या तू उस परम धन्य का पुत्र मसीह है?" 62यीशु ने कहा, "मैं हूं! और तुम **मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठा हुआ और स्वर्ग के बादलों के साथ आता हुआ देखोगे।"** 63इस पर महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़कर कहा, "अब हमें और साक्षियों की क्या आवश्यकता है? 64तुम यह निन्दा सुन चुके हो। इस पर तुम्हारा क्या मत है?" और उन सब ने उसे प्राण-दण्ड के योग्य दोषी ठहराया। 65तब कुछ उस पर थूकने लगे, और उसकी आंखों पर पट्टी बांध कर घूंसे मारने लगे और उस से कहने लगे, "भविष्यद्वाणी कर!" और पहरेदारों ने पकड़कर उसके मुंह पर थप्पड़ मारे।

पतरस का इन्कार

66जब पतरस नीचे आंगन में था, तो महायाजक की दासियों में से एक वहां आई, 67और पतरस को आग तापते देखा और उस पर दृष्टि गड़ाकर कहने लगी, "तू भी तो यीशु नासरी के साथ था," 68परन्तु उसने इन्कार करते हुए कहा,

यीशु का दफ़नाया जाना

[42]जब सन्ध्या हो गई, तब तैयारी का दिन होने के कारण, अर्थात् सब्त से एक दिन पहिले, [43]अरिमतिया का निवासी यूसुफ आया जो महासभा का एक प्रतिष्ठित सदस्य था। वह स्वयं ही परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा कर रहा था। उसने साहस करके पिलातुस के समक्ष जाकर यीशु का शव मांगा। [44]पिलातुस को आश्चर्य हुआ कि उसकी मृत्यु इतने शीघ्र हो गई, और उसने सूबेदार को बुलाकर पूछा, "क्या वह मर चुका है?" [45]फिर उसने सूबेदार से इसकी पुष्टि करके यूसुफ को शव दे दिया। [46]तब यूसुफ ने मलमल का कपड़ा मोल लिया और शव को उतारकर उसमें लपेटा, तथा एक कबर में जो चट्टान में खोदी गई थी रख दिया; और कबर के द्वार पर एक पत्थर लुढ़का कर लगा दिया। [47]मरियम मगदलीनी और योसेस की माता मरियम देख रही थीं कि उसे कहां रखा गया है।

यीशु का पुनरुत्थान

16 जब सब्त व्यतीत हो गया, मरियम मगदलीनी, याकूब की माता मरियम और सलोमी ने मसाले मोल लिए कि आकर उस पर मलें। [2]और सप्ताह के पहिले दिन सुबह सुबह सूर्योदय होते ही वे कब्र पर आईं। [3]वे आपस में कह रही थीं, "कौन हमारे लिए कब्र के द्वार से पत्थर हटाएगा?" [4]तब उन्होंने आंखें उठाकर देखा कि पत्थर बहुत बड़ा होने पर भी दूर लुढ़का हुआ है। [5]कब्र में प्रवेश करने पर उन्होंने एक युवक को श्वेत वस्त्र पहिने दाहिनी ओर बैठे देखा; और वे चकित हुईं। [6]उसने उनसे कहा, "चकित मत हो। तुम यीशु नासरी को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूंढ़ रही हो। वह जी उठा है, यहां नहीं है। देखो, यही वह स्थान है जहां उन्होंने उसे रखा था। [7]परन्तु, जाओ, उसके चेलों और पतरस को बताओ कि वह तुमसे पहिले गलील जाएगा और तुम उसे वहां देखोगे, जैसा कि उसने तुमसे कहा था।" [8]वे वहां से निकलीं और कब्र से भाग गईं, क्योंकि कंपकंपी और विस्मय उन पर छा गया था; और उन्होंने किसी से भी कुछ नहीं कहा क्योंकि वे भयभीत थीं।

मरियम मगदलीनी को दर्शन

[9]*[जी उठने के पश्चात् सप्ताह के पहिले दिन बहुत सवेरे ही, वह सबसे पहिले मरियम मगदलीनी को जिसमें से उसने सात दुष्टात्माएं निकाली थीं दिखाई दिया। [10]उसने जाकर यह समाचार यीशु के साथियों को सुनाया, जो शोक में डूबे हुए थे और रो रहे थे। [11]जब उन्होंने यह सुना कि वह जीवित है और उसको दिखाई दिया तो उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ।

[12]इसके पश्चात् वह दूसरे रूप में उनमें से दो को जब वे गांव की ओर जा रहे थे, दिखाई दिया। [13]उन्होंने जाकर दूसरों को भी यह समाचार दिया, परन्तु उन्होंने भी विश्वास नहीं किया।

[14]तत्पश्चात् वह उन ग्यारहों को भी जब वे भोजन करने बैठे थे, दिखाई दिया; और उनके अविश्वास और मन की कठोरता पर उनकी भर्त्सना की, क्योंकि उन्होंने उनका विश्वास नहीं किया था जिन्होंने उसके जी उठने के पश्चात् उसे देखा था। [15]और उसने उनसे कहा, "तुम

[1]प्राचीन हस्तलेखों में पद ९-२० नहीं हैं

सम्पूर्ण जगत में जाओ और सारी सृष्टि को सुसमाचार प्रचार करो। [16]जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले वह उद्धार पाएगा, परन्तु जो विश्वास न करे वह दोषी ठहराया जाएगा। [17]और विश्वास करने वालों में ये चिन्ह दिखाई देंगे: मेरे नाम से वे दुष्टात्माओं को निकालेंगे, तथा नई-नई भाषाएं बोलेंगे; [18]वे सांपों को उठा लेंगे, और यदि वे प्राणनाशक विष भी पी जाएं तो इस से उनकी हानि न होगी; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएंगे।"

स्वर्गारोहण

[19]अतः जब प्रभु यीशु उनसे बातें कर चुका, तो वह स्वर्ग में उठा लिया गया, और **परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया।** [20]और उन्होंने जाकर सब जगह प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और वचन को उन चिन्हों के द्वारा जो साथ साथ होते थे, दृढ़ करता रहा।]

***एक अतिरिक्त परिच्छेद:**

और तुरन्त उन्होंने पतरस और उसके साथियों को ये सब निर्देश सुना दिए। और इसके पश्चात् यीशु ने स्वयं अनन्त उद्धार के पवित्र और अविनाशी सुसमाचार को उनके द्वारा पूर्व से पश्चिम तक प्रचार किया।

लूका
रचित सुसमाचार

परिचय

1 बहुत से लोगों ने उन बातों का विवरण लिखने का कार्य अपने हाथों में लिया जो हमारे बीच में *घटी हैं— [2]ठीक वही बातें जो हमें उन लोगों से प्राप्त हुई हैं, जिन्होंने इन बातों को प्रारम्भ से ही देखा था और जो वचन के सेवक थे। [3]इसीलिए, हे अति मान्यवर थियोफिलुस, आरम्भ से इन सब बातों को सावधानी से और ठीक ठीक जांचने के पश्चात्, मुझे यह उचित जान पड़ा कि मैं भी इनको तेरे लिए क्रमानुसार लिखूं [4]जिस से कि तू उन बातों की वास्तविकता को जान ले जिनकी तुझे शिक्षा दी गई है।

यूहन्ना के जन्म की भविष्यद्वाणी

[5]यहूदिया के राजा हेरोदेस के राज्यकाल में जकरयाह नाम का एक याजक था जो अबिय्याह के दल का था। और उसकी पत्नी का नाम इलीशिबा था जो हारून के *वंश की थी। [6]वे दोनों

अतिरिक्त परिच्छेद: *यह परिच्छेद केवल बाद के कुछ हस्तलेखों और अनुवादों में, अधिकतर आठवें पद के बाद है। कुछ हस्तलेखों में यह ऐसे ही अर्थात् अध्याय के अन्त में पाया जाता है। 1 *या, निश्चित
5 *अर्थात्, याजकीय वंश

परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी थे और उनका आचरण प्रभु की सारी आज्ञाओं और विधियों के अनुसार निर्दोष था। [7]उनके कोई सन्तान न थी क्योंकि इलीशिवा बांझ थी और दोनों ही बूढ़े हो गए थे।

[8]ऐसा हुआ कि जब वह अपने दल की बारी आने पर परमेश्वर के सम्मुख याजक का कार्य कर रहा था, [9]तो याजकों की रीति के अनुसार वह चिट्ठी डालकर चुन लिया गया कि प्रभु के मन्दिर में प्रवेश करके धूप जलाए। [10]धूप जलाने के समय सारा जनसमूह बाहर प्रार्थना कर रहा था। [11]और उसे धूप की वेदी की दाहिनी ओर प्रभु का एक दूत खड़ा दिखाई दिया। [12]और उसे देख कर जकरयाह घबरा गया और भय ने उसे जकड़ लिया। [13]पर स्वर्गदूत ने उस से कहा, "हे जकरयाह, भयभीत न हो, क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गई है; तेरी पत्नी इलीशिवा से तेरे लिए एक पुत्र उत्पन्न होगा और तू उसका नाम यूहन्ना रखना। [14]तुझे आनन्द और हर्ष होगा, और उसके जन्म पर बहुत से लोग आनन्द मनाएंगे, [15]क्योंकि प्रभु की दृष्टि में वह महान् होगा; वह दाखरस और मदिरा नहीं पीएगा, और अपनी माता के गर्भ से ही पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाएगा। [16]वह इस्राएल के सन्तानों में से बहुतों को उनके प्रभु परमेश्वर की ओर लौटा ले आएगा। [17]और वह उसके आगे आगे एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में होकर चलेगा, **कि पितरों का हृदय बाल-बच्चों की ओर फेर दे**, और आज्ञा न मानने वालों को धर्मियों की समझ पर ले आए, जिस से कि वह प्रभु के लिए एक योग्य प्रजा तैयार करे।"

[18]जकरयाह ने स्वर्गदूत से पूछा, "मैं इसे निश्चित रूप से कैसे जान सकता हूं? क्योंकि मैं तो बूढ़ा हूं और मेरी पत्नी भी बूढ़ी हो गई है।" [19]स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, "मैं जिब्राईल हूं जो परमेश्वर के सामने खड़ा रहता हूं। मुझे इसलिए भेजा गया है कि मैं तुझ से बातें करूं और तुझे यह सुसन्देश सुनाऊं। [20]देख, जिस दिन तक ये बातें पूरी न हो जाएं तू गूंगा रहेगा और बोल न सकेगा, क्योंकि तू ने मेरी बातों पर विश्वास नहीं किया जो ठीक समय पर पूरी होंगी।" [21]लोग जकरयाह की प्रतीक्षा कर रहे थे, और उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि उसे मन्दिर में इतनी देर क्यों लग रही है? [22]परन्तु जब वह बाहर आया तो उनसे बोल न सका, और वे जान गए कि उसको मन्दिर में कोई दर्शन मिला है, और वह उन्हें संकेत करता रहा और गूंगा बना रहा। [23]और ऐसा हुआ कि जब उसके याजकीय सेवा के दिन पूरे हुए तो वह अपने घर लौटा।

[24]इन दिनों के पश्चात् उसकी पत्नी इलीशिवा गर्भवती हुई और उसने यह कहकर अपने आप को पांच महीने तक छिपाए रखा: [25]"इन दिनों में मुझ पर कृपा-दृष्टि करके, मनुष्यों में मेरे अपमान को दूर करने के लिए ही, प्रभु ने मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया है।"

यीशु के जन्म की भविष्यद्वाणी

[26]छठे महीने में परमेश्वर की ओर से जिब्राईल स्वर्गदूत नासरत नामक गलील के नगर में, [27]एक कुंवारी के पास भेजा गया जिसकी मंगनी यूसुफ नामक एक पुरुष से हुई थी जो दाऊद के वंश का था, और उस कुंवारी का नाम मरियम था। [28]और भीतर आकर स्वर्गदूत ने उस से कहा, "हे प्रभु की कृपापात्री, सलाम! प्रभु

तेरे साथ है।*" [29]इस कथन को सुनकर वह अत्यन्त घबरा गई और सोच में पड़ गई कि यह किस प्रकार का अभिवादन हो सकता है। [30]तब स्वर्गदूत ने उस से कहा, "हे मरियम, भयभीत न हो! क्योंकि तुझ पर परमेश्वर का अनुग्रह हुआ है। [31]देख, तू गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी, और तू उसका नाम यीशु रखना। [32]वह महान् होगा, और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा। प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसे देगा, [33]और वह याकूब के घराने पर अनन्तकाल तक राज्य करेगा, और उसके राज्य का अन्त न होगा।" [34]मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, "यह कैसे हो सकता है, क्योंकि मैं तो *कुंवारी ही हूं?" [35]स्वर्गदूत ने उससे कहा, "पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर आच्छादित होगी। इसी कारण वह पवित्र *पुत्र जो उत्पन्न होगा, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा। [36]देख, तेरी कुटुम्बिनी इलीशिबा से भी इस बुढ़ापे में एक पुत्र होने वाला है और यह उसका जो बांझ कहलाती थी, छठा महीना है। [37]क्योंकि परमेश्वर के लिए *कुछ भी असम्भव नहीं है।" [38]मरियम ने कहा, "देख, मैं तो प्रभु की दासी हूं। तेरे वचन के अनुसार ही मेरे साथ हो।" तब स्वर्गदूत उसके पास से चला गया।

इलीशिबा के पास मरियम

[39]तब उन्हीं दिनों में मरियम उठकर शीघ्रता से पहाड़ी प्रदेश में यहूदा के एक नगर को गई, [40]और जकरयाह के घर में प्रवेश करके उसने इलीशिबा को नमस्कार किया। [41]ऐसा हुआ कि ज्यों ही इलीशिबा ने मरियम का नमस्कार सुना, त्यों ही बच्चा उसके गर्भ में उछल पड़ा और इलीशिबा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हुई। [42]और उसने ऊंची आवाज़ में पुकारकर कहा, "तू स्त्रियों में धन्य है, और तेरे गर्भ का फल भी धन्य है! [43]मुझ पर यह अनुग्रह कैसे हुआ कि मेरे प्रभु की माता मेरे पास आई? [44]देख, ज्यों ही तेरे नमस्कार का शब्द मेरे कानों में पड़ा, बच्चा मेरे गर्भ में आनन्द से उछल पड़ा। [45]धन्य है वह स्त्री जिसने विश्वास किया *कि जो कुछ प्रभु ने उस से कहा है वह पूरा होगा।"

मरियम का स्तुति-गान

[46]तब मरियम ने कहा, "मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है, [47]और मेरी आत्मा मेरे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर में आनन्दित हुई है, [48]क्योंकि उसने अपनी दासी की दीन-हीन दशा पर कृपा-दृष्टि की है। इसलिए देखो, अब से लेकर युग-युगान्तर की पीढ़ियां मुझे धन्य कहेंगी। [49]क्योंकि सर्वशक्तिमान ने मेरे लिए महान् कार्य किए हैं; और उसका नाम पवित्र है। [50]**और उसकी दया पीढ़ी से पीढ़ी तक उन पर बनी रहती है जो उस से डरते हैं।** [51]उसने अपने भुजबल से सामर्थ के कार्य किए हैं और उनको तित्तर-बित्तर कर दिया जो अपने हृदय की भावनाओं में अहंकारी थे। [52]उसने राजाओं को सिंहासन से गिरा दिया और दीनों को महान् कर दिया। [53]**उसने भूखों को तो अच्छी अच्छी वस्तुओं से तृप्त कर दिया** और धनवानों को खाली हाथ निकाल

28 *बाद के कुछ हस्तलेखों में यह भी जोड़ा जाता है: स्त्रियों में से तू धन्य है 34 *अक्षरशः, किसी आदमी को नहीं जानती हूं 35 *अक्षरशः, जन्म लेने वाला 37 *अक्षरशः, कोई वचन 45 *या, क्योंकि

दिया। [54] [55]जैसा कि उसने हमारे पूर्वजों से कहा वैसा ही उसने सदा इब्राहीम तथा उसके वंश के प्रति अपनी दया को स्मरण करके अपने सेवक इस्राएल की सहायता की।" [56]मरियम उसके साथ तीन महीने तक रह कर अपने घर को लौट आई।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का जन्म

[57]तब इलीशिबा का प्रसव-काल पूरा हुआ और उसने एक पुत्र को जन्म दिया। [58]उसके पड़ोसियों और सम्बन्धियों ने जब यह सुना कि प्रभु ने उस पर अपनी बड़ी कृपा की है तो उन्होंने उसके साथ आनन्द मनाया। [59]और ऐसा हुआ कि वे लोग आठवें दिन बालक का खतना करने आए और उसके पिता के नाम पर वे उसका नाम भी जकरयाह रखने लगे। [60]इस पर उसकी माता ने कहा, "नहीं! उसका नाम यूहन्ना रखा जाएगा।" [61]तब उन्होंने उस से कहा, "तुम्हारे सम्बन्धियों में से किसी का भी यह नाम नहीं!" [62]उन्होंने उसके पिता से संकेत करके पूछा कि तू उसका नाम क्या रखना चाहता है? [63]उसने लिखने की तख्ती मंगा कर उस पर लिखा, "उसका नाम यूहन्ना है," और सब को आश्चर्य हुआ। [64]तुरन्त उसका मुंह और उसकी जीभ खुल गई और वह परमेश्वर की स्तुति करता हुआ बोलने लगा। [65]इस पर पास-पड़ोस में रहने वालों पर भय छा गया तथा यहूदियों के समस्त पहाड़ी प्रदेश में इन सब बातों की चर्चा होने लगी। [66]जिन्होंने इन बातों को सुना उन सबने अपने अपने मन में विचार करके कहा, "यह बालक कैसा होगा?" क्योंकि अवश्य ही प्रभु का हाथ उस पर था।

जकरयाह का स्तुति-गान

[67]और उसका पिता जकरयाह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गया और यह कहकर भविष्यद्वाणी करने लगा:

[68]"इस्राएल का प्रभु परमेश्वर धन्य हो, क्योंकि उसने हमारी सुधि ली है और अपने लोगों के छुटकारे का कार्य पूरा किया है। [69]और हमारे लिए अपने सेवक दाऊद के घराने में उद्धार का एक सींग निकाला है, [70]जैसा कि उसने प्राचीनकाल से अपने पवित्र नबियों के मुंह से कहलवाया था, [71]कि **हमारे शत्रुओं से और हम से बैर रखने वालों के हाथों से** हमारा उद्धार हो, [72]कि हमारे पूर्वजों पर दया करे और अपनी पवित्र वाचा का स्मरण करे, [73]अर्थात् वह शपथ जो उसने हमारे पिता इब्राहीम से खाई थी, [74]कि हमें यह वर दे कि हम अपने शत्रुओं के हाथों से छुड़ाए जाकर निर्भयता से [75]अपने जीवन भर पवित्रता और धार्मिकता सहित उसकी सेवा करें। [76]और तू, हे बालक, परमप्रधान का नबी कहलाएगा, क्योंकि तू **प्रभु के आगे-आगे** चलेगा **कि उसका मार्ग तैयार करे।** [77]और उसके लोगों को उनके पापों की क्षमा *के द्वारा उद्धार का ज्ञान दे। [78]हमारे परमेश्वर की अपार करुणा के कारण हम पर ऊपर से सूर्योदय का **प्रकाश चमकेगा,** [79]**अर्थात् उन पर जो अंधकार और मृत्यु की छाया में बैठे हैं,** कि हमारे पैरों की अगुवाई शान्ति के मार्ग पर करे।"

[80]और वह बालक बढ़ता और आत्मा में बलवन्त होता गया और इस्राएल पर

*या; अर्थात्

प्रकट होने के दिन तक निर्जन स्थान में रहा।

यीशु का जन्म

2 उन्हीं दिनों में ऐसा हुआ कि औगुस्तुस कैसर की ओर से यह राजाज्ञा निकली कि *सारे जगत के लोगों की गणना की जाए। [2]*यह प्रथम जन-गणना तब हुई जब क्विरिनियुस सूरिया का राज्यपाल था। [3]सब लोग नाम लिखवाने के लिए अपने अपने नगर को जाने लगे। [4]अतः यूसुफ भी इसलिए कि वह दाऊद के घराने और वंश का था, गलील के नासरत नगर से यहूदिया में दाऊद के नगर बैतलहम को गया, [5]कि अपनी मंगेतर मरियम के साथ जो गर्भवती थी नाम लिखवाए। [6]और ऐसा हुआ कि उनके वहां रहते हुए मरियम के प्रसव के दिन पूरे हुए। [7]उसने अपने पहिलौठे पुत्र को जन्म दिया, और उसे कपड़ों में लपेट कर चरनी में रख दिया, क्योंकि सराय में उनके लिए कोई जगह न थी।

चरवाहों को स्वर्गदूत का सन्देश

[8]उसी प्रदेश में कुछ चरवाहे थे जो रात के समय मैदान में रहकर अपने झुण्ड की रखवाली कर रहे थे। [9]और अचानक प्रभु का एक दूत उनके सामने आ खड़ा हुआ, प्रभु का तेज उनके चारों ओर चमका और वे अत्यन्त भयभीत हो गए। [10]तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, "डरो मत, क्योंकि देखो, मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जो सब लोगों के लिए होगा। [11]क्योंकि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्त्ता जन्मा है और यही मसीह प्रभु है। [12]तुम्हारे लिए यह चिन्ह होगा कि तुम एक बच्चे को कपड़े में लिपटा और चरनी में लेटा हुआ पाओगे।" [13]तब एकाएक उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्गदूतों का एक समूह परमेश्वर की स्तुति करते हुए और यह कहते हुए दिखाई दिया,

[14]*"आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर मनुष्यों में शान्ति हो जिनसे वह प्रसन्न है।" [15]और ऐसा हुआ कि जब स्वर्गदूत उनके पास से स्वर्ग को चले गए तो चरवाहे आपस में कहने लगे, "आओ, हम सीधे बैतलहम जाकर इस बात को जो हुई है और जिसे प्रभु ने हम पर प्रकट किया है, देखें।" [16]वे शीघ्र जाकर मरियम और यूसुफ के पास पहुंचे और उन्होंने उस बच्चे को चरनी में लेटा हुआ पाया। [17]यह देख कर उन्होंने वह बात प्रकट कर दी जो इस बच्चे के सम्बन्ध में उनसे कही गई थी। [18]और सब लोगों ने उन बातों को सुनकर जो चरवाहों ने उनसे कहीं, आश्चर्य किया। [19]परन्तु मरियम इन सब बातों को अपने मन में रख कर उन पर विचार करती रही। [20]चरवाहे, जैसा उनसे कहा गया था सब कुछ वैसा ही सुन और देख कर परमेश्वर की महिमा और स्तुति करते हुए लौट गए।

यीशु का अर्पण

[21]आठ दिन पूर्ण होने पर जब बालक के खतने का समय आया तो उसका नाम यीशु रखा गया—अर्थात् वह नाम जो उसके गर्भ में आने से पूर्व स्वर्गदूत द्वारा दिया गया था।

---

1 *अक्षरशः, बसी हुई सम्पूर्ण पृथ्वी, अर्थात् रोमी राज्य, आबाद दुनिया 2 *या, सीरिया के राज्यपाल क्विरिनियुस के शासनकाल की यह प्रथम जनगणना थी 14 *अक्षरशः, सर्वोच्च

[22]मूसा की व्यवस्था के अनुसार जब उनके शुद्ध होने के दिन पूरे हुए तो वे बालक को यरूशलेम में लाए कि उसे प्रभु को अर्पित करें—[23]जैसा कि प्रभु की व्यवस्था में लिखा है: "**प्रत्येक पहिलौठा प्रभु के लिए पवित्र कहलाएगा**"—[24]और प्रभु की व्यवस्था के अनुसार, "**एक जोड़ा पंडुक या कबूतर के दो बच्चों को लाकर बलि चढ़ाएं।**" [25]और देखो, यरूशलेम में शमौन नामक एक मनुष्य था जो धर्मी और भक्त था। वह इस्राएल की शान्ति की प्रतीक्षा कर रहा था और पवित्र आत्मा उस पर था। [26]और पवित्र आत्मा के द्वारा उस पर यह प्रकट किया गया था कि जब तक तू प्रभु के मसीह को न देख ले, तब तक मृत्यु को न देखेगा। [27]वह पवित्र आत्मा की प्रेरणा से मन्दिर में आया, और जब माता पिता व्यवस्था की विधि को पूर्ण करने के लिए बालक यीशु को मन्दिर में लाए, [28]तब उसने बालक को गोद में लिया और परमेश्वर की स्तुति करते हुए कहा: [29]"हे स्वामी, अब तू अपने वचन के अनुसार अपने दास को शान्ति से विदा होने दे, [30]क्योंकि मेरी आंखों ने तेरे उद्धार को देख लिया है, [31]जिसे तू ने सब जातियों के समक्ष तैयार किया है, [32]कि वह **गैरयहूदियों *के लिए प्रकाश देने वाली ज्योति** और तेरी निज जाति इस्राएल के लिए महिमा हो।" [33]यीशु के विषय में कही जाने वाली बातों से उसके माता पिता चकित हुए। [34]शमौन ने उन्हें आशिष देकर यीशु की माता मरियम से कहा, "देख, यह बालक इस्राएल में बहुतों के पतन व *उत्थान का कारण और ऐसा चिन्ह होने के लिए ठहराया गया है जिसका विरोध किया जाएगा—[35]जिससे कि बहुतों के हृदय के विचार प्रकट हो जाएं। और तलवार तेरे ही प्राण को छेदेगी।" [36]हन्नाह नाम की एक नबिया थी जो अशेर वंशी फनूएल की बेटी थी। वह अत्यन्त बूढ़ी हो चली थी और *विवाह के पश्चात् सात वर्ष तक अपने पति के साथ रही थी, [37]तब वह चौरासी वर्ष की आयु तक विधवा रही। और वह मन्दिर को कभी नहीं छोड़ती थी वरन् रात-दिन उपवास और प्रार्थना करके सेवा में लगी रहती थी। [38]उसी क्षण वह वहां आकर परमेश्वर को धन्यवाद देने लगी और उन सब से बालक के विषय में बातें करने लगी जो यरूशलेम के छुटकारे की प्रतीक्षा कर रहे थे।

[39]जब वे प्रभु की व्यवस्था के अनुसार सब कुछ पूरा कर चुके तो अपने नगर गलील के नासरत को लौट आए। [40]और बालक बढ़ता, बलवन्त होता और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया, और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था।

बालक यीशु मन्दिर में

[41]उसके माता पिता प्रति वर्ष फसह के पर्व पर यरूशलेम जाया करते थे। [42]जब वह बारह वर्ष का हुआ तो वे पर्व की प्रथा के अनुसार यरूशलेम गए। [43]उन दिनों को पूरा करके जब वे लौट रहे थे तो बालक यीशु यरूशलेम में ही रह गया, और माता पिता इस बात से अनजान थे। [44]वे यह समझकर कि वह यात्रियों के दल के साथ होगा, एक दिन के पड़ाव तक निकल गए और उसे अपने सम्बन्धियों और परिचितों के बीच ढूंढ़ने लगे। [45]और उसे न पाकर वे ढूंढ़ते हुए यरूशलेम लौटे, [46]और ऐसा हुआ कि तीन दिन के पश्चात्

32 *या, पर 34 *या, पुनरुत्थान 36 *अक्षरशः, कुंवारपन

उन्होंने उसे मन्दिर में उपदेशकों के मध्य बैठे, उनकी बातें सुनते और उनसे प्रश्न करते हुए पाया। 47और सब लोग जो उसकी सुन रहे थे उसकी समझ और उसके उत्तरों को सुनकर दंग रह गए। 48और जब उन्होंने उसे वहां देखा तो चकित हुए और उसकी माता ने उस से कहा, "बेटा, तू ने हम से ऐसा व्यवहार क्यों किया? देख, तेरे पिता और मैं व्याकुल होकर तुझे ढूंढ़ते रहे हैं।" 49उसने उनसे कहा, "तुम मुझे क्यों ढूंढ़ रहे थे? क्या तुम नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के *घर में होना अवश्य है?" 50पर उसने जो बात उनसे कही वे उसे समझ न सके। 51तब वह उनके साथ नासरत चला आया और उनके आधीन रहा पर उसकी माता ने ये सब बातें अपने मन में रखीं। 52यीशु बुद्धि, *डील-डौल और परमेश्वर तथा मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।

अग्रदूत का सन्देश

3 तिबिरियुस कैसर के शासनकाल के पन्द्रहवें वर्ष में जब पुन्तियुस पिलातुस यहूदिया का राज्यपाल था और चौथाई के राजाओं में से हेरोदेस गलील का और उसका भाई फिलिप्पुस इतूरैया और त्रखोनीतिस का और लिसानियास अबिलेने का शासक था, 2और जब हन्ना और कैफा महायाजक के पद पर थे तो परमेश्वर का वचन जंगल में जकरयाह के पुत्र यूहन्ना के पास पहुंचा। 3वह यरदन के आस-पास के सारे प्रदेशों में जाकर पापों की क्षमा के लिए मनफिराव के बपतिस्मा का प्रचार करने लगा। 4जैसा कि यशायाह नबी के वचनों की पुस्तक में लिखा है: "जंगल में किसी पुकारने वाले की वाणी कि, **'प्रभु का मार्ग तैयार करो, और उसकी सड़कें सीधी करो। 5हर एक घाटी भर दी जाएगी, और प्रत्येक पहाड़ और पहाड़ी समतल कर दी जाएगी, और टेढ़े मार्ग सीधे व ऊबड़-खाबड़ समतल कर दिए जाएंगे। 6तब सब प्राणी परमेश्वर के उद्धार को देखेंगे'**।"

7इसलिए वह उस जनसमूह से जो उसके पास बपतिस्मा लेने को चला आता था, कहने लगा, "हे सांप के बच्चो, आने वाले प्रकोप से भागने के लिए किसने तुम्हें चेतावनी दी है? 8अत: मन-फिराव के योग्य फल लाओ और अपने मन में यह न कहो, 'इब्राहीम हमारा पिता है।' मैं तुम से कहता हूं कि परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिए सन्तान उत्पन्न कर सकता है। 9और पेड़ों की जड़ पर कुल्हाड़ा धरा हुआ है, इसलिए प्रत्येक पेड़ जो अच्छा फल नहीं लाता, काटा और आग में झोंका जाता है।" 10तब भीड़ ने उससे पूछा, "तो हम क्या करें?" 11उसने उन्हें उत्तर दिया, "जिसके पास दो कुरते हों वह उन्हें उसके साथ बांट ले जिसके पास कुछ भी न हो, और जिसके पास भोजन हो वह भी ऐसा ही करे।" 12कुछ चुंगी लेने वाले भी बपतिस्मा लेने आए और उन्होंने उस से पूछा, "हे गुरु, हम क्या करें?" 13और उसने उनसे कहा, "जितना लेने की तुम्हें आज्ञा दी गई है उससे अधिक वसूल न करो।" 14और कुछ सैनिकों ने उस से प्रश्न किया, "और हमारा क्या, हम क्या करें?" उसने उनसे कहा, "किसी पर दबाव डालकर उस से पैसा न लो और न ही किसी पर झूठा

49 *अ. बातों 52 *या. आयु

लगाओ, परन्तु अपने वेतन से ही सन्तुष्ट रहो।"

[15]जबकि लोग आशा लगाए हुए थे और वे यूहन्ना के सम्बन्ध में अपने अपने मन में तर्क-वितर्क कर रहे थे कि कहीं यही तो मसीह नहीं है, [16]तो यूहन्ना ने उन सब से कहा, "मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूं, परन्तु वह जो मुझसे अधिक शक्तिमान है आ रहा है, और मैं तो इस योग्य भी नहीं कि उसके जूते के बन्धन खोलूं। वही तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। [17]और उसका सूप उसके हाथ में है कि वह अपने खलिहान को साफ करे और गेहूं को अपने भण्डार में एकत्रित करे, परन्तु वह भूसी को न बुझने वाली आग में जलाएगा।"

[18]अत: बहुत सी अन्य बातों को समझाने के द्वारा वह उनको सुसमाचार सुनाता रहा। [19]परन्तु जब उसने चौथाई देश के राजा हेरोदेस को उसके भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास और उन सब कुकर्मों के सम्बन्ध में जो उसने किए थे फटकारा, [20]तो उसने उन सब के साथ यह भी किया कि यूहन्ना को बन्दीगृह में डाल दिया।

यीशु का बपतिस्मा और वंशावली

[21]ऐसा हुआ कि जब सब लोगों ने बपतिस्मा लिया तो यीशु ने भी बपतिस्मा लिया, और जब वह प्रार्थना कर रहा था तो आकाश खुल गया, [22]तब पवित्र आत्मा कबूतर की देह के रूप में उस पर उतरा और यह आकाशवाणी हुई, "तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से अत्यन्त प्रसन्न हूं।"

[23]जब यीशु ने अपनी सेवा आरम्भ की वह लगभग तीस वर्ष का था। और जैसा कि समझा जाता था वह यूसुफ का पुत्र था, जो एली का, [24]जो मत्तात का, जो लेवी का, जो मलकी का, जो यन्ना का, जो यूसुफ का, [25]जो मत्तित्याह का, जो आमोस का, जो नहूम का, जो असल्याह का, जो नोगह का, [26]जो मात का, जो मत्तित्याह का, जो शिमी का, जो योसेख का, जो योदाह का, [27]जो यूहन्ना का, जो रेसा का, जो जरुब्बाबिल का, जो शालतियेल का, जो नेरी का, [28]जो मलकी का, जो अद्दी का, जो कोसाम का, जो इलमोदाम का, जो एर का, [29]जो येशू का, जो इलाजार का, जो योरीम का, जो मत्तात का, जो लेवी का, [30]जो शमौन का, जो यहूदाह का, जो यूसुफ का, जो योनान का, जो इलियाकीम का, [31]जो मलेआह का, जो मिन्नाह का, जो मत्तता का, जो नातान का, जो दाऊद का, [32]जो यिशै का, जो ओबेद का, जो बोअज का, जो सलमोन का, जो नहशोन का, [33]जो अम्मीनादाब का, जो अरनी का, जो हिस्रोन का, जो फिरिस का, जो यहूदाह का, [34]जो याकूब का, जो इसहाक का, जो इब्राहीम का, जो तिरह का, जो नाहोर का, [35]जो सरूग का, जो रऊ का, जो फिलिग का, जो एबिर का, जो शिलह का, [36]जो केनान का, जो अरफक्षद का, जो शेम का, जो नूह का, जो लिमिक का, [37]जो मथूशिलह का, जो हनोक का, जो यिरिद का, जो महललेल का, जो केनान का, [38]जो एनोश का, जो शेत का, जो आदम का और जो परमेश्वर का पुत्र था।

यीशु की परीक्षा

4 यीशु पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर यरदन से लौटा और आत्मा उसे जंगल में इधर-उधर ले जाता रहा।

[2]वहां चालीस दिन तक *शैतान उसकी परीक्षा करता रहा। उन दिनों में उसने कुछ नहीं खाया। जब वे दिन बीत गए तब वह भूखा हुआ। [3]तब शैतान ने उस से कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो इस पत्थर से कह दे कि रोटी बन जाए।" [4]यीशु ने उसे उत्तर दिया, "लिखा है, **'मनुष्य केवल रोटी से ही जीवित न रहेगा'**।" [5]तब शैतान ने उसे ऊपर ले जाकर पल भर में *संसार के सारे राज्यों को दिखा दिया, [6]और उस से कहा, "यह सारा अधिकार और इसका वैभव मैं तुझे दे दूंगा क्योंकि यह मुझे दिया गया है और मैं जिसे चाहता हूं उसे देता हूं। [7]इसलिए यदि तू मुझे दण्डवत् प्रणाम करे तो यह सब तेरा हो जाएगा।" [8]यीशु ने उसे उत्तर दिया, "लिखा है, **'तू प्रभु अपने परमेश्वर को दण्डवत् प्रणाम कर और केवल उसी की सेवा कर'**।" [9]तब वह यीशु को यरूशलेम ले गया और उसे मन्दिर की चोटी पर खड़ा करके उस से कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो अपने आप को यहां से गिरा दे, [10]क्योंकि लिखा है, **'वह स्वर्गदूतों को तेरे विषय में यह आज्ञा देगा कि वे तेरी रक्षा करें,'** [11]और, **'वे तुझे शीघ्र अपने हाथों में उठा लेंगे, ऐसा न हो कि तेरे पैर में पत्थर से ठेस लगे'**।" [12]यीशु ने उस से कहा, "कहा गया है, **'तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न करना'**।"

नासरत में यीशु अस्वीकृत

[13]जब शैतान उसकी सब परीक्षा कर चुका तो कुछ समय के लिए उसके पास से चला गया।

[14]तब यीशु आत्मा की सामर्थ में गलील को लौटा और आस-पास के प्रदेश में उसकी चर्चा फैल गई। [15]वह उनके आराधनालयों में जाकर उपदेश देने लगा और सब लोग उसकी प्रशंसा करते थे।

[16]फिर वह नासरत आया जहां उसका पालन-पोषण हुआ था और अपनी रीति के अनुसार सब्त के दिन आराधनालय में जाकर पढ़ने के लिए खड़ा हुआ। [17]और यशायाह नबी की पुस्तक उसे दी गई। उसने पुस्तक खोलकर वह स्थल निकाला जहां लिखा था, [18]**"प्रभु का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने दीनों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है। उसने मुझे भेजा है कि मैं बन्दियों को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सन्देश दूं और दलितों को छुड़ाऊं।** [19]**और प्रभु के अनुग्रह के समय की उद्घोषणा करूं।"** [20]तब उसने पुस्तक बन्द करके सेवक के हाथ में दे दी और बैठ गया, और आराधनालय के सब लोगों की आंखें उस पर लगी थीं, [21]और वह उनसे कहने लगा, "आज यह लेख तुम्हारे *सुनते हुए पूरा हुआ।" [22]सब लोगों ने उसकी प्रशंसा की और उनके होंठों से अनुग्रह के जो वचन निकल रहे थे, उन पर अचम्भा किया: और कहने लगे, "क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं?" [23]उसने उनसे कहा, "निःसन्देह तुम मेरे विषय में यह कहावत कहोगे: 'हे वैद्य, अपने आप को चंगा कर! जो कुछ हमने सुना कि कफरनहूम में किया गया वह यहां अपने नगर में भी कर'।" [24]उसने कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूं कि कोई नबी अपने नगर में सम्मानित

2 *अथवा, [illegible]
21 *अथवा, [illegible]
5 *[illegible], [illegible] बसी हुई पृथ्वी, [illegible]

लगाओ, परन्तु अपने वेतन से ही सन्तुष्ट रहो।"

[15]जबकि लोग आशा लगाए हुए थे और वे यूहन्ना के सम्बन्ध में अपने अपने मन में तर्क-वितर्क कर रहे थे कि कहीं यही तो मसीह नहीं है, [16]तो यूहन्ना ने उन सब से कहा, "मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूं, परन्तु वह जो मुझसे अधिक शक्तिमान है आ रहा है, और मैं तो इस योग्य भी नहीं कि उसके जूते के बन्धन खोलूं। वही तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। [17]और उसका सूप उसके हाथ में है कि वह अपने खलिहान को साफ करे और गेहूं को अपने भण्डार में एकत्रित करे, परन्तु वह भूसी को न बुझने वाली आग में जलाएगा।"

[18]अतः बहुत सी अन्य बातों को समझाने के द्वारा वह उनको सुसमाचार सुनाता रहा। [19]परन्तु जब उसने चौथाई देश के राजा हेरोदेस को उसके भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास और उन सब कुकर्मों के सम्बन्ध में जो उसने किए थे फटकारा, [20]तो उसने उन सब के साथ यह भी किया कि यूहन्ना को बन्दीगृह में डाल दिया।

यीशु का बपतिस्मा और वंशावली

[21]ऐसा हुआ कि जब सब लोगों ने बपतिस्मा लिया तो यीशु ने भी बपतिस्मा लिया, और जब वह प्रार्थना कर रहा था तो आकाश खुल गया, [22]तब पवित्र आत्मा कबूतर की देह के रूप में उस पर उतरा और यह आकाशवाणी हुई, "तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से अत्यन्त प्रसन्न हूं।"

[23]जब यीशु ने अपनी सेवा आरम्भ की तो वह लगभग तीस वर्ष का था। और जैसा कि समझा जाता था वह यूसुफ का पुत्र था, जो एली का, [24]जो मत्तात का, जो लेवी का, जो मलकी का, जो यन्ना का, जो यूसुफ का, [25]जो मत्तित्याह का, जो आमोस का, जो नहूम का, जो असल्याह का, जो नोगह का, [26]जो मात का, जो मत्तित्याह का, जो शिमी का, जो योसेख का, जो योदाह का, [27]जो यूहन्ना का, जो रेसा का, जो जरुब्बाबिल का, जो शालतियेल का, जो नेरी का, [28]जो मलकी का, जो अद्दी का, जो कोसाम का, जो इलमोदाम का, जो एर का, [29]जो येशू का, जो इलाजार का, जो योरीम का, जो मत्तात का, जो लेवी का, [30]जो शमौन का, जो यहूदाह का, जो यूसुफ का, जो योनान का, जो इलियाकीम का, [31]जो मलेआह का, जो मिन्नाह का, जो मत्तता का, जो नातान का, जो दाऊद का, [32]जो यिशै का, जो ओबेद का, जो बोअज का, जो सलमोन का, जो नहशोन का, [33]जो अम्मीनादाब का, जो अरनी का, जो हिस्रोन का, जो फिरिस का, जो यहूदाह का, [34]जो याकूब का, जो इसहाक का, जो इब्राहीम का, जो तिरह का, जो नाहोर का, [35]जो सरूग का, जो रऊ का, जो फिलिग का, जो एबिर का, जो शिलह का, [36]जो केनान का, जो अरफक्षद का, जो शेम का, जो नूह का, जो लिमिक का, [37]जो मथूशिलह का, जो हनोक का, जो यिरिद का, जो महललेल का, जो केनान का, [38]जो एनोश का, जो शेत का, जो आदम का और जो परमेश्वर का पुत्र था।

यीशु की परीक्षा

4 यीशु पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर यरदन से लौटा और आत्मा उसे जंगल में इधर-उधर ले जाता रहा।

[2]वहां चालीस दिन तक *शैतान उसकी परीक्षा करता रहा। उन दिनों में उसने कुछ नहीं खाया। जब ये दिन बीत गए तब वह भूखा हुआ। [3]तब शैतान ने उस से कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो इस पत्थर से कह दे कि रोटी बन जाए।" [4]यीशु ने उसे उत्तर दिया, "लिखा है, '**मनुष्य केवल रोटी से ही जीवित न रहेगा**'।" [5]तब शैतान ने उसे ऊपर ले जाकर पल भर में *संसार के सारे राज्यों को दिखा दिया, [6]और उस से कहा, "यह सारा अधिकार और इसका वैभव मैं तुझे दे दूंगा क्योंकि यह मुझे दिया गया है और मैं जिसे चाहता हूं उसे देता हूं। [7]इसलिए यदि तू मुझे दण्डवत् प्रणाम करे तो यह सब तेरा हो जाएगा।" [8]यीशु ने उसे उत्तर दिया, "लिखा है, '**तू प्रभु अपने परमेश्वर को दण्डवत् प्रणाम कर और केवल उसी की सेवा कर**'।" [9]तब वह यीशु को यरूशलेम ले गया और उसे मन्दिर की चोटी पर खड़ा करके उस से कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो अपने आप को यहां से गिरा दे, [10]क्योंकि लिखा है, '**वह स्वर्गदूतों को तेरे विषय में यह आज्ञा देगा कि वे तेरी रक्षा करें,**' [11]और, '**वे तुझे शीघ्र अपने हाथों में उठा लेंगे, ऐसा न हो कि तेरे पैर में पत्थर से ठेस लगे**'।" [12]यीशु ने उस से कहा, "कहा गया है, '**तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न करना**'।"

नासरत में यीशु अस्वीकृत

[13]जब शैतान उसकी सब परीक्षा कर चुका तो कुछ समय के लिए उसके पास से चला गया।

[14]तब यीशु आत्मा की सामर्थ में गलील को लौटा और आस-पास के प्रदेश में उसकी चर्चा फैल गई। [15]वह उनके आराधनालयों में जाकर उपदेश देने लगा और सब लोग उसकी प्रशंसा करते थे।

[16]फिर वह नासरत आया जहां उसका पालन-पोषण हुआ था और अपनी रीति के अनुसार सब्त के दिन आराधनालय में जाकर पढ़ने के लिए खड़ा हुआ। [17]और यशायाह नबी की पुस्तक उसे दी गई। उसने पुस्तक खोलकर वह स्थल निकाला जहां लिखा था, [18]"**प्रभु का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने दीनों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है। उसने मुझे भेजा है कि मैं बन्दियों को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सन्देश दूं और दलितों को छुड़ाऊं।** [19]**और प्रभु के अनुग्रह के समय की उद्घोषणा करूं।**" [20]तब उसने पुस्तक बन्द करके सेवक के हाथ में दे दी और बैठ गया, और आराधनालय के सब लोगों की आंखें उस पर लगी थीं; [21]और वह उनसे कहने लगा, "आज यह लेख तुम्हारे *सुनते हुए पूरा हुआ।" [22]सब लोगों ने उसकी प्रशंसा की और उसके होठों से अनुग्रह के जो वचन निकल रहे थे, उन पर अचम्भा किया; और कहने लगे, "क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं?" [23]उसने उनसे कहा, "निःसन्देह तुम मेरे विषय में यह कहावत कहोगे: 'हे वैद्य, अपने आप को चंगा कर! जो कुछ हमने सुना कि कफरनहूम में किया गया वह यहां अपने नगर में भी कर'।" [24]उसने कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूं कि कोई भी नबी अपने नगर में सम्मानित नहीं होता।

---

2 *अक्षरशः, परनिन्दक
21 *अक्षरशः, कानों
5 *अक्षरशः, सारी बसी हुई पृथ्वी, आबाद दुनिया में

[25]पर मैं तुमसे सच कहता हूं कि एलिय्याह के दिनों में जब साढ़े तीन साल तक सूखा पड़ा और सारे देश में भयंकर अकाल पड़ा तो इस्राएल में कई विधवाएं थीं, [26]पर सैदा देश के सारपत नगर की विधवा को छोड़ एलिय्याह और किसी के पास नहीं भेजा गया। [27]और एलीशा नबी के दिनों में इस्राएल में बहुत से कोढ़ी थे पर सीरिया निवासी नामान को छोड़ और कोई शुद्ध नहीं किया गया।" [28]जब आराधनालय के लोगों ने ये बातें सुनीं तो वे क्रोध से भर गए, [29]और उन्होंने उठकर उसे नगर से बाहर निकाल दिया और जिस पहाड़ी पर उनका नगर बसा था, उसकी चोटी पर ले गए कि वहां से उसे नीचे फेंक दें। [30]पर वह उनके बीच में से निकल कर चल दिया।

दुष्टात्मा का निकाला जाना

[31]अब वह गलील के एक नगर कफरनहूम में आया और सब्त के दिनों में लोगों को उपदेश देता था। [32]वे उसकी शिक्षा से विस्मित होते थे क्योंकि उसका *उपदेश अधिकारपूर्ण था। [33]आराधनालय में एक मनुष्य था *जो एक अशुद्ध आत्मा से ग्रसित था। वह ऊंची आवाज़ से चिल्लाया, [34]"हे *नासरत के यीशु! हमें †तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नष्ट करने आया है? मैं जानता हूं कि तू कौन है— परमेश्वर का पवित्र जन!" [35]यीशु ने यह कहकर उसे डांटा, "चुप रह, उसमें से निकल जा!" तब दुष्टात्मा उसे बीच में पटक कर बिना हानि पहुंचाए उसमें से निकल गई। [36]इस पर सब लोग चकित हुए और आपस में बातें करके कहने लगे, "यह कैसा वचन है? क्योंकि वह अधिकार और सामर्थ से अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देता है और वे निकल जाती हैं।" [37]और आस-पास के प्रदेश में हर स्थान पर उसकी चर्चा फैलती गई।

यीशु द्वारा बहुत लोगों का चंगा होना

[38]फिर वह उठा और आराधनालय से निकलकर शमौन के घर गया। वहां शमौन की सास तीव्र ज्वर से पीड़ित थी और उन्होंने उसके लिए उस से विनती की। [39]उसके निकट खड़े होकर उसने ज्वर को डांटा और ज्वर उतर गया, और वह तत्काल उठकर उनकी सेवा-टहल में लग गई।

[40]जब सूर्यास्त होने लगा तो वे सब जिनके यहां विभिन्न प्रकार के रोगों से पीड़ित रोगी थे उन्हें उसके पास लाए और उसने प्रत्येक पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया। [41]दुष्टात्माएं भी बहुत लोगों में से चिल्लाती और यह कहती हुई निकल गईं, "तू परमेश्वर का पुत्र है!" और वह डांटकर उन्हें बोलने नहीं देता था, क्योंकि वे जानती थीं कि वह मसीह है।

[42]जब दिन निकला तो वह निकलकर एकान्त स्थान में चला गया। और जनसमूह उसे ढूंढ़ते हुए उसके पास पहुंचा और उसने चाहा कि वह उनके पास से न जाए। [43]पर उसने उनसे कहा, "मुझे अन्य नगरों में भी परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना अवश्य है, क्योंकि मैं इसी उद्देश्य से भेजा गया हूं।"

[44]और वह यहूदा के आराधनालयों में प्रचार करता रहा।

:, वचन 33 *अक्षरश:, जिसकी एक अशुद्ध आत्मा थी
:, नासरीनी †या, रहने दो

प्रथम चेलों का बुलाया जाना

5 एक समय, जबकि भीड़ यीशु को चारों ओर से घेरे हुए परमेश्वर का वचन सुन रही थी, वह गन्नेसरत की झील के किनारे खड़ा हुआ था। 2उसने झील के किनारे लगी हुई दो नावें देखीं, परन्तु मछुए उनमें से उतरकर अपने अपने जाल धो रहे थे। 3वह उनमें से एक नाव पर चढ़ गया जो शमौन की थी और उसने उस से कहा कि नाव को किनारे से कुछ दूरी पर हटा ले। और वह नाव पर बैठकर भीड़ को उपदेश देने लगा। 4जब उसने उपदेश देना समाप्त किया तो शमौन से कहा, "नाव को गहरे पानी में ले चल और मछली पकड़ने के लिए अपने जाल डाल।" 5शमौन ने उत्तर दिया, "हे स्वामी, हमने सारी रात बड़ा परिश्रम किया पर कुछ भी हाथ न लगा; फिर भी तेरे कहने से मैं जाल डालूंगा।" 6जब उन्होंने ऐसा किया तो बड़ी संख्या में मछलियां घेर लाए और उनके जाल फटने लगे। 7इस पर उन्होंने अपने साथियों को जो दूसरी नाव पर थे संकेत किया कि आकर हमारी सहायता करो। और उन्होंने आकर दोनों नावों को यहां तक भर दिया कि वे डूबने लगीं। 8पर जब शमौन पतरस ने यह देखा तो वह यीशु के पैरों पर यह कहते हुए गिर पड़ा, "हे प्रभु, मेरे पास से जा क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूं!" 9क्योंकि इतनी मछलियों को घेर लाने के कारण उसे और उसके साथियों को आश्चर्य हुआ। 10इसी प्रकार जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना भी जो शमौन के साझीदार थे आश्चर्यचकित हुए। यीशु ने शमौन से कहा, "मत डर, अब से तू मनुष्यों को पकड़ा करेगा।" 11जब वे अपनी नावों को किनारे पर लाए तो सब कुछ वहीं छोड़कर उसके पीछे चल पड़े।

कोढ़ी का शुद्ध किया जाना

12ऐसा हुआ कि जब वह किसी नगर में था तो देखो, वहां कोढ़ से भरा हुआ एक मनुष्य था। जब उसने यीशु को देखा तो मुंह के बल गिरकर उस से यह कहते हुए अनुनय-विनय करने लगा, "हे प्रभु, यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।" 13उसने अपना हाथ बढ़ाया और उसे छूकर कहा, "मैं चाहता हूं, तू शुद्ध हो जा।" और तुरन्त उसका कोढ़ जाता रहा। 14उसने उसे आज्ञा दी, "किसी से न कहना, पर जाकर **अपने आप को याजक को दिखा** और अपने शुद्ध हो जाने के विषय में जैसा मूसा ने आज्ञा दी है, भेंट चढ़ा कि इस से उन पर गवाही हो।" 15परन्तु उसकी चर्चा दूर दूर तक फैलती जा रही थी, और बड़ी भीड़ उसकी सुनने और अपनी बीमारियों से चंगाई पाने के लिए इकट्ठी हो रही थी। 16पर वह स्वयं प्रायः निर्जन स्थान में चुपचाप जाकर प्रार्थना किया करता था।

लकवा के रोगी की चंगाई

17एक दिन की बात है कि वह उपदेश दे रहा था, और कुछ फरीसी और व्यवस्था के शिक्षक वहां बैठे थे जो गलील और यहूदिया के प्रत्येक गांव तथा यरूशलेम से आए थे, और चंगा करने के लिए प्रभु की सामर्थ उसके साथ थी। 18और देखो, कुछ लोग लकवे के मारे हुए एक मनुष्य को खाट पर उठाकर ला रहे थे। वे उसे भीतर लाकर यीशु के सामने रखने का प्रयत्न कर रहे थे। 19भीड़ के कारण उसे भीतर लाने

उपाय न मिला तो वे छत पर चढ़ गए और खपरैल हटाकर चारपाई सहित उसे बीच में यीशु के ठीक सामने उतार दिया। [20]उनका विश्वास देख कर उसने कहा, "*मित्र, तेरे पाप क्षमा हुए।" [21]तब शास्त्री और फरीसी तर्क-वितर्क करके कहने लगे, "यह मनुष्य कौन है जो परमेश्वर की निन्दा करता है? परमेश्वर को छोड़ और कौन पापों को क्षमा कर सकता है?" [22]पर यीशु ने उनके तर्क-वितर्क को *भांपकर उत्तर दिया, "तुम अपने मनों में क्यों तर्क कर रहे हो? [23]क्या सरल है? यह कहना कि 'तेरे पाप क्षमा हुए' या यह कि 'उठ, चल-फिर'?" [24]परन्तु इसलिए कि तुम जान जाओ कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है, उसने लकवे के रोगी से कहा, "मैं तुझसे कहता हूं उठ, और अपनी खाट उठाकर घर चला जा।" [25]वह तत्काल उनके सामने उठ खड़ा हुआ, और जिस खाट पर वह पड़ा हुआ था उसे उठाकर परमेश्वर की महिमा करते हुए घर चला गया। [26]वे सब के सब अचम्भे में पड़कर परमेश्वर की महिमा करने और अत्यन्त भयभीत होकर कहने लगे, "आज हमने अनोखी बातें देखी हैं!"

लेवी का बुलाया जाना

[27]इसके बाद वह बाहर गया और उसने लेवी नामक एक चुंगी लेने वाले को चुंगी चौकी पर बैठे देखा और उसने उस से कहा, "मेरे पीछे चल।" [28]इस पर वह सब कुछ छोड़कर उठा और उसके पीछे चल पड़ा।

[29]तब लेवी ने अपने घर पर उसके लिए एक बड़ा भोज दिया और वहां पर चुंगी लेने वालों तथा अन्य लोगों की जो उसके साथ भोजन करने बैठे थे, एक बड़ी भीड़ थी। [30]इस पर फरीसी और उनके शास्त्री उसके चेलों से यह कहकर कुड़कुड़ाने लगे, "तुम चुंगी लेने वालों और पापियों के साथ क्यों खाते-पीते हो?" [31]यीशु ने उत्तर दिया, "भले-चंगों को वैद्य की आवश्यकता नहीं परन्तु रोगियों को होती है। [32]मैं धर्मियों को नहीं पर पापियों को पश्चात्ताप करने के लिए बुलाने आया हूं।"

उपवास का प्रश्न

[33]उन्होंने उस से कहा, "यूहन्ना के चेले प्रायः उपवास रखते और प्रार्थना किया करते हैं और फरीसियों के चेले भी ऐसा ही करते हैं, पर तेरे चेले तो खाते-पीते हैं।" [34]यीशु ने उनसे कहा, "जब तक दूल्हा उनके साथ है, क्या तुम उसके *बारातियों से उपवास करवा सकते हो? [35]परन्तु वे दिन आएंगे जबकि दूल्हा उनसे छीन लिया जाएगा, तब उन दिनों में वे उपवास करेंगे।" [36]उसने उनसे एक दृष्टान्त भी कहा: "कोई भी मनुष्य नए वस्त्र में से टुकड़े फाड़कर पुराने वस्त्र में पैवन्द नहीं लगाता, अन्यथा नया तो फटेगा ही पर पुराने वस्त्र पर नया पैवन्द मेल भी नहीं खाएगा। [37]और कोई नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरता, अन्यथा नया दाखरस मशकें फाड़कर बह जाएगा और मशकें नष्ट हो जाएंगी। [38]पर नए दाखरस को नई मशकों में ही भरना चाहिए। [39]पुराना दाखरस पीकर कोई नए की इच्छा नहीं करता, क्योंकि वह कहता है, 'पुराना ही अच्छा है'।"

20 *या, मनुष्य   22 *या, देख कर

सब्त का प्रभु

6 ऐसा हुआ कि किसी सब्त के दिन वह खेतों में से होकर जा रहा था और उसके चेले अन्न की बालें तोड़ तोड़कर और हाथों से मसल मसलकर खा रहे थे। [2]तब कुछ फरीसियों ने कहा, "तुम ऐसा काम क्यों करते हो जो सब्त के दिन करना उचित नहीं?" [3]यीशु ने उत्तर दिया, "क्या तुमने यह भी नहीं पढ़ा कि जब दाऊद और उसके साथियों को भूख लगी तो उसने क्या किया? [4]वह कैसे परमेश्वर के भवन में गया और भेंट की रोटियां लेकर स्वयं खाईं जिन्हें खाना याजकों के सिवाय अन्य किसी व्यक्ति के लिए उचित नहीं, और उन्हें अपने साथियों को भी दीं?" [5]और उसने यह भी कहा, "मनुष्य का पुत्र सब्त का भी प्रभु है।"

[6]ऐसा हुआ कि किसी अन्य सब्त के दिन वह आराधनालय में जाकर उपदेश देने लगा, और वहां एक मनुष्य था जिसका *दाहिना हाथ सूखा था। [7]शास्त्री और फरीसी इस ताक में थे कि देखें वह सब्त के दिन चंगा करता है या नहीं, जिस से कि उन्हें उस पर दोष लगाने का अवसर मिल सके। [8]पर वह उनके विचारों को जानता था अत: उसने सूखे हाथ वाले से कहा, "उठकर सामने आ," और वह उठ खड़ा हुआ। [9]फिर यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे पूछता हूं कि क्या सब्त के दिन भला करना उचित है या बुरा करना, जीवन बचाना या नाश करना?" [10]फिर उसने उन सब पर दृष्टि डालकर उस से कहा, "अपना हाथ बढ़ा!" और उसने ऐसा ही किया और उसका हाथ पूर्णत: चंगा हो गया। [11]इस पर वे *आपे से बाहर होकर आपस में तर्क-वितर्क करके कहने लगे कि हम यीशु के साथ क्या करें?

बारह प्रेरित

[12]इन्हीं दिनों में वह पहाड़ पर प्रार्थना करने गया और उसने सारी रात परमेश्वर से प्रार्थना करने में व्यतीत की। [13]जब दिन निकला तो उसने अपने चेलों को अपने पास बुलाया और उनमें से बारह को चुनकर उन्हें 'प्रेरित' नाम दिया, अर्थात् [14]शमौन जिसका नाम उसने पतरस भी रखा, और उसका भाई अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना, फिलिप्पुस, बरतुलमै, [15]मत्ती, थोमा, हलफई का पुत्र याकूब, और शमौन जो *उत्साही भक्त कहलाता है, [16]और याकूब का बेटा यहूदा, और यहूदा इस्करियोती जो विश्वासघाती निकला।

आशिष और शाप

[17]तब वह उनके साथ नीचे उतरकर समतल स्थान पर खड़ा हुआ और उसके चेलों की एक बड़ी भीड़ के साथ समस्त यहूदिया, यरूशलेम व सूर और सैदा के समुद्र-तट से विशाल जनसमूह वहां उपस्थित था। [18]वे उसका उपदेश सुनने और रोगों से छुटकारा पाने आए थे, और वे जो अशुद्ध आत्माओं द्वारा सताए हुए थे अच्छे किए जा रहे थे। [19]समस्त जनसमूह उसे छूने का प्रयत्न कर रहा था, क्योंकि उसमें से सामर्थ निकलकर उन सबको चंगा कर रही थी।

---

6 *अक्षरश:, और उसका   11 *अक्षरश:, मूढ़ता से भरकर   15 *यूनानी में, जेलोतेस, जिसका अर्थ यह भी हो सकता है: यहूदी राष्ट्रवादी दल का सदस्य

[20]तब वह अपने चेलों की ओर देखकर कहने लगा, "धन्य हो तुम जो दीन हो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है। [21]धन्य हो तुम जो अभी भूखे हो क्योंकि तृप्त किए जाओगे, धन्य हो तुम जो अभी रोते हो क्योंकि तुम हंसोगे। [22]धन्य हो तुम जब मनुष्य के पुत्र के कारण लोग तुम से घृणा करें, तुम्हें बहिष्कृत करें, तुम्हारी अत्यन्त निन्दा करें और बुरा समझकर तुम्हारा नाम काट दें। [23]उस दिन तुम आनन्दित होकर उछलना-कूदना, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हारे लिए बड़ा प्रतिफल है, क्योंकि उनके पूर्वज भी नबियों के साथ ऐसा ही किया करते थे। [24]परन्तु हाय तुम पर जो धनवान हो, क्योंकि तुम अपने सुख का पूरा फल पा रहे हो। [25]हाय तुम पर जो अब *तृप्त हो क्योंकि तुम भूखे होगे। हाय तुम पर जो अब हंसते हो, क्योंकि तुम शोकित होओगे और रोओगे। [26]हाय तुम पर जब सब मनुष्य तुम्हारी प्रशंसा करें, क्योंकि उनके पूर्वजों ने भी झूठे नबियों के साथ ऐसा ही व्यवहार किया था।

शत्रुओं से प्रेम

[27]"परन्तु मैं तुम सुननेवालों से कहता हूं, अपने शत्रुओं से प्रेम करो, जो तुमसे घृणा करते हैं उनकी भलाई करो। [28]जो तुम्हें शाप देते हैं उन्हें आशिष दो, जो *तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार करते हैं उनके लिए प्रार्थना करो। [29]जो कोई तुम्हारे एक गाल पर चांटा मारे उसकी ओर दूसरा भी फेर दो, जो तुम्हारा कोट तुम से छीन ले उसे कुरता लेने से भी न रोको। [30]जो कोई तुमसे मांगे उसे दो, और जो कोई तुम्हारी वस्तु छीन ले उस से फिर मत मांगो। [31]जैसा तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो। [32]यदि तुम अपने प्रेम करने वालों से ही प्रेम करो तो इसमें तुम्हारी क्या बड़ाई है, क्योंकि पापी भी तो अपने प्रेम करने वालों से प्रेम करते हैं। [33]यदि तुम अपने भलाई करने वालों के साथ भलाई करो तो इसमें तुम्हारी क्या बड़ाई! क्योंकि पापी भी तो ऐसा ही करते हैं। [34]यदि तुम उन्हीं को उधार देते हो जिनसे पाने की आशा है तो इसमें तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी भी पापियों को उधार देते हैं कि उतना ही फिर पाएं। [35]परन्तु अपने शत्रुओं से प्रेम रखो, और भलाई करो, और उधार देकर *पाने की आशा मत रखो, और तुम्हारे लिए प्रतिफल बड़ा होगा और तुम परमप्रधान के सन्तान ठहरोगे, क्योंकि वह स्वयं अकृतज्ञों और दुष्टों पर कृपा करता है। [36]जैसा तुम्हारा पिता दयालु है, वैसे ही तुम भी दयालु बनो।

दोष न लगाओ

[37]"किसी पर दोष मत लगाओ तो तुम पर भी दोष नहीं लगाया जाएगा। किसी को दोषी मत ठहराओ तो तुम भी दोषी नहीं ठहराए जाओगे। क्षमा करो तो तुम भी क्षमा कर दिए जाओगे। [38]दिया करो तो तुम्हें भी दिया जाएगा। वे तुम्हारी गोद में पूरा-पूरा नाप, दबा-दबाकर, हिला-हिलाकर उभरता हुआ डालेंगे। क्योंकि जिस नाप से तुम दूसरों के लिए नापते हो, उसी नाप से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा।"

[39]फिर उसने उनसे एक दृष्टान्त भी कहा: "क्या एक अन्धा दूसरे अन्धे को मार्ग दिखा सकता है? क्या वे दोनों ही

[illegible], भरे हुए   28 *या, तुम्हारी निन्दा करते हैं   35 *या, निराश न हो

गड्ढे में नहीं गिरेंगे? [40]चेला, गुरु से बड़ा नहीं होता, परन्तु पूर्णतः प्रशिक्षित होने पर प्रत्येक चेला गुरु के समान बन जाता है। [41]तू अपने भाई की आंख के तिनके को क्यों देखता है? क्या तुझे अपनी आंख का लट्ठा नहीं सूझता? [42]जब तू अपनी आंख के लट्ठे ही को नहीं देख पाता तो अपने भाई से कैसे कह सकता है, 'हे भाई, मुझे तेरी आंख के तिनके को निकाल लेने दे'? हे ढोंगी, पहिले तू अपनी आंख का लट्ठा तो निकाल ले—तब तू अपने भाई की आंख के तिनके को निकालने के लिए ठीक ठीक देख पाएगा।

जैसा पेड़ वैसा फल

[43]"क्योंकि कोई भी अच्छा वृक्ष नहीं जिस पर बुरा फल लगता हो, और न कोई बुरा वृक्ष है जिस पर अच्छा फल लगता हो। [44]प्रत्येक वृक्ष अपने फलों के द्वारा ही पहिचाना जाता है। लोग तो कटीली झाड़ियों से अंजीर नहीं बटोरते और न ही झड़बेरी से अंगूर। [45]भला मनुष्य अपने हृदय के भले खजाने से भली बातों को ही निकालता है, पर बुरा मनुष्य अपने हृदय के बुरे खजाने से बुरी बातें निकालता है, क्योंकि जिन बातों से उसका हृदय भरा होता है उन्हीं बातों को वह मुंह पर लाता है।

पक्की नींव

[46]"जो मैं कहता हूं जब तुम उसे नहीं मानते तो मुझे 'हे प्रभु, हे प्रभु' क्यों कहते हो? [47]जो कोई मेरे पास आता है और मेरी बातों को सुनकर उन्हें मानता है मैं बताता हूं कि वह किसके समान है: [48]वह उस मनुष्य के समान है जिसने घर बनाने के लिए गहरा खोद कर, चट्टान पर नींव डाली, और जब बाढ़ आई और जल की धाराएं उस मकान से टकराईं तो उसे हिला न सकीं क्योंकि वह मकान पक्का बना था। [49]परन्तु वह जिसने सुना तो अवश्य पर उसके अनुसार नहीं चला, वह उस मनुष्य के समान है जिसने बिना नींव डाले, भूमि पर ही मकान बनाया। जब जल की धाराएं उस से टकराईं तो वह घर तुरन्त गिर पड़ा और पूर्णतः नष्ट हो गया।"

सूबेदार का विश्वास

7 जब वह लोगों को पूरा उपदेश सुना चुका तो कफरनहूम में आया। [2]और किसी सूबेदार का एक अत्यन्त *प्रिय दास था जो रोग के कारण मरने पर था। [3]जब उसने यीशु के विषय में सुना तो कुछ यहूदी वयोवृद्धों को उसके पास यह निवेदन करने भेजा कि आकर मेरे दास को बचा ले। [4]जब वे यीशु के पास पहुंचे तो उन्होंने उस से यह कहते हुए अनुनय विनय की, "वह इस योग्य है कि तू उस पर दया करे, [5]क्योंकि वह हमारी जाति से प्रेम करता है और उसी ने हमारे इस आराधनालय को बनाया।" [6]यीशु उनके साथ साथ चला और जब घर से अधिक दूर न था तो सूबेदार ने अपने मित्रों को यह कहने भेजा, "हे *प्रभु, अपने को अधिक कष्ट न दे, क्योंकि मैं इस योग्य नहीं कि तू मेरी छत के तले आए। [7]इसी कारण मैंने अपने आप को इस योग्य भी न समझा कि तेरे पास आऊं। केवल वचन कह दे और मेरा सेवक चंगा हो जाएगा। [8]मैं भी, वास्तव में,शासन के आधीन हूं और सिपाही मेरे आधीन हैं। मैं एक से कहता

2 *अथवा, आदरणीय   6 *या, श्रीमान्

हूं, 'जा' तो वह जाता है। और दूसरे से कहता हूं 'आ' तो वह आता है और मैं अपने दास से कहता हूं, 'यह कर' तो वह उसे करता है।"[9]जब यीशु ने यह सुना तो उसे आश्चर्य हुआ और भीड़ की ओर जो उसके पीछे चली आ रही थी पलट कर कहा, "मैं तुमसे कहता हूं कि इस्राएल में भी मैंने ऐसा बड़ा विश्वास नहीं पाया।" [10]और जो भेजे गए थे उन्होंने घर लौटकर उस दास को स्वस्थ पाया।

विधवा के पुत्र को जीवन दान

[11]इसके तुरन्त पश्चात् वह नाइन नामक एक नगर में गया। उसके चेले भी उसके साथ चल रहे थे और उनके साथ एक बड़ी भीड़ भी चली आ रही थी। [12]जब वह नगर के फाटक पर पहुंचा तो देखो लोग एक मुर्दे को जो अपनी मां का इकलौता पुत्र था बाहर लिए जा रहे थे। और वह विधवा थी और नगर के बहुत से लोग उसके साथ थे। [13]विधवा को देखकर प्रभु को उस पर बड़ा तरस आया और उसने कहा, "मत रो।" [14]फिर उस ने पास आकर अर्थी को छुआ और कन्धा देने वाले रुक गए। तब उसने कहा, "हे जवान, मैं तुझसे कहता हूं, उठ!" [15]मुर्दा उठ बैठा और बोलने लगा। यीशु ने उसे उसकी मां को सौंप दिया। [16]सब लोगों पर भय छा गया और वे यह कहते हुए परमेश्वर की महिमा करने लगे — "हमारे बीच में एक महान् नबी उठ खड़ा हुआ है और परमेश्वर ने अपने लोगों पर कृपा-दृष्टि की है।" [17]उसके सम्बन्ध में यह समाचार समस्त यहूदिया में तथा आस-पास के समस्त क्षेत्रों में [illegible]या।

यीशु और यूहन्ना

[18]यूहन्ना के चेलों ने इन सब बातों का समाचार उसको दिया। [19]तब यूहन्ना ने अपने चेलों में से दो को बुलाकर उनको प्रभु के पास यह पूछने भेजा, "क्या वह आने वाला तू ही है, या हम फिर किसी अन्य की राह देखें?" [20]जब वे लोग उसके पास आए तो उन्होंने कहा, "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने हमें तेरे पास यह पूछने भेजा है, 'क्या वह आनेवाला तू ही है या हम किसी अन्य की राह देखें'?" [21]उसी समय उसने बहुत से लोगों को बीमारियों, पीड़ाओं और दुष्टात्माओं से छुड़ा कर चंगा किया और बहुत से लोगों को जो अन्धे थे, आंखें दीं। [22]तब उसने उनसे कहा, "जो कुछ तुम ने देखा और सुना, जाकर यूहन्ना को बताओ : **अन्धे देखते हैं**, लंगड़े चलते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं, बहरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं और **निर्धनों को सुसमाचार** सुनाया जाता **है**। [23]धन्य वह है जो मेरे विषय में ठोकर न खाए।"

[24]जब यूहन्ना के दूत चले गए तो यीशु भीड़ से यूहन्ना के विषय में बातें करने लगा, "तुम जंगल में क्या देखने गए थे? हवा से हिलते हुए सरकण्डे को? [25]तो फिर क्या देखने गए थे? ऐसे मनुष्य को जो कोमल वस्त्र पहिने हुए था? देखो, वे जो भड़कीले वस्त्र पहिनते और सुख-विलास में रहते हैं, राजभवनों में ही पाए जाते हैं। [26]परन्तु तुम क्या देखने गए थे? किसी नबी को? हां, मैं तुम से कहता हूं कि नबी से भी बड़े को। [27]यह वही है जिसके विषय में लिखा है, '**देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं। वह तेरे आगे तेरा मार्ग तैयार करेगा।**' [28]मैं तुम से कहता हूं

कि स्त्रियों से जो उत्पन्न हुए हैं उनमें से कोई भी यूहन्ना से बड़ा नहीं, फिर भी वह जो परमेश्वर के राज्य में छोटे से छोटा है वह उस से बढ़कर है।" 29जब जन-साधारण व चुंगी लेने वालों ने यह सब सुना तो यूहन्ना का बपतिस्मा लेकर *परमेश्वर की धार्मिकता को मान लिया। 30परन्तु फरीसी और *व्यवस्थापकों ने यूहन्ना का बपतिस्मा न लेकर अपने सम्बन्ध में परमेश्वर की योजना को अस्वीकार किया। 31"तो मैं इस पीढ़ी के लोगों की तुलना किससे करूं? वे किसके समान हैं? 32वे उन बच्चों के समान हैं जो बाजार में बैठे रहते हैं और एक दूसरे से पुकारकर कहते हैं : 'हमने तुम्हारे लिए बांसुरी बजाई पर तुम न नाचे; हमने विलाप किया पर तुम न रोए।' 33क्योंकि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला न तो रोटी खाता आया और न दाखरस पीते आया, पर तुम कहते हो, 'उसमें दुष्टात्मा है।' 34मनुष्य का पुत्र खाते पीते आया है और तुम कहते हो, 'देखो, पेटू और पियक्कड़ मनुष्य चुंगी लेने वालों और पापियों का मित्र।' 35फिर भी बुद्धि अपनी सब सन्तानों द्वारा सत्य ठहराई जाती है।"

पापी स्त्री को क्षमादान

36फिर किसी एक फरीसी ने उस से विनती की कि वह उसके साथ भोजन करे, अतः वह उस फरीसी के घर जाकर भोजन करने बैठा। 37और देखो, उस नगर में एक स्त्री थी जो पापिन थी, और जब इसने जाना कि वह फरीसी के घर पर भोजन करने बैठा है तो संगमरमर के पात्र में इत्र लेकर आई, 38और उसके पैरों के पास पीछे खड़ी होकर रोते रोते आंसुओं से उसके पैर भिगोने लगी और अपने सिर के बालों से उसके पैरों को पोंछते और चूमते हुए उन पर इत्र मलने लगी। 39तब उस फरीसी ने जिसने यीशु को आमन्त्रित किया था यह सब देखकर अपने मन में कहा, "यदि यह मनुष्य *नबी होता तो जान जाता कि यह स्त्री जो उसे छू रही है, कौन है और कैसी है, अर्थात् वह तो पापिन है।" 40यीशु ने उस से कहा, "हे शमौन, मुझे तुझ से कुछ कहना है।" और उसने उत्तर दिया, "हे गुरु, कह।" 41"किसी महाजन के दो कर्जदार थे : एक पर पांच सौ *दीनार कर्ज था और दूसरे पर पचास। 42जब वे कर्ज चुकाने में असमर्थ रहे तो उसने दोनों पर कृपा करके उन्हें क्षमा कर दिया। अतः उन दोनों में से कौन उससे अधिक प्रेम करेगा?" 43शमौन ने उत्तर दिया, "मेरी समझ में वह जिसका अधिक क्षमा किया गया।" और उसने उस से कहा, "तू ने उचित ही सोचा।" 44फिर उस स्त्री की ओर पलटकर उसने शमौन से कहा, "क्या तू इस स्त्री को देखता है? मैं तेरे घर में आया पर तू ने मेरे पैर धोने के लिए पानी तक न दिया, परन्तु इसने अपने आंसुओं से मेरे पैरों को भिगोया और अपने बालों से पोंछा। 45तू ने मुझे नहीं चूमा, पर जब से मैं आया हूं, इसने मेरे पैरों को चूमना न छोड़ा। 46तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं मला, पर इसने मेरे पैरों पर इत्र मला है। 47इसी कारण मैं तुझ से कहता हूं कि इसके पाप, जो बहुत थे, क्षमा कर दिए गए हैं क्योंकि इसने अधिक प्रेम किया, पर वह जिसके

29 अथवा, परमेश्वर को धर्मी ठहराया [illegible]
30 [illegible]
[illegible]
[illegible]

हूं, 'जा' तो वह जाता है। और दूसरे से कहता हूं 'आ' तो वह आता है और मैं अपने दास से कहता हूं, 'यह कर' तो वह उसे करता है।" [9]जब यीशु ने यह सुना तो उसे आश्चर्य हुआ और भीड़ की ओर जो उसके पीछे चली आ रही थी पलट कर कहा, "मैं तुमसे कहता हूं कि इस्राएल में भी मैंने ऐसा बड़ा विश्वास नहीं पाया।" [10]और जो भेजे गए थे उन्होंने घर लौटकर उस दास को स्वस्थ पाया।

विधवा के पुत्र को जीवन दान

[11]इसके तुरन्त पश्चात् वह नाइन नामक एक नगर में गया। उसके चेले भी उसके साथ चल रहे थे और उनके साथ एक बड़ी भीड़ भी चली आ रही थी। [12]जब वह नगर के फाटक पर पहुंचा तो देखो लोग एक मुर्दे को जो अपनी मां का इकलौता पुत्र था बाहर लिए जा रहे थे। और वह विधवा थी और नगर के बहुत से लोग उसके साथ थे। [13]विधवा को देखकर प्रभु को उस पर बड़ा तरस आया और उसने कहा, "मत रो।" [14]फिर उस ने पास आकर अर्थी को छुआ और कन्धा देने वाले रुक गए। तब उसने कहा, "हे जवान, मैं तुझसे कहता हूं, उठ!" [15]मुर्दा उठ बैठा और बोलने लगा। यीशु ने उसे उसकी मां को सौंप दिया। [16]सब लोगों पर भय छा गया और वे यह कहते हुए परमेश्वर की महिमा करने लगे — "हमारे बीच में एक महान् नबी उठ खड़ा हुआ है और परमेश्वर ने अपने लोगों पर कृपा-दृष्टि की है।" [17]उसके सम्बन्ध में यह समाचार समस्त यहूदिया में तथा आस-पास के समस्त क्षेत्रों में फैल गया।

यीशु और यूहन्ना

[18]यूहन्ना के चेलों ने इन सब बातों का समाचार उसको दिया। [19]तब यूहन्ना ने अपने चेलों में से दो को बुलाकर उनको प्रभु के पास यह पूछने भेजा, "क्या वह आने वाला तू ही है, या हम फिर किसी अन्य की राह देखें?" [20]जब वे लोग उसके पास आए तो उन्होंने कहा, "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने हमें तेरे पास यह पूछने भेजा है, 'क्या वह आनेवाला तू ही है या हम किसी अन्य की राह देखें'?" [21]उसी समय उसने बहुत से लोगों को बीमारियों, पीड़ाओं और दुष्टात्माओं से छुड़ा कर चंगा किया और बहुत से लोगों को जो अन्धे थे, आंखें दीं। [22]तब उसने उनसे कहा, "जो कुछ तुम ने देखा और सुना, जाकर यूहन्ना को बताओ : **अन्धे देखते हैं**, लंगड़े चलते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं, बहरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं और **निर्धनों को सुसमाचार सुनाया जाता है।** [23]धन्य वह है जो मेरे विषय में ठोकर न खाए।"

[24]जब यूहन्ना के दूत चले गए तो यीशु भीड़ से यूहन्ना के विषय में बातें करने लगा, "तुम जंगल में क्या देखने गए थे? हवा से हिलते हुए सरकण्डे को? [25]तो फिर क्या देखने गए थे? ऐसे मनुष्य को जो कोमल वस्त्र पहिने हुए था? देखो, वे जो भड़कीले वस्त्र पहिनते और सुख-विलास में रहते हैं, राजभवनों में ही पाए जाते हैं। [26]परन्तु तुम क्या देखने गए थे? किसी नबी को? हां, मैं तुम से कहता हूं कि नबी से भी बड़े को। [27]यह वही है जिसके विषय में लिखा है, '**देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं। वह तेरे आगे तेरा मार्ग तैयार करेगा।**' [28]मैं तुम से कहता हूं

कि स्त्रियों से जो उत्पन्न हुए हैं उनमें से कोई भी यूहन्ना से बड़ा नहीं, फिर भी वह जो परमेश्वर के राज्य में छोटे से छोटा है वह उस से बढ़कर है।" [29]जब जन-साधारण व चुंगी लेने वालों ने यह सब सुना तो यूहन्ना का बपतिस्मा लेकर *परमेश्वर की धार्मिकता को मान लिया। [30]परन्तु फरीसी और *व्यवस्थापकों ने यूहन्ना का बपतिस्मा न लेकर अपने सम्बन्ध में परमेश्वर की योजना को अस्वीकार किया। [31]"तो मैं इस पीढ़ी के लोगों की तुलना किससे करूं? ये किसके समान हैं? [32]ये उन बच्चों के समान हैं जो बाज़ार में बैठे रहते हैं और एक दूसरे से पुकारकर कहते हैं— 'हमने तुम्हारे लिए बांसुरी बजाई पर तुम न नाचे; हमने विलाप किया पर तुम न रोए।' [33]क्योंकि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला न तो रोटी खाता आया और न दाखरस पीते आया, पर तुम कहते हो, 'उसमें दुष्टात्मा है।' [34]मनुष्य का पुत्र खाते पीते आया है और तुम कहते हो, 'देखो, पेटू और पियक्कड़ मनुष्य चुंगी लेने वालों और पापियों का मित्र।' [35]फिर भी बुद्धि अपनी सब सन्तानों द्वारा सत्य ठहराई जाती है।"

पापी स्त्री को क्षमादान

[36]फिर किसी एक फरीसी ने उस से विनती की कि वह उसके साथ भोजन करे, अत: वह उस फरीसी के घर आकर भोजन करने बैठा। [37]और देखो, उस नगर में एक स्त्री थी जो पापिन थी, और जब इसने जाना कि वह फरीसी के घर पर भोजन करने बैठा है तो संगमरमर के पात्र में इत्र लेकर आई, [38]और उसके पैरों के पास पीछे खड़ी होकर रोते रोते आंसुओं से उसके पैर भिंगोने लगी और अपने सिर के बालों से उसके पैरों को पोंछने और चूमते हुए उन पर इत्र मलने लगी। [39]तब उस फरीसी ने जिसने यीशु को आमन्त्रित किया था यह सब देखकर अपने मन में कहा, "यदि यह मनुष्य *नबी होता तो जान जाता कि वह स्त्री जो उसे छू रही है, कौन है और कैसी है, अर्थात् वह तो पापिन है।" [40]यीशु ने उस से कहा, "हे शमौन, मुझे तुझ से कुछ कहना है।" और उसने उत्तर दिया, "हे गुरु, कह।" [41]"किसी महाजन के दो कर्जदार थे : एक पर पांच सौ *दीनार कर्ज था और दूसरे पर पचास। [42]जब वे कर्ज चुकाने में असमर्थ रहे तो उसने दोनों पर कृपा करके उन्हें क्षमा कर दिया। अत: उन दोनों में से कौन उससे अधिक प्रेम करेगा?" [43]शमौन ने उत्तर दिया, "मेरी समझ में वह जिसका अधिक क्षमा किया गया।" और उसने उस से कहा, "तू ने उचित ही सोचा।" [44]फिर उस स्त्री की ओर पलटकर उसने शमौन से कहा, "क्या तू इस स्त्री को देखता है? मैं तेरे घर में आया पर तू ने मेरे पैर धोने के लिए पानी तक न दिया, परन्तु इसने अपने आंसुओं से मेरे पैरों को भिंगोया और अपने बालों से पोंछा। [45]तू ने मुझे नहीं चूमा, पर जब से मैं आया हूं, इसने मेरे पैरों को चूमना न छोड़ा। [46]तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं मला, पर इसने मेरे पैरों पर इत्र मला है। [47]इसी कारण मैं तुझ से कहता हूं कि इसके पाप, जो बहुत थे, क्षमा कर दिए गए हैं क्योंकि इसने बहुत अधिक प्रेम किया, पर व[illegible] से

---

29 *अ. परमेश्वर को धर्मी ठहराया
30 *अर्थात् मूसा की व्यवस्था में दक्ष
39 *कुछ हस्तलेखों में, यह नबी
41 *चांदी का एक सिक्का, एक दिन की म[illegible]

अपराध क्षमा किए गए, थोड़ा प्रेम करता है।" [48]और उसने स्त्री से कहा, "तेरे पाप क्षमा कर दिए गए हैं।" [49]तब वे लोग जो उसके साथ भोजन करने बैठे थे अपने अपने मन में कहने लगे, "यह मनुष्य कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है?" [50]यीशु ने उस स्त्री से कहा, "तेरे विश्वास ने तेरा उद्धार किया है, कुशल से चली जा।"

यीशु की शिष्याएं

8 इसके शीघ्र ही पश्चात् ऐसा हुआ कि वह परमेश्वर के राज्य का प्रचार करते और सुसमाचार सुनाते हुए नगर नगर और गांव गांव जाने लगा और वे बारह भी उसके साथ रहे। [2]और कुछ स्त्रियां भी जो दुष्टात्माओं और रोगों से चंगी की गई थीं साथ चलीं, जिनमें मरियम जो मगदलीनी कहलाती थी और जिसमें से सात दुष्टात्माएं निकाली गई थीं, [3]और हेरोदेस के भण्डारी खुज़ा की पत्नी योअन्ना और सूसन्नाह तथा बहुत सी अन्य स्त्रियां थीं। ये अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति से उनकी सेवा करती थीं।

[4]जब बड़ी भीड़ इकट्ठा हो रही थी और विभिन्न नगरों से लोग उसके पास चले आ रहे थे तो उसने उनसे दृष्टान्त में कहा, [5]"एक बोने वाला बीज बोने निकला। बोते हुए कुछ मार्ग के किनारे गिरा और पैरों से रौंदा गया तथा पक्षियों ने आकर उसे चुग लिया। [6]कुछ चट्टान पर गिरा और उगते ही सूख गया क्योंकि उसमें नमी न थी। [7]कुछ कटीली झाड़ियों में गिरा और झाड़ियों ने साथ साथ बढ़कर दबा दिया। [8]अन्य बीज अच्छी भूमि पर उगकर सौ गुणा फल लाया।" उसने ऊंची आवाज़ में कहा, "जिसके सुनने के कान हों वह सुने।"

[9]उसके चेले उस से प्रश्न करने लगे कि इस दृष्टान्त का अर्थ क्या हो सकता है? [10]उसने कहा, "तुमको यह प्रदान किया गया है कि तुम परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को जानो, पर दूसरों को दृष्टान्तों में ही बताया जाता है कि वे **देखते हुए न देखें और सुनते हुए न सुनें।** [11]दृष्टान्त यह है: बीज परमेश्वर का वचन है। [12]मार्ग के किनारे वाले वे हैं जिन्होंने वचन तो सुना पर शैतान आकर उनके हृदयों में से वचन को उठा ले जाता है कि वे विश्वास न करें और उनका उद्धार न हो। [13]चट्टान पर के वे हैं जो वचन सुनने पर उसे बड़े आनन्द से ग्रहण तो करते हैं पर जड़ मज़बूत न होने के कारण क्षण भर तो विश्वास करते हैं पर जब परीक्षा आती है तो बहक जाते हैं। [14]जो बीज कटीली झाड़ियों में गिरा यह तो वे हैं जिन्होंने वचन सुना और जैसे वे आगे बढ़ते हैं वे चिन्ताओं, धन और जीवन के सुख-विलास में फंस जाते हैं और परिपक्वता के लिए कोई फल नहीं लाते। [15]अच्छी भूमि के बीज वे हैं जो वचन सुन-कर अपने शुद्ध और अच्छे हृदय में उसे दृढ़ता से रखते और वे बड़े धैर्य से फल लाते हैं।

दीपक का दृष्टान्त

[16]"दीपक जलाकर कोई भी उसे बर्तन से नहीं ढांपता, न ही खाट के नीचे रखता है, वरन् दीपदान पर रखता है जिस से भीतर आने वालों को प्रकाश मिले। [17]क्योंकि कुछ भी छिपा नहीं जो प्रकट न होगा, न कोई गुप्त बात है जो जानी नहीं जाएगी और प्रकट नहीं होगी। [18]इसलिए सावधान रहो कि तुम किस प्रकार सुनते

हो, क्योंकि जिसके पास है उसे और भी दिया जाएगा और जिसके पास नहीं है उस से वह भी जिसे वह अपना समझता है ले लिया जाएगा।"

यीशु के भाई और उसकी माता

[19]उसकी माता और उसके भाई भी उसके पास आए, परन्तु भीड़ के कारण उसके पास नहीं पहुंच सके। [20]उसे बताया गया, "तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हैं। वे तुझसे मिलना चाहते हैं।" [21]पर उसने उत्तर दिया, "मेरी माता और मेरे भाई तो ये हैं जो परमेश्वर का वचन सुनकर उसका पालन करते हैं।"

आंधी को शान्त करना

[22]तब एक दिन ऐसा हुआ कि वह और उसके चेले एक नाव पर चढ़ गए और उसने उनसे कहा, "आओ, झील के उस पार चलें।" अतः उन्होंने नाव खोल दी। [23]परन्तु जब वे नाव खेते हुए आगे बढ़ रहे थे तो वह सो गया। और झील पर बड़ी भयंकर आंधी आई, नाव में पानी भरने लगा और उनका जीवन ख़तरे में पड़ गया। [24]तब उन्होंने पास आकर उसे जगाया और कहा, "स्वामी, हे स्वामी, हम नाश हुए जाते हैं!" उसने उठकर आंधी तथा उठती हुई लहरों को डांटा और वे थम गईं और शान्ति छा गई। [25]उसने उनसे कहा, "तुम्हारा विश्वास कहां है?" वे डर गए और आश्चर्यचकित होकर एक दूसरे से कहने लगे, "तो फिर यह कौन है जो आंधी और पानी को भी आज्ञा देता है और वे उसकी मान लेते हैं?"

दुष्टात्माग्रस्त की चंगाई

[26]तब वे *गिरासेनियों के [illegible] पहुंचे जो गलील के सामने [illegible]। [27]जब वह किनारे पर उतरा तो [illegible] का एक मनुष्य मिला जिसमें [illegible] थीं। वह बहुत दिनों से न [illegible] था न घर में रहा करता था, परन्तु [illegible] ही रहता था। [28]यीशु को [illegible] चिल्ला उठा और उसके [illegible] ऊंची आवाज़ में उसने कहा, "[illegible] परमेश्वर के पुत्र यीशु, मेरा [illegible] काम? मैं तुझ से निवेदन करता हूं [illegible] मुझे यातना न दे।" [29]वह तो [illegible] आत्मा को आज्ञा दे रहा था कि उस मनुष्य में से निकल जाए, क्योंकि बहुत बार उसने उस मनुष्य को पकड़ा था। लोग उसे सांकलों और बेड़ियों से बांधकर पहरे में रखते थे, फिर भी वह इन बन्धनों को तोड़ डालता था और दुष्टात्मा उसे जंगल में भगाए फिरती थी। [30]और यीशु ने उस से पूछा, "तेरा नाम क्या है?" उसने कहा, "सेना," क्योंकि बहुत सी दुष्टात्माएं उसमें समाई हुई थीं। [31]वे उस से अनुनय विनय कर रही थीं कि वह उन्हें अथाह गड़हे में जाने की आज्ञा न दे। [32]सूअरों का एक बड़ा झुण्ड वहां पहाड़ पर चर रहा था। तब दुष्टात्माओं ने उस से बड़ी विनती की कि वह उन्हें सूअरों में जाने दे। उसने उन्हें जाने दिया। [33]दुष्टात्माएं उस मनुष्य में से निकल कर सूअरों में समा गईं और सारा झुण्ड ऊंचे कगार पर से नीचे झपटकर झील में कूदा और डूबकर मर गया। [34]जब चरवाहों ने जो कुछ हुआ उसे देखा तो भागकर नगर में और गांवों में जाकर बता दिया। [35]तब लोग जो कुछ

[26] *कुछ हस्तलेखों में, गिरगसेनियों या गदारेनियों

क्षमा कर दिए गए हैं।" 49तब वे लोग जो उसके साथ भोजन करने बैठे थे अपने अपने मन में कहने लगे, "यह मनुष्य कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है?" 50यीशु ने उस स्त्री से कहा, "तेरे विश्वास ने तेरा उद्धार किया है, कुशल से चली जा।"

यीशु की शिष्याएं

8 इसके शीघ्र ही पश्चात् ऐसा हुआ कि वह परमेश्वर के राज्य का प्रचार करते और सुसमाचार सुनाते हुए नगर नगर और गांव गांव जाने लगा और वे बारह भी उसके साथ रहे। 2और कुछ स्त्रियां भी जो दुष्टात्माओं और रोगों से चंगी की गई थीं साथ चलीं, जिनमें मरियम जो मगदलीनी कहलाती थी और जिसमें से सात दुष्टात्माएं निकाली गई थीं, 3और हेरोदेस के भण्डारी खुज़ा की पत्नी योअन्ना और सूसन्नाह तथा बहुत सी अन्य स्त्रियां थीं। ये अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति से उनकी सेवा करती थीं।

4जब बड़ी भीड़ इकट्ठा हो रही थी और विभिन्न नगरों से लोग उसके पास चले आ रहे थे तो उसने उनसे दृष्टान्त में कहा, 5"एक बोने वाला बीज बोने निकला। बोते हुए कुछ मार्ग के किनारे गिरा और पैरों से रौंदा गया तथा पक्षियों ने आकर उसे चुग लिया। 6कुछ चट्टान पर गिरा और उगते ही सूख गया क्योंकि उसमें नमी न थी। 7कुछ कटीली झाड़ियों में गिरा और झाड़ियों ने साथ साथ बढ़कर दबा दिया। 8अन्य बीज अच्छी भूमि पर गिरा और उगकर सौ गुणा फल लाया।" उसने ऊंची आवाज़ में कहा,

इस दृष्टान्त का अर्थ क्या हो सकता है? 10उसने कहा, "तुमको यह प्रदान किया गया है कि तुम परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को जानो, पर दूसरों को दृष्टान्तों में ही बताया जाता है कि वे **देखते हुए न देखें और सुनते हुए न सुनें**। 11दृष्टान्त यह है: बीज परमेश्वर का वचन है। 12मार्ग के किनारे वाले वे हैं जिन्होंने वचन तो सुना पर शैतान आकर उनके हृदयों में से वचन को उठा ले जाता है कि वे विश्वास न करें और उनका उद्धार न हो। 13चट्टान पर के वे हैं जो वचन सुनने पर उसे बड़े आनन्द से ग्रहण तो करते हैं पर जड़ मज़बूत न होने के कारण क्षण भर तो विश्वास करते हैं पर जब परीक्षा आती है तो बहक जाते हैं। 14जो बीज कटीली झाड़ियों में गिरा यह तो वे हैं जिन्होंने वचन सुना और जैसे वे आगे बढ़ते हैं वे चिन्ताओं, धन और जीवन के सुख-विलास में फंस जाते हैं और परिपक्वता के लिए कोई फल नहीं लाते। 15अच्छी भूमि के बीज वे हैं जो वचन सुनकर अपने शुद्ध और अच्छे हृदय में उसे दृढ़ता से रखते और वे बड़े धैर्य से फल लाते हैं।

दीपक का दृष्टान्त

16"दीपक जलाकर कोई भी उसे बर्तन से नहीं ढांपता, न ही खाट के नीचे रखता है, वरन् दीपदान पर रखता है जिस से भीतर आने वालों को प्रकाश मिले। 17क्योंकि कुछ भी छिपा नहीं जो प्रकट न होगा, न कोई गुप्त बात है जो जानी नहीं जाएगी और प्रकट नहीं होगी। 18इसलिए सावधान रहो कि तुम किस प्रकार सुनते

हो, क्योंकि जिसके पास है उसे और भी दिया जाएगा और जिसके पास नहीं है उस से वह भी जिसे वह अपना समझता है ले लिया जाएगा।"

यीशु के भाई और उसकी माता

[19]उसकी माता और उसके भाई भी उसके पास आए, परन्तु भीड़ के कारण उसके पास नहीं पहुंच सके। [20]उसे बताया गया, "तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हैं। वे तुझसे मिलना चाहते हैं।" [21]पर उसने उत्तर दिया, "मेरी माता और मेरे भाई तो ये हैं जो परमेश्वर का वचन सुनकर उसका पालन करते हैं।"

आंधी को शान्त करना

[22]तब एक दिन ऐसा हुआ कि वह और उसके चेले एक नाव पर चढ़ गए और उसने उनसे कहा, "आओ, झील के उस पार चलें।" अतः उन्होंने नाव खोल दी। [23]परन्तु जब वे नाव खेते हुए आगे बढ़ रहे थे तो वह सो गया। और झील पर बड़ी भयंकर आंधी आई, नाव में पानी भरने लगा और उनका जीवन खतरे में पड़ गया। [24]तब उन्होंने पास आकर उसे जगाया और कहा, "स्वामी, हे स्वामी, हम नाश हुए जाते हैं!" उसने उठकर आंधी तथा उठती हुई लहरों को डांटा और वे थम गईं और शान्ति छा गई। [25]उसने उनसे कहा, "तुम्हारा विश्वास कहां है?" वे डर गए और आश्चर्यचकित होकर एक दूसरे से कहने लगे, "तो फिर यह कौन है जो आंधी और पानी को भी आज्ञा देता है और वे उसकी मान लेते हैं?"

दुष्टात्माग्रस्त की चंगाई

[26]तब वे *गिरासेनियों के प्रदेश में पहुंचे जो गलील के सामने ही है। [27]जब वह किनारे पर उतरा तो उसे उस नगर का एक मनुष्य मिला जिसमें दुष्टात्माएं थीं। वह बहुत दिनों से न कपड़े पहिनता था न घर में रहा करता था, परन्तु कब्रों में ही रहता था। [28]यीशु को देख कर वह चिल्ला उठा और उसके सामने गिरकर ऊंची आवाज़ में उसने कहा, "हे सर्वोच्च परमेश्वर के पुत्र यीशु, मेरा तुझसे क्या काम? मैं तुझ से निवेदन करता हूं कि तू मुझे यातना न दे।" [29]वह तो अशुद्ध आत्मा को आज्ञा दे रहा था कि उस मनुष्य में से निकल जाए, क्योंकि बहुत बार उसने उस मनुष्य को पकड़ा था। लोग उसे सांकलों और बेड़ियों से बांधकर पहरे में रखते थे, फिर भी वह इन बन्धनों को तोड़ डालता था और दुष्टात्मा उसे जंगल में भगाए फिरती थी। [30]और यीशु ने उस से पूछा, "तेरा नाम क्या है?" उसने कहा, "सेना," क्योंकि बहुत सी दुष्टात्माएं उसमें समाई हुई थीं। [31]वे उस से अनुनय विनय कर रही थीं कि वह उन्हें अथाह गड़हे में जाने की आज्ञा न दे। [32]सूअरों का एक बड़ा झुण्ड वहां पहाड़ पर चर रहा था। तब दुष्टात्माओं ने उस से बड़ी विनती की कि वह उन्हें सूअरों में जाने दे। उसने उन्हें जाने दिया। [33]दुष्टात्माएं उस मनुष्य में से निकल कर सूअरों में समा गईं और सारा झुण्ड ऊंचे कगार पर से नीचे झपटकर झील में कूदा और डूबकर मर गया। [34]जब चरवाहों ने जो कुछ हुआ उसे देखा तो भागकर नगर में और गांवों में जाकर बता दिया। [35]तब लोग जो कुछ

---

26 *कुछ हस्तलेखों में, गिर्गसेनियों या गदरेनियों

हुआ उसे देखने निकले और यीशु के पास आए। वहां उन्होंने उस मनुष्य को जिसमें से दुष्टात्माएं निकली थीं यीशु के पैरों के समीप बैठे हुए देखा। वह कपड़े पहिने हुए सही मानसिक स्थिति में था। इस पर वे भयभीत हो गए। [36]जिन लोगों ने यह देखा था, उन्होंने उन्हें बताया कि वह मनुष्य जिसमें दुष्टात्मा समाई हुई थी किस प्रकार *चंगा कर दिया गया है। [37]तब *गिरासेनियों और आस-पास के क्षेत्र के सब लोगों ने उस से विनती की कि वह उनके पास से चला जाए क्योंकि वे अत्यन्त भयभीत हो गए थे, और वह नाव पर चढ़कर लौट गया। [38]पर वह मनुष्य जिसमें से दुष्टात्माएं निकली थीं उस से विनती करने लगा कि मुझे अपने साथ चलने दे, पर उसने उसे यह कह कर लौटा दिया: [39]"अपने घर लौट जा और लोगों को बता कि परमेश्वर ने तेरे लिए कैसे महान् कार्य किए हैं।" उसने लौटकर सारे नगर में यह प्रचार किया कि यीशु ने मेरे लिए कैसे महान् कार्य किए हैं।

मृत लड़की और रोगी स्त्री

[40]ज्यों ही यीशु लौटा तो भीड़ ने उस का स्वागत किया क्योंकि वे सब उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। [41]और देखो, याईर नाम का एक मनुष्य आया जो आराधनालय का अधिकारी था। वह यीशु के पैरों पर गिर पड़ा और उस से अपने घर चलने के लिए अनुरोध करने लगा, [42]क्योंकि उसकी एकलौती बेटी, जो लगभग बारह वर्ष की थी, मरने पर थी। जब वह जाने को था तो भीड़ उस पर टूटी पड़ रही थी।

[43]जब एक स्त्री ने जिसे बारह वर्ष से लहू बहने का रोग था *और जिसे कोई भी चंगा न कर सका था, [44]पीछे से आकर उसके चोगे का किनारा छुआ, तो तत्काल उसका लहू बहना रुक गया। [45]यीशु ने कहा, "किसने मुझे छुआ?" जब वे सब मुकर रहे थे तो *पतरस ने कहा, "हे स्वामी, भीड़ इकट्ठी होकर तुझ पर टूटी पड़ रही है।" [46]पर यीशु ने कहा, "किसी ने मुझे छुआ है क्योंकि मुझे मालूम हुआ कि मुझ में से सामर्थ निकली है।" [47]जब स्त्री ने देखा कि मैं छिप नहीं सकती तो डर के मारे कांपती हुई आकर उसके सामने गिर पड़ी। तब उसने सब लोगों के सामने बताया कि उसने क्यों उसे छुआ और कैसे वह तत्काल चंगी हो गई। [48]उसने उस से कहा, "बेटी, तेरे विश्वास ने तुझे छुड़ा लिया है, कुशलपूर्वक चली जा।"

[49]जब वह यह कह रहा था तो किसी ने आराधनालय के अधिकारी के घर से आकर कहा, "तेरी बेटी मर गई है। अब गुरु को अधिक कष्ट न दे।" [50]पर जब यीशु ने यह सुना तो उसे उत्तर दिया, "बिल्कुल मत डर। केवल विश्वास रख तो वह *चंगी हो जाएगी।" [51]जब वह उस घर में पहुंचा तो उसने पतरस, यूहन्ना, याकूब और उस लड़की के माता-पिता के अतिरिक्त अन्य किसी को अपने साथ भीतर आने न दिया। [52]वे सब लोग उस के लिए विलाप करके रो रहे थे, पर उसने कहा, "रोना बन्द करो, क्योंकि वह मरी नहीं, वरन् सो रही है।" [53]वे यह जानकर कि वह मर गई है इस पर हंसने लगे। [54]परन्तु उसने उसका हाथ पकड़ा और यह कहकर पुकारा: "हे लड़की

36 *या, बचा लिया गया
37 *कुछ हस्तलेखों में, गिर्गासेनियों या गदारेनियों
*कुछ हस्तलेखों में यह भी लिखा है: जिसने अपनी सारी जीविका वैद्यों पर व्यय कर दी थी
प्राचीन हस्तलेखों में यह भी लिखा है: और उसके साथियों
50 *या, बच जाएगी

उठ!" [55]तब उसकी आत्मा लौट आई और वह तत्काल खड़ी हो गई और यीशु ने आज्ञा दी कि उसे कुछ खाने को दिया जाए। [56]उसके माता-पिता आश्चर्य-चकित हुए, पर उसने उनको आदेश दिया कि जो कुछ हुआ उसे किसी को न बताएं।

चेलों का सेवा के लिए भेजा जाना

9 तब उसने बारहों को एक साथ बुलाया और उनको सब दुष्टात्माओं पर और बीमारियों को चंगा करने के लिए सामर्थ और अधिकार दिया। [2]उसने उनको भेजा कि वे परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार करें और रोगियों को चंगा करें। [3]उसने उनसे कहा, "अपनी यात्रा के लिए कुछ न ले जाना, न तो लाठी, न झोला, न रोटी, और न रुपये-पैसे, यहां तक कि दो दो कुरते भी न ले जाना। [4]जिस किसी घर में जाओ, वहीं रहो और वहीं से विदा होओ। [5]और जो तुम को स्वीकार न करें, जब तुम उस नगर में से निकलो तो अपने पैरों से धूल झाड़ दो जिस से उनके विरुद्ध गवाही हो।" [6]सो वे निकल कर गांव गांव सुसमाचार सुनाते हुए और हर स्थान पर चंगाई करते चले।

[7]देश के चौथाई के राजा हेरोदेस ने जब इन सब घटनाओं के विषय में सुना तो वह अत्यन्त घबरा गया, क्योंकि कुछ लोगों के द्वारा कहा जा रहा था कि यूहन्ना मरे हुओं में से जी उठा है, [8]कुछ कहते थे कि एलिय्याह प्रकट हुआ है, अन्य लोगों के अनुसार पुराने नबियों में से एक जी उठा है। [9]हेरोदेस ने कहा, "स्वयं मैंने ही तो यूहन्ना का सिर कटवाया था, परन्तु यह मनुष्य कौन है जिसके विषय में मैं ऐसी बातें सुनता हूं?" और वह उसे देखने का प्रयत्न करता रहा।

पांच हज़ार को खिलाना

[10]जब प्रेरित लौट आए तो सब कुछ जो उन्होंने किया था उसे बताया। तब वह उनको अपने साथ लेकर चुपचाप बैतसैदा नामक नगर को गया। [11]परन्तु भीड़ के लोगों को पता लग गया अतः वे उसके पीछे चल पड़े। उनका स्वागत करके वह उनसे परमेश्वर के राज्य की बातें करने लगा, और जिनको चंगा होने की आवश्यकता थी उसने उन्हें चंगा किया। [12]जब दिन ढलने लगा तो बारहों ने उसके पास आकर कहा, "भीड़ को विदा कर कि वे आस-पास के गांवों और बस्तियों में जाकर अपने लिए रहने को स्थान और खाने को कुछ ढूंढ़ सकें, क्योंकि हम तो यहां निर्जन स्थान में हैं।" [13]परन्तु उसने उनसे कहा, "तुम ही उन्हें कुछ खाने को दो।" उन्होंने कहा, "हमारे पास पांच रोटी और दो मछलियों के अतिरिक्त और कुछ नहीं। जब तक कि हम जाकर सारी भीड़ के लिए भोजन मोल न लाएं यह नहीं हो सकता" —क्योंकि वहां पर लगभग पांच हज़ार पुरुष थे—उसने अपने चेलों से कहा, "पचास पचास की पंक्तियों में उन्हें भोजन करने बैठा दो।" [15]उन्होंने इसी प्रकार उन सब को बैठा दिया। [16]तब उसने पांच रोटी और दो मछलियां लीं और स्वर्ग की ओर दृष्टि करके उन पर आशिष मांगी और उन्हें तोड़कर चेलों को देता गया कि वे लोगों को परोसें। [17]तब सब लोग खाकर तृप्त हुए, और उन्होंने बचे हुए टुकड़ों से भरी बारह टोकरियां उठाईं।

यीशु को मसीह मानना

[18]फिर जब वह अकेला प्रार्थना कर रहा था और चेले उसके साथ थे तो उसने उनसे पूछा, "मैं कौन हूं, इस विषय में लोग क्या कहते हैं?" [19]उन्होंने उत्तर दिया, "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, पर कुछ कहते हैं, एलिय्याह; और अन्य लोगों के अनुसार, प्राचीन नबियों में से कोई एक जो जी उठा है।" [20]उसने उनसे कहा, "पर तुम मुझे क्या कहते हो?" पतरस ने उत्तर दिया, "परमेश्वर का मसीह।" [21]पर उसने उन्हें चेतावनी देकर आदेश दिया कि यह बात किसी से न कहना, [22]फिर कहा, "यह आवश्यक है कि मनुष्य का पुत्र बहुत दुख उठाए और प्राचीनों, महायाजकों व शास्त्रियों द्वारा त्यागा जाकर मार डाला जाए और तीसरे दिन जी उठे।" [23]तब उसने सब लोगों से कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहता है तो वह स्वयं अपना इन्कार करे, प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए और मेरा अनुसरण करे। [24]क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई अपना प्राण मेरे लिए खोए वह उसे बचाएगा। [25]यदि कोई मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण खो डाले या उस से वंचित हो जाए तो उसे क्या लाभ होगा? [26]जो मुझ से और मेरे वचन से लज्जित होता है, उस से मनुष्य का पुत्र भी उस समय लजाएगा जब वह अपनी, और अपने पिता की, और स्वर्गदूतों की महिमा में आएगा। [27]पर मैं तुमसे सत्य कहता हूं कि यहां कुछ ऐसे खड़े हैं जो जब तक स्वर्ग का राज्य न देख लें तब तक मृत्यु का स्वाद न चखेंगे।"

यीशु का दिव्य रूपान्तर

[28]इन बातों के लगभग आठ दिन पश्चात् ऐसा हुआ कि वह पतरस, यूहन्ना और याकूब को साथ लेकर प्रार्थना करने के लिए पर्वत पर चढ़ गया। [29]जब वह प्रार्थना कर रहा था तो उसके मुख का रूप बदल गया और उसका वस्त्र श्वेत होकर चमकने लगा। [30]देखो, दो मनुष्य उस से बातें कर रहे थे—वे मूसा और एलिय्याह थे। [31]ये महिमा में प्रकट होकर *उसके मरने के विषय में बातें कर रहे थे जिसे वह यरूशलेम में पूरा करने पर था। [32]पतरस और उसके साथियों को नींद ने दबा रखा था, पर जब वे पूर्ण रूप से जाग उठे तो उन्होंने उसकी महिमा को, और उसके साथ उन दोनों मनुष्यों को खड़े देखा। [33]जब वे उस से विदा होने लगे तो पतरस ने यीशु से कहा, "हे स्वामी, यहां रहना हमारे लिए अच्छा है, अतः हम तीन तम्बू खड़े करें: एक तेरे लिए, एक मूसा और एक एलिय्याह के लिए।" वह जानता न था कि क्या कह रहा है। [34]वह यह कह ही रहा था कि एक बादल उठा जो उन पर छाने लगा, और जब वे बादल से घिरने लगे तो डर गए। [35]तब बादल में से यह शब्द सुनाई दिया, "यह मेरा पुत्र, मेरा चुना हुआ है। इसकी सुनो।" [36]जब वाणी हो चुकी तो यीशु अकेला पाया गया। वे चुपचाप रहे और जो कुछ देखा था उसके विषय में उन्होंने उन दिनों किसी को कुछ नहीं बताया।

दुष्टात्मा-ग्रस्त लड़के की चंगाई

[37]दूसरे दिन ऐसा हुआ कि जब वे उस पर्वत से नीचे उतरे तो एक बड़ी भीड़ उस

*अक्षरशः, जाने, विदा होने

से मिली। 38और देखो, भीड़ में से एक मनुष्य ने चिल्लाकर कहा, "हे गुरु, मैं तुझ से विनती करता हूं कि तू मेरे पुत्र पर कृपा-दृष्टि कर क्योंकि वह मेरा एकलौता पुत्र है, 39और देख, एक दुष्टात्मा उसमें समा जाती है और वह अचानक चीख उठता है। वह उसे ऐसा मरोड़ती है कि उसके मुंह से फेन निकलने लगता है। वह उसे झंझोड़कर कठिनाई से छोड़ती है। 40मैंने तेरे चेलों से विनती की कि उसे निकालें पर वे न निकाल सके।" 41यीशु ने उसे उत्तर दिया, "हे अविश्वासी और हठीली पीढ़ी, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा और तुम्हारी सहता रहूंगा? अपने पुत्र को यहां ले आ।" 42वह आ ही रहा था कि दुष्टात्मा ने उसे *भूमि पर पटक कर बुरी तरह मरोड़ा। पर यीशु ने उस अशुद्ध आत्मा को डांटा और लड़के को चंगा करके उसके पिता को सौंप दिया। 43तब परमेश्वर की महानता से सब लोग आश्चर्यचकित हुए।

वह जो कुछ कर रहा था इसे देख कर जब सब लोग अचम्भा कर रहे थे तो उसने अपने चेलों से कहा, 44"इन बातों पर कान दो, क्योंकि मनुष्य का पुत्र लोगों के हाथों में पकड़वाया जाने वाला है।" 45परन्तु वे इस कथन को न समझे, और यह बात उनसे गुप्त रही कि वे उसे न जानें, और वे इसके विषय में उस से पूछने से डरते थे।

सब से बड़ा कौन?

46तब उनके मध्य इस बात पर विवाद होने लगा कि हम में से कौन सब से बड़ा है। 47तब यीशु ने यह जानकर कि वे अपने मनों में क्या सोच रहे हैं, एक बालक को लेकर अपने निकट खड़ा किया, 48और उनसे कहा, "जो कोई इस बालक को मेरे नाम से ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है। और जो कोई मुझ को ग्रहण करता है, वह उसको ग्रहण करता है जिसने मुझे भेजा है, क्योंकि जो तुम में सब से छोटा है, वही बड़ा है।"

49तब यूहन्ना ने कहा, "हे स्वामी, हमने एक मनुष्य को तेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालते देखा और उसे रोकने का प्रयत्न किया, क्योंकि वह हमारे साथ रहकर तेरा अनुसरण नहीं करता।" 50परन्तु यीशु ने उस से कहा, "उसे मत रोको, क्योंकि जो तुम्हारे विरोध में नहीं, वह तुम्हारी ओर है।"

सामरियों द्वारा विरोध

51फिर ऐसा हुआ कि जब उसके *स्वर्गारोहण के दिन निकट आने लगे तो उसने यरूशलेम जाने का दृढ़ निश्चय किया। 52और उसने अपने आगे दूत भेजे। उन्होंने जाकर सामरियों के एक गाँव में प्रवेश किया कि उसके लिए तैयारी करें। 53पर उन्होंने उसका स्वागत नहीं किया क्योंकि *वह यरूशलेम की ओर ही चला जा रहा था। 54जब उसके चेलों में से याकूब और यूहन्ना ने यह देखा तो कहा, "हे प्रभु, क्या तू चाहता है कि *हम यह आज्ञा दें कि आकाश से अग्नि गिरे और उन्हें भस्म कर दे?" 55पर उसने मुड़कर उनको डांटा *[और कहा, "तुम नहीं जानते कि तुम कैसी आत्मा के हो। 56मनुष्य का पुत्र तो लोगों के प्राणों को नाश करने नहीं, पर बचाने आया है।"]

42 *या, फाड़ा 51 *अक्षरशः उठाया 53 *अक्षरशः, उसका चेहरा 54 *कुछ हस्तलेखों में यह भी लिखा है: जैसे एलिय्याह ने किया, हम भी... 55 *कोष्ठक में लिखा भाग केवल बाद के कुछ हस्तलेखों में मिलता है।

और वे दूसरे नगर को चले गए।

यीशु के चेले बनने का मूल्य

[57]जब वे मार्ग पर चले जा रहे थे तो किसी ने उस से कहा, "तू जहां जहां जाए मैं तेरे पीछे चलूंगा।" [58]यीशु ने उस से कहा, "लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के घोंसले होते हैं, पर मनुष्य के पुत्र के लिए सिर छिपाने के लिए भी कोई स्थान नहीं।" [59]उसने दूसरे से कहा, "मेरे पीछे चल," पर उसने कहा, "*मुझे पहिले जाने दे कि मैं अपने पिता को दफ़न करूं।" [60]पर उसने उस से कहा, "मुर्दों को अपने मुर्दे दफ़न करने दे, पर तू आकर परमेश्वर के राज्य का सर्वत्र प्रचार कर।" [61]फिर किसी एक अन्य ने भी कहा, "हे प्रभु, मैं तेरे पीछे चलूंगा, पर मुझे पहिले जाने दे कि घर वालों से विदा होकर आऊं।" [62]परन्तु यीशु ने उस से कहा, "कोई भी व्यक्ति जो अपना हाथ हल पर रखने के पश्चात् पीछे मुड़कर देखता है परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।"

सत्तर चेलों का भेजा जाना

10 इसके पश्चात् प्रभु ने *सत्तर अन्य व्यक्तियों को नियुक्त किया और उन्हें अपने आगे दो दो करके प्रत्येक नगर और स्थान को भेजा जहाँ वह स्वयं जाने पर था। [2]उसने उनसे कहा, "फसल तो बहुत खड़ी है, पर मज़दूर थोड़े हैं, अतः खेत के मालिक से विनती करो कि वह अपने खेत में मज़दूरों को भेजे। [3]जाओ। देखो, मैं तुम्हें मेम्नों के समान भेड़ियों के मध्य भेजता हूँ। [4]अपने साथ न तो बटुआ, न झोला और न जूतियां लो, और मार्ग में किसी को नमस्कार भी मत करो। [5]जिस घर में भी प्रवेश करो, पहिले कहो, 'इस घर में शान्ति बनी रहे।' [6]यदि वहाँ कोई शान्ति के योग्य हो, तो तुम्हारी शान्ति उस पर बनी रहेगी अन्यथा वह तुम्हारे पास लौट आएगी। [7]उसी घर में रहो, और *जो कुछ वे तुम्हें दें उसी को खाओ और पीयो, क्योंकि मज़दूर को मज़दूरी अवश्य ही मिलनी चाहिए। घर घर मत फिरा करो। [8]जिस नगर में भी जाओ, जब वे तुम्हारा स्वागत करें तो जो कुछ तुम्हारे सामने रखा जाए वही खाओ। [9]वहाँ जो बीमार हों उन्हें चंगा करो और उनसे कहो, 'परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुँचा है।' [10]पर जिस नगर में तुम जाओ और लोग तुम्हारा स्वागत न करें तो उसकी गलियों में जाकर कहो, [11]'तुम्हारे विरोध में हम तुम्हारे नगर की उस धूल को भी जो हमारे पैरों पर लगी है झाड़ देते हैं। फिर भी यह निश्चयपूर्वक जान लो कि परमेश्वर का राज्य निकट आ पहुँचा है।' [12]मैं तुमसे कहता हूँ कि उस दिन सदोम की दशा उस नगर से कहीं बढ़कर सहने योग्य होगी। [13]हे खुराजीन, हे बैतसैदा, तुम पर हाय! जो *आश्चर्यकर्म तुम्हारे मध्य किए गए यदि वे सूर और सैदा में किए जाते तो टाट ओढ़कर और राख पर बैठकर वे कब के मन फिरा लेते। [14]परन्तु न्याय के दिन सूर और सैदा की दशा तुम से कहीं अधिक सहने योग्य होगी। [15]हे कफरनहूम, तू क्या स्वर्ग तक ऊँचा उठाया जाएगा? तू तो *अधोलोक तक नीचा किया जाएगा! [16]वह जो तुम्हारी

---

59 *कुछ हस्तलेखों में यह भी लिखा है: हे प्रभु
1 *कुछ हस्तलेखों में यह लिखा है: बहत्तर
7 *अक्षरशः, उन से वस्तुओं
13 *या, सामर्थ के काम
15 *यूनानी, हादेस

सुनता है, मेरी सुनता है। और जो तुम्हें अस्वीकार करता है, वह मुझे अस्वीकार करता है। और जो मुझे अस्वीकार करता है, वह उसे अस्वीकार करता है जिसने मुझे भेजा है।"

[17]वे *सत्तर आनन्द करते हुए लौटे और कहने लगे, "हे प्रभु, यहाँ तक कि दुष्टात्माएं भी तेरे नाम से हमारे वश में हैं।" [18]उसने उनसे कहा : "मैं शैतान को बिजली के समान आकाश से गिरते देख रहा था। [19]देखो, मैंने तुम्हें सांपों और बिच्छुओं को कुचलने तथा शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार दिया है, अतः कोई तुम्हें हानि नहीं पहुँचाएगा। [20]फिर भी इस बात पर आनन्दित मत होओ कि आत्माएं तुम्हारे वश में हैं, परन्तु इस बात से आनन्दित होओ कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं।"

अनन्त जीवन पाने का उपाय

[21]उसी क्षण वह पवित्र आत्मा में अत्यन्त आनन्दित हुआ, और उसने कहा, "हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरी स्तुति करता हूँ कि तू ने बुद्धिमानों और ज्ञानियों से इन बातों को गुप्त रखा पर बच्चों पर प्रकट किया। हाँ, हे पिता, यही तुझे भला लगा। [22]मेरे पिता ने मुझे सब वस्तुएं सौंप दी हैं, केवल पिता के कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है तथा केवल पुत्र के कोई नहीं जानता कि पिता कौन है और केवल उस व्यक्ति के जिस पर पुत्र उसे प्रकट करना चाहे।" [23]तब चेलों की ओर मुड़कर उसने उनसे गुप्त रूप में कहा, "धन्य हैं वे आँखें जो उन बातों को देखती हैं जिन्हें तुम देखते हो, [24]क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम जिन बातों को देखते हो उनको बहुत से नबियों तथा राजाओं ने देखना चाहा पर न देखा और उन बातों को सुनना चाहा जिन्हें तुम सुनते हो पर न सुना।"

[25]देखो, एक व्यवस्थापक उठा और यह कह कर उसकी परीक्षा की, "हे गुरु, अनन्त जीवन का उत्तराधिकारी होने के लिए मैं क्या करूँ?" [26]उसने उस से कहा, "व्यवस्था में क्या लिखा है? तू कैसे पढ़ता है?" [27]उसने उत्तर दिया, "**तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सम्पूर्ण हृदय, सम्पूर्ण प्राण, सम्पूर्ण शक्ति तथा सम्पूर्ण बुद्धि से प्रेम कर तथा अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम कर।**" [28]तब उसने उस से कहा, "तू ने ठीक उत्तर दिया है, **यही कर तो तू जीवित रहेगा।**"

दयालु सामरी

[29]परन्तु उसने अपने को धर्मी ठहराने की इच्छा से यीशु से पूछा, "मेरा पड़ोसी है कौन?" [30]यीशु ने उत्तर दिया, "एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो को *जा रहा था कि वह डाकुओं से घिर गया; उन्होंने उसे नंगा कर दिया, मारा-पीटा और अधमरा छोड़कर चल दिए। [31]संयोग से एक याजक उस मार्ग से जा रहा था और जब उसने उसे देखा तो कतरा कर चला गया। [32]इसी प्रकार एक लेवी भी उधर से निकला और उस स्थान पर पहुँचकर जब उसने उसे देखा तो कतरा कर चल दिया। [33]परन्तु एक सामरी भी जो यात्रा कर रहा था वहाँ पहुँचा। जब उसने उसे देखा तो उसे तरस आया। [34]उसने पास जाकर उसके घावों पर तेल और दाखरस उण्डेल कर उन पर पट्टियाँ बांधीं। तब उसे अपनी सवारी पर चढ़ाकर एक सराय में

---

17 *कुछ हस्तलेखों में यह लिखा है: बहत्तर

30 *अक्षरशः, उतर

और वे दूसरे नगर को चले गए।

यीशु के चेले बनने का मूल्य

57जब वे मार्ग पर चले जा रहे थे तो किसी ने उस से कहा, "तू जहां जहां जाए मैं तेरे पीछे चलूंगा।" 58यीशु ने उस से कहा, "लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के घोंसले होते हैं, पर मनुष्य के पुत्र के लिए सिर छिपाने के लिए भी कोई स्थान नहीं।" 59उसने दूसरे से कहा, "मेरे पीछे चल," पर उसने कहा, "*मुझे पहिले जाने दे कि मैं अपने पिता को दफ़न करूं।" 60पर उसने उस से कहा, "मुर्दों को अपने मुर्दे दफ़न करने दे, पर तू आकर परमेश्वर के राज्य का सर्वत्र प्रचार कर।" 61फिर किसी एक अन्य ने भी कहा, "हे प्रभु, मैं तेरे पीछे चलूंगा, पर मुझे पहिले जाने दे कि घर वालों से विदा होकर आऊं।" 62परन्तु यीशु ने उस से कहा, "कोई भी व्यक्ति जो अपना हाथ हल पर रखने के पश्चात् पीछे मुड़कर देखता है परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।"

सत्तर चेलों का भेजा जाना

10 इसके पश्चात् प्रभु ने *सत्तर अन्य व्यक्तियों को नियुक्त किया और उन्हें अपने आगे दो दो करके प्रत्येक नगर और स्थान को भेजा जहाँ वह स्वयं जाने पर था। 2उसने उनसे कहा, "फसल तो बहुत खड़ी है, पर मज़दूर थोड़े हैं, अत: खेत के मालिक से विनती करो कि वह अपने खेत में मज़दूरों को भेजे। 3जाओ। देखो, मैं तुम्हें मेम्नों के समान भेड़ियों के मध्य भेजता हूँ। 4अपने साथ न तो बटुआ, न झोला और न जूतियां लो, और मार्ग में किसी को नमस्कार भी मत करो। 5जिस घर में भी प्रवेश करो, पहिले कहो, 'इस घर में शान्ति बनी रहे।' 6यदि वहाँ कोई शान्ति के योग्य हो, तो तुम्हारी शान्ति उस पर बनी रहेगी अन्यथा वह तुम्हारे पास लौट आएगी। 7उसी घर में रहो, और *जो कुछ वे तुम्हें दें उसी को खाओ और पीयो, क्योंकि मज़दूर को मज़दूरी अवश्य ही मिलनी चाहिए। घर घर मत फिरा करो। 8जिस नगर में भी जाओ, जब वे तुम्हारा स्वागत करें तो जो कुछ तुम्हारे सामने रखा जाए वही खाओ। 9वहाँ जो बीमार हों उन्हें चंगा करो और उनसे कहो, 'परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुँचा है।' 10पर जिस नगर में तुम जाओ और लोग तुम्हारा स्वागत न करें तो उसकी गलियों में जाकर कहो, 11'तुम्हारे विरोध में हम तुम्हारे नगर की उस धूल को भी जो हमारे पैरों पर लगी है झाड़ देते हैं। फिर भी यह निश्चयपूर्वक जान लो कि परमेश्वर का राज्य निकट आ पहुँचा है।' 12मैं तुमसे कहता हूँ कि उस दिन सदोम की दशा उस नगर से कहीं बढ़कर सहने योग्य होगी। 13हे खुराजीन, हे बैतसैदा, तुम पर हाय! जो *आश्चर्यकर्म तुम्हारे मध्य किए गए यदि वे सूर और सैदा में किए जाते तो टाट ओढ़कर और राख पर बैठकर वे कब के मन फिरा लेते। 14परन्तु न्याय के दिन सूर और सैदा की दशा तुम से कहीं अधिक सहने योग्य होगी। 15हे कफरनहूम, तू क्या स्वर्ग तक ऊँचा उठाया जाएगा? तू तो *अधोलोक तक नीचा किया जाएगा! 16वह जो तुम्हारी

59 *कुछ हस्तलेखों में यह भी लिखा है: हे प्रभु
1 *कुछ हस्तलेखों में यह लिखा है: बहत्तर
7 *, उन से वस्तुओं
13 *या, सामर्थ के काम
15 *यूनानी, हादेस

सुनता है, मेरी सुनता है। और जो तुम्हें अस्वीकार करता है, वह मुझे अस्वीकार करता है। और जो मुझे अस्वीकार करता है, वह उसे अस्वीकार करता है जिसने मुझे भेजा है।"

[17]वे *सत्तर आनन्द करते हुए लौटे और कहने लगे, "हे प्रभु, यहाँ तक कि दुष्टात्माएं भी तेरे नाम से हमारे वश में हैं।" [18]उसने उनसे कहा : "मैं शैतान को बिजली के समान आकाश से गिरते देख रहा था। [19]देखो, मैंने तुम्हें सांपों और बिच्छुओं को कुचलने तथा शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार दिया है, अत: कोई तुम्हें हानि नहीं पहुँचाएगा। [20]फिर भी इस बात पर आनन्दित मत होओ कि आत्माएं तुम्हारे वश में हैं, परन्तु इस बात से आनन्दित होओ कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं।"

अनन्त जीवन पाने का उपाय

[21]उसी क्षण वह पवित्र आत्मा में अत्यन्त आनन्दित हुआ, और उसने कहा, "हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरी स्तुति करता हूँ कि तू ने बुद्धिमानों और ज्ञानियों से इन बातों को गुप्त रखा पर बच्चों पर प्रकट किया। हाँ, हे पिता, यही तुझे भला लगा। [22]मेरे पिता ने मुझे सब वस्तुएं सौंप दी हैं, केवल पिता के कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है तथा केवल पुत्र के कोई नहीं जानता कि पिता कौन है और केवल उस व्यक्ति के जिस पर पुत्र उसे प्रकट करना चाहे।" [23]तब चेलों की ओर मुड़कर उसने उनसे गुप्त रूप में कहा, "धन्य हैं वे आँखें जो उन बातों को देखती हैं जिन्हें तुम देखते हो, [24]क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम जिन बातों को देखते हो उनको बहुत से नबियों तथा राजाओं ने देखना चाहा पर न देखा और उन बातों को सुनना चाहा जिन्हें तुम सुनते हो पर न सुना।"

[25]देखो, एक व्यवस्थापक उठा और यह कह कर उसकी परीक्षा की, "हे गुरु, अनन्त जीवन का उत्तराधिकारी होने के लिए मैं क्या करूँ?" [26]उसने उस से कहा, "व्यवस्था में क्या लिखा है? तू कैसे पढ़ता है?" [27]उसने उत्तर दिया, "**तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सम्पूर्ण हृदय, सम्पूर्ण प्राण, सम्पूर्ण शक्ति तथा सम्पूर्ण बुद्धि से प्रेम कर तथा अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम कर।**" [28]तब उसने उस से कहा, "तू ने ठीक उत्तर दिया है, **यही कर तो तू जीवित रहेगा।**"

दयालु सामरी

[29]परन्तु उसने अपने को धर्मी ठहराने की इच्छा से यीशु से पूछा, "मेरा पड़ोसी है कौन?" [30]यीशु ने उत्तर दिया, "एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो को *जा रहा था कि वह डाकुओं से घिर गया; उन्होंने उसे नंगा कर दिया, मारा-पीटा और अधमरा छोड़कर चल दिए। [31]संयोग से एक याजक उस मार्ग से जा रहा था और जब उसने उसे देखा तो कतरा कर चला गया। [32]इसी प्रकार एक लेवी भी उधर से निकला और उस स्थान पर पहुँचकर जब उसने उसे देखा तो कतरा कर चल दिया। [33]परन्तु एक सामरी भी जो यात्रा कर रहा था वहाँ पहुँचा। जब उसने उसे देखा तो उसे तरस आया। [34]उसने पास जाकर उसके घावों पर तेल और दाखरस उण्डेल कर उन पर पट्टियाँ बांधीं। तब उसे अपनी सवारी पर चढ़ाकर एक सराय में

17 *कुछ हस्तलेखों में यह लिखा है: बहत्तर

30 *अक्षरश:, उतर

ले आया जहां उसने उसकी सेवा-सुश्रूषा की। [35]दूसरे दिन उसने दो *दीनार निकालकर सराय वाले को दिए और कहा, 'इसकी सेवा-सुश्रूषा करना। इस से अधिक जो खर्च आए, मैं लौटने पर चुका दूँगा।' [36]तेरे विचार से इन तीनों में से उस व्यक्ति का, जो डाकुओं के हाथ में पड़ गया था कौन पड़ोसी प्रमाणित हुआ?" [37]उसने कहा, "वही जिसने उस पर दया की।" यीशु ने उस से कहा, "जा, तू भी ऐसा ही कर।"

मार्था और मरियम के घर यीशु

[38]जब वे चले जा रहे थे तो उसने एक गांव में प्रवेश किया, और मार्था नामक एक स्त्री ने उसे अपने घर में ठहराया। [39]उसकी एक बहिन थी जिसका नाम मरियम था जो प्रभु के पावों के समीप बैठ कर उसके वचन सुन रही थी। [40]परन्तु मार्था सेवा-टहल करते करते व्याकुल हो उठी और उसने उसके पास आकर कहा, "हे प्रभु, क्या तुझे चिन्ता नहीं कि मेरी बहिन ने सेवा-टहल के लिए मुझे अकेला छोड़ दिया है? उस से कह कि वह मेरी सहायता करे।" [41]परन्तु प्रभु ने उत्तर दिया, "मार्था, हे मार्था, तू बहुत सी बातों के लिए चिन्तित तथा व्याकुल रहती है; [42]परन्तु कुछ बातें हैं—वास्तव में एक ही बात आवश्यक है, और मरियम ने उस उत्तम भाग को चुन लिया है जो उस से छीना न जाएगा।"

प्रभु की प्रार्थना

11 फिर ऐसा हुआ कि वह किसी स्थान पर प्रार्थना कर रहा था। जब वह प्रार्थना कर चुका तो उसके चेलों में से एक ने उस से कहा, "हे प्रभु, जैसे यूहन्ना ने अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखाया, तू भी हमें सिखा।" [2]उसने उनसे कहा, "*जब तुम प्रार्थना करो तो कहो, '*हे पिता, तेरा नाम पवित्र माना जाए, तेरा राज्य आए। [3]हमें *दिन भर की रोटी प्रतिदिन दिया कर। [4]हमारे पापों को क्षमा कर, क्योंकि हम भी अपने प्रत्येक अपराधी को क्षमा करते हैं, और हमें परीक्षा में न पड़ने दे'।"

आग्रहपूर्ण प्रार्थना करने का फल

[5]उसने उनसे कहा, "तुम में से ऐसा कौन है जिसका एक मित्र हो, और वह आधी रात को उसके पास जाकर कहे, 'हे मित्र, मुझे तीन रोटियाँ दे; [6]क्योंकि मेरा एक मित्र, यात्रा करते हुए मेरे पास आया है और मेरे पास उसे खिलाने के लिए कुछ भी नहीं।' [7]वह भीतर से उत्तर देकर कहे, 'मुझे न सता; द्वार बन्द हो चुका है और मेरे बच्चे मेरे साथ बिस्तर पर पड़े हैं: मैं उठकर तुझे कुछ भी नहीं दे सकता'। [8]मैं तुमसे कहता हूँ कि यद्यपि मित्र होने के नाते वह न उठे और उसे कुछ भी न दे, फिर भी *उसके अत्यन्त आग्रह करने पर वह उठकर उसकी जितनी भी आवश्यकता हो, देगा। [9]मैं तुमसे कहता हूँ, *मांगो तो तुम्हें दिया जाएगा; †ढूँढ़ो तो पाओगे; §खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा। [10]क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है, और जो ढूँढ़ता है वह पाता है, और जो खटखटाता है उसके लिए खोला जाएगा। [11]तुम में से कौन ऐसा पिता होगा कि जब उसका पुत्र

---

35 *चांदी का एक सिक्का, एक दिन की मजदूरी

2 *कुछ हस्तलेखों में समानता दिखाने के लिए मत्ती 6:9-13 के अंश भी इसमें मिला दिए गए हैं

3 *या, आने वाले दिन के लिए, या, वह रोटी जिसकी आवश्यकता हो

8 *लज्जा घोल कर पी जाने के कारण

9 *या, मांगते रहो †या, ढूंढ़ते रहो §या, खटखटाते रहो

*[रोटी मांगे तो वह उसे पत्थर दे? या] मछली मांगे तो मछली के बदले उसे सांप दे? [12]या अण्डा मांगे तो उसे बिच्छू दे? [13]अतः जब तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो तो तुम्हारा *स्वर्गीय पिता उनको जो उस से मांगते हैं पवित्र आत्मा क्यों न देगा?"

पवित्र आत्मा की शक्ति

[14]फिर वह एक दुष्टात्मा को निकालने लगा जो गूँगी थी; और ऐसा हुआ कि जब दुष्टात्मा निकल गई तो गूँगा बोलने लगा और भीड़ को बड़ा आश्चर्य हुआ। [15]पर उनमें से कुछ ने कहा, "वह तो दुष्टात्माओं को *बालजबूल अर्थात् दुष्टात्माओं के प्रधान की सहायता से निकालता है।" [16]अन्य कुछ लोगों ने उसकी परीक्षा करने के लिए उससे आकाश का एक चिन्ह मांगा। [17]पर वह उनके विचारों को जानता था अतः उसने कहा, "जिस राज्य में फूट हो वह उजड़ जाता है और जिस *घर में फूट हो वह नाश हो जाता है। [18]यदि शैतान ही स्वयं अपना विरोधी हो जाए तो उसका राज्य कैसे स्थिर रह सकता है? क्योंकि तुम कहते हो कि मैं बालजबूल की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ। [19]यदि मैं बालजबूल की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो तुम्हारी सन्तान किसकी सहायता से निकालती हैं? परिणामस्वरूप वे ही तुम्हारे न्यायी होंगे। [20]परन्तु यदि मैं परमेश्वर की *सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है। [21]जब एक बलवन्त मनुष्य पूर्णतः हथियार बांधे अपने घर की रखवाली करता है तो उसकी सम्पत्ति *सुरक्षित रहती है। [22]पर जब उस से भी बलवन्त कोई व्यक्ति उस पर आक्रमण करके उसे पराजित करता है तो वह उसके समस्त हथियारों को जिन पर उसे भरोसा था छीनता और सम्पत्ति को लूट कर बांट देता है। [23]वह जो मेरे साथ नहीं, मेरे विरोध में है, और वह जो मेरे साथ बटोरता नहीं, बिखेरता है। [24]जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकलती है; तो विश्राम की खोज करते हुए निर्जल स्थानों से होकर निकलती है; जब उसे कोई स्थान नहीं मिलता तो कहती है, 'मैं अपने जिस घर से निकली थी उसी में लौट जाऊँगी', [25]जब वह वहाँ पहुँचती है तो उसे झाड़ा-बुहारा और सुसज्जित पाती है। [26]तब वह अपने से भी बुरी अन्य सात आत्माओं को अपने साथ लेकर आती है और उसमें प्रवेश करके बस जाती है और उस मनुष्य की पिछली दशा, पहिले से भी बुरी हो जाती है।"

[27]ऐसा हुआ कि जब वह ये बातें कह ही रहा था कि भीड़ में से किसी स्त्री ने ऊँचे शब्द से उस से कहा, "धन्य है वह गर्भ जिसमें तू रहा और वे स्तन जिनसे तेरा पोषण हुआ।" [28]परन्तु उसने कहा, "इसके विपरीत धन्य हैं वे, जो परमेश्वर का वचन सुनते और उसका पालन करते हैं।"

स्वर्गीय चिन्ह की मांग

[29]ज्यों-ज्यों भीड़ बढ़ती जा रही थी वह कहने लगा, "यह दुष्ट पीढ़ी है, क्योंकि यह चिन्ह की खोज में रहती है, फिर भी

11 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में यह हिस्सा भी जोड़ा गया है 13 *अक्षरशः, स्वर्ग से 15 *कुछ हस्तलेखों में, बए जबूल (पद 18 और 19 में भी ऐसा ही है) 17 *अक्षरशः, घर के विरुद्ध घर 20 *अक्षरशः, उंगली 21 *अक्षरशः, शान्ति में

इसको योना के चिन्ह के अतिरिक्त अन्य कोई चिन्ह नहीं दिया जाएगा। [30]जिस प्रकार योना नीनवे के लोगों के लिए चिन्ह बना उसी प्रकार मनुष्य का पुत्र भी इस पीढ़ी के लोगों के लिए बनेगा। [31]दक्षिण की रानी न्याय के दिन इस पीढ़ी के लोगों के साथ खड़ी होकर उन पर दोष लगाएगी, क्योंकि वह पृथ्वी के छोर से सुलैमान का ज्ञान सुनने आई, पर देखो, यहाँ वह है जो सुलैमान से भी बड़ा है। [32]न्याय के दिन नीनवे के लोग इस पीढ़ी के लोगों के साथ खड़े होकर इन पर दोष लगाएंगे, क्योंकि उन्होंने योना का प्रचार सुनकर मन फिराया, और देखो, यहां वह है जो योना से भी बड़ा है।

देह का दीपक

[33]"कोई भी दीपक जला कर तहखाने में नहीं रखता, न टोकरी के नीचे रखता है, पर उसे दीवट पर रखता है कि प्रवेश करने वाले को प्रकाश मिले। [34]तेरे शरीर का दीपक तेरी आंख है; जब तेरी आंख निर्मल है तो सारा शरीर भी पूर्णतः प्रकाशमान है, पर जब वह बुरी है तो तेरा शरीर भी पूर्णतः अन्धकारमय हो जाता है। [35]अतः सतर्क रह कि तेरी ज्योति अंधकार न बन जाए। [36]इसलिए यदि तेरा सारा शरीर ज्योति से जगमगाता हो और किसी भी भाग में अन्धेरा न हो तो वह पूर्णतः उसी प्रकार प्रकाशित होगा, जिस प्रकार दीपक अपनी चमक से तुझे प्रकाश देता है।"

शास्त्रियों-फरीसियों की भर्त्सना

[37]जब उसने बोलना समाप्त किया तो एक फरीसी ने उसे अपने साथ भोजन के लिए आमन्त्रित किया। वह भीतर जाकर भोजन करने बैठा। [38]जब फरीसी ने यह देखा तो उसे आश्चर्य हुआ कि उसने भोजन करने से पहिले *रीति के अनुसार स्नान नहीं किया। [39]परन्तु प्रभु ने उस से कहा, "हे फरीसियो, तुम कटोरे और थाली को बाहर से तो मांजते हो परन्तु तुम्हारे भीतर डकैती और दुष्टता भरी है। [40]हे मूर्खो, जिसने बाहर के भाग को बनाया, क्या उसने भीतर के भाग को भी नहीं बनाया? [41]पर जो भीतर का है उसे दान कर दो तो तुम्हारे लिए सब कुछ शुद्ध हो जाएगा।

[42]"पर हे फरीसियो, तुम पर हाय! क्योंकि तुम पोदीने और सुदाब तथा विभिन्न प्रकार की साग-सब्जियों का दशमांश तो देते हो परन्तु न्याय व परमेश्वर के प्रेम की उपेक्षा करते हो, यही वे बातें हैं जिन्हें तुम्हें अन्य बातों की अवहेलना किए बिना करना चाहिए था। [43]हे फरीसियो, तुम पर हाय! क्योंकि तुम्हें आराधनालयों में आगे का स्थान और बाज़ारों में सम्मानपूर्ण नमस्कार प्रिय है। [44]तुम पर हाय! क्योंकि तुम उन छिपी हुई कब्रों के समान हो जिन पर लोग अनजाने चलते हैं।"

[45]तब *व्यवस्थापकों में से एक ने उत्तर दिया, "हे गुरु, ऐसा कहकर तू हमारा भी अपमान करता है।" [46]परन्तु उसने कहा, "तुम व्यवस्थापकों पर भी हाय! क्योंकि तुम मनुष्यों को ऐसे बोझ से दबाते हो जिन्हें उठाना कठिन है, जब कि तुम स्वयं उन बोझों को एक उंगली से भी छूना नहीं चाहते। [47]तुम पर हाय! क्योंकि तुम उन नबियों *की कब्रें बनाते हो जिन्हें तुम्हारे ही बाप-दादों ने मार

38 *यूनानी भाषा में, बपतिस्मा नहीं लिया 45 *अर्थात्, मूसा की व्यवस्था में दक्ष 47 *या, के स्मारक

डाला था। [48]फलस्वरूप तुम ही साक्षी हो और अपने बाप-दादों के कार्यों में सहमत हो, क्योंकि उन्होंने तो उन्हें मार डाला था और तुमने उनकी कब्रें बनाईं। [49]इसी कारण परमेश्वर की बुद्धि ने भी कहा, 'मैं उनके पास नवियों और प्रेरितों को भेजूंगी, उनमें से कुछ को तो वे मार डालेंगे और कुछ को सताएंगे, [50]जिससे कि सृष्टि के आरम्भ से जितने नवियों का लहू बहाया गया है, उसका लेखा इस पीढ़ी के लोगों से लिया जाए, [51]अर्थात् हाबिल के लहू से लेकर ज़करयाह के लहू तक का लेखा जिसकी हत्या परमेश्वर के भवन और वेदी के मध्य में की गई थी। हाँ, मैं कहता हूँ कि इसी पीढ़ी के लोगों से लेखा लिया जाएगा। [52]हे *व्यवस्थापको, तुम पर हाय! क्योंकि तुमने ज्ञान की कुंजी छीन ली है! तुमने तो स्वयं प्रवेश नहीं किया और जो प्रवेश कर रहे थे उन्हें भी रोका।"

[53]जब वह वहाँ से चल दिया तो फरीसी और शास्त्री कड़ा विरोध करते हुए बहुत से विषयों पर उससे सूक्ष्म रूप से प्रश्न करने लगे, [54]और उसके विरोध में षड्यन्त्र रचने लगे कि उसके मुंह की कोई बात से उसे फँसाएं।

निर्भीकता की शिक्षा

12 ऐसी परिस्थिति में जब हज़ारों की भीड़ एकत्रित हो गई थी, यहाँ तक कि वे एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे, तो सबसे पहिले उसने अपने चेलों से कहना प्रारम्भ किया, "फरीसियों के खमीर से जो उनका कपट है, सावधान रहना। [2]कुछ भी ढंपा नहीं जो खोला न जाएगा, और न कुछ छिपा है जो जाना न जाएगा। [3]इसलिए जो कुछ तुमने अंधियारे में कहा वह उजियाले में सुना जाएगा और जो कुछ तुमने भीतर के कमरों में *फुसफुसा कर कहा वह छत पर से प्रचार किया जाएगा। [4]हे मेरे मित्रो, मैं तुमसे कहता हूँ, उनसे मत डरो जो शरीर को घात करते हैं पर इसके पश्चात् और कुछ नहीं कर सकते। [5]मैं तुम्हें चेतावनी देकर कहता हूँ कि किस से डरना चाहिए: उसी से डरो जिसको मारने के पश्चात् यह अधिकार है कि *नरक में डाले; हां, मैं कहता हूँ कि उसी से डरो! [6]क्या दो *पैसे में पांच गौरैय्या नहीं बिकतीं? फिर भी परमेश्वर उनमें से किसी एक को भी नहीं भूलता। [7]वास्तव में तुम्हारे सिर के सारे बाल भी गिने हुए हैं। मत डरो। तुम बहुत सी गौरैय्यों से भी बढ़कर मूल्यवान हो। [8]मैं तुमसे कहता हूँ जो मनुष्यों के सामने मुझे स्वीकार करेगा, मनुष्य का पुत्र भी उसे परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने स्वीकार करेगा। [9]परन्तु जो मनुष्यों के सामने मुझे अस्वीकार करता है, उसे भी परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने अस्वीकार किया जाएगा। [10]मनुष्य के पुत्र के विरोध में जो एक भी शब्द कहे, उसका अपराध क्षमा कर दिया जाएगा परन्तु जो पवित्र आत्मा की निन्दा करता है, उसका अपराध क्षमा नहीं किया जाएगा। [11]जब वे तुम्हें आराधनालयों, शासकों और अधिकारियों के समक्ष ले जाएं तो इस बात की चिन्ता न करना कि अपने बचाव में तुम्हें कैसे और क्या उत्तर देना चाहिए, या क्या कहना चाहिए; [12]क्योंकि पवित्र आत्मा तुम्हें उसी [illegible]

52 *अर्थात्, मूसा की व्यवस्था में दक्ष   3 *अक्षरशः, कान में   5 *यूनानी, [illegible]
6 *यूनानी, 'आसारिया', अर्थात् तांबे का सबसे छोटा सिक्का

सिखाएगा कि क्या कहना चाहिए।"

धनी मूर्ख का दृष्टान्त

[13]भीड़ में से किसी ने उस से कहा, "हे गुरु, मेरे भाई से कह कि पिता की सम्पत्ति का मेरे साथ बटवारा करे।" [14]परन्तु उसने उस से कहा, "हे मनुष्य, किसने मुझे तुम्हारा न्यायी या बटवारा करने वाला नियुक्त किया है?" [15]उसने उनसे कहा, "सावधान, हर प्रकार के लोभ से सतर्क रहो क्योंकि सम्पत्ति की अधिकता होने पर भी किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति पर निर्भर नहीं होता।" [16]तब उसने उनसे एक दृष्टान्त कहा: "किसी धनवान पुरुष की भूमि में बहुत अधिक उपज हुई। [17]वह अपने मन में यह विचार करने लगा, 'मैं क्या करूँ, क्योंकि मेरे पास अपनी उपज रखने के लिए स्थान नहीं?' [18]उसने कहा, 'मैं ऐसा करूँगा कि अपनी बखारियों को तोड़कर बड़ी बखारियां बनाऊँगा और उन्हीं में अपना सारा अनाज और सम्पत्ति रखूँगा। [19]तब मैं अपने प्राण से कहूँगा, "हे मेरे प्राण, तेरे पास बहुत वर्षों के लिए बहुत-सी सम्पत्ति रखी है। चैन कर, खा-पी और आनन्द मना"।' [20]परन्तु परमेश्वर ने उस से कहा, 'हे मूर्ख! आज ही रात *तेरा प्राण तुझसे ले लिया जाएगा; तब जो कुछ तू ने इकट्ठा किया है वह किसका होगा?' [21]ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिए तो धन संचित करता है पर परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं।"

अनुचित चिन्ता मत करो

[22]फिर उसने अपने चेलों से कहा, "इस कारण मैं तुमसे कहता हूँ, अपने *जीवन के लिए यह कहकर चिन्ता न करो कि हम क्या खाएंगे; न अपने शरीर के लिए चिन्ता करो कि क्या पहिनेंगे। [23]क्योंकि जीवन, भोजन से और शरीर, वस्त्र से बढ़कर है। [24]कौवों पर ध्यान दो क्योंकि वे न बोते, न काटते हैं, और न उनके पास भण्डार-गृह, न बखारियां हैं; फिर भी परमेश्वर उन्हें खिलाता है। तुम तो पक्षियों से कहीं अधिक मूल्यवान हो! [25]तुममें कौन ऐसा है जो चिन्ता करके अपने जीवन की अवस्था में एक *घड़ी भी बढ़ा सकता है? [26]अत: यदि तुम छोटे से छोटा कार्य भी नहीं कर सकते तो अन्य बातों की चिन्ता क्यों करते हो? [27]सोसन के पौधों पर ध्यान लगाओ कि *वे कैसे बढ़ते हैं; वे न तो परिश्रम करते, न कातते हैं; परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि सुलैमान भी अपने सारे वैभव में इनमें से किसी एक के समान वस्त्र नहीं पहिने था। [28]अत: यदि परमेश्वर मैदान की घास को जो आज है और कल भट्ठी में झोंक दी जाएगी इस प्रकार पहिनाता है, तो हे अल्प-विश्वासियो वह तुम्हें और भी क्यों न पहिनाएगा! [29]इस बात की खोज में मत रहो कि क्या खाएंगे और क्या पिएंगे; न इनकी चिन्ता में ही लगे रहो; [30]क्योंकि पृथ्वी की जातियां तत्परता से इन सब बातों की खोज में रहती हैं। पर तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें इन वस्तुओं की आवश्यकता है। [31]अत: उसके राज्य की खोज करो और ये वस्तुएं भी तुम्हें दे दी जाएंगी। [32]हे छोटे झुण्ड, मत डर! क्योंकि तुम्हारे पिता ने प्रसन्नतापूर्वक तुम्हें राज्य देना चाहा है। [33]अपनी सम्पत्ति बेचकर

---

20 *अक्षरश:, ये तेरे प्राण तुझ से मांगते हैं। 22 *या, प्राण 25 *या, हाथ 27 *कुछ [illegible] में यह वाक्य नहीं मिलता: ये कैसे बढ़ते हैं

दान कर दो। अपने लिए ऐसे बटुए बनाओ जो फटते नहीं अर्थात् समाप्त न होने वाला धन स्वर्ग में इकट्ठा करो, जहाँ न तो चोर उसके निकट आता है और न उसे कीड़ा बिगाड़ता है। [34]क्योंकि जहाँ तुम्हारा धन है वहीं तुम्हारा मन भी लगा रहेगा!

जागते रहो

[35]"तुम्हारी कमर कसी रहें और तुम्हारे दीपक जलते रहें। [36]उन मनुष्यों के समान बनो जो अपने स्वामी की, जब वह ब्याह के भोज से लौटकर आता हो, बाट जोहते रहते हैं कि जब वह आकर द्वार खटखटाए तो तुरन्त खोल दें। [37]धन्य हैं वे दास जिन्हें स्वामी आकर सतर्क पाए; मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि वह अपनी कमर कसकर उनकी सेवा करेगा और उन्हें भोजन करने बैठाएगा और स्वयं आकर परोसेगा। [38]चाहे वह *रात को बारह बजे या †प्रातः तीन बजे आए पर उन्हें सतर्क पाए तो वे दास धन्य हैं। [39]यह निश्चय जानो कि यदि गृह-स्वामी जानता कि चोर किस समय आएगा, तो वह अपने घर में सेंध न लगने देता। [40]तुम भी तैयार रहो। क्योंकि मनुष्य का पुत्र उस घड़ी आ रहा है जिसके विषय में तुम सोचते भी नहीं हो।"

[41]तब पतरस ने कहा, "हे प्रभु, क्या तू यह दृष्टान्त केवल हम से ही कह रहा है या सब लोगों से?" [42]प्रभु ने कहा, "ऐसा विश्वासयोग्य और समझदार भण्डारी कौन है जिसे उसका स्वामी अपने *सेवकों के ऊपर अधिकारी नियुक्त करे कि वह उन्हें ठीक समय पर भोजन-सामग्री दे? [43]धन्य है वह दास, जिसे उसका स्वामी जब आए तो ऐसा ही करते पाए। [44]मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि वह उसे अपनी समस्त सम्पत्ति पर अधिकारी नियुक्त करेगा। [45]परन्तु यदि वह दास अपने मन में यह कहे, 'मेरा स्वामी बड़ी देर से आएगा,' और दास और दासियों को मारने-पीटने लगे और खाने-पीने में लगा रहकर नशे में चूर रहने लगे, [46]तो उस दास का स्वामी उस दिन जब वह प्रतीक्षा नहीं करता हो और उस घड़ी जिसे वह नहीं जानता, आएगा और कठोर दण्ड देकर उसका स्थान अविश्वासियों के साथ ठहराएगा। [47]परन्तु वह दास, जो अपने स्वामी की इच्छा को जानता तो था पर जिसने तैयार होकर उसकी इच्छा के अनुसार कार्य नहीं किया, बहुत कोड़े खाएगा। [48]परन्तु जो यह न जानकर कोड़े खाने के योग्य कार्य करे उसे कम मार पड़ेगी। प्रत्येक जिसे बहुत दिया गया है उस से बहुत मांगा जाएगा; और जिसे बहुत सौंपा गया है, उस से वे और भी अधिक मांगेंगे।

शान्ति नहीं फूट

[49]"मैं पृथ्वी पर आग लगाने आया हूँ और *मेरी बड़ी इच्छा है कि वह अभी सुलग जाती। [50]परन्तु *मुझे एक बपतिस्मा लेना है, और जब तक वह पूरा न हो जाए मैं कैसी दुविधा में पड़ा हूँ! [51]क्या तुम सोचते हो कि मैं पृथ्वी पर मेल कराने आया हूँ! मैं तुमसे कहता हूँ, नहीं, वरन् फूट डालने आया हूँ। [52]क्योंकि अब से जिस घर में पांच सदस्य हों उनमें परस्पर विरोध होगा; तीन, दो के

38 *अक्षरशः, दूसरे पहर †तीसरे पहर 42 *अक्षरशः, सेवा 49 *अक्षरशः, मैं क्या यदि . . . 50 *अक्षरशः, बपतिस्मा लेने को मेरा एक बपतिस्मा है

और दो, तीन के। [53]वे एक दूसरे के विरोधी होंगे, पिता, पुत्र का और पुत्र, पिता का। मां, बेटी की और बेटी, मां की; सास, बहू की और बहू, सास की विरोधी होगी।"

समय के लक्षण

[54]उसने भीड़ से भी कहा, "जब तुम पश्चिम की ओर बादल उठते देखते हो तो शीघ्र कहते हो कि वर्षा होगी और ऐसा ही होता है। [55]जब तुम दक्षिणी हवा चलते देखते हो तो कहते हो, 'बड़ी गर्मी पड़ेगी,' और ऐसा ही होता है। [56]हे पाखण्डियो, तुम धरती और आकाश के स्वरूप की व्याख्या करना जानते हो परन्तु इस वर्तमान युग की व्याख्या क्यों नहीं करते? [57]और तुम स्वयं यह निर्णय क्यों नहीं करते कि उचित क्या है? [58]जब तू अपने वादी के साथ न्यायाधीश के सामने उपस्थित होने जाए तो मार्ग में ही इसके साथ समझौता करने का प्रयत्न कर, ऐसा न हो कि वह तुझे न्यायाधीश के सम्मुख घसीट कर ले जाए और न्यायाधीश तुझे सिपाही के हाथ सौंपे और सिपाही तुझे बन्दीगृह में डाल दे। [59]मैं तुझसे कहता हूँ कि जब तक तू *पाई-पाई न चुका दे, वहाँ से छूटने न पाएगा।"

पश्चात्ताप या विनाश

13 उसी समय वहाँ कुछ लोग उपस्थित थे जिन्होंने उसे उन गलीलियों के विषय बताया जिनका लहू पिलातुस ने उन्हीं के बलिदानों के साथ मिलाया। [2]उसने उत्तर देते हुए उनसे कहा, "क्या तुम समझते हो कि ये गलीली अन्य सब गलीलियों से अधिक पापी थे कि उनकी यह दशा हुई? [3]मैं तुमसे कहता हूँ नहीं! परन्तु जब तक तुम मन न फिराओ तुम सब भी इसी प्रकार नाश हो जाओगे। [4]या, तुम समझते हो कि वे अठारह व्यक्ति जिन पर शिलोह का गुम्मट गिरा और दबकर मर गए, यरूशलेम में रहने वालों से अधिक *अपराधी थे? [5]मैं कहता हूँ, नहीं, परन्तु जब तक तुम मन न फिराओ तुम सब भी इसी प्रकार नाश हो जाओगे।"

[6]वह यह दृष्टान्त कहने लगा: "किसी मनुष्य ने अंगूर की बारी में एक अंजीर का पेड़ भी लगाया हुआ था; वह इसमें फल ढूँढ़ने आया पर उसे कुछ न मिला। [7]तब उसने माली से कहा, 'देख, मैं तीन वर्षों से इस अंजीर के पेड़ में फल ढूँढ़ता रहा हूँ पर कुछ नहीं पाता। इसे काट डाल। यह भूमि को व्यर्थ क्यों घेरे रहे?' [8]उसने उसको उत्तर दिया, 'स्वामी, इस वर्ष भी इसे रहने दे, मैं इसके चारों ओर खोदकर खाद डालूँगा। [9]अगले वर्ष यदि यह फल दे तो ठीक है, अन्यथा इसे काट डालना'।"

सब्त के दिन कुबड़ी स्त्री की चंगाई

[10]वह सब्त के दिन एक आराधनालय में उपदेश दे रहा था। [11]देखो, वहाँ एक स्त्री थी जिसको अठारह वर्ष से एक दुष्टात्मा ने रोग-ग्रस्त कर रखा था; उसकी कमर मुड़कर दुहर गई थी और वह किसी प्रकार सीधी नहीं हो सकती थी। [12]जब यीशु ने उसे देखा तो अपने पास बुलाकर उससे कहा, "हे नारी, तू अपने रोग से मुक्त हो गई है।" [13]तब उसने उस पर हाथ रखा; वह तुरन्त ही सीधी हो गई और परमेश्वर की महिमा करने लगी। [14]तब आराधनालय का

*यूनानी, लेप्तौन, अर्थात् देनारियुस का एक सौ अट्ठाइसवां हिस्सा

4 *अक्षरशः, ऋणी

अधिकारी इस बात से क्रुद्ध होकर कि यीशु ने सब्त के दिन रोगी को चंगा किया, भीड़ से कहने लगा, "छः दिन हैं जिनमें काम करना चाहिए, अतः उन्हीं दिनों आकर चंगे होओ पर सब्त के दिन नहीं।" [15]पर प्रभु ने उत्तर दिया, "हे पाखण्डियो, क्या तुम में से प्रत्येक व्यक्ति सब्त के दिन अपने बैल या गदहे को थान से खोलकर पानी पिलाने नहीं ले जाता? [16]यह स्त्री तो इब्राहीम की बेटी है जिसे शैतान ने अठारह वर्षों की लम्बी अवधि तक बांध रखा था। इसे इस बन्धन से छुड़ाया जाना क्या सब्त के दिन आवश्यक नहीं?" [17]जब उसने यह कहा तो उसके सब विरोधी लज्जित हुए और सारी भीड़ महिमा के उन सब कामों से जो उसके द्वारा किए जाते थे, आनन्दित हुई।

राई के दाने और खमीर का दृष्टान्त

[18]अतः उसने कहा, "परमेश्वर का राज्य किसके समान है? और मैं उसकी तुलना किस से करूं? [19]वह राई के एक दाने के समान है, जिसे एक मनुष्य ने अपनी बारी में बोया। वह बढ़कर पेड़ बन गया। और आकाश के पक्षियों ने उसकी डालियों पर बसेरा किया।"

[20]फिर उसने कहा, "मैं परमेश्वर के राज्य की तुलना किससे करूँ? [21]वह उस खमीर के समान है जिसे एक स्त्री ने लेकर तीन *पसेरी आटे में मिला दिया और सारा आटा खमीरा हो गया।"

सकरा मार्ग

[22]वह यरूशलेम जाते हुए नगर-नगर और गांव-गांव में उपदेश करता हुआ जा रहा था, [23]तब किसी ने उससे कहा, "हे प्रभु, क्या उद्धार पाने वाले थोड़े ही हैं?" उसने उनसे कहा, [24]"सकरे द्वार से भीतर जाने का यत्न करो, क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि वहुत से हैं जो प्रवेश करने का यत्न तो करेंगे पर सफल न होंगे। [25]एक वार जब गृह-स्वामी उठकर द्वार वन्द कर देता है और तुम वाहर खड़े हुए, द्वार खटखटा कर कहते हो, 'हे स्वामी, हमारे लिए खोल दे!' तव वह तुमसे कहेगा, 'मैं नहीं जानता कि तुम कहां से आए हो।' [26]जब तुम कहने लगोगे, 'हमने तेरे सामने खाया-पिया और तू ने हमारी गलियों में उपदेश दिया।' [27]तव वह कहेगा, 'मैं कहता हूँ कि मैं नहीं जानता कि तुम कहाँ से आए हो। हे सब कुकर्मियो, मुझसे दूर हो जाओ!' [28]जब तुम इब्राहीम, इसहाक, याकूब और सब नवियों को तो परमेश्वर के राज्य में, पर अपने आप को वाहर निकाले हुए देखोगे, तो वहां रोना और दांत पीसना होगा। [29]पूर्व और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से परमेश्वर के राज्य में आकर लोग भोज में भाग लेंगे। [30]और देखो, कुछ अन्तिम हैं जो प्रथम होंगे और कुछ प्रथम हैं जो अन्तिम होंगे।"

यरूशलेम के लिए विलाप

[31]ठीक उसी समय कुछ फरीसी आकर उससे कहने लगे, "यहां से निकल जा, क्योंकि हेरोदेस तुझे मार डालना चाहता है।" [32]उसने उनसे कहा, "उस लोमड़ी से जाकर कहो कि मैं आज और कल दुष्टात्माओं को निकालता और रोगियों को चंगा करता हूँ और तीसरे दिन *अपना लक्ष्य पूरा करूँगा। [33]फिर भी मुझे आज, कल और परसों यात्रा करना आवश्यक

21 *यूनानी, साता (एक सातोन लगभग 10.91 लीटर)

32 *या, मैं सिद्ध हो जाऊंगा

है; क्योंकि यह नहीं हो सकता कि कोई नवी यरूशलेम से वाहर मारा जाए। [34]हे यरूशलेम, हे यरूशलेम, वह नगरी जो नवियों को मार डालती है और जो तेरे पास भेजे गए हैं उन्हें पत्थरवाह करती है! कितनी वार मैंने चाहा कि जिस प्रकार मुर्गी अपने वच्चों को अपने पंखों तले इकट्ठा करती है, तेरे वच्चों को इकट्ठा करूँ, पर तू ने यह नहीं चाहा! [35]देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिए *उजड़ा पड़ा है और मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम मुझे उस समय तक नहीं देखोगे जव तक यह नहीं कहोगे कि 'धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है'!"

फरीसी के घर में यीशु

14 फिर ऐसा हुआ कि सव्त के दिन, जव वह फरीसियों के किसी *अधिकारी के घर रोटी खाने गया तो वे उसकी घात में लगे थे। [2]वहीं उसके सामने एक मनुष्य था जो जलन्धर रोग से पीड़ित था। [3]यीशु ने *व्यवस्थापकों और फरीसियों से कहा, "सव्त के दिन चंगाई करना उचित है या नहीं?" [4]पर वे चुपचाप रहे। उसने उसे हाथ से पकड़कर चंगा किया और जाने दिया। [5] उसने कहा, "तुम्हारा *वेटा या वैल कुएं में गिर जाए तो तुम में से ऐसा कौन है कि वह उसे सव्त के दिन ही तुरन्त वाहर निकाल न ले?" [6]वे इस प्रश्न का कोई उत्तर न दे सके। [7]जब उसने देखा कि अतिथिगण किस प्रकार अपने लिए सम्मानित स्थान चुन रहे हैं तो वह उनसे एक दृष्टान्त कहने लगा: [8]"जव कोई तुझे विवाह के भोज में वुलाए तो सम्मानित स्थान पर न *वैठना, कहीं ऐसा न हो कि उसने तुझसे अधिक सम्मानित पुरुष को आमन्त्रित किया हो, [9]और वह जिसने तुम दोनों को आमन्त्रित किया, आकर तुझसे कहे 'उसे *वैठने दे।' तव अपमानित होकर तुझे अन्तिम स्थान पर वैठना पड़े। [10]पर जव तू आमन्त्रित किया जाए तो जाकर नीचे स्थान पर वैठना जिस से वह जिसने तुझे आमन्त्रित किया आकर तुझ से कहे, 'मित्र, आगे वढ़कर वैठ।' तव उन सव की दृष्टि में जो तेरे साथ *वैठे हों, तू सम्मानित होगा। [11]क्योंकि प्रत्येक जो अपने आप को ऊंचा करता है, वह नीचा किया जाएगा; और वह जो अपने आप को दीन करेगा सम्मानित किया जाएगा।"

[12]तव जिसने उसे आमन्त्रित किया था, उसने उस से कहा, "जव तू किसी को दिन या रात का भोज दे तो अपने मित्रों, भाइयों, सम्वन्धियों अथवा धनी पड़ोसियों को न वुला, कहीं ऐसा न हो कि वे भी तुझे वदले में वुलाएं और तुझे वदला मिल जाए। [13]परन्तु जव तू भोज करे तो कंगालों, टुण्डों, लंगड़ों और अंधों को आमन्त्रित कर। [14]तव तू आशीषित होगा क्योंकि उनके पास कोई ऐसा साधन नहीं कि तुझे वदला दें, परन्तु धर्मियों के जी उठने पर तुझे प्रतिफल मिलेगा।"

बड़े भोज का दृष्टान्त

[15]तव उसके साथ भोजन करने वालों में से एक ने यह सुनकर उस से कहा, "धन्य है वह जो परमेश्वर के राज्य में रोटी खाएगा!" [16]परन्तु उसने उस से कहा, "किसी व्यक्ति ने एक वड़ा भोज किया और उसने वहुत लोगों को

35 *यह शब्द वात के कुछ हस्तलेखों में जोड़ा गया है
1 *अर्थात्, सन्हेद्रयोन सभा का सदस्य
3 *मूसा की व्यवस्था में दक्ष
5 *कुछ हस्तलेखों में, गधा
8 *अक्षरशः, लेटना
*अक्षरशः, जगह
10 *अक्षरशः, लेटना, लेटे

आमन्त्रित किया। [17]भोज तैयार होने पर उसने अपने दास को आमन्त्रित लोगों से यह कहने भेजा: 'आओ, सब कुछ तैयार हो गया है।' [18]परन्तु वे सब के सब क्षमा मांगने लगे। पहिले ने उस से कहा, 'मैंने एक खेत मोल लिया है, अतः जाकर उसे देखना आवश्यक है; *कृपा कर के मुझे क्षमा कर दे।' [19]दूसरे ने कहा, 'मैंने पांच जोड़ी बैल मोल लिए हैं, मुझे उनको परखने जाना है; *कृपा करके मुझे क्षमा कर दे।' [20]फिर एक और ने कहा, 'मैंने ब्याह किया है, अतः मैं नहीं जा सकता।' [21]दास ने आकर अपने स्वामी को ये बातें बताईं। तब गृह-स्वामी ने क्रुद्ध होकर दास से कहा, 'शहर के गली-कूचों में जाकर शीघ्र कंगालों, टुण्डों, अंधों और लंगड़ों को यहाँ ले आ।' [22]दास ने फिर कहा, 'स्वामी, तेरी आज्ञा के अनुसार किया गया पर अभी भी स्थान बचा है।' [23]तब स्वामी ने कहा, 'राजमार्गों और बाड़ों की ओर जाकर लोगों को आने के लिए विवश कर कि मेरा घर भर जाए। [24]क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि जो आमन्त्रित किए गए थे, उनमें से कोई भी मेरे भोज को नहीं चखेगा'।"

चेले बनने का मूल्य

[25]जब एक भीड़ उसके साथ जा रही थी, उसने मुड़कर लोगों से कहा, [26]"यदि कोई मेरे पास आए और अपने पिता, माता, पत्नी, बच्चों तथा भाई-बहिनों को, यहां तक कि अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, वह मेरा चेला नहीं हो सकता। [27]जो कोई अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे नहीं चलता, वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता। [28]क्योंकि तुम में से कौन ऐसा है जो गढ़ बनाना चाहता हो पर पहिले बैठकर हिसाब न लगा ले कि मेरे पास पूरा करने के लिए पर्याप्त है या नहीं? [29]अन्यथा जब वह नींव डाल ले और उसे पूरा न कर सके तो वे जो उसे देख रहे हों उसे ठट्ठों में उड़ाने लगेंगे, [30]और कहेंगे, 'उस मनुष्य ने बनाना तो आरम्भ किया पर पूरा न कर सका।' [31]या, कौन ऐसा राजा होगा जो दूसरे राजा से युद्ध करने जाता हो पर पहिले बैठकर परामर्श न कर ले कि बीस हज़ार सैनिकों को लेकर जो राजा उस पर आक्रमण करने आ रहा है, उसका सामना वह दस हज़ार सैनिकों से कर सकता है या नहीं? [32]अन्यथा उसके दूर रहते ही वह दूतों को भेजकर संधि की शर्तों के विषय में पूछेगा। [33]इसी प्रकार तुम में से कोई मेरा चेला नहीं हो सकता जब तक कि वह अपनी सारी सम्पत्ति को त्याग न दे। [34]नमक तो अच्छा है, परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए तो वह किस वस्तु से स्वादिष्ट किया जाएगा? [35]न तो वह भूमि के और न ही खाद के काम में आता है, वरन् लोग उसे बाहर फेंक देते हैं। जिसके सुनने के कान हों वह सुन ले।"

खोई हुई भेड़ का दृष्टान्त

15 सब चुंगी लेने वाले और पापी उसके निकट आ रहे थे कि उसकी सुनें। [2]तब फरीसी और शास्त्री कुड़कुड़ा कर कहने लगे, "यह मनुष्य पापियों के साथ मिलता जुलता है और उनके साथ खाता भी है।"

[3]तब उसने उनसे यह दृष्टान्त कहा: [4]"तुम में से कौन ऐसा मनुष्य है जिसके पास सौ भेड़ें हों और उनमें से एक खो

18 *अक्षरशः, मैं तुझ से निवेदन करता हूं कि . . .

जाए, तो निन्यानवे को खुले चरागाह में छोड़कर, उस खोई हुई को तब तक ढूंढ़ता न रहे जब तक वह मिल नहीं जाती? [5]जब वह उसे पा लेता है तो बड़े आनन्द से कंधे पर उठा लेता है। [6]घर पहुँचने पर वह अपने मित्रों और पड़ोसियों को इकट्ठा करके कहता है, मेरे साथ मिलकर आनन्द मनाओ क्योंकि मुझे मेरी खोई भेड़ मिल गई है!' [7]मैं तुमसे कहता हूँ कि इसी प्रकार स्वर्ग में भी उन निन्यानवे धर्मियों से, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं, मन फिराने वाले एक पापी के लिए बढ़ कर आनन्द मनाया जाएगा।

खोए हुए सिक्के का दृष्टान्त

[8]"या ऐसी कौन स्त्री होगी जिसके पास *चांदी के दस सिक्के हों और एक खो जाए तो वह दीया जलाकर और घर को झाड़-बुहार कर तब तक सावधानी से ढूँढ़ती न रहे जब तक वह मिल न जाए? [9]जब वह पा लेती है तो अपनी सहेलियों और पड़ोसियों को इकट्ठा कर के कहती है, 'मेरे साथ आनन्द मनाओ क्योंकि मैंने उस खोए हुए सिक्के को पा लिया है!' [10]मैं तुम से कहता हूँ कि इसी प्रकार एक मन फिराने वाले पापी के लिए भी परमेश्वर के स्वर्गदूतों की उपस्थिति में आनन्द मनाया जाता है।"

खोए हुए पुत्र का दृष्टान्त

[11]फिर उसने कहा, "किसी मनुष्य के दो पुत्र थे: [12]और उनमें से जो छोटा था, उसने पिता से कहा, 'हे पिता, सम्पत्ति का वह भाग जो मेरे हिस्से में आता है मुझे दे दे।' उसने अपनी *धन-सम्पत्ति उनमें बांट दी। [13]बहुत दिन न बीते कि छोटा सब कुछ एकत्रित कर के दूर देश को चल पड़ा जहां उसने अपनी सम्पत्ति कुकर्म में उड़ा दी। [14]जब वह सब कुछ उड़ा चुका तो उस देश में भयंकर अकाल पड़ा और वह दरिद्र हो गया। [15]और वह जाकर उस देश के एक नागरिक के यहाँ काम में लग गया। उसने उसे खेत में सुअर चराने भेजा। [16]उसे बड़ी उत्कंठा हुई कि वह उन फलियों से जो सुअर खा रहे थे अपना पेट भरे; और उसे कोई कुछ नहीं देता था। [17]परन्तु जब वह होश में आया तो उसने कहा, 'मेरे पिता के कितने ही मज़दूरों को पेट भर भोजन मिलता है पर मैं यहां भूखों मर रहा हूं! [18]मैं उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उस से कहूँगा, "हे पिता, मैंने स्वर्ग के विरोध में और *तेरी दृष्टि में पाप किया है। [19]मैं अब तेरा पुत्र कहलाने के योग्य न रहा; मुझे अपना एक मज़दूर समझकर रख ले"!' [20]वह उठकर अपने पिता के पास चला आया। परन्तु जब वह अभी दूर ही था, उसके पिता ने उसे देखा और उस पर तरस खाया, अतः उसने दौड़ कर उसे गले लगाया और चूमा। [21]पुत्र ने उस से कहा, 'हे पिता, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है, मैं अब तेरा पुत्र कहलाने के योग्य न *रहा।' [22]परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा, 'अच्छे से अच्छा वस्त्र शीघ्र निकाल लाओ और उसे पहिनाओ और उसके हाथ में अंगूठी, पांव में जूतियां पहिनाओ, [23]और एक मोटा बछड़ा लाकर काटो कि हम खाएं और आनन्द मनाएं। [24]क्योंकि मेरा यह पुत्र

---

8 *यूनानी द्राख्मा (एक द्राख्मा लगभग एक दिन की मज़दूरी होती थी)
12 *अक्षरशः, जीविका
21 *कुछ हस्तलेखों में यह भी जुड़ा है: मुझे अपने एक नौकर की तरह रख ले

मर गया था, अब जीवित हो गया है; वह खो गया था, अब मिल गया है।' और वे आनन्द मनाने लगे। 25उसका ज्येष्ठ पुत्र तो खेत में था। जब वह आकर घर के निकट पहुँचा, उसने गाने-बजाने व नाचने का शब्द सुना। 26उसने एक दास को बुलाकर उससे पूछा कि यह सब क्या हो रहा है? 27उसने उससे कहा, 'तेरा भाई आया है, और इसलिए कि तेरे पिता ने उसे भला चंगा पाया है, मोटा बछड़ा कटवाया है।' 28पर वह क्रोधित हुआ और भीतर जाना नहीं चाहता था। इस पर उसका पिता बाहर आकर उसे मनाने लगा। 29परन्तु उसने अपने पिता को उत्तर दिया, 'देख, मैं इतने वर्षों से तेरी सेवा कर रहा हूँ और मैंने कभी तेरी एक भी आज्ञा नहीं टाली, परन्तु तूने मुझे कभी भी एक बकरी का बच्चा तक नहीं दिया कि मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द मनाऊँ। 30पर जब तेरा यह पुत्र आया जिसने तेरी सारी *सम्पत्ति वेश्याओं में उड़ा दी, तू ने उसके लिए मोटा बछड़ा कटवाया!' 31उसने उस से कहा, 'मेरे पुत्र, तू सदा मेरे साथ रहा है और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा है। 32परन्तु हमें अब आनन्द मनाना व मगन होना है क्योंकि तेरा यह भाई मर गया था, अब जीवित हो गया है; और खो गया था, अब मिल गया है'।"

चालाक प्रबन्धक

16 फिर वह चेलों से भी कह रहा था, "किसी धनवान मनुष्य का एक भण्डारी था और उस भण्डारी के सम्बन्ध में उसे बताया गया था कि वह उसकी सारी सम्पत्ति उड़ा रहा है। 2उसने उसे बुलाकर कहा, 'यह क्या बात है जो मैं तेरे विषय में सुन रहा हूँ? अपने भण्डारीपन का लेखा दे क्योंकि अब तू भण्डारी नहीं रह सकता।' 3तब उस भण्डारी ने मन में सोचा, 'मेरा स्वामी तो भण्डारी का कार्य मुझसे छीन रहा है, अब मैं क्या करूँ? मुझ में अब इतनी शक्ति नहीं कि गड्ढे खोद सकूँ। भीख मांगने से भी मुझे लज्जा आती है। 4मैं समझ गया कि मैं क्या करूँगा जिस से कि जब मैं भण्डारीपन से निकाला जाऊँ तो लोग अपने घरों में मेरा स्वागत करें।' 5तब उसने अपने स्वामी के प्रत्येक देनदार को बुलाया और पहिले से पूछा, 'तुझ पर मेरे स्वामी का कितना ऋण है?' 6उसने कहा, '*तीन हज़ार लीटर तेल,' उसने उस से कहा, 'ले अपना बही खाता और शीघ्र बैठकर †पन्द्रह सौ लिख।' 7तब उसने दूसरे से कहा, 'तू कितने का ऋणी है?' उसने कहा, '*सौ क्विन्टल गेहूँ का,' उसने उस से कहा, 'ले अपना बही खाता और शीघ्र बैठकर अस्सी लिख।' 8तब उसके स्वामी ने उस अधर्मी भण्डारी की सराहना की क्योंकि उसने चतुराई से कार्य किया। क्योंकि इस युग के पुत्र *अपने जैसे लोगों के साथ व्यवहार करने में ज्योति के पुत्रों से अधिक चतुर हैं। 9मैं तुमसे कहता हूँ कि अधर्म के *धन से अपने लिए मित्र बना लो कि जब वह समाप्त हो जाए तो वे तुम्हें अनन्त निवासों में ले लें। 10जो अत्यन्त छोटी सी बात में विश्वासयोग्य है, वह बहुत में भी विश्वासयोग्य है। और जो अत्यन्त छोटी बात में अधर्मी है, वह बहुत में भी अधर्मी है। 11अतः यदि

---

6 *अक्षरशः, 100 बाथ (1 बाथ बराबर लगभग 30 लीटर) †अक्षरशः, 50 7 *यूनानी, [illegible] बराबर लगभग 393 लीटर) 8 *अक्षरशः, अपनी पीढ़ी के 9 *यूनानी, मामोन

अधर्म के *धन में विश्वासयोग्य न रहे तो सच्चा धन तुम्हें कौन सौंपेगा? [12]यदि तुम पराए का धन उपयोग करने में विश्वासयोय न रहे तो जो तुम्हारा अपना है, उसे तुम्हें कौन देगा? [13]कोई भी सेवक दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता। या तो वह एक से घृणा और दूसरे से प्रेम करेगा, या फिर एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और *धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।"

[14]फरीसी जो धन के लोभी थे, उसकी इन सब बातों को सुन रहे थे और उस पर ताना मार रहे थे। [15]उसने उनसे कहा, "तुम ऐसे लोग हो जो मनुष्यों के सामने अपने आप को धर्मी ठहराते हो, परन्तु परमेश्वर तुम्हारे हृदय को जानता है। वह जो मनुष्यों में अति सम्मानित है, परमेश्वर *की दृष्टि में तुच्छ है। [16]यूहन्ना के समय तक तो व्यवस्था और नबियों का प्रचार हुआ। तत्पश्चात् परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया गया और प्रत्येक व्यक्ति उस में बलपूर्वक प्रवेश कर रहा है। [17]परन्तु व्यवस्था के एक बिन्दु के मिट जाने की अपेक्षा स्वर्ग और पृथ्वी का टल जाना सहज है। [18]प्रत्येक जो अपनी पत्नी को त्याग कर दूसरी से विवाह करता है, व्यभिचार करता है। और जो पति द्वारा त्यागी हुई स्त्री से विवाह करता है, तो वह भी व्यभिचार करता है।

धनी मनुष्य और निर्धन लाजर

[19]"एक धनी पुरुष था जो सदा बैंजनी वस्त्र व मलमल पहिना करता था और प्रतिदिन धूमधाम व बड़े सुख-विलास से रहता था। [20]और लाजर नाम का एक कंगाल व्यक्ति घावों से भरा हुआ उसके फाटक पर छोड़ दिया जाता था, [21]उस धनवान पुरुष की मेज़ से जो टुकड़े गिरते थे, उनसे वह पेट भरने को तरसता था। इसके अतिरिक्त कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटा करते थे। [22]ऐसा हुआ कि कंगाल पुरुष मर गया और स्वर्गदूतों ने आकर उसे इब्राहीम की गोद में पहुँचा दिया। वह धनी पुरुष भी मरा और दफ़ना दिया गया। [23]तब *अधोलोक में अत्यन्त पीड़ा में पड़े हुए उसने अपनी आँखें उठाईं और दूर से इब्राहीम को देखा जिसकी गोद में लाजर था। [24]तब उसने पुकारकर कहा, 'हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया कर। लाजर को भेज कि वह अपनी उंगली का सिरा पानी में डुबोकर मेरी जीभ को ठण्डा करे क्योंकि मैं इस ज्वाला में पड़ा तड़प रहा हूँ।' [25]परन्तु इब्राहीम ने कहा, 'हे पुत्र, स्मरण कर कि तू अपने जीवन में सब अच्छी वस्तुएं प्राप्त कर चुका है और इसी प्रकार लाजर बुरी वस्तुएं; पर अब वह यहां शान्ति पा रहा है और तू पीड़ा में पड़ा तड़प रहा है। [26]इसके अतिरिक्त हमारे और तेरे मध्य एक अथाह खाई निर्धारित की गई है कि यहां से यदि कोई उस पार जाना भी चाहे तो न जा सके, और वहां से यदि कोई इस पार हमारे पास आना चाहे तो न आ सके।' [27]उसने कहा, 'हे पिता, तब तो मैं तुझसे विनती करता हूँ कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज दे—[28]क्योंकि मेरे पांच भाई हैं—कि वह उन्हें चेतावनी दे, कहीं ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा के स्थान में आएं।' [29]परन्तु इब्राहीम ने कहा, 'उनके पास मूसा और नबी हैं; वे उनकी ही सुनें।'

11,13 *यूनानी, ममोन   15 *अक्षरशः, के सामने   23 *यूनानी, हादेस

[30]परन्तु उसने कहा, 'हे पिता इब्राहीम, नहीं; यदि मृतकों में से कोई उनके पास लौटकर जाए तो वे मन फिराएंगे।' [31]परन्तु उसने उस से कहा, 'यदि वे मूसा और नबियों की नहीं सुनते तो वे उसकी भी जो मृतकों में से जीवित होकर उनके पास जाए, नहीं सुनेंगे '।"

पाप, विश्वास और कर्त्तव्य

17 फिर उसने अपने चेलों से कहा, "ठोकरों का लगना तो अनिवार्य है। परन्तु हाय उस पर जिसके द्वारा ये लगती हैं! [2]उसके लिए यह अच्छा होता कि उसके गले में चक्की का पाट लटका दिया जाता और वह समुद्र में डाल दिया जाता, अपेक्षा इसके कि वह उन छोटों में से किसी एक को ठोकर खिलाए। [3]सावधान! यदि तेरा भाई पाप करे तो उसे डांट, और यदि वह मन फिराए तो उसे क्षमा कर। [4]यदि वह प्रतिदिन सात बार तेरे विरुद्ध पाप करे और सातों बार आकर तुझसे कहे, 'मैं पश्चात्ताप करता हूं', तो उसे क्षमा कर।"

[5]तब प्रेरितों ने प्रभु से कहा, "हमारा विश्वास बढ़ा।" [6]प्रभु ने कहा, "यदि तुम में राई के दाने के बराबर विश्वास होता और तुम इस शहतूत के पेड़ से कहते, 'उखड़कर समुद्र में लग जा', तो वह तुम्हारी मान लेता। [7]तुम में से कौन ऐसा है जिसका दास हल चलाता और भेड़ों को चराता हो, कि जब दास खेत से लौटकर आए तो वह दास से कहे, 'शीघ्र आ, भोजन करने *बैठ'? [8]क्या वह उस से नहीं कहेगा, 'मेरे खाने के लिए कुछ बना और साफ वस्त्र पहिन तथा जब तक मैं खा-पी न लूँ, मेरी सेवा कर; तत्पश्चात् तू भी खा-पी लेना'? [9]आज्ञाओं का पालन करने के लिए क्या वह अपने दास को धन्यवाद देगा? [10]इसी प्रकार तुम भी जब उन सब आज्ञाओं का पालन कर लो जो तुम्हें दी गई हैं तो कहो, 'हम अयोग्य दास हैं; हमने तो केवल वही किया है जो हमें करना चाहिए था '।"

दस कोढ़ियों का चंगा किया जाना

[11]ऐसा हुआ कि जब वह यरूशलेम को जा रहा था तो सामरिया और गलील के बीच से होकर निकला। [12]ज्यों ही उसने किसी गांव में प्रवेश किया तो दूर खड़े दस कोढ़ी उस से मिले। [13]उन्होंने ऊँची आवाज़ से पुकार कर कहा, "हे यीशु स्वामी, हम पर दया कर!" [14]जब उसने उन्हें देखा तो कहा, "जाकर अपने आप को याजकों को दिखाओ।" और ऐसा हुआ कि जाते जाते वे शुद्ध हो गए। [15]तब उनमें से एक ने जब देखा कि मैं चंगा हो गया हूँ तो ऊँची आवाज़ से परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ लौट आया, [16]और उसे धन्यवाद देते हुए मुंह के बल उसके चरणों पर गिर पड़ा। वह एक सामरी था। [17]इस पर यीशु ने कहा, "क्या दस के दस शुद्ध नहीं हुए थे, तो फिर वे नौ कहां हैं? [18]क्या इस परदेशी के अतिरिक्त और कोई नहीं *रह गया जो लौटकर परमेश्वर को महिमा देता?" [19]उसने उस से कहा, "उठकर चला जा; तेरे विश्वास ने तुझे *चंगा किया है।"

परमेश्वर के राज्य का आगमन

[20]फरीसियों द्वारा यह पूछे जाने पर कि परमेश्वर का राज्य कब आएगा, उसने उन्हें उत्तर दिया, "परमेश्वर के राज्य का

7 *अक्षरशः, लेट 18 *अक्षरशः, पाया 19 *अक्षरशः, बचा लिया

आगमन दृश्य रूप में नहीं होगा। [21]न लोग कहेंगे, 'देखो, वह यहां है।' या 'वहां है।' क्योंकि देखो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे *मध्य है!"

[22]उसने चेलों से कहा, "वे दिन आएंगे जब मनुष्य के पुत्र के दिनों में से एक दिन को देखने की तुम्हें बड़ी उत्कण्ठा होगी और तुम उसे नहीं देखोगे। [23]वे तुम से कहेंगे, 'वहां देखो; यहां देखो;' तुम चले मत जाना और न उनके पीछे भागना। [24]क्योंकि जिस प्रकार बिजली चमक कर आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक कौंधती है, उसी प्रकार मनुष्य का पुत्र भी अपने दिन में आएगा। [25]परन्तु पहिले यह आवश्यक है कि वह बहुत दुःख उठाए और इस पीढ़ी के लोगों द्वारा त्यागा जाए। [26]जैसा नूह के दिनों में हुआ था, वैसा ही मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा। [27]जब तक नूह ने जहाज़ में प्रवेश न किया वे खाते-पीते और शादी-ब्याह करते रहे। तब जल-प्रलय हुआ और सब नष्ट हो गए। [28]लूत के दिनों में भी ऐसा ही हुआ। वे खाते-पीते, लेन-देन करते, पेड़-पौधे लगाते और घर बनाते थे, [29]परन्तु जब लूत सदोम से निकला, उस दिन आकाश से आग और गंधक की वर्षा हुई और वे सब नष्ट हो गए। [30]जिस दिन मनुष्य का पुत्र प्रकट होगा, उस दिन भी ठीक ऐसा ही होगा। [31]उस दिन जो छत पर हो और उसका सामान नीचे घर में हो, वह उसे लेने को न उतरे; और इसी प्रकार वह जो खेत में हो, पीछे न लौटे। [32]लूत की पत्नी को स्मरण करो! [33]जो अपना प्राण बचाने का प्रयत्न करता है, वह उसे खोएगा; और जो उसे खोएगा, वह उसे जीवित रखेगा! [34]मैं तुमसे कहता हूँ, उस रात दो मनुष्य एक चारपाई पर होंगे; एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। [35]दो स्त्रियां एक ही स्थान पर चक्की पीसती होंगी; एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी। [36]*[दो मनुष्य खेत में होंगे; एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा।"] [37]तब उन्होंने उस से पूछा, "हे प्रभु, यह कहाँ होगा?" उसने उनसे कहा, "जहां शव होगा, वहां गिद्ध भी इकट्ठे होंगे।"

विधवा और अधर्मी न्यायाधीश

18 उसने उन्हें यह बताने के लिए कि निराश हुए बिना उनको सदैव प्रार्थना करना चाहिए, यह दृष्टान्त कहा: [2]"किसी नगर में एक न्यायाधीश था जो न तो परमेश्वर से डरता था और न किसी मनुष्य की परवाह करता था। [3]उस नगर में एक विधवा भी रहती थी जो उसके पास बार बार आकर कहती थी, 'मेरा न्याय करके मुझे मुद्दई से बचा।' [4]कुछ समय तक तो उसने उसकी न सुनी। अंत में उसने सोचा, 'यद्यपि मैं परमेश्वर से नहीं डरता और न किसी मनुष्य की परवाह करता हूँ, [5]फिर भी इसलिए कि यह विधवा मुझे तंग करती है मैं उसका न्याय चुकाऊंगा, कहीं ऐसा न हो कि वह लगातार आकर मेरी *नाक में दम कर दे'।" [6]प्रभु ने कहा, "सुनो, इस अधर्मी न्यायाधीश ने क्या कहा। [7]तो क्या परमेश्वर अपने चुने हुओं का न्याय न करेगा जो रात-दिन उसे पुकारते रहते हैं? क्या वह उनके विषय *में देर करेगा? [8]मैं तुमसे कहता हूँ कि वह उनका न्याय

---

21 *या, भीतर
36 *कुछ हस्तलेखों में यह पद नहीं मिलता (मत 24:40 देखिए)
5 *अक्षरशः, आंख के नीचे मार दे
7 *या, धैर्य नहीं रखता है?

शीघ्र करेगा। फिर भी मनुष्य का पुत्र जब आएगा तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?"

फरीसी और कर वसूल करने वाले

[9]उसने उन लोगों से जो इस बात के लिए अपने ऊपर भरोसा रखते थे कि हम धर्मी हैं और जो दूसरों को तुच्छ समझते थे, यह दृष्टान्त कहा: [10]"दो व्यक्ति मन्दिर में प्रार्थना करने गए, उनमें से एक फरीसी था और दूसरा चुंगी लेने वाला। [11]फरीसी खड़ा होकर स्वयं इस प्रकार प्रार्थना करने लगा: 'हे परमेश्वर, मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ कि मैं अन्य लोगों के समान ठग, अन्यायी व व्यभिचारी नहीं हूँ, न इस चुंगी लेने वाले के समान ही हूँ। [12]मैं सप्ताह में दो बार उपवास रखता हूँ और जो कुछ मुझे मिलता है सबका दसवां अंश तुझे देता हूँ।' [13]परन्तु चुंगी लेने वाला कुछ दूर खड़ा था, उसने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाना भी न चाहा, परन्तु छाती पीटते हुए कहा, 'हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर!' [14]मैं तुझसे कहता हूँ कि यह मनुष्य धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया, न कि वह दूसरा मनुष्य। क्योंकि प्रत्येक जो अपने आप को बड़ा बनाता है, दीन किया जाएगा; और जो अपने को दीन बनाता है, बड़ा किया जाएगा।"

बच्चे और यीशु

[15]लोग अपने बच्चों को भी उसके पास ला रहे थे कि वह उन पर हाथ रखे, परन्तु जब चेलों ने देखा तो वे उन्हें झिड़कने लगे! [16]परन्तु यीशु ने पास बुलाकर उनसे कहा, "बच्चों को मेरे पास आने दो, उन्हें मना न करो क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है। [17]मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बच्चे के समान ग्रहण नहीं करता, वह कभी भी उसमें प्रवेश नहीं करेगा।"

धनी नवयुवक

[18]फिर किसी एक अधिकारी ने उस से प्रश्न किया, "हे उत्तम गुरु, अनन्त जीवन पाने के लिए मैं क्या करूँ?" [19]यीशु ने उस से कहा, "तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? परमेश्वर को छोड़ और कोई उत्तम नहीं। [20]तू आज्ञाओं को तो जानता है: '**व्यभिचार न करना, हत्या न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, अपने पिता और माता का आदर करना**'।" [21]उसने कहा, "मैं इनको बचपन से मानता आया हूँ।" [22]जब यीशु ने यह सुना तो उस से कहा, "तुझमें अभी तक एक बात की कमी है: अपनी सारी सम्पत्ति को बेचकर कंगालों को बांट दे तो तेरे पास स्वर्ग में धन होगा, और आकर मेरे पीछे चल।" [23]परन्तु यह सब सुनकर वह बहुत उदास हुआ क्योंकि वह अत्यन्त धनी था। [24]यीशु ने उसकी ओर देखकर कहा, "धनवानों का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है! [25]क्योंकि ऊँट का सुई के छेद में से *निकल जाना किसी धनी व्यक्ति के परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से सहज है।" [26]इस पर सुनने वालों ने कहा, "तो किसका उद्धार हो सकता है?" [27]परन्तु उसने कहा, "जो बातें मनुष्य के लिए असम्भव हैं, वे परमेश्वर के लिए सम्भव हैं।" [28]इस पर पतरस ने कहा, "देख, हम तो अपना *घर-बार छोड़कर

25 *अक्षरशः, प्रवेश करना

28 *अक्षरशः,केवल, अपने, अर्थात् अपनी (वस्तुएं)

तेरे पीछे चल पड़े हैं।" [29]उसने उनसे कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूँ, ऐसा कोई नहीं जिसने अपना घर, पत्नी, भाई, माता-पिता या बच्चों को परमेश्वर के राज्य के लिए छोड़ा हो, [30]और वह इस समय कई गुणा अधिक तथा आने वाले युग में अनन्त जीवन न पाए।"

पुनरुत्थान की भविष्यद्वाणी

[31]तब उसने बारहों को एक ओर ले जाकर उनसे कहा, "देखो, हम यरूशलेम को जा रहे हैं, और मनुष्य के पुत्र के सम्बन्ध में नबियों के द्वारा जो कुछ लिखा गया है, वह सब पूरा होगा। [32]क्योंकि वह गैरयहूदियों के हाथों *में सौंप दिया जाएगा और ठट्ठों में उड़ाया जाएगा। उसके साथ दुर्व्यवहार किया जाएगा और उस पर थूका जाएगा। [33]कोड़े लगाने के पश्चात् वे उसे मार डालेंगे, तब तीसरे दिन वह जी उठेगा।" [34]पर इनमें से कोई बात उनकी समझ में न आई, अत: यह बात उनसे गुप्त रही, और जो बातें कही गई थीं, वे उन्हें समझ न पाए!

अन्धे भिखारी को दृष्टिदान

[35]ऐसा हुआ कि जब वह यरीहो पहुँचने पर था तो एक अंधा, सड़क के किनारे बैठा, भीख मांग रहा था। [36]भीड़ के चलने का शब्द सुनकर वह पूछने लगा कि यह सब क्या हो रहा है? [37]उन्होंने उसे बताया कि यीशु नासरी जा रहा है। [38]उसने पुकारकर कहा, "हे यीशु, दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर!" [39]वे जो मार्ग पर आगे आगे चल रहे थे उसे डांटकर चुप रहने को कह रहे थे, परन्तु वह और भी अधिक चिल्लाता रहा, "दाऊद की सन्तान मुझ पर दया कर!" [40]तब यीशु ने ठहरकर पूछा, [41]"मैं तेरे लिए क्या करूँ?" उसने कहा, "हे प्रभु, यह कि मैं देखने लगूँ।" [42]यीशु ने उस से कहा, "देखने लग; तेरे विश्वास ने तुझे *चंगा किया है।" [43]वह उसी क्षण देखने लगा और परमेश्वर की महिमा करते हुए यीशु के पीछे चल पड़ा। जब सब लोगों ने यह देखा तो उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की।

कर वसूल करने वाला जक्कई

19 वह यरीहो में प्रवेश करके वहां से जा रहा था [2]तो देखो, वहां एक मनुष्य था जिसका नाम जक्कई था। वह चुंगी लेने वालों का प्रमुख था और धनी था। [3]वह यीशु को देखने का प्रयत्न कर रहा था, परन्तु भीड़ के कारण देख नहीं पा रहा था क्योंकि वह नाटा था। [4]तब उसे देखने के लिए वह दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया, क्योंकि यीशु उसी मार्ग से होकर जाने वाला था। [5]जब यीशु उस स्थान पर पहुँचा तो उसने ऊपर देखकर उस से कहा, "जक्कई, शीघ्र नीचे उतर आ क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना है।" [6]और उसने झटपट नीचे उतरकर प्रसन्नतापूर्वक उसका स्वागत किया। [7]जब लोगों ने यह देखा तो वे सब यह कहकर कुड़कुड़ाने लगे : "वह तो एक पापी मनुष्य का अतिथि बनने गया है।" [8]जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा, "प्रभु, देख, मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को दे दूँगा और यदि मैंने किसी से अन्याय करके कुछ भी लिया है तो उसे चौगुना लौटा दूंगा।" [9]यीशु ने उसके लिए कहा, "आज इस घर में

---
32 *या, से पकड़वाया जाएगा

42 *या, बचा लिया

उद्धार आया है, क्योंकि यह मनुष्य भी इब्राहीम का एक पुत्र है। [10]मनुष्य का पुत्र तो खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।"

दस मीना का दृष्टान्त

[11]जब लोग इन बातों को सुन रहे थे, वह एक दृष्टान्त कहने लगा क्योंकि वह यरूशलेम के निकट था और वे सोचते थे कि परमेश्वर का राज्य शीघ्र ही प्रकट होने पर है। [12]इसलिए उसने कहा, "एक कुलीन पुरुष दूर देश को गया कि अपने लिए राज्य पाकर लौट आए। [13]उसने अपने दस दासों को बुलाया और उन्हें दस *मीना दिए और उनसे कहा, 'मेरे लौट आने तक इनसे व्यापार करना।' [14]परन्तु उसके नगरवासी उस से बैर रखते थे अतः उसके पीछे पीछे अपने प्रतिनिधि यह कहने के लिए भेजे: 'हम नहीं चाहते कि यह मनुष्य हम पर राज्य करे।' [15]ऐसा हुआ कि जब वह राज्य पाकर लौटा तो उसने आज्ञा दी कि वे दास जिनको उसने धन दिया था बुलाए जाएं, जिस से उसे मालूम हो जाए कि उन्होंने कैसा व्यापार किया। [16]पहिले ने आकर कहा, 'हे स्वामी, तेरे *मीना ने दस *मीना और कमाए।' [17]उसने उस से कहा, 'हे भले दास, शाबाश! तू बहुत छोटी-सी बात में विश्वासयोग्य निकला, अतः दस नगरों का अधिकारी बन।' [18]फिर दूसरे ने आकर कहा, 'हे स्वामी, तेरे *मीना ने पांच *मीना और कमाए हैं।' [19]उसने उस से कहा, 'तू पांच नगरों का अधिकारी बन।' [20]फिर एक और आकर कहने लगा, 'हे स्वामी, देख तेरा *मीना! इसे मैंने रूमाल में बांधकर रखा है [21]क्योंकि मैं तुझसे डरता था इसलिए कि तू कठोर मनुष्य है। जिसे तू ने नहीं रखा, उसे तू ले लेता; और जिसे तू ने नहीं बोया, उसे तू काटता है।' [22]उसने उस से कहा, 'हे निकम्मे दास, तेरे ही शब्दों से मैं तुझे दोषी ठहराऊँगा। तू तो जानता था कि मैं कठोर मनुष्य हूँ: जिसे मैंने नहीं रखा, उसे उठा लेता हूँ और जिसे नहीं बोया, उसे काटता हूँ। [23]तो तू ने मेरा धन, ब्याज पर क्यों नहीं लगाया कि जब मैं लौटता तो उसे ब्याज सहित ले लेता?' [24]उसने उनसे जो निकट खड़े थे कहा, *'मीना को इस से ले लो और जिसके पास दस हैं, उसे दे दो।' [25]उन्होंने उस से कहा, 'स्वामी, उसके पास तो पहिले से ही दस हैं।' [26]'मैं तुमसे कहता हूँ कि प्रत्येक जिसके पास है, उसे अधिक दिया जाएगा, परन्तु जिसके पास नहीं है, उस से वह भी जो उसके पास है ले लिया जाएगा। [27]परन्तु मेरे उन शत्रुओं को जो नहीं चाहते कि मैं उन पर राज्य करूँ, यहां लाओ और मेरे सामने मार डालो'।"

यरूशलेम में विजय प्रवेश

[28]इन बातों के कहने के पश्चात् वह आगे आगे यरूशलेम की ओर चढ़ता गया।

[29]ऐसा हुआ कि जब वह बैतफगे और बैतनिय्याह में उस पहाड़ी के निकट जो 'जैतून' कहलाता है, पहुँचा तो उसने चेलों में से दो को यह कहकर भेजा: [30]"अपने सामने के गांव में चले जाओ। वहां प्रवेश करते ही तुमको एक गदही का बच्चा जिस पर कभी कोई सवार नहीं हुआ बंधा मिलेगा। उसे खोलकर यहां ले आओ। [31]यदि कोई तुमसे पूछे, 'इसे क्यों

13-24 *एक मीना बराबर लगभग सौ दिन की मज़दूरी

खोल रहे हो?' तो यह कहना : 'प्रभु को इसकी आवश्यकता है '।"

[32]जो चेले भेजे गए थे उन्होंने जाकर, जैसा उसने उनसे कहा था, ठीक वैसा ही पाया। [33]ज्यों ही वे गदही के बच्चे को खोलने लगे उसके स्वामी ने कहा, "तुम इस बच्चे को क्यों खोल रहे हो?" [34]उन्होंने कहा, "प्रभु को इसकी आवश्यकता है।" [35]तब वे उसे यीशु के पास लाए, और उन्होंने अपने कपड़े गदही के बच्चे पर डालकर यीशु को उस पर बैठाया। [36]जब वह चलने लगा तो वे अपने कपड़े मार्ग पर बिछाने लगे। [37]अब जब वह जैतून पहाड़ की ढलान पर पहुँचा तो चेलों की सारी भीड़ उन सब सामर्थ के कामों के लिए जो उन्होंने देखे थे, बड़े आनन्द के साथ ऊँची आवाज़ से परमेश्वर की स्तुति करने लगी: [38]"**धन्य है वह राजा जो प्रभु के नाम से आता है;** स्वर्ग पर शान्ति और सर्वोच्च स्थान पर महिमा हो!" [39]भीड़ में खड़े कुछ फरीसियों ने उस से कहा, "हे गुरु, अपने चेलों को डांट।" [40]उसने उन्हें उत्तर दिया, "मैं तुमसे कहता हूँ कि यदि ये चुप रहें तो पत्थर चिल्ला उठेंगे।"

[41]जब वह निकट पहुँचा तो नगर को देखकर उस पर रोया [42]और कहा, "यदि आज के दिन तू, हां तू ही, उन बातों को जानता जो शान्ति की हैं—परन्तु अब वे तेरी आंखों से छिप गई हैं। [43]क्योंकि तुझ पर वे दिन आएंगे कि तेरे शत्रु तेरे सामने मोर्चा बांधेंगे और तुझे चारों ओर से घेर कर दबाएंगे। [44]तब वे तुझे और तेरे बालकों को मिट्टी में मिलाकर चौरस कर देंगे और तुझ में एक पत्थर पर दूसरा पत्थर भी न छोड़ेंगे क्योंकि तू ने उस अवसर को जिसमें तुझ पर कृपा की गई थी न पहिचाना।"

मन्दिर से व्यापारियों का निष्कासन

[45]तब वह मन्दिर में गया और व्यापारियों को यह कहकर बाहर निकालने लगा: [46]"लिखा है, '**मेरा घर प्रार्थना का घर होगा;**' परन्तु तुमने उसे डाकुओं की खोह बना दिया है।"

[47]वह प्रतिदिन मन्दिर में उपदेश दिया करता था; पर मुख्य याजक, शास्त्री और लोगों के प्रमुख उसे नाश करने का प्रयत्न करने लगे। [48]परन्तु उन्हें ऐसा करने का कोई अवसर न मिला क्योंकि सब लोग उसकी बातों को बड़े चाव से सुनते थे।

यीशु के अधिकार पर प्रश्न

20 ऐसा हुआ कि एक दिन जब वह मन्दिर में लोगों को उपदेश दे रहा था और सुसमाचार प्रचार कर रहा था तो मुख्य याजकों और शास्त्रियों ने कुछ प्राचीनों के साथ आकर उसका सामना किया, [2]और उस से कहा, "हमें बता कि तू ये कार्य किस अधिकार से करता है, अथवा वह कौन है जिसने तुझे यह अधिकार दिया है?" [3]उसने उन्हें उत्तर दिया, "मैं भी तुमसे एक प्रश्न पूछता हूँ, तुम मुझे बताओ: [4]यूहन्ना का बपतिस्मा क्या स्वर्ग से था, या मनुष्य की ओर से?" [5]तब वे आपस में तर्क करने लगे, "यदि हम कहें, 'स्वर्ग से,' तो वह कहेगा, 'तुमने उस पर विश्वास क्यों नहीं किया?' [6]परन्तु यदि हम कहें, 'मनुष्यों की ओर से,' तो सब लोग पत्थरवाह करके हमें मार डालेंगे क्योंकि उनको निश्चय है कि यूहन्ना एक नबी था।" [7]इस पर उन्होंने उत्तर दिया कि नहीं मालूम कि वह कहां से था। [8]यीशु ने

उनसे कहा, "मैं भी तुम्हें नहीं बताऊँगा कि किस अधिकार से मैं ये कार्य करता हूँ।"

[9]तब वह लोगों से यह दृष्टान्त कहने लगा: "किसी मनुष्य ने अंगूर की बारी लगाकर उसे किसानों को किराए पर दिया और स्वयं लम्बी यात्रा पर निकल गया। [10]फसल के समय उसने किसानों के पास एक दास को भेजा कि वे उस बारी की फसल में से कुछ उसे दें, पर उन्होंने उसे मार-पीट कर खाली हाथ लौटा दिया। [11]इस पर उसने दूसरे दास को भेजा, पर उन्होंने उसे भी मार-पीट और अपमानित करके खाली हाथ भेजा। [12]इसी प्रकार उसने तीसरे को भेजा और उन्होंने उसको भी घायल करके भगा दिया। [13]तब बारी के स्वामी ने कहा, 'मैं क्या करूँ? मैं अपने प्रिय पुत्र को भेजूँगा, कदाचित् वे उसका सम्मान करें।' [14]परन्तु जब किसानों ने उसे देखा तो आपस में यह कहकर निश्चय किया, 'यह तो उत्तराधिकारी है, आओ हम इसे मार डालें कि उत्तराधिकार हमारा हो जाए।' [15]उन्होंने उसे अंगूर की बारी से निकालकर मार डाला। अतः बारी का स्वामी उनके साथ क्या करेगा? [16]वह आकर उन किसानों को नाश करेगा और अंगूर की बारी अन्य लोगों को सौंपेगा!" यह सुनकर उन्होंने कहा, "ऐसा कभी न हो!" [17]परन्तु उसने उनकी ओर देखकर कहा, "तो यह क्या लिखा है, '**जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहरा दिया था, वही कोने का पत्थर बन गया।**' [18]प्रत्येक जो उस से टकराएगा चकनाचूर हो जाएगा, परन्तु जिस पर वह गिरेगा उसे धूल के समान पीस डालेगा।"

[19]उसी क्षण शास्त्रियों और मुख्य याजकों ने उसे पकड़ने का प्रयत्न किया, क्योंकि वे समझ गए थे कि उसने यह दृष्टान्त उनके ही विरोध में कहा था परन्तु लोगों के मारे डर गए।

कर चुकाने के सम्बन्ध में शिक्षा

[20]वे उसकी ताक में रहे, और ऐसे भेदिए भेजे जो धार्मिक होने का ढोंग रचकर उसके किसी कथन से उसे पकड़ें और उसे राज्यपाल के हाथ और अधिकार में सौंप दें। [21]उन्होंने यह कहकर उस से प्रश्न किया: "हे गुरु, हम जानते हैं कि तू ठीक बोलता है व सही शिक्षा देता है, और तू किसी का पक्ष नहीं लेता वरन् परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से सिखाता है। [22]कैसर को कर चुकाना उचित है या नहीं?" [23]पर उसने उनकी चतुराई को जानकर उनसे कहा, [24]"मुझे एक *दीनार दिखाओ। इस पर आकृति और लेख किसके हैं?" उन्होंने कहा, "कैसर के।" [25]उसने उनसे कहा, "तो जो कैसर का है, वह कैसर को दो; और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो।" [26]वे लोगों के समक्ष उसे किसी बात में न पकड़ सके, परन्तु उसके उत्तर से अचम्भित होकर चुप रहे।

पुनरुत्थान और विवाह

[27]फिर कुछ सदूकी जिनका कहना है कि पुनरुत्थान है ही नहीं, उसके पास आए। [28]उन्होंने उस से प्रश्न किया और कहा, "हे गुरु, मूसा ने लिखा है, '**यदि कोई मनुष्य जिसकी पत्नी हो, निःसन्तान मर जाए तो उसका भाई उस स्त्री से विवाह कर के अपने भाई के लिए सन्तान**

---

24 *चांदी का सिक्का – लगभग एक दिन की मज़दूरी

उत्पन्न करे।' 29अब ऐसा हुआ कि सात भाई थे। पहिले भाई ने विवाह किया पर वह नि:सन्तान मर गया। 30और दूसरे ने भी, 31और तीसरे ने भी उस स्त्री को अपनी पत्नी बनाया। इसी प्रकार सातों नि:सन्तान मर गए। 32अन्त में वह स्त्री भी मर गई। 33इसलिए जब पुनरुत्थान होगा तो वह किसकी पत्नी होगी जब कि सातों ने उसे अपनी अपनी पत्नी बनाया था?" 34यीशु ने उनसे कहा, "इस युग के सन्तान शादी-ब्याह करते व करवाते हैं, 35परन्तु वे जो उस युग में प्रवेश करने और मरे हुओं में से जी उठने के योग्य ठहरे हैं, न तो शादी-ब्याह करेंगे और न करवाएंगे, 36न तो वे फिर कभी मरेंगे क्योंकि वे पुनरुत्थान की सन्तान बनकर स्वर्गदूतों के समान और परमेश्वर की सन्तान होंगे। 37मरे हुए तो जिलाए जाते हैं। मूसा भी इस बात को जलती झाड़ी वाले स्थल में प्रकट करता है: यहां वह प्रभु को **इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर** कहता है। 38वह मरे हुओं का नहीं, परन्तु जीवितों का परमेश्वर है क्योंकि सब उसके लिए जीवित रहते हैं।" 39कुछ शास्त्रियों ने उत्तर दिया, "हे गुरु, तू ने ठीक कहा है।" 40इसके बाद उनको किसी भी बात में उस से प्रश्न पूछने का साहस नहीं हुआ।

मसीह किसका पुत्र

41उसने उनसे कहा, "यह कैसी बात है कि वे कहते हैं कि मसीह तो दाऊद का पुत्र है? 42क्योंकि दाऊद स्वयं भजन संहिता की पुस्तक में कहता है, **'प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा: मेरे दाहिने हाथ बैठ,** 43 **जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पावों की पीढ़ी न बना दूं।'** 44इस प्रकार दाऊद तो उसे 'प्रभु' कहता है। अतः वह उसका पुत्र कैसे हुआ?"

45जब सब लोग सुन रहे थे तो उसने चेलों से कहा, 46"शास्त्रियों से सतर्क रहो जिनको लम्बे-लम्बे चोगे पहिन कर इधर-उधर घूमना, बाज़ारों में सम्मान के साथ नमस्कार पाना, आराधनालयों में प्रमुख स्थान पर बैठना और भोज के समय सम्मानित स्थान पाना प्रिय लगता है, 47और जो विधवाओं के घरों को हड़प जाते हैं और दिखाने के लिए लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएं करते हैं। उन्हें अधिक दण्ड मिलेगा।"

कंगाल विधवा का दान

21 उसने आंखें ऊपर उठाईं और देखा कि धनवान अपना अपना दान भण्डार में डाल रहे थे। 2उसने एक कंगाल विधवा को भी *तांबे के दो छोटे छोटे *सिक्के डालते देखा। 3तब उसने कहा, "मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि इस कंगाल विधवा ने उन सब से बढ़कर दान दिया है, 4क्योंकि उन सब ने अपनी अपनी बचत में से दान दिया, परन्तु इसने अपने कंगालपन में से अपनी जीविका का जो कुछ था, *सब डाल दिया।"

युग के अन्त के लक्षण

5जब कुछ लोग मन्दिर के विषय में बातें कर रहे थे कि वह सुन्दर पत्थरों और मन्नत की भेंटों द्वारा कैसे बनाया गया है,

2 *यूनानी में, लेप्ता (1 लेप्तौन, देनारियुस का एक सौ अट्ठाइसवां हिस्सा, अर्थात् सब से कम मूल्य का सिक्का था)
*अक्षरशः, उसे

तो उसने कहा, [6]"इन वस्तुओं के सम्बन्ध में जिन्हें तुम देख रहे हो, ऐसे दिन आएंगे जब कि एक पत्थर के ऊपर दूसरा पत्थर न रहेगा जो ढाया न जाएगा।" [7]तब उन्होंने यह कहकर उस से प्रश्न किया: "हे गुरु, ये बातें कब होंगी? और जब ये बातें होने को हों तो क्या चिन्ह होगा?" [8]उसने कहा, "सावधान रहो, कहीं तुम भरमाए न जाओ, क्योंकि बहुत से लोग मेरे नाम से आ आकर कहेंगे, 'मैं वही हूँ,' और 'समय निकट आ पहुँचा है', पर तुम उनके पीछे चले न जाना। [9]जब तुम लड़ाइयों और उपद्रवों की चर्चा सुनो तो भयभीत न होना; इन बातों का पहिले होना आवश्यक है, परन्तु उस समय एकाएक अन्त न होगा।"

[10]तब वह उनसे कहने लगा, "जाति के विरुद्ध जाति और राज्य के विरुद्ध राज्य उठ खड़े होंगे, [11]भयंकर भूकम्प होंगे, जगह-जगह महामारी व अकाल पड़ेंगे, आकाश में भयंकर बातें और बड़े-बड़े चिन्ह दिखाई देंगे। [12]पर इन सब बातों के होने से पहिले मेरे नाम के कारण वे तुम्हें पकड़ेंगे, तुम्हें सताएंगे, सभागृहों में ले जाएंगे और बन्दीगृहों में डालेंगे और राजाओं व अधिकारियों के पास ले जाएंगे। [13]इस से तुम्हें साक्षी देने का अवसर मिलेगा। [14]अत: अपने मन में बचाव के लिए पहिले से तैयारी न करना। [15]क्योंकि मैं तुम्हें ऐसी बोली और ऐसी बुद्धि दूँगा कि शत्रुओं में से कोई भी तुम्हारा न तो सामना और न खण्डन ही कर सकेगा। [16]परन्तु तुम्हारे माता-पिता, भाई-सम्बन्धी और मित्र भी धोखा देकर तुम्हें पकड़वाएंगे और तुम में से कितनों को मरवा डालेंगे। [17]मेरे नाम के कारण सब तुमसे घृणा करेंगे। [18]फिर भी तुम्हारा एक बाल भी बांका न होगा। [19]परन्तु अपने धीरज द्वारा तुम अपने प्राणों को बचाए रखोगे।

[20]"परन्तु जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखो, तब जान लेना कि उसका उजड़ जाना निकट है। [21]तब वे जो यहूदा में हों, पहाड़ियों पर भाग जाएं; जो नगर के भीतर हों, वे बाहर निकल जाएं; और वे जो गावों में हों, नगर में न लौटें, [22]क्योंकि ये बदला लेने के दिन होंगे कि वे सब बातें जो लिखी गई हैं पूरी हो जाएं। [23]उन दिनों जो गर्भवती हों और दूध पिलाती हों, उनके लिए हाय! क्योंकि देश में बड़ा क्लेश होगा और इस जाति पर प्रकोप होगा। [24]वे तलवार से घात किए जाएंगे और सब देशों में बन्दी बनाकर पहुँचाए जाएंगे। जब तक गैर-यहूदियों का समय पूरा न हो, यरूशलेम गैरयहूदियों के पैरों के नीचे रौंदा जाएगा।

[25]"सूर्य, चन्द्रमा और तारों में चिन्ह दिखाई देंगे, और पृथ्वी पर जातियों के मध्य त्रास और समुद्र की गरज और लहरों के कोलाहल से उनमें घबराहट होगी, [26]भय और संसार पर घटित होने वाली बातों की प्रतीक्षा करते करते मनुष्यों के हाथ-पैर ढीले पड़ जाएंगे क्योंकि आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी। [27]तब वे मनुष्य के पुत्र को सामर्थ के साथ बादलों पर बड़ी महिमा के साथ आते हुए देखेंगे। [28]परन्तु जब ये घटनाएं घटने लगें तो सीधे होकर अपने सिर उठाना, क्योंकि तुम्हारा छुटकारा निकट होगा।"

[29]तब उसने उनसे एक दृष्टान्त कहा: "अंजीर के पेड़ और अन्य सब पेड़ों को देखो। [30]ज्यों ही उनमें कोपलें आती हैं, तुम देखकर स्वयं जान जाते हो कि अब

ग्रीष्मकाल निकट आ गया है। 31इसी प्रकार तुम भी, जब ये सब होते देखो, तो जान लेना कि परमेश्वर का राज्य निकट है। 32मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जब तक सब बातें घटित न हो लें, इस पीढ़ी का अंत न होगा। 33आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरा वचन कभी नहीं टलेगा।

34"सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे हृदय दुराचार, पियक्कड़पन और जीवन की चिन्ताओं के भार से दब जाएं और वह दिन एकाएक तुम पर फन्दे की भांति आ जाए 35क्योंकि सम्पूर्ण पृथ्वी पर रहने वाले सब लोगों पर वह इसी प्रकार आ पड़ेगा। 36परन्तु तुम हर समय सावधान होकर प्रार्थना में लगे रहो जिस से कि इन सब बातों से बच निकलने और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के लिए तुम में सामर्थ हो।"

37दिन को तो वह मन्दिर में जाकर उपदेश दिया करता था, परन्तु संध्या समय बाहर निकल कर सारी रात उस पर्वत पर जो जैतून कहलाता है, बिताता था।38सब लोग सुबह तड़के उठकर उसके पास मन्दिर में उसकी सुनने के लिए आया करते थे।

यहूदा इस्करियोती का विश्वासघात

22 जब अखमीरी रोटी का पर्व, जो फसह कहलाता है, आ रहा था 2और मुख्य याजक और शास्त्री इस खोज में लगे हुए थे कि उसे कैसे मार डालें, क्योंकि वे लोगों से डरते थे।

3शैतान उस यहूदा में समाया जो इस्करियोती कहलाता था और जो बारहों में से एक था। 4उसने जाकर मुख्य [illegible] और अधिकारियों के साथ बातचीत की कि *यीशु को किस प्रकार उनके हाथ पकड़वाए। 5इस पर वे अत्यन्त प्रसन्न हुए और उसे रुपये देने को सहमत हुए। 6उसने यह बात मान ली और वह इस सुअवसर की ताक में रहने लगा कि भीड़ से कहीं अलग उसे धोखे से पकड़वा दे।

अन्तिम भोज

7तब अखमीरी रोटी के पर्व का वह दिन आया जिसमें फसह का मेम्ना बलि करना पड़ता था। 8उसने पतरस और यूहन्ना को यह कहकर भेजा: "जाकर हमारे लिए फसह तैयार करो कि हम उसे खाएं।" 9तब उन्होंने उस से पूछा, "तू कहां चाहता है कि हम उसे तैयार करें?" 10उसने उनसे कहा, "देखो, जब तुम नगर में प्रवेश करो, तुम्हें एक आदमी मिलेगा जो पानी का घड़ा लिए होगा। तुम भी उसके पीछे पीछे उस घर में चले जाना जिसमें वह जाए। 11तुम उस घर के स्वामी से कहना, 'गुरु तुझसे कहता है कि वह अतिथि-गृह कहां है जहां मैं अपने चेलों के साथ फसह खाऊँ?' 12और वह तुम्हें सजा-सजाया एक बड़ा ऊपरी कक्ष दिखाएगा वहीं तैयारी करना।" 13उन्होंने जाकर सब कुछ वैसा ही पाया जैसा उसने बताया था और उन्होंने वहां फसह तैयार किया।

14जब समय हुआ तो यीशु भोजन करने बैठा और प्रेरित भी उसके साथ बैठे। 15उसने उनसे कहा, "अपने दुख उठाने से पूर्व मेरी बड़ी अभिलाषा थी कि मैं तुम्हारे साथ फसह खाऊँ, 16क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि जब तक यह परमेश्वर के राज्य में पूरा न हो जाए, मैं इसे फिर कभी नहीं खाऊँगा।" 17प्याला

लेकर ज़ब उसने धन्यवाद दिया तो कहा, "इसे लो और आपस में बांटो, [18]क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि जब तक परमेश्वर का राज्य न आ जाए, मैं दाखरस नहीं पीऊँगा।" [19]फिर रोटी लेकर जब उसने धन्यवाद दिया तो उसे तोड़कर उनको दिया और कहा, "यह मेरी देह है *जो तुम्हारे लिए दी जाती है; मेरी स्मृति में ऐसा ही किया करो।" [20]जब वे खा चुके तो उसी प्रकार उसने प्याला लेकर कहा, "यह प्याला जो तुम्हारे लिए उण्डेला गया है मेरे लहू में एक नई वाचा है। [21]पर देखो, वह जो मुझे धोखे से पकड़वाने वाला है, उसका हाथ मेरे साथ मेज़ पर है। [22]क्योंकि मनुष्य का पुत्र तो जैसा निश्चित किया गया है, जाता ही है, परन्तु उस मनुष्य के लिए हाय जिसके द्वारा वह धोखे से पकड़वाया जाता है!" [23]तब वे आपस में पूछताछ करने लगे कि हम में से कौन यह कार्य करेगा।

[24]उनमें एक विवाद भी उठ खड़ा हुआ कि हम में सबसे बड़ा कौन समझा जाता है। [25]उसने उनसे कहा, "गैरयहूदियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं; और जिनको उन पर अधिकार होता है, वे 'परोपकारी' कहलाते हैं। [26]परन्तु तुम में ऐसा न हो। वह जो तुम में सबसे बड़ा है, वह सब से छोटा बने; और जो प्रमुख है, वह सेवक के समान बने। [27]क्योंकि बड़ा कौन है, जो भोजन करने बैठा है, या वह जो भोजन परोसता है? क्या वह नहीं जो भोजन करने बैठता है? परन्तु मैं तुम्हारे मध्य में परोसने वाले के समान हूँ। [28]तुम वे हो जो मेरी परीक्षाओं में मेरे साथ रहे। [29]जैसे मेरे पिता ने मुझे एक राज्य दिया है, वैसे ही मैं भी तुम्हें देता हूँ [30]कि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज़ पर खाओ और पीओ तथा न्याय-आसन पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करो।

[31]"शमौन, हे शमौन, देख! शैतान ने तुम लोगों को गेहूँ के समान फटकने के लिए आज्ञा मांग ली है, [32]परन्तु मैंने तेरे लिए प्रार्थना की है कि तेरा विश्वास चला न जाए। अतः जब तू फिरे तो अपने भाइयों को स्थिर करना।" [33]उसने उस से कहा, "हे प्रभु, मैं तेरे साथ जेल जाने और मरने को भी तैयार हूँ!" [34]फिर उसने कहा, "पतरस, मैं तुझसे कहता हूँ कि जब तक तू इस बात से कि मुझे जानता है आज तीन बार इन्कार न कर लेगा, मुर्ग बांग न देगा।"

[35]उसने उनसे कहा, "जब मैंने तुम्हें बिना बटुआ, बिना थैली और बिना चप्पलों के भेजा था तो क्या तुम्हें किसी बात की घटी हुई थी?" उन्हों ने कहा, "नहीं, किसी वस्तु की नहीं।" [36]उसने उनसे कहा, "परन्तु अब जिसके पास बटुआ हो, साथ लेकर जाए; उसी प्रकार झोला भी ले जाए, और जिसके पास तलवार नहीं, अपने वस्त्र को बेंच कर एक मोल ले। [37]क्योंकि मैं तुम्हें बताता हूँ कि यह बात जो लिखी गई है, वह मुझ में पूरी होगी, अर्थात् '**वह अपराधियों के साथ गिना गया**' क्योंकि जो बातें मेरे सम्बन्ध में कही गई हैं, पूरी होने पर हैं।" [38]उन्होंने कहा, "हे प्रभु, देख, यहां दो तलवारें हैं।" उसने उनसे कहा, "पर्याप्त हैं।"

जैतून पर्वत पर यीशु की प्रार्थना

[39]तब वह बाहर निकल कर अपनी रीति के अनुसार जैतून के पर्वत की ओर

19 *कुछ हस्तलेखों में बाद का हिस्सा और पद 20 नहीं मिलते

चला, और चेले भी उसके पीछे चल पड़े। [40]जब वह वहां पहुँचा तो उसने कहा, "प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो।" [41]वह उनसे अलग लगभग पत्थर फेंकने की दूरी तक गया और घुटने टेक कर प्रार्थना करने लगा, [42]"हे पिता, यदि तू चाहे तो इस प्याले को मुझ से हटा ले; फिर भी मेरी इच्छा नहीं, पर तेरी इच्छा पूरी हो।" *[43]तब स्वर्ग से एक दूत उसे दिखाई दिया जो उसे सामर्थ देता था। *[44]यीशु व्याकुल होकर आग्रहपूर्वक प्रार्थना कर रहा था, और उसका पसीना रक्त की बूँद के समान भूमि पर गिर रहा था। [45]जब वह प्रार्थना करके उठा और चेलों के पास आया तो उसने देखा कि वे शोकित होकर सो रहे थे। [46]उसने उनसे कहा, "तुम क्यों सो रहे हो? उठो, प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो।"

यीशु की गिरफ़्तारी

[47]जब वह बातें कर ही रहा था, देखो, एक भीड़ आ पहुँची और बारहों में से एक जो यहूदा कहलाता था उनके आगे आगे चला आ रहा था। वह यीशु के पास आया कि उसे चूमे, [48]परन्तु यीशु ने उस से कहा, "यहूदा, क्या तू मनुष्य के पुत्र को चूम कर धोखे से पकड़वाता है?" [49]जो उसके आस-पास खड़े थे जब उन्होंने देखा कि क्या होने जा रहा है तो कहा, "हे प्रभु, क्या हम तलवार चलाएं?" [50]उनमें से किसी एक ने महायाजक के दास पर तलवार चला कर उसका दाहिना कान उड़ा दिया। [51]परन्तु यीशु ने कहा, "ठहरो, ऐसा न करो!" उसने उसका कान छूकर अच्छा कर दिया। [52]यीशु ने मुख्य याजकों और मन्दिर के अधिकारियों तथा प्राचीनों से जो उसके विरुद्ध उठकर आए थे, कहा, "क्या तुम तलवार और डण्डे लेकर किसी डाकू को पकड़ने आए हो? [53]जब मैं प्रतिदिन मन्दिर में तुम्हारे साथ रहा तो तुमने मुझ पर हाथ नहीं लगाया, परन्तु यह घड़ी और अंधकार का अधिकार तुम्हारा है।"

पतरस का इन्कार

[54]वे उसे बन्दी बनाकर ले गए और महायाजक के घर ले चले, परन्तु पतरस दूर ही दूर उसके पीछे चला आ रहा था। [55]तत्पश्चात् जब वे आंगन के मध्य आग जलाकर बैठ चुके तो पतरस भी उनके साथ बैठा हुआ था। [56]तब एक दासी ने आग के प्रकाश में उसे बैठे देखकर उसकी ओर ध्यान से देखते हुए कहा, "यह भी तो उसके साथ था!" [57]परन्तु उसने यह कहकर इस से इन्कार किया: "हे नारी, मैं उसे नहीं जानता।" [58]कुछ देर पश्चात् किसी और ने उसे देखा और कहा, "तू भी उनमें से एक है।" परन्तु पतरस ने कहा, "नहीं जी, मैं नहीं हूँ!" [59]लगभग एक घण्टा बीत जाने के बाद एक और मनुष्य ज़ोर देकर कहने लगा, "निश्चय यह मनुष्य भी उसके साथ था क्योंकि यह भी गलीली है।" [60]परन्तु पतरस ने कहा, "हे भाई, मैं नहीं जानता तू क्या कहता है!" तत्काल जब वह बातें कर ही रहा था, मुर्गे ने बांग दी। [61]तब प्रभु ने मुड़कर पतरस को देखा। पतरस को प्रभु की बात स्मरण हो आई कि उसने यह कहा था: "आज मुर्गे के बांग देने से पहिले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।" [62]और वह बाहर जाकर फूट-फूटकर रोया।

[63]वे लोग जो यीशु को पकड़े हुए

* प्राचीन हस्तलेखों में पद 43 और 44 नहीं मिलते   44 *देखिए टिप्पणी पद 43

थे, उसे ठट्ठों में उड़ाकर पीट रहे थे। [64]उन्होंने उसकी आंखों को ढांपा और यह कह कर उस से पूछने लगे, "भविष्यद्वाणी कर! किसने तुझे मारा?" [65]वे उसकी निन्दा कर के उसके विरुद्ध कई और बातें कह रहे थे।

पिलातुस के सामने यीशु

[66]जब दिन हुआ तो लोगों के *प्राचीनों की †महासभा बुलाई गई जिसमें मुख्य याजक और शास्त्री भी थे और वे उसे †महासभा में यह कहते हुए ले गए: [67]"यदि तू मसीह है तो हमें बता!" परन्तु उसने उनसे कहा, "यदि मैं कहूँ फिर भी तुम विश्वास नहीं करोगे, [68]और यदि मैं प्रश्न पूछूँ तो तुम उत्तर नहीं दोगे। [69]परन्तु अब से **मनुष्य का पुत्र परमेश्वर के सामर्थ की दाहिनी ओर बैठाया जाएगा।**" [70]तब सब ने पूछा, "तो तू, क्या परमेश्वर का पुत्र है?" उसने कहा, "हां मैं हूँ।" [71]उन्होंने कहा, "अब हमें आगे साक्षी की क्या आवश्यकता है? क्योंकि हमने स्वयं उसके मुंह से सुन लिया।"

क्रूस पर यीशु का चढ़ाया जाना

23 जब सारी सभा उठ कर उसे पिलातुस के पास ले गई। [2]वे यह कहकर उस पर दोष लगाने लगे: "हमने इस मनुष्य को देशवासियों को बहकाते और कैसर को कर देने से मना करते और यह कहते पाया कि वह स्वयं मसीह, राजा है।" [3]पिलातुस ने उस से पूछा, "क्या तू यहूदियों का राजा है?" उसने उसे उत्तर दिया, "ठीक,तू स्वयं ही कह रहा है।" [4]पिलातुस ने मुख्य याजकों और भीड़ से कहा, "मैं इस मनुष्य में कोई दोष नहीं पाता।" [5]परन्तु वे यह कहकर दबाव डालते रहे कि वह गलील से लेकर समस्त यहूदिया में शिक्षा दे दे कर लोगों को भड़काता है, यहां तक कि इस स्थान में भी। [6]जब पिलातुस ने यह सुना तो पूछा कि क्या यह मनुष्य गलीली है? [7]जब उसने जाना कि वह हेरोदेस के राज्य-क्षेत्र का रहने वाला है तो उसने उसे हेरोदेस के पास भेजा। हेरोदेस भी स्वयं उस समय यरूशलेम में था।

[8]जब हेरोदेस ने यीशु को देखा तो अत्यन्त प्रसन्न हुआ क्योंकि वह बड़े लम्बे समय से उसे देखना चाहता था। वह उसके विषय में सुना करता था अतः उसके द्वारा कुछ चिन्ह दिखाए जाने की आशा किया करता था। [9]उसने उस से बहुत से प्रश्न पूछे पर यीशु ने कोई उत्तर न दिया। [10]मुख्य याजक और शास्त्री वहां खड़े होकर बड़े ज़ोर से दोष लगा रहे थे। [11]तब हेरोदेस ने अपने सैनिकों सहित उसे ठट्ठों में उड़ाने और उसके साथ दुर्व्यवहार करने के पश्चात् उसे भड़कीला वस्त्र पहिनाया और पिलातुस के पास लौटा दिया। [12]उसी दिन से हेरोदेस और पिलातुस परस्पर मित्र बन गए। इस से पहिले उनमें शत्रुता थी।

[13]पिलातुस ने मुख्य याजकों, शासकों तथा लोगों को बुलाया, [14]और उसने कहा, "तुम मेरे पास इस मनुष्य को विद्रोह करने के लिए भड़काने वाला कहकर लाए हो, और देखो, तुम्हारे समक्ष इस मनुष्य को जांचने पर मैंने इस पर उन बातों का कोई अपराध नहीं पाया जिनका तुम दोष लगाते हो; [15]न हेरोदेस ने, क्योंकि उसने इसे हमारे पास लौटा

---

66 *अक्षरशः प्रजा के प्राचीनों की सभा †यूनानी, सन्हेद्रीन

है। अब देखो, इसने मृत्यु-दण्ड के योग्य कोई कार्य नहीं किया है। [16]अत: मैं इसे ताड़ना देकर छोड़ दूँगा।" [17]*[पर्व के दिन पिलातुस को उनके लिए एक कैदी को छोड़ना पड़ता था।] [18]परन्तु वे एक साथ चिल्ला उठे, "इस मनुष्य का काम तमाम कर और हमारे लिए बरअब्बा को छोड़ दे!"—[19]यह वही था जो नगर में बलवा कराने और हत्या के अपराध में बन्दीगृह में डाला गया था—[20]पिलातुस ने यीशु को छोड़ने की इच्छा से लोगों को फिर समझाया, [21]परन्तु वे यह कहते हुए चिल्लाते रहे : "उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर !" [22]तब उसने तीसरी बार उनसे कहा, "क्यों? इस मनुष्य ने क्या बुराई की है? मैने इसमें मृत्यु-दण्ड के योग्य कोई अपराध नहीं पाया। अत: मैं उसे ताड़ना देकर छोड़ दूँगा।" [23]परन्तु वे ऊँची आवाज़ से चिल्ला-चिल्लाकर पीछे पड़ गए कि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए। और उनके चिल्लाने का प्रभाव पड़ने लगा। [24]पिलातुस ने निर्णय किया कि उनकी मांग पूरी की जाए। [25]तब उसने उस मनुष्य को जो बलवा और अपराध के कारण बन्दी बनाया गया था उनकी मांग के अनुसार मुक्त कर दिया; परन्तु यीशु को उनकी इच्छा पर छोड़ दिया।

[26]जब वे उसे ले गए तो उन्होंने गांव की ओर से आते हुए शमौन नामक एक कुरेनी को पकड़ा और क्रूस उसके कंधे पर रखा कि वह यीशु के पीछे पीछे ले चले।

[27]उसके पीछे लोगों की एक बड़ी भीड़ चली आ रही थी और उनमें स्त्रियां भी थीं जो उसके लिए रो-रोकर विलाप कर रही थीं। [28]परन्तु यीशु ने उनकी ओर पलटकर कहा, "यरूशलेम की बेटियो, मेरे लिए मत रोओ, परन्तु अपने और अपने बच्चों के लिए रोओ। [29]क्योंकि देखो, ऐसे दिन आ रहे हैं जब कि लोग कहेंगे, 'धन्य हैं वे बांझ और वे गर्भ जिन्होंने जन्म नहीं दिया और वे स्तन जिन्होंने कभी दूध नहीं पिलाया।' [30]तब वे **पहाड़ों से कहने लगेंगे, 'हम पर गिर पड़ो,' और पहाड़ियों से, 'हमें ढांप लो।'** [31]क्योंकि यदि वे हरे पेड़ के साथ ऐसा करते हैं तो सूखे के साथ क्या कुछ न होगा?"

[32]वे अन्य दो को भी जो अपराधी थे उसके साथ मृत्यु-दण्ड देने के लिए ले जा रहे थे।

क्रूस पर से क्षमा

[33]जब वे उस स्थान पर जो खोपड़ी कहलाता है पहुँचे तो वहां पर उन्होंने उसे और उसके साथ दो अपराधियों को भी क्रूस पर चढ़ाया, एक को दाहिनी और दूसरे को बाईं ओर। [34]*परन्तु यीशु ने कहा, "हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं।" **और उन्होंने चिट्ठियां डालकर उसके कपड़े आपस में बांट लिए।** [35]लोग समीप खड़े होकर देख रहे थे, यहां तक कि अधिकारी भी यह कहकर उस पर ताना मार रहे थे: "इसने अन्य लोगों को बचाया। यदि यह परमेश्वर का मसीह अर्थात् उसका चुना हुआ है, तो अपने आप को बचाए।" [36]सैनिक भी उसके पास आकर ठट्ठा करने और सिरका पिलाकर [37]कहने लगे, "यदि तू यहूदियों का राजा है तो अपने आप को बचा।" [38]और उसके ऊपर यह दोष-पत्र भी लगा था: "**यह यहूदियों का राजा है।**"

[17] * हस्तलेखों में यह पद नहीं मिलता

34 *कुछ हस्तलेखों में इस पद का प्रथम भाग नहीं मिलता

सब देख रही थीं।

पश्‍चात्तापी डाकू

[39]जो वहां लटकाए गए थे उनमें से एक अपराधी यह कहकर उसकी निन्दा कर रहा था: "क्या तू मसीह नहीं? अपने आप को और हमें बचा!" [40]पर दूसरे ने उसे डांटकर कहा, "क्या तू परमेश्‍वर से भी नहीं डरता? तू भी तो इसी निर्णय के अन्तर्गत दण्ड पा रहा है [41]और वास्तव में हमारे साथ तो न्याय हुआ, क्योंकि हम तो अपनी करनी का उचित फल भोग रहे हैं, परन्तु इस मनुष्य ने कोई अपराध नहीं किया।" [42]तब उसने कहा, "हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए तो मुझे स्मरण करना!" [43]उसने उस से कहा, "मैं तुझ से सच कहता हूँ कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।"

यीशु का प्राण त्यागना

[44]अब यह दोपहर के लगभग *बारह बजे का समय था और †तीन बजे दिन तक सारे देश में अन्धकार छाया रहा [45]क्योंकि सूर्य का प्रकाश जाता रहा। तब मन्दिर का परदा बीच से फट गया [46]और यीशु ने ऊँचे स्वर से पुकार कर कहा, "**हे पिता, मैं अपना आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ।**" यह कहकर उसने प्राण त्याग दिया। [47]जब सूबेदार ने यह सब देखा तो वह यह कहकर परमेश्‍वर की बड़ाई करने लगा: "निश्‍चय यह मनुष्य निर्दोष था।" [48]तब सारी भीड़ जो यह दृश्य देखने एकत्रित हुई थी, जो कुछ हुआ उसे जब देख चुकी तो अपनी छाती पीटती हुई लौटने लगी। [49]उसके सब परिचित जन और वे स्त्रियां जो गलील से उसके साथ आई थीं, कुछ दूर खड़ी होकर यह सब देख रही थीं।

यीशु का दफ़नाया जाना

[50]देखो, यूसुफ नामक एक मनुष्य जो महासभा का एक सदस्य, और सज्जन व धर्मी पुरुष था—[51]उसने उनकी योजना और कार्य के प्रति सहमति प्रकट नहीं की थी—वह यहूदियों के एक नगर अरमतियाह का रहने वाला था और परमेश्‍वर के राज्य की प्रतीक्षा करता था। [52]इस मनुष्य ने पिलातुस के पास जाकर यीशु का शव मांगा। [53]उसने उसे उतार कर मलमल के कपड़े में लपेटा और एक कब्र में रखा जो चट्टान काटकर बनाई गई थी, जिसमें कभी कोई नहीं रखा गया था। [54]वह तैयारी का दिन था और सब्त का दिन प्रारम्भ होने पर था। [55]उन स्त्रियों ने, जो गलील से उसके साथ आई थीं, पीछे पीछे जाकर उस कब्र को देखा और यह भी देखा कि उसका शव कैसे रखा गया है। [56]तब उन्होंने लौटकर सुगन्धित मसाले और इत्र तैयार किए।

फिर सब्त के दिन आज्ञा के अनुसार विश्राम किया।

यीशु का पुनरुत्थान

24 परन्तु सप्ताह के पहिले दिन पौ फटते ही वे स्त्रियां उन सुगन्धित मसालों को लेकर जो उन्होंने तैयार किए थे, कब्र पर आईं। [2]उन्होंने पत्थर को कब्र पर से लुढ़का हुआ पाया, [3]परन्तु जब वे भीतर गईं तो उन्होंने प्रभु यीशु का शव न पाया। [4]ऐसा हुआ कि जब वे भौंचक्की खड़ी थीं तो देखो, दो मनुष्य झलकते हुए वस्त्र पहिने उनके निकट खड़े हो गए। [5]जब स्त्रियां भयभीत

44 *अक्षरशः, छठ्वां घंटा †अक्षरशः, नवां घंटा

होकर भूमि पर मुंह झुकाए हुए थीं तो उन मनुष्यों ने उनसे कहा, "तुम जीवित को मरे हुओं में क्यों ढूँढ़ती हो? [6]*वह यहां नहीं है, पर जी उठा है। स्मरण करो कि जब वह गलील में ही था तो उसने तुमसे यह कहा था: [7]कि मनुष्य का पुत्र अवश्य ही पापी मनुष्यों के हाथों में सौंपा जाएगा, क्रूस पर चढ़ाया जाएगा और तीसरे दिन जी उठेगा।" [8]उन्होंने उसकी बातों को स्मरण किया, [9]और कब्र से लौट कर ये सब बातें ग्यारहों को और अन्य सब को सुनाईं। [10]जिन्होंने ये बातें प्रेरितों को बताईं, वे मरियम मगदलीनी, योअन्ना और याकूब की माता मरियम तथा उनके साथ की अन्य स्त्रियां भी थीं। [11]पर ये बातें उन्हें अर्थहीन लगीं और उन्होंने उनका विश्वास नहीं किया। [12]*[परन्तु पतरस उठा और दौड़कर कब्र पर गया: जब उसने झुक कर भीतर देखा तो उसे केवल मलमल का कफ़न दिखाई दिया, और इस घटना पर आश्चर्य करता हुआ वह अपने घर चला गया।]

इम्माऊस के मार्ग पर चेलों को दर्शन

[13]देखो, उसी दिन उनमें से दो व्यक्ति इम्माऊस नामक एक गांव को जा रहे थे जो यरूशलेम से लगभग *तेरह किलोमीटर की दूरी पर था। [14]वे इन सब घटनाओं के विषय में बातें करते जा रहे थे। [15]ऐसा हुआ कि जब वे परस्पर बातें तथा विचार-विमर्श कर रहे थे, तो यीशु स्वयं वहां आकर उनके साथ चलने लगा, [16]परन्तु उसे पहिचानने को उनकी आंखें बन्द कर दी गई थीं। [17]उसने उनसे कहा, "तुम चलते हुए परस्पर ये सब क्या बातें कर रहे हो?" और वे उदास होकर खड़े रह गए। [18]उनमें से एक ने, जिसका नाम क्लियोपास था, उसे उत्तर दिया, "क्या तू ही अकेला ऐसा व्यक्ति यरूशलेम में आया हुआ है कि इन सब बातों से जो इन दिनों यहां हुईं अनजान है?" [19]उसने उनसे कहा, "कौन सी बातें?" उन्होंने उस से कहा, "यीशु नासरी के विषय में जो परमेश्वर और सब मनुष्यों की दृष्टि में कार्य और वचन में सामर्थी नबी था, [20]और हमारे मुख्य याजकों और अधिकारियों ने उसे किस प्रकार पकड़वाकर मृत्यु-दण्ड के योग्य ठहराया और उसे क्रूस पर चढ़ाया। [21]परन्तु हम तो यह आशा कर रहे थे कि वही इस्राएल को छुड़ाने वाला व्यक्ति है। वास्तव में, इन सब बातों की अपेक्षा, इन घटनाओं को घटित हुए आज तीसरा दिन हो चुका है। [22]परन्तु हमारे साथ की कुछ स्त्रियों ने भी हमें आश्चर्य में डाल दिया है। जब वे प्रातःकाल तड़के कब्र पर गईं, [23]और उसके शव को नहीं पाया, तो यह कहते हुए आईं कि हमने स्वर्गदूतों का भी दर्शन पाया जिन्होंने कहा कि वह जीवित है। [24]जो हमारे साथ थे, उनमें से कुछ कब्र पर गए और इस बात को जैसा स्त्रियों ने कहा था वैसा ही पाया, परन्तु उन्होंने उसे नहीं देखा।" [25]तब उसने उनसे कहा, "हे निर्बुद्धियो, नबियों ने जो बातें कहीं उन सब पर विश्वास करने में मतिमन्द लोगो! [26]क्या मसीह के लिए यह आवश्यक न था कि यह सब दुख उठाए और अपनी महिमा में प्रवेश करे?" [27]तब उसने मूसा से प्रारम्भ करके सब नबियों और समस्त पवित्रशास्त्र में से

---

6 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में यह हिस्सा नहीं मिलता: 'वह यहां नहीं है, पर जी उठा है' 12 *कुछ हस्तलेखों में 12 नहीं मिलता

अपने सम्बन्ध की बातों का अर्थ उन्हें समझा दिया। [28]जब वे उस गांव के निकट पहुँचे जहां जा रहे थे तो उसने ऐसा दिखाया मानो कि आगे बढ़ जाना चाहता हो। [29]उन्होंने आग्रह कर के कहा, "हमारे साथ ठहर जा, क्योंकि संध्या हो रही है और दिन लगभग ढल चुका है।" वह उनके साथ ठहरने के लिए भीतर गया। [30]तब ऐसा हुआ कि जब वह उनके साथ भोजन करने बैठा तो उसने रोटी लेकर धन्यवाद दिया, और तोड़कर उन्हें देने लगा। [31]तब उनकी आंखें खुल गईं और उन्होंने उसे पहिचान लिया, पर वह उनकी दृष्टि से ओझल हो गया। [32]उन्होंने एक दूसरे से कहा, "जब वह मार्ग में हम से बातें कर रहा था और हमें पवित्रशास्त्र का अर्थ समझा रहा था तो क्या हमारे हृदय उत्तेजित नहीं हो रहे थे?" [33]उसी घड़ी वे उठकर यरूशलेम को लौट गए और ग्यारहों तथा उनके साथियों को एकत्रित पाकर [34]उन्होंने कहा, "प्रभु वास्तव में जी उठा है और शमौन को दिखाई दिया है," [35]और वे मार्ग के अपने अनुभवों को और यह कि रोटी तोड़ते समय उनके द्वारा वह कैसे पहिचाना गया था, बताने लगे।

कोठरी में यीशु का चेलों को दर्शन

[36]जब वे ये बातें बता ही रहे थे, वह स्वयं उनके मध्य आकर खड़ा हो गया, *[और उनसे कहा, "तुम्हें शान्ति मिले"।] [37]परन्तु वे चौंक उठे तथा डर गए। उन्होंने सोचा कि हम किसी भूत को देख रहे हैं। [38]उसने उनसे कहा, "तुम क्यों घबराते हो? तुम्हारे मनों में क्यों सन्देह उठते हैं? [39]मेरे हाथ और मेरे पैरों को देखो कि स्वयं मैं ही हूँ, मुझे छूकर देखो क्योंकि भूत के मांस और हड्डियां नहीं होतीं जैसा कि तुम मुझ में देखते हो।" [40]*[जब वह यह कह चुका तो उसने अपने हाथ और पैर उन्हें दिखाए।] [41]जब वे आनन्द के मारे अब भी विश्वास न कर सके और आश्चर्यचकित हो रहे थे तो उसने उनसे कहा, "क्या तुम्हारे पास यहां कुछ खाने को है?" [42]तब उन्होंने उसे भुनी हुई मछली का एक टुकड़ा दिया, [43]और उसने उसे लेकर उनके देखते हुए खाया।

[44]तब उसने उनसे कहा, "ये मेरी वे बातें हैं जिन्हें मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए कही थीं कि उन सब बातों का जो मूसा की व्यवस्था में, नबियों तथा भजनों की पुस्तक में, मेरे विषय में लिखी गई थीं पूरा होना अनिवार्य है।" [45]उसने उनकी बुद्धि खोल दी कि वे पवित्रशास्त्र को समझें। [46]और उनसे कहा, "यह लिखा है कि मसीह दुख उठाएगा और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा, [47]और यरूशलेम से प्रारम्भ कर के सब जातियों में उसके नाम से पापों की क्षमा के लिए मनफिराव का प्रचार किया जाएगा। [48]तुम इन सब बातों के साक्षी हो। [49]देखो, मैं तुम पर अपने पिता की प्रतिज्ञा को भेजूँगा, परन्तु जब तक तुम स्वर्गीय सामर्थ से परिपूर्ण न हो जाओ, इसी नगर में ठहरे रहना।"

स्वर्गारोहण

[50]तब वह उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले गया और उसने अपने हाथ उठाकर उन्हें आशिष दी। [51]जब कि वह उन्हें

---

36 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में कोष्ठक वाला हिस्सा भी सम्मिलित है, परन्तु शेष में यह नहीं मिलता
40 *कुछ हस्तलेखों में यह पद नहीं है

आशिष दे रहा था तो वह उनसे अलग हो गया *[और स्वर्ग पर उठा लिया गया। [52]तब उन्होंने उसे प्रणाम किया*] और वे बड़े आनन्द के साथ यरूशलेम लौट आए, [53]और लगातार मन्दिर में जाकर परमेश्वर की स्तुति करते रहे।

यूहन्ना रचित सुसमाचार

देहधारी वचन

1 आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। [2]यही आदि में परमेश्वर के साथ था। [3]सब कुछ उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कुछ भी उसके बिना उत्पन्न न हुआ। [4]उसमें जीवन था, और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था। [5]और ज्योति अंधकार में चमकती है, पर अंधकार ने उसे ग्रहण नहीं किया।

[6]परमेश्वर की ओर से भेजा हुआ एक मनुष्य आया जिसका नाम यूहन्ना था। [7]वह इसलिए आया कि उस ज्योति का गवाह बने, कि सब उसके द्वारा विश्वास करें। [8]वह स्वयं तो वह ज्योति न था, परन्तु इसलिए आया कि उस ज्योति की साक्षी दे।

[9]वह सच्ची ज्योति जो प्रत्येक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आने वाली थी। [10]वह जगत में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे न पहचाना। [11]वह अपनों के पास आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। [12]परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं—[13]वे न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से, और न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।

[14]और वचन, जो अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण था, देहधारी हुआ, और हमारे बीच में निवास किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के एकलौते की महिमा। [15]यूहन्ना ने उसके विषय में साक्षी दी और पुकार कर कहा, "यह वही है जिसके विषय में मैंने कहा, 'वह जो मेरे बाद आने वाला है मुझसे आगे है, क्योंकि वह मुझ से पहिले था'।" [16]क्योंकि उसकी परिपूर्णता में से हम सब ने पाया, अर्थात् अनुग्रह पर अनुग्रह। [17]क्योंकि व्यवस्था मूसा के द्वारा दी गई, पर अनुग्रह

** पद का कोष्ठक वाला भाग केवल कुछ हस्तलेखों में मिलता है 52 *पद 51 देखिए

और सच्चाई तो यीशु मसीह के द्वारा पहुंची। [18]परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा: *परमेश्वर एकलौता, जो पिता की गोद में है, उसी ने उसे प्रकट किया।

यूहन्ना की साक्षी

[19]यूहन्ना की साक्षी यह है: जब यहूदियों ने उसके पास यरूशलेम से याजकों और लेवियों को पूछने भेजा, "तू कौन है?" [20]तो उसने मान लिया—और अस्वीकार नहीं किया, वरन् मान ही लिया, "मैं मसीह नहीं हूं।" [21]तब उन्होंने उस से पूछा, "तो फिर क्या तू एलिय्याह है?" उसने कहा, "मैं नहीं हूँ।" "क्या तू वह नबी है?" उसने उत्तर दिया, "नहीं।" [22]तब उन्होंने उस से पूछा, "तो फिर तू है कौन कि हम अपने भेजने वालों को उत्तर दे सकें? तू अपने विषय में क्या कहता है?" [23]उसने कहा, "मैं जंगल में एक पुकारने वाले की आवाज़ हूँ, '**प्रभु का मार्ग सीधा करो**,' जैसा कि यशायाह नबी ने कहा था।" [24]ये तो फरीसियों की ओर से भेजे गए थे। [25]तब उन्होंने उस से पूछा, "जब तू न तो मसीह है, न एलिय्याह और न वह नबी, तब तू बपतिस्मा क्यों देता है?" [26]यूहन्ना ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं तो जल *से बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु तुम्हारे बीच में एक व्यक्ति खड़ा है, जिसे तुम नहीं जानते हो। [27]यह वही है जो मेरे पश्चात् आने वाला है और जिसकी जूती का बँध खोलने के योग्य मैं नहीं हूँ।" [28]ये बातें यरदन के पार बैतनिय्याह में हुई जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देता था।

परमेश्वर का मेम्ना

[29]दूसरे दिन उसने यीशु को अपनी ओर आते देख कर कहा, "देखो, परमेश्वर का मेम्ना जो जगत का पाप उठा ले जाता है। [30]यह वही है जिसके विषय में मैंने कहा था, 'मेरे पीछे एक पुरुष आता है जो मुझ से आगे हो गया है, क्योंकि वह मुझ से पहिले था।' [31]और मैं भी उसे नहीं पहचानता था, परन्तु मैं इसलिए जल *से बपतिस्मा देता हुआ आया कि वह इस्राएल पर प्रकट हो जाए।" [32]और यूहन्ना ने यह कहते हुए साक्षी दी: "मैंने आकाश से आत्मा को कबूतर के समान उतरते देखा है और वह उस पर ठहरा। [33]और मैं तो उसको नहीं पहचानता था, परन्तु जिसने मुझे जल से बपतिस्मा देने भेजा, उसी ने मुझसे कहा, 'जिस पर तू आत्मा को उतरते और ठहरते देखे, पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देने वाला यही है।' [34]और मैंने देखा और साक्षी दी है कि यही परमेश्वर का पुत्र है।"

चेलों का चुना जाना

[35]फिर दूसरे दिन यूहन्ना अपने चेलों में से दो के साथ खड़ा हुआ था, [36]और उसने यीशु को जाते हुए देख कर कहा, "देखो, परमेश्वर का मेम्ना।" [37]और दोनों चेले उसकी बात सुनकर यीशु के पीछे हो लिए। [38]यीशु ने मुड़कर उन्हें अपने पीछे आते देखा और उनसे कहा, "तुम किसकी खोज में हो?" उन्होंने कहा, "हे रब्बी (अर्थात् हे गुरु), तू कहाँ रहता है?" [39]उसने उनसे कहा, "आओ तो देख

18 *बाद की कुछ प्रतियों में, पुत्र
31 *या, जल में, अथवा जल के द्वारा
26 *यूनानी भाषा में इसका अनुवाद में, से या द्वारा भी हो सकता है

लोगे।" तब उन्होंने जाकर देखा कि वह कहाँ रहता है, और उस दिन उसके साथ ठहरे, क्योंकि संध्या के लगभग चार बज चुके थे। [40]जिन्होंने यूहन्ना की बात सुनी, और यीशु के पीछे हो लिए; उन दोनों में से एक शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास था। [41]उसने पहिले अपने सगे भाई शमौन को पाकर उस से कहा, "हमें मसीह, अर्थात् ख्रीष्ट मिल गया है।" [42]और वह उसे यीशु के पास लाया। यीशु ने उस पर दृष्टि करके कहा, "तू यूहन्ना का पुत्र शमौन है: तू कैफा, अर्थात् पतरस कहलाएगा।"

फिलिप्पुस का बुलाया जाना

[43]दूसरे दिन यीशु ने गलील को जाने का निश्चय किया, और फिलिप्पुस को पाकर उस से कहा,"मेरे पीछे चलाआ।" [44]फिलिप्पुस तो अन्द्रियास और पतरस के नगर बैतसैदा का था। [45]फिलिप्पुस ने नतनएल को पाकर उस से कहा, "जिसके विषय में मूसा ने व्यवस्था में, और नबियों ने भी लिखा है, वह हमें मिल गया है, अर्थात् यूसुफ का पुत्र, नासरत का यीशु।" [46]और नतनएल ने उस से कहा, "भला नासरत से भी कोई उत्तम वस्तु निकल सकती है?" फिलिप्पुस ने उस से कहा, "आकर देख ले।" [47]यीशु ने नतनएल को अपनी ओर आते देख कर उसके विषय में कहा, "देखो, वास्तव में एक इस्राएली जिसमें कोई कपट नहीं!" [48]नतनएल ने उस से कहा, "तू मुझे कैसे जानता है?" यीशु ने उसे उत्तर देते हुए कहा, "इस से पहिले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के वृक्ष तले था, मैंने तुझे देखा।" [49]नतनएल ने उसे उत्तर दिया, "रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है, तू इस्राएल का राजा है।" [50]यीशु ने उसे उत्तर देते हुए कहा, "मैंने तुझसे कहा कि मैंने तुझे अंजीर के वृक्ष तले देखा, क्या तू इसीलिए विश्वास करता है? तू इनसे भी बड़े बड़े काम देखेगा।" [51]उसने फिर कहा, "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि तुम स्वर्ग को खुला हुआ और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र पर, नीचे आते और ऊपर चढ़ते देखोगे।"

पानी का दाखरस में परिवर्तन

2 तीसरे दिन गलील के काना में एक विवाह था, और यीशु की माता वहाँ थी। [2]यीशु तथा उसके चेले भी उस विवाह में आमन्त्रित थे। [3]जब दाखरस घट गया, तो यीशु की माता ने उस से कहा, "उनके पास दाखरस नहीं है।" [4]तब यीशु ने उस से कहा, "हे नारी, मुझे तुझसे क्या काम? मेरा समय अभी नहीं आया।" [5]उसकी माता ने सेवकों से कहा, "जो कुछ वह तुमसे कहे, वही करना।" [6]वहाँ यहूदियों के शुद्ध करने की प्रथा के अनुसार पत्थर के छः मटके रखे थे, जिनमें लगभग *सत्तर या अस्सी लीटर समाता था। [7]यीशु ने उनसे कहा, "मटकों को पानी से भर दो।" और उन्होंने उनको मुहामुंह भर दिया। [8]तब उसने उनसे कहा, "अब कुछ निकाल कर भोज के प्रधान के पास ले जाओ।" और वे ले गए। [9]जब भोज के प्रधान ने वह पानी चखा जो दाखरस बन गया था, और नहीं जानता था कि कहाँ से आया—परन्तु जिन सेवकों ने पानी निकाला था वे जानते थे—तब भोज के प्रधान ने दूल्हे को बुलाया, [10]और उस से कहा, "प्रत्

6 दो या तीन मात्रिताय (यूनानी नाप)

लोगे।" तब उन्होंने जाकर देखा कि वह कहाँ रहता है, और उस दिन उसके साथ ठहरे, क्योंकि संध्या के लगभग चार बज चुके थे। [40]जिन्होंने यूहन्ना की बात सुनी, और यीशु के पीछे हो लिए; उन दोनों में से एक शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास था। [41]उसने पहिले अपने सगे भाई शमौन को पाकर उस से कहा, "हमें मसीह, अर्थात् ख्रीष्ट मिल गया है।" [42]और वह उसे यीशु के पास लाया। यीशु ने उस पर दृष्टि करके कहा, "तू यूहन्ना का पुत्र शमौन है : तू कैफा, अर्थात् पतरस कहलाएगा।"

फिलिप्पुस का बुलाया जाना

[43]दूसरे दिन यीशु ने गलील को जाने का निश्चय किया, और फिलिप्पुस को पाकर उस से कहा,"मेरे पीछे चलाआ।" [44]फिलिप्पुस तो अन्द्रियास और पतरस के नगर बैतसैदा का था। [45]फिलिप्पुस ने नतनएल को पाकर उस से कहा, "जिसके विषय में मूसा ने व्यवस्था में, और नबियों ने भी लिखा है, वह हमें मिल गया है, अर्थात् यूसुफ का पुत्र, नासरत का यीशु।" [46]और नतनएल ने उस से कहा, "भला नासरत से भी कोई उत्तम वस्तु निकल सकती है?" फिलिप्पुस ने उस से कहा, "आकर देख ले।" [47]यीशु ने नतनएल को अपनी ओर आते देख कर उसके विषय में कहा, "देखो, वास्तव में एक इस्राएली जिसमें कोई कपट नहीं!" [48]नतनएल ने उस से कहा, "तू मुझे कैसे जानता है?" यीशु ने उसे उत्तर देते हुए कहा, "इस से पहिले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के वृक्ष तले था, मैंने तुझे देखा।" [49]नतनएल ने उसे उत्तर दिया, "रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है, तू इस्राएल का राजा है।" [50]यीशु ने उसे उत्तर देते हुए कहा, "मैंने तुझसे कहा कि मैंने तुझे अंजीर के वृक्ष तले देखा, क्या तू इसीलिए विश्वास करता है? तू इनसे भी बड़े बड़े काम देखेगा।" [51]उसने फिर कहा, "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि तुम स्वर्ग को खुला हुआ और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र पर, नीचे आते और ऊपर चढ़ते देखोगे।"

पानी का दाखरस में परिवर्तन

2 तीसरे दिन गलील के काना में एक विवाह था, और यीशु की माता वहाँ थी। [2]यीशु तथा उसके चेले भी उस विवाह में आमन्त्रित थे। [3]जब दाखरस घट गया, तो यीशु की माता ने उस से कहा, "उनके पास दाखरस नहीं है।" [4]तब यीशु ने उस से कहा, "हे नारी, मुझे तुझसे क्या काम? मेरा समय अभी नहीं आया।" [5]उसकी माता ने सेवकों से कहा, "जो कुछ वह तुमसे कहे, वही करना।" [6]वहाँ यहूदियों के शुद्ध करने की प्रथा के अनुसार पत्थर के छः मटके रखे थे, जिनमें लगभग *सत्तर या अस्सी लीटर समाता था। [7]यीशु ने उनसे कहा, "मटकों को पानी से भर दो।" और उन्होंने उनको मुहामुंह भर दिया। [8]तब उसने उनसे कहा, "अब कुछ निकाल कर भोज के प्रधान के पास ले जाओ।" और वे ले गए। [9]जब भोज के प्रधान ने वह पानी चखा जो दाखरस बन गया था, और नहीं जानता था कि कहाँ से आया—परन्तु जिन सेवकों ने पानी निकाला था वे जानते थे—तब भोज के प्रधान ने दूल्हे को बुलाया, [10]और उस से कहा, "प्रत्येक

---

*2:6, दो या तीन मात्रिताय (यूनानी नाप)

साक्षी देते हो, कि मैंने कहा था, 'मैं मसीह नहीं हूँ, परन्तु उसके आगे भेजा गया हूँ।' [29]दूल्हा वही है जिसकी दुल्हिन है, परन्तु दूल्हे का मित्र जो खड़ा हुआ उसकी सुनता है, दूल्हे की आवाज़ सुनकर आनन्द-विभोर हो उठता है। और इसी प्रकार मेरा यह आनन्द पूरा हुआ है। [30]अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूँ।

[31]"जो ऊपर से आता है वह सब से बढ़कर है, जो पृथ्वी से है वह पृथ्वी का है और पृथ्वी की बातें करता है। वह जो स्वर्ग से आता है सब से बढ़कर है। [32]जो कुछ उसने देखा और सुना है वह उसी की साक्षी देता है, फिर भी कोई मनुष्य उसकी साक्षी ग्रहण नहीं करता। [33]जिसने उसकी साक्षी ग्रहण कर ली है उसने इस बात पर मोहर लगा दी है, कि परमेश्वर सच्चा है। [34]क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है वह परमेश्वर की बातें करता है, क्योंकि वह बिना किसी नाप के उसे आत्मा देता है। [35]पिता पुत्र से प्रेम करता है, और उसने उसी के हाथ सब कुछ सौंप दिया है। [36]जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है, परन्तु वह जो पुत्र की नहीं मानता जीवन नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का प्रकोप उस पर बना रहता है।"

यीशु और सामरी स्त्री

4 फिर जब प्रभु को मालूम हुआ कि फरीसियों ने सुना है कि यीशु यूहन्ना से अधिक चेले बनाता और उनको बपतिस्मा देता है—[2]यद्यपि यीशु स्वयं नहीं वरन् उसके चेले बपतिस्मा दे रहे थे—[3]तो वह यहूदिया को छोड़कर फिर गलील को चला। [4]और उसे सामरिया में से होकर जाना पड़ा। [5]अतः वह सामरिया के सूखार नामक एक नगर में आया, जो उस भूमि के पास है जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को दिया था; [6]और याकूब का कुआँ वहाँ था। अतः यात्रा से थककर यीशु कुएँ के पास यों ही बैठा था। उस समय लगभग *बारह बजे थे। [7]इतने में एक सामरी स्त्री जल भरने आई। यीशु ने उस से कहा, "मुझे पानी पिला।" [8]क्योंकि उसके चेले भोजन मोल लेने के लिए नगर में गए हुए थे। [9]इसलिए उस सामरी स्त्री ने उस से कहा, "यह कैसी बात है कि तू यहूदी होते हुए भी, मुझसे पानी मांगता है? मैं तो सामरी स्त्री हूँ!" यहूदी तो सामरियों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते। [10]यीशु ने उत्तर देते हुए उस से कहा, "यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती और यह भी कि वह कौन है जो तुझसे कहता है, 'मुझे पानी पिला,' तो तू उस से मांगती, और वह तुझे जीवन का जल देता।" [11]स्त्री ने उस से कहा, "*महोदय, तेरे पास जल भरने को कुछ नहीं है, और कुआँ गहरा है, तो वह जीवन का जल तेरे पास कहाँ से आया? [12]क्या तू हमारे पिता याकूब से भी बढ़कर है जिसने हमें यह कुआँ दिया, और जिसमें से उसने स्वयं, उसके पुत्रों और उसके पशुओं ने भी पिया?" [13]यीशु ने उत्तर देते हुए उस से कहा, "प्रत्येक जो इस जल में से पीता है, वह फिर प्यासा होगा, [14]परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, अनन्तकाल तक प्यासा न होगा, परन्तु वह जल जो मैं उसे दूंगा उसमें अनन्त जीवन के लिए उमण्डने वाला जल का सोता बन जाएगा।" [15]स्त्री ने उस से कहा, "महोदय, यह जल मुझे भी दे, जिस

6 *अर्थात्, दोपहर   11 *या, प्रभु

नहीं कर सकता। [6]जो शरीर से जन्मा है वह शरीर है, और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है। [7]आश्चर्य न कर कि मैंने तुझसे कहा, 'अवश्य है कि तू *नया जन्म ले।' [8]हवा जिधर चाहती है उधर चलती है और तू उसकी आवाज़ सुनता है, परन्तु यह नहीं जानता कि वह किधर से आती और किधर को जाती है। प्रत्येक जन जो आत्मा से जन्म लेता है वह ऐसा ही है।'' [9]नीकुदेमुस ने उत्तर देते हुए उस से कहा, ''यह सब कैसे हो सकता है?'' [10]यीशु ने उत्तर देते हुए उस से कहा, ''क्या तू इस्राएलियों का गुरु नहीं, फिर भी इन बातों को नहीं समझता? [11]मैं तुझ से सच सच कहता हूँ कि जो हम जानते हैं वही कहते हैं, और जिसे हमने देखा है उसी की साक्षी देते हैं, और तुम हमारी साक्षी ग्रहण नहीं करते। [12]जब मैंने तुम से पृथ्वी की बातें कहीं तो तुम विश्वास नहीं करते, यदि मैं तुमको स्वर्ग की बातें बताऊँ तो कैसे विश्वास करोगे? [13]और कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात् मनुष्य का पुत्र। [14]और जैसा मूसा ने जंगल में सांप को ऊँचा उठाया, उसी प्रकार अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचा उठाया जाए, [15]कि जो कोई विश्वास करे वह उसमें अनन्त जीवन पाए।

यूहन्ना की साक्षी

[16]''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। [17]क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा कि जगत को दोषी ठहराए, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। [18]जो उस पर विश्वास करता है वह दोषी नहीं ठहराया जाता। जो विश्वास नहीं करता वह दोषी ठहराया जा चुका है, क्योंकि उसने परमेश्वर के *एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। [19]और दोष यह है, कि ज्योति जगत में आ चुकी है, परन्तु मनुष्यों ने ज्योति की अपेक्षा अंधकार को अधिक प्रिय जाना, क्योंकि उनके कार्य बुरे थे। [20]क्योंकि प्रत्येक जो बुराई करता है, ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के पास नहीं आता कि कहीं उसके कार्य प्रकट न हो जाएं। [21]परन्तु वह जो सत्य पर चलता है ज्योति के पास आता है, जिस से यह प्रकट हो जाए कि उसके कार्य परमेश्वर की ओर से किए गए हैं।''

[22]इन बातों के पश्चात् यीशु और उसके चेले यहूदिया प्रदेश में आए, और वह वहां उनके साथ रहकर बपतिस्मा देता था। [23]यूहन्ना भी शालेम के निकट ऐनोन में बपतिस्मा देता था, क्योंकि वहाँ पानी अधिक था, और लोग बपतिस्मा लेते थे—[24]क्योंकि यूहन्ना उस समय तक बन्दीगृह में नहीं डाला गया था—[25]इसलिए यूहन्ना के चेलों का किसी यहूदी के साथ शुद्ध करने की रीति के विषय पर विवाद छिड़ गया। [26]और उन्होंने यूहन्ना के पास आकर उस से कहा, ''रब्बी, वह जो यरदन के उस पार तेरे साथ था, और जिसकी तू ने साक्षी दी है, देख वह बपतिस्मा दे रहा है, और सब लोग उस के पास आ रहे हैं।'' [27]यूहन्ना ने उत्तर देते हुए कहा, ''जब तक किसी मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाए तब तक वह कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। [28]तुम स्वयं मेरी

7 *अथवा, ऊपर से
18 *या, अद्भुत

ने इस कथन के द्वारा साक्षी दी थी: 'जो कुछ मैंने किया, वह सब उसने मुझे बता दिया।' [40]जब सामरियों ने आकर उस से आग्रह किया कि वह उनके साथ रहे, तो वह दो दिन उनके साथ रहा। [41]उसके वचन के कारण बहुत से अन्य लोगों ने भी उस पर विश्वास किया। [42]तब वे उस स्त्री से कहने लगे, "अब हम तेरे कहने से ही विश्वास नहीं करते, क्योंकि हमने स्वयं सुन लिया है, और हम जान गए हैं कि यही सचमुच जगत का उद्धारकर्त्ता है।"

[43]उन दो दिनों के पश्चात् वह वहां से निकल कर गलील को चला गया। [44]क्योंकि यीशु ने स्वयं साक्षी दी कि नबी अपने देश में आदर नहीं पाता। [45]जब वह गलील पहुंचा, तो गलीलियों ने उसका स्वागत किया। वे तो उन सब कामों को देख चुके थे जो उसने पर्व के दिनों में यरूशलेम में किए थे, क्योंकि वे स्वयं पर्व में वहां गए थे।

राजकर्मचारी के पुत्र की चंगाई

[46]तब वह फिर गलील के काना में आया जहां उसने जल को दाखरस बना दिया था। वहाँ एक राजकर्मचारी था, जिसका पुत्र कफरनहूम में बीमार था। [47]जब उसने सुना कि यीशु यहूदिया से गलील में आया हुआ है, तो वह उसके पास गया, और उस से निवेदन करने लगा कि चल कर मेरे पुत्र को चंगा कर दे— क्योंकि वह मरने पर था। [48]यीशु ने इस पर उस से कहा, "जब तक तुम चिन्ह और चमत्कार न देखोगे, तब तक विश्वास नहीं करोगे।" [49]राजकर्मचारी ने उस से कहा, "*महोदय, मेरे बालक के मरने से पहले चल।" [50]यीशु ने उस से कहा, "जा, तेरा पुत्र जीवित है।" उस मनुष्य ने यीशु के वचन पर विश्वास किया और चला गया। [51]जब वह मार्ग में ही था तो उसके दास उसे मिले और कहने लगे, "तेरा पुत्र जीवित है।" [52]उसने उनसे पूछा, "वह किस समय से अच्छा होने लगा था?" उन्होंने कहा, "कल दिन के एक बजे उसका ज्वर उतर गया।" [53]तब पिता समझ गया कि यह ठीक उसी समय हुआ जब यीशु ने कहा था, "तेरा पुत्र जीवित है।" और स्वयं उसने तथा उसके पूरे परिवार ने विश्वास किया। [54]यह दूसरा चिन्ह था जो यीशु ने यहूदिया से आकर गलील में दिखाया।

अड़तीस वर्ष के रोग से चंगाई

5 इन बातों के पश्चात् यीशु यहूदियों के *एक पर्व में यरूशलेम गया। [2]यरूशलेम में भेड़ फाटक के पास एक कुण्ड है, जो इब्रानी में बैतहसदा कहलाता है, जिसके पांच ओसारे हैं। [3]इनमें बहुत से ऐसे लोग पड़े रहते थे जो बीमार, अंधे, लंगड़े व सूखे अंग वाले थे। [4]*ये जल के हिलने की प्रतीक्षा करते थे, क्योंकि प्रभु का एक स्वर्गदूत किसी निश्चित समय पर कुण्ड में उतर कर जल को हिलाता था। जल के हिलते ही जो भी उसमें पहिले उतर जाता था, वह चाहे किसी रोग से पीड़ित क्यों न हो, चंगा हो जाता था। [5]वहाँ एक मनुष्य था जो अड़तीस वर्ष से बीमार था। [6]जब यीशु ने उसे वहाँ पड़ा हुआ देखा और जाना कि वह वहाँ उस दशा में बहुत दिनों से पड़ा है, तो उसने उस से पूछा, "क्या तू चंगा होना चाहता है?" [7]बीमार ने उसे उत्तर

---

49 *या, प्रभु 1 *या, फसह 4 *कुछ प्राचीन प्रामाणिक प्रतियों में पद

से कि मुझे फिर प्यास न लगे, और न ही जल भरने यहां तक आना पड़े।" 16यीशु ने उस से कहा, "जा, अपने पति को बुला कर यहाँ आ।" 17स्त्री ने उत्तर देते हुए उस से कहा, "मेरा कोई पति नहीं है।" यीशु ने उस से कहा, "तू ने ठीक कहा, 'मेरा कोई पति नहीं है,' 18क्योंकि तेरे पांच पति हो चुके हैं, और अब जो तेरे पास है वह भी तेरा पति नहीं है। यह तू ने सच ही कहा है।" 19उस स्त्री ने उस से कहा, "महोदय, मुझे लगता है कि तू नबी है। 20हमारे पूर्वजों ने इस पर्वत पर आराधना की, और तुम कहते हो कि यरूशलेम ही वह स्थान है जहाँ मनुष्यों को आराधना करनी है।" 21यीशु ने उस से कहा, "हे नारी, मेरा विश्वास कर कि समय आ रहा है जब तुम न तो इस पर्वत पर और न यरूशलेम में ही पिता की आराधना करोगे। 22तुम उसकी आराधना करते हो जिसे नहीं जानते, हम उसकी आराधना करते हैं जिसे हम जानते हैं, क्योंकि उद्धार यहूदियों में से ही है। 23परन्तु वह समय आ रहा है, वरन् आ गया है, जब सच्चे आराधक पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही आराधक चाहता है। 24परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके आराधक आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करें।" 25स्त्री ने उस से कहा, "मैं जानती हूँ कि मसीह जो ख्रीष्ट कहलाता है, आने वाला है। जब वह आएगा तो हमें सब कुछ बता देगा।" 26यीशु ने उस से कहा, "मैं जो तुझसे बोल रहा हूँ, वही हूँ।"

पके खेत

27इतने में उसके चेले आ गए और उसे एक स्त्री के साथ बातें करते देखकर अचम्भे में पड़ गए। फिर भी किसी ने यह नहीं पूछा कि तू क्या चाहता है अथवा तू इस स्त्री से क्यों बातें कर रहा है। 28उस स्त्री ने अपना घड़ा वहीं छोड़ दिया और नगर में जा कर लोगों से कहा, 29"आओ, एक मनुष्य को देखो जिसने वह सब कुछ जो मैंने किया मुझे बता दिया। कहीं यही तो मसीह नहीं?" 30वे नगर से निकलकर उसके पास जाने लगे। 31इसी समय उसके चेलों ने उस से निवेदन किया, "रब्बी, कुछ खा ले।" 32परन्तु यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मेरे पास खाने को ऐसा भोजन है जिसके विषय में तुम नहीं जानते हो।" 33चेले आपस में कहने लगे, "कहीं कोई उसके लिए भोजन तो नहीं लाया?" 34यीशु ने उनसे कहा, "मेरा भोजन यह है कि अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी करूँ और उसका कार्य पूरा करूँ। 35क्या तुम यह नहीं कहते, 'अब कटनी के चार महीने ही रह गए हैं'? देखो, मैं तुमसे कहता हूँ: अपनी आँखें उठाओ और खेतों पर दृष्टि करो कि वे कटनी के लिए पक चुके हैं। 36काटने वाले को अब मज़दूरी मिल रही है और वह अनन्त जीवन के लिए फल एकत्र कर रहा है कि बोने वाला और काटने वाला दोनों मिलकर आनन्द मना सकें। 37क्योंकि यहां यह कहावत सत्य ठहरती है: 'एक बोता है, और दूसरा काटता है।' 38मैंने तुमको वह खेत काटने भेजा जिसमें तुमने परिश्रम नहीं किया: दूसरों ने परिश्रम किया है और तुम उनके परिश्रम के फल में भागी हुए।"

सामरियों का विश्वास करना

39उस नगर के अनेक सामरियों ने यीशु पर विश्वास किया क्योंकि उस स्त्री

उसने उसे न्याय करने का भी अधिकार दिया, क्योंकि वह मनुष्य का पुत्र है। 28इस पर आश्चर्य न करो, क्योंकि समय आ रहा है जब कि वे सब जो कब्रों में हैं उसकी आवाज़ सुनकर, निकल आएँगे, 29जिन्होंने सुकर्म किए हैं जीवन के पुनरुत्थान के लिए, जिन्होंने कुकर्म किए हैं दण्ड के पुनरुत्थान के लिए।

यीशु के विषय में साक्षियां

30"मैं स्वयं अपनी ओर से कुछ नहीं कर सकता। जैसा सुनता हूँ, वैसा न्याय करता हूँ, और मेरा न्याय सच्चा है, क्योंकि मैं अपनी नहीं, वरन् अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूँ। 31यदि मैं केवल अपने विषय में साक्षी दूँ, तो मेरी साक्षी सत्य नहीं। 32मेरे विषय में साक्षी देने वाला एक और है, और मैं जानता हूँ कि जो साक्षी वह मेरे विषय में देता है वह सत्य है। 33तुम ने यूहन्ना से पुछवाया और उस ने सत्य की साक्षी दी है। 34परन्तु मैं अपने विषय में मनुष्य की साक्षी नहीं चाहता, पर ये बातें मैं इसलिए कहता हूँ, कि तुम्हें उद्धार प्राप्त हो। 35वह तो जलता एवं चमकता दीपक था और तुम्हें उसकी ज्योति में कुछ समय तक आनन्द मनाना अच्छा लगा। 36परन्तु जो साक्षी मेरी है वह यूहन्ना की साक्षी से बढ़कर है, क्योंकि पिता ने जिन कार्यों को पूर्ण करने के लिए मुझे सौंपा है अर्थात् वे कार्य जो मैं करता हूँ, वे ही मेरे विषय में साक्षी देते हैं कि पिता ने मुझे भेजा है। 37पिता जिसने मुझे भेजा, उसी ने मेरे विषय में साक्षी दी है। तुमने न तो उसका शब्द कभी सुना है और न उसका रूप देखा है। 38और उसका वचन तुम में बना नहीं रहता, क्योंकि जिसे उसने भेजा है, तुम उसका विश्वास नहीं करते। 39तुम पवित्रशास्त्रों में ढूँढ़ते हो क्योंकि तुम सोचते हो कि उनमें अनन्त जीवन मिलता है, और ये वे ही हैं जो मेरे विषय में साक्षी देते हैं, 40और तुम मेरे पास आना नहीं चाहते कि जीवन पाओ। 41मैं मनुष्यों से बड़ाई ग्रहण नहीं करता, 42पर मैं तुम्हें जानता हूँ कि तुम में परमेश्वर का प्रेम नहीं। 43मैं अपने पिता के नाम से आया हूँ और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते। यदि कोई और अपने ही नाम से आए तो तुम उसे ग्रहण करोगे। 44तुम कैसे विश्वास कर सकते हो, जब कि तुम स्वयं एक दूसरे से आदर चाहते हो और जो आदर अद्वैत परमेश्वर की ओर से है, पाना नहीं चाहते? 45यह न सोचो कि पिता के सम्मुख मैं तुम्हें दोषी ठहराऊंगा। तुम्हें दोषी ठहराने वाला तो मूसा है जिस पर तुमने आशा रखी है। 46क्योंकि यदि मूसा का विश्वास करते तो मेरा भी विश्वास करते, क्योंकि उसने मेरे विषय में लिखा है। 47पर यदि तुम उस के लेखों पर विश्वास नहीं करते तो मेरे वचनों पर कैसे विश्वास करोगे?"

पांच हज़ार को खिलाना

6 इन बातों के पश्चात्, यीशु गलील की झील—तिबिरियास—के उस पार चला गया। 2और एक विशाल भीड़ उसके पीछे चल रही थी, क्योंकि वे उन आश्चर्यकर्मों को देखते थे जिन्हें वह बीमारों पर करता था। 3यीशु ... चढ़कर अपने शिष्यों के पास ... 4यहूदियों के फसह का पर्व नि... 5जब यीशु ने ... विशाल भीड़ ... देखा, तो ... भोजन के ...

दिया, "महोदय, मेरे पास कोई मनुष्य नहीं जो मुझे जल के हिलाए जाते ही कुण्ड में उतारे। जब मैं उतरने को होता हूँ तो दूसरा मुझसे पहिले उतर जाता है।" 8यीशु ने उस से कहा, "उठ, अपना बिछौना उठा, और चल-फिर।" 9वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया, और अपना बिछौना उठाकर चलने लगा। और वह सब्त का दिन था।

10अत: यहूदियों ने उस से जो चंगा हुआ था कहा, "आज सब्त है अत: बिछौना उठाना तेरे लिए उचित नहीं है।" 11परन्तु उसने उन्हें उत्तर दिया, "जिसने मुझे चंगा किया उसी ने मुझ से कहा, 'अपना बिछौना उठा और चल-फिर'।" 12उन्होंने उस से पूछा, "वह कौन मनुष्य है जिसने तुझ से कहा, 'अपना बिछौना उठा और चल-फिर'?" 13परन्तु जो चंगा हो गया था, नहीं जानता था कि वह कौन है, क्योंकि वहां भीड़ होने के कारण यीशु उस स्थान से चुपचाप चला गया था। 14इसके पश्चात् यीशु ने उसे मन्दिर में पाकर उस से कहा, "देख, तू स्वस्थ हो गया है, फिर कभी पाप न करना, ऐसा न हो कि इस से भी कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।" 15उस व्यक्ति ने आकर यहूदियों को बताया कि वह यीशु था जिसने मुझे चंगा किया। 16इस कारण यहूदी लोग यीशु को सताने लगे, क्योंकि वह इन कामों को सब्त के दिन करता था। 17परन्तु उसने उन्हें उत्तर दिया, "मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं स्वयं भी काम करता हूँ।" 18इस बात के कारण यहूदी उसे मार डालने की और भी अधिक खोज में रहने लगे, क्योंकि वह न केवल सब्त के दिन की विधि को तोड़ रहा था वरन् परमेश्वर को अपना पिता कह कर अपने आप को परमेश्वर के बराबर ठहरा रहा था।

यीशु का अधिकार

19इसलिए यीशु ने उत्तर देते हुए उन से कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि पुत्र स्वयं कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जो कुछ पिता करता है, उन्हीं कामों को पुत्र भी ठीक उसी रीति से करता है। 20क्योंकि पिता पुत्र से प्रेम करता है, और वह उन सब कामों को उसे दिखाता है जिन्हें वह स्वयं करता है, और वह इनसे भी कहीं बड़े कामों को उसे दिखाएगा जिस से कि तुम आश्चर्य करो। 21क्योंकि जिस प्रकार पिता मृतकों को जिला उठाता है और उन्हें जीवन प्रदान करता है, उसी प्रकार पुत्र भी जिसे चाहता है, जीवन प्रदान करता है। 22क्योंकि पिता भी किसी का न्याय नहीं करता, परन्तु उसने न्याय करने का सारा कार्य पुत्र को सौंप दिया है, 23कि सब लोग पुत्र का वैसा ही आदर करें जैसा पिता का आदर करते हैं। जो पुत्र का आदर नहीं करता वह पिता का भी आदर नहीं करता जिसने उसे भेजा। 24मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, पर मृत्यु से पार होकर वह जीवन में प्रवेश कर चुका है। 25मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, वह समय आ रहा है, और अब है, जबकि मृतक लोग परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीएंगे। 26क्योंकि जिस प्रकार पिता स्वयं अपने में जीवन रखता है, उसी प्रकार उसने पुत्र को भी स्वयं में जीवन रखने का अधिकार दिया है, 27और

लगाई है।" [28]इसलिए उन्होंने उस से कहा, "परमेश्वर के कार्य करने के लिए हम क्या करें?" [29]यीशु ने उत्तर देते हुए उनसे कहा, "परमेश्वर का कार्य यह है कि जिसे उसने भेजा है तुम उस पर विश्वास करो।" [30]इसलिए उन्होंने उस से कहा, "फिर तू कौन सा चिन्ह दिखाता है कि हम देखें और तुझ पर विश्वास करें? तू कौन सा कार्य करता है? [31]हमारे पूर्वजों ने जंगल में मन्ना खाया, जैसा लिखा है, '**उसने उन्हें खाने के लिए स्वर्ग से रोटी दी**'।" [32]इसलिए यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, मूसा ने तुम्हें वह रोटी स्वर्ग से नहीं दी, परन्तु मेरा पिता ही है जो स्वर्ग से तुम्हें सच्ची रोटी देता है। [33]क्योंकि परमेश्वर की रोटी वह है जो स्वर्ग से उतरती है, और जगत को जीवन देती है।" [34]इसलिए उन्होंने उस से कहा, "प्रभु यह रोटी हमें सर्वदा दिया कर।" [35]यीशु ने उनसे कहा, "जीवन की रोटी मैं हूँ: जो मेरे पास आता है, भूखा न होगा, और वह जो मुझ पर विश्वास करता है, कभी प्यासा न होगा। [36]परन्तु मैंने तुमसे कहा था कि तुमने मुझे देख लिया है पर फिर भी विश्वास नहीं करते। [37]वह सब जो पिता मुझे देता है, मेरे पास आएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा मैं निश्चय ही उसे न निकालूँगा। [38]क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी करने के लिए स्वर्ग से उतरा हूँ। [39]जिसने मुझे भेजा उसकी इच्छा यह है, कि सब कुछ जो उसने मुझे दिया है, उसमें से कुछ भी न खोऊँ, परन्तु अन्तिम दिन में उसे जिला उठाऊँ। [40]क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है कि प्रत्येक जो पुत्र को देखता है, और उस पर विश्वास करता है, वह अनन्त जीवन पाए, और मैं स्वयं अन्तिम दिन में उसे जिला उठाऊंगा।"

[41]इसलिए यहूदी उस पर कुड़कुड़ाने लगे, क्योंकि उसने कहा, "वह रोटी जो स्वर्ग से उतरी, मैं हूँ।" [42]और वे कहने लगे, "क्या यह यूसुफ का पुत्र, यीशु नहीं, जिसके माता पिता को हम जानते हैं ? अब वह कैसे कहता है, 'मैं स्वर्ग से उतरा हूँ'।" [43]यीशु ने उत्तर देते हुए उनसे कहा, "आपस में मत कुड़कुड़ाओ। [44]मेरे पास कोई नहीं आ सकता, जब तक पिता जिसने मुझे भेजा उसे अपने पास खींच न ले, और मैं अंतिम दिन उसे जिला उठाऊंगा। [45]नबियों के लेखों में यह लिखा है, '**और वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे।**' हर एक जिसने पिता से सुना और सीखा है वह मेरे पास आता है। [46]यह नहीं कि किसी ने पिता को देखा है, परन्तु जो परमेश्वर की ओर से है, केवल उसी ने पिता को देखा है। [47]मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, जो विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी का है। [48]जीवन की रोटी मैं हूँ। [49]तुम्हारे पूर्वजों ने जंगल में मन्ना खाया, और वे तो मर गए। [50]यह वही रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है कि जो कोई उसमें से खाए वह न मरे। [51]जीवित रोटी जो स्वर्ग से उतरी, मैं हूँ। यदि कोई इस रोटी में से खाए तो वह सर्वदा जीएगा, और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिए दूँगा वह मेरा मांस है।"

मांस और लहू का महत्व

[52]इस पर यहूदी आपस में यह कह कर विवाद करने लगे, "यह मनुष्य हमें अपना मांस खाने को कैसे दे सकता है?" [53]यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न

लें?" [6]वह उसे परखने के लिए यह कह रहा था, क्योंकि वह स्वयं जानता था कि क्या करने को था। [7]फिलिप्पुस ने उत्तर दिया, "दो सौ *दीनार की भी रोटियाँ उनके लिए पर्याप्त न होंगी कि प्रत्येक को थोड़ी थोड़ी मिले।" [8]उसके चेलों में से एक अर्थात् शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास ने उस से कहा, [9]"यहां एक लड़का है जिसके पास जौ की पाँच रोटियाँ और दो मछलियां हैं, परन्तु इतने लोगों के लिए वे क्या हैं?" [10]यीशु ने कहा, "लोगों को बैठा दो।" उस स्थान पर बहुत घास थी। इसलिए पुरुष, जो गिनती में लगभग पांच हज़ार थे, बैठ गए। [11]तब यीशु ने रोटियाँ लीं, और धन्यवाद करके, उन्हें जो बैठे थे बांट दीं, उसी तरह मछलियों को भी जितनी वे चाहते थे बांट दीं। [12]जब वे तृप्त हो गए तो उसने अपने चेलों से कहा, "बचे हुए टुकड़ों को बटोर लो कि कुछ भी नष्ट न हो।" [13]इसलिए उन्होंने उसे बटोरा और जौ की पांच रोटियों के टुकड़ों से, जो खाने वालों से बच गए थे, बारह टोकरियाँ भरीं। [14]जब लोगों ने उस आश्चर्यकर्म को जिसे उसने किया था देखा तो उन्होंने कहा, "सचमुच यह वही नबी है जो जगत में आने वाला था।"

[15]इसलिए यीशु यह जानकर कि वे मुझे बलपूर्वक राजा बनाने के लिए ले जाना चाहते हैं, फिर पहाड़ पर अकेला चला गया।

पानी पर चलना

[16]जब संध्या हुई, तो उसके चेले झील के किनारे गए, [17]और नाव पर चढ़ने के पश्चात् वे कफरनहूम को जाने के लिए झील पार करने लगे। अंधेरा हो चुका था और यीशु अभी तक उनके पास नहीं आया था। [18]तेज़ आंधी चलने के कारण झील में लहरें उठने लगीं। [19]जब वे *पांच या छः किलोमीटर तक खेते चले गए, तो उन्होंने यीशु को झील पर चलते और नाव के समीप आते हुए देखा, और वे डर गए। [20]परन्तु उसने उनसे कहा, "मैं हूँ, डरो मत।" [21]वे उसे नाव में चढ़ा लेने को तैयार हुए और तुरन्त नाव उस स्थान पर जा पहुँची जहाँ वे जा रहे थे।

जीवन की रोटी

[22]दूसरे दिन भीड़ को जो झील के उस पार रह गई थी यह पता चला कि केवल एक छोटी नाव वहाँ थी, और यह भी कि यीशु चेलों के साथ नाव पर नहीं चढ़ा था, परन्तु केवल चेले ही उस पार चले गए थे। [23]तब तिबिरियास से उस स्थान के निकट दूसरी छोटी नावें आईं, जहां उन्होंने प्रभु के धन्यवाद देने के पश्चात् रोटी खाई थी। [24]जब भीड़ ने देखा कि न तो वहां यीशु है, न ही उसके चेले, तो वे स्वयं छोटी-छोटी नावों पर चढ़कर यीशु को ढूँढ़ते हुए कफरनहूम पहुँचे। [25]उन्होंने जब उसे झील के दूसरी ओर पाया, तो उस से कहा, "रब्बी, तू यहां कब आया?" [26]यीशु ने उन्हें उत्तर देते हुए कहा, "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, तुम मुझे इसलिए नहीं ढूँढ़ते कि तुमने चिन्ह देखे, परन्तु इसलिए कि तुमने रोटियाँ खाईं और तृप्त हुए। [27]उस भोजन के लिए परिश्रम न करो जो नाश हो जाता है, परन्तु उस भोजन के लिए जो अनन्त जीवन तक बना रहता है, जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा क्योंकि पिता अर्थात् परमेश्वर ने उसी पर अपनी छाप

*एक दीनार लगभग एक दिन की साधारण मज़दूरी

19 *मूल में, 25 या 30 स्तादिया दूरी

है। [7]जगत तुमसे घृणा नहीं कर सकता परन्तु मुझ से करता है, क्योंकि मैं इस बात की साक्षी देता हूँ कि उसके कार्य बुरे हैं। [8]तुम स्वयं ही पर्व में जाओ, मैं इस पर्व में अभी नहीं जाता, क्योंकि मेरा समय अब तक पूर्णरूप से नहीं आया।" [9]उनसे ये बातें कहने के पश्चात् वह गलील में ठहर गया।

[10]परन्तु जब उसके भाई पर्व में चले गए, तब वह स्वयं भी गया, सबके सामने नहीं, परन्तु मानो गुप्त रीति से। [11]इसलिए यहूदी उसे पर्व में खोज रहे थे, और कह रहे थे, "वह कहाँ है?" [12]और भीड़ उसके सम्बन्ध में बुड़बुड़ाने लगी। कुछ लोग कह रहे थे, "वह भला मनुष्य है।" अन्य कह रहे थे, "नहीं वह लोगों को भरमाता है।" [13]फिर भी यहूदियों के भय के कारण कोई उसके विषय में खुलकर नहीं बोल रहा था।

यीशु का उपदेश

[14]परन्तु जब पर्व के आधे दिन बीत गए तो यीशु मन्दिर में गया और उपदेश देने लगा। [15]इसलिए यहूदी चकित होकर कहने लगे, "यह मनुष्य बिना शिक्षा पाए कैसे ज्ञानी बन गया?" [16]तब यीशु ने उत्तर देते हुए कहा, "यह उपदेश मेरा नहीं, परन्तु उसका है जिसने मुझे भेजा। [17]यदि कोई मनुष्य उसकी इच्छा पूरी करने को तैयार है तो वह इस शिक्षा के विषय जान जाएगा कि यह परमेश्वर की ओर से है या मैं अपनी ओर से कहता हूँ। [18]जो अपनी ओर से कहता है वह अपनी ही बड़ाई चाहता है, परन्तु जो अपने भेजने वाले की बड़ाई चाहता है, वही सच्चा है और उसमें कोई अधर्म नहीं। [19]क्या मूसा ने तुम्हें व्यवस्था नहीं दी और फिर भी तुम में से कोई व्यवस्था का पालन नहीं करता? तुम क्यों मुझे मार डालने की खोज में हो?" [20]भीड़ ने उत्तर दिया, "तुझ में दुष्टात्मा है! कौन तुझे मार डालने की खोज में है?" [21]यीशु ने उत्तर देते हुए उनसे कहा, "मैंने एक कार्य किया और तुम सब आश्चर्य करते हो। [22]इसी कारण मूसा ने तुम्हें खतना की विधि दी है—इसलिए नहीं कि वह मूसा की है, परन्तु पूर्वजों की ओर से, और तुम सब्त के दिन मनुष्य का खतना करते हो। [23]यदि सब्त के दिन मनुष्य का खतना इसलिए किया जाता है कि मूसा की व्यवस्था का उल्लंघन न हो, तो इसलिए कि मैंने सब्त के दिन एक मनुष्य को सर्वांग चंगा कर दिया तुम मुझसे क्रोधित हो? [24]मुँह देखा न्याय मत करो, परन्तु धार्मिकता से न्याय करो।"

क्या यीशु ही मसीह है?

[25]अतः यरूशलेम के कुछ लोग कहने लगे, "क्या यह वही मनुष्य नहीं जिसे वे मार डालने का प्रयत्न कर रहे हैं? [26]पर देखो, वह तो खुल्लमखुल्ला बातें कर रहा है, और वे उससे कुछ नहीं कह रहे हैं। कहीं अधिकारियों को भी तो यह नहीं मालूम हो गया कि यही मसीह है? [27]फिर भी हम जानते हैं कि यह मनुष्य कहाँ का है, परन्तु जब मसीह आएगा, तो कोई भी न जानेगा कि वह कहां का है।" [28]तब यीशु ने मंदिर में शिक्षा देते हुए पुकार कर कहा, "तुम मुझे जानते हो, और यह भी जानते हो कि मैं कहां से आया हूँ। मैं अपने आप से नहीं आया, परन्तु जिसने मुझे भेजा वह सच्चा है, जिसे तुम नहीं जानते। [29]मैं उसे जानता हूँ क्योंकि मैं उसकी ओर से हूँ, और उसी ने मुझे भेजा है।" [30]अतः

खाओ और उसका लहू न पियो, तुम में जीवन नहीं। [54]जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है, अनन्त जीवन उसका है, और मैं अन्तिम दिन में उसे जिला उठाऊँगा। [55]मेरा मांस तो सच्चा भोजन है और मेरा लहू सच्ची पीने की वस्तु है। [56]जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है, वह मुझमें बना रहता है और मैं उसमें। [57]जिस प्रकार जीवित पिता ने मुझे भेजा, और मैं पिता के कारण जीवित हूँ, इसी प्रकार वह भी जो मुझे खाता है मेरे कारण जीवित रहेगा। [58]यही वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरी है; वैसी नहीं जो पूर्वजों ने खाई और मर गए। इस रोटी को जो खाता है, वह सर्वदा जीवित रहेगा।" [59]उसने ये बातें आराधनालय में उस समय कहीं, जब वह कफरनहूम में शिक्षा देता था।

[60]इसलिए उसके चेलों में से बहुतों ने जब यह सुना तो कहा, "यह तो कठिन बात है: इसे कौन सुन सकता है?" [61]परन्तु यीशु ने यह जानकर कि उसके चेले इस पर कुड़कुड़ा रहे हैं, उनसे कहा, "क्या तुम्हें इससे ठोकर लगती है? [62]यदि तुम मनुष्य के पुत्र को ऊपर जाते देखो जहां वह पहिले था, तो क्या करोगे? [63]आत्मा ही है जो जीवन देता है, शरीर से कुछ लाभ नहीं। जो बातें मैंने तुमसे कही हैं, वे आत्मा और जीवन हैं। [64]परन्तु तुम में से कुछ हैं जो विश्वास नहीं करते।" क्योंकि यीशु आरम्भ से जानता था कि विश्वास न रखने वाले कौन हैं, और वह कौन है जो *मुझे पकड़वाएगा। [65]और उसने कहा, "मैंने तुमसे इसी कारण कहा है कि कोई मेरे पास नहीं आ सकता, जब तक कि पिता की ओर से उसे न दिया गया हो।"

पतरस का विश्वास

[66]इसके परिणामस्वरूप उसके शिष्यों में से बहुत से वापस चले गए और फिर उसके साथ नहीं चले। [67]इसलिए यीशु ने उन बारहों से कहा, "क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?" [68]शमौन पतरस ने उसे उत्तर दिया, "प्रभु, हम किसके पास जाएं? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे पास हैं। [69]हमने विश्वास किया है, और जान लिया है कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है।" [70]यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या मैंने स्वयं तुम बारहों को नहीं चुना? पर फिर भी तुम में से एक शैतान है।" [71]उसका अर्थ शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा से था क्योंकि उन बारहों में से वही एक उसे पकड़वाने पर था।

यीशु का फसह के पर्व में जाना

7 इन बातों के पश्चात् यीशु गलील में घूमता-फिरता रहा। वह यहूदिया में नहीं जाना चाहता था क्योंकि यहूदी उसे मार डालने की खोज में थे। [2]यहूदियों का त्यौहार अर्थात् झोपड़ियों का पर्व निकट था। [3]इसलिए उसके भाइयों ने उस से कहा, "यहाँ से प्रस्थान करके यहूदिया में चला जा, कि तेरे चेले भी उन कामों को देख सकें जिन्हें तू करता है। [4]क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो प्रसिद्ध होना चाहता हो और छिप कर कुछ करता हो। यदि तू इन कामों को करता है तो अपने आप को जगत पर प्रकट कर।" [5]क्योंकि उसके भाई भी उस पर विश्वास नहीं करते थे। [6]इसलिए यीशु ने उनसे कहा, "मेरा समय अब तक नहीं आया, परन्तु तुम्हारे लिए सब समय उपयुक्त

64 *या, मेरे साथ विश्वासघात करेगा

व्यभिचारिणी स्त्री को क्षमा

8 परन्तु यीशु जैतून पर्वत पर गया। [2]भोर को वह फिर मंदिर में आया। सब लोग उसके पास आने लगे, और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा। [3]तब फरीसी और शास्त्री एक स्त्री को लाए जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी और उसे बीच में खड़ा किया। [4]उन्होंने उस से कहा, "गुरु, यह स्त्री व्यभिचार करते हुए पकड़ी गई है। [5]व्यवस्था में तो मूसा ने हमें ऐसी स्त्री को पथराव करने की आज्ञा दी है, तू इस विषय में क्या कहता है?" [6]वे उसे परखने के लिए ऐसा कह रहे थे, जिस से कि उस पर दोष लगाने के लिए कोई आधार मिले। परन्तु यीशु झुककर अपनी उंगली से भूमि पर लिखने लगा। [7]परन्तु जब वे बार बार उस से पूछते रहे, तो उसने सीधे खड़े होकर उनसे कहा, "तुम में जो निष्पाप हो, वही सब से पहिले उसे पत्थर मारे।" [8]वह फिर झुककर उंगली से भूमि पर लिखने लगा। [9]जब उन्होंने यह सुना, तो पहिले वृद्ध तब एक एक करके सब जाने लगे, और वह अकेला रह गया, और स्त्री वहीं बीच में खड़ी रह गई। [10]तब यीशु ने सीधे खड़े होकर उस से कहा, "हे स्त्री, वे कहां गए? क्या किसी ने तुझे दण्ड की आज्ञा नहीं दी?" [11]उसने कहा, "किसी ने भी नहीं, प्रभु।" तब यीशु ने कहा, "मैं भी तुझे दण्ड की आज्ञा नहीं देता। जा, अब से फिर पाप न करना।"]

यीशु जगत की ज्योति

[12]यीशु ने फिर लोगों से कहा, "जगत की ज्योति मैं हूँ। जो मेरे पीछे हो लेगा वह अंधकार में न चलेगा, वरन् जीवन की ज्योति पाएगा।" [13]इसलिए फरीसियों ने उस से कहा, "तू अपनी साक्षी स्वयं दे रहा है, तेरी साक्षी सच्ची नहीं।" [14]यीशु ने उत्तर देते हुए उनसे कहा, "यद्यपि अपनी साक्षी मैं स्वयं देता हूँ मेरी साक्षी सत्य है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहां से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ। पर तुम नहीं जानते कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ। [15]तुम लोग शरीर के अनुसार न्याय करते हो, मैं किसी का न्याय नहीं करता। [16]यदि मैं न्याय भी करूँ, तो मेरा न्याय सच्चा है, क्योंकि मैं अकेला नहीं वरन् इसमें मैं हूँ और मेरा भेजने वाला भी है। [17]तुम्हारी व्यवस्था में भी लिखा है कि दो मनुष्यों की साक्षी सत्य होती है। [18]एक मैं हूँ जो अपनी साक्षी स्वयं देता हूँ और दूसरा है पिता जिसने मुझे भेजा और मेरे विषय में साक्षी देता है।" [19]तब वे उस से कहने लगे, "तेरा पिता कहाँ है?" यीशु ने उत्तर दिया, "तुम न तो मुझे जानते हो और न मेरे पिता को, यदि तुम मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जानते।" [20]ये वचन उसने मंदिर में शिक्षा देते समय कोषागार में कहे, और किसी ने उसे न पकड़ा, क्योंकि उसका समय अब तक नहीं आया था।

[21]उसने फिर उनसे कहा, "मैं जाता हूँ और तुम मुझे ढूँढ़ोगे, और अपने पाप में मरोगे, जहाँ मैं जा रहा हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते।" [22]इस पर यहूदी कहने लगे, "कहीं वह अपने आप को मार तो नहीं डालेगा? वह कहता है, 'जहाँ मैं जा रहा हूँ, तुम नहीं आ सकते'?" [23]उसने उनसे कहा, "तुम नीचे के हो, मैं ऊपर का हूँ, तुम इस संसार के हो, मैं इस संसार का नहीं हूँ। [24]इसलिए मैंने तुमसे कहा कि तुम अपने पापों में मरोगे, क्योंकि जब तक तुम विश्वास न करो कि मैं वही हूँ, तुम

वे उसे पकड़ने का प्रयत्न करने लगे, फिर भी किसी ने उस पर हाथ न लगाया, क्योंकि उसका समय अब तक न आया था। [31]परन्तु भीड़ में से बहुत से लोगों ने उस पर विश्वास किया और कहने लगे, "जब मसीह आएगा तो क्या वह इस मनुष्य की अपेक्षा और अधिक चिन्ह दिखाएगा?" [32]फरीसियों ने भीड़ को उसके विषय में कानाफूसी करते सुना, और महायाजकों और फरीसियों ने उसे पकड़ने के लिए सिपाहियों को भेजा। [33]अतः यीशु ने कहा, "मैं थोड़ी देर तक और तुम्हारे साथ हूँ, तब मैं उसके पास जाता हूँ जिसने मुझे भेजा है। [34]तुम मुझे ढूँढ़ोगे, पर नहीं पाओगे, और जहां मैं हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते।" [35]अतः यहूदियों ने आपस में कहा, "यह मनुष्य कहाँ जाना चाहता है कि हम उसे नहीं पाएँगे? क्या वह उनके पास जाना चाहता है जो यूनानियों में तित्तर-बित्तर होकर रहते हैं और यूनानियों को भी शिक्षा देगा? [36]यह कैसी बात है जो उसने कही, 'तुम मुझे ढूँढ़ोगे और न पाओगे, और जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते'?"

[37]पर्व के अन्तिम दिन, जो मुख्य दिन था, यीशु खड़ा हुआ, और पुकार कर कहने लगा, "यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए। [38]जो मुझ पर विश्वास करता है, जैसा कि पवित्रशास्त्र में कहा गया है, 'उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी'।" [39]परन्तु यह उसने पवित्र आत्मा के विषय में कहा, जिसे, उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे, इसलिए कि पवित्र आत्मा अब तक नहीं दिया गया था क्योंकि यीशु अब तक महिमा में नहीं पहुंचा था। [40]तब भीड़ में से कुछ ने जब इन वचनों को सुना तो कहा, "यह निश्चय वह नहीं है।" [41]दूसरे कहने लगे, "यही मसीह है।" फिर कुछ अन्य लोग कहने लगे, "क्यों, क्या मसीह निश्चय गलील से आएगा? [42]क्या पवित्रशास्त्र ने यह नहीं कहा है कि मसीह दाऊद के वंश से, और बैतलहम गांव से आएगा, जहां दाऊद रहता था?" [43]इसलिए उसके कारण भीड़ में फूट पड़ गई। [44]उनमें से कुछ उसे पकड़ना चाहते थे, परन्तु किसी ने उस पर हाथ न लगाया।

यहूदी अगुवों का अविश्वास

[45]तब सिपाही लौटकर महायाजकों और फरीसियों के पास आए। उन्होंने उनसे पूछा, "तुम उसे क्यों नहीं लाए?" [46]सिपाहियों ने उत्तर दिया, "आज तक ऐसी बातें किसी ने कभी नहीं कहीं जैसी वह कहता है।" [47]तब फरीसियों ने उनको उत्तर दिया, "कहीं तुम भी तो नहीं भरमाए गए हो? [48]क्या अधिकारियों या फरीसियों में से उस पर किसी ने विश्वास किया है? [49]परन्तु यह भीड़ जो व्यवस्था नहीं जानती, शापित है।" [50]नीकुदेमुस ने—जो पहिले उसके पास आया था और उनमें से एक था—उनसे कहा, [51]"क्या हमारी व्यवस्था किसी मनुष्य को, जब तक पहिले उसकी सुन न ले और यह न जान ले कि वह क्या करता है, दोषी ठहराती है?" [52]उन्होंने उसे उत्तर देते हुए कहा, "कहीं तू भी तो गलील का नहीं? ढूँढ़ और देख गलील से कोई नबी प्रकट नहीं होने का।"

[53]*[और सब अपने घर को चले गए।

53 *कुछ प्राचीन प्रतियों में यूहन्ना 7:53 से 8:11 तक पद नहीं हैं

[47]जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर की बातें सुनता है—तुम इसलिए उन्हें नहीं सुनते क्योंकि तुम परमेश्वर के नहीं हो।"

यीशु का अस्तित्व इब्राहीम से पूर्व

[48]यहूदियों ने उत्तर देते हुए उस से कहा, "क्या हम ठीक नहीं कहते कि तू सामरी है और तुझमें दुष्टात्मा है?" [49]यीशु ने उत्तर दिया, "मुझ में दुष्टात्मा नहीं है, परन्तु मैं अपने पिता का आदर करता हूँ, और तुम मेरा निरादर करते हो। [50]मैं अपनी प्रतिष्ठा नहीं चाहता, एक है जो चाहता है और न्याय करता है। [51]मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि यदि कोई मेरे वचन का पालन करे तो वह कभी मृत्यु को न देखेगा।" [52]यहूदियों ने उस से कहा, "अब हम जान गए कि तुझमें दुष्टात्मा है। इब्राहीम मर गया और नबी भी, पर तू कहता है कि यदि कोई मेरे वचन का पालन करे, तो वह कभी मृत्यु का स्वाद न चखेगा। [53]निश्चय तू हमारे पिता इब्राहीम से बड़ा नहीं जो मर गया। नबी भी मर गए, तू अपने आपको क्या समझता है?" [54]यीशु ने उत्तर दिया, "यदि मैं स्वयं अपने को प्रतिष्ठा दूँ, तो मेरी प्रतिष्ठा कुछ भी नहीं। मुझे प्रतिष्ठा देने वाला मेरा पिता है, जिसके विषय में तुम कहते हो कि वह हमारा परमेश्वर है। [55]तुम ने तो उसे नहीं जाना, परन्तु मैं उसे जानता हूँ। यदि मैं कहूँ कि मैं उसे नहीं जानता तो मैं तुम्हारे समान झूठा ठहरूँगा, परन्तु मैं उसे जानता हूँ, और उसके वचन का पालन करता हूँ। [56]तुम्हारा पिता इब्राहीम मेरा दिन देखने की आशा से आनन्दित हुआ। उसने देखा भी, और मगन हुआ।" [57]इस पर यहूदियों ने उस से कहा, "तू अभी पचास वर्ष का भी नहीं। क्या तू ने इब्राहीम को देखा है?" [58]यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, इस से पहिले कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ।" [59]तब उन्होंने उसे पथराव करने के लिए पत्थर उठाए, परन्तु यीशु छिपकर मंदिर से बाहर निकल गया।

जन्म से अन्धे को दृष्टिदान

9 फिर जाते हुए उसने एक मनुष्य को देखा जो जन्म से अन्धा था। [2]और उसके चेलों ने यह कहते हुए उस से पूछा, "रब्बी, किसने पाप किया, इस मनुष्य ने या इसके माता पिता ने कि यह अन्धा जन्मा?" [3]यीशु ने उत्तर दिया, "न तो इस मनुष्य ने पाप किया, न ही इसके माता पिता ने, पर यह इसलिए हुआ कि परमेश्वर के कार्य इसमें प्रकट हों। [4]अवश्य है कि जिसने मुझे भेजा है उसके कार्य हम दिन ही दिन में करें। रात आने वाली है, जब कोई मनुष्य कार्य नहीं कर सकेगा। [5]जब तक मैं हूँ, मैं जगत की ज्योति हूँ।" [6]जब वह यह कह चुका, तो उसने भूमि पर थूका, और उस थूक से मिट्टी सानी तब उस मिट्टी को अंधे की आँखों पर लगाया, [7]और उस से कहा, "जा शीलोह के कुण्ड में धो ले" (शीलोह का अर्थ है, भेजा हुआ)। अतः उसने जाकर धोया, और देखता हुआ लौट आया। [8]तब पड़ोसी, और जिन्होंने पहिले उसे भीख मांगते देखा था, कहने लगे, "क्या यह वही नहीं है जो बैठा भीख मांगा करता था?" [9]दूसरे कहने लगे, "यह वही है," अन्य लोगों ने कहा, "नहीं, परन्तु यह उसके समान है।" वह कहता रहा, "मैं वही हूँ।" [10]इसलिए वे उस से पूछने लगे, "तब तेरी आँखें कैसे खुल गईं?" [11]उसने उत्तर दिया, "यीशु नामक व्यक्ति ने

अपने पापों में मरोगे।" [25]वे उस से कहने लगे, "तू कौन है?" यीशु ने उनसे कहा, "*वही जो मैं तुमसे आरम्भ ही से कहता आ रहा हूँ। [26]मुझे तुम्हारे सम्बन्ध में बहुत सी बातें कहनी हैं, और न्याय करना है, परन्तु जिसने मुझे भेजा वह सच्चा है, और वे बातें जो मैंने उस से सुनीं वे ही मैं जगत से कहता हूँ।" [27]वे यह नहीं समझे कि वह उनसे पिता के विषय में कह रहा था। [28]इसलिए यीशु ने कहा, "जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊँचा उठाओगे तब तुम जानोगे कि मैं वही हूँ, और मैं अपने आप से कुछ नहीं करता, परन्तु जैसे पिता ने मुझे सिखाया है मैं ये बातें कहता हूँ। [29]जिसने मुझे भेजा वह मेरे साथ है। उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा है, क्योंकि मैं सदा वे ही कार्य करता हूँ जिस से वह प्रसन्न होता है।" [30]जब उसने ये बातें कहीं तो बहुतों ने उस पर विश्वास किया।

वास्तविक स्वतंत्रता

[31]तब यीशु उन यहूदियों से जिन्होंने उस पर विश्वास किया था, कहने लगा, "यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे, [32]और तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुमको स्वतंत्र करेगा।" [33]उन्होंने उसे उत्तर दिया, "हम इब्राहीम के वंशज हैं, और अब तक किसी के दास नहीं हुए तो फिर तू कैसे कहता है 'तुम स्वतंत्र हो जाओगे'?" [34]यीशु ने उनको उत्तर दिया, "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, "हर एक जो पाप करता है पाप का दास है। [35]दास सर्वदा घर में नहीं रहता, पुत्र सर्वदा रहता है। [36]इसलिए यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा तो तुम सचमुच स्वतंत्र हो जाओगे। [37]मैं जानता हूँ कि तुम इब्राहीम के वंशज हो फिर भी मुझे मार डालना चाहते हो, क्योंकि मेरा वचन तुम्हारे हृदय में स्थान नहीं पाता। [38]मैं वे ही बातें कहता हूँ जिन्हें अपने पिता के यहाँ देखा है; इसी तरह तुम भी वे ही कार्य करते हो जिन्हें तुमने अपने पिता से सुना है।" [39]उन्होंने उत्तर देते हुए उस से कहा, "हमारा पिता तो इब्राहीम है।" यीशु ने उनसे कहा, "यदि तुम इब्राहीम के सन्तान हो तो इब्राहीम के समान कार्य करो। [40]परन्तु अब तुम मुझ जैसे मनुष्य को मार डालना चाहते हो जिसने तुम्हें उस सत्य को बताया जो मैंने परमेश्वर से सुना—ऐसा तो इब्राहीम ने नहीं किया। [41]तुम अपने पिता के कार्यों को कर रहे हो।" उन्होंने उस से कहा, "हम व्यभिचार से नहीं जन्मे, हमारा एक ही पिता है *अर्थात्* परमेश्वर।" [42]यीशु ने उनसे कहा, "यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, तो तुम मुझसे प्रेम करते, क्योंकि मैं परमेश्वर से निकलकर आया हूँ: मैं अपनी इच्छा से नहीं आया, परन्तु उसी ने मुझे भेजा है। [43]जो मैं कह रहा हूँ उसे तुम क्यों नहीं समझते? यह इसलिए है क्योंकि तुम मेरा वचन नहीं सुन सकते। [44]तुम अपने पिता शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ ही से हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर नहीं रहा, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं। जब भी वह झूठ बोलता तो अपने स्वभाव से ही बोलता है, क्योंकि वह झूठा है और झूठ का पिता है। [45]मैं सच बोलता हूँ, इसलिए तुम मेरा विश्वास नहीं करते। [46]तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है? यदि मैं सच बोलता हूँ, तो तुम मेरा विश्वास क्यों नहीं करते?

*या, मैं आरम्भ ही से तुमसे क्या कहता आ रहा हूं?

[47]जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर की बातें सुनता है—तुम इसलिए उन्हें नहीं सुनते क्योंकि तुम परमेश्वर के नहीं हो।"

यीशु का अस्तित्व इब्राहीम से पूर्व

[48]यहूदियों ने उत्तर देते हुए उस से कहा, "क्या हम ठीक नहीं कहते कि तू सामरी है और तुझमें दुष्टात्मा है?" [49]यीशु ने उत्तर दिया, "मुझ में दुष्टात्मा नहीं है, परन्तु मैं अपने पिता का आदर करता हूँ, और तुम मेरा निरादर करते हो। [50]मैं अपनी प्रतिष्ठा नहीं चाहता, एक है जो चाहता है और न्याय करता है। [51]मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि यदि कोई मेरे वचन का पालन करे तो वह कभी मृत्यु को न देखेगा।" [52]यहूदियों ने उस से कहा, "अब हम जान गए कि तुझमें दुष्टात्मा है। इब्राहीम मर गया और नबी भी, पर तू कहता है कि यदि कोई मेरे वचन का पालन करे, तो वह कभी मृत्यु का स्वाद न चखेगा। [53]निश्चय तू हमारे पिता इब्राहीम से बड़ा नहीं जो मर गया। नबी भी मर गए, तू अपने आपको क्या समझता है?" [54]यीशु ने उत्तर दिया, "यदि मैं स्वयं अपने को प्रतिष्ठा दूँ, तो मेरी प्रतिष्ठा कुछ भी नहीं। मुझे प्रतिष्ठा देने वाला मेरा पिता है, जिसके विषय में तुम कहते हो कि वह हमारा परमेश्वर है। [55]तुम ने तो उसे नहीं जाना, परन्तु मैं उसे जानता हूँ। यदि मैं कहूँ कि मैं उसे नहीं जानता तो मैं तुम्हारे समान झूठा ठहरूँगा, परन्तु मैं उसे जानता हूँ, और उसके वचन का पालन करता हूँ। [56]तुम्हारा पिता इब्राहीम मेरा दिन देखने की आशा से आनन्दित हुआ। उसने देखा भी, और मगन हुआ।" [57]इस पर यहूदियों ने उस से कहा, "तू अभी पचास वर्ष का भी नहीं। क्या तू ने इब्राहीम को देखा है?" [58]यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, इस से पहिले कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ।" [59]तब उन्होंने उसे पथराव करने के लिए पत्थर उठाए, परन्तु यीशु छिपकर मंदिर से बाहर निकल गया।

जन्म से अन्धे को दृष्टिदान

9 फिर जाते हुए उसने एक मनुष्य को देखा जो जन्म से अन्धा था। [2]और उसके चेलों ने यह कहते हुए उस से पूछा, "रब्बी, किसने पाप किया, इस मनुष्य ने या इसके माता पिता ने कि यह अन्धा जन्मा?" [3]यीशु ने उत्तर दिया, "न तो इस मनुष्य ने पाप किया, न ही इसके माता पिता ने, पर यह इसलिए हुआ कि परमेश्वर के कार्य इसमें प्रकट हों। [4]अवश्य है कि जिसने मुझे भेजा है उसके कार्य हम दिन ही दिन में करें। रात आने वाली है, जब कोई मनुष्य कार्य नहीं कर सकेगा। [5]जब तक मैं हूँ, मैं जगत की ज्योति हूँ।" [6]जब वह यह कह चुका, तो उसने भूमि पर थूका, और उस थूक से मिट्टी सानी तब उस मिट्टी को अंधे की आँखों पर लगाया, [7]और उस से कहा, "जा शीलोह के कुण्ड में धो ले" (शीलोह का अर्थ है, भेजा हुआ)। अतः उसने जाकर धोया, और देखता हुआ लौट आया। [8]तब पड़ोसी, और जिन्होंने पहिले उसे भीख मांगते देखा था, कहने लगे, "क्या यह वही नहीं है जो बैठा भीख मांगा करता था?" [9]दूसरे कहने लगे, "यह वही है," अन्य लोगों ने कहा, "नहीं, परन्तु यह उसके समान है।" वह कहता रहा, "मैं वही हूँ।" [10]इसलिए वे उस से पूछने लगे, "तब तेरी आँखें कैसे खुल गईं?" [11]उसने उत्तर दिया, "यीशु नामक व्यक्ति ने

मिट्टी सानी, और मेरी आँखों पर लगाई, और मुझसे कहा, 'शीलोह को जा और धो ले,' अत: मैंने जाकर धोया, और मैं देखने लगा।" [12]और उन्होंने उस से कहा, "वह कहाँ है?" उसने कहा, "मैं नहीं जानता।"

चंगाई के सम्बन्ध में विवाद

[13]वे उसे जो पहले अंधा था फरीसियों के पास लाए। [14]जिस दिन यीशु ने मिट्टी सानकर उसकी आँखें खोली थीं वह सब्त का दिन था। [15]फिर फरीसियों ने भी उस से पूछा कि तू किस प्रकार देखने लगा। और उसने उनसे कहा, "उसने मेरी आँखों पर मिट्टी लगाई, और मैंने धोया और अब मैं देखता हूँ।" [16]इसलिए फरीसियों में से कुछ कहने लगे, "यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं है, क्योंकि वह सब्त का दिन नहीं मानता।" परन्तु दूसरे कहने लगे, "एक पापी मनुष्य ऐसे चिन्हों को कैसे दिखा सकता है?" और उनमें फूट पड़ गई। [17]इसलिए उन्होंने उस अंधे मनुष्य से फिर कहा, "उसने तेरी आँखें खोलीं हैं। तू उसके विषय में क्या कहता है?" उसने कहा, "वह नबी है।" [18]इसलिए यहूदियों ने उसकी इस बात का विश्वास नहीं किया कि वह अन्धा था और अब देखने लगा, जब तक कि उन्होंने उस दृष्टि पाने वाले मनुष्य के माता पिता को बुलाकर, [19]यह न पूछ लिया, "क्या यह तुम्हारा पुत्र है, जिसे तुम कहते हो कि अंधा जन्मा था? तो अब वह कैसे देखता है?" [20]उसके माता पिता ने उन्हें उत्तर देते हुए कहा, "हम जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है और यह कि वह अंधा जन्मा था, [21]परन्तु अब वह कैसे देखने लगा हम नहीं जानते, या किसने उसकी आँखें खोलीं हमें नहीं मालूम। उसी से पूछो—वह सयाना है, और वह अपने बारे में स्वयं बता देगा।" [22]उसके माता पिता ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वे यहूदियों से डरते थे, क्योंकि यहूदी पहले ही एकमत हो चुके थे कि यदि कोई उसे मसीह मानेगा तो आराधनालय से निकाल दिया जाएगा। [23]इस कारण उसके माता पिता ने कहा, "वह सयाना है, उसी से पूछो।"

[24]अत: उन्होंने उस मनुष्य को जो अंधा था दूसरी बार बुलाया और उस से कहा, *"परमेश्वर की महिमा कर। हम जानते हैं कि यह मनुष्य पापी है।" [25]तब उसने उत्तर दिया, "मैं नहीं जानता कि वह पापी है या नहीं मैं तो एक बात जानता हूँ, कि मैं अंधा था और अब देखता हूँ।" [26]इसलिए उन्होंने उस से पूछा, "उसने तेरे साथ क्या किया? तेरी आँखें उसने कैसे खोलीं?" [27]उसने उन्हें उत्तर दिया, "मैं तो तुमसे पहले ही कह चुका, और तुमने नहीं सुना, फिर दूसरी बार क्यों सुनना चाहते हो? क्या तुम भी उसके चेले बनना चाहते हो?" [28]और उन्होंने उसको बुरा-भला कहते हुए कहा, "तू ही उसका चेला है, परन्तु हम तो मूसा के चेले हैं। [29]हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बातें कीं, परन्तु इस मनुष्य के सम्बन्ध में हम नहीं जानते कि कहां का है।" [30]उस मनुष्य ने उत्तर देते हुए उनसे कहा, "अरे, यह तो बड़ी विचित्र बात है कि तुम नहीं जानते कि वह कहां का है। फिर भी उसने मेरी आंखें खोल दीं। [31]हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता, परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भय मानने

24 *या, परमेश्वर के समक्ष सच बोल* (यहो 7:19)

वाला हो, और उसकी इच्छा पूरी करता हो तो वह उसकी सुनता है। [32]आदिकाल से यह कभी सुनने में नहीं आया कि किसी ने जन्म के अन्धे व्यक्ति की आँखें खोली हों। [33]यदि यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं होता तो वह कुछ कर ही नहीं सकता।" [34]उन्होंने उत्तर देते हुए उस से कहा, "तू तो पापों में ही जन्मा है और क्या तू हमें सिखाने आया है?" और उन्होंने उसे निकाल कर बाहर कर दिया।

[35]यीशु ने सुना कि उन्होंने उसे निकाल कर बाहर कर दिया है, तो उस से मिलकर उसने कहा, "क्या तू मनुष्य के पुत्र पर विश्वास करता है?" [36]उसने उत्तर देते हुए कहा, "वह कौन है प्रभु, कि मैं उस पर विश्वास करूं?" [37]यीशु ने उस से कहा, "तू ने उसे देखा भी है, और वही है जो अभी तेरे साथ बातें कर रहा है।" [38]और उसने कहा, "प्रभु मैं विश्वास करता हूँ।" और उसने उसे दण्डवत् किया। [39]तब यीशु ने कहा, "मैं इस संसार में न्याय के लिए आया हूँ कि जो नहीं देखते वे देखें, और जो देखते हैं वे अन्धे हो जाएँ।" [40]फरीसियों में से कुछ उसके साथ थे। यह बातें सुनकर उन्होंने उस से कहा, "क्या हम भी अन्धे हैं?" [41]यीशु ने उनसे कहा, "यदि तुम अन्धे होते तो तुम में कोई पाप न होता। अब तुम कहते हो कि, हम देखते हैं, इसलिए तुम्हारा पाप बना रहता है।

भेड़ और चरवाहा

10 "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, वह जो द्वार से भेड़शाला में प्रवेश नहीं करता, परन्तु किसी दूसरी ओर से चढ़ जाता है, वह चोर और डाकू है। [2]परन्तु जो द्वार से प्रवेश करता, वह भेड़ों का चरवाहा है। [3]द्वारपाल उनके लिए द्वार खोलता है और भेड़ें उसकी आवाज़ पहचानती हैं, और वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर पुकारता है और उन्हें बाहर ले जाता है। [4]जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल लेता है तो उनके आगे आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे हो लेती हैं क्योंकि वे उसकी आवाज़ पहचानती हैं। [5]और वे किसी दूसरे के पीछे कभी नहीं जाएंगी; परन्तु उस से भागेंगी, क्योंकि वे दूसरों की आवाज़ नहीं पहचानतीं।" [6]यीशु ने उनसे यह दृष्टान्त कहा, परन्तु वे नहीं समझे कि ये क्या बातें हैं जो वह हम से कह रहा था।

यीशु अच्छा चरवाहा

[7]इसलिए यीशु ने उनसे फिर कहा, "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, भेड़ों का द्वार मैं हूँ। [8]जितने मुझसे पहले आए वे सब चोर और डाकू हैं, परन्तु भेड़ों ने उनकी नहीं सुनी। [9]द्वार मैं हूँ। यदि कोई मेरे द्वारा प्रवेश करता है तो वह उद्धार पाएगा, और भीतर-बाहर आया जाया करेगा और चारा पाएगा। [10]चोर केवल चोरी करने, मार डालने और नाश करने को आता है। मैं इसलिए आया हूँ कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं। [11]अच्छा चरवाहा मैं हूँ, अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिए अपना प्राण देता है। [12]वह जो मज़दूर है पर चरवाहा नहीं, और न ही भेड़ों का मालिक है, भेड़िए को आते देख भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है और भेड़िया झपट कर उन्हें तित्तर-बित्तर कर देता है। [13]वह इसलिए भाग जाता है क्योंकि वह मज़दूर है और उसे भेड़ों की चिन्ता नहीं। [14]अच्छा चरवाहा मैं हूँ। मैं

अपनी भेड़ों को जानता हूँ और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं—[15]वैसे ही पिता मुझे जानता है और मैं पिता को जानता हूँ— और मैं भेड़ों के लिए अपना प्राण देता हूँ। [16]मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस भेड़शाला की नहीं। मुझे उनको भी लाना अवश्य है। और वे मेरी आवाज़ सुनेंगी, तब उनका एक ही झुंड और एक ही चरवाहा होगा। [17]पिता इसीलिए मुझसे प्रेम रखता है कि मैं अपना प्राण देता हूँ कि उसे फिर ले लूँ। [18]कोई उसे मुझसे नहीं छीनता, परन्तु मैं उसे अपने आप ही देता हूँ। मुझे उसे देने का अधिकार है, और फिर ले लेने का भी अधिकार है। यह आज्ञा मैंने अपने पिता से पाई है।"

[19]इन बातों के कारण यहूदियों में फिर फूट पड़ी। [20]और उनमें से बहुत लोग कहने लगे, "उसमें दुष्टात्मा है और वह पागल है। तुम उसकी क्यों सुनते हो?" [21]अन्य लोग कह रहे थे, "ये बातें उसकी नहीं जिसमें दुष्टात्मा हो, क्या दुष्टात्मा अँधे की आँखें खोल सकती है?"

समर्पण पर्व

[22]उस समय यरूशलेम में समर्पण-पर्व मनाया गया। [23]जाड़े की ऋतु थी, और यीशु मन्दिर में सुलैमान के ओसारे में टहल रहा था। [24]तब यहूदियों ने उसके चारों ओर इकट्ठे होकर उस से कहा, "तू हमें कब तक दुविधा में रखेगा? यदि तू मसीह है तो हम से साफ साफ कह दे।" [25]यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मैंने तुमसे कह दिया पर तुम विश्वास नहीं करते, जो कार्य मैं अपने पिता के नाम से करता हूँ वे ही मेरे विषय में साक्षी देते हैं। [26]परन्तु तुम विश्वास नहीं करते क्योंकि तुम मेरी भेड़ों में से नहीं हो। [27]मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं। मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं। [28]मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ। वे कभी नाश न होंगी, और उन्हें मेरे हाथों से कोई भी छीन नहीं सकता। [29]मेरा पिता, जिसने उन्हें मुझे दिया है, सब से महान् है, और कोई भी उन्हें पिता के हाथों से छीन नहीं सकता। [30]मैं और पिता एक हैं।"

[31]यहूदियों ने उसे पथराव करने को फिर पत्थर उठाए। [32]यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मैंने पिता की ओर से बहुत से अच्छे कार्य किए। उनमें से किसके लिए तुम मुझे पथराव कर रहे हो?" [33]यहूदियों ने उसे उत्तर दिया, "हम अच्छे कार्य के लिए तुझे पथराव नहीं करते, परन्तु परमेश्वर की निन्दा करने के कारण; और इसलिए भी कि तू मनुष्य होकर अपने आपको परमेश्वर बताता है।" [34]यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या तुम्हारी व्यवस्था में नहीं लिखा है, '**मैंने कहा, तुम ईश्वर हो**'? [35]जबकि उसने उन्हें ईश्वर कहा, जिन के पास परमेश्वर का वचन पहुँचा (और पवित्रशास्त्र का खण्डन नहीं किया जा सकता), [36]तो जिसे पिता ने पवित्र ठहराकर संसार में भेजा, क्या तुम उसके विषय में कहते हो, 'तू निन्दा करता है,' क्योंकि मैंने कहा, 'मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ?' [37]यदि मैं अपने पिता के कार्य नहीं करता तो मेरा विश्वास न करो, [38]परन्तु यदि मैं उन्हें करता हूँ तो चाहे तुम मेरा विश्वास न करो, उन कार्यों के कारण तो विश्वास करो कि तुम जानो और समझो कि पिता मुझमें है और मैं पिता में हूँ।" [39]अतः उन्होंने उसे पकड़ने का फिर प्रयत्न किया, परन्तु वह उनके हाथ से बच कर निकल गया।

[40]और वह फिर यरदन पार उस स्थान

को चला गया जहाँ यूहन्ना पहिले बपतिस्मा दिया करता था, और वहीं रहने लगा। [41]बहुत लोग उसके पास आकर यह कहते थे, "यूहन्ना ने तो कोई चिन्ह नहीं दिखाया, फिर भी उसने जो कुछ इस मनुष्य के विषय में कहा था, वह सब सच था।" [42]और वहाँ बहुत लोगों ने यीशु पर विश्वास किया।

लाज़र की मृत्यु

11 मरियम और उसकी बहिन मार्था के गांव बैतनिय्याह का लाज़र नामक एक मनुष्य बीमार था। [2]यह वही मरियम थी जिसने प्रभु पर इत्र डालकर उसके पैरों को अपने बालों से पोंछा था। इसी का भाई लाज़र बीमार था। [3]इसलिए बहिनों ने उसे यह संदेश भेजा, "प्रभु, देख, जिस से तू प्रीति रखता है, वह बीमार है।" [4]परन्तु जब यीशु ने यह सुना तो कहा, "यह बीमारी मृत्यु की नहीं, परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिए है, कि इसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो।" [5]यीशु तो मार्था और उसकी बहिन और लाज़र से प्रेम रखता था। [6]फिर भी जब उसने सुना कि वह बीमार है, तो जिस स्थान पर वह था, वहाँ दो दिन और ठहर गया। [7]तब इसके पश्चात् उसने चेलों से कहा, "चलो, हम फिर यहूदिया को चलें।" [8]चेलों ने उस से कहा, "रब्बी, अभी तो यहूदी तुझे पथराव करना चाहते थे, और क्या तू फिर वहीं जाता है?" [9]यीशु ने उत्तर दिया, "क्या दिन के बारह घंटे नहीं होते? यदि कोई दिन में चले तो वह ठोकर नहीं खाता, क्योंकि वह इस जगत के प्रकाश को देखता है। [10]परन्तु यदि कोई रात में चले तो ठोकर खाता है, क्योंकि उसमें प्रकाश नहीं। [11]ऐसा कहने के पश्चात् उसने उनसे कहा, "हमारा मित्र लाज़र सो गया है, परन्तु मैं जाता हूँ कि उसे नींद से जगाऊं।" [12]इसलिए चेलों ने उस से कहा, "प्रभु, यदि वह सो गया है तो बच जाएगा।" [13]यीशु ने तो उसकी मृत्यु के विषय में कहा था, परन्तु उन्होंने सोचा कि वह नींद से सो जाने के विषय में कह रहा है। [14]इस पर यीशु ने उनसे स्पष्ट कह दिया, "लाज़र मर गया है, [15]और मैं तुम्हारे कारण आनन्दित हूँ कि मैं वहां नहीं था, जिससे कि तुम विश्वास करो। आओ, अब हम उसके पास चलें।" [16]इसलिए थोमा ने जो *दिदुमुस कहलाता है, अपने साथी चेलों से कहा, "चलो, हम भी उसके साथ मरने चलें।"

यीशु का बैतनिय्याह में आगमन

[17]अत: जब यीशु आया, तो उसे मालूम हुआ कि उसे कब्र में रखे चार दिन हो चुके हैं। [18]बैतनिय्याह तो यरूशलेम के समीप, कोई दो मील की दूरी पर था। [19]और बहुत से यहूदी, मार्था और मरियम के पास उनके भाई के विषय में उन्हें सांत्वना देने आए थे। [20]इसलिए मार्था ने जब सुना कि यीशु आ रहा है तो वह उस से मिलने गई, परन्तु मरियम घर में ही बैठी रही। [21]मार्था ने यीशु से कहा, "प्रभु, यदि तू यहाँ होता तो मेरा भाई नहीं मरता। [22]अब भी मैं जानती हूँ कि तू परमेश्वर से जो कुछ मांगेगा, परमेश्वर तुझे देगा।" [23]यीशु ने उस से कहा, "तेरा भाई फिर जी उठेगा।" [24]मार्था ने उस से कहा, "मैं जानती हूँ कि अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के समय वह जी उठेगा।"

16 *अर्थात्, जुड़वां

[25]यीशु ने उस से कहा, "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ। जो मुझ पर विश्वास करता है यदि मर भी जाए फिर भी जिएगा, [26]और प्रत्येक जो जीवित है, और मुझ पर विश्वास करता है, कभी नहीं मरेगा। क्या तू इस पर विश्वास करती है?" [27]उसने उस से कहा, "हाँ प्रभु, मैंने विश्वास किया है कि तू ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, अर्थात् वही जो जगत में आने वाला था।" [28]यह कह कर वह चली गई, और अपनी बहिन मरियम को बुला कर चुपके से कहा, "गुरु यहीं है और तुझे बुलाता है।" [29]जब उसने यह सुना तो वह शीघ्र उठी और उस से मिलने को चल पड़ी।

[30]यीशु अब तक गांव में नहीं पहुँचा था, परन्तु उसी स्थान में था जहाँ मार्था उस से मिली थी। [31]तब जो यहूदी उसके साथ घर में थे और उसे सांत्वना दे रहे थे, जब उन्होंने मरियम को तुरन्त उठकर बाहर जाते देखा तो यह समझकर कि वह कब्र पर रोने को जा रही है, वे उसके पीछे चल पड़े। [32]जब मरियम वहाँ पहुँची जहाँ यीशु था, तो उसे देखते ही उसके चरणों पर गिर पड़ी और कहने लगी, "प्रभु यदि तू यहाँ होता तो मेरा भाई न मरता।" [33]जब यीशु ने उसे और उसके साथ आए यहूदियों को भी रोते देखा, तो वह आत्मा में अत्यन्त व्याकुल और दुखी हुआ, [34]और कहा, "तुमने उसे कहाँ रखा है?" उन्होंने उस से कहा, "प्रभु, चलकर देख ले।", [35]यीशु रो पड़ा। [36]अतः यहूदी कहने लगे, "देखो वह उस से कितना प्रेम करता था।" [37]परन्तु उनमें से कितनों ने कहा, "क्या यह जिसने अंधे की आँखें खोलीं इस मनुष्य को मरने से नहीं रोक था?"

लाज़र का जिलाया जाना

[38]फिर यीशु मन में बहुत ही शोकित होकर कब्र पर आया। वह एक गुफा थी और एक पत्थर उस पर रखा हुआ था। [39]यीशु ने कहा, "पत्थर को हटाओ।" उस मृतक की बहिन मार्था ने उस से कहा, "प्रभु, अब तो उसमें दुर्गन्ध आती होगी, क्योंकि यह चौथा दिन है।" [40]यीशु ने उस से कहा, "क्या मैंने तुझसे नहीं कहा कि यदि तू विश्वास करेगी तो परमेश्वर की महिमा देखेगी?" [41]तब उन्होंने पत्थर को हटाया। और यीशु ने अपनी आँखें उठाईं और कहा, "पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तू ने मेरी सुन ली है। [42]और मैं जानता हूँ कि तू सदैव मेरी सुनता है, परन्तु चारों ओर खड़े लोगों के कारण मैंने ऐसा कहा, कि वे विश्वास करें कि तू ने मुझे भेजा है।" [43]और जब वह ये बातें कह चुका तो उसने बड़ी ज़ोर से पुकारा, "हे लाज़र निकल आ।" [44]जो मर गया था वह कफ़न से हाथ-पैर बंधा हुआ निकल आया, और उसका मुंह कपड़े से लिपटा हुआ था। यीशु ने उनसे कहा, "उसके बन्धन खोल दो और उसे जाने दो।"

[45]तब उन यहूदियों में से जो मरियम के पास आकर यीशु का यह कार्य देख चुके थे, बहुतों ने उस पर विश्वास किया। [46]परन्तु कुछ ने फरीसियों के पास जाकर उन्हें बताया कि यीशु ने क्या क्या किया है।

यीशु को मार डालने का षड्यन्त्र

[47]इसलिए महायाजक और फरीसी महासभा का आयोजन कर के कहने लगे, "हम क्या कर रहे हैं? यह मनुष्य तो बहुत

चिन्ह दिखलाता है। [48]यदि हम उसे यों ही छोड़ दें तो सब लोग उस पर विश्वास करेंगे, और रोमी आकर हमारी भूमि और जाति दोनों को अपने अधिकार में कर लेंगे। [49]तब उन में से एक ने अर्थात् काइफा ने जो उस वर्ष का महायाजक था, उन से कहा, "तुम कुछ भी नहीं जानते, [50]न इस बात को समझते हो कि यह उत्तम है कि एक व्यक्ति हमारे लोगों के लिए मरे इसकी अपेक्षा कि समस्त जाति नष्ट हो जाए।" [51]परन्तु यह उसने अपने आप नहीं कहा पर उस वर्ष का महा-याजक होते हुए भविष्यद्वाणी की, कि यीशु अपनी जाति के लिए मरेगा, [52]न केवल जाति के लिए वरन् इसलिए भी कि परमेश्वर की तित्तर-बित्तर सन्तानों को एक कर दे। [53]अतः उसी दिन से उन्होंने उसे मार डालने का षड्यन्त्र रचा।

[54]उस दिन से यीशु यहूदियों के मध्य प्रकट होकर न चला-फिरा, परन्तु वहाँ से इफ्राईम नामक एक नगर को गया जो जंगली क्षेत्र के निकटवर्तीय प्रदेश में था, और चेलों के साथ वहीं रहा। [55] यहूदियों के फसह का पर्व निकट था, और गांव से बहुत लोग फसह से पूर्व यरूशलेम को गए कि अपने आप को शुद्ध करें। [56]इसलिए वे यीशु को ढूँढ़ रहे थे और मंदिर में खड़े हुए आपस में कह रहे थे, "क्या तुम सोचते हो कि वह पर्व में आएगा ही नहीं?" [57]मुख्य याजकों और फरीसियों ने यह आज्ञा निकाली थी कि यदि किसी को मालूम पड़े कि यीशु कहाँ है तो बताए कि उसे पकड़ लिया जाए।

यीशु के पैरों पर इत्र मलना

12 फिर फसह के छः दिन पहिले यीशु बैतनिय्याह में आया जहाँ लाज़र था, जिसे यीशु ने मृतकों में से जिलाया था। [2]इसलिए उन्होंने वहाँ उसके लिए भोजन तैयार किया, और मार्था सेवा कर रही थी। उसके साथ जो भोजन के लिए बैठे थे, उनमें से लाज़र एक था। [3]तब मरियम ने जटामांसी का आधा किलो बहुमूल्य और असली इत्र लेकर यीशु के पैरों पर मला और अपने बालों से उसके पैर पोंछे और इत्र की सुगन्ध से घर सुगन्धित हो गया। [4]परन्तु उसके चेलों में से यहूदा इस्करियोती ने, जो उसे धोखे से पकड़वाना चाहता था, कहा, [5]"इस इत्र को तीन सौ दीनार में बेचकर कंगालों को क्यों नहीं दे दिया गया?" [6]उसने यह इसलिए नहीं कहा था, कि उसे कंगालों की चिन्ता थी, परन्तु इसलिए कि वह चोर था, और उसके पास रुपयों की थैली रहती थी, और जो कुछ उसमें डाला जाता था, वह उसे चुरा लिया करता था। [7]इसलिए यीशु ने कहा, "उसे रहने दो कि वह इसे मेरे गाड़े जाने के दिन के लिए रख सके। [8]क्योंकि कंगाल तो तुम्हारे साथ सदा रहते हैं, परन्तु मैं तुम्हारे साथ सदा न रहूँगा।" [9]जब यहूदियों की बड़ी भीड़ ने जाना कि यीशु वहाँ हैं, तो वे यीशु के कारण ही नहीं, परन्तु इसलिए भी आए कि लाज़र को देखें जिसे उस ने मृतकों में से जिलाया था। [10]परन्तु मुख्य याजकों ने लाज़र को भी मार डालने की योजना बनाई, [11]क्योंकि उसके कारण बहुत से यहूदी अलग होकर यीशु पर विश्वास करने लगे।

यरूशलेम में विजय-प्रवेश

[12]दूसरे दिन पर्व में आई हुई बड़ी भीड़ ने जब यह सुना कि यीशु यरूशलेम आ रहा है, [13]तब लोग खजूर की डालियां

लेकर उस से भेंट करने को निकले और पुकारने लगे, "होशान्ना! **धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है**, अर्थात् इस्राएल का राजा।" [14]और गधे का एक बच्चा पाकर यीशु उस पर बैठ गया, जैसा लिखा है, [15]"**हे सिय्योन की बेटी, मत डर! देख, तेरा राजा गधे के बच्चे पर बैठा हुआ चला आता है।**" [16]उसके चेले पहिले तो ये बातें न समझे, परन्तु यीशु के महिमान्वित होने के पश्चात् उन्हें स्मरण हुआ कि ये बातें उसके विषय में लिखी गई थीं और लोगों ने उसके साथ ऐसा ही किया था। [17]लाज़र को कब्र से बाहर बुलाने और मृतकों में से जिलाने के समय जो भीड़ यीशु के साथ थी, वह उसकी साक्षी दे रही थी। [18]भीड़ इस कारण उस से भेंट करने को निकल आई क्योंकि लोगों ने सुना था कि उसने ये चिन्ह दिखाए। [19]इसलिए फरीसियों ने एक दूसरे से कहा, "सोचो तो सही कि तुमसे कुछ नहीं बन पड़ता। देखो, संसार उसके पीछे चल पड़ा है।"

यीशु और यूनानी

[20]जो लोग पर्व में आराधना करने जा रहे थे, उनमें कुछ यूनानी थे [21]इसलिए ये फिलिप्पुस के पास जो गलील के बैतसैदा का था, आकर उस से पूछने लगे, "महोदय, हम यीशु से भेंट करना चाहते हैं।" [22]फिलिप्पुस ने अन्द्रियास से कहा, तब अन्द्रियास और फिलिप्पुस ने जाकर यीशु को बताया। [23]और यीशु ने उत्तर देते हुए उनसे कहा, "समय आ पहुँचा है कि मनुष्य का पुत्र महिमान्वित हो। [24]मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है, परन्तु यदि मर जाता है तो बहुत फल लाता है। [25]जो अपने प्राण को प्रिय जानता है वह उसे खो देता है और जो अपने प्राण को इस जगत में अप्रिय जानता है वह उसे अनन्त जीवन तक बचाए रखेगा। [26]यदि कोई मेरी सेवा करना चाहे तो मेरे पीछे चले। और जहाँ मैं हूँ मेरा सेवक भी होगा। यदि कोई मेरी सेवा करे तो पिता उसका सम्मान करेगा।

क्रूस की मृत्यु का संकेत

[27]"अब मेरा जी व्याकुल हो उठा है। क्या मैं यह कहूँ, 'हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा?' परन्तु मैं इसी अभिप्राय से इस घड़ी तक पहुँचा हूँ। [28]हे पिता, अपने नाम की महिमा कर।" तब यह आकाशवाणी हुई, "मैंने उसकी महिमा की है, और फिर भी करूँगा।" [29]तब भीड़ के लोग जो वहाँ खड़े सुन रहे थे कहने लगे कि बादल गरजा है। औरों ने कहा, "स्वर्गदूत ने उस से बातें की हैं।" [30]यीशु ने उत्तर देते हुए कहा, "यह वाणी मेरे लिए नहीं परन्तु तुम्हारे लिए हुई है। [31]अब इस संसार का न्याय होता है, अब इस संसार का शासक निकाल दिया जाएगा। [32]और मैं, यदि मैं पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब लोगों को अपने पास खीचूँगा।" [33]परन्तु ऐसा कह कर वह प्रकट कर रहा था कि कैसी मृत्यु से मरेगा। [34]इसलिए भीड़ ने उसे उत्तर दिया, "हमने व्यवस्था में सुना है कि मसीह सर्वदा बना रहेगा, फिर तू कैसे कह सकता है, 'मनुष्य के पुत्र को ऊँचे पर चढ़ाया जाना आवश्यक है?' यह मनुष्य का पुत्र कौन है?" [35]इसलिए यीशु ने उनसे कहा, "तुम्हारे मध्य ज्योति, और थोड़ी देर के लिए है। जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है, तब तक चलते चलो, जिससे कि अंधकार तुम्हें न आ

घेरे। जो अंधकार में चलता है, नहीं जानता कि वह किधर जाता है। [36]जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है, ज्योति पर विश्वास करो, जिससे कि तुम ज्योति की संतान बन सको।"

यहूदियों का अविश्वास

इन बातों को कह कर यीशु वहाँ से चला गया और उनसे छिपा रहा। [37]यद्यपि उसने उनके सामने इतने चिन्ह दिखाए, फिर भी वे उस पर विश्वास नहीं कर रहे थे, [38]जिससे कि यशायाह नबी का वह वचन पूरा हो जो उसने कहा: **प्रभु, किसने हमारे समाचार पर विश्वास किया है? और प्रभु का भुजबल किस पर प्रकट हुआ है?** [39]इस कारण वे विश्वास नहीं कर सके, क्योंकि यशायाह ने फिर यह कहा, [40]"**उसने उनकी आँखें अंधी कर दी हैं, और उसने उनका हृदय कठोर कर दिया है, कहीं ऐसा न हो कि वे आँखों से देखें और हृदय से समझें और मन फिराएं, और मैं उन्हें चंगा करूँ।**" [41]यशायाह ने ये बातें इसलिए कहीं क्योंकि उसने उसकी महिमा देखी, और उस ने उसके विषय में कहा। [42]फिर भी अधिकारियों में से बहुतों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु फरीसियों के कारण वे उसका अंगीकार नहीं कर रहे थे, कहीं ऐसा न हो कि वे आराधनालयों से निकाले जाएं। [43]उनको तो परमेश्वर की प्रशंसा से मनुष्य की प्रशंसा अधिक प्रिय लगती थी।

[44]फिर यीशु ने पुकार कर कहा, "जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मुझ पर नहीं वरन् मेरे भेजने वाले पर विश्वास करता है। [45]और जो मुझे देखता है, वह उसको देखता है जिसने मुझे भेजा है। [46]मैं ज्योति हूँ और जगत में आया हूँ कि जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह अन्धकार में न रहे। [47]यदि कोई मेरी बातें सुनकर उनका पालन न करे तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता, क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने नहीं, वरन् जगत का उद्धार करने आया हूँ। [48]जो मेरा तिरस्कार करता है, और मेरे वचन को ग्रहण नहीं करता, उस को दोषी ठहराने वाला तो एक है: मैंने जो वचन कहा है, वही अंतिम दिनों में उसे दोषी ठहराएगा। [49]मैंने अपने आप कुछ नहीं कहा, परन्तु पिता जिसने मुझे भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि क्या कहूँ और क्या बोलूँ। [50]और मैं जानता हूँ कि उसकी आज्ञा अनन्त जीवन है। इसलिए मैं जो कुछ बोलता हूँ, जैसा पिता ने मुझसे कहा है वैसे ही बोलता हूँ।"

यीशु का चेलों के पैर धोना

13 अब फसह के पर्व से पहिले, यीशु ने यह जानकर कि मेरी घड़ी आ पहुँची है कि मैं जगत को छोड़ कर पिता के पास जाऊँ, तो अपनों से जो संसार में थे जैसा प्रेम करता था उन से *अन्त तक वैसा ही प्रेम किया। [2]और भोजन के समय जब शैतान पहिले ही से शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती के मन में यह डाल चुका था कि वह उसे धोखे से पकड़वाए, [3]तो यीशु यह जानते हुए कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथों में दे दिया है, और यह कि मैं परमेश्वर के पास से आया हूँ और परमेश्वर के पास वापस जा रहा हूँ, [4]भोजन पर से उठा और अपने वस्त्र उतार कर एक तरफ रख दिए और तौलिया लेकर अपनी कमर बाँधी। [5]तब

1 *या, प्रेम की चरम सीमा तक प्रेम किया

उसने एक बर्तन में पानी भरा और चेलों के पैर धोए तथा जिस तौलिए से उसने अपनी कमर बाँध रखी थी उस से उनके पैर पोंछने लगा। [6]और जब वह शमौन पतरस के पास आया, पतरस ने उस से कहा, "हे प्रभु! क्या तू मेरे पैर धोता है?" [7]यीशु ने उत्तर देते हुए उस से कहा, "मैं जो करता हूँ, तू उसे अभी नहीं समझ सकता, परन्तु तू इसके बाद समझेगा।" [8]पतरस ने उस से कहा, "तू मेरे पैर कभी न धोने पाएगा!" यीशु ने उसको उत्तर दिया, "यदि मैं तुझे न धोऊँ तो मेरे साथ तेरा कुछ भी साझा नहीं" [9]शमौन पतरस ने उस से कहा, "प्रभु केवल पैर ही नहीं परन्तु मेरे हाथ और सिर भी धो दे।" [10]यीशु ने उस से कहा, "जिस ने स्नान कर लिया है उसे तो केवल अपने पैरों को ही धोने की आवश्यकता है क्योंकि वह पूर्णतः शुद्ध है, और तुम शुद्ध हो, परन्तु सब के सब नहीं।" [11]वह तो उसे जानता था जो उसे छल से पकड़वाने पर था, और इसी कारण उसने कहा, "तुम सब के सब शुद्ध नहीं।"

[12]और जब वह उनके पैर धो चुका और अपने वस्त्र पहिन कर भोजन करने बैठ गया, तो उसने उनसे कहा, "क्या तुम समझे कि मैंने तुम्हारे साथ क्या किया है? [13]तुम मुझे गुरु और प्रभु कहते हो। तुम ठीक ही कहते हो, क्योंकि मैं वही हूँ। [14]यदि मैंने, प्रभु और गुरु होते हुए तुम्हारे पैर धोए, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पैर धोने चाहिए। [15]क्योंकि मैंने तुम्हें नमूना दिया है कि तुम भी वैसा ही करो जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया। [16]मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं, और न ही भेजा हुआ अपने भेजने से बड़ा होता है। [17]तुम इन बातों को जानते हो—यदि उन पर चलो तो तुम धन्य हो। [18]मैं तुम सब के विषय में नहीं कहता। मैं उनको जानता हूँ जिन्हें मैंने चुन लिया है, परन्तु यह इसलिए है कि पवित्रशास्त्र का वचन पूरा हो : '**जो मेरी रोटी खाता है उसने मेरे विरुद्ध लात उठाई।**' [19]इसके होने से पहले मैं तुम्हें अभी बता रहा हूँ, जिस से कि जब यह पूरा हो जाए, तो तुम विश्वास करो कि मैं वही हूँ। [20]मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि जिसे मैं भेजता हूँ उसे जो ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है, और जो मुझे ग्रहण करता है वह मेरे भेजने वाले को ग्रहण करता है।"

यहूदा के विश्वासघात का संकेत

[21]जब यीशु यह कह चुका तो आत्मा में व्याकुल हुआ, और साक्षी देकर कहा, "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा।" [22]चेले एक दूसरे को ताकने लगे क्योंकि समझ न सके कि वह किसके विषय में कह रहा है। [23]उसके चेलों में से एक जिस से यीशु प्रेम रखता था, यीशु की ओर झुका बैठा था। [24]अतः शमौन पतरस ने उसकी ओर संकेत करके उस से कहा, "हमें बता, वह कौन है जिस के विषय में वह कह रहा है?" [25]उसने यीशु की छाती की ओर उसी प्रकार झुके हुए उस से कहा, "प्रभु वह कौन है?" [26]तब यीशु ने उत्तर दिया, "जिसको मैं रोटी का टुकड़ा डुबो कर दूँगा, वही है।" तब उस ने रोटी का टुकड़ा डुबो कर शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा को दिया। [27]और टुकड़ा लेते ही शैतान उसमें समा गया। इसलिए यीशु ने उस से कहा, "जो तू करता है, तुरन्त कर।" [28]परन्तु जो मेज़ पर भोजन करने

बैठे थे उन में से कोई नहीं जान पाया कि उसने किस अभिप्राय से उस से ऐसा कहा था। [29]यहूदा के पास रुपए की थैली रहती थी, अतः कुछ यह अनुमान लगा रहे थे कि यीशु उस से कह रहा है, कि पर्व के लिए आवश्यक वस्तुओं को खरीद ले, अथवा यह कि कंगालों को कुछ दे दे। [30]अतः टुकड़ा लेने के बाद वह तुरन्त बाहर चला गया। और यह रात्रि का समय था।

एक नई आज्ञा

[31]जब वह बाहर चला गया तो यीशु ने कहा, "अब मनुष्य के पुत्र की महिमा हुई है और परमेश्वर की महिमा उस में हुई है। [32]*यदि उसमें परमेश्वर की महिमा होती है, तो परमेश्वर भी अपने में उसकी महिमा करेगा, और तुरन्त करेगा। [33]बच्चो, मैं और थोड़ी देर तुम्हारे साथ हूँ। तुम मुझे ढूंढ़ोगे, और जैसा मैंने यहूदियों से कहा, तुमसे भी कहता हूँ कि जहाँ मैं जाने वाला हूँ, तुम नहीं आ सकते। [34]मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ, कि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो। जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। [35]यदि तुम आपस में प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो।"

[36]शमौन पतरस ने उस से कहा, "प्रभु तू कहां जाता है?" यीशु ने उत्तर दिया, "जहाँ मैं जाता हूँ, तू अभी वहाँ मेरे पीछे नहीं आ सकता, परन्तु इसके बाद तू आएगा।" [37]पतरस ने उससे कहा, "प्रभु, मैं अभी तेरे पीछे क्यों नहीं आ सकता? मैं तो तेरे लिए अपना प्राण भी दे दूँगा।" [38]यीशु ने उत्तर दिया, "क्या तू मेरे लिए अपना प्राण देगा? मैं तुझसे सच सच कहता हूँ कि जब तक तू तीन बार मेरा इन्कार न कर लेगा, मुर्ग बाँग न देगा।"

एक ही मार्ग

14 "तुम्हारा हृदय व्याकुल न हो। परमेश्वर पर विश्वास रखो और मुझ पर भी विश्वास रखो। [2]मेरे पिता के घर में रहने के बहुत से स्थान हैं। यदि न होते, तो मैं तुमसे कह देता, क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूं। [3]और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा कि जहाँ मैं हूँ, वहाँ तुम भी रहो, [4]*और जहाँ मैं जा रहा हूँ तुम वहाँ का मार्ग जानते हो।" [5]थोमा ने उस से कहा, "हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू कहाँ जा रहा है, तो मार्ग कैसे जानें?" [6]यीशु ने उस से कहा, "मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता। [7]यदि तुमने मुझे जाना होता तो मेरे पिता को भी जानते। अब से उसे जानते हो और उसे देखा भी है।" [8]फिलिप्पुस ने उस से कहा, "हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे; और यही हमारे लिए पर्याप्त है।" [9]यीशु ने उस से कहा, "फिलिप्पुस, मैं इतने समय से तुम्हारे साथ हूँ, फिर भी तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को देखा है। तू कैसे कहता है, 'पिता को हमें दिखा दे?' [10]क्या तू विश्वास नहीं करता कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है? जो वचन मैं तुमसे कहता हूँ वह अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता जो मुझमें रहता है

32 *कुछ प्राचीन प्रतिलिपियों में यह वाक्य नहीं मिलता

4 *कई प्राचीन हस्तलेखों में यह पद इस प्रकार मिलता है: **मैं कहां जाता हूं तुम जानते हो और तुम मार्ग भी जानते हो**

वही अपने कार्य करता है। [11]मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझमें, अन्यथा कामों ही के कारण मेरा विश्वास करो। [12]मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि जो मुझ पर विश्वास करता है, वे कार्य जो मैं करता हूँ, वह भी करेगा, और इनसे भी महान् कार्य करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ। [13]और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही करूँगा कि पुत्र में पिता की महिमा हो। [14]यदि तुम मुझसे मेरे नाम में कुछ भी मांगोगे तो मैं उसे करूँगा।

पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा

[15]"यदि तुम मुझ से प्रेम करते हो, तो मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे। [16]और मैं पिता से विनती करूँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सदा तुम्हारे साथ रहे, [17]अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि वह उसे न देखता है और न जानता है, परन्तु तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और तुम में होगा। [18]मैं तुम्हें अनाथ न छोड़ूँगा, मैं तुम्हारे पास आऊँगा। [19]थोड़ी देर पश्चात् संसार मुझे फिर नहीं देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे। मैं जीवित हूँ, इसलिए तुम भी जीवित रहोगे। [20]उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पिता में हूँ और तुम मुझ में, और मैं तुम में हूँ। [21]जिसके पास मेरी आज्ञाएं हैं और वह उनका पालन करता है, वही मुझ से प्रेम करता है, और जो मुझ से प्रेम करता है, उस से मेरा पिता प्रेम करेगा, और मैं उस से प्रेम करूँगा और अपने आप को उस पर प्रकट करूँगा।"

[22]यहूदा ने जो इस्करियोती नहीं था, से कहा, "प्रभु, ऐसा क्या हुआ है कि तू अपने आप को हम पर प्रकट करना चाहता है और संसार पर नहीं?"

[23]यीशु ने उत्तर देते हुए उस से कहा, "यदि कोई मुझ से प्रेम करता है तो वह मेरे वचन का पालन करेगा, और मेरा पिता उस से प्रेम करेगा, और हम उसके पास आएँगे तथा उसके साथ निवास करेंगे। [24]जो मुझ से प्रेम नहीं करता, वह मेरे वचन का पालन नहीं करता। और जो वचन तुम सुनते हो वह मेरा नहीं वरन् पिता का है जिसने मुझे भेजा।

[25]"ये बातें तुम्हारे साथ रहते हुए मैंने तुम से कहीं। [26]परन्तु सहायक, अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम में भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और सब कुछ जो मैंने तुम से कहा है, तुम्हें स्मरण कराएगा। [27]मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ, ऐसे नहीं देता जैसे संसार तुम्हें देता है। तुम्हारा मन व्याकुल न हो, और न भयभीत हो। [28]तुम ने सुना कि मैंने तुमसे कहा, 'मैं जा रहा हूँ और फिर तुम्हारे पास आऊंगा।' यदि तुम मुझ से प्रेम करते तो आनन्दित होते, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ, क्योंकि पिता मुझ से बढ़कर है। [29]और इसके होने से पहले मैंने तुम्हें अभी बता दिया है, जिससे कि जब यह हो जाए तो तुम विश्वास करो। [30]मैं तुमसे अब और अधिक न कहूँगा क्योंकि इस संसार का शासक आ रहा है, और उसका मुझ पर कोई अधिकार नहीं, [31]परन्तु इसलिए कि संसार जान ले कि मैं पिता से प्रेम करता हूँ और जिस प्रकार पिता ने मुझे आज्ञा दी है वैसे ही मैं उसका पालन करता हूँ, उठो, यहाँ से चलें।

सच्ची दाखलता

15 "सच्ची दाखलता मैं हूँ, और मेरा पिता किसान है। [2]प्रत्येक डाली जो मुझ में है और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और प्रत्येक डाली जो फलती है उसे वह छांटता है कि और फले।

[3]"तुम उस वचन के कारण जो मैंने तुमसे कहा है शुद्ध हो चुके हो। [4]तुम मुझ में बने रहो और मैं तुम में। जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। [5]मैं दाखलता हूँ, तुम डालियाँ हो, जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग हो कर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। [6]यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली की भाँति फेंक दिया जाता है और सूख जाता है, और लोग उन्हें इकट्ठा कर आग में झोंक देते हैं और वे जल जाती हैं। [7]यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरे वचन तुम में बने रहें तो जो चाहो माँगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा। [8]मेरे पिता की महिमा इसी से होती है *कि तुम बहुत फलवन्त होओ, तभी तो तुम मेरे चेले हो। [9]जैसे पिता ने मुझसे प्रेम किया है, मैंने भी तुम से प्रेम किया है, मेरे प्रेम में बने रहो। [10]यदि तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे तो तुम मेरे प्रेम में बने रहोगे। वैसे ही जैसे मैंने अपने पिता की आज्ञाओं का पालन किया है, और उसके प्रेम में बना रहता हूँ। [11]ये बातें मैंने तुम से इसलिए कही हैं कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए। [12]मेरी आज्ञा यह है, कि जैसे मैंने तुमसे प्रेम किया, वैसे ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम करो। [13]इस से महान् प्रेम और किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे। [14]जो आज्ञा मैं तुम्हें देता हूँ, यदि उसे मानो तो तुम मेरे मित्र हो। [15]अब से मैं तुम्हें दास नहीं कहता, क्योंकि दास नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या करता है, परन्तु मैंने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि वे सब बातें जो मैंने अपने पिता से सुनी हैं तुम्हें बता दी हैं। [16]तुमने मुझे नहीं चुना, परन्तु मैंने तुम्हें चुना और तुम्हें नियुक्त किया, कि तुम फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से माँगो, वह तुम्हें दे। [17]मैं तुम्हें ये आज्ञाएं इसलिए देता हूँ, कि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो।

संसार का बैर

[18]"यदि संसार तुमसे घृणा करता है तो तुम *जानते हो कि उसने तुमसे पहिले मुझसे घृणा की है। [19]यदि तुम संसार के होते तो संसार अपनों से प्रेम करता, परन्तु इसलिए कि तुम संसार के नहीं हो क्योंकि मैंने तुम्हें संसार में से चुन कर निकाल लिया है—इसलिए संसार तुमसे घृणा करता है। [20]वह वचन जो मैंने तुम से कहा स्मरण रखो: 'दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं है।' यदि उन्होंने मुझे सताया तो वे तुम्हें भी सताएँगे। यदि उन्होंने मेरी बात मानी तो वे तुम्हारी भी मानेंगे। [21]परन्तु ये सब बातें वे मेरे नाम के कारण तुम्हारे साथ करेंगे, क्योंकि वे उसे नहीं जानते जिसने मुझे भेजा। [22]यदि मैं न आता और उनसे बातें न करता तो वे पापी न ठहरते, परन्तु अब अपने पाप के लिए उनके पास कोई बहाना नहीं है। [23]जो मुझ से घृणा

---

8 *कुछ हस्तलेखों में यह पद इस प्रकार मिलता है: फलवन्त होओ और मेरे चेले बन जाओ

करता है वह मेरे पिता से भी घृणा करता है। [24]यदि मैं उनके मध्य वे काम न करता जिन्हें किसी और ने नहीं किए, तो वे पापी न ठहरते, परन्तु अब तो उन्होंने मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा है, और दोनों से घृणा की है। [25]परन्तु उन्होंने ऐसा इसलिए किया कि वह वचन पूरा हो जो उनकी व्यवस्था में लिखा है: '**उन्होंने बिना कारण मुझ से घृणा की।**' [26]जब वह सहायक आएगा जिसे मैं पिता की ओर से तुम्हारे पास भेजूँगा, अर्थात् सत्य का आत्मा, जो पिता से निकलता है, वह मेरी साक्षी देगा, [27]और तुम भी *साक्षी दोगे, क्योंकि तुम आरम्भ से ही मेरे साथ रहे हो।

16 "ये बातें मैंने तुम से इसलिए कही हैं, कि तुम ठोकर खाने से बचे रहो। [2]वे तुम्हें आराधनालय से निकाल देंगे, परन्तु वह समय आ रहा है कि जो कोई तुम्हें मार डालेगा, समझेगा कि परमेश्वर की सेवा कर रहा है। [3]और वे ऐसा इसलिए करेंगे क्योंकि उन्होंने न तो पिता को जाना और न मुझे। [4]और ये बातें मैंने इसलिए कहीं कि जब समय आए तो तुम स्मरण करो कि मैंने तुम्हें इनके विषय में बता दिया था, और ये बातें मैंने तुम से आरम्भ में इसलिए नहीं कहीं क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था।

पवित्र आत्मा के कार्य

[5]"पर अब मैं अपने भेजने वाले के पास जा रहा हूँ, और तुम में से कोई मुझसे नहीं पूछता, 'तू कहाँ जा रहा है?' [6]परन्तु इसलिए कि मैंने ये बातें तुमसे कही हैं, तुम्हारा हृदय शोक से भर गया है। [7]परन्तु मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, कि मेरा जाना तुम्हारे लिए लाभदायक है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास नहीं आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊँ तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। [8]और जब वह आएगा तो संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा। [9]पाप के विषय में इसलिए कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते, [10]और धार्मिकता के विषय में इसलिए, कि मैं पिता के पास जाता हूँ, और तुम मुझे फिर नहीं देखोगे, [11]और न्याय के विषय में इसलिए, कि संसार का अधिकारी दोषी ठहराया गया है। [12]मुझे तुमसे और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु तुम अभी उन्हें सहन नहीं कर सकते। [13]परन्तु जब वह, अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो वह तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से कुछ नहीं कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आने वाली बातों को तुम पर प्रकट करेगा। [14]वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों को लेकर तुम पर प्रकट करेगा। [15]जो कुछ पिता का है वह सब मेरा है इसलिए मैंने कहा, वह मेरी बातों को लेकर तुम पर प्रकट करेगा। [16]थोड़ी देर में तुम मुझे नहीं देखोगे, और फिर थोड़ी देर में तुम मुझे देखोगे।" [17]तब उसके चेलों में से कुछ ने परस्पर कहा, "यह क्या बात है जो वह हम से कह रहा है, 'थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में तुम मुझे देखोगे, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ'? [18]और इसलिए वे कहने लगे, "यह क्या है जो वह कहता है, 'थोड़ी देर में?' हम नहीं जानते कि वह क्या कह रहा है।" [19]यीशु

*या, दो

ने यह जान कर कि वे मुझसे प्रश्न करना चाहते हैं, उनसे कहा, "क्या तुम इस बात के विषय में आपस में सोच-विचार कर रहे हो, जो मैंने कहा, 'थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में तुम मुझे देखोगे?' [20]मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि तुम रोओगे और विलाप करोगे, परन्तु संसार आनन्द करेगा। तुम शोकित होगे, परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द में बदल जाएगा। [21]जब किसी स्त्री को प्रसव-पीड़ा होती है तो उसे शोक होता है, क्योंकि उसका समय आ पहुँचा है, परन्तु जब वह बच्चे को जन्म दे चुकती है, तो उस पीड़ा को इस आनन्द से कि संसार में एक मनुष्य उत्पन्न हुआ है, भूल जाती है। [22]इसलिए तुम्हें भी अब तो शोक है, परन्तु मैं तुमसे फिर मिलूंगा और तुम्हारे हृदय आनन्दित होंगे, और तुम्हारे आनन्द को कोई तुम से छीन न लेगा। [23]उस दिन तुम मुझसे कोई प्रश्न न पूछोगे। मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, यदि तुम पिता से कुछ भी मांगोगे, तो वह उसे मेरे नाम से तुम्हें देगा। [24]अब तक तुमने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा : मांगो, और तुम्हें मिलेगा जिस से तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।

संसार पर जीत

[25]"ये बातें मैंने तुमसे दृष्टान्त में कहीं हैं, परन्तु वह घड़ी आ रही है जब मैं फिर तुमसे दृष्टान्त में न कहूँगा, परन्तु तुम्हें पिता के विषय में स्पष्ट बताऊँगा। [26]उस दिन तुम मेरे नाम से मांगोगे, और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि तुम्हारे लिए पिता से विनती करूंगा, [27]क्योंकि पिता स्वयं तुम से प्रेम करता है, इसलिए कि तुमने मुझसे प्रेम किया है और यह विश्वास किया है कि मैं पिता में से निकल कर आया हूँ। [28]मैं पिता से निकल कर जगत में आया हूँ, मैं फिर जगत को छोड़ कर पिता के पास जा रहा हूँ।" [29]उसके चेलों ने कहा, "अब तू स्पष्ट कह रहा है। और दृष्टान्त में नहीं कह रहा है। [30]अब हम जानते हैं कि तू सब कुछ जानता है, और इसकी आवश्यकता नहीं कि कोई तुझसे प्रश्न पूछे। इस से हम विश्वास करते हैं कि तू परमेश्वर से निकला है।" [31]यीशु ने उत्तर दिया, "क्या तुम अब विश्वास करते हो? [32]देखो, वह घड़ी आ रही है, बल्कि आ पहुँची है कि तुम तित्तर-बित्तर होकर अपने अपने घरों को चले जाओगे और मुझे अकेला छोड़ दोगे, फिर भी मैं अकेला नहीं हूँ, क्योंकि पिता मेरे साथ है। [33]ये बातें मैंने तुमसे कही हैं, कि तुम मुझमें शान्ति पाओ। संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु साहस रखो—मैंने संसार को जीत लिया है।"

महायाजकीय प्रार्थना

17 यीशु ने ये बातें कह कर अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाते हुए कहा, "हे पिता, वह घड़ी आ पहुँची है। अपने पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र तेरी महिमा करे, [2]तू ने तो उसे समस्त मानव-जाति पर अधिकार दिया है कि वह उन सब को जिन्हें तू ने उसे दिया है अनन्त जीवन दे। [3]और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझे जो एकमात्र सच्चा परमेश्वर है और यीशु मसीह को जानें जिसे तू ने भेजा है। [4]जो काम तू ने मुझे करने को दिया था उसे पूरा कर के मैंने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है। [5]हे पिता, अब तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत की उत्पत्ति से पहिले, तेरे साथ मेरी थी [6]मैंने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रकट किया है

जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दिया है। वे तेरे थे, और तू ने उन्हें मुझे दिया, और उन्होंने तेरे वचन को मान लिया है। 7अब वे जान गए हैं कि जो कुछ तू ने मुझे दिया है वह सब तेरी ओर से है, 8क्योंकि वे वचन जो तूने मुझे दिए, मैंने उन तक पहुँचा दिए हैं। उन्होंने उन वचनों को ग्रहण किया और वास्तव में जान लिया है कि मैं तुझ से निकला हूँ, और उन्होंने विश्वास किया है कि तू ने ही मुझे भेजा है। 9मैं उनके लिए विनती करता हूँ—संसार के लिए विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिए जिन्हें तू ने मुझे दिया है, क्योंकि वे तेरे हैं, 10और सब कुछ जो मेरा है वह तेरा है, और जो तेरा है वह मेरा है, और इनमें मेरी महिमा प्रकट हुई है। 11अब मैं जगत में न रहूँगा। फिर भी वे जगत में रहेंगे और मैं तेरे पास आता हूँ। हे पवित्र पिता, अपने उस नाम से जो तू ने मुझे दिया है, इनकी रक्षा कर कि जैसे हम एक हैं, वे भी एक हों। 12जब मैं उनके साथ था, मैंने तेरे उस नाम से जो तू ने मुझे दिया है उनकी रक्षा की, और विनाश के पुत्र को छोड़ उन में से कोई नाश न हुआ, इसलिए कि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो। 13परन्तु अब मैं तेरे पास आता हूँ, और ये बातें संसार में कहता हूँ, कि वे अपने में मेरा आनन्द पूरा पाएं। 14मैंने उन्हें तेरा वचन दिया है, और संसार ने उनसे घृणा की है, क्योंकि जैसे मैं संसार का नहीं वैसे ही वे भी संसार के नहीं। 15मैं तुझसे यह विनती नहीं करता कि तू उन्हें संसार में से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हें उस *दुष्ट से बचाए रख। 16वे संसार के नहीं हैं, जैसे कि मैं भी संसार का नहीं हूँ। 17सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर—तेरा वचन सत्य है। 18जैसे तू ने मुझे संसार में भेजा, मैंने भी उन्हें संसार में भेजा है। 19और उनके लिए मैं अपने आप को पवित्र करता हूँ, कि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र किए जाएं। 20मैं केवल इन्हीं के लिए विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिए भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, 21कि वे सब एक हों। जैसे, हे पिता, तू मुझ में है और मैं तुझ में हूँ, वैसे ही वे भी हम में हों, जिससे कि संसार विश्वास करे कि तू ने ही मुझे भेजा है। 22और वह महिमा जो तू ने मुझे दी है मैंने उन्हें दी है, कि वे वैसे ही एक हों जैसे हम एक हैं: 23मैं उनमें और तू मुझ में, कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं, जिस से संसार जाने कि तू ने मुझे भेजा और जैसे तू ने मुझसे प्रेम किया वैसे ही उनसे भी प्रेम किया। 24हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहाँ मैं हूँ, वहाँ वे भी मेरे साथ रहें, कि वे मेरी उस महिमा को देख सकें जिसे तू ने मुझे दी है, क्योंकि तू ने जगत की उत्पत्ति से पहिले मुझसे प्रेम किया। 25हे धार्मिक पिता, यद्यपि संसार ने तुझे नहीं जाना, फिर भी मैंने तुझे जाना, और इन्होंने भी जाना है कि तू ने ही मुझे भेजा है, 26और मैंने तेरा नाम इनको बताया और बताता रहूँगा, कि जिस प्रेम से तू ने मुझ से प्रेम किया वह उनमें रहे, और मैं उनमें।"

यीशु का पकड़वाया जाना

18 जब यीशु ये बातें कह चुका तो वह अपने चेलों के साथ किद्रोन नाले के पार गया जहां एक बाग था, जिसमें उसने स्वयं और उसके चेलों ने प्रवेश किया। 2यहूदा भी जो उसे पकड़वाने पर था उस जगह को जानता

*, दुष्टता

था, क्योंकि यीशु अधिकतर अपने चेलों के साथ वहाँ जाया करता था। [3]तब यहूदा, रोमी सेना के एक दल को, और मुख्य याजकों तथा फरीसियों की ओर से सिपाहियों को लेकर, वहाँ लालटेनों, मशालों और हथियारों सहित आया। [4]इसलिए यीशु उन सब बातों को जो उस पर आने वाली थीं जान कर आगे बढ़ा और उनसे कहा, "तुम किसे ढूंढ़ते हो?" [5]उन्होंने उत्तर दिया, "यीशु नासरी को।" उसने उनसे कहा, "मैं हूँ।" और यहूदा भी जो उसे पकड़वाने पर था उसके साथ खड़ा था। [6]जब उसने उनसे यह कहा, "मैं हूँ," तो वे पीछे हटे और भूमि पर गिर पड़े। [7]तब उसने फिर पूछा, "तुम किसे ढूँढ़ते हो?" और उन्होंने कहा, "यीशु नासरी को।" [8]यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुमसे कह चुका कि मैं वही हूँ, इसलिए यदि तुम मुझे ढूँढ़ते हो तो इन्हें जाने दो," [9]जिससे कि वह वचन पूरा हो जो उसने कहा था, "जिन्हें तू ने मुझे दिया उनमें से मैंने एक को भी नहीं खोया।" [10]इस पर शमौन पतरस ने जो तलवार लिए हुए था उसे खींचकर महायाजक के दास पर चलाई और उसका दाहिना कान काट डाला, और उस दास का नाम मलखुस था। [11]तब यीशु ने पतरस से कहा, "तलवार मियान में रख! जो प्याला पिता ने मुझे दिया, क्या मैं उसे न पीऊँ?"

[12]तब रोमी सेना के दल और *सेनानायक और यहूदियों के सिपाहियों ने यीशु को गिरफ़्तार कर बांध लिया, [13]और पहिले उसे हन्ना के पास ले गए, क्योंकि वह उस वर्ष के महायाजक काइफा का ससुर था। [14]काइफा ही था, जिसने यहूदियों को सलाह दी थी कि हमारे लोगों के लिए एक पुरुष का मरना उत्तम है।

पतरस का इन्कार

[15]शमौन पतरस और एक अन्य चेला यीशु के पीछे चल पड़े। यह चेला महायाजक की जान-पहिचान का था और उसने यीशु के साथ महायाजक के आंगन में प्रवेश किया, [16]परन्तु पतरस बाहर द्वार पर खड़ा रहा। अतः वह दूसरा चेला जो महायाजक की जान-पहिचान का था, बाहर निकला और द्वारपालिन से कह कर पतरस को भीतर ले आया। [17]तब दासी ने जो द्वारपालिन थी, पतरस से कहा, "कहीं तू भी तो इस मनुष्य के चेलों में से नहीं है?" उसने कहा, "मैं नहीं हूँ।" [18]वहां पर दास और सिपाही कोयले की आग जला कर खड़े हुए ताप रहे थे क्योंकि ठण्ड थी, और पतरस भी उनके साथ खड़ा हुआ ताप रहा था।

महायाजक के समक्ष यीशु

[19]तब महायाजक ने यीशु से उसके चेलों और उसकी शिक्षाओं के विषय में प्रश्न किया। [20]यीशु ने उसे उत्तर दिया, "मैंने संसार से खुलकर बातें की हैं। मैंने सदा आराधनालयों तथा मंदिर में जहां सब यहूदी इकट्ठा हुआ करते हैं शिक्षा दी है, और मैंने गुप्त में कुछ भी नहीं कहा। [21]तू मुझसे क्यों पूछता है? सुनने वालों से पूछ कि मैंने उनसे क्या कहा। देख, ये जानते हैं कि मैंने क्या क्या कहा।" [22]और जब उसने यह कहा, तो पास खड़े सिपाहियों में से एक ने यह कहते हुए उसे घूँसा मारा: "क्या तू महायाजक को इस प्रकार उत्तर देता है?" [23]यीशु ने उसे उत्तर दिया,

---

12 *यूनानी में, खिलियारखैस, अर्थात् 10000 सैनिकों का अधिकारी

"यदि मैंने अनुचित कहा तो उसे प्रमाणित कर, परन्तु यदि उचित कहा है तो तू मुझे क्यों मारता है?" [24]तब हन्ना ने उसे काइफा महायाजक के पास बंधा हुआ भेज दिया।

पतरस का पुनः इन्कार

[25]शमौन पतरस खड़ा हुआ ताप रहा था। इसलिए उन्होंने उस से कहा, "कहीं तू भी तो उसके चेलों में से नहीं?" उसने अस्वीकार करके कहा, "मैं नहीं हूँ।" [26]महायाजक के दासों में से एक ने, जो उस मनुष्य का कुटुम्बी था जिस का कान पतरस ने काट डाला था, कहा, "क्या मैंने तुझे बाग में उस के साथ नहीं देखा था?" [27]तब पतरस फिर मुकर गया, और तुरन्त मुर्गे ने बांग दी।

पिलातुस के समक्ष यीशु

[28]और वे यीशु को काइफा के पास से *राजभवन में ले गए, और भोर का समय था, और उन्होंने स्वयं *राजभवन में प्रवेश नहीं किया कि कहीं अशुद्ध न हो जाएं परन्तु फसह खा सकें। [29]इसलिए पिलातुस बाहर निकलकर उनके पास आया, और कहा, "तुम इस मनुष्य पर क्या दोष लगाते हो?" [30]उन्होंने उसे उत्तर देते हुए कहा, "यदि यह मनुष्य कुकर्मी न होता, तो हम उसे तेरे हाथ में न सौंपते।" [31]इसलिए पिलातुस ने उनसे कहा, "तुम ही इसे ले जाकर अपनी व्यवस्था के अनुसार इसका न्याय करो।" यहूदियों ने उस से कहा, "हम किसी को मृत्यु-दण्ड नहीं दे सकते।" [32]यह इसलिए हुआ कि यीशु का वह वचन पूरा हो जो उसने यह संकेत करते हुए कहा था कि उसकी मृत्यु कैसी होगी।

[33]इसलिए पिलातुस ने फिर से राजभवन में प्रवेश किया और यीशु को बुलवाया और उस से कहा, "क्या तू यहूदियों का राजा है?" [34]यीशु ने उत्तर दिया, "क्या तू यह बात अपनी ओर से कह रहा है, या औरों ने मेरे विषय में तुझे बताया?" [35]पिलातुस ने उत्तर दिया, "क्या मैं यहूदी हूँ? तेरी ही जाति और महायाजकों ने तुझे मेरे हाथों में सौंपा है, तूने क्या किया है?" [36]यीशु ने उत्तर दिया, "मेरा राज्य इस संसार का नहीं। यदि मेरा राज्य इस संसार का होता तो मेरे राज-कर्मचारी युद्ध करते कि मैं यहूदियों के हाथ न सौंपा जाता, बात यह है कि, मेरा राज्य इस संसार का नहीं।" [37]इसलिए पिलातुस ने उस से कहा, "तो क्या तू राजा है?" यीशु ने उत्तर दिया, "तू ठीक कहता है कि मैं राजा हूँ। मैंने इसीलिए जन्म लिया और इसलिए इस संसार में आया हूँ कि सत्य की साक्षी दूँ। प्रत्येक जो सत्य का है मेरी वाणी सुनता है।" [38]पिलातुस ने उस से कहा, "सत्य क्या है?"

और जब यह कह चुका तो वह फिर यहूदियों के पास बाहर गया और उनसे कहा, "मैं उस में कोई दोष नहीं पाता। [39]परन्तु तुम्हारी रीति है कि फसह के दिन मैं तुम्हारे लिए एक व्यक्ति को छोड़ दूँ, क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए यहूदियों के राजा को छोड़ दूँ?" [40]तब उन्होंने फिर चिल्लाकर कहा, "इस मनुष्य को नहीं, परन्तु बरअब्बा को छोड़ दे।" और बरअब्बा एक डाकू था।

*अक्षरशः, प्रेतोरियम

यीशु को मृत्यु-दण्ड की आज्ञा

19 तब पिलातुस ने यीशु को लेकर कोड़े लगवाए। [2]और सैनिकों ने कांटों का मुकुट गूँथकर उसके सिर पर रखा, और उसे बैंजनी वस्त्र पहिनाया, [3]और वे उसके पास आ-आकर कहने लगे, 'हे यहूदियों के राजा, प्रणाम!' और उसे थप्पड़ मारने लगे। [4]और पिलातुस ने फिर बाहर निकलकर उन से कहा, "देखो, मैं उसे बाहर तुम्हारे पास ला रहा हूँ, जिस से कि तुम जान लो कि मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता।" [5]तब यीशु कांटों का मुकुट और बैंजनी वस्त्र पहिने बाहर आया और पिलातुस ने उनसे कहा, "देखो, यह मनुष्य।" [6]जब महायाजकों और सिपाहियों ने उसे देखा, तो चिल्लाकर बोले, "क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर!" पिलातुस ने उनसे कहा, "तुम ही उसे ले जाओ और क्रूस पर चढ़ाओ, क्योंकि मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता।" [7]यहूदियों ने उसे उत्तर दिया, "हमारी भी व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार इसे मृत्यु-दण्ड मिलना चाहिए, क्योंकि उसने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र ठहराया।" [8]जब पिलातुस ने यह बात सुनी तो और भी डर गया, [9]तब उसने फिर *राजभवन के भीतर जाकर यीशु से कहा, "तू कहां का है?" परन्तु यीशु ने उसे कोई उत्तर न दिया। [10]तब पिलातुस ने उस से कहा, "क्या तू मुझसे नहीं बोलेगा? क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने और क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है?" [11]यीशु ने उत्तर दिया, "यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता तो तेरा मुझ पर कोई अधिकार न होता, इसलिए जिसने मुझे तेरे हाथ सौंपा है उसका पाप अधिक है।" [12]इसके फलस्वरूप पिलातुस ने उसे छोड़ देने का प्रयत्न किया, पर यहूदियों ने चिल्ला-चिल्लाकर कहा, "यदि इस मनुष्य को छोड़ दे, तो तू कैसर का राज-भक्त नहीं। जो कोई अपने आप को राजा बनाता है वह कैसर का सामना करता है।" [13]पिलातुस ये बातें सुनकर यीशु को बाहर ले आया, और न्याय-सिंहासन पर बैठ गया अर्थात् उस स्थान पर जो चबूतरा कहलाता था और इब्रानी में गब्ता। [14]यह फसह की तैयारी का दिन था, और लगभग बारह बजे थे। तब उसने यहूदियों से कहा, "देखो, तुम्हारा राजा!" [15]इस पर वे चिल्लाकर बोले, "ले जा! ले जा! इसे क्रूस पर चढ़ा!" पिलातुस ने उनसे कहा, "क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊँ?" महायाजकों ने उत्तर दिया, "कैसर को छोड़ हमारा कोई राजा नहीं।" [16]तब उसने क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए उसे उनके हाथ सौंप दिया।

क्रूस पर चढ़ाया जाना

[17]इसलिए वे यीशु को ले गए, और वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया, जो 'खोपड़ी का स्थान' कहलाता है और जिसे इब्रानी में 'गुलगुता' कहते हैं। [18]वहां उन्होंने उसे और उसके साथ दो और मनुष्यों को क्रूस पर चढ़ाया, एक को इस ओर तथा दूसरे को उस ओर, और बीच में यीशु को। [19]और पिलातुस ने एक दोष-पत्र लिखकर क्रूस पर लगा दिया, जिस पर यह लिखा हुआ था, **"यीशु नासरी, यहूदियों का राजा।"** [20]इसलिए इस दोष-पत्र को

9 *अक्षरशः, प्रेतोरियम

बहुत से यहूदियों ने पढ़ा, क्योंकि जिस स्थान पर यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था वह शहर के पास था, और यह इब्रानी, लतीनी और यूनानी में लिखा था। [21]इसलिए यहूदियों के मुख्य याजक, पिलातुस से कहने लगे, " 'यहूदियों का राजा' मत लिख, परन्तु यह कि उसने कहा, 'मैं यहूदियों का राजा हूँ'।" [22]पिलातुस ने उत्तर दिया, "जो मैंने लिख दिया सो लिख दिया।"

[23]जब सैनिकों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिया तो उन्होंने उसके ऊपरी वस्त्रों को उतारा और उसके चार भाग किए, प्रत्येक सैनिक के लिए एक एक भाग। इसी प्रकार कुरता भी लिया; परन्तु कुरता बिन सीअन ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था। [24]इसलिए उन्होंने एक दूसरे से कहा, "हम इसको न फाड़ें, परन्तु इसके लिए चिट्ठी डालें कि यह किसका होगा," जिस से कि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो, **"उन्होंने मेरे ऊपरी वस्त्र आपस में बांट लिए, और मेरे कपड़े पर चिट्ठी डाली।"** [25]अत: सैनिकों ने ऐसा ही किया। परन्तु यीशु के क्रूस के पास उसकी माता, और उसकी माता की बहिन, क्लोपास की पत्नी मरियम, और मरियम मगदलीनी खड़ी थीं। [26]तो जब यीशु ने अपनी माता, और उस चेले को जिस से वह प्रेम करता था पास खड़े हुए देखा तो अपनी माता से कहा, "हे नारी! देख, तेरा पुत्र!" [27]तब उसने चेले से कहा, "देख, तेरी माता!" और उस समय से वह चेला उसे अपने घर ले गया।

यीशु की मृत्यु

[28]इसके पश्चात् यीशु ने यह जान कर सब कुछ पूरा हो चुका, इसलिए कि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो, कहा, **"मैं प्यासा हूँ।"** [29]वहां सिरके से भरा एक बर्तन रखा था, अत: उन्होंने सिरके में भिगोए हुए स्पंज को जूफे की टहनी पर रखा और उसके मुँह से लगाया। [30]जब यीशु ने वह सिरका लिया, तो कहा, "पूरा हुआ," और उसने सिर झुकाकर प्राण त्याग दिया।

[31]और इसलिए कि वह तैयारी का दिन था, यहूदियों ने पिलातुस से विनती की कि उनकी टांगें तोड़ दी जाएं और उन्हें उतार दिया जाए जिस से कि सब्त के दिन (क्योंकि वह सब्त एक विशेष दिन था) उनके शव क्रूस पर न रहें। [32]इसलिए सैनिकों ने आकर, पहिले की, और फिर दूसरे की भी जो उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए थे, टांगें तोड़ीं, [33]परन्तु जब उन्होंने यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है, तो उसकी टांगें नहीं तोड़ीं, [34]परन्तु सैनिकों में से एक ने भाले से उसका पंजर बेधा, और तुरन्त उसमें से लहू और पानी बह निकला। [35]जिसने यह देखा उसने साक्षी दी है और उसकी साक्षी सच्ची है, वह स्वयं जानता है कि सच कहता है, जिस से कि तुम भी विश्वास करो। [36]ये बातें इसलिए हुईं कि पवित्रशास्त्र का यह वचन पूरा हो, **"उसकी एक भी हड्डी तोड़ी न जाएगी।"** [37]फिर पवित्रशास्त्र के एक अन्य भाग में लिखा है, **"जिसे उन्होंने बेधा है, वे उस पर दृष्टि करेंगे।"**

यीशु का गाड़ा जाना

[38]इन बातों के पश्चात् अरमतियाह के यूसुफ ने, जो यहूदियों के डर से गुप्त रूप से यीशु का चेला था, पिलातुस से विनती की कि उसे यीशु के शव को ले जाने की

अनुमति मिले और पिलातुस ने अनुमति दे दी। तब वह आकर यीशु के शव को ले गया। [39]और नीकुदेमुस भी, जो पहले यीशु के पास रात्रि में आया था लगभग चालीस किलो मिला हुआ गन्धरस और एलवा लेकर आया। [40]तब उन्होंने यीशु के शव को लिया और यहूदियों के दफ़नाने की रीति के अनुसार उसे सुगन्धित द्रव्यों के साथ कफ़न में लपेटा। [41]उस स्थान पर जहां उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था एक बाग था, और उस बाग में एक नई कब्र थी जिसमें अभी तक कोई भी न रखा गया था। [42]अत: यहूदियों के तैयारी के दिन के कारण, और इसलिए कि वह कब्र समीप ही थी, उन्होंने यीशु को उसमें रख दिया।

खाली कब्र

20 सप्ताह के पहिले दिन मरियम मगदलीनी, बड़े सवेरे जब कि अभी अंधेरा ही था कब्र पर आई, तो उसने पत्थर को कब्र से हटा हुआ देखा। [2]अत: वह दौड़कर शमौन पतरस और दूसरे चेले के पास जिस से यीशु प्रेम रखता था, गई और उनसे कहने लगी, "वे प्रभु को कब्र में से उठा ले गए हैं और हमें नहीं मालूम कि उन्होंने उसे कहाँ रखा है।" [3]तब पतरस और दूसरा चेला निकल कर कब्र की ओर चल पड़े। [4]वे दोनों साथ साथ दौड़ रहे थे, परन्तु वह दूसरा चेला पतरस से तेज़ दौड़कर कब्र पर पहिले पहुँचा। [5]उसने झुककर भीतर झाँका और कफ़न को अलग पड़ा देखा, पर वह अन्दर न गया। [6]तब शमौन पतरस भी उसके पीछे पीछे वहां आ पहुँचा और कब्र के भीतर जाकर उसने कपड़ों को पड़े देखा। [7]और उस कपड़े को, जिस से यीशु का सिर लपेटा गया था अन्य कपड़ों के साथ नहीं वरन् अलग एक जगह लिपटा हुआ पड़ा देखा। [8]तब दूसरे चेले ने भी, जो कब्र पर पहिले पहुँच गया था, भीतर जाकर देखा और देखकर विश्वास किया। [9]अभी तक वे पवित्रशास्त्र की वह बात न समझे थे कि मृतकों में से उसका जी उठना अवश्य है। [10]तब ये चेले अपने घरों को लौट गए।

मरियम मगदलीनी को दर्शन

[11]परन्तु मरियम रोती हुई कब्र के बाहर खड़ी रही और रोते हुए उसने झुक कर कब्र में झांका। [12]जहां यीशु का शव रखा हुआ था वहां उसने दो स्वर्गदूतों को उजले वस्त्र पहिने हुए, एक को सिरहाने और दूसरे को पैताने बैठे देखा। [13]और उन्होंने उस से कहा, "हे नारी, तू क्यों रो रही है?" उसने उस से कहा, "इसलिए कि वे मेरे प्रभु को उठा ले गए हैं और मैं नहीं जानती कि उन्होंने उसे कहां रखा है।" [14]यह कह कर जब वह मुड़ी तो यीशु को वहां खड़े देखा और न पहिचाना कि यह यीशु है। [15]यीशु ने उस से कहा, "हे नारी, तू क्यों रो रही है? तू किसे ढूँढ़ रही है?" उसने उसे माली समझ कर उस से कहा, "महोदय, यदि तू उसे कहीं उठा ले गया है तो मुझे बता कि तू ने उसे कहां रखा है, और मैं उसे ले जाऊंगी।" [16]यीशु ने उस से कहा, "मरियम!" उसने मुड़कर इब्रानी में कहा, "रब्बूनी!" (जिसका अर्थ है गुरु)। [17]यीशु ने उस से कहा, "मुझे मत छू, क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया हूँ, परन्तु मेरे भाइयों के पास जा, और उनसे कह, 'मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूँ'।" [18]मरियम

मगदलीनी जाकर चेलों को बताने लगी, "मैंने प्रभु को देखा है," और बताने लगी कि उसने मुझसे ये बातें कही थीं।

चेलों पर प्रकट होना

[19]उसी दिन जो सप्ताह का पहिला दिन था संध्या के समय जब वहां के द्वार जहां चेले थे, यहूदियों के डर के मारे बन्द थे, तब यीशु आकर उनके मध्य खड़ा हो गया और उनसे कहा, "तुम्हें शांति मिले।" [20]जब वह यह कह चुका तो उसने अपने हाथ और पंजर दोनों दिखाए। तब चेले प्रभु को देखकर आनन्दित हुए। [21]यीशु ने फिर उनसे कहा, "तुम्हें शान्ति मिले, जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।" [22]और जब वह यह कह चुका तो उसने उन पर फूँका और उनसे कहा, "पवित्र आत्मा लो। [23]यदि तुम किसी के पाप क्षमा करो, तो वे उनके लिए क्षमा किए गए हैं यदि तुम किसी के पाप रखो तो वे रखे गए हैं।"

थोमा को दिखाई देना

[24]परन्तु बारहों में से एक, अर्थात् थोमा जो *जुड़वां कहलाता है, जब यीशु आया तो उनके साथ नहीं था। [25]जब अन्य चेले उस से कहने लगे, "हम ने प्रभु को देखा है," तो उसने उनसे कहा, "जब तक मैं उसके हाथों में कीलों के चिन्ह न देख लूँ और कीलों के छेद में अपनी उंगली न डालूँ और उसके पंजर में अपने हाथ न डालूँ, तब तक मैं विश्वास न करूँगा।"

[26]आठ दिन के पश्चात् उसके चेले फिर घर के भीतर थे, और थोमा उनके साथ था। जब द्वार बन्द थे, तब यीशु आया और उनके मध्य खड़े होकर कहा, "तुम्हें शान्ति मिले।" [27]तब उसने थोमा से कहा, "अपनी उंगली यहां ला और मेरे हाथों को देख, और अपना हाथ बढ़ाकर मेरे पंजर में डाल और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो।" [28]थोमा ने उत्तर देते हुए उस से कहा, "हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!" [29]यीशु ने उस से कहा, "क्योंकि तू ने मुझे देखा है, क्या इसीलिए विश्वास किया है? धन्य हैं वे जिन्होंने मुझे नहीं देखा, फिर भी विश्वास किया है।"

[30]यीशु ने बहुत से अन्य चिन्ह भी चेलों के सामने दिखाए जो इस पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं, [31]परन्तु ये जो लिखे गए हैं इसलिए लिखे गए कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।

तिबिरियास की झील पर दर्शन देना

21 इन बातों के पश्चात् यीशु ने तिबिरियास झील के किनारे फिर से अपने आप को चेलों पर प्रकट किया, और उसने इस प्रकार प्रकट किया। [2]शमौन पतरस, और थोमा जो जुड़वाँ कहलाता है, और गलील के काना का नतनएल, और जब्दी के पुत्र और यीशु के चेलों में से अन्य दो इकट्ठे थे। [3]शमौन पतरस ने उनसे कहा, "मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ।" उन्होंने उस से कहा, "हम भी तेरे साथ चलेंगे।" वे जाकर नाव पर चढ़ गए, और उस रात उन्होंने कुछ भी नहीं पकड़ा। [4]परन्तु जब भोर होने लगी तो यीशु तट पर आ खड़ा हुआ, परन्तु चेलों ने नहीं पहिचाना कि वह यीशु है। [5]इस पर यीशु ने उनसे कहा, "बच्चो, तुम्हें मछलियां नहीं मिलीं न?" उन्होंने

*यूनानी, दिदुमस

उत्तर दिया, "नहीं।" [6]और उसने उनसे कहा, "नाव के दाहिने ओर जाल डालो तो पाओगे।" इसलिए उन्होंने जाल डाला, तब मछलियों की अधिकता के कारण वे खींच न सके। [7]उस चेले ने जिस से यीशु प्रेम करता था पतरस से कहा, "यह तो प्रभु है!" और इसलिए जब शमौन पतरस ने सुना कि यह प्रभु है तो उसने अपना अंगरखा पहन लिया (क्योंकि काम के कारण कुछ भी पहिने न था) और झील में कूद पड़ा। [8]परन्तु अन्य चेले छोटी नाव पर मछलियों से भरा हुआ जाल खींचते हुए आए क्योंकि वे किनारे से अधिक दूर नहीं, पर लगभग दो सौ हाथ की दूरी पर थे। [9]इसलिए जब वे किनारे पर उतरे तो उन्होंने कोयले की आग पहले से जली हुई और उस पर मछली रखी हुई तथा रोटी देखी। [10]यीशु ने उनसे कहा, "जो मछलियाँ तुमने अभी पकड़ी हैं, उनमें से कुछ लाओ।" [11]शमौन पतरस गया और एक सौ तिरपन बड़ी मछलियों से भरे हुए जाल को किनारे पर खींच लाया, यद्यपि मछलियाँ इतनी अधिक थीं फिर भी जाल न फटा। [12]यीशु ने उनसे कहा, "आओ, नाश्ता करो।" चेलों में से किसी को यह पूछने का साहस न हुआ, "तू कौन है?" क्योंकि वे जानते थे कि यह प्रभु ही है। [13]यीशु ने आकर रोटी ली और उन्हें दी और इसी प्रकार मछली भी। [14]यह तीसरी बार है जब यीशु मरे हुओं में से जी उठने के पश्चात् चेलों पर प्रकट हुआ।

पतरस को अन्तिम आदेश

[15]अतः जब वे नाश्ता कर चुके, तो यीशु ने शमौन पतरस से कहा, "हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू इनसे बढ़कर मुझसे प्रेम करता है?" उसने उस से कहा, "हाँ प्रभु, तू तो जानता है कि मैं तुझसे प्रीति करता हूँ।" उसने उस से कहा, "मेरे मेम्नों को चरा।" [16]उसने फिर दूसरी बार उस से कहा, "शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझसे प्रेम करता है?" उसने उस से कहा, "हाँ प्रभु, तू जानता है कि मैं तुझसे प्रीति करता हूँ।" उसने उस से कहा, "मेरी भेड़ों की रखवाली कर।" [17]उसने उस से तीसरी बार कहा, "शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझसे प्रीति करता है?" पतरस उदास हुआ क्योंकि उसने उस से तीसरी बार ऐसा कहा, "क्या तू मुझ से प्रीति करता है?" और उस से कहा, "हे प्रभु, तू सब कुछ जानता है, तू यह भी जानता है कि मैं तुझ से प्रीति करता हूं।" यीशु ने उस से कहा, "तू मेरी भेड़ों को चरा।" [18]मैं तुझ से सच सच कहता हूँ, जब तू जवान था तो अपनी कमर कस कर जहां चाहता था वहां फिरता था, परन्तु जब तू बूढ़ा होगा तो तू अपने हाथ फैलाएगा, और कोई दूसरा तेरी कमर बांधेगा और जहां तू न चाहेगा वहां तुझे ले जाएगा।" [19]उसने ऐसा यह संकेत देते हुए कहा, कि पतरस कैसी मृत्यु से परमेश्वर की महिमा करेगा। और जब वह यह कह चुका, उसने उस से कहा, "मेरे पीछे चल!" [20]पतरस ने मुड़कर उस चेले को पीछे आते देखा जिस से यीशु प्रेम करता था, अर्थात् वही जिसने भोजन के समय, उसकी छाती की ओर झुके हुए पूछा था, 'प्रभु, तुझे धोखे से पकड़वाने वाला कौन है?' [21]उसे देख कर पतरस ने यीशु से कहा, "हे प्रभु, इस मनुष्य का क्या होगा?" [22]यीशु ने उस से कहा, "यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे इस से क्या? तू मेरे

[23]इसलिए भाइयों में यह बात फैल गई कि वह चेला न मरेगा, परन्तु यीशु ने उस से यह नहीं कहा कि वह न मरेगा, परन्तु केवल यह, "यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे इस से क्या?"
[24]यह वही चेला है जो इन बातों की साक्षी देता है और जिसने इन बातों को लिखा, और हम जानते हैं कि उसकी साक्षी सच्ची है।

[25]और भी बहुत काम हैं जो यीशु ने किए। यदि उन्हें एक-एक करके लिखा जाता, तो मैं सोचता हूँ कि जो पुस्तकें लिखी जातीं वे संसार में भी न समातीं।

प्रेरितों के काम

प्रेरितों के कामों का वर्णन

परिचय

1 हे थियुफिलुस, मैंने पहिले वृत्तान्त में उन सब बातों को लिखा जिन्हें यीशु ने आरम्भ से उस दिन तक किया और सिखाया [2]जब तक कि वह पवित्र आत्मा के द्वारा अपने चुने हुए प्रेरितों को आज्ञा देने के पश्चात् ऊपर न उठा लिया गया। [3]अपने दुख-भोग के पश्चात् उसने अनेक ठोस प्रमाणों से उन पर अपने आप को जीवित प्रकट किया, और चालीस दिन तक दिखाई देता रहा, और परमेश्वर के राज्य के विषय में उनसे बातें करता रहा। [4]उसने उन्हें एकत्रित करके यह आज्ञा दी, "यरूशलेम को न छोड़ना, वरन् पिता की उस प्रतिज्ञा के पूर्ण होने की प्रतीक्षा करना जिसे तुमने मुझ से सुना है। [5]यूहन्ना ने तो *जल से बपतिस्मा दिया, परन्तु अब से थोड़े दिनों के पश्चात् तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।"

यीशु का स्वर्गारोहण

[6]अतः जब वे एकत्रित हुए, तो वे उस से पूछने लगे, "प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल के राज्य को पुनः स्थापित कर देगा?" [7]उसने उनसे कहा, "उन समयों अथवा कालों का जानना जिन्हें पिता ने निर्धारित किया है, तुम्हारा काम नहीं। [8]परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे, और यरूशलेम, सारे यहूदिया और सामरिया में, यहां तक कि पृथ्वी के छोर तक तुम मेरे साक्षी होगे।" [9]इतना कहने के पश्चात् वह उनके देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादल ने उसे उनकी आंखों से ओझल कर दिया। [10]जबकि वह जा रहा था तो वे उसे जाते हुए आकाश की ओर एकटक देख रहे थे और देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उनके पास आ खड़े हुए, [11]और कहने लगे, "गलीली पुरुषो, तुम खड़े-खड़े आकाश की ओर क्यों देख

*या, जल में

रहे हो? यही यीशु जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, वैसे ही फिर आएगा जैसे तुमने उसे स्वर्ग में जाते देखा है।"

[12]तब वे जैतून नामक पर्वत से, जो यरूशलेम के निकट, एक सब्त के दिन की दूरी पर है, यरूशलेम को लौटे। [13]वहाँ पहुंच कर वे उस ऊपरी कक्ष में गए, जहाँ वे सब अर्थात् पतरस, यूहन्ना, याकूब, अन्द्रियास, फिलिप्पुस, थोमा, बरतुलमै, मत्ती, हलफई का पुत्र याकूब, शमौन जेलोतेस और याकूब का पुत्र यहूदा ठहरे हुए थे। [14]ये सब एकचित्त होकर कुछ स्त्रियों और यीशु की माता मरियम और यीशु के भाइयों सहित लगातार प्रार्थना में लगे हुए थे।

[15]उस समय पतरस ने भाइयों के मध्य, जो लगभग एक सौ बीस व्यक्ति थे, खड़े होकर कहा, [16]"भाइयो, पवित्रशास्त्र का लेख पूरा होना आवश्यक था जिसे दाऊद के मुख से पवित्र आत्मा ने यहूदा के विषय में पहिले से कहा था, जो यीशु के पकड़वाने वालों का अगुवा बना। [17]क्योंकि हमारे साथ उसकी गणना हुई और वह इस सेवा में भी सहभागी हुआ"—[18]इस मनुष्य ने अधर्म की कमाई से एक खेत मोल लिया, और सिर के बल गिरा और उसका पेट फट गया और उसकी सब आंतें बाहर निकल पड़ीं। [19]और यरूशलेम में रहने वाले सब इस बात को जान गए। इस कारण उनकी अपनी भाषा में उस खेत का नाम 'हकलदमा' अर्थात् 'लहू का खेत' कहलाया—[20]क्योंकि भजन संहिता में लिखा है: **'उसका घर उजड़ जाए, उसमें कोई मनुष्य न बसे'** और **'उसका पद कोई दूसरा ले ले।'** [21,22]इसलिए यह अनिवार्य है कि प्रभु यीशु के हमारे बीच में आने-जाने के दिनों में—अर्थात्, यूहन्ना द्वारा उसके बपतिस्मा पाने से लेकर ऊपर उठा लिए जाने तक—जो लोग सदा हमारे साथ रहे, उनमें से कोई एक हमारे साथ उस के पुनरुत्थान का साक्षी बने।" [23]तब उन्होंने दो मनुष्यों को उपस्थित किया, एक यूसुफ को जो बरसबा कहलाता था—जिसे यूसुफ भी कहते थे—दूसरा मत्तियाह को। [24]तब उन्होंने यह प्रार्थना की, "हे प्रभु, तू जो सब मनुष्यों के हृदयों को जानता है, यह प्रकट कर कि तू ने इन दोनों में से किसको चुना है, [25]कि वह इस सेवा और प्रेरिताई का पद ले, जिसे यहूदा छोड़कर अपने स्थान को चला गया," [26]तब उन्होंने उनके नाम पर पर्चियाँ डालीं। पर्ची मत्तियाह के नाम निकली और वह ग्यारह प्रेरितों के साथ गिना गया।

पवित्र आत्मा का उतरना

2 जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक स्थान पर एकत्रित थे। [2]एकाएक आकाश से एक प्रचण्ड आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उस से सारा घर, जहाँ वे बैठे हुए थे, गूंज गया। [3]और उन्हें आग के समान जीभें विभाजित होती हुई दिखाई दीं, औ[र] उनमें से प्रत्येक पर आ ठहरीं। [4]वे स[ब] पवित्र आत्मा से भर गए और जैसे आत्म[ा] ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी वे अन्य अन[्य] भाषाओं में बोलने लगे।

[5]यरूशलेम में यहूदी रहा करते [थे] अर्थात् वे भक्त जो आकाश के नीचे [के] प्रत्येक देश से आए थे। [6]... हुआ तो भीड़ लग गई ... हो गए, क्योंकि [प्र]त्ये[क]...

भाषा में बोलते सुना। [7]वे आश्चर्यचकित और विस्मित होकर कहने लगे, "ये सब जो बोल रहे हैं क्या गलीली नहीं? [8]तब यह कैसी बात है कि हम में से प्रत्येक अपनी ही मातृ-भाषा में उन्हें बोलते हुए सुनता है? [9]पारथी, मेदी, एलामी और मेसोपोटामिया, यहूदिया और कप्पूदूकिया और पुन्तुस और एशिया, [10]फ्रूगिया, पंफूलिया, मिस्र और लिबिया के प्रदेश जो कुरेने के आस पास हैं, और रोमी प्रवासी अर्थात् यहूदी और यहूदी मत अपनाने वाले, [11]क्रेती और अरब निवासी—हम अपनी-अपनी भाषा में इनसे परमेश्वर के सामर्थी कार्यों की चर्चा सुनते हैं।" [12]वे विस्मित होते रहे और घबराकर एक दूसरे से पूछने लगे, "यह क्या हो रहा है?" [13]परन्तु कुछ लोग ठट्ठा करते हुए कहने लगे, "वे तो नई मदिरा के नशे में चूर हैं।"

पतरस का भाषण

[14]परन्तु पतरस उन ग्यारहों के साथ खड़ा हुआ और ऊंचे शब्द से उपदेश देने लगा: "हे यहूदियो, और यरूशलेम के सब निवासियो, तुम यह जान लो और मेरी बातों को ध्यानपूर्वक सुनो। [15]जैसा तुम समझ रहे हो, ये लोग नशे में नहीं हैं, क्योंकि अभी तो *सुबह का नौ ही बजा है, [16]परन्तु यह वह बात है जो योएल नबी के द्वारा कही गयी थी: [17]**परमेश्वर कहता है, 'अन्तिम दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब लोगों पर उण्डेलूंगा। तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी पुत्रियाँ नबूवत करेंगी। तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे और तुम्हारे वृद्ध-जन स्वप्न देखेंगे। [18]मैं अपने दासों और दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उण्डेलूंगा और वे नबूवत करेंगे। [19]मैं ऊपर आकाश में अद्भुत कार्य और नीचे पृथ्वी पर चिन्ह, अर्थात् लहू और अग्नि तथा धुएं का बादल दिखाऊंगा। [20]प्रभु के महान और महिमामय दिन के आने से पहिले सूर्य अन्धकार में और चन्द्रमा लहू में बदल जाएगा। [21]और ऐसा होगा कि जो कोई प्रभु का नाम लेगा वह उद्धार पाएगा।'**

[22]हे इस्राएलियो, इन बातों को सुनो: यीशु नासरी एक ऐसा मनुष्य था जिसको परमेश्वर ने सामर्थ के कार्य, आश्चर्य-कर्मों और चिन्हों से, जो उसने उसके द्वारा तुम्हारे समक्ष किए, तुम पर प्रकट किया, जैसा कि तुम स्वयं जानते हो। [23]इसी मनुष्य को, जो परमेश्वर की पूर्व-निश्चित योजना और पूर्वज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया था, तुमने विधर्मियों के हाथों क्रूस पर कीलों से ठुकवा कर मार डाला। [24]परन्तु परमेश्वर ने *मृत्यु की पीड़ा को मिटाकर उसे पुनः जीवित कर दिया, क्योंकि मृत्यु के वश में रहना उसके लिए असम्भव था। [25]क्योंकि दाऊद उसके विषय में कहता है: **'मैं सर्वदा प्रभु की ओर निहारता रहा, क्योंकि वह मेरी दाहिनी ओर है जिस से मैं डगमगा न जाऊं। [26]इसलिए मेरा हृदय आनन्दित हुआ व मेरी जीभ हर्षित हुई; और मेरा शरीर भी आशा में बना रहेगा; [27]क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में नहीं रहने देगा, और न अपने पवित्र जन को सड़ने देगा। [28]तू ने मुझे जीवन का मार्ग बताया है; तू मुझे अपने दर्शन के द्वारा आनन्द से भर देगा।'**

[29]"भाइयो, मैं तुमसे कुलपति दाऊद के विषय में विश्वासपूर्वक कह सकता हूं

*या, पहर दिन चढ़ा है (यूनानी में, दिन का तीसरा घंटा) 24 *या, मृत्यु के बन्धन

कि वह मर गया और दफ़नाया भी गया, और उसकी कब्र आज तक हमारे यहाँ विद्यमान है। [30]क्योंकि वह एक नबी था अत: जानता था कि परमेश्वर ने उस से शपथ खाई थी कि वह उसके वंश में से किसी एक व्यक्ति को उसके सिंहासन पर बैठाएगा, [31]इसलिए उसने होने वाली बातों को पहले से देख कर मसीह के पुनरुत्थान के विषय में कहा, वह न तो अधोलोक में छोड़ा गया और न ही उस की देह सड़ने पाई। [32]इसी यीशु को परमेश्वर ने जीवित किया जिसके हम सब साक्षी हैं। [33]इसलिए परमेश्वर के दाहिने हाथ पर सर्वोच्च पद पाकर और पिता से पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा प्राप्त करके, उसने इसे उण्डेल दिया जिसे तुम देखते और सुनते भी हो। [34]क्योंकि दाऊद तो स्वयं स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, परन्तु वह आप ही कहता है: '**प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, "मेरे दाहिने बैठ [35]जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की पीढ़ी न बना दूं"**।' [36]इसलिए इस्राएल का सम्पूर्ण घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसे प्रभु और 'मसीह' दोनों ही ठहराया—इसी यीशु को जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया।"

[37]उन्होंने जब यह सुना तो उनके *हृदय छिद गए और वे पतरस तथा अन्य प्रेरितों से पूछने लगे, "भाइयो, हम क्या करें?" [38]पतरस ने उनसे कहा, "मन फिराओ और यीशु मसीह के नाम से तुम में से प्रत्येक बपतिस्मा ले कि तुम्हारे पापों की क्षमा हो, और तुम पवित्र आत्मा का वरदान पाओगे। [39]क्योंकि वह प्रतिज्ञा तुम्हारे और तुम्हारी सन्तान के लिए और उन सबके लिए है जो दूर दूर हैं, अर्थात् वे सब जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।" [40]और बहुत सी अन्य बातों से साक्षी दे देकर वह उनसे आग्रह करता रहा कि इस कुटिल पीढ़ी से बचो। [41]अत: जिन लोगों ने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन उनमें लगभग तीन हज़ार व्यक्ति सम्मिलित हो गए।

विश्वासियों की संगति

[42]और वे प्रेरितों से लगातार शिक्षा पाने, संगति रखने, रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में लवलीन रहे।

[43]प्रत्येक व्यक्ति पर भय छाया रहा, और बहुत से आश्चर्यकर्म तथा चिन्ह प्रेरितों के द्वारा होते रहे। [44]सब विश्वासी मिलजुल कर रहते थे और उनकी सब वस्तुएं साझे की थीं। [45]वे अपनी सम्पत्ति और सामान बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी सब को बांट दिया करते थे। [46]वे एक मन होकर दिन-प्रतिदिन मन्दिर में जाते और घर घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से एक साथ भोजन किया करते थे। [47]वे परमेश्वर की स्तुति किया करते थे। सब लोग उनसे प्रसन्न थे और जो उद्धार पाते जाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला दिया करता था।

लंगड़े भिखारी की चंगाई

3 पतरस और यूहन्ना *संध्या को तीन बजे प्रार्थना के समय मन्दिर में जा रहे थे। [2]और लोग एक मनुष्य को जो जन्म से लंगड़ा था ले जा रहे थे, जिसे वे प्रतिदिन मन्दिर के उस फाटक पर जो 'सुन्दर' कहलाता है, बैठा दिया

37 *या, अन्तरात्मा को चोट पहुंची

1 *यूनानी मे, नवें घंटे

कि वह मन्दिर में प्रवेश करने वालों से भिक्षा मांगे। [3]जब उसने देखा कि पतरस और यूहन्ना मन्दिर में प्रवेश करने पर हैं तो वह भिक्षा मांगने लगा। [4]तब पतरस ने यूहन्ना के साथ उसे एक टक देख कर कहा, "*हमारी ओर देख!*" [5]वह कुछ पाने की आशा से उनकी ओर ध्यान से देखने लगा। [6]तब पतरस ने कहा, "मेरे पास चाँदी और सोना तो है नहीं, परन्तु जो मेरे पास है वह तुझे देता हूँ—यीशु मसीह नासरी के नाम से चल-फिर!" [7]फिर उसने उसका दाहिना हाथ पकड़कर उसे उठाया, और तुरन्त उसके पैरों और टखनों में शक्ति आ गई। [8]वह उछलकर खड़ा हो गया और चलने-फिरने लगा। उसने चलते-उछलते और परमेश्वर की स्तुति करते हुए उनके साथ मन्दिर में प्रवेश किया। [9]सब लोगों ने उसे चलते-फिरते और परमेश्वर की स्तुति करते हुए देख कर, [10]उसे पहिचान लिया कि यह वही है जो मन्दिर के 'सुन्दर' फाटक पर बैठकर भिक्षा मांगा करता था, और जो कुछ उसके साथ हुआ था उसे देख कर वे आश्चर्य और विस्मय से भर गए।

मन्दिर में पतरस का उपदेश

[11]जब वह पतरस और यूहन्ना का हाथ पकड़े हुए था तो सब लोग अत्यन्त आश्चर्यचकित होकर उस ओसारे में जो सुलैमान का कहलाता है उनके पास दौड़े आए। [12]परन्तु जब पतरस ने यह देखा तो उसने लोगों से कहा, "हे इस्राएली लोगो, तुम क्यों आश्चर्य करते हो, और हमारी ओर क्यों इस प्रकार ताक रहे हो मानो हमने अपनी ही सामर्थ और शक्ति से इस मनुष्य को चलने योग्य बना दिया? [13]इब्राहीम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर, हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने अपने *सेवक यीशु को महिमान्वित किया, जिसे तुमने पकड़वा दिया, और जब पिलातुस ने उसे छोड़ देने का निर्णय किया तो तुमने उसके सामने उसे अस्वीकार किया। [14]तुमने उस पवित्र और धर्मी को अस्वीकार किया और एक हत्यारे के लिए विनती की कि वह तुम्हारे लिए छोड़ दिया जाए, [15]परन्तु जीवन के कर्त्ता को मार डाला, जिसे परमेश्वर ने मृतकों में से जिलाया, जिसके हम गवाह हैं। [16]उसी के नाम में—अर्थात् उस विश्वास द्वारा जो यीशु के नाम पर है—इस मनुष्य को जिसे तुम जानते और देखते भी हो बल मिला है। उसी विश्वास ने जो उसके द्वारा है, इसे सब के सामने पूर्ण चंगाई दी है।

[17]"अब हे भाइयो, मैं जानता हूं कि तुमने यह काम अज्ञानतावश किया और वैसा ही तुम्हारे अधिकारियों ने भी किया। [18]परन्तु जिन बातों को परमेश्वर ने सब नबियों के मुख से पहिले ही बता दिया था, कि उसका *मसीह दुख उठाएगा, उसने इस रीति से पूर्ण किया। [19]इसलिए पश्चात्ताप करो और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं, जिससे कि प्रभु की उपस्थिति से सुख-चैन के दिन आएं, [20]और वह यीशु को भेजे जो तुम्हारे लिए *मसीह ठहराया गया है, [21]और जिसे स्वर्ग में उस समय तक रहना है जब तक कि समस्त वस्तुएं पूर्वावस्था में न आ जाएं जिनकी चर्चा प्राचीन काल से परमेश्वर ने अपने पवित्र नबियों के मुख से की है। [22]मूसा ने कहा, '**प्रभु परमेश्वर तुम्हारे**

*या, पुत्र   18 *अक्षरशः, ख्रिस्तौस, अर्थात् अभिषिक्त

भाइयों से तुम्हारे लिए मेरे समान एक नबी खड़ा करेगा, जो कुछ वह तुमसे कहे उस पर ध्यान देना। [23]**और ऐसा होगा कि प्रत्येक मनुष्य जो उस नबी की बातों पर ध्यान नहीं देगा, लोगों में से पूर्णतः नाश कर दिया जाएगा।'** [24]और उसी प्रकार शमूएल और उसके पश्चात् आने वाले जितने नबियों ने नबूवत की, उन सब ने इन दिनों की घोषणा की। [25]तुम ही तो नबियों की और उस वाचा की सन्तान हो जिसे परमेश्वर ने अब्राहम से यह कहते हुए तुम्हारे पूर्वजों के साथ बांधी थी: '**तेरे ही वंश के द्वारा संसार के समस्त कुल आशीष पाएंगे।**' [26]परमेश्वर ने तुम्हारे लिए अपने *सेवक को जिलाकर उसे पहिले तुम्हारे पास भेजा कि तुम में से प्रत्येक को आशीष दे अर्थात् बुराइयों से फेरे।"

सभा के सामने पतरस और यूहन्ना

4 जब वे लोगों से बातें कर रहे थे तो याजक, मन्दिर के सिपाहियों का कप्तान तथा सदूकी उनके पास आए, [2]और इस बात से अत्यन्त क्रोधित थे कि वे लोगों को उपदेश दे रहे हैं और *यीशु का उदाहरण देकर मृतकों के पुनरुत्थान का प्रचार कर रहे हैं। [3]उन्होंने उन्हें पकड़ा और अगले दिन तक हवालात में रखा क्योंकि संध्या हो चुकी थी। [4]फिर भी वचन के सुनने वालों में से बहुत लोगों ने विश्वास किया और उनकी संख्या लगभग पांच हज़ार पुरुषों की हो गई।

[5]दूसरे दिन ऐसा हुआ कि उनके अधिकारी, प्राचीन और शास्त्री यरूशलेम में एकत्रित हुए। [6]महायाजक हन्ना, कैफा, यूहन्ना, सिकन्दर और महायाजक के घराने के सब लोग भी वहां थे। [7]फिर वे उन्हें बीच में खड़ा करके पूछने लगे, "तुम लोगों ने यह काम किस सामर्थ से अथवा किस नाम से किया है?"

[8]तब पतरस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उनसे कहा, "प्रजा के अधिकारियो और प्राचीनो, [9]यदि एक दुर्बल मनुष्य के साथ की गई भलाई के विषय में आज हमसे पूछ-ताछ की जाती है कि यह मनुष्य कैसे चंगा किया गया, [10]तो तुम सब को और समस्त इस्राएल के लोगों को मालूम हो जाए कि यीशु मसीह नासरी के नाम से—जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया और जिसे परमेश्वर ने मृतकों में से जिला उठाया—इसी नाम से यह मनुष्य तुम्हारे सामने भला-चंगा खड़ा है। [11]**यह वही पत्थर है जिसे तुम राजमिस्त्रियों ने तुच्छ समझा, परन्तु यही कोने का पत्थर बना।** [12]किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है, और अवश्य है कि हम इसी नाम के द्वारा उद्धार पाएं।"

[13]जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का साहस देखा और यह जाना कि वे अशिक्षित और साधारण मनुष्य हैं तो वे अचम्भित हुए और जान गए कि ये यीशु के साथ रहे हैं। [14]तब उस मनुष्य को जो चंगा हुआ था उनके साथ खड़े देख कर वे निरुत्तर हो गए, [15]परन्तु उनको महासभा से बाहर जाने की आज्ञा देकर वे आपस में विचार-विमर्श करने लगे, [16]और कहने लगे, "हम इन मनुष्यों से क्या करें? क्योंकि इनके द्वारा एक प्रत्यक्ष आश्चर्यकर्म हुआ है जो यरूशलेम के रहने वालों पर प्रकट है और हम

26 *या, पुत्र 2 *अक्षरशः यीशु में

अस्वीकार नहीं कर सकते। [17]परन्तु हम इन्हें धमकाएं कि वे किसी मनुष्य से इस नाम को लेकर फिर चर्चा न करें जिससे कि यह बात लोगों में और अधिक न फैले।" [18]उन्होंने उन्हें बुलाकर आज्ञा दी कि यीशु का नाम लेकर न तो कोई चर्चा करें और न ही कोई शिक्षा दें। [19]परन्तु पतरस और यूहन्ना ने उनको उत्तर दिया, "तुम ही न्याय करो: क्या परमेश्वर की दृष्टि में यह उचित है कि हम परमेश्वर की आज्ञा से बढ़कर तुम्हारी बात मानें? [20]क्योंकि यह तो हमसे हो नहीं सकता कि जो हमने देखा और सुना है, उसे न कहें।" [21]तब उन्होंने उनको और धमकाकर तथा दण्ड देने का कोई कारण न पाकर लोगों के भय के कारण छोड़ दिया क्योंकि इस घटना के कारण लोग परमेश्वर की प्रशंसा कर रहे थे। [22]जिस मनुष्य पर चंगाई का यह आश्चर्यकर्म हुआ था, उसकी आयु चालीस वर्ष से अधिक थी।

विश्वासियों की प्रार्थना

[23]जब उन्हें वहाँ से छोड़ दिया गया तो वे अपने साथियों के पास गए और जो कुछ मुख्य याजकों और प्राचीनों ने उनसे कहा था, उनको सुना दिया। [24]जब उन्होंने यह सुना तो एकचित्त होकर ऊंचे शब्द से परमेश्वर को पुकारा, "हे प्रभु, तू ने ही **आकाश, पृथ्वी और समुद्र तथा सब कुछ जो उनमें है, बनाया।** [25]तू ने ही पवित्र आत्मा के द्वारा अपने सेवक हमारे पिता दाऊद के मुख से कहा, '**गैरयहूदियों ने रोष क्यों किया, और देश देश के लोगों ने व्यर्थ बातों की कल्पना क्यों की? [26]प्रभु के विरोध में और उसके मसीह के विरोध में, पृथ्वी के राजा उठ खड़े हुए, और शासक एक साथ एकत्रित हो गए।**' [27]क्योंकि सचमुच तेरे पवित्र सेवक यीशु के विरोध में जिसका अभिषेक तूने किया, हेरोदेस और पुन्तियुस पिलातुस भी गैरयहूदियों और इस्राएलियों के साथ इस नगर में एकत्रित हुए; [28]कि वही करें जो कुछ तेरी सामर्थ और योजना में पहिले से निर्धारित किया गया था। [29]अब हे प्रभु, उनकी धमकियों को देख, और अपने दासों को यह वरदान दे, कि तेरे वचन को पूर्ण निर्भयता से सुनाएं, [30]तू चंगा करने के लिए अपना हाथ बढ़ा और आश्चर्यकर्म और चिन्ह तेरे पवित्र सेवक यीशु के नाम के द्वारा किए जाएं।" [31]जब वे प्रार्थना कर चुके तो वह स्थान जहाँ वे एकत्रित थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन निर्भीकता से सुनाने लगे।

विश्वासियों का सामूहिक जीवन

[32]विश्वासियों का समुदाय एक मन और एक प्राण था। उनमें से कोई भी अपनी सम्पत्ति को अपनी नहीं कहता था, परन्तु उनका सब कुछ साझे का था। [33]और प्रेरित बड़ी सामर्थ के साथ प्रभु यीशु के पुनरुत्थान की साक्षी देते थे, और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था। [34]उनमें से कोई भी गरीब नहीं था। वे सब लोग जो भूमि या घरों के स्वामी थे अपनी भूमि या घरों को बेच-बेचकर उनका मूल्य लाते, [35]तथा उन्हें प्रेरितों के चरणों में रख देते थे। तब जैसी जिनकी आवश्यकता होती थी, उसके अनुसार उन्हें बांट देते थे।

[36]यूसुफ नाम साइप्रस का एक लेवी था जो प्रेरितों द्वारा बरनाबास भी—अर्थात् शान्ति का पुत्र—कहलाता था। [37]उस के पास अपनी कुछ भूमि थी, जिसे उसने

बेचा और धनराशि लाकर प्रेरितों के चरणों में रख दी।

हनन्याह और सफीरा

5 परन्तु हनन्याह नामक एक व्यक्ति ने और उसकी पत्नी सफीरा ने कुछ भूमि बेच कर, [2]उसके मूल्य में से कुछ अपने लिए रख छोड़ा—उसकी पत्नी को तो इसकी पूर्ण जानकारी थी—तब उसका कुछ भाग लाकर हनन्याह ने प्रेरितों के चरणों पर रख दिया। [3]परन्तु पतरस ने कहा, "हनन्याह, शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले और भूमि के मूल्य में से कुछ बचाकर रख ले? [4]जबकि वह बिकी न थी तो क्या तेरी न थी? और बिक जाने के बाद भी क्या वह तेरे ही अधिकार में न थी? तू ने अपने मन में ऐसा करने का विचार क्यों किया? तू ने मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से झूठ बोला है।" [5]इन शब्दों को सुनते ही हनन्याह गिर पड़ा और उसने दम तोड़ दिया और सब सुननेवालों पर बहुत भय छा गया। [6]तब जवानों ने उठकर उसके शव को कपड़े में लपेटा और बाहर ले जाकर उसे दफ़ना दिया।

[7]लगभग तीन घण्टे बीत जाने के पश्चात्, उसकी पत्नी इस घटना के विषय में कुछ न जानते हुए भीतर आई। [8]तब पतरस ने उस से कहा, "मुझे बता कि क्या तू ने भूमि इतने ही में बेची थी?" उसने कहा, "हाँ, इतने में ही।" [9]तब पतरस ने उस से कहा, "यह क्या बात है कि तुम दोनों ने साथ मिलकर प्रभु के आत्मा की परीक्षा करने की ठानी? देख, तेरे पति को दफ़नाने वालों के पैरों की आहट द्वार तक आ पहुंची है, वे तुझे भी बाहर ले जाएंगे।" [10]वह तुरन्त उसके पैर के पास गिर पड़ी और उसने भी दम तोड़ दिया। जवानों ने भीतर आकर उसे भी मरा पाया, और बाहर ले जाकर उसके पति के पास दफ़ना दिया। [11]इस से समस्त कलीसिया तथा सब सुनने वालों पर बड़ा भय छा गया।

प्रेरितों द्वारा चिन्ह और चमत्कार

[12]प्रेरितों के द्वारा लोगों के मध्य बहुत से चिन्ह और अद्‌भुत कार्य हो रहे थे; और वे सब एकचित्त होकर सुलैमान के ओसारे में एकत्रित हुआ करते थे। [13]परन्तु औरों में से किसी को उनमें सम्मिलित होने का साहस नहीं हुआ; फिर भी लोग उनकी बड़ी प्रशंसा करते थे। [14]प्रभु पर विश्वास करने वाले पुरुषों और स्त्रियों की भीड़ की भीड़ उनमें निरन्तर मिलती जा रही थी, [15]यहाँ तक कि लोग बीमारों को भी सड़कों पर ला लाकर चारपाइयों और बिछौनों पर लिटा दिया करते थे कि जब पतरस उधर से निकले तो कम से कम उसकी छाया ही उनमें से किसी पर पड़ जाए। [16]यरूशलेम के आस पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों तथा दुष्टात्माओं से पीड़ित लोगों को लाया करते थे और वे सब बीमार चंगे हो जाते थे।

प्रेरितों की गिरफ़्तारी

[17]परन्तु महायाजक और उस के सब सहयोगी अर्थात् सदूकियों के सम्प्रदाय के लोग उठ खड़े हुए, और ईर्ष्या से भरकर [18]उन्होंने प्रेरितों को पकड़ा और उन्हें बन्दीगृह में डाल दिया। [19]परन्तु रात में प्रभु के एक स्वर्गदूत ने बन्दीगृह का द्वार खोल दिया और उन्हें बाहर लाकर कहा, [20]"जाओ, मन्दिर में

खड़े होकर लोगों को इस जीवन का सम्पूर्ण सन्देश सुनाओ।"

[21]यह सुनकर वे भोर होते ही मन्दिर में गए और उपदेश देने लगे। परन्तु जब महायाजक तथा उसके सहयोगी आए तो उन्होंने सभा बुलाई, अर्थात् इस्राएल के प्राचीनों की महासभा, और उन्हें बन्दीगृह से ले आने का आदेश भेजा। [22]परन्तु जो अधिकारी वहां गए, उन्होंने बन्दीगृह में उन्हें नहीं पाया और लौटकर समाचार दिया, [23]"हमने बन्दीगृह को अत्यन्त सुरक्षित रूप से बन्द किया हुआ तथा सिपाहियों को द्वार पर खड़े पाया। परन्तु जब हमने खोलकर देखा तो भीतर कोई न मिला।" [24]जब मन्दिर के सिपाहियों के कप्तान ने तथा मुख्य याजकों ने ये बातें सुनीं तो वे अत्यधिक चिन्ता में पड़ गए कि अब क्या होगा। [25]परन्तु किसी ने आकर उन्हें समाचार दिया, "देखो, जिन लोगों को तुमने बन्दीगृह में डाल दिया था, वे मन्दिर में खड़े होकर लोगों को उपदेश दे रहे हैं!"

[26]तब सिपाहियों के साथ कप्तान गया और बिना बल-प्रयोग किए उन्हें ले आया, क्योंकि इन्हें लोगों से यह भय था कि कहीं वे हम पर पथराव न करें। [27]जब ये ले आए तो महासभा के सामने उन्हें खड़ा कर दिया। तब महायाजक ने उनसे पूछा, [28]"हमने तुम्हें कठोर आदेश दिया था कि तुम इस नाम से उपदेश न देना, फिर भी देखो, तुमने सारे यरूशलेम को अपने उपदेशों से भर दिया है, और तुम इस व्यक्ति की मृत्यु का लहू हमारे सिर पर मढ़ना चाहते हो।" [29]परन्तु पतरस और प्रेरितों ने उत्तर दिया, "हमारे लिए मनुष्यों की अपेक्षा परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना आवश्यक है। [30]हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने उस यीशु को जिला उठाया जिसे तुमने क्रूस पर लटका कर मार डाला था। [31]उसी को परमेश्वर ने अपने दाहिने हाथ पर अति महान करके *प्रभु और उद्धारकर्त्ता ठहराया कि इस्राएल को पश्चात्ताप और पापों की क्षमा प्रदान करे। [32]हम इन सब बातों के साक्षी हैं और वैसे ही पवित्र आत्मा भी जिसे परमेश्वर ने अपनी आज्ञा का पालन करने वालों को दिया है।"

[33]परन्तु जब उन्होंने सुना तो वे तिलमिला उठे और उन्हें मार डालना चाहा। [34]परन्तु गमलिएल नामक एक फरीसी ने जो व्यवस्था का शिक्षक और सब लोगों में आदरणीय था, महासभा में खड़े होकर आदेश दिया कि इन लोगों को थोड़ी देर के लिए बाहर निकाल दिया जाए। [35]और उसने उनसे कहा, "हे इस्राएलियो, तुम इन लोगों से जो कुछ करना चाहते हो उसे सोच समझकर करो। [36]क्योंकि कुछ समय पहिले थियूदास यह दावा करते हुए उठ खड़ा हुआ था कि मैं भी कुछ हूं; और लगभग चार सौ मनुष्य उसके पीछे चल पड़े। परन्तु वह मार डाला गया तथा उसके सब अनुयायी तित्तर-बित्तर हुए और उनसे कुछ बन न पड़ा। [37]उस व्यक्ति के बाद जनगणना के दिनों में गलील निवासी यहूदा उठ खड़ा हुआ और उसने कुछ लोगों को अपनी ओर कर लिया। वह भी मिट गया और उसके सब अनुयायी तित्तर-बित्तर हो गए। [38]अतः इस मामले में भी मैं तुमसे कहता हूं कि इन मनुष्यों से दूर रहो और इनसे कोई मतलब न रखो; क्योंकि यदि यह योजना या कार्य

*या, अगुआ

मनुष्यों की ओर से हो तो मिट जाएगा; [39]परन्तु यदि यह परमेश्वर की ओर से है तो तुम उन्हें मिटा न सकोगे। कहीं ऐसा न हो कि तुम परमेश्वर से भी लड़नेवाले ठहरो!" [40]उन्होंने उसकी सलाह मान ली और प्रेरितों को भीतर बुलाकर उन्हें कोड़े मारे। तब यह आदेश देकर उन्हें छोड़ दिया कि यीशु के नाम से बिल्कुल बात न करें। [41]अत: वे महासभा के सामने से आनन्द मनाते हुए चल दिए कि उसके नाम के लिए वे अपमान सहने के योग्य तो ठहरे। [42]वे प्रतिदिन मन्दिर में और घर-घर में शिक्षा देने तथा उपदेश करने में लगे रहे कि यीशु ही मसीह है।

सात सेवकों का चुना जाना

6 उन दिनों में जब चेलों की संख्या बढ़ रही थी तब यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों का इब्रानी बोलनेवाले यहूदियों से यह विवाद उठ खड़ा हुआ कि प्रतिदिन भोजन-वितरण में हमारी विधवाओं की उपेक्षा की जाती है। [2]तब बारहों ने चेलों की मण्डली को बुलाकर कहा, "हमारे लिए यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर के वचन को छोड़कर खिलाने-पिलाने की सेवा करें। [3]इसलिए, हे भाइयो, अपने में से सात सच्चरित्र पुरुषों को चुन लो जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों कि हम इस कार्य का संचालन उनके हाथों में सौंप दें। [4]परन्तु हम तो स्वयं प्रार्थना और वचन की सेवा में लगे रहेंगे। [5]यह बात समस्त मण्डली को उचित जान पड़ी; और उन्होंने स्तिफनुस नामक एक पुरुष को जो विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, और फिलिप्पुस, प्रखुरुस, नीकानोर, तिमोन, पर्मिनास और अन्ताकिया के निकुलाऊस को जो यहूदी मत में आ गया था, चुन लिया। [6]वे इन्हें प्रेरितों के सामने ले आए और उन्होंने प्रार्थना करके उन पर हाथ रखे।

[7]परमेश्वर का वचन फैलता गया और यरूशलेम में चेलों की संख्या अत्यधिक बढ़ती गई और बहुत से याजकों ने भी इस मत को ग्रहण कर लिया।

स्तिफनुस की गिरफ़्तारी

[8]स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ से परिपूर्ण होकर लोगों के बीच बड़े बड़े अद्‌भुत कार्य और चिन्ह दिखाया करता था। [9]तब वह सभागृह जो स्वतन्त्र किए हुए दासों का कहलाता था, उस में कुछ लोग जो कुरेनी, सिकन्दरिया, किलिकिया और एशिया से आए थे उठकर स्तिफनुस से वाद-विवाद करने लगे। [10]फिर भी वह ऐसी बुद्धि और आत्मा से बोलता था कि वे उसका विरोध करने में असमर्थ रहे। [11]तब उन्होंने कुछ व्यक्तियों को यह कहने के लिए फुसलाया, "हमने इसे मूसा और परमेश्वर के विरोध में निन्दा की बातें कहते सुना है।" [12]तब वे लोगों को तथा प्राचीनों और शास्त्रियों को भड़का कर उस पर चढ़ आए और उसे घसीट कर महासभा में ले गए। [13]वे झूठे गवाहों को सामने लाए जिन्होंने कहा, "यह मनुष्य इस पवित्र स्थान और व्यवस्था के विरुद्ध निरन्तर बोलता रहता है। [14]हमने इसे यह कहते सुना है कि वही यीशु नासरी इस स्थान को ध्वस्त कर देगा और उन रीतियों को बदल डालेगा जो मूसा ने हमें सौंपी हैं।" [15]जब सभा में बैठे हुए लोगों ने उस पर दृष्टि गड़ाई तो सब ने उसका मुंह स्वर्गदूत के सदृश देखा।

सभा में स्तिफनुस का भाषण

7 महायाजक ने कहा, "क्या ये बातें ऐसी ही हैं?"

[2]तब उसने कहा, "भाइयो और बुजुर्गो, सुनो! हमारा पिता इब्राहीम हारान में रहने से पहिले जब मेसोपोटामिया में था तो महिमामय परमेश्वर ने उसे दर्शन दिया, [3]और उस से कहा, **'तू अपने देश और अपने कुटुम्बियों से अलग होकर उस देश को चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा।'** [4]तब वह कसदियों के देश से निकलकर हारान में जा बसा। वहां से उसके पिता की मृत्यु के पश्चात् परमेश्वर उसे इस देश में लाया जहाँ तुम अब रहते हो! [5]परमेश्वर ने वहाँ उसे कोई मीरास नहीं दी, यहाँ तक कि पैर रखने को भी जगह नहीं दी। यद्यपि उस समय उसके कोई पुत्र नहीं था, फिर भी प्रतिज्ञा की कि **यह देश मैं तेरे और तेरे पश्चात् तेरे वंश के अधिकार में कर दूंगा।** [6]**परन्तु परमेश्वर ने यह भी कहा कि तेरा वंश चार सौ वर्ष तक पराए देश में परदेशी होकर रहेगा और दास बनाया जाकर उसके साथ दुर्व्यवहार किया जाएगा।** [7]परमेश्वर ने कहा, **'जिस जाति के वे दास होंगे उसको मैं स्वयं दण्ड दूंगा, इसके पश्चात् वे छूटकर इसी स्थान पर मेरी सेवा करेंगे।'** [8]उसने उनसे खतने की वाचा बांधी, अतः इब्राहीम से इसहाक उत्पन्न हुआ और आठवें दिन उसका खतना हुआ। इसहाक से याकूब तथा याकूब से बारह कुलपति उत्पन्न हुए। [9]और कुलपति यूसुफ से **ईर्ष्या करने लगे और उसे मिस्र जाने वालों के हाथ बेच दिया।** **...भी परमेश्वर उसके साथ था।** [10]परमेश्वर ने उसे समस्त संकटों से छुड़ाकर **मिस्र के राजा फिरौन की दृष्टि में अनुग्रह तथा बुद्धि प्रदान की। तब राजा ने उसे मिस्र तथा अपने सम्पूर्ण घराने पर अधिकारी ठहराया।** [11]फिर **पूरे मिस्र तथा कनान में अकाल पड़ा** और बड़ा संकट आया। हमारे पूर्वजों को अन्न नहीं मिला। [12]परन्तु **जब याकूब ने सुना कि मिस्र में अन्न है,** तो उसने हमारे पूर्वजों को पहिली बार वहां भेजा। [13]दूसरी भेंट में यूसुफ ने अपने आप को अपने भाइयों पर प्रकट कर दिया, और फिरौन को भी यूसुफ के परिवार के बारे में मालूम हो गया। [14]तब यूसुफ ने सन्देश भेजकर अपने पिता याकूब को तथा सारे सम्बन्धियों को जो सब मिलाकर पचहत्तर व्यक्ति थे, अपने पास बुलाया। [15]**याकूब मिस्र को गया** और वह तथा हमारे पूर्वज **वहीं मर गए।** [16]वहां से उनके शव शेकेम ले जाए जाकर उस कब्र में रख दिए गए जिसे इब्राहीम ने मूल्य देकर हमोर के पुत्रों से खरीदा था। [17]परन्तु जब उस प्रतिज्ञा के पूरे होने का समय निकट आया जो परमेश्वर ने इब्राहीम से की थी तो मिस्र में उन लोगों की संख्या कई गुणा बढ़ गई। [18]"**तब वहाँ एक अन्य राजा हुआ जो यूसुफ के विषय में कुछ भी नहीं जानता था।** [19]उसने धूर्ततापूर्वक हमारी जाति के साथ व्यवहार किया और हमारे पूर्वजों को ऐसा विवश किया कि वे अपने शिशुओं को फेंक दिया करें जिस से वे जीवित न रहें।

[20]"इसी समय मूसा का जन्म हुआ और वह परमेश्वर की दृष्टि में अति सुन्दर था, और तीन माह तक उसके पिता के घर में उसका पालन-पोषण हुआ। [21]जब वह बाहर छोड़ दिया गया तो

फिरौन की पुत्री उसे उठाकर ले गई और अपने पुत्र के समान उसका पालन-पोषण करने लगी। [22]मूसा को मिस्रियों की समस्त विद्या की शिक्षा दी गई थी और वह बातों तथा कार्यों दोनों में सामर्थी था।

[23]"परन्तु जब वह चालीस वर्ष का होनेवाला था तब उसके मन में अपने इस्राएली भाइयों से भेंट करने का विचार आया। [24]जब उसने एक के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार होते देखा तब उसका बचाव किया और मिस्री को मारकर सताए जाने वाले का बदला लिया। [25]उसने सोचा कि उसके भाई समझ जाएंगे कि परमेश्वर उसके द्वारा उन्हें छुटकारा दिलवाएगा, परन्तु उन्होंने न समझा। [26]दूसरे दिन जब वे आपस में झगड़ रहे थे तो उसने उनके पास आकर यह कहते हुए मेल कराने का प्रयत्न किया, 'हे सज्जनो, तुम तो भाई-भाई हो। क्यों एक दूसरे को मारते हो?' [27]परन्तु **जो अपने पड़ोसी को मार रहा था उसने** उसे एक ओर ढकेल कर कहा, '**किसने तुझे हम पर अधिकारी और न्यायाधीश बनाया? [28]क्या जिस प्रकार तू ने कल उस मिस्री को मार डाला, वैसे ही मुझे भी मार डालना चाहता है?' [29]यह सुनकर मूसा भाग गया और मिद्यान में परदेशी** होकर रहने लगा, जहाँ उसके दो पुत्र हुए।

[30]"जब चालीस वर्ष बीत गए तब **एक स्वर्गदूत सीनै पहाड़ के जंगल में जलती हुई झाड़ी की लपटों में उसे दिखाई दिया।** [31]मूसा ने जब उसे देखा तो विस्मित हो उठा। जब वह उसे ध्यान से देखने के लिए निकट गया तो प्रभु की यह वाणी सुनाई दी: [32]'**मैं तेरे पूर्वजों का परमेश्वर, इब्राहीम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर हूं,**' मूसा कांप उठा और देखने का साहस न कर सका। [33]**तब प्रभु ने उस से कहा, 'अपने पैरों से जूतियां उतार दे, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है। [34]मैंने निश्चय ही मिस्र में अपनी प्रजा की दुर्दशा देखी है; और उसकी आहें सुनी हैं और मैं उसे छुड़ाने के लिए उतर आया हूं। अब आ, मैं तुझे मिस्र भेजूंगा।**

[35]"जिस मूसा को उन्होंने यह कह-कर अस्वीकार किया था, '**तुझे किसने अधिकारी और न्यायाधीश बनाया?' उसी को परमेश्वर ने अधिकारी और छुड़ाने वाला ठहराकर उस स्वर्गदूत के द्वारा भेजा जिसने उसे झाड़ी में दर्शन दिया था।** [36]यही व्यक्ति मिस्र, लाल समुद्र और जंगल में चालीस वर्ष तक आश्चर्यकर्म और चिन्ह दिखाता हुआ उन्हें निकाल लाया। [37]यही वह मूसा है जिसने इस्राएलियों से कहा, '**परमेश्वर तुम्हारे लिए तुम्हारे भाइयों में से मेरे जैसा एक नबी खड़ा करेगा।**' [38]यह वही है जो जंगल में सभा के बीच उस स्वर्गदूत के साथ था जिसने सीनै पहाड़ पर उस से बातें कीं जो हमारे पूर्वजों के साथ था और उसने परमेश्वर के जीवित वचन पाए कि हम तक पहुंचाए।

[39]"परन्तु हमारे पूर्वज उसकी मानने के इच्छुक न थे, अतः उन्होंने उसको त्याग कर अपने मनों को मिस्र की ओर फेरा, [40]और हारून से कहा, '**हमारे लिए ऐसे देवताओं को बना जो हमारे आगे आगे चलें, क्योंकि हम नहीं जानते कि उस मूसा का क्या हुआ जो हमें मिस्र देश से निकालकर लाया था।**' [41]तब उन्होंने एक बछड़ा बनाया और उसकी मूर्ति पर बलि चढ़ाई और अपने हाथ के कार्यों के कारण आनन्द मनाने लगे। [42]परन्तु

परमेश्वर ने उनसे मुंह मोड़ लिया तथा उन्हें आकाशगणों को पूजने के लिए छोड़ दिया, जैसा कि नबियों की पुस्तक में लिखा है, 'हे इस्राएल के घराने, क्या तुम **जंगल में चालीस वर्ष तक पशु-बलि और अन्न-बलि मुझ ही को चढ़ाते रहे? [43]तुम अपने साथ मोलेक के तम्बू और रिफान देवता के तारे को भी लिए थे, अर्थात् उन मूर्तियों को जिन्हें तुमने पूजने के लिए बनवाया था। अतः मैं भी तुमको बाबुल से परे ले जाकर बसाऊंगा।'**

[44]"निर्जन प्रदेश में तो हमारे पूर्वजों के लिए साक्षी का ऐसा तम्बू था, जैसा कि मूसा से बातें करने वाले ने आदेश दिया था कि वह उसी नमूने के अनुसार बनाए जिसे उसने देखा था। [45]उसी तम्बू को उत्तराधिकार में पाकर हमारे बाप-दादे यहोशू के साथ उस समय यहां ले आए जब उन्होंने उन जातियों पर कब्जा किया जिन्हें परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों के साम्हने खदेड़कर निकाल दिया, और ऐसा ही दाऊद के समय तक रहा। [46]दाऊद पर परमेश्वर की कृपा-दृष्टि हुई, तब उसने विनती की कि वह याकूब के परमेश्वर के लिए निवास-स्थान बनवा सके। [47]परन्तु सुलैमान ने ही इस निवास-स्थान को उसके लिए बनाया। [48]परन्तु परमप्रधान तो हाथ के बनाए भवनों में नहीं रहता। जैसा कि नबी कहता है: [49]**'स्वर्ग मेरा सिंहासन है, और पृथ्वी मेरे पांवों की पीढ़ी है, तुम मेरे लिए किस प्रकार का घर बनाओगे? क्या मेरे विश्राम के लिए कोई स्थान हो सकता है? [50]क्या मेरे हाथों ने ही इन सब को नहीं बनाया?'**

[51]"हे हठीले लोगो, तुम्हारे मन और कान खतनारहित हैं। तुम सदा पवित्र आत्मा का विरोध करते आए हो। तुम भी वैसा ही कर रहे हो जैसा तुम्हारे पूर्वज किया करते थे, [52]तुम्हारे पूर्वजों ने नबियों में से किसे नहीं सताया? उन्होंने उनको भी मार डाला जिन्होंने उस धर्मी जन के आगमन का पहिले से ही सन्देश दिया था, जिसके पकड़वाने वाले और हत्यारे अब तुम बन गए हो; [53]और तुम ही हो जिन्होंने स्वर्गदूतों द्वारा ठहराई गई व्यवस्था तो पाई, परन्तु उसका पालन नहीं किया।"

स्तिफनुस का पथराव

[54]जब उन्होंने यह सुना तो वे तिलमिला उठे और स्तिफनुस पर दांत पीसने लगे। [55]परन्तु उसने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर एकटक देखा तथा परमेश्वर की महिमा की और यीशु को, परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा देखा। [56]तब उसने कहा, "देखो, मैं स्वर्ग को खुला हुआ और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा देखता हूं।" [57]परन्तु उन्होंने ज़ोर से चिल्लाकर अपने कान बन्द कर लिए और एक साथ उस पर झपटे। [58]वे उसे खदेड़कर नगर से बाहर ले गए और उस पर पथराव करने लगे। गवाहों ने अपने चोगे उतारकर शाऊल नामक एक नवयुवक के पास रख दिए। [59]जब वे पथराव कर रहे थे तो स्तिफनुस ने प्रार्थना की, "हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर!" [60]और अपने घुटनों के बल गिरकर वह ज़ोर से चिल्लाया, "प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा!" यह कहकर वह सो गया।

कलीसिया पर अत्याचार

8 इस प्रकार उसके मार डाले जाने में शाऊल भी सहमत था।

उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर घोर अत्याचार आरम्भ हुआ, और प्रेरितों को छोड़ वे सब यहूदिया और सामरिया के समस्त प्रदेशों में तित्तर-बित्तर हो गए। [2]फिर कुछ भक्तों ने स्तिफनुस को दफ़नाया और उसके लिए बड़ा विलाप किया। [3]परन्तु शाऊल घर घर जाकर कलीसिया को उजाड़ने और स्त्री-पुरुषों को घसीट-घसीट कर बन्दीगृह में डालने लगा।

सामरिया में फिलिप्पुस का प्रचार

[4]अत: जो तित्तर-बित्तर हुए थे, घूम घूम कर वचन का प्रचार करने लगे, [5]और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा। [6]जब लोगों ने फिलिप्पुस की बातें सुनीं और उन चिन्हों को देखा जिन्हें वह दिखा रहा था तो उन्होंने एकचित्त होकर उसकी बातों पर ध्यान दिया। [7]क्योंकि बहुत लोगों में से अशुद्ध आत्माएं बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल रही थीं, तथा अनेक जो लकवे के मारे और लंगड़े थे, चंगे किए जा रहे थे। [8]और उस बड़े नगर में बड़ा आनन्द छा गया।

शमौन जादूगर

[9]वहां शमौन नामक एक मनुष्य था जो पहिले उस नगर में जादू-टोना किया करता और एक महान् पुरुष होने का दावा करके सामरिया के लोगों को आश्चर्य में डाला करता था। [10]वे सब, छोटे से लेकर बड़े तक, उस पर ध्यान देकर यह कहते थे, "यह व्यक्ति परमेश्वर की वह शक्ति है जो महान् कहलाती है।" [11]वे उस पर इसलिए ध्यान देते थे, कि उसने अपने जादू के कार्यों द्वारा उन सब को लम्बे समय से आश्चर्य में डाल रखा था। [12]परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस का विश्वास किया जो परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार और यीशु के नाम का प्रचार करता था तो क्या पुरुष, क्या स्त्री—सब बपतिस्मा लेने लगे। [13]और स्वयं शमौन ने भी विश्वास किया तथा बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के साथ रहने लगा। वह चिन्हों तथा बड़े बड़े आश्चर्यकर्मों को होते देख कर चकित हुआ करता था।

[14]जब यरूशलेम में प्रेरितों ने सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन ग्रहण किया है, तो उन्होंने उनके पास पतरस और यूहन्ना को भेजा। [15]उन्होंने वहां पहुंचकर उनके लिए प्रार्थना की कि वे पवित्र आत्मा पाएं। [16]क्योंकि वह अब तक उनमें से किसी पर नहीं उतरा था; उन्होंने केवल प्रभु यीशु के नाम से बपतिस्मा लिया था। [17]तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया। [18]जब शमौन ने यह देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा मिलता है तो उनके पास रुपये लाकर कहा, [19]"यह अधिकार मुझे भी दो, कि जिस किसी पर मैं हाथ रखूं वह पवित्र आत्मा पाए।" [20]परन्तु पतरस ने उस से कहा, "तेरे *रुपये तेरे साथ नाश हों, क्योंकि तू ने परमेश्वर का वरदान रुपयों से प्राप्त करने का विचार किया! [21]इस बात में न तेरा कोई साझा है और न हिस्सा, क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के सामने ठीक नहीं। [22]इसलिए अपनी इस दुष्टता से पश्चात्ताप कर और प्रभु से प्रार्थना कर, सम्भव है कि तेरे मन का

---

20 *अक्षरशः, चांदी

परमेश्वर ने उनसे मुंह मोड़ लिया तथा उन्हें आकाशगणों को पूजने के लिए छोड़ दिया, जैसा कि नबियों की पुस्तक में लिखा है, **'हे इस्राएल के घराने, क्या तुम जंगल में चालीस वर्ष तक पशु-बलि और अन्न-बलि मुझ ही को चढ़ाते रहे? [43]तुम अपने साथ मोलेक के तम्बू और रिफान देवता के तारे को भी लिए थे, अर्थात् उन मूर्तियों को जिन्हें तुमने पूजने के लिए बनवाया था। अतः मैं भी तुमको बाबुल से परे ले जाकर बसाऊंगा।'**

[44]"निर्जन प्रदेश में तो हमारे पूर्वजों के लिए साक्षी का ऐसा तम्बू था, जैसा कि मूसा से बातें करने वाले ने आदेश दिया था कि वह उसी नमूने के अनुसार बनाए जिसे उसने देखा था। [45]उसी तम्बू को उत्तराधिकार में पाकर हमारे बाप-दादे यहोशू के साथ उस समय यहां ले आए जब उन्होंने उन जातियों पर कब्जा किया जिन्हें परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों के साम्हने खदेड़कर निकाल दिया, और ऐसा ही दाऊद के समय तक रहा। [46]दाऊद पर परमेश्वर की कृपा-दृष्टि हुई, तब उसने विनती की कि वह याकूब के परमेश्वर के लिए निवास-स्थान बनवा सके। [47]परन्तु सुलैमान ने ही इस निवास-स्थान को उसके लिए बनाया। [48]परन्तु परमप्रधान तो हाथ के बनाए भवनों में नहीं रहता। जैसा कि नबी कहता है: [49]**'स्वर्ग मेरा सिंहासन है, और पृथ्वी मेरे पावों की पीढ़ी है, तुम मेरे लिए किस प्रकार का घर बनाओगे? क्या मेरे विश्राम के लिए कोई स्थान हो सकता है? [50]क्या मेरे हाथों ने ही इन सब को नहीं बनाया?'**

[51]"हे हठीले लोगो, तुम्हारे मन और कान खतनारहित हैं। तुम सदा पवित्र आत्मा का विरोध करते आए हो। तुम भी वैसा ही कर रहे हो जैसा तुम्हारे पूर्वज किया करते थे, [52]तुम्हारे पूर्वजों ने नबियों में से किसे नहीं सताया? उन्होंने उनको भी मार डाला जिन्होंने उस धर्मी जन के आगमन का पहिले से ही सन्देश दिया था, जिसके पकड़वाने वाले और हत्यारे अब तुम बन गए हो; [53]और तुम ही हो जिन्होंने स्वर्गदूतों द्वारा ठहराई गई व्यवस्था तो पाई, परन्तु उसका पालन नहीं किया।"

स्तिफनुस का पथराव

[54]जब उन्होंने यह सुना तो वे तिलमिला उठे और स्तिफनुस पर दांत पीसने लगे। [55]परन्तु उसने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर एकटक देखा तथा परमेश्वर की महिमा की और यीशु को, परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा देखा। [56]तब उसने कहा, "देखो, मैं स्वर्ग को खुला हुआ और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा देखता हूं।" [57]परन्तु उन्होंने ज़ोर से चिल्लाकर अपने कान बन्द कर लिए और एक साथ उस पर झपटे। [58]वे उसे खदेड़कर नगर से बाहर ले गए और उस पर पथराव करने लगे। गवाहों ने अपने चोगे उतारकर शाऊल नामक एक नवयुवक के पास रख दिए। [59]जब वे पथराव कर रहे थे तो स्तिफनुस ने प्रार्थना की, "हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर!" [60]और अपने घुटनों के बल गिरकर वह ज़ोर से चिल्लाया, "प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा!" यह कहकर वह सो गया।

कलीसिया पर अत्याचार

8 इस प्रकार उसके मार डाले जाने में शाऊल भी सहमत था।

विचार क्षमा किया जाए। [23]क्योंकि मैं देख रहा हूं कि तू पित्त की सी कड़वाहट और अधर्म के बन्धन में है।" [24]पर शमौन ने उत्तर दिया, "तुम मेरे लिए प्रभु से प्रार्थना करो कि जो बातें तुमने कही हैं उनमें से कोई भी मुझ पर न आ पड़े!"

[25]अत: जब वे दृढ़ता से गवाही देकर प्रभु का वचन सुना चुके तो सामरियों के बहुत से गांवों में सुसमाचार प्रचार करते हुए यरूशलेम को लौट गए।

कूश देश का अधिकारी

[26]परन्तु प्रभु के एक स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस से कहा, "उठ, और दक्षिण की ओर उस मार्ग पर जा जो यरूशलेम से गाज़ा की ओर जाता है।" यह एक निर्जन मार्ग है। [27]वह उठकर गया, और देखो, इथियोपिया देश का एक खोजा था, जो उस देश की रानी कन्दाके का मन्त्री तथा कोषाध्यक्ष था; वह आराधना करने यरूशलेम आया था। [28]वह अपने रथ में बैठकर यशायाह नबी की पुस्तक पढ़ते हुए वापस लौट रहा था। [29]तब आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, "जा, तू इस रथ के साथ चला जा।" [30]जब फिलिप्पुस दौड़ कर वहां पहुंचा तो उसने उसे यशायाह नबी की पुस्तक पढ़ते सुना और कहा, "जो तू पढ़ रहा है क्या उसे समझता भी है?" [31]उसने कहा, "जब तक कोई मुझे न समझाए, मैं कैसे समझ सकता हूं?" और उसने फिलिप्पुस से विनती की कि वह ऊपर आकर उसके पास बैठे। [32]पवित्रशास्त्र का जो अध्याय वह पढ़ रहा था, यह था: "**वह बध होने वाली भेड़ के समान ले जाया गया, और जैसे मेम्ना ऊन कतरने वालों के सामने चुपचाप रहता है, वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला।** [33]**दीनता की दशा में उसका न्याय नहीं होने पाया। उसकी पीढ़ी के लोगों का वर्णन कौन करेगा? क्योंकि पृथ्वी पर से उसका जीवन उठा लिया जाता है।**" [34]खोजे ने फिलिप्पुस से कहा, "कृपा करके मुझे बता कि नबी यह किसके विषय में कहता है? अपने या किसी दूसरे के विषय में?" [35]तब फिलिप्पुस ने अपना मुंह खोला और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु के विषय में सुसमाचार सुनाया।

[36]मार्ग पर चलते चलते वे जल के किसी स्थान पर पहुंचे। तब खोजे ने कहा, "देख, यहां जल है। अभी बपतिस्मा लेने में मेरे लिए क्या रुकावट है?" *[37][फिलिप्पुस ने कहा, "यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो अवश्य ले सकता है।" उसने उत्तर दिया, "मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र है।"] [38]तब उसने रथ रोकने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस तथा खोजा दोनों जल में उतरे और उसने खोजे को बपतिस्मा दिया। [39]जब वे जल में से बाहर आए, तब प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया और खोजे ने उसे फिर नहीं देखा परन्तु आनन्द मनाता हुआ अपने मार्ग पर चला गया। [40]फिलिप्पुस ने अपने आप को अशदोद में पाया और कैसरिया पहुंचने तक वह नगर-नगर सुसमाचार सुनाता गया।

शाऊल का हृदय-परिवर्तन

9 फिर शाऊल जो अभी भी प्रभु के शिष्यों को धमकियां देने तथा उनकी हत्या करने की धुन में था,

*पद 37 केवल बाद के कुछ हस्तलेखों में मिलता है

विचार क्षमा किया जाए। [23]क्योंकि मैं देख रहा हूं कि तू पित्त की सी कड़वाहट और अधर्म के वन्धन में है।" [24]पर शमौन ने उत्तर दिया, "तुम मेरे लिए प्रभु से प्रार्थना करो कि जो वातें तुमने कही हैं उनमें से कोई भी मुझ पर न आ पड़े!"

[25]अत: जव वे दृढ़ता से गवाही देकर प्रभु का वचन सुना चुके तो सामरियों के वहुत से गांवों में सुसमाचार प्रचार करते हुए यरूशलेम को लौट गए।

कूश देश का अधिकारी

[26]परन्तु प्रभु के एक स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस से कहा, "उठ, और दक्षिण की ओर उस मार्ग पर जा जो यरूशलेम से गाज़ा की ओर जाता है।" यह एक निर्जन मार्ग है। [27]वह उठकर गया, और देखो, इथियोपिया देश का एक खोजा था, जो उस देश की रानी कन्दाके का मन्त्री तथा कोषाध्यक्ष था, वह आराधना करने यरूशलेम आया था। [28]वह अपने रथ में बैठकर यशायाह नबी की पुस्तक पढ़ते हुए वापस लौट रहा था। [29]तब आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, "जा, तू इस रथ के साथ चला जा।" [30]जब फिलिप्पुस दौड़ कर वहां पहुंचा तो उसने उसे यशायाह नबी की पुस्तक पढ़ते सुना और कहा, "जो तू पढ़ रहा है क्या उसे समझता भी है?" [31]उसने कहा, "जब तक कोई मुझे न समझाए, मैं कैसे समझ सकता हूं?" और उसने फिलिप्पुस से विनती की कि वह ऊपर आकर उसके पास बैठे। [32]पवित्रशास्त्र का जो अध्याय वह पढ़ रहा था, यह था: "**वह वध होने वाली भेड़ के समान ले जाया गया, और जैसे मेम्ना ऊन कतरने वालों के सामने चुपचाप रहता है, वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला।** [33]**दीनता की दशा में उसका न्याय नहीं होने पाया। उसकी पीढ़ी के लोगों का वर्णन कौन करेगा? क्योंकि पृथ्वी पर से उसका जीवन उठा लिया जाता है।**" [34]खोजे ने फिलिप्पुस से कहा, "कृपा करके मुझे वता कि नवी यह किसके विषय में कहता है? अपने या किसी दूसरे के विषय में?" [35]तव फिलिप्पुस ने अपना मुंह खोला और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु के विषय में सुसमाचार सुनाया।

[36]मार्ग पर चलते चलते वे जल के किसी स्थान पर पहुंचे। तव खोजे ने कहा, "देख, यहां जल है। अभी बपतिस्मा लेने में मेरे लिए क्या रुकावट है?" *[37][फिलिप्पुस ने कहा, "यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो अवश्य ले सकता है।" उसने उत्तर दिया, "मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र है।"] [38]तब उसने रथ रोकने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस तथा खोजा दोनों जल में उतरे और उसने खोजे को बपतिस्मा दिया। [39]जव वे जल में से बाहर आए, तब प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया और खोजे ने उसे फिर नहीं देखा परन्तु आनन्द मनाता हुआ अपने मार्ग पर चला गया। [40]फिलिप्पुस ने अपने आप को अशदोद में पाया और कैसरिया पहुंचने तक वह नगर-नगर सुसमाचार सुनाता गया।

शाऊल का हृदय-परिवर्तन

9 फिर शाऊल जो अभी भी प्रभु के शिष्यों को धमकियां देने तथा उनकी हत्या करने की धुन में था,

*पद 37 केवल बाद के कुछ हस्तलेखों में मिलता है

महायाजक के पास गया, [2]और उस से दमिश्क के आराधनालयों के लिए इस अभिप्राय से पत्र प्राप्त किए कि यदि उसे इस पंथ के अनुयायी मिलें, वे चाहे स्त्री हों अथवा पुरुष, तो उन्हें बांध कर यरूशलेम ले आए। [3]और ऐसा हुआ कि यात्रा करते हुए जब वह दमिश्क के समीप पहुंचा तो सहसा आकाश से एक ज्योति उसके चारों ओर चमकी, [4]और वह भूमि पर गिर पड़ा और उसने एक आवाज़ यह कहते हुए सुनी, "शाऊल! शाऊल! तू मुझे क्यों सताता है?" [5]उसने पूछा, "प्रभु, तू कौन है?" तब उसने कहा, "मैं यीशु हूं जिसे तू सताता है। [6]परन्तु उठ और नगर में जा, और जो करना है वह तुझे बता दिया जाएगा।" [7]जो मनुष्य उस के साथ यात्रा कर रहे थे वे अवाक् खड़े रह गए, क्योंकि आवाज़ तो सुनते थे पर किसी को देखते न थे। [8]तब शाऊल भूमि पर से उठा और यद्यपि उसकी आँखें खुली हुई थीं, फिर भी वह कुछ देख नहीं पा रहा था, और वे उसका हाथ पकड़कर उसे दमिश्क ले आए। [9]वह तीन दिन तक न देख सका, और उसने न खाया और न पीया।

[10]दमिश्क में हनन्याह नामक एक चेला था, जिस से प्रभु ने दर्शन में कहा, "हनन्याह!" उसने उत्तर दिया, "प्रभु देख, मैं यहां हूँ।" [11]प्रभु ने उस से कहा, "उठकर उस गली में जा जो सीधी कहलाती है, और यहूदा के घर जाकर शाऊल नामक एक तरसुस निवासी के विषय पूछ ले, क्योंकि देख, वह प्रार्थना कर रहा है, [12]और उसने दर्शन में हनन्याह नामक एक पुरुष को भीतर आते और अपने ऊपर हाथ रखते देखा है जिससे कि वह फिर से देख सके।" [13]परन्तु हनन्याह ने उत्तर दिया, "प्रभु, मैंने बहुतों से इस व्यक्ति के विषय में सुना है, कि इसने यरूशलेम में तेरे पवित्र लोगों को कितना नुकसान पहुंचाया है, [14]और यहाँ भी इसको मुख्य याजकों की ओर से अधिकार मिला है कि जितने तेरा नाम लेते हैं उन सब को बन्दी बना ले।" [15]परन्तु प्रभु ने उस से कहा, "चला जा, क्योंकि वह तो गैरयहूदियों, राजाओं और इस्राएलियों के सामने मेरा नाम प्रकट करने के लिए मेरा चुना हुआ पात्र है। [16]और मैं उसे बताऊंगा कि मेरे नाम के लिए उसे कितना दुख सहना पड़ेगा।"

[17]तब हनन्याह ने जाकर उस घर में प्रवेश किया और उस पर अपने हाथ रख कर कहा, "भाई शाऊल, प्रभु यीशु जिसने तुझे उस मार्ग पर जिस से तू आ रहा था, दर्शन दिया, उसी ने मुझे तेरे पास भेजा है कि तू फिर देखने लगे और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए।" [18]तब तत्काल शाऊल की आंखों से छिलके से गिरे और वह पुनः देखने लगा। फिर उठकर उसने बपतिस्मा लिया। [19]तब भोजन करके उसने बल प्राप्त किया।

फिर वह कई दिनों तक उन चेलों के साथ रहा जो दमिश्क में थे।

दमिश्क और यरूशलेम में शाऊल

[20]और वह तुरन्त आराधनालयों में यह कहकर यीशु का प्रचार करने लगा, "यही परमेश्वर का पुत्र है।" [21]सब सुनने वाले आश्चर्यचकित होकर कहने लगे, "क्या यह वही नहीं जो यरूशलेम में इस नाम के लेने वालों को नाश करता था और यहाँ इसी अभिप्राय से आया था कि उन्हें बांध कर मुख्य याजकों के पास ले जाए?" [22]परन्तु शाऊल और भी . । होता गया और प्रमाण दे देकर

यही है. दमिश्क में रहने वाले यहूदियों का मुंह बन्द करता रहा।

[23]जब बहुत दिन बीत गए तो यहूदियों ने मिलकर उसे मार डालने का षड्यन्त्र रचा। [24]परन्तु पौलुस को उनका षड्यन्त्र मालूम हो गया। वे उसे मार डालने के लिए दिन-रात फाटकों पर घात लगाए रहते थे। [25]परन्तु उसके चेलों ने रात में उसे एक टोकरे में बैठाकर शहरपनाह से नीचे उतार दिया।

[26]यरूशलेम में आकर वह चेलों से मिलने का प्रयत्न करने लगा, परन्तु वे सब उस से डरते थे, और उन्हें विश्वास नहीं होता था कि वह भी एक चेला है। [27]परन्तु बरनाबास ने उसे अपने साथ प्रेरितों के पास ले जाकर उन्हें बताया कि उसने किस प्रकार मार्ग में प्रभु को देखा और उसनें उस से बातें कीं, और यह भी कि दमिश्क में उसने कैसे साहसपूर्वक यीशु के नाम में प्रचार किया। [28]वह उनके साथ यरूशलेम में आते-जाते और निर्भीकता से यीशु के नाम में प्रचार करता रहा। [29]और यूनानी भाषी यहूदियों के साथ बातचीत और वाद-विवाद करता रहा, परन्तु वे उसकी हत्या का प्रयत्न करने लगे। [30]परन्तु जब भाइयों को यह मालूम हुआ, तो वे उसे कैसरिया ले गए, फिर उन्होंने उसे तरसुस भेज दिया।

[31]अतः सारे यहूदिया, गलील और सामरिया की कलीसिया को शान्ति मिली, और उसकी उन्नति होती गई, और वह प्रभु के भय में चलती तथा पवित्र आत्मा के प्रोत्साहन में बढ़ती गई।

एनियास और दोरकास

[32]फिर ऐसा हुआ कि पतरस उस सम्पूर्ण क्षेत्र में यात्रा करता हुआ लुद्दा के पवित्र लोगों के पास भी पहुंचा। [33]वहां उसे लकवे का मारा हुआ एनियास नामक एक व्यक्ति मिला जो आठ वर्षों से रोग-शय्या पर पड़ा हुआ था। [34]पतरस ने उस से कहा, "एनियास, यीशु मसीह तुझे चंगा करता है। उठ, अपना बिस्तर ठीक कर।" वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ। [35]तब लुद्दा तथा शारोन के सभी रहनेवाले उसे देख कर प्रभु की ओर फिरे।

[36]याफा में तबीता अर्थात् दोरकास नामक एक शिष्या रहती थी। यह स्त्री निरन्तर भले-भले कार्य तथा दान किया करती थी। [37]उन दिनों ऐसा हुआ कि वह बीमार होकर मर गई, और उन्होंने उसे नहला कर अटारी के कमरे में रख दिया। [38]इसलिए कि लुद्दा, याफा के निकट था, चेलों ने यह सुनकर कि पतरस वहाँ है, दो मनुष्यों को उसके पास यह विनती करने भेजा, "हमारे पास आने में देर न कर।" [39]पतरस उठकर उनके साथ चल दिया। जब वह पहुंचा तो वे उसे उस अटारी पर ले गए। सब विधवाएं रोती हुईं उसके पास आ खड़ी हुईं और जो कुरते तथा वस्त्र दोरकास उनके साथ रहते हुए बनाया करती थी, उसे दिखाने लगीं। [40]तब पतरस ने सब को बाहर कर दिया और घुटने टेक कर प्रार्थना की, और शव की ओर मुड़ कर कहा, "तबीता, उठ!" उसने अपनी आँखें खोल दीं, और पतरस को देख कर वह उठ बैठी। [41]उसने अपना हाथ देकर उसे उठाया तथा पवित्र लोगों और विधवाओं को बुलाकर उसे जीवित सौंप दिया। [42]यह बात पूरे याफा में फैल गई, और बहुतों ने प्रभु पर विश्वास किया। [43]और पतरस, याफा में चमड़े का धन्धा करने वाले शमौन नामक एक व्यक्ति के साथ बहुत दिन तक रहा।

कुरनेलियुस का पतरस को बुलाना

10 कैसरिया में कुरनेलियुस नामक एक व्यक्ति था। वह उस सैन्य दल का सूबेदार था जो इतालवी कहलाता था। [2]वह भक्त था तथा अपने सारे घराने समेत परमेश्वर का भय मानता था, और यहूदियों को बहुत दान दिया करता था और निरन्तर परमेश्वर से प्रार्थना किया करता था। [3]दिन के *तीन बजे के लगभग उसने दर्शन में स्पष्ट रूप से देखा कि एक स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आकर उस से कहा, "कुरनेलियुस!" [4]उस ने उस की ओर ध्यानपूर्वक देखा और भयभीत होकर कहा, "हे प्रभु, क्या है?" उसने उस से कहा, "तेरी प्रार्थनाएं और दान स्मृति के रूप में परमेश्वर के समक्ष पहुँचे हैं। [5]अब कुछ व्यक्तियों को याफा भेजकर शमौन नामक एक व्यक्ति को जो पतरस भी कहलाता है, बुलवा ले। [6]वह चमड़े का धन्धा करनेवाले शमौन नाम किसी व्यक्ति का अतिथि है, जिसका घर समुद्र के किनारे है।" [7]जब स्वर्गदूत जिसने उस से बातें की थीं चला गया, तब उसने अपने दो सेवकों और निरन्तर अपने समीप रहनेवाले भक्त सैनिकों में से एक को बुलाया। [8]और उन्हें सारी बातें समझाकर याफा भेजा।

पतरस ने दर्शन पाया

[9]दूसरे दिन जब वे चलते चलते नगर के पास पहुंचने पर थे, उसी समय दोपहर के लगभग पतरस प्रार्थना करने के लिए छत पर गया। [10]उसे भूख लगी तथा कुछ खाने की इच्छा हुई, परन्तु जब वे तैयारी कर ही रहे थे तो वह बेसुध हो गया, [11]और उसने देखा कि आकाश खुल गया है और बड़ी चादर जैसी कोई वस्तु चारों कोनों से लटकती हुई भूमि पर उतर रही है, [12]जिसमें सब प्रकार के चौपाए और पृथ्वी के रेंगनेवाले जन्तु और *आकाश के पक्षी थे। [13]उसे एक आवाज़ सुनाई दी, "पतरस, उठ! *मार और खा!" [14]परन्तु पतरस ने कहा, "नहीं प्रभु, कदापि नहीं, क्योंकि मैंने कभी कोई अपवित्र और अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है।" [15]फिर दूसरी बार उसे एक आवाज़ सुनाई दी, "जिसे परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू *अपवित्र मत कह।" [16]तीन बार ऐसा ही हुआ, तब वह वस्तु तुरन्त आकाश में उठा ली गई।

[17]पतरस जब इस दुविधा में ही था कि जो दर्शन मैंने देखा वह क्या हो सकता है, तो देखो, कुरनेलियुस द्वारा भेजे गए लोग शमौन के घर का पता लगा कर द्वार पर आ खड़े हुए। [18]वे पुकार कर पूछने लगे, "शमौन जो पतरस कहलाता है, क्या यहीं ठहरा हुआ है?"

[19]पतरस उस दर्शन पर सोच-विचार कर ही रहा था कि आत्मा ने उस से कहा, "देख, तीन मनुष्य तुझे ढूँढ़ रहे हैं। [20]अब उठ और नीचे जा और निःसंकोच उनके साथ चला जा, क्योंकि स्वयं मैंने ही उन्हें भेजा है।"

[21]तब पतरस ने नीचे जाकर उन लोगों से कहा, "देखो, जिसे तुम ढूंढ़ रहे हो वह मैं ही हूं। तुम क्यों आए हो?" [22]उन्होंने कहा, "कुरनेलियुस सूबेदार जो धर्मी, परमेश्वर का भय माननेवाला और सम्पूर्ण यहूदी जाति में सम्मानित है, उसने एक पवित्र स्वर्गदूत से यह निर्देश पाया कि तुझे अपने घर बुलाकर तुझ

---

3 *अक्षरश:, नवें घंटे   12 *या, हवा   13 *या, भेंट चढ़ा   15 *या, पत्र

सुने।" [23]तब उसने उन्हें भीतर बुलाकर घर में ठहराया।

कुरनेलियुस के घर में पतरस

दूसरे दिन वह उठा और उनके साथ गया, और याफा के रहने वाले भाइयों में से कुछ उसके साथ गए। [24]दूसरे दिन वह कैसरिया पहुंचा। कुरनेलियुस अपने सम्बन्धियों एवं घनिष्ट मित्रों के साथ उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। [25]जैसे ही पतरस ने प्रवेश किया तो कुरनेलियुस ने उस से भेंट की, और उसके चरणों पर गिरकर उसे प्रणाम किया। [26]परन्तु पतरस ने उसे उठाते हुए कहा, "उठ, मैं भी तो मनुष्य हूँ।" [27]उसके साथ बातचीत करते हुए जब वह भीतर गया तो उसने बहुत लोगों को एकत्रित देखा। [28]उसने उनसे कहा, "तुम स्वयं जानते हो कि यहूदी के लिए किसी विदेशी से सम्पर्क रखना अथवा उसके यहाँ जाना अधर्म है, फिर भी परमेश्वर ने मुझ पर प्रकट किया कि मैं किसी व्यक्ति को अपवित्र या अशुद्ध न कहूँ। [29]इसी लिए जब बुलाया गया तो मैं बिना किसी आपत्ति के चला आया। अत: अब मैं पूछता हूं कि तुमने मुझे किस अभिप्राय से बुलवाया है?" [30]कुरनेलियुस ने उत्तर दिया, "चार दिन हुए ठीक इसी समय जब मैं अपने घर में सन्ध्या समय लगभग तीन बजे प्रार्थना कर रहा था, तो देखो, एक पुरुष चमकीला वस्त्र पहिने मेरे सम्मुख आ खड़ा हुआ [31]और उसने कहा, 'कुरनेलियुस, तेरी प्रार्थना सुन ली गई है और तेरे दान परमेश्वर के सम्मुख स्मरण किए गए हैं। [32]अत: किसी को याफा भेजकर शमौन को, जो पतरस भी कहलाता है, अपने पास बुला। वह समुद्र के किनारे चमड़े का धन्धा करने वाले शमौन के यहाँ ठहरा हुआ है।' [33]अत: मैंने तुरन्त तुझे बुलवा भेजा और तू ने बड़ी कृपा की, कि आ गया। अब हम सब यहाँ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित हैं कि जो कुछ प्रभु ने तुझसे कहा है उसे सुनें।" [34]तब पतरस ने मुँह खोलकर कहा:

"अब मैं सचमुच समझ गया हूं कि परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता, [35]परन्तु प्रत्येक जाति में जो उसका भय मानता है तथा धार्मिकता के कार्य करता है, वही उसे ग्रहणयोग्य होता है। [36]उसने यीशु मसीह के द्वारा—वह सब का प्रभु है—जो वचन इस्राएलियों के पास शान्ति का प्रचार करते हुए भेजा—[37]तुम स्वयं ही उस वचन को जानते हो, जो यूहन्ना के बपतिस्मा के प्रचार के पश्चात् गलील से लेकर सम्पूर्ण यहूदिया में फैल गया। [38]तुम यीशु नासरी को जानते हो कि परमेश्वर ने उसे किस प्रकार पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषिक्त किया और वह किस प्रकार भलाई करता और उन सब को जो दुष्टात्मा द्वारा सताए हुए थे चंगा करता फिरा क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था। [39]हम उन सब बातों के गवाह हैं जो उसने यहूदियों के देश और यरूशलेम में कीं, और उन्होंने क्रूस पर लटका कर उसे मार भी डाला। [40]परमेश्वर ने उसे तीसरे दिन जिला उठा कर प्रकट भी होने दिया, [41]सब लोगों पर नहीं, वरन् उन गवाहों पर जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से चुन लिया था, अर्थात् हम पर जिन्होंने मृतकों में से उसके जी उठने के पश्चात् उसके साथ खाया-पीया। [42]उसने हमें आज्ञा दी कि लोगों में प्रचार करें और दृढ़तापूर्वक साक्षी दें कि यह वही है जिसे परमेश्वर ने जीवितों और मृतकों का न्यायी नियुक्त किया है। [43]सब नबी

उसकी साक्षी देते हैं कि प्रत्येक जो उस पर विश्वास करता है, उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा पाता है।"

गैरयहूदियों पर पवित्र आत्मा

[44]जब पतरस यह वचन कह ही रहा था, तभी वचन के सब सुनने वालों पर पवित्र आत्मा उतर आया। [45]और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए हुए थे, सब विस्मित हुए कि पवित्र आत्मा का दान गैरयहूदियों पर भी उंडेला गया है। [46]क्योंकि वे उन्हें भिन्न-भिन्न भाषाएं बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते हुए सुन रहे थे। तब पतरस ने कहा, [47]"क्या कोई जल की रोक कर सकता है कि ये लोग जिन्होंने हमारे समान ही पवित्र आत्मा पाया है, बपतिस्मा न पाएं?" [48]और उसने आज्ञा दी कि उनको यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए। तब उन्होंने उससे कुछ दिन और ठहरने के लिए विनती की।

पतरस का स्पष्टीकरण

11 फिर प्रेरितों तथा भाइयों ने जो सारे यहूदिया में थे सुना कि गैरयहूदियों ने भी परमेश्वर का वचन ग्रहण कर लिया है। [2]अत: जब पतरस यरूशलेम आया तो खतना किए हुए लोग उस से यह कहकर वाद-विवाद करने लगे, [3]"तू ने तो खतनारहित लोगों के यहाँ जाकर उनके साथ भोजन किया।"

[4]तब पतरस ने उन्हें क्रमानुसार सुनाना व समझाना आरम्भ किया, [5]"मैं याफा नगर में प्रार्थना कर रहा था। मैंने बेसुधि में एक दर्शन देखा कि एक बड़ी चादर के समान कोई *वस्तु चारों कोनों से लटकी हुई आकाश से उतर रही है। वह ठीक मेरे पास आ गई, [6]और जब मैंने उसको ध्यान से देखा तो उसमें पृथ्वी के चौपायों, वन-पशुओं और रेंगने वाले जन्तुओं और आकाश के पक्षियों को देखा। [7]तब मुझे यह वाणी भी सुनाई दी, 'पतरस, उठ! मार और खा।' [8]परन्तु मैंने कहा, 'हे प्रभु, कदापि नहीं! क्योंकि मेरे मुँह में कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु कभी नहीं गई।' [9]परन्तु दूसरी बार आकाश से एक वाणी हुई, 'जिसे परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है उसे *अशुद्ध मत कह।' [10]तीन बार ऐसा ही हुआ, तब सब कुछ पुन: आकाश में उठा लिया गया। [11]और देखो, ठीक उसी क्षण तीन व्यक्ति जो कैसरिया से मेरे पास भेजे गए थे उस घर के सामने आ खड़े हुए जहाँ हम ठहरे हुए थे। [12]पवित्र आत्मा ने मुझ से कहा कि मैं बिना किसी संकोच के उनके साथ जाऊं, और ये छ: भाई भी मेरे साथ चले और हम उस मनुष्य के घर गए। [13]उसने हमें बताया कि किस प्रकार उसने एक स्वर्गदूत को अपने घर में खड़े देखा और यह कहते सुना, 'किसी को याफा भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता है, यहाँ बुलवा ले। [14]वह तुझे ऐसी बातें बताएगा जिनके द्वारा तू और तेरा सारा घराना उद्धार पाएगा।' [15]और ज्योंही मैंने बोलना आरम्भ किया त्योंही पवित्र आत्मा उन पर भी उसी रीति से उतरा जिस प्रकार आरम्भ में हम पर उतरा था। [16]तब प्रभु का वचन मुझे स्मरण आया जो वह कहा करता था, 'यूहन्ना ने तो जल से बपतिस्मा दिया परन्तु तुम पवित्र आत्मा *से बपतिस्मा पाओगे।' [17]अत: यदि परमेश्वर ने उन्हें भी वही वर

5 *या, पात्र 9 *या, साधारण 16 *या, में

जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से प्राप्त हुआ था, तो, मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक सकता?"

[18]वे यह सुनकर चुप हो गए और परमेश्वर की महिमा करके कहने लगे, "तब तो परमेश्वर ने गैरयहूदियों को भी जीवन के लिए मन-फिराव का वरदान दिया है।"

अन्ताकिया की कलीसिया

[19]अत: लोग उस क्लेश के कारण जो स्तिफनुस के सम्बन्ध में आरम्भ हुआ था तित्तर-बित्तर हो गए थे। वे चलते-चलते फीनेके, साइप्रस और अन्ताकिया पहुंचे तथा यहूदियों को छोड़ किसी और को वचन नहीं सुनाते थे। [20]परन्तु उनमें से कुछ साइप्रसवासी और कुरेनी थे जो अन्ताकिया पहुंचकर यूनानियों को भी प्रभु यीशु का सुसमाचार सुनाने लगे। [21]प्रभु का हाथ उन पर था और बड़ी संख्या में लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे। [22]जब उनकी चर्चा यरूशलेम की कलीसिया के कानों तक पहुंची तो उन्होंने बरनाबास को अन्ताकिया भेज दिया। [23]जब उसने वहां पहुंच कर परमेश्वर के अनुग्रह को देखा तो वह आनन्दित हुआ तथा उन सब को प्रोत्साहित करने लगा कि वे सम्पूर्ण हृदय से प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें। [24]क्योंकि वह एक भला मनुष्य था और पवित्र आत्मा तथा विश्वास से परिपूर्ण था। और बहुत से लोग प्रभु के पास लाए गए। [25]तब वह शाऊल को ढूंढ़ने के लिए तरसुस गया। [26]जब वह उसे मिल गया तो उसे अन्ताकिया ले आया। तब ऐसा हुआ कि वे पूरे एक वर्ष तक कलीसिया के साथ मिलते और बहुत से लोगों को शिक्षा देते रहे। और चेले सब से पहिले अन्ताकिया में मसीही कहलाए।

[27]उन्हीं दिनों कुछ नबी यरूशलेम से अन्ताकिया को आए। [28]उनमें से अगबुस नामक एक व्यक्ति ने खड़े होकर पवित्र आत्मा की अगुवाई से बताया कि निश्चय ही सारे जगत में भयंकर अकाल पड़ेगा। और क्लौदियुस के शासन-काल में ऐसा ही हुआ। [29]चेलों ने निर्णय किया कि प्रत्येक अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार यहूदिया में रहने वाले भाइयों के सहायतार्थ कुछ भेजे। [30]उन्होंने ऐसा ही किया और बरनाबास तथा शाऊल के हाथ प्राचीनों के पास कुछ भेज दिया।

पतरस की गिरफ़्तारी व छुटकारा

12 लगभग उसी समय हेरोदेस राजा ने कलीसिया के कुछ व्यक्तियों को सताने के लिए उन पर हाथ डाले। [2]उसने यूहन्ना के भाई याकूब को तलवार से मरवा डाला। [3]जब उसने देखा कि यहूदी इस बात से प्रसन्न होते हैं तो उसने पतरस को भी गिरफ़्तार करने के लिए कदम उठाया। ये अखमीरी रोटी के दिन थे। [4]और उसने उसे पकड़कर बन्दीगृह में डाल दिया, और चार चार सैनिकों के चार दलों के पहरे में इस अभिप्राय से रखा कि फसह के पश्चात् उसे बाहर लोगों के सामने लाया जाए। [5]इस प्रकार पतरस बन्दीगृह में रखा गया, परन्तु कलीसिया उसके लिए परमेश्वर से लौ लगा कर प्रार्थना करती रही। [6]जिस रात्रि हेरोदेस उसे बाहर लाने वाला था, पतरस दो जंजीरों से बंधा हुआ दो सैनिकों के बीच में सो रहा था और प्रहरी द्वार पर बन्दीगृह की रखवाली कर रहे थे। [7]और देखो, प्रभु का एक स्वर्गदूत एकाएक प्रकट

हुआ और उस कोठरी में ज्योति चमकी, और उसने पतरस की पसली पर हाथ मार कर उसे जगाया और कहा, "जल्दी उठ!" और उसके हाथों से जंजीरें गिर पड़ीं। [8]स्वर्गदूत ने उस से कहा, "कमर बांध, और अपने जूते पहिन ले।" उसने वैसा ही किया। फिर उसने उस से कहा, "अपना वस्त्र पहिनकर मेरे पीछे आ।" [9]वह बाहर निकला और उसके पीछे पीछे चलता गया, परन्तु उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि जो कुछ स्वर्गदूत कर रहा है वह वास्तविक है, पर उसने यह सोचा कि मैं कोई दर्शन देख रहा हूं। [10]और जब वे पहिले और दूसरे पहरे से निकलकर लोहे के उस फाटक पर आए जो नगर की ओर जाता है तो वह उनके लिए अपने आप खुल गया। वे बाहर निकल कर एक गली में होकर चले, और तुरन्त स्वर्गदूत उसे छोड़कर चला गया। [11]जब पतरस सचेत हुआ तो उसने कहा, "अब मैं निश्चयपूर्वक जान गया हूं कि प्रभु ने अपना स्वर्गदूत भेजकर मुझे हेरोदेस के हाथ से छुड़ा लिया और यहूदियों की सारी आशाओं पर पानी फेर दिया है। [12]जब उसे यह मालूम हुआ तो उस यूहन्ना की माता मरियम के घर गया जो मरकुस भी कहलाता है—जहाँ बहुत लोग एकत्रित होकर प्रार्थना कर रहे थे। [13]जब उसने फाटक के द्वार को खटखटाया, तब रूदे नामक दासी उत्तर देने आई। [14]जब उसने पतरस की आवाज़ पहचानी, तो आनन्द के मारे द्वार खोले बिना ही दौड़कर अन्दर गई और बताया कि पतरस फाटक पर खड़ा है। [15]उन्होंने उस से कहा, "तू पागल है!" परन्तु वह दृढ़तापूर्वक बोली कि यह सच है। तब उन्होंने कहा, "उसका स्वर्गदूत होगा!" [16]परन्तु पतरस खटखटाता रहा। जब उन्होंने द्वार खोला तो वे उसे देख कर आश्चर्यचकित रह गए। [17]परन्तु उसने उन्हें चुप रहने को हाथ से संकेत करके बताया कि प्रभु ने किस प्रकार से मुझे बन्दीगृह से बाहर निकाला, फिर उसने कहा, "याकूब तथा भाइयों को यह समाचार दो।" तब वह वहाँ से निकलकर किसी दूसरे स्थान को चला गया।

[18]सुबह होते ही सैनिकों में खलबली मच गई कि पतरस का क्या हुआ। [19]हेरोदेस ने जब उसकी बड़ी खोज की और उसे न पाया तो उसने पहरेदारों की जांच-पड़ताल की और आज्ञा दी कि उन्हें ले जाकर मार डालें। और वह यहूदिया से कैसरिया में जाकर रहने लगा।

हेरोदेस की मृत्यु

[20]वह सूर और सैदा के लोगों से अत्यन्त क्रोधित था। वे एकमत होकर उसके पास आए, और राजभवन के प्रबन्धक बलास्तुस को मनाकर मेल करना चाहा, क्योंकि राजा के देश से उनके देश का पालन-पोषण होता था। [21]नियुक्त किए गए दिन हेरोदेस राजसी वस्त्र पहिन कर सिंहासन पर बैठा और उन्हें भाषण देने लगा। [22]और लोग चिल्लाते रहे, "यह तो मनुष्य की नहीं, ईश्वर की वाणी है!" [23]उसी क्षण प्रभु के एक दूत ने उसे मारा, क्योंकि उसने परमेश्वर को महिमा नहीं दी। उसके शरीर में कीड़े पड़ गए और उसने दम तोड़ दिया।

[24]परन्तु परमेश्वर का वचन बढ़ता और फैलता गया।

[25]बरनाबास और शाऊल जब सेवा-कार्य पूर्ण कर चुके तो

लौटे और अपने साथ यूहन्ना को भी, जो मरकुस कहलाता है, लेते आए।

बरनाबास व शाऊल का भेजा जाना

13 अन्ताकिया की कलीसिया में कुछ नबी तथा शिक्षक थे, जैसे: बरनाबास और शमौन जो काला कहलाता था, लूकियुस कुरेनी, मनाहेम जिसका पालन-पोषण चौथाई देश के राजा हेरोदेस के साथ हुआ था और शाऊल। [2]जब वे उपवास तथा प्रभु की उपासना कर रहे थे तो पवित्र आत्मा ने कहा, "मेरे लिए बरनाबास तथा शाऊल को उस कार्य के लिए अलग करो जिसके लिए मैंने उन्हें बुलाया है।" [3]जब वे उपवास तथा प्रार्थना कर चुके तो उन पर हाथ रखकर उन्हें भेज दिया।

पौलुस की प्रथम प्रचार-यात्रा

[4]अत: पवित्र आत्मा द्वारा भेजे जाकर वे सिलूकिया गए और वहां से जहाज़ द्वारा साइप्रस गए। [5]सलमीस पहुँच कर उन्होंने यहूदियों के आराधनालयों में परमेश्वर के वचन का प्रचार करना आरम्भ किया। यूहन्ना उनका सेवक था। [6]जब वे उस सारे द्वीप में से होते हुए पाफुस पहुँचे तो उन्हें बार-यीशु नामक एक जादूगर मिला जो यहूदी और झूठा नबी था। [7]वह राज्यपाल सिरगियुस पौलुस के साथ था जो बुद्धिमान पुरुष था। इस व्यक्ति ने बरनाबास तथा शाऊल को बुलवाकर परमेश्वर का वचन सुनना चाहा। [8]परन्तु इलीमास जादूगर ने—उसके नाम का यही अर्थ है—उनका विरोध कर के राज्यपाल को विश्वास करने से बहकाने का यत्न किया। [9]परन्तु शाऊल ने जो पौलुस भी कहलाता था, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो उसकी ओर ध्यान से देख कर कहा, [10]"सब छल और धूर्तता से भरे हे शैतान की सन्तान, तू जो समस्त धार्मिकता का शत्रु है, क्या तू प्रभु के सीधे मार्गों को टेढ़ा करना न छोड़ेगा? [11]अब देख, प्रभु का हाथ तुझ पर पड़ा है और तू अन्धा हो जाएगा तथा कुछ समय तक सूर्य को न देख सकेगा।" तब तुरन्त ही उस पर धुंधलापन और अंधकार छा गया, और वह इधर-उधर टटोलने लगा कि कोई उसका हाथ पकड़कर उसे मार्ग दिखाए। [12]तब राज्यपाल ने इस घटना को देख कर और प्रभु के उपदेश से आश्चर्यचकित होकर विश्वास किया।

पिसिदिया के अन्ताकिया में

[13]पौलुस और उसके साथी जल-मार्ग से होकर पाफुस से पंफूलिया के पिरगा में आए, और यूहन्ना उन्हें छोड़ कर यरूशलेम को लौट गया। [14]वे पिरगा से चलकर पिसिदिया के अंताकिया में पहुंचे और सब्त के दिन आराधनालय में जाकर बैठ गए। [15]व्यवस्था और नबियों की पुस्तकों में से वचन पढ़ने के पश्चात् आराधनालय के अधिकारियों ने उनके पास कहला भेजा, "भाइयो, यदि तुम्हारे पास लोगों के लिए प्रोत्साहन का कोई वचन है तो सुनाओ।" [16]तब पौलुस उठ खड़ा हुआ और हाथ से संकेत करके कहने लगा।

पौलुस का भाषण

"हे इस्राएलियो, और परमेश्वर का भय मानने वालो, सुनो: [17]इस प्रजा इस्राएल के परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को चुन लिया। उसने मिस्र देश में प्रवास के समय उन्हें महान् किया, और अपनी

शक्तिशाली भुजा बढ़ाकर उनको वहां से निकाल लाया। [18]और लगभग चालीस वर्ष तक जंगल में उनकी सहता रहा। [19]उसे कनान देश की सात जातियों का नाश करने और उनकी भूमि को उत्तराधिकार स्वरूप बांटने में लगभग साढ़े चार सौ वर्ष लगे। [20]इन वातों के पश्चात् उसने उन्हें शमूएल नवी के समय तक न्यायी दिए। [21]तब उन्होंने राजा की मांग की और परमेश्वर ने विन्यामीन के गोत्र में से एक मनुष्य, अर्थात् कीश के पुत्र शाऊल को, चालीस वर्ष के लिए उन्हें दे दिया। [22]फिर उसे हटाने के पश्चात् उसने दाऊद को उनका राजा बनाया, जिसके विषय में उसने साक्षी दी और कहा, 'मुझे एक मनुष्य यिशै का पुत्र दाऊद मिला है जो मेरे मन के अनुसार है, और जो मेरी सारी इच्छाएं पूरी करेगा।' [23]इसी मनुष्य के वंश से परमेश्वर ने प्रतिज्ञानुसार इस्राएल के पास एक उद्धारकर्त्ता अर्थात् यीशु को भेजा, [24]जिसके आने से पहिले यूहन्ना ने समस्त इस्राएलियों के सव लोगों में मनफिराव के वपतिस्मे का प्रचार किया था। [25]जव यूहन्ना अपनी अवधि पूरी करने पर था तो वह कहा करता था, 'तुम मुझे क्या समझते हो? मैं वह नहीं हूँ, परन्तु देखो, मेरे वाद एक आने वाला है जिसके पांव की जूतियों के वन्ध भी मैं खोलने के योग्य नहीं हूँ।'

[26]"हे आदरणीय भाइयो, इब्राहीम की सन्तानो और तुम में से जो परमेश्वर का भय मानते हो, हमारे लिए ही यह उद्धार का वचन भेजा गया है। [27]इसी व्यक्ति को और नवियों की वातों को जिन्हें हर सब्त के दिन पढ़ा जाता है न समझते हुए, यरूशलेम के रहने वालों और उनके अधिकारियों ने उसे दोषी ठहरा कर इन्हीं वातों को पूरा किया। [28]यद्यपि उनके पास उसे मार डालने के लिए कोई आधार नहीं था, फिर भी उन्होंने पिलातुस से मांग की कि वह मार डाला जाए। [29]जव उन्होंने उसके विषय में लिखी हुई सव वातें पूरी कर लीं, तव उसे क्रूस पर से उतार कर कब्र में रख दिया। [30]परन्तु परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जिला उठाया। [31]और जो उसके साथ गलील से यरूशलेम आए थे, उन पर वह कई दिनों तक प्रकट होता रहा। ये वे ही हैं जो अव लोगों के सामने उसके गवाह हैं। [32]हम तुम्हें उस प्रतिज्ञा के विषय में जो पूर्वजों से की गई थी यह सुसमाचार सुनाते हैं, [33]कि परमेश्वर ने यीशु को जिलाकर वही प्रतिज्ञा हमारी सन्तान के लिए पूर्ण की जैसा कि दूसरे भजन में भी लिखा है, '**तू मेरा पुत्र है, आज ही मैंने तुझे जन्म दिया है।**' [34]उसने उसे मृतकों में से जिला उठाया कि वह कभी न सड़े। उसने इस प्रकार कहा, 'मैं दाऊद की पवित्र और अटल आशीष तुझे दूँगा।' [35]इसलिए वह एक और भजन में भी कहता है, 'तू अपने पवित्र जन को सड़ने न देगा।' [36]क्योंकि दाऊद परमेश्वर के उद्देश्य के अनुसार अपने युग के लोगों की सेवा पूर्ण करके सो गया, और अपने पितरों के वीच दफ़नाया गया, और सड़ गया। [37]पर जिसे परमेश्वर ने जीवित किया वह सड़ने न पाया। [38]इसलिए हे भाइयो, तुम यह जान लो कि इसी के द्वारा पापों की क्षमा का समाचार तुम्हें सुनाया जाता है, [39]और इसी के द्वारा प्रत्येक विश्वास करने वाला उन सव वातों से छुटकारा पाता है जिन से तुम मूसा की ... के द्वारा छुटकारा नहीं पा

भाइयों ने यह निश्चय किया कि पौलुस, बरनाबास तथा उनमें से कुछ अन्य लोग इस समस्या के सम्बन्ध में प्रेरितों और प्राचीनों के पास यरूशलेम जाएं। [3]अत: कलीसिया से विदाई पाकर वे फीनीके और सामरिया होते हुए सब भाइयों को गैरयहूदियों के हृदय-परिवर्तन का विस्तार पूर्वक समाचार सुना-सुनाकर अत्यन्त आनन्द पहुंचा रहे थे। [4]जब वे यरूशलेम पहुंचे तो उनका स्वागत कलीसिया, प्रेरितों तथा प्राचीनों द्वारा किया गया। तब उन्होंने वह सब कुछ कह सुनाया जो परमेश्वर ने उनके साथ किया था। [5]परन्तु फरीसी पन्थ के कुछ विश्वासियों ने खड़े होकर कहा, "उनका खतना कराना तथा उन्हें मूसा की व्यवस्था को पालन करने का आदेश देना आवश्यक है।"

[6]प्रेरित तथा प्राचीन इस विषय पर विचार करने के लिए एकत्रित हुए। [7]जब बहुत वाद-विवाद हो चुका, तब पतरस ने खड़े होकर उनसे कहा, "भाइयो, तुम जानते हो कि बहुत दिनों पूर्व परमेश्वर ने तुम में से मुझे चुना कि गैरयहूदी लोग मेरे मुंह से सुसमाचार का वचन सुनें और विश्वास करें। [8]और परमेश्वर ने, जो हृदय को जानता है, हमारी ही तरह उन्हें भी पवित्र आत्मा देकर उनके पक्ष में गवाही दी। [9]इस प्रकार विश्वास के द्वारा उनके हृदय को शुद्ध करके उसने हम में और उनमें कोई अन्तर नहीं रखा। [10]अत: चेलों की गर्दन पर ऐसा जुआ रख कर जिसे न तो हमारे पूर्वज और न ही हम उठा सके हैं, अब क्यों परमेश्वर की परीक्षा करते हो? [11]परन्तु हमें निश्चय है कि प्रभु यीशु के अनुग्रह से हमारा उद्धार उसी ...ार हुआ है जिस प्रकार उनका।"

[12]तब सारी भीड़ चुपचाप बरनाबास और पौलुस द्वारा यह विवरण सुनने लगी कि परमेश्वर ने उनके द्वारा गैरयहूदियों में कैसे कैसे अद्भुत चिन्ह दिखाए और आश्चर्यकर्म किए। [13]जब वे बोल चुके तो याकूब ने उत्तर दिया, "भाइयो, मेरी सुनो! [14]शमौन ने बताया है कि परमेश्वर ने अपने नाम के लिए बहुत दिनों पूर्व गैरयहूदियों में से एक प्रजा को कैसे चुन लिया। [15]इस बात से नबियों के वचन भी मिलते हैं जैसा कि लिखा है, [16]'**इन बातों के पश्चात मैं लौटूंगा, और मैं दाऊद के गिरे हुए तम्बू को फिर से खड़ा करूंगा और उसके खण्डहरों का पुनर्निर्माण करूंगा, और मैं उसका जीर्णोद्धार करूंगा।** [17]**जिससे कि शेष लोग भी और सब गैरयहूदी भी जो मेरे नाम के कहलाते हैं, प्रभु की खोज करें**—[18]**यह वही प्रभु कहता है जो प्राचीनकाल से इन बातों को प्रकट करता आया है।**' [19]अत: मैं इस निर्णय पर पहुंचा हूं कि हम उन्हें दुख न दें जो गैरयहूदियों में से परमेश्वर की ओर फिरते हैं। [20]परन्तु उन्हें लिख भेजें कि वे मूर्तियों की अशुद्धताओं से, व्यभिचार से और गला घोंटे पशुओं के मांस से और लहू से दूर रहें। [21]क्योंकि प्राचीनकाल से नगर नगर में मूसा की व्यवस्था के प्रचार करने वाले होते आए हैं, और प्रत्येक सब्त के दिन आराधनालयों में वही पढ़ी जाती है।"

गैरयहूदी विश्वासियों को पत्र

[22]जब पूरी कलीसिया सहित प्रेरितों तथा प्राचीनों को यह उचित जान पड़ा कि अपने मध्य में से कुछ मनुष्यों को चुनकर, अर्थात् बरसब्बा कहलाने वाले यहूदा तथा सीलास को जो भाइयों में प्रमुख थे,

तीन सब्त तक पवित्रशास्त्र में से उनके साथ वाद-विवाद करता रहा, 3और इस बात का अर्थ स्पष्ट करके यह प्रमाणित करता रहा कि मसीह को दुख उठाना और मृतकों में से जी उठना अवश्य था, और वह कहता था, "यही यीशु जिसका मैं तुम्हारे सामने प्रचार करता हूं, मसीह है।" 4उनमें से कुछ लोगों ने विश्वास किया और भक्त यूनानियों के एक बड़े समूह व बहुत सी प्रमुख स्त्रियों सहित, वे पौलुस और सीलास के साथ मिल गए। 5परन्तु यहूदी ईर्ष्या से जल उठे और उन्होंने बाज़ार से कुछ दुष्टों को अपने साथ लिया और भीड़ इकट्ठी करके नगर में हुल्लड़ मचाया, और यासोन के घर पर चढ़ाई करके उन्हें लोगों के सामने लाना चाहा। 6परन्तु जब उन्होंने वहां उन्हें नहीं पाया तो वे यासोन और कुछ भाइयों को नगर के अधिकारियों के पास घसीट लाए और चिल्लाकर कहने लगे, "ये लोग जिन्होंने संसार में उथल-पुथल मचा दी है यहां भी आ पहुंचे हैं, 7और यासोन ने उन्हें अपने यहां ठहराया है, और वे सब के सब कैसर की आज्ञाओं का यह कह कर विरोध करते हैं कि यीशु नाम का कोई अन्य राजा है।" 8और उन्होंने भीड़ को और नगर के अधिकारियों को जिन्होंने यह सब सुना था, भड़का दिया। 9इस पर उन्होंने यासोन और अन्य लोगों से जमानत लेकर उन्हें जाने दिया।

बिरीया नगर में

10भाइयों ने तुरन्त रात में ही पौलुस तथा सीलास को बिरी[illegible] जहां पहुंचने पर वे यहूदियों[illegible] गए। 11ये लोग थिस[illegible] अधिक सज्जन थे, क्योंकि उन्होंने बड़ी उत्सुकता से वचन को ग्रहण किया और प्रतिदिन पवित्रशास्त्रों में से खोज-बीन करते रहे कि देखें ये बातें ऐसी ही हैं या नहीं। 12अतः उनमें से बहुतों ने, तथा उनके साथ अनेक प्रतिष्ठित यूनानी महिलाओं और पुरुषों ने भी विश्वास किया। 13परन्तु जब थिस्सलुनीके के यहूदियों को मालूम हुआ कि बिरीया में भी पौलुस ने परमेश्वर का वचन सुनाया है, तो वे वहां भी आकर भीड़ को भड़काने और हुल्लड़ मचाने लगे। 14तब भाइयों ने पौलुस को तुरन्त समुद्र-तट पर जाने के लिए विदा किया, परन्तु सीलास और तीमुथियुस वहीं रह गए। 15पौलुस को पहुंचाने वाले एथेंस तक उसे ले गए, और उस से यह आदेश पाकर कि सीलास तथा तीमुथियुस जल्द से जल्द मेरे पास आ जाएं, वे वहां से विदा हुए।

एथेंस नगर में

16जब पौलुस एथेंस में उनकी प्रतीक्षा कर रहा था, तो नगर को मूर्तियों से भरा हुआ देख कर वह अपनी आत्मा में जल उठा। 17अतः वह प्रतिदिन आराधनालय में यहूदियों से तथा गैरयहूदी भक्तों से और बाज़ार में उनसे जो वहां [illegible] थे वाद-विवाद किया करता था। [illegible]
इपीकूरी और स्तोईकी दा[illegible]
उस से तर्क-वितर्क किया।
थे, "यह *बकवादी क[illegible]
है?" दूसरों ने कहा, "[illegible]
ताओं का प्रचारक [illegible]
क्योंकि वह यीशु और
प्रचार कर रहा था। 19वे
*अरियुपगुस की सभा

18 *या, जूठन बटोर कर जीवन

19 *या, अरेस की पहाड़ी

पूछने लगे, "क्या हम जान सकते हैं कि यह नई शिक्षा जिसका तू प्रचार करता है, क्या है? [20]क्योंकि तू हमें कुछ अनोखी बातें सुनाता है; इसलिए हम जानना चाहते हैं कि इन बातों का अर्थ क्या है।" [21]क्योंकि सब एथेंसवासी और परदेशी जो वहां आया करते थे नई नई बातें कहने और सुनने के अतिरिक्त और किसी बात में अपना समय नहीं बिताते थे।

सभा में पौलुस का भाषण

[22]तब पौलुस ने अरियुपगुस के बीच में खड़े होकर कहा, "हे एथेंस के लोगो, ऐसा लगता है कि तुम, सब बातों में बड़े धार्मिक हो। [23]क्योंकि जब मैं घूमते-फिरते तुम्हारे पूजने की वस्तुओं का अवलोकन कर रहा था, तो मैंने एक वेदी पाई जिस पर यह लिखा था, 'अनजाने परमेश्वर के लिए।' इसलिए जिसे तुम अनजाने में पूजते हो, उसी का सन्देश मैं तुम्हें सुनाता हूं। [24]परमेश्वर जिसने जगत और उसमें की सब वस्तुओं को बनाया, वही स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु है। वह हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में निवास नहीं करता। [25]और न ही मनुष्यों के हाथों से उसकी सेवा-टहल होती है, मानो कि उसे किसी बात की आवश्यकता हो, क्योंकि वह स्वयं सब को जीवन, श्वांस और सब कुछ प्रदान करता है। [26]उसने एक ही *मूल से मनुष्य की †प्रत्येक जाति को बनाया कि सम्पूर्ण पृथ्वी पर बस जाए, और इसीलिए उसने उनका एक निश्चित समय तथा उनके निवास की सीमाएं निर्धारित कर दीं, [27]कि वे परमेश्वर को ढूंढ़ें, हो सकता है कि वे उसे टटोल कर पाएं, यद्यपि वह हम में से किसी से दूर नहीं। [28]क्योंकि उसी में हम जीवित रहते, चलते-फिरते और अस्तित्व रखते हैं, जैसा कि तुम्हारे अपने कुछ कवियों ने भी कहा है, 'हम भी तो उसी की सन्तान हैं।' [29]इसी प्रकार परमेश्वर की सन्तान होकर हमें यह कदापि नहीं समझना चाहिए कि परमेश्वर सोने, चांदी अथवा पत्थर की किसी कारीगरी के समान है, जो मनुष्य की कला और कल्पना से गढ़ा गया हो। [30]इसलिए अज्ञानता के समयों की उपेक्षा करके परमेश्वर अब हर जगह के सब मनुष्यों को आज्ञा देता है कि पश्चात्ताप करें। [31]क्योंकि उसने एक दिन निश्चित किया है जिसमें, एक मनुष्य के द्वारा जिसको उसने नियुक्त किया है, वह धार्मिकता से संसार का न्याय करेगा; और उसने मृतकों में से उसे जिलाकर इस बात को सब मनुष्यों पर प्रमाणित कर दिया है।"

[32]जब उन्होंने मृतकों के पुनरुत्थान की बात सुनी तो कुछ लोग ठट्ठा करने लगे परन्तु दूसरों ने कहा, "हम इस विषय में तुझ से फिर कभी सुनेंगे।" [33]इस पर पौलुस उनके मध्य में से चला गया। [34]परन्तु कुछ लोग उसके साथ हो लिए और उन्होंने विश्वास किया, जिनमें दियुनुसियुस अरियुपगुस का सदस्य और दमरिस नाम की एक महिला तथा उनके साथ अन्य और लोग भी थे।

कुरिन्थुस में

18 इन बातों के पश्चात् पौलुस एथेंस छोड़ कर कुरिन्थुस चला गया। [2]और उसे अक्विला नामक पुन्तुस निवासी एक यहूदी मिला जो हाल ही में

26 *अर्थात्, एक ही लहू से †या, राष्ट्र

तीन सब्त तक पवित्रशास्त्र से उनके साथ वाद-विवाद करता रहा, [3]और इस बात का अर्थ स्पष्ट करके यह प्रमाणित करता रहा कि मसीह को दुख उठाना और मृतकों में से जी उठना अवश्य था, और वह कहता था, "यही यीशु जिसका मैं तुम्हारे सामने प्रचार करता हूं, मसीह है।" [4]उनमें से कुछ लोगों ने विश्वास किया और भक्त यूनानियों के एक बड़े समूह व बहुत सी प्रमुख स्त्रियों सहित, वे पौलुस और सीलास के साथ मिल गए। [5]परन्तु यहूदी ईर्ष्या से जल उठे और उन्होंने बाज़ार से कुछ दुष्टों को अपने साथ लिया और भीड़ इकट्ठी करके नगर में हुल्लड़ मचाया, और यासोन के घर पर चढ़ाई करके उन्हें लोगों के सामने लाना चाहा। [6]परन्तु जब उन्होंने वहां उन्हें नहीं पाया तो वे यासोन और कुछ भाइयों को नगर के अधिकारियों के पास घसीट लाए और चिल्लाकर कहने लगे, "ये लोग जिन्होंने संसार में उथल-पुथल मचा दी है यहां भी आ पहुंचे हैं, [7]और यासोन ने उन्हें अपने यहां ठहराया है, और वे सब के सब कैसर की आज्ञाओं का यह कह कर विरोध करते हैं कि यीशु नाम का कोई अन्य राजा है।" [8]और उन्होंने भीड़ को और नगर के अधिकारियों को जिन्होंने यह सब सुना था, भड़का दिया। [9]इस पर उन्होंने यासोन और अन्य लोगों से जमानत लेकर उन्हें जाने दिया।

बिरीया नगर में

[10]भाइयों ने तुरन्त रात में ही पौलुस तथा सीलास को बिरीया भेज दिया जहां पहुंचने पर वे यहूदियों के आराधनालय में गए। [11]ये लोग थिस्सलुनीके वालों से अधिक सज्जन थे, क्योंकि उन्होंने बड़ी उत्सुकता से वचन को ग्रहण किया और प्रतिदिन पवित्रशास्त्रों में से खोज-बीन करते रहे कि देखें ये बातें ऐसी ही हैं या नहीं। [12]अतः उनमें से बहुतों ने, तथा उनके साथ अनेक प्रतिष्ठित यूनानी महिलाओं और पुरुषों ने भी विश्वास किया। [13]परन्तु जब थिस्सलुनीके के यहूदियों को मालूम हुआ कि बिरीया में भी पौलुस ने परमेश्वर का वचन सुनाया है, तो वे वहां भी आकर भीड़ को भड़काने और हुल्लड़ मचाने लगे। [14]तब भाइयों ने पौलुस को तुरन्त समुद्र-तट पर जाने के लिए विदा किया, परन्तु सीलास और तीमुथियुस वहीं रह गए। [15]पौलुस को पहुंचाने वाले एथेंस तक उसे ले गए, और उस से यह आदेश पाकर कि सीलास तथा तीमुथियुस जल्द से जल्द मेरे पास आ जाएं, वे वहां से विदा हुए।

एथेंस नगर में

[16]जब पौलुस एथेंस में उनकी प्रतीक्षा कर रहा था, तो नगर को मूर्तियों से भरा हुआ देख कर वह अपनी आत्मा में जल उठा। [17]अतः वह प्रतिदिन आराधनालय में यहूदियों से तथा गैरयहूदी भक्तों से और बाज़ार में उनसे जो वहां मिलते थे वाद-विवाद किया करता था। [18]और कुछ इपीकूरी और स्तोईकी दार्शनिकों ने भी उस से तर्क-वितर्क किया। कुछ कह रहे थे, "यह *बकवादी कहना क्या चाहता है?" दूसरों ने कहा, "यह तो विचित्र देव-ताओं का प्रचारक मालूम पड़ता है"—क्योंकि वह यीशु और पुनरुत्थान का प्रचार कर रहा था। [19]वे उसे अपने साथ *अरियुपगुस की सभा में ले गए और

8 *या, जूठन बटोर कर जीवन निर्वाह करने वाला

19 *या, अरेस की पहाड़ी

पूछने लगे, "क्या हम जान सकते हैं कि यह नई शिक्षा जिसका तू प्रचार करता है, क्या है? [20]क्योंकि तू हमें कुछ अनोखी बातें सुनाता है; इसलिए हम जानना चाहते हैं कि इन बातों का अर्थ क्या है।" [21]क्योंकि सब एथेंसवासी और परदेशी जो वहां आया करते थे नई नई बातें कहने और सुनने के अतिरिक्त और किसी बात में अपना समय नहीं बिताते थे।

सभा में पौलुस का भाषण

[22]तब पौलुस ने अरियुपगुस के बीच में खड़े होकर कहा, "हे एथेंस के लोगो, ऐसा लगता है कि तुम, सब बातों में बड़े धार्मिक हो। [23]क्योंकि जब मैं घूमते-फिरते तुम्हारे पूजने की वस्तुओं का अवलोकन कर रहा था, तो मैंने एक वेदी पाई जिस पर यह लिखा था, 'अनजाने परमेश्वर के लिए।' इसलिए जिसे तुम अनजाने में पूजते हो, उसी का सन्देश मैं तुम्हें सुनाता हूं। [24]परमेश्वर जिसने जगत और उसमें की सब वस्तुओं को बनाया, वही स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु है। वह हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में निवास नहीं करता। [25]और न ही मनुष्यों के हाथों से उसकी सेवा-टहल होती है, मानो कि उसे किसी बात की आवश्यकता हो, क्योंकि वह स्वयं सब को जीवन, श्वांस और सब कुछ प्रदान करता है। [26]उसने एक ही *मूल से मनुष्य की प्रत्येक जाति को बनाया कि सम्पूर्ण पृथ्वी पर बस जाए, और इसीलिए उसने उनका एक निश्चित समय तथा उनके निवास की सीमाएं निर्धारित कर दीं, [27]कि वे परमेश्वर को ढूंढ़ें, हो सकता है कि वे उसे टटोल कर पाएं, यद्यपि वह हम में से किसी से दूर नहीं। [28]क्योंकि उसी में हम जीवित रहते, चलते-फिरते और अस्तित्व रखते हैं, जैसा कि तुम्हारे अपने कुछ कवियों ने भी कहा है, 'हम भी तो उसी की सन्तान हैं।' [29]इसी प्रकार परमेश्वर की सन्तान होकर हमें यह कदापि नहीं समझना चाहिए कि परमेश्वर सोने, चांदी अथवा पत्थर की किसी कारीगरी के समान है, जो मनुष्य की कला और कल्पना से गढ़ा गया हो। [30]इसलिए अज्ञानता के समयों की उपेक्षा करके परमेश्वर अब हर जगह के सब मनुष्यों को आज्ञा देता है कि पश्चात्ताप करें। [31]क्योंकि उसने एक दिन निश्चित किया है जिसमें, एक मनुष्य के द्वारा जिसको उसने नियुक्त किया है, वह धार्मिकता से संसार का न्याय करेगा; और उसने मृतकों में से उसे जिलाकर इस बात को सब मनुष्यों पर प्रमाणित कर दिया है।"

[32]जब उन्होंने मृतकों के पुनरुत्थान की बात सुनी तो कुछ लोग ठट्ठा करने लगे परन्तु दूसरों ने कहा, "हम इस विषय में तुझ से फिर कभी सुनेंगे।" [33]इस पर पौलुस उनके मध्य में से चला गया। [34]परन्तु कुछ लोग उसके साथ हो लिए और उन्होंने विश्वास किया, जिनमें दियुनुसियुस अरियुपगुस का सदस्य और दमरिस नाम की एक महिला तथा उनके साथ अन्य और लोग भी थे।

कुरिन्थुस में

18 इन बातों के पश्चात् पौलुस एथेंस छोड़ कर कुरिन्थुस गया। [2]और उसे अक्विला नामक निवासी एक यहूदी मिला जो

26 *अर्थात, एक ही [illegible]

अपनी पत्नी प्रिस्किल्ला के साथ इटली से आया था, क्योंकि क्लौदियुस ने सब यहूदियों को रोम से निकल जाने की राज्याज्ञा दी थी। वह उनके यहां गया, [3]और इसलिए कि उसका भी वही व्यवसाय था वह उनके साथ रहा और वे काम करने लगे; क्योंकि व्यवसाय से वे तम्बू बनाने वाले थे। [4]और वह प्रत्येक सब्त के दिन आराधनालय में तर्क-वितर्क करके यहूदियों और यूनानियों को समझाने का प्रयत्न करता था।

[5]परन्तु जब सीलास और तीमुथियुस मैसीडोनिया से आए तो पौलुस वचन सुनाने की धुन में लगकर यहूदियों के समक्ष साक्षी देने लगा कि यीशु ही मसीह है। [6]परन्तु जब उन्होंने विरोध किया और निन्दा की तो उसने अपने वस्त्र झाड़ते हुए उनसे कहा, "तुम्हारा लहू तुम्हारे सिर पर हो! मैं निर्दोष हूं! अब से मैं गैरयहूदियों के पास जाऊंगा।" [7]वहां से चलकर वह तीतुस यूस्तुस नामक एक व्यक्ति के घर गया जो परमेश्वर का भक्त था, और जिसका घर आराधनालय से लगा हुआ था। [8]और आराधनालय के प्रधान क्रिसपुस ने अपने समस्त कुटुम्ब समेत प्रभु पर विश्वास किया, और बहुत से कुरिन्थियों ने जब यह सुना तो विश्वास किया और बपतिस्मा लिया। [9]रात को प्रभु ने दर्शन के द्वारा पौलुस से कहा, "मत डर, प्रचार करता जा और चुप न रह; [10]क्योंकि मैं तेरे साथ हूं, और कोई व्यक्ति हानि पहुंचाने के लिए तुझ पर आक्रमण न करेगा: क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं।" [11]वह उनके मध्य परमेश्वर का वचन सिखाते हुए डेढ़ वर्ष तक रहा।

[12]जब गल्लियो अखाया का राज्यपाल था तो यहूदी एका करके पौलुस के विरुद्ध उठ खड़े हुए और उसे न्याय-आसन के सम्मुख लाकर कहने लगे, [13]"यह मनुष्य व्यवस्था के विपरीत परमेश्वर की उपासना करने के लिए लोगों को भड़काता है।" [14]जब पौलुस बोलने ही को था, तो गल्लियो ने यहूदियों से कहा, "हे यहूदियो, यदि यह कोई अन्याय या घोर अपराध की बात होती तो तुम्हारा यह अभियोग सुनना मेरे लिए न्यायसंगत होता; [15]परन्तु यदि यह विवाद शब्दों और नामों और तुम्हारी ही व्यवस्था के विषय में है, तो तुम्हीं जानो। मैं इन बातों का न्यायी नहीं बनना चाहता।" [16]और उसने उन्हें न्याय-आसन के सामने से भगा दिया। [17]तब सब लोगों ने आराधनालय के प्रधान सोस्थिनेस को पकड़ लिया और उसे न्याय-आसन के सम्मुख पीटने लगे। परन्तु गल्लियो ने इन बातों की कुछ भी चिन्ता नहीं की।

प्रिस्किल्ला और अक्विला

[18]तब पौलुस ने वहां और अधिक दिनों तक रह कर भाइयों से विदा ली और प्रिस्किल्ला तथा अक्विला सहित जलमार्ग से सीरिया को रवाना हुआ। किंख्रिया में उसने सिर मुण्डाया क्योंकि उसने मन्नत मानी थी। [19]फिर वे इफिसुस पहुंचे जहां उसने उन्हें छोड़ दिया और वह आप आराधनालय में जाकर यहूदियों से तर्क-वितर्क करने लगा। [20]जब लोगों ने उस से कुछ दिनों के लिए और रहने को कहा तो उसने स्वीकार नहीं किया। [21]परन्तु विदा लेते समय उसने यह कहा, "यदि परमेश्वर की इच्छा हो तो तुम्हारे पास फिर आऊंगा।" तब वह इफिसुस से जहाज़ द्वारा रवाना हुआ।

[22]जब वह कैसरिया में उतरा, तो

उसने *ऊपर चढ़कर कलीसिया से भेंट की, और फिर नीचे उतरकर अन्ताकिया को चला गया। [23]तथा वहां कुछ समय और व्यतीत करके उसने विदा ली, और गलातिया तथा फ्रूगिया प्रदेशों का भ्रमण करते हुए वह सब चेलों को स्थिर करता रहा।

[24]फिर अपुल्लोस नामक एक यहूदी जिसका जन्म सिकन्दरिया में हुआ था, जो कुशल वक्ता तथा पवित्रशास्त्र में निपुण था, इफिसुस में आया। [25]इस मनुष्य को प्रभु के मार्ग की शिक्षा दी गई थी। वह बड़े आत्मिक उत्साह से भर कर यीशु के विषय में ठीक-ठीक सुनाता और सिखाता था पर वह केवल यूहन्ना के बपतिस्मे के विषय में जानता था। [26]वह आराधनालय में निर्भीकता से बोलने लगा। परन्तु जब प्रिस्किल्ला और अक्विला ने उसकी सुनी तो उन्होंने उसे अलग ले जाकर परमेश्वर के मार्ग के विषय में और भी ठीक-ठीक समझाया। [27]जब उसने उस पार अखाया को जाना चाहा तो भाइयों ने उसे प्रोत्साहित किया और चेलों को लिखा कि उसका स्वागत करें; और जब वह वहां पहुंचा तो उसने उन लोगों की बड़ी सहायता की जिन्होंने अनुग्रह के द्वारा विश्वास किया था। [28]क्योंकि उसने पवित्रशास्त्र से प्रमाण दे देकर कि यीशु ही मसीह है प्रबलता के साथ यहूदियों को सब के सामने निरुत्तर किया।

इफिसुस में

19 ऐसा हुआ कि जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था, तो पौलुस ऊपर के प्रदेश से होता हुआ इफिसुस में पहुंचा, और वहां पर उसे कुछ चेले मिले। [2]उसने उनसे कहा, "क्या तुमने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?" उन्होंने उस से कहा, "नहीं, हमने तो सुना भी नहीं कि पवित्र आत्मा है।" [3]तब उसने कहा, "फिर तुमने किस-का बपतिस्मा लिया?" उन्होंने कहा, "यूहन्ना का बपतिस्मा।" [4]इस पर पौलुस ने कहा, "यूहन्ना ने यह कह कर लोगों को मन-फिराव का बपतिस्मा दिया कि जो मेरे बाद आने वाला है उस पर अर्थात् यीशु पर विश्वास करना।" [5]यह सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया। [6]जब पौलुस ने उन पर अपने हाथ रखे तो पवित्र आत्मा उन पर उतरा, और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने तथा नबूवत करने लगे। [7]ये सब लगभग बारह पुरुष थे।

[8]वह आराधनालय में जाकर तीन महीने तक निर्भीकता से बोलता रहा, और परमेश्वर के राज्य के विषय में तर्क-वितर्क करता और उन्हें समझाता रहा। [9]परन्तु जब कुछ लोगों ने कठोर होकर उसकी नहीं मानी और भीड़ के सामने इस पंथ को बुरा-भला कहने लगे, तो वह चेलों को लेकर उनसे अलग हो गया और तरन्नुस की पाठशाला में प्रतिदिन तर्क-वितर्क करता रहा। [10]दो वर्ष तक ऐसा होता रहा, जिससे कि वे जो एशिया में रहते थे—यहूदी तथा यूनानी—सब ने प्रभु का वचन सुन लिया। [11]और पौलुस के हाथों से परमेश्वर अद्भुत सामर्थ के काम दिखाता था, [12]यहां तक कि उसकी देह से स्पर्श किए हुए रूमाल और अंगोछे रोगियों पर डाल दिए जाते थे और उनकी बीमारियां दूर हो जाती थीं, और दुष्टात्माएं उनमें से निकल जा

---

[22] *यह पहाड़ियों पर स्थित यरूशलेम की कलीसिया होगी। कैसरिया, यरूशलेम का बन्दरगाह

थीं। [13]परन्तु झाड़ा-फूंकी करने वाले कुछ यहूदी जो इधर-उधर घूमते-फिरते थे अशुद्ध आत्माओं से ग्रस्त लोगों पर प्रभु यीशु के नाम का उपयोग करने का प्रयत्न यह कह कर करने लगे, "मैं तुमको उस यीशु की शपथ दिलाता हूं जिसका प्रचार पौलुस करता है।" [14]और स्किवा नामक एक यहूदी महायाजक के सात पुत्र ऐसा ही कर रहे थे। [15]परन्तु दुष्टात्मा ने उनको उत्तर दिया, "यीशु को मैं जानती हूं, और पौलुस को भी पहचानती हूं, पर तुम कौन हो?" [16]और वह मनुष्य जिसमें दुष्टात्मा थी उन पर झपटा और उनको वश में करके उन पर ऐसा प्रबल हुआ कि वे नंगे और घायल होकर उस घर से निकल भागे। [17]यह बात इफिसुस के रहने वाले क्या यहूदी क्या यूनानी व सब लोगों को मालूम हो गई। उन सब पर भय छा गया, और प्रभु यीशु के नाम की बड़ाई होने लगी। [18] जिन्होंने विश्वास किया था उनमें से बहुतों ने आकर अपने कामों को मान लिया और उन्हें प्रकट कर दिया। [19]बहुत से लोगों ने जो जादू-टोना किया करते थे अपनी अपनी पोथियां लाकर इकट्ठी कीं और सब के सामने जला दीं। जब उन्होंने उनका मूल्य आंका तो लगभग पचास हज़ार चांदी के सिक्कों के बराबर निकला। [20]इस प्रकार प्रभु का वचन सामर्थ के साथ फैलता और प्रबल होता गया।

[21]जब ये बातें हो चुकीं तो पौलुस ने अपनी आत्मा में मैसीडोनिया और अखाया से होते हुए यरूशलेम जाने का संकल्प किया, और कहा, "वहां पहुंचने के पश्चात् मुझे रोम को भी देखना अवश्य है।" [22]अत: जो उसकी सेवा करते थे से दो को अर्थात् तीमुथियुस और इरास्तुस को मैसीडोनिया भेजकर वह स्वयं कुछ समय के लिए एशिया में रहा।

इफिसुस में उपद्रव

[23]इन दिनों में इस पंथ के विषय में बड़ा उपद्रव हुआ। [24]क्योंकि देमेत्रियुस नाम का एक सुनार था जो अरतिमिस के चांदी के मन्दिर बनवाकर कारीगरों को बहुत व्यवसाय दिलाता था। [25]उसने उन्हें और इसी प्रकार का धन्धा करने वाले कारीगरों को एकत्रित करके कहा, "हे भाइयो, तुम जानते हो कि हमारी सम्पन्नता इसी धन्धे पर निर्भर है। [26]और तुम देखते और सुनते हो कि न केवल इफिसुस में बल्कि लगभग सम्पूर्ण एशिया में इस पौलुस ने बहुत से लोगों को समझा-बुझाकर और यह कह कर बहका लिया है, कि वे ईश्वर हैं ही नहीं जो हाथ के बनाए हुए हैं! [27]इससे न केवल यह डर है कि हमारे धन्धे की प्रतिष्ठा जाती रहेगी, वरन् यह भी कि महान देवी अरतिमिस का मन्दिर तुच्छ समझा जाएगा, तथा जिस देवी की पूजा एशिया और संसार के सब लोग करते हैं वह अपने ऐश्वर्य से गिरा दी जाएगी।" [28]जब उन्होने यह सुना तो क्रोध से भर गए और चिल्ला-चिल्ला कर कहने लगे, "इफिसियों की देवी अरतिमिस महान है।" [29]नगर में हुल्लड़ मच गया, और लोगों ने गयुस तथा अरिस्तर्खुस नामक पौलुस के संगी यात्रियों को जो मैसीडोनिया से आए थे घसीटा और वे एक साथ दौड़कर रंगशाला में गए। [30]जब पौलुस ने भीड़ में जाना चाहा तो चेलों ने उसे जाने नहीं दिया। [31]तथा एशिया के कुछ अधिकारियों ने जो उसके मित्र थे उसे कहलवा भेजा और बार बार निवेदन

किया कि वह रंगशाला में जाने का जोखिम न उठाए।

[32]अतः कोई कुछ चिल्ला रहा था और कोई कुछ, क्योंकि सभा में गड़बड़ी मची हुई थी। अधिकांश लोग तो यह भी नहीं जानते थे कि वे क्यों एकत्रित हुए थे। [33]तब भीड़ में कुछ लोगों ने समझा कि सिकन्दर ही है, क्योंकि यहूदियों ने उसे आगे खड़ा किया था। सिकन्दर ने हाथ से संकेत करके बचाव में सभा को सम्बोधित करना चाहा। [34]परन्तु जब लोगों ने पहिचाना कि वह यहूदी है तो लगभग दो घण्टे तक सब के सब एक स्वर से चिल्लाते रहे, "इफिसियों की अरतिमिस, महान है!" [35]तब मन्दिर के मन्त्री ने भीड़ को शान्त करके कहा, "हे इफिसुस के लोगो, ऐसा कौन मनुष्य है जो नहीं जानता कि इफिसुस का यह नगर महान देवी अरतिमिस के मन्दिर और आकाश से गिरी हुई मूर्ति का संरक्षक है? [36]इसलिए जब कि इन बातों का खण्डन नहीं हो सकता तो यह उचित है कि तुम शान्त रहो और जल्दबाजी में कुछ न करो। [37]क्योंकि तुम इन मनुष्यों को पकड़ लाए हो जो न तो हमारे मन्दिरों के लुटेरे हैं और न ही हमारी देवी के निन्दक हैं। [38]फिर भी, यदि देमेत्रियुस और उन कारीगरों को जो उसके साथ हैं, किसी मनुष्य को कोई शिकायत है तो न्यायालय खुले हैं और राज्यपाल उपलब्ध हैं; वहां वे एक दूसरे पर अभियोग लगाएं। [39]परन्तु यदि तुम इसके अतिरिक्त कुछ और चाहते हो, तो इसका निर्णय नियमित सभा में किया जाएगा। [40]क्योंकि हमें सचमुच इस बात का डर है कि आज के हुए दंगे का आरोप कहीं हम पर न मढ़ दिया जाए, क्योंकि इसके होने का कोई कारण नहीं, अतः हम इस उपद्रवी भीड़ के जमा होने का कोई उत्तर न दे सकेंगे।" [41]यह कह कर उसने सभा भंग कर दी।

मैसीडोनिया, यूनान व त्रोआस में

20 हुल्लड़ थम जाने पर पौलुस ने चेलों को बुलवा भेजा। उन्हें समझाने के पश्चात् उनसे विदा होकर वह मैसीडोनिया की ओर चल दिया। [2]वह उन सब प्रदेशों से होकर और लोगों को अत्यधिक उत्साहित करता हुआ, यूनान पहुंचा। [3]वहां उसने तीन महीने बिताए और जब वह जहाज़ द्वारा सीरिया जाने को था तो यहूदियों ने उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचा, इसलिए उसने निश्चय किया कि मैसीडोनिया होकर लौट जाए। [4]बिरीया निवासी पुर्रुस का पुत्र सोपत्रुस, थिस्सलुनीकिया निवासी अरिस्तर्खुस, सिकुन्दुस, दिरबे का गयुस, तीमुथियुस और एशिया के तुखिकुस तथा त्रुफिमुस उसके साथ थे। [5]परन्तु ये लोग हम से आगे चले गए थे और त्रोआस में हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। [6]अखमीरी रोटी के पर्व के पश्चात् हम फिलिप्पी से जहाज़ द्वारा निकले और पांच दिन में उनके पास त्रोआस पहुंचे और वहां सात दिन तक रहे।

यूतुखुस का जिलाया जाना

[7]सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिए एकत्रित हुए, तो पौलुस उनसे बातें करने लगा। वह दूसरे दिन जाने पर था इसलिए आधी रात तक उपदेश देता रहा। [8]जिस अटारी में हम एकत्रित हुए थे, वहां बहुत से दीपक जल रहे थे। [9]यूतुखुस नाम का एक युवक था जो खिड़की पर बैठा हुआ नींद के

स्थानीय लोग उस से यरूशलेम न जाने के लिए अनुरोध करने लगे।

[13]तब पौलुस ने उत्तर दिया, "तुम यह क्या कर रहे हो, कि रो-रोकर मेरा दिल तोड़ रहे हो? मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिए यरूशलेम में न केवल बांधे जाने, परन्तु मरने के लिए भी तैयार हूं।" [14]जब वह नहीं माना तो हम यह कह कर चुप हो गए, "प्रभु की इच्छा पूरी हो।"

[15]इन दिनों के बाद हमने तैयारी की, और यरूशलेम की ओर चल दिए। [16]कैसरिया से भी कुछ चेले हमारे साथ हो लिए और हमें साइप्रस के मनासोन नामक एक पुराने चेले के पास ले गए जिसके साथ हमें ठहरना था।

यरूशलेम में पौलुस का आगमन

[17]जब हम यरूशलेम पहुंचे तो भाइयों ने हमें बड़े आनन्द से ग्रहण किया। [18]तब दूसरे दिन पौलुस हमें लेकर याकूब के पास गया, जहां सब प्राचीन उपस्थित थे। [19]उनका अभिवादन कर के उसने एक एक करके वे काम बताए जो परमेश्वर ने उसकी सेवकाई के द्वारा गैरयहूदियों में किए थे।

[20]यह सुनकर उन्होंने परमेश्वर की महिमा की और उस से कहा, "भाई, तू तो देखता है कि यहूदियों में हज़ारों लोग हैं जिन्होंने विश्वास किया है। वे सब व्यवस्था के लिए उत्साह से भरे हैं। [21]और उन्हें तेरे विषय में बताया गया है कि तू गैरयहूदियों के बीच रहने वाले यहूदियों को यह सिखाता है कि मूसा की शिक्षा को त्याग दो और कहता है कि न अपने बच्चों का खतना कराओ और न ही प्रचलित रीतियों के अनुसार चलो। [22]तो फिर क्या किया जाए? वे अवश्य यह सुनेंगे कि तू आया है।

[23]अतः जो हम तुझ से कहें वह कर: हमारे यहां चार व्यक्ति हैं, जिन्होंने मन्नत मानी है। [24]उन्हें ले जा और उनके साथ अपने आप को शुद्ध कर और उन्हें खर्च दे कि वे अपने सिर मुण्डाएं। तब सब जान लेंगे कि जो बातें तेरे विषय में उन्हें बताई गई हैं वे तो सत्य नहीं हैं पर यह कि तू स्वयं भी व्यवस्था को पालन करते हुए उसके अनुसार चलता है। [25]जहां तक विश्वासी गैरयहूदियों का सम्बन्ध है हमने उन्हें यह निर्णय लिख भेजा है कि वे मूर्तियों के आगे बलि किए हुए मांस से और लहू से और गला घोंटे हुओं के मांस से तथा व्यभिचार से बचे रहें।"

[26]तब पौलुस उन मनुष्यों को ले गया और दूसरे दिन उनके साथ अपने आप को भी शुद्ध करके मन्दिर में गया। वहां उसने सूचित किया कि शुद्ध होने के दिन कब पूरे होंगे, अर्थात् हम में से प्रत्येक के लिए बलिदान कब चढ़ाया जाएगा।

पौलुस की गिरफ़्तारी

[27]जब वे सात दिन पूर्ण होने को थे तो एशिया के यहूदियों ने उसे मन्दिर में देख कर सारी भीड़ को भड़का दिया और पौलुस को पकड़ लिया, [28]और चिल्लाकर कहा, "हे इस्राएलियो, हमारी सहायता करो! यही वह मनुष्य है जो हर जगह सब लोगों में हमारी प्रजा और व्यवस्था और इस स्थान के विरोध में प्रचार करता है, यहां तक कि उसने यूनानियों को भी मन्दिर में लाकर इस पवित्र स्थान को अपवित्र कर दिया है।" [29]क्योंकि इस से पहिले उन्होंने त्रुफ़िमुस नामक इफिसी को उसके साथ नगर में देखा था और यह समझा कि पौलुस उसे मन्दिर में ले आया

है। 30सारा नगर भड़क उठा और सब लोग दौड़कर इकट्ठे हो गए; और वे पौलुस को पकड़ कर मन्दिर से बाहर घसीट लाए, और तुरन्त द्वार बन्द कर दिए गए।

31जब वे उसे मार डालने को थे तो रोमी पलटन के सेनापति को यह सूचना मिली कि सारे यरूशलेम में गड़बड़ी मच गई है। 32वह तुरन्त सैनिकों और सूबेदारों को लेकर उनकी ओर दौड़ पड़ा, और जब लोगों ने सेनापति और सैनिकों को देखा तो पौलुस को पीटना बन्द कर दिया। 33तब सेनापति ने पास आकर उसे पकड़ लिया, और उसे दो जंजीरों से बांधने की आज्ञा दी और पूछने लगा कि वह कौन है और उसने क्या किया है? 34परन्तु भीड़ में से कोई कुछ और कोई कुछ चिल्लाता रहा, और उस हुल्लड़ के मारे जब वह सही बात न जान सका तो उसे छावनी में ले जाने की आज्ञा दी। 35जब वह सीढ़ियों के पास पहुंचा तो ऐसा हुआ कि हिंसक भीड़ के कारण सैनिकों को उसे उठाकर ले जाना पड़ा। 36क्योंकि भीड़ उसके पीछे लग गई थी और वे चिल्ला रहे थे, "इसका काम तमाम कर!"

37जब वे पौलुस को छावनी के भीतर ले जाने को थे, तो उसने सेनापति से कहा, "क्या मैं तुझ से कुछ कह सकता हूं?" उसने पूछा, "तू यूनानी जानता है? 38क्या तू वह मिस्री तो नहीं, जिसने कुछ दिन पहिले विद्रोह करवाया और जो चार हज़ार कटारबन्द लोगों को जंगल में ले गया था?"

39परन्तु पौलुस ने कहा, "मैं यहूदी हूं और प्रसिद्ध नगर किलिकिया के तरसुस का एक नागरिक हूं, मैं तुझ से विनती करता हूं कि मुझे लोगों से बोलने की अनुमति दे।" 40जब उसने अनुमति दे दी तो पौलुस ने सीढ़ियों पर खड़े होकर अपने हाथों से लोगों की ओर संकेत किया और जब वहां सन्नाटा छा गया तो उसने लोगों से इब्रानी बोली में कहा,

भीड़ में पौलुस का भाषण

22 "भाइयो और बुज़ुर्गो, मेरा प्रत्युत्तर सुनो, जिसे अब मैं तुम्हारे सामने प्रस्तुत करता हूं।"

2जब उन लोगों ने सुना कि यह हमसे इब्रानी में बोल रहा है, तो वे और भी शान्त हो गए, और उसने कहा:

3"मैं यहूदी हूं, जो किलिकिया के तरसुस में जन्मा, पर इस नगर में मेरा पालन-पोषण हुआ, और गमलिएल के चरणों में बैठकर, पूर्वजों की व्यवस्था के अनुसार कड़ाई से सिखाया गया, और परमेश्वर के लिए उत्साह से भरा हुआ था जैसे कि आज तुम सब हो। 4मैंने इस पंथ को यहां तक सताया कि पुरुषों एवं स्त्रियों को बांध बांध कर बन्दीगृह में डाल दिया और उन्हें मरवा भी डाला। 5इस बात की गवाही स्वयं महायाजक और प्राचीनों की सभा दे सकती है। मैंने इनसे भाइयों के नाम पत्र भी लिए और इस अभिप्राय से दमिश्क को चला कि वहां के लोगों को भी बन्दी बनाकर दण्ड दिलाने यरूशलेम ले जाऊं। 6और ऐसा हुआ कि जब मैं लगभग दोपहर के समय दमिश्क के निकट अभी रास्ते में ही था कि आकाश से एकाएक एक बड़ी ज्योति मेरे चारों ओर चमकी। 7और मैं भूमि पर गिर पड़ा, और एक वाणी मुझ से यह कहते सुनाई दी, 'शाऊल, शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?' 8मैंने उत्तर दिया, 'प्रभु, तू कौन है?' उसने मुझ से कहा, 'मैं यीशु नासरी हूं, जिसे तू सताता है।' 9जो मेरे

साथ थे उन्होंने ज्योति अवश्य देखी, परन्तु जो मुझ से बोल रहा था उसकी वाणी नहीं समझी। [10]तब मैंने कहा, 'प्रभु, मैं क्या करूं?' प्रभु ने मुझ से कहा, 'उठकर दमिश्क को जा, और वहां तुझे वह सब जो तेरे करने के लिए ठहराया गया है बता दिया जाएगा।' [11]इसलिए कि उस ज्योति के तेज के कारण मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, मेरे साथियों ने हाथ पकड़ कर मुझे दमिश्क पहुंचाया।

[12]"तब हनन्याह नामक एक मनुष्य ने जो व्यवस्था के अनुसार भक्त तथा वहां रहने वाले सब यहूदियों में प्रतिष्ठित था, [13]मेरे पास आकर और खड़े होकर मुझ से कहा, 'भाई शाऊल, अपनी दृष्टि प्राप्त कर।' उसी क्षण मैंने उसे देखा। [14]और उसने कहा, 'हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने तुझे इसलिए नियुक्त किया है कि तू उसकी इच्छा को जाने, उस धर्मी को देखे और उसके मुख से बातें सुने। [15]क्योंकि तू उसके लिए सब मनुष्यों के सामने उन बातों का गवाह होगा जो तू ने देखी और सुनी हैं। [16]अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।'

[17]"फिर ऐसा हुआ कि जब मैं यरूशलेम वापस आकर मन्दिर में प्रार्थना कर रहा था तो मैं बेसुध हो गया, [18]और मैंने उसे यह कहते हुए देखा, 'शीघ्रता कर और यरूशलेम से तुरन्त निकल जा, क्योंकि वे मेरे विषय में तेरी गवाही नहीं मानेंगे।' [19]मैंने कहा, 'प्रभु, वे तो स्वयं जानते हैं कि मैं एक आराधनालय से दूसरे आराधनालय में उन्हें जो तुझ पर विश्वास करते थे, बन्दी बनाता तथा पीटता था। [20]जब तेरे गवाह स्तिफनुस का लहू बहाया जा रहा था तब मैं भी वहां खड़ा उसकी हत्या में सहमत था तथा हत्या करने वालों के वस्त्रों की रखवाली कर रहा था।' [21]और उसने मुझ से कहा, 'जा! क्योंकि मैं तुझे दूर दूर तक ग़ैरयहूदियों के पास भेजूंगा'।"

पौलुस रोमी नागरिक

[22]वे उसके इस बयान तक तो सुनते रहे, फिर ऊंची आवाज़ से चिल्लाकर कहने लगे, "ऐसे मनुष्य का पृथ्वी पर से अन्त कर दो, क्योंकि उसका जीवित रहना उचित नहीं है!" [23]जब वे चिल्ला-चिल्लाकर अपने कपड़े उछालने और आकाश में धूल उड़ाने लगे, [24]तो सेनापति ने उसे किले में ले जाने को कहा और आदेश दिया कि उसे कोड़े लगा कर जांच-पड़ताल की जाए जिससे कि उसके विरोध में लोगों के चिल्लाने का कारण मुझे मालूम हो। [25]जब उन्होंने उसे चमड़े के बन्धनों से बांधा, तो पौलुस ने सूबेदार से जो पास ही खड़ा था कहा, "क्या यह उचित है कि एक रोमी मनुष्य को कोड़े मारो और वह भी बिना दोषी ठहराए?" [26]जब सूबेदार ने यह सुना तो उसने सेनापति के पास जाकर कहा, "तू क्या करने पर है? यह तो रोमी मनुष्य है।" [27]सेनापति ने आकर उस से पूछा, "मुझे बता, क्या तू रोमी है?" उसने कहा, "हां।" [28]तब सेनापति ने उत्तर दिया, "मैंने तो रोमी नागरिकता बहुत रुपए देकर प्राप्त की थी।" पौलुस ने कहा, "परन्तु मैं तो जन्म से रोमी हूं।" [29]तब जो लोग उसकी जांच-पड़ताल करने पर थे तुरन्त उसे छोड़कर हट गए, और सेनापति भी यह जानकर कि वह एक रोमी नागरिक है डर गया, क्योंकि उसने उसे बन्दी बनाया था।

सभा के सामने पौलुस

[30]परन्तु दूसरे दिन, यह निश्चय करने के लिए कि यहूदियों ने क्यों इस पर अभियोग लगाया है, उसने उसके बन्धन खोल दिए और मुख्य याजकों तथा महासभा को एकत्रित होने का आदेश दिया, और पौलुस को ले जाकर उनके सामने खड़ा कर दिया।

23 पौलुस ने महासभा की ओर टकटकी लगा कर देखते हुए कहा, "भाइयो, मैंने आज तक परमेश्वर के सम्मुख पूर्णतः खरे विवेक से जीवन बिताया।" [2]तब हनन्याह महायाजक ने पास खड़े लोगों को उसके मुंह पर थप्पड़ मारने की आज्ञा दी। [3]पौलुस ने उस से कहा, "हे चूना पुती हुई भीत, तुझे परमेश्वर मारेगा। क्या तू व्यवस्था के अनुसार मेरा न्याय करने के लिए यहां बैठा है, और फिर व्यवस्था के ही विरुद्ध मुझे मारने की आज्ञा देता है?" [4]परन्तु पास खड़े लोगों ने कहा, "क्या तू परमेश्वर के महायाजक को बुरा-भला कहता है?" [5]इस पर पौलुस ने कहा, "भाइयो, मुझे नहीं मालूम था कि यह महायाजक है, क्योंकि लिखा है, '**तू अपने लोगों के शासक को बुरा न कहना**'।"

[6]जब पौलुस ने यह देखा कि एक दल सदूकियों का है और दूसरा फरीसियों का तो वह महासभा में पुकार कर कहने लगा, "भाइयो, मैं फरीसी हूं और फरीसियों के वंश का हूं: मृतकों की आशा और पुनरुत्थान के कारण ही मेरा न्याय हो रहा है।" [7]उसके यह कहते ही फरीसियों और सदूकियों में मतभेद हो गया और सभा में फूट पड़ गई। [8]क्योंकि सदूकियों का यह कहना है, कि न पुनरुत्थान है, न स्वर्गदूत और न ही कोई आत्मा है, परन्तु फरीसी यह सब मानते हैं। [9]तब बड़ा हल्ला मचा और फरीसी दल के कुछ शास्त्री उठ खड़े हुए और गरमा-गरम बहस करने लगे, "हम इस मनुष्य में कोई बुराई नहीं पाते, यदि किसी आत्मा या स्वर्गदूत ने इस से बातें की हैं, तो फिर क्या?" [10]जब मतभेद अधिक बढ़ता गया तो सेनापति डर गया कि कहीं वे पौलुस को टुकड़े टुकड़े न कर डालें, इसलिए उसने सैनिकों को आज्ञा दी कि नीचे जाकर उनके बीच में से उसे ज़बरदस्ती निकाल कर किले में ले जाएं।

[11]परन्तु उसी रात प्रभु ने उसके पास खड़े होकर कहा, "साहस रख, क्योंकि जिस प्रकार तू ने यरूशलेम में दृढ़तापूर्वक मेरी साक्षी दी है उसी प्रकार तुझे रोम में भी साक्षी देनी होगी।"

पौलुस की हत्या का षड्यंत्र

[12]जब दिन हुआ तो यहूदियों ने षड्यन्त्र रचा और यह कह कर शपथ खाई कि जब तक पौलुस को मार न डालें तब तक न तो खाएंगे और न पीएंगे। [13]षड्यन्त्र रचने वाले चालीस से अधिक थे। [14]तब वे मुख्य याजकों और प्राचीनों के पास जाकर कहने लगे, "हमने दृढ़तापूर्वक शपथ खाकर यह ठान लिया है कि जब तक पौलुस को न मार डालें तब तक कुछ न चखेंगे। [15]इसलिए अब तुम और महासभा मिलकर सेनापति को समझाओ कि उसे अपने पास वहां से बुलवाए मानो कि तुम उसके विषय में विस्तार से जांच-पड़ताल करना चाहते हो; हम उसके यहां पहुंचने से पहिले ही उसे मार डालने के लिए तैयार रहेंगे।"

[16]परन्तु जब पौलुस के भांजे ने उनके घात में लगने की बात सुनी तो वह किले में पहुंचा और भीतर जाकर पौलुस को सब बात बता दी। [17]तब पौलुस ने सूबेदारों में से एक को अपने पास बुलाकर कहा, "इस युवक को सेनापति के पास ले जाओ, क्योंकि यह उसे कुछ बताना चाहता है।" [18]अतः उसने उसे सेनापति के पास ले जाकर कहा, "बन्दी पौलुस ने मुझे अपने पास बुला कर निवेदन किया है कि मैं इस युवक को तेरे पास पहुंचा दूं, क्योंकि यह तुझे कुछ बताना चाहता है।"

[19]तब सेनापति उसका हाथ पकड़कर उसे अलग ले गया और चुपचाप पूछने लगा, "तू मुझे क्या बताना चाहता है?" [20]उसने कहा, "यहूदी तुझ से यह मांग करने के लिए एक मत हो गए हैं कि तू पौलुस को कल महासभा के सामने लाए, मानो वे उसकी और भी अधिक जांच करना चाहते हैं। [21]इसलिए तू उनकी मत सुनना, क्योंकि उनमें से चालीस से अधिक मनुष्य उसकी घात में लगे हुए हैं जिन्होंने एका करके यह शपथ खाई है कि जब तक पौलुस को न मार डालें तब तक न खाएंगे और न पीएंगे। वे अभी भी तैयार हैं और तेरी अनुमति की प्रतीक्षा में हैं।" [22]तब सेनापति ने युवक को यह निर्देश देकर जाने दिया, "किसी से मत कहना कि तू ने यह बातें मुझे बताई हैं।"

पौलुस का कैसरिया को भेजा जाना

[23]तब उसने दो सूबेदारों को अपने पास बुलाकर कहा, "कैसरिया जाने के लिए रात को *नौ बजे तक दो सौ सैनिक, सत्तर घुड़सवार तथा दो सौ भालैत तैयार रखो।" [24]उन्हें राज्यपाल फेलिक्स के पास पौलुस को सकुशल ले जाने के लिए घोड़ों की सवारी का भी प्रबन्ध करना था। [25]और उसने एक ऐसा पत्र लिखा:

[26]"महामहिम् राज्यपाल फेलिक्स को क्लौदियुस लूसियास का नमस्कार। [27]जब यहूदियों ने इस मनुष्य को पकड़कर मार डालना चाहा, तो मैंने यह जानकर कि यह रोमी है, सैनिकों सहित उनके ऊपर धावा बोला और मैं इसे छुड़ा लाया। [28]तब यह पता लगाने के लिए कि वे किस कारण उस पर दोष लगा रहे हैं, मैं उसे उनकी *महासभा में ले गया। [29]फिर मुझे मालूम हुआ कि उन्होंने अपनी व्यवस्था के कई प्रश्नों को लेकर उस पर अभियोग लगाए हैं, परन्तु ऐसा कोई अभियोग नहीं जो मृत्युदण्ड देने या बन्दी बनाए जाने के योग्य हो। [30]जब मुझे यह बताया गया कि उस मनुष्य के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा जा रहा है तो मैंने इसे तुरन्त तेरे पास भेज दिया और इस पर दोष लगाने वालों को भी आदेश दिया कि वे तेरे सामने इसके विरुद्ध अभियोग लगाएं।"

[31]अतः सैनिकों ने जैसी उन्हें आज्ञा दी गई थी, पौलुस को रातों-रात अन्तिपत्रिस पहुंचा दिया। [32]परन्तु दूसरे दिन घुड़सवारों को उसके साथ आगे जाने के लिए छोड़कर वे किले को लौट आए। [33]जब घुड़सवार कैसरिया पहुंचे तो उन्होंने राज्यपाल को पत्र दिया और पौलुस को भी उसके सामने उपस्थित किया। [34]पत्र पढ़ने के पश्चात् उसने पूछा कि तू किस प्रान्त का है, और यह जानकर कि यह किलिकिया का निवासी है, [35]उसने कहा, "जब तुझ पर दोष लगाने वाले भी आ जाएंगे तब मैं तेरी सुनवाई

23 *अक्षरशः, तीसरी घड़ी 28 *यूनानी में, सन्हेद्रीन

करूंगा।" और उसने आदेश दिया कि उसे हेरोदेस के *राजभवन की सुरक्षा में रखा जाए।

राज्यपाल के सामने

24 पांच दिन के पश्चात् महा-याजक हनन्याह कुछ प्राचीनों तथा तिरतुल्लुस नामक एक *वकील को साथ लेकर आया, और उन्होंने राज्यपाल के सम्मुख पौलुस के विरुद्ध अभियोग लगाए। [2,3]जब पौलुस को बुलाया गया तो तिरतुल्लुस उस पर आरोप लगाते हुए राज्यपाल से कहने लगा,

"महामहिम् फेलिक्स, तेरे कारण हमारे देश में बड़ी शान्ति है, और तेरी दूरदर्शिता के फलस्वरूप देश में अनेक सुधार किए जा रहे हैं। हम यह बात हर प्रकार से और हर जगह धन्यवाद के साथ स्वीकार करते हैं। [4]अब मैं तेरा और अधिक समय नष्ट न करके, तुझ से निवेदन करता हूं कि कृपा करके हमें थोड़ी सी सुनवाई का अवसर प्रदान कर। [5]बात यह है कि यह मनुष्य वास्तव में उपद्रवी है और संसार भर के सारे यहूदियों में फूट डालता है और नासरियों के कुपन्थ का नेता है। [6]यहां तक कि इसने मन्दिर को भी भ्रष्ट करना चाहा, और तब हमने इसे बन्दी बना लिया। *[हम इसका न्याय अपनी व्यवस्था के अनुसार करना चाहते थे। [7]परन्तु सेनापति लूसियास ने आकर उसे बलपूर्वक हमारे हाथों से छीन लिया, [8]और इस पर दोष लगाने वालों को तेरे सम्मुख आने की आज्ञा दी।] जिन बातों के विषय में हम उस पर दोष लगाते हैं, यदि तू स्वयं उस से पूछताछ करे तो तुझे इन सब का निश्चय हो जाएगा। [9]यहूदियों ने भी इस आरोप में उसका साथ दिया और दावा किया कि ये बातें ऐसी ही हैं।

पौलुस का भाषण

[10]जब राज्यपाल ने पौलुस को बोलने का संकेत किया, तो उसने उत्तर दिया,

"यह जानकर कि तू बहुत वर्षों से इस जाति का न्यायाधीश है, मैं हर्ष से अपने बचाव में बोलता हूं। [11]तू स्वयं इस सच्चाई का पता लगा सकता है कि मुझे आराधना के लिए यरूशलेम गए केवल बारह दिन हुए हैं। [12]इन्होंने मुझे न तो मन्दिर में, न आराधनालय में और न ही नगर में कहीं किसी से वादविवाद करते अथवा दंगा करवाते पाया है, [13]और न ही ये उन अभियोगों को जो अब मुझ पर लगाते हैं, तेरे सामने प्रमाणित कर सकते हैं। [14]पर मैं तेरे सामने यह मान लेता हूं, कि जिस पन्थ को ये कुपन्थ कहते हैं उसी के अनुसार मैं अपने पूर्वजों के परमेश्वर की सेवा करता हूं, और जो बातें व्यवस्था के अनुकूल हैं और जो कुछ नबियों की पुस्तकों में लिखा है, उन सब पर विश्वास करता हूं। [15]मैं परमेश्वर में यह आशा रखता हूं, जैसे ये स्वयं भी रखते हैं, कि निश्चय ही धर्मी और अधर्मी दोनों का पुनरुत्थान होगा। [16]इसलिए मैं भी परमेश्वर तथा मनुष्यों के समक्ष अपने विवेक को निर्दोष बनाए रखने का सदा प्रयास करता हूं। [17]अब बहुत वर्षों के पश्चात् मैं अपनी जाति के लिए दान लेकर भेंट चढ़ाने आया था। [18]जब इन्होंने मुझे मन्दिर में पाया तो मैं विधिपूर्वक शुद्ध होकर बिना भीड़-भाड़

35 *अक्षरशः, प्रेतोरियम, अर्थात् राजनिवास 1 *अक्षरशः, कुशल वक्ता

6 *ये पद, अर्थात् पद 6 के मध्य से लेकर पद 8 के मध्य तक का भाग, केवल बाद के कुछ हस्तलेखों में, मिलते हैं

या दंगा किए इस काम में लगा हुआ था। परन्तु वहां एशिया के कुछ यहूदी थे—[19]यदि उनके पास मेरे विरुद्ध अभियोग लगाने को कुछ होता तो उन्हें चाहिए था कि वे तेरे सामने यहां उपस्थित होकर अभियोग लगाते। [20]अन्यथा ये लोग स्वयं ही बताएं कि जब मैं *महासभा के सामने खड़ा था तो उन्होंने मुझ में कौन सा अपराध पाया, [21]केवल इस बात को छोड़ जिसे मैंने उनके बीच में खड़े होकर ज़ोर से कहा था; "मरे हुओं के जी उठने के विषय में तुम्हारे सामने मेरा न्याय हो रहा है।"

[22]परन्तु फेलिक्स ने, जो इस पन्थ की ठीक-ठीक जानकारी रखता था, सुनवाई स्थगित करते हुए कहा, "जब *सेनापति लूसियास आएगा तब मैं तुम्हारे मुकद्दमों पर निर्णय दूंगा।" [23]तब उसने सूबेदार को आज्ञा दी कि पौलुस को कुछ छूट देकर हिरासत में रखा जाए और उसके मित्रों में से किसी को भी उसकी सेवा करने से न रोका जाए।

[24]कुछ दिनों के बाद फेलिक्स अपनी पत्नी द्रुसिल्ला को, जो यहूदिनी थी, साथ लेकर आया और पौलुस को बुलवा कर उस *विश्वास के विषय में, जो †मसीह यीशु में है, सुना। [25]जब वह धार्मिकता, संयम और आनेवाले न्याय की चर्चा कर रहा था तो फेलिक्स ने भयभीत होकर कहा, "इस समय तो तू जा। समय मिलने पर मैं तुझे फिर बुलाऊंगा।" [26]साथ ही साथ वह पौलुस से रुपए पाने की आशा भी करता था, अतः वह उसे बार बार बुला कर उस से वार्तालाप किया करता था। [27]जब दो वर्ष बीत गए तो फेलिक्स के स्थान पर पुरखियुस फेस्तुस की नियुक्ति हुई। और फेलिक्स यहूदियों को प्रसन्न करने की इच्छा से पौलुस को हिरासत में ही छोड़ गया।

फेस्तुस के सम्मुख

25 फेस्तुस उस प्रान्त में पहुँचने के तीन दिन पश्चात् कैसरिया से यरूशलेम को गया। [2]तब मुख्य याजकों और यहूदियों के प्रमुख व्यक्तियों ने पौलुस पर अभियोग लगाकर उस से विनती की, [3]और यह छूट मांगी कि वह पौलुस को यरूशलेम भिजवा दे, क्योंकि वे उसे मार्ग में ही मार डालने की ताक में थे। [4]तब फेस्तुस ने उत्तर दिया, "पौलुस कैसरिया की हिरासत में है और मैं स्वयं भी शीघ्र वहां जाने वाला हूँ।" [5]फिर उसने कहा, "तुम में से जो प्रमुख व्यक्ति हैं वे मेरे साथ *चलें, और यदि इस मनुष्य ने कोई अनुचित कार्य किया है तो वहां उस पर अभियोग लगाएं।"

[6]वह उनके मध्य आठ या दस दिन रह कर कैसरिया को चला गया। दूसरे दिन उसने न्यायासन पर बैठकर आदेश दिया कि पौलुस को लाया जाए। [7]उसके वहां पहुँचने पर यरूशलेम से आए हुए यहूदी उसके चारों ओर खड़े हो गए और उस पर ऐसे गंभीर आरोप लगाने लगे जिनका उनके पास कोई प्रमाण नहीं था। [8]पर पौलुस ने अपने बचाव में कहा, "मैंने न तो यहूदियों की व्यवस्था, न मन्दिर और न ही कैसर के विरुद्ध कोई पाप किया है।" [9]परन्तु फेस्तुस ने यहूदियों को प्रसन्न करने की इच्छा से पौलुस को उत्तर दिया, "क्या तू चाहता है कि मैं इन अभियोगों का न्याय

---

20 *यूनानी में, सन्हेद्रयीन 22 *यूनानी में खिलीअर्खोस, अर्थात् 1,000 सैनिकों का अधिकारी
24 *या, मत †अक्षरशः, ख्रिस्तौस अर्थात् अभिषिक्त 5 *अक्षरशः उतरें

यरूशलेम में करूँ?" [10]परन्तु पौलुस ने कहा, "मैं कैसर के न्यायासन के सामने खड़ा हूँ, मेरा न्याय यहीं होना चाहिए। जैसा कि तू भी भली-भाँति जानता है, मैंने यहूदियों का कुछ भी नहीं बिगाड़ा है। [11]यदि मैं अपराधी हूँ और मैंने मृत्यु-दण्ड पाने के योग्य कुछ किया है, तो मैं मरने से इन्कार नहीं करता; परन्तु यदि उनके द्वारा लगाए गए अभियोगों में से एक भी सच नहीं तो कोई भी मुझे इनके हाथ नहीं सौंप सकता। मैं कैसर से *अपील करता हूँ।" [12]तब फेस्तुस ने अपनी सभा से परामर्श कर उत्तर दिया, "तू ने कैसर से अपील की है, तू कैसर ही के सामने खड़ा होगा।"

राजा अग्रिप्पा के सम्मुख पौलुस

[13]जब कई दिन बीत गए तो राजा अग्रिप्पा और बिरनीके ने कैसरिया आकर फेस्तुस का अभिनन्दन किया। [14]जबकि उन्हें वहां बहुत दिन व्यतीत करने थे तो फेस्तुस ने पौलुस का मुकद्दमा राजा के समक्ष प्रस्तुत करके कहा, "यहां एक मनुष्य है जिसे फेलिक्स हिरासत में छोड़ गया है। [15]जब मैं यरूशलेम में था, तो मुख्य याजकों और यहूदियों के प्राचीनों ने उसके विरुद्ध अभियोग लगाए और निवेदन किया कि उसे दण्ड दिया जाए। [16]तब मैंने उन्हें उत्तर दिया कि रोमियों की यह प्रथा नहीं कि किसी अभियुक्त को, जब तक कि अभियोग लगाने वालों के सामने खड़े होकर अपने बचाव में उत्तर देने का अवसर न मिले, उसे दण्ड के लिए सौंपा जाए। [17]अत: जब वे यहां एकत्रित हुए तो मैंने बिना विलम्ब किए दूसरे ही दिन न्यायासन पर बैठकर उस मनुष्य को लाने की आज्ञा दी। [18]जब अभियोग लगाने वाले खड़े हुए तो उन्होंने उस पर कोई ऐसे अपराध का अभियोग नहीं लगाया जैसा मेरा अनुमान था। [19]परन्तु उनका मतभेद उसके साथ केवल *अपने धर्म की कुछ बातों और यीशु नामक एक मनुष्य के विषय में था, जो मर गया था पर पौलुस उसके जीवित होने का दावा करता था। [20]मेरी समझ में नहीं आया कि इन बातों की छान-बीन कैसे की जाए, अत: मैंने उस से पूछा कि क्या तू यरूशलेम जाने को तैयार है कि वहां इन बातों के विषय में तेरा न्याय हो। [21]परन्तु जब पौलुस ने *अपील की कि †महाराजाधिराज द्वारा ही मेरा निर्णय किया जाए, और तब तक मैं यहीं हिरासत में रहूँ, तो मैंने आज्ञा दी कि जब तक मैं उसे कैसर के पास न भेज दूँ, वह यहीं हिरासत में रहे।" [22]तब अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, "मैं स्वयं भी इस मनुष्य की सुनना चाहता हूँ।" उसने कहा, "तू कल सुन लेगा।"

[23]अत: दूसरे दिन जब अग्रिप्पा और बिरनीके बड़ी धूम-धाम से आए और *सेनापतियों तथा नगर के गणमान्य व्यक्तियों के साथ उन्होंने सभा-भवन में प्रवेश किया, तब फेस्तुस की आज्ञा से पौलुस को लाया गया। [24]फेस्तुस ने कहा, "हे राजा अग्रिप्पा और हमारे साथ उपस्थित सज्जनो, इस मनुष्य को देखो, जिसके विषय में सारे यहूदी समाज ने यरूशलेम में और यहां भी चिल्ला-चिल्लाकर मुझ से आग्रह किया कि इसका अब जीवित रहना उचित नहीं। [25]परन्तु

---

11 *या, दुहाई, पुनरावेदन
19 *या, अपने अन्धविश्वास
21 *या, दुहाई, पुनरावेदन †यूनानी, सेबस्तौस, अर्थात् उस महान
23 *यूनानी में, खिलीअर्खोय, अर्थात् 1,000 सैनिकों के अधिकारी

मैंने जान लिया कि इसने मृत्यु-दण्ड के योग्य कुछ नहीं किया था। और इसलिए कि इसने स्वयं ही *महाराजाधिराज से †अपील की है, मैंने इसे भेज देने का निर्णय किया। [26]फिर भी मेरे पास इसके विषय में अपने महाराजा को लिखने के लिए कोई निश्चित बात नहीं है। इसलिए मैं उसे तुम सब के सामने, विशेषकर, हे राजा अग्रिप्पा, तेरे सामने लाया हूँ, जिससे कि जांच समाप्त होने पर मुझे कुछ लिखने को मिल जाए। [27]क्योंकि मुझे यह निरर्थक जान पड़ता है कि किसी बन्दी को उसका अभियोग-पत्र तैयार किए बिना भेज दूँ।"

पौलुस का स्पष्टीकरण

26 तब अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, "तुझे अपने पक्ष में बोलने की अनुमति है।" इस पर पौलुस हाथ बढ़ाकर अपने बचाव में कहने लगा:

[2]"हे राजा अग्रिप्पा, यहूदियों ने मुझ पर कई आरोप लगाए हैं। मैं अपने आप को धन्य समझता हूँ कि आज तेरे सामने अपने बचाव में उन सब का उत्तर देने जा रहा हूँ, [3]विशेषकर इसलिए कि तू यहूदियों की सब प्रथाओं और विवादों से परिचित है। अतः मैं विनती करता हूँ कि धीरज से मेरी सुन।

[4]"मेरा चाल-चलन युवावस्था से लेकर अब तक जैसा रहा, अर्थात् मैंने इसे आरम्भ से अपनी जाति के बीच और यरूशलेम में किस प्रकार बिताया—इसे सब यहूदी जानते हैं, [5]क्योंकि वे मेरे विषय में बहुत पहिले से ही जानते हैं कि मैंने अपने धर्म के सब से कट्टर पंथ के अनुसार फरीसी होकर जीवन बिताया, यदि वे चाहें तो इस बात की साक्षी भी दे सकते हैं। [6]परन्तु अब उस आशा के कारण जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों से की है, मेरा न्याय किया जा रहा है। [7]हमारे बारहों गोत्र इस प्रतिज्ञा का फल प्राप्त करने की आशा में उत्साहपूर्वक रात-दिन परमेश्वर की सेवा करते हैं, और हे राजन्, इसी आशा के विषय में यहूदी मुझ पर दोष लगाते हैं। [8]यह बात तुम लोगों को अविश्वसनीय क्यों लगती है कि परमेश्वर मृतकों को जीवित करता है?

[9]"मैंने भी यही सोचा था कि नासरत के यीशु के नाम के विरुद्ध मुझे बहुत कुछ करना है। [10]और मैंने यरूशलेम में यही किया। मुख्य याजकों से अधिकार पाकर मैंने न केवल अनेक पवित्र लोगों को बन्दीगृह में डाला पर जब वे मौत के घाट उतारे जा रहे थे तो मैंने उनके विरोध में अपनी सम्मति भी दी। [11]मैं प्रायः सभी आराधनालयों में जाकर उन्हें यातना दिया करता था और यीशु की निन्दा करने को उन्हें बाध्य करने का प्रयत्न किया करता था और उनके विरुद्ध अत्यन्त क्रोध से भरकर बाहर के नगरों में भी मैं उनका पीछा किया करता था।

[12]जब मैं मुख्य याजकों की अनुमति और अधिकार प्राप्त कर के इसी धुन में दमिश्क को जा रहा था, [13]तो, हे राजा, मैंने दोपहर के समय मार्ग में सूर्य से भी अधिक एक तेजोमय ज्योति आकाश से आती देखी जो मेरे तथा मेरे साथ यात्रा करने वालों के चारों ओर चमक रही थी। [14]जब हम सब भूमि पर गिर पड़े तो मुझे इब्रानी बोली में यह वाणी सुनाई दी: 'शाऊल, शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?

---
25 *यूनानी में, सेबास्तौस, अर्थात् उस महान् †या, दुहाई, पुनरावेदन

अंकुश की नोंक पर लात मारना तेरे लिए कठिन है।' [15]मैंने कहा, 'प्रभु, तू कौन है?' प्रभु ने कहा, 'मैं यीशु हूँ जिसे तू सता रहा है। [16]परन्तु उठ और अपने पैरों पर खड़ा हो। मैंने इस अभिप्राय से तुझे दर्शन दिया है कि तुझे सेवक ठहराऊँ, और न केवल इन बातों का जो तू ने देखी हैं गवाह ठहराऊँ, परन्तु उन बातों का भी जिनके लिए मैं तुझे दर्शन दूँगा। [17]मैं तुझे तेरे लोगों से और गैरयहूदियों से भी जिनके पास तुझे भेज रहा हूँ, छुड़ाता रहूँगा, [18]कि तू उनकी आंखें खोले जिससे कि वे अंधकार से ज्योति की ओर तथा शैतान के राज्य से परमेश्वर की ओर फिरें, जिससे कि वे पापों की क्षमा और उन लोगों के साथ उत्तराधिकार प्राप्त करें जो मुझ पर विश्वास करने के द्वारा पवित्र हुए हैं।'

[19]"अतः हे राजा अग्रिप्पा, मैंने उस स्वर्गीय दर्शन की आज्ञा का उल्लंघन न किया। [20]परन्तु पहिले दमिश्क के, फिर यरूशलेम के, और तब यहूदियों के सारे प्रदेश के रहने वालों को—यहां तक कि गैरयहूदियों को भी—यही प्रचार करता रहा कि वे पश्चात्ताप करके परमेश्वर की ओर फिरें और मन-फिराव के योग्य काम करें। [21]इसी कारण कुछ यहूदियों ने मुझे मन्दिर में पकड़ा और मार डालने का प्रयत्न किया। [22]इस प्रकार परमेश्वर की ओर से सहायता पाकर मैं आज तक बना हुआ हूँ और छोटे-बड़े सब के सम्मुख गवाही देता हूँ, और जो बातें नबियों और मूसा ने कही हैं कि वे होने वाली हैं उनको छोड़ कुछ नहीं कहता। [23]अर्थात् यह कि मसीह को दुख उठाना होगा, और वही मृतकों में से जी उठने वालों में प्रथम होकर यहूदी प्रजा तथा गैरयहूदियों दोनों को ज्योति का सन्देश देगा।"

[24]जब पौलुस अपने बचाव में इस प्रकार कह रहा था, तो फेस्तुस ने उच्च स्वर से कहा, "पौलुस, तू पागल है! तेरी अधिक विद्या तुझे पागल बना रही है।" [25]परन्तु पौलुस ने कहा, "महामहिम् फेस्तुस, मैं पागल नहीं हूं, परन्तु सत्य तथा अर्थपूर्ण बातें करता हूँ। [26]इन बातों को राजा स्वयं जानता है जिसके सामने मैं दृढ़तापूर्वक बोल रहा हूँ। मुझे निश्चय है कि इन में से कोई बात नहीं जो उस से छिपी हो, क्योंकि यह घटना किसी कोने में नहीं हुई। [27]हे राजा अग्रिप्पा, क्या तू नबियों का विश्वास करता है? हां, मैं जानता हूँ कि तू विश्वास करता है।" [28]तब अग्रिप्पा ने पौलुस को उत्तर दिया, "तू मुझे थोड़े ही समय में मसीही बनने को फुसला लेगा!" [29]पौलुस ने कहा, "परमेश्वर करे कि चाहे थोड़े अथवा अधिक समय में, न केवल तू परन्तु ये सब भी जो आज मेरी सुन रहे हैं मेरे समान हो जाएं, सिवाय इन बेड़ियों के।"

[30]तब राजा उठा, और उसके साथ राज्यपाल, बिरनीके तथा बैठे हुए लोग भी उठ खड़े हुए, [31]और अलग जाकर एक दूसरे से बातें कर के यह कहने लगे, "यह व्यक्ति तो ऐसा कुछ भी नहीं कर रहा है जो मृत्यु-दण्ड अथवा बन्दीगृह में डालने के योग्य हो।" [32]अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, "यदि इस मनुष्य ने कैसर से अपील न की होती तो यह छोड़ दिया जाता।"

पौलुस की रोम-यात्रा

27 जब यह निश्चित कि हम जहाज़ द्वारा तो उन्होंने पौलुस तथा अन्य राजसी सैन्यदल के यूलियुस

सूबेदार को सौंप दिया। [2]और अद्रमुत्तियुम का एक जहाज़ एशिया के तट के क्षेत्रों से होकर जाने को था। हम उस पर चढ़ कर समुद्री यात्रा के लिए निकल पड़े। अरिस्तर्खुस नामक थिस्सलुनीके का एक मकिदूनी भी हमारे साथ था। [3]दूसरे दिन हम सैदा में उतरे और युलियुस ने कृपा करके पौलुस को उसके मित्रों के यहां जाने दिया कि सेवा-सत्कार ग्रहण करे। [4]वहां से हम जहाज़ द्वारा साइप्रस की आड़ में होकर चले क्योंकि हवा विपरीत थी। [5]और जब हम किलिकिया और पंफूलिया के समुद्री तट से होकर निकले तो लुकिया के मूरा में उतरे। [6]वहां सूबेदार को इटली जाने वाला सिकन्दरिया का जहाज़ मिला, और उसने हमें उस पर चढ़ा दिया। [7]जब हम लोग कई दिनों तक धीरे धीरे खेते हुए कठिनाई से कनिदुस के सामने पहुँचे तो इसलिए कि हवा अब हमें आगे बढ़ने नहीं दे रही थी, हम सलमोने के सामने से होकर क्रीत द्वीप की आड में खेने लगे। [8]और उसके किनारे किनारे कठिनाई से खेते हुए हम एक स्थान पर पहुँचे जो 'मनोहर लंगरबारी' कहलाता था, जहां से लसया नगर निकट था।

[9]बहुत समय बीत गया था और जल-यात्रा भी संकटमय हो गई थी, यहां तक कि उपवास के दिन भी बीत चुके थे। अतः पौलुस उन्हें यह कह कर चेतावनी देने लगा, [10]"हे भाइयो, मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि इस समुद्र-यात्रा में माल और जहाज़ की ही नहीं वरन् हमें अपने प्राणों की भी हानि उठानी पड़ेगी।" [11]परन्तु सूबेदार ने पौलुस के कथन की अपेक्षा जहाज़ के चालक और कप्तान की बातों की ओर अधिक ध्यान दिया। [12]इसलिए कि वह बन्दरगाह शीतकाल बिताने के लिए उपयुक्त नहीं था, अधिकांश लोगों की यह सम्मति हुई कि वहां से आगे बढ़ें कि किसी प्रकार फीनिक्स पहुँचकर शीतकाल बिताएं। यह क्रीत का एक बन्दरगाह है, जिसका मुख दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम की ओर है।

समुद्र में तूफान

[13]जब दक्षिणी हवा धीरे-धीरे बहने लगी तो यह सोचकर कि हमारा उद्देश्य पूरा हो गया, उन्होंने लंगर उठाया और किनारे किनारे क्रीत के समीप होकर जाने लगे। [14]परन्तु थोड़ी ही देर बाद थल की ओर से एक भयंकर तूफ़ान उठा जो *उत्तर-पूर्वी कहलाता है। [15]जब जहाज़ उसमें फंस गया और आंधी का सामना न कर सका तो हमने उसे हवा के रुख में बहने दिया, और हम भी उसी के साथ बहते हुए चले गए। [16]तब क्लौदा नामक द्वीप की आड़ में बहते-बहते हम कठिनाई से जहाज़ की डोंगी को वश में कर सके। [17]फिर मल्लाहों ने डोंगी को उठाया और जहाज़ को नीचे से ऊपर तक लपेटकर रस्सों से बांधा और सुरतिस टापू के उथले स्थानों में फंस जाने के भय से पाल उतार कर बहते हुए चले गए। [18]दूसरे दिन जब हम आंधी से बहुत हिचकोले खा रहे थे, तो वे जहाज़ का माल फेंकने लगे। [19]तीसरे दिन उन्होंने अपने ही हाथों से जहाज़ के रस्से तथा पाल आदि भी फेंक दिए। [20]जब बहुत दिनों तक न तो सूर्य दिखाई दिया, न तारे और बड़ी आंधी चल रही थी तो धीरे धीरे हमारे बचने की आशा भी जाती रही। [21]जब वे बिना

*यूनानी में, यूरकुलीन

भोजन के बहुत दिन बिता चुके तब पौलुस ने उनके मध्य खड़े होकर कहा, "हे भाइयो, उचित यह था कि तुम मेरी सलाह मानते और क्रीत से रवाना न होते, तब न तो यह विपत्ति आती और न यह हानि उठानी पड़ती। [22]अब भी मैं तुमसे आग्रह करता हूं कि साहस रखो क्योंकि तुम में से किसी के प्राण की तो हानि न होगी पर केवल जहाज़ की। [23]क्योंकि परमेश्वर जिसका मैं हूं, और जिसकी सेवा करता हूं, उसका एक स्वर्गदूत आज रात मेरे पास आकर खड़ा हुआ। [24]और उसने कहा, 'पौलुस, मत डर! तुझे कैसर के सामने खड़ा होना अवश्य है। देख, परमेश्वर ने इन सब को जो तेरे साथ यात्रा कर रहे हैं, तुझे दे दिया है।' [25]इसलिए हे भाइयो, साहस रखो, क्योंकि मैं परमेश्वर पर विश्वास रखता हूं कि जैसा मुझ से कहा गया है वैसा ही होगा, [26]परन्तु किसी टापू पर हमारा जहाज़ आवश्य जा लगेगा।'

जलयान का टूटना

[27]परन्तु जब चौदहवीं रात आई और हम अद्रिया सागर में भटकते फिर रहे थे तो आधी रात के लगभग मल्लाहों ने अनुभव किया कि हम किसी तट के निकट पहुंच रहे हैं। [28]थाह लेने पर उन्होंने *सैंतीस मीटर गहरा पाया, और थोड़ा आगे बढ़ कर उन्होंने फिर थाह ली तो ¹छब्बीस मीटर गहरा पाया। [29]तब इस डर से कि कहीं चट्टानों से न जा टकराएं वे जहाज़ के पिछले भाग से चार लंगर डालकर भोर होने की कामना करने लगे। [30]जबकि मल्लाह जहाज़ से भागने का प्रयत्न कर रहे थे और अगले [illegible] लंगर डालने के बहाने से डोंगी को [illegible] में उतार चुके थे, [31]तो पौलुस ने सूबेदार और सैनिकों से कहा, "यदि ये लोग जहाज़ पर न रहें तो तुम भी नहीं बच सकते।" [32]तब सैनिकों ने रस्सियों को काट कर डोंगियां गिरा दीं। [33]जब भोर होने को थी तो पौलुस ने यह कह कर सबको भोजन करने के लिए समझाया, "आज चौदह दिन हो गए जब से तुम लगातार चिन्ता करने के कारण भूखे रहे और तुमने कुछ नहीं खाया। [34]अतः मैं तुम्हें समझाता हूं कि अपनी प्राण-रक्षा के लिए कुछ खा लो, क्योंकि तुम में से किसी का एक बाल भी बांका न होगा।" [35]यह कहकर उसने रोटी ली और सब के सामने उसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया और तोड़ कर खाने लगा। [36]इस से उन सब को प्रोत्साहन मिला और उन्होंने भी भोजन किया। [37]जहाज़ पर हम, सब मिलकर दो सौ छिहत्तर व्यक्ति थे। [38]और जब वे भोजन कर के तृप्त हो गए तो गेहूं को समुद्र में फेंक कर जहाज़ को हल्का करने लगे। [39]जब दिन निकला तो वे उस स्थल को न पहिचान सके, परन्तु उन्हें एक खाड़ी दिखाई दी जिसका तट चौरस था, और उन्होंने निश्चय किया कि यदि सम्भव हो तो जहाज़ को उसी तट पर लगा दिया जाए। [40]उन्होंने लंगर काट कर समुद्र में छोड़ दिया और उसी समय पतवारों के बन्धन ढीले कर दिए और हवा के [illegible] में [illegible] पाल खोलकर तट की ओर [illegible]। [41]परन्तु दो जल प्रवाहों के [illegible] जहाज़ बालू में फंस [illegible] और उसका अगला भाग ऐसा धंस [illegible] कि [illegible] न सका और पिछला भाग [illegible] के [illegible] से टूटने लगा। [42][illegible] था कि कैदियों को [illegible]

28 *अथवा [illegible] ¹अथवा [illegible]

जिससे कि उनमें से कोई भी तैर कर भागने न पाए। 43परन्तु सूबेदार ने पौलुस को सुरक्षित ले जाने की इच्छा से उन्हें ऐसा करने से रोका, और आदेश दिया कि जो तैर सकते हैं वे पहिले कूद कर भूमि पर निकल जाएं। 44और शेष लोग पटरों और जहाज़ के अन्य टुकड़ों के सहारे निकल जाएं। इस प्रकार वे सब लोग भूमि पर सकुशल पहुँचे।

माल्टा द्वीप में पौलुस का स्वागत

28 जब हम बच निकले तब हमें पता चला कि यह द्वीप माल्टा कहलाता है। 2वहां के आदिवासियों ने हम पर विशेष कृपा की: वर्षा होने के कारण ठण्ड पड़ने लगी थी इसलिए उन्होंने आग जलाकर हम सब का स्वागत किया। 3परन्तु जब पौलुस ने लकड़ियों का गट्ठर इकट्ठा कर के आग पर रखा तो आंच पाकर एक सांप निकला और उसके हाथ से लटक गया। 4जब आदिवासियों ने इस जन्तु को उसके हाथ से लटके हुए देखा तो एक दूसरे से कहने लगे, "निश्चय ही यह मनुष्य हत्यारा है; यद्यपि यह समुद्र से तो बच गया, फिर भी न्याय ने इसे जीवित रहने न दिया।" 5तब उसने जन्तु को आग में झटक दिया और उसे कोई हानि नहीं पहुंची। 6वे तो यह प्रतीक्षा कर रहे थे कि वह सूज जाएगा या सहसा गिर कर मर जाएगा। परन्तु जब वे बहुत समय तक प्रतीक्षा करते रहे और देखा कि उसको कुछ भी नहीं हुआ तो अपने विचार बदल कर कहने लगे कि यह तो कोई देवता है।

7उस स्थान के आस-पास उस द्वीप के प्रधान पुबलियुस की भूमि थी। उसने हमारा स्वागत किया और तीन दिन तक हमारा अतिथि-सत्कार किया। 8फिर ऐसा हुआ कि पुबलियुस का पिता ज्वर और आंव से पीड़ित पड़ा हुआ था। पौलुस उसे देखने भीतर गया और उसने प्रार्थना कर के अपने हाथ उस पर रखे और उसे चंगा कर दिया। 9इस घटना के पश्चात् द्वीप के शेष रोगी भी आकर चंगे होने लगे। 10और उन्होंने हमारा विभिन्न प्रकार से आदर-सत्कार किया। जब हम उस स्थान से जाने को थे तो उन्होंने हमारी आवश्यकता की सारी वस्तुएं जहाज़ पर लाद दीं।

रोम में आगमन

11तीन महीने के बाद हमने सिकन्दरिया के एक जहाज़ द्वारा प्रस्थान किया जो इस द्वीप पर जाड़ा काट चुका था और जिसका चिन्ह 'जुड़वां भाई' था। 12फिर सरकूसा में लंगर डालकर हम तीन दिन तक ठहरे रहे। 13वहां से हम घूम कर रेगियुम पहुंचे, और एक दिन के बाद दक्षिणी हवा चली अतः हम दूसरे दिन पुतियुली में आए। 14वहां हमें कुछ भाई मिले जिन्होंने हमसे अनुरोध किया कि हम उनके यहां सात दिन तक ठहरें। इस प्रकार हम रोम पहुँचे। 15जब भाइयों ने हमारे विषय में सुना तो अप्पियुस के चौक और तीन सराय तक वे हमसे मिलने आए। उन्हें देख कर पौलुस को साहस मिला और उसने परमेश्वर को धन्यवाद दिया।

16जब हम रोम में पहुँचे तब पौलुस को एक सैनिक के साथ जो उसकी चौकसी करता था अलग रहने की अनुमति दी गई।

सुरक्षा में निर्भीकता से प्रचार

17फिर ऐसा हुआ कि तीन दिन के बाद उसने यहूदियों के प्रमुख लोगों को बुलाया। जब वे एकत्रित हुए तो उसने उनसे कहा, "भाइयो, यद्यपि मैंने अपनी जाति अथवा अपने पूर्वजों की रीति-विधि के विरुद्ध कुछ नहीं किया, फिर भी मैं यरूशलेम से बन्दी बनाकर रोमियों के हाथ सौंप दिया गया हूं। 18उन्होंने पूछ-ताछ करने के पश्चात् मुझे छोड़ देना चाहा क्योंकि मुझे मृत्यु-दण्ड दिए जाने का कोई कारण नहीं था। 19परन्तु जब यहूदियों ने विरोध किया तो मुझे कैसर से अपील करनी पड़ी—पर यह नहीं कि मुझे अपनी जाति पर कोई अभियोग लगाना था। 20इसी कारण मैंने आग्रह किया कि तुम लोगों से मिलूं और बातचीत करूं, क्योंकि इस्राएल की आशा ही के कारण मैं इस जंजीर से बंधा हुआ हूं।"

21उन्होंने उत्तर दिया, "न तो हमें यहूदिया से तेरे सम्बन्ध में कोई पत्र प्राप्त हुआ है और न ही भाइयों में से किसी ने यहां आकर तेरे विषय में कुछ समाचार दिया और न कोई बुरी बात कही। 22परन्तु हम तेरे विचार सुनने की इच्छा रखते हैं, क्योंकि हमें इस पंथ के सम्बन्ध में यह मालूम है कि सब जगह लोग इसके विरोध में बातें करते हैं।

23तब उनके लिए एक दिन निश्चित करके वे बड़ी संख्या में उसके रहने के स्थान पर आए। उसने परमेश्वर के राज्य के विषय में गम्भीरतापूर्वक गवाही देकर उन्हें समझाया और प्रातःकाल से सायंकाल तक मूसा की व्यवस्था तथा नबियों की पुस्तकों से यीशु के सम्बन्ध में उन्हें समझाने का प्रयत्न करता रहा। 24कुछ लोगों ने तो इन बातों को मान लिया, परन्तु कुछ ने विश्वास न किया। 25जब वे एक दूसरे से सहमत न हुए, तब पौलुस के इन अन्तिम शब्दों के कहने के पश्चात् वे वहां से जाने लगे, "पवित्र आत्मा ने यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा तुम्हारे पूर्वजों से ठीक ही कहा, 26'**जाकर इन लोगों से कह दे, "तुम सुनते तो रहोगे पर न समझोगे; और देखते तो रहोगे परन्तु न बूझोगे; 27क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है, वे अपने कानों से ऊंचा सुनने लगे हैं, और उन्होंने अपनी आंखें बन्द कर ली हैं, कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें और अपने कानों से सुनें और अपने मन से समझें और फिरें और मैं उन्हें चंगा करूं"**।' 28अतः तुम जान लो कि परमेश्वर का यह उद्धार गैरयहूदियों के पास भेजा गया है, और वे तो सुनेंगे।" *29और जब वह ये बातें कह चुका तो यहूदी आपस में बहुत विवाद करते हुए वहां से चले गए।

उपसंहार

30पौलुस अपने किराए के घर में पूरे दो वर्ष तक रहा, और जो उसके पास आते थे उन सब का स्वागत किया करता था, 31और वह बिना किसी रुकावट के निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह के विषय में शिक्षा दिया करता था।

---

*29 [illegible] हस्तलेखों में मिलता है

रोमियों
के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

1 पौलुस की ओर से, जो मसीह यीशु का दास है, और प्रेरित होने के लिए *बुलाया गया, और परमेश्वर के उस सुसमाचार के लिए पृथक किया गया है, [2]जिसकी प्रतिज्ञा उसने पहिले ही से अपने नबियों द्वारा पवित्रशास्त्र में, [3]अपने पुत्र के विषय में की, जो शरीर के अनुसार दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ। [4]पवित्रता के आत्मा के अनुसार *मृतकों में से जी उठने के द्वारा †सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र घोषित हुआ, अर्थात् यीशु मसीह हमारा प्रभु, [5]जिसके द्वारा हमें अनुग्रह और प्रेरिताई मिली, कि उसके नाम के लिए सब गैरयहूदियों में विश्वास से *आज्ञाकारिता उत्पन्न करें, [6]जिनमें तुम भी यीशु मसीह के बुलाए हुओं में से हो; [7]उन सब को जो रोम में परमेश्वर के प्रिय हैं और *पवित्र होने के लिए बुलाए गए हैं:

हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिले।

रोम को जाने की हार्दिक इच्छा

[8]पहिले तो मैं तुम सब के लिए मसीह यीशु के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, क्योंकि तुम्हारे विश्वास की चर्चा समस्त संसार में हो रही है। [9]क्योंकि परमेश्वर, जिसकी सेवा मैं अपनी आत्मा में उसके पुत्र के सुसमाचार में करता हूँ, मेरा साक्षी है कि मैं तुम्हें किस प्रकार निरन्तर स्मरण करता हूँ, [10]तथा सदैव अपनी प्रार्थनाओं में विनती करता हूँ कि कम से कम अब मैं परमेश्वर की इच्छा से तुम्हारे पास आने में सफल हो जाऊं। [11]क्योंकि मैं तुमसे मिलने की लालसा करता हूँ, जिससे कि तुम्हें कुछ आत्मिक वरदान दे सकूँ कि तुम दृढ़ हो जाओ ; [12]अर्थात् जब मैं तुम्हारे मध्य होऊं तो हम आपस में एक दूसरे के विश्वास से प्रोत्साहित किए जाएं। [13]भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम इस से अनजान रहो कि मैंने बार बार तुम्हारे पास आने की योजना बनाई—और अब तक रोका गया—जिस से कि मुझे तुम्हारे बीच में भी कुछ फल मिले, जैसा कि शेष गैरयहूदियों के बीच मिला। [14]मैं यूनानियों और बर्बरों, बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों, दोनों का *ऋणी हूं। [15]इसलिए, जहां तक मेरा सम्बन्ध है, मैं तुम्हें भी जो रोम में हो, सुसमाचार-प्रचार करने के लिए उत्सुक हूँ।

---

*अक्षरशः, बुलाया हुआ एक प्रेरित   4 *या, परिणाम स्वरूप   †या, सामर्थ के कार्य में
:, आज्ञाकारिता के लिए   7 *अर्थात्, सच्चे विश्वासी; अक्षरशः, पवित्र जन   14 *या, कर्ज़दार

[16]मैं सुसमाचार से लज्जित नहीं होता, क्योंकि यह प्रत्येक विश्वास करने वाले के लिए, पहिले यहूदी और फिर यूनानी के लिए, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है। [17]क्योंकि इसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास *से और विश्वास के लिए प्रकट होती है; जैसा कि लिखा है, †"परन्तु **धर्मी मनुष्य विश्वास से जीएगा।**"

पाप के प्रति परमेश्वर का क्रोध

[18,19]परमेश्वर से सम्बन्धित ज्ञान मनुष्यों पर प्रकट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रकट किया है। इसलिए परमेश्वर का प्रकोप मनुष्यों की समस्त अभक्ति और अधार्मिकता पर स्वर्ग से प्रकट होता है, क्योंकि वे सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं। [20]क्योंकि जगत की सृष्टि से ही परमेश्वर के अदृश्य गुण, अनन्त सामर्थ और परमेश्वरत्व उसकी रचना के द्वारा समझे जाकर स्पष्ट दिखाई देते हैं, इसलिए उनके पास कोई बहाना नहीं। [21]क्योंकि, यद्यपि वे परमेश्वर को जानते थे, फिर भी उन्होंने उसे न तो परमेश्वर के उपयुक्त *सम्मान, और न ही धन्यवाद दिया; वरन् वे अनर्थ कल्पनाएं करने लगे, और उनका निर्बुद्धि मन अन्धकारमय हो गया। [22]बुद्धिमान होने का दावा करके वे मूर्ख बन गए, [23]उन्होंने अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नश्वर मनुष्य, पक्षियों, चौपायों और रेंगने वाले जन्तुओं की मूर्ति की समानता में बदल डाला।

[24]इसलिए परमेश्वर ने उन्हें उनके मन की वासनाओं की अशुद्धता के लिए छोड़ दिया, कि उन के शरीरों का आपस में अनादर हो। [25]क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई के बदले *झूठ को अपनाया और सृष्टि की आराधना और सेवा की—न कि उस सृष्टिकर्त्ता की जो †सर्वदा धन्य है, आमीन।

[26]इस कारण परमेश्वर ने उन्हें नीच कामनाओं के वश में छोड़ दिया; क्योंकि उनकी स्त्रियों ने स्वाभाविक क्रिया को उस से जो *अस्वाभाविक है, बदल डाला। [27]और इसी प्रकार पुरुष भी स्त्रियों के साथ स्वाभाविक क्रिया को छोड़ कर आपस में कामातुर हो कामाग्नि में जलने लगे, पुरुषों ने पुरुषों के साथ *निर्लज्ज कार्य करके †अपने ही में भ्रष्टाचार का उचित दण्ड पाया।

[28]जब उन्हें *परमेश्वर को मानना और अधिक उचित न लगा, तब परमेश्वर ने भी उन्हें उनके भ्रष्ट मन के वश में छोड़ दिया, कि वे अनुचित कार्य करें, [29]अत: वे सब प्रकार की अधार्मिकता, दुष्टता, लोभ, द्वेष से तथा सारी ईर्ष्या, हत्या, झगड़े, छल और डाह से भर गए। वे बकवादी, [30]निन्दक, परमेश्वर से घृणा करनेवाले, ढीठ, हठी, डींगमार, बुराई करनेवाले, माता-पिता की आज्ञा न माननेवाले, [31]समझ-रहित, विश्वासघाती, प्रेम-रहित और दया-रहित हो गए। [32]यद्यपि वे परमेश्वर की विधि जानते हैं, कि जो इस प्रकार का आचरण करते हैं वे मृत्यु के योग्य हैं, फिर भी वे न केवल स्वयं ही यह कार्य करते हैं, परन्तु ऐसा आचरण करने वालों का हृदय से समर्थन भी करते हैं।

---

17 *या, द्वारा †या, परन्तु वह जो धर्मी है विश्वास के द्वारा जीएगा। 21 *अक्षरश:,
25 *अक्षरश:, उस झूठ †अक्षरश:, युगों तक 26 *अक्षरश:, स्वभाव के विपरीत
27 *अक्षरश:, निर्लज्जता के कार्य †अक्षरश:, वे अपने आप में 28 *अक्षरश:, परमेश्वर

परमेश्वर का सच्चा न्याय

2 अतः हे दोष लगानेवाले, तू कोई क्यों न हो, निरुत्तर है, क्योंकि जिस बात में तू दूसरों पर दोष लगाता है उसी बात में स्वयं को दोषी ठहराता है, क्योंकि तू जो दोष लगाता है, स्वयं भी वैसे ही कार्य करता है। [2]और हम जानते हैं कि ऐसे कार्य करनेवालों पर परमेश्वर के दण्ड की आज्ञा *उचित ही होती है। [3]हे मनुष्य, तू जो दूसरों पर ऐसे कार्य करने का दोष लगाता है और स्वयं ही वे कार्य करता है, क्या यह समझता है कि तू परमेश्वर के दण्ड की आज्ञा से बच जाएगा? [4]या तू उसकी कृपा, सहनशीलता और धैर्य-रूपी धन को तुच्छ जानता है, और नहीं जानता कि परमेश्वर की कृपा तुझे मन-परिवर्तन की ओर ले आती है? [5]परन्तु अपने *हठीले और अपरिवर्तित मन के कारण तू परमेश्वर के प्रकोप के दिन के लिए और उसके सच्चे न्याय के प्रकट होने तक, अपने लिए क्रोध संचित कर रहा है। [6]**परमेश्वर प्रत्येक मनुष्य को उसके कार्यों के अनुसार फल देगा।** [7]जो भले कार्यों की धुन में रह कर महिमा, आदर और अमरता के खोजी हैं, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा; [8]परन्तु जो स्वार्थमय अभिलाषाओं के वश में हैं और सत्य को नहीं मानते, वरन् अधर्म को मानते हैं, उन पर प्रकोप और क्रोध पड़ेगा। [9]प्रत्येक *मनुष्य पर जो बुरा करता है क्लेश और संकट आएगा, पहिले यहूदी पर फिर यूनानी पर, [10]परन्तु प्रत्येक मनुष्य को जो भला करता है, महिमा, आदर और शान्ति प्राप्त होगी, पहिले यहूदी को और फिर यूनानी को। [11]परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता।

[12]जिन्होंने बिना व्यवस्था पाप किया, वे बिना व्यवस्था के नाश भी होंगे; और जिन्होंने व्यवस्था पाकर पाप किया, उनका न्याय व्यवस्था के अनुसार होगा; [13]क्योंकि परमेश्वर के समक्ष व्यवस्था के सुननेवाले नहीं, परन्तु व्यवस्था का पालन करनेवाले धर्मी ठहराए जाएंगे। [14]फिर जब गैरयहूदी जिनके पास व्यवस्था नहीं, स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों का पालन करते हैं, तो व्यवस्था उनके पास न होने पर भी उस दिन वे अपने लिए आप ही व्यवस्था हैं—[15]इस प्रकार वे व्यवस्था के कार्य अपने अपने हृदय में लिखा हुआ दर्शाते हैं, और उनके विवेक भी साक्षी देते हैं, और उनके विचार कभी उन्हें दोषी या कभी निर्दोष ठहराते हैं—[16]जिस दिन, मेरे सुसमाचार के अनुसार, यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर मनुष्यों की गुप्त बातों का न्याय करेगा।

यहूदी जाति और व्यवस्था

[17]परन्तु यदि तू 'यहूदी' कहलाता है, और व्यवस्था पर भरोसा रखता तथा परमेश्वर पर गर्व करता है, [18]और उसकी इच्छा को जानता और व्यवस्था में शिक्षित होकर उन बातों का समर्थन करता है जो अनिवार्य हैं, [19]और अपने आप पर इस बात का भरोसा रखता है कि तू स्वयं अंधों का पथ-प्रदर्शक, अंधकार में रहने वालों के लिए ज्योति, [20]निर्बुद्धियों को समझानेवाला, *बालकों का शिक्षक है, क्योंकि तुझे व्यवस्था में ज्ञान और सत्य का स्वरूप प्राप्त हुआ है, [21]तू जो दूसरों को शिक्षा देता है, क्या स्वयं नहीं सीखता?

अक्षरशः, सत्य के अनुसार 5 *या, अधर्मी 9 *अक्षरशः, मनुष्य के प्राण 20 *या, अपरिपक्वों

तू जो चोरी न करने का *उपदेश देता है, क्या स्वयं चोरी नहीं करता? [22]तू जो कहता है कि व्यभिचार नहीं करना चाहिए, क्या स्वयं ही व्यभिचार नहीं करता? तू जो मूर्त्तियों से घृणा करता है, क्या स्वयं ही मन्दिरों को नहीं लूटता? [23]तू जो *व्यवस्था पर गर्व करता है, क्या तू व्यवस्था का उल्लंघन करके परमेश्वर का अनादर नहीं करता? [24]क्योंकि लिखा भी है, "**तुम्हारे कारण परमेश्वर के नाम की निन्दा गैरयहूदियों में की जाती है।**" [25]क्योंकि यदि तुम व्यवस्था पर चलते हो, तो अवश्य ही खतने से लाभ है, परन्तु यदि तुम व्यवस्था का उल्लंघन करने वाले हो, तो तुम्हारा खतना, खतनारहित होने के समान ठहरा। [26]इसलिए यदि खतनारहित व्यक्ति व्यवस्था के नियमों का पालन करे तो क्या उसका खतनारहित होना खतने के समान नहीं माना जाएगा? [27]और वह मनुष्य जो शारीरिक रूप से खतनारहित है, यदि व्यवस्था पर चलता है, तो क्या वह तुझे जो लिखित व्यवस्था पाने और खतना किए जाने पर भी व्यवस्था का उल्लंघन करता है, दोषी न ठहराएगा? [28]क्योंकि जो प्रकट में यहूदी है, वह यहूदी नहीं; न ही वह खतना, खतना है जो बाह्य या देह में हो। [29]परन्तु यहूदी वही है जो मन से है: खतना वही है जो आत्मा के द्वारा हृदय का है, न कि लेख के द्वारा; और उनकी प्रशंसा मनुष्यों की ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर की ओर से होती है।

परमेश्वर की विश्वासयोग्यता

3 तब यहूदी को क्या लाभ? या खतने का क्या उपयोग? [2]हर प्रकार से बहुत कुछ। प्रथम तो यह कि परमेश्वर के वचन उनको सौंपे गए। [3]यदि कुछ लोगों ने *विश्वास नहीं भी किया तो क्या हुआ? क्या उनका अविश्वास परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को व्यर्थ ठहराएगा? [4]ऐसा कदापि न हो! वरन् परमेश्वर ही सच्चा ठहरे, चाहे प्रत्येक व्यक्ति झूठा पाया जाए, जैसा कि लिखा है, "**कि तू अपनी बातों में धर्मी ठहरे; और जब तेरा न्याय हो तो तू जय पाए।**" [5]परन्तु यदि हमारी अधार्मिकता परमेश्वर की धार्मिकता को प्रदर्शित करती है, तो हम क्या कहें? क्या परमेश्वर जो कोप करता है, अन्यायी है?—यह तो मैं मनुष्यों के अनुसार कह रहा हूँ—[6]ऐसा कदापि न हो! अन्यथा परमेश्वर जगत का न्याय कैसे करेगा? [7]परन्तु यदि मेरे झूठ के द्वारा परमेश्वर का सत्य उसकी महिमा के लिए और भी अधिकता से हुआ, तो फिर क्यों मैं अब भी पापी के रूप में दण्ड के योग्य ठहराया जा रहा हूँ? [8]हम क्यों न कहें—जैसा कि हम पर झूठा आरोप लगाया भी जाता है और कुछ लोग तो निश्चयपूर्वक कहते हैं कि हमारा कथन है—"आओ, हम बुराई करें जिस से भलाई निकले?" उनका दोषी ठहराना उचित है।

कोई धर्मी नहीं

[9]तो क्या हुआ? क्या हम उनसे *अच्छे हैं? कदापि नहीं; क्योंकि हम यहूदियों और यूनानियों दोनों पर दोष लगा चुके हैं कि वे सब के सब पाप के वश में हैं; [10]जैसा कि लिखा है, "**कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। [11]कोई [illegible] जो समझता है। कोई भी**

21 *या, प्रचार करता है   22 *या, [illegible] में   3 *या, [illegible]   9 *या [illegible]

नहीं। [3]पवित्रशास्त्र क्या कहता है? **"और इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और वह उसके लिए, धार्मिकता गिना गया।"** [4]अब उसे जो काम करता है मज़दूरी देना कृपा नहीं परन्तु अधिकार माना जाता है। [5]परन्तु वह जो काम नहीं करता, वरन् उस पर विश्वास करता है जो भक्तिहीन को धर्मी ठहराता है, उसका विश्वास धार्मिकता गिना जाता है, [6]जिस प्रकार दाऊद भी उस मनुष्य को धन्य कहता है, जिसे परमेश्वर कर्मों के विना धर्मी गिनता है: [7]**"धन्य हैं वे, जिनके अधर्म के काम क्षमा हुए, और जिन के पाप ढांपे गए।** [8]**धन्य है वह मनुष्य जिसके पाप का लेखा प्रभु नहीं लेगा।"** [9]तो क्या यह आशीष ख़तना वालों के लिए ही है या उनके लिए भी जिनका ख़तना नहीं हुआ? क्योंकि हम कहते हैं, **"इब्राहीम का विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना गया।"** [10]तो यह कैसे गिना गया? उसका *ख़तना हो चुकने से पहले या †ख़तने के वाद? ख़तने की दशा में नहीं वरन् *विना ख़तने की दशा में। [11]उसे ख़तने का चिन्ह मिला जो विश्वास की उस धार्मिकता की छाप है जो ख़तनारहित दशा में भी उसमें थी कि वह उन सब का पिता ठहरे जो ख़तनारहित दशा में रहते हुए विश्वास करते हैं जिस से कि वे भी धर्मी गिने जाएं, [12]और उन ख़तना किए हुओं का भी पिता ठहरे, जो न केवल ख़तना किए हुए हैं परन्तु हमारे पिता इब्राहीम के उस विश्वास के पद-चिन्हों पर चलते हैं, जो उसकी ख़तनारहित अवस्था में था। [13]क्योंकि यह प्रतिज्ञा कि वह जगत का वारिस होगा, इब्राहीम और उसके वंश को व्यवस्था के द्वारा नहीं, परन्तु विश्वास की धार्मिकता के द्वारा मिली। [14]क्योंकि यदि व्यवस्था वाले वारिस हैं, तो विश्वास व्यर्थ ठहरा और प्रतिज्ञा निष्फल हुई: [15]क्योंकि व्यवस्था क्रोध उत्पन्न करती है, परन्तु जहां व्यवस्था नहीं, वहां उसका उल्लंघन भी नहीं। [16]इस कारण, प्रतिज्ञा अनुग्रह के अनुसार विश्वास से मिलती है जिस से कि सव वंशजों के लिए वह निश्चित हो जाए—न केवल उनके लिए जो व्यवस्था वाले हैं, परन्तु उनके लिए भी जो इब्राहीम के समान विश्वास वाले हैं, जो हम सव का पिता है, [17]जैसा लिखा है, **"मैंने तुझे बहुत सी जातियों का पिता ठहराया है"**—उसकी दृष्टि में जिस पर उसने विश्वास किया, अर्थात् परमेश्वर, जो मृतकों को जिलाता है और *जो वस्तुएं हैं ही नहीं उनका नाम ऐसे लेता है मानो वे हैं। [18]उसने निराशा में भी आशा रख कर विश्वास किया, इसलिए कि उस वचन के अनुसार जो कहा गया था, "तेरा वंश ऐसा होगा," वह वहुत सी जातियों का पिता हो। [19]वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मृतक समान शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई दशा जानते हुए भी विश्वास में निर्वल न हुआ, [20]फिर भी, परमेश्वर की प्रतिज्ञा के सम्वन्ध में वह अविश्वास के कारण विचलित नहीं हुआ, परन्तु परमेश्वर की महिमा करते हुए विश्वास में दृढ़ हुआ, [21]और पूर्णतः आश्वस्त होकर कि जो प्रतिज्ञा उसने की थी, वह उसे पूरा करने में भी समर्थ है; [22]इसलिए यह **"उसके लिए धार्मिकता गिना गया।"** [23]"गिना गया" तो न

10 *अक्षरशः, ख़तना रहित दशा में †अक्षरशः, ख़तना में 17 *या, जिन वस्तुओं का [illegible] करने में ऐसे [illegible] है जैसे उनका अस्तित्व हो

को खोजता है। [12]सब भटक गए, वे सब मिलकर निकम्मे बन गए हैं; कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं। [13]उनका गला खुली हुई कब्र है, वे अपनी जीभ से धोखा देते रहते हैं, उनके होठों में सर्पों का विष है; [14]उनका मुख शाप और कड़वाहट से भरा हुआ है; [15]उनके पांव लहू बहाने को तत्पर रहते हैं, [16]उनके मार्गों में विनाश और क्लेश है, [17]और उन्होंने शान्ति का मार्ग जाना ही नहीं। [18]उनकी आंखों के समक्ष परमेश्वर का भय है ही नहीं।"

[19]अब हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ कहती है, उन्हीं से कहती है जो व्यवस्था *के आधीन हैं, इसलिए कि प्रत्येक मुंह बन्द किया जाए और समस्त संसार परमेश्वर को लेखा देनेवाला ठहरे; [20]क्योंकि उसकी दृष्टि में कोई प्राणी *व्यवस्था के कार्यों से धर्मी नहीं ठहरेगा: क्योंकि †व्यवस्था के द्वारा पाप का बोध होता है।

विश्वास द्वारा धार्मिकता

[21]परन्तु अब व्यवस्था से पृथक परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट हुई है, जिसकी साक्षी व्यवस्था और नबी देते हैं, [22]अर्थात् परमेश्वर की वह धार्मिकता जो यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा सब विश्वास करनेवालों के लिए है। कुछ भेद तो नहीं: [23]इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं, [24]वे उसके अनुग्रह ही से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। [25]उसी को परमेश्वर ने उसके लहू में विश्वास के द्वारा प्रायश्चित ठहराकर खुल्लमखुल्ला प्रदर्शित किया। यह उसकी धार्मिकता को प्रदर्शित करने के लिए हुआ, क्योंकि परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता में, पहिले किए गए पापों को भुला दिया; [26]यह उसने इसलिए किया कि वर्तमान समय में उसकी धार्मिकता प्रदर्शित हो, कि वह स्वयं ही धर्मी ठहरे और उसका भी धर्मी ठहराने वाला हो जो *यीशु पर विश्वास करता है। [27]अतः गर्व करना कहां रहा? वह तो रहा ही नहीं। किस प्रकार की व्यवस्था से? कर्मों की व्यवस्था से? नहीं, परन्तु विश्वास की व्यवस्था से। [28]इसलिए हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, वरन् विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाता है। [29]या परमेश्वर केवल यहूदियों ही का परमेश्वर है? क्या वह गैरयहूदियों का भी परमेश्वर नहीं? हां, गैरयहूदियों का भी है—[30]वास्तव में यदि परमेश्वर एक ही है—तो वह ख़तना वालों को विश्वास से तथा ख़तनारहितों को भी विश्वास ही के द्वारा धर्मी ठहराएगा।

[31]तो क्या हम विश्वास के द्वारा व्यवस्था को विफल करते हैं? कदापि नहीं! इसके विपरीत, हम व्यवस्था को दृढ़ करते हैं।

इब्राहीम का धर्मी ठहराया जाना

4 तो हम इब्राहीम के विषय में क्या कहें, *जो शरीर के अनुसार हमारा पूर्वज है? उसे क्या प्राप्त हुआ? [2]क्योंकि यदि इब्राहीम कर्मों के द्वारा धर्मी ठहराया जाता, तो उसे गर्व करने का कुछ कारण होता, परन्तु परमेश्वर *के समक्ष

19 *अक्षरशः, में हैं 20 *या, उस व्यवस्था के †या, व्यवस्था से 26 *अक्षरशः, यीशु के विश्वास का है
1 *या, कि हमारे पूर्वज ने शरीर के अनुसार पाया 2 *अक्षरशः, की ओर

नहीं। 3पवित्रशास्त्र क्या कहता है? **"और इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और वह उसके लिए धार्मिकता गिना गया।"** 4अब उसे जो काम करता है मज़दूरी देना कृपा नहीं परन्तु अधिकार माना जाता है। 5परन्तु वह जो काम नहीं करता, वरन् उस पर विश्वास करता है जो भक्तिहीन को धर्मी ठहराता है, उसका विश्वास धार्मिकता गिना जाता है, 6जिस प्रकार दाऊद भी उस मनुष्य को धन्य कहता है, जिसे परमेश्वर कर्मों के बिना धर्मी गिनता है: 7**"धन्य हैं वे, जिनके अधर्म के काम क्षमा हुए, और जिन के पाप ढांपे गए। 8धन्य है वह मनुष्य जिसके पाप का लेखा प्रभु नहीं लेगा।"** 9तो क्या यह आशीष ख़तना वालों के लिए ही है या उनके लिए भी जिनका ख़तना नहीं हुआ? क्योंकि हम कहते हैं, **"इब्राहीम का विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना गया।"** 10तो यह कैसे गिना गया? उसका *ख़तना हो चुकने से पहले या †ख़तने के बाद? ख़तने की दशा में नहीं वरन् *बिना ख़तने की दशा में। 11उसे ख़तने का चिन्ह मिला जो विश्वास की उस धार्मिकता की छाप है जो ख़तनारहित दशा में भी उसमें थी कि वह उन सब का पिता ठहरे जो ख़तनारहित दशा में रहते हुए विश्वास करते हैं जिस से कि वे भी धर्मी गिने जाएं, 12और उन ख़तना किए हुओं का भी पिता ठहरे, जो न केवल ख़तना किए हुए हैं परन्तु हमारे पिता इब्राहीम के उस विश्वास के पद-चिन्हों पर चलते हैं, जो उसकी ख़तनारहित अवस्था में था। 13क्योंकि यह प्रतिज्ञा कि वह जगत का वारिस होगा, इब्राहीम और उसके वंश को व्यवस्था के द्वारा नहीं, परन्तु विश्वास की धार्मिकता के द्वारा मिली। 14क्योंकि यदि व्यवस्था वाले वारिस हैं, तो विश्वास व्यर्थ हुआ और प्रतिज्ञा निष्फल हुई: 15क्योंकि व्यवस्था क्रोध उत्पन्न करती है, परन्तु जहां व्यवस्था नहीं, वहां उसका उल्लंघन भी नहीं। 16इस कारण, प्रतिज्ञा अनुग्रह के अनुसार विश्वास से मिलती है जिस से कि सब वंशजों के लिए वह निश्चित हो जाए—न केवल उनके लिए जो व्यवस्था वाले हैं, परन्तु उनके लिए भी जो इब्राहीम के समान विश्वास वाले हैं, जो हम सब का पिता है, 17जैसा लिखा है, **"मैंने तुझे बहुत सी जातियों का पिता ठहराया है"**—उसकी दृष्टि में जिस पर उसने विश्वास किया, अर्थात् परमेश्वर, जो मृतकों को जिलाता है और *जो वस्तुएं हैं ही नहीं उनका नाम ऐसे लेता है मानो वे हैं। 18उसने निराशा में भी आशा रख कर विश्वास किया, इसलिए कि उस वचन के अनुसार जो कहा गया था, "तेरा वंश ऐसा होगा," वह बहुत सी जातियों का पिता हो। 19वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मृतक समान शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई दशा जानते हुए भी विश्वास में निर्बल न हुआ, 20फिर भी, परमेश्वर की प्रतिज्ञा के सम्बन्ध में वह अविश्वास के कारण विचलित नहीं हुआ, परन्तु परमेश्वर की महिमा करते हुए विश्वास में दृढ़ हुआ, 21और पूर्णतः आश्वस्त होकर कि जो प्रतिज्ञा उसने की थी, वह उसे पूरा करने में भी समर्थ है: 22इसलिए, यह "उसके लिए धार्मिकता गिना गया।" 23"गिना गया" ये न

10 *अक्षरशः, ख़तना रहित दशा में †अक्षरशः, ख़तना में [illegible]
17 *या, जिन वस्तुओं का अस्तित्व है ही नहीं [illegible] करने में ऐसे कहता है जैसे उनका अस्तित्व हो

को खोजता है। [12]सब भटक गए, वे सब मिलकर निकम्मे बन गए हैं; कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं। [13]उनका गला खुली हुई कब्र है, वे अपनी जीभ से धोखा देते रहते हैं, उनके होठों में सर्पो का विष है; [14]उनका मुख शाप और कड़वाहट से भरा हुआ है; [15]उनके पांव लहू बहाने को तत्पर रहते हैं, [16]उनके मार्गों में विनाश और क्लेश है, [17]और उन्होंने शान्ति का मार्ग जाना ही नहीं। [18]उनकी आंखों के समक्ष परमेश्वर का भय है ही नहीं।"

[19]अब हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ कहती है, उन्हीं से कहती है जो व्यवस्था *के आधीन हैं, इसलिए कि प्रत्येक मुंह बन्द किया जाए और समस्त संसार परमेश्वर को लेखा देनेवाला ठहरे; [20]क्योंकि उसकी दृष्टि में कोई प्राणी *व्यवस्था के कार्यों से धर्मी नहीं ठहरेगा: क्योंकि †व्यवस्था के द्वारा पाप का बोध होता है।

विश्वास द्वारा धार्मिकता

[21]परन्तु अब व्यवस्था से पृथक परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट हुई है, जिसकी साक्षी व्यवस्था और नबी देते हैं, [22]अर्थात् परमेश्वर की वह धार्मिकता जो यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा सब विश्वास करनेवालों के लिए है। कुछ भेद तो नहीं: [23]इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं, [24]वे उसके अनुग्रह ही से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। [25]उसी को परमेश्वर ने [illegible] में विश्वास के द्वारा प्रायश्चित ठहराकर खुल्लमखुल्ला प्रदर्शित किया। यह उसकी धार्मिकता को प्रदर्शित करने के लिए हुआ, क्योंकि परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता में, पहिले किए गए पापों को भुला दिया; [26]यह उसने इसलिए किया कि वर्तमान समय में उसकी धार्मिकता प्रदर्शित हो, कि वह स्वयं ही धर्मी ठहरे और उसका भी धर्मी ठहराने वाला हो जो *यीशु पर विश्वास करता है। [27]अत: गर्व करना कहां रहा? वह तो रहा ही नहीं। किस प्रकार की व्यवस्था से? कर्मों की व्यवस्था से? नहीं, परन्तु विश्वास की व्यवस्था से। [28]इसलिए हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, वरन् विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाता है। [29]या परमेश्वर केवल यहूदियों ही का परमेश्वर है? क्या वह गैरयहूदियों का भी परमेश्वर नहीं? हां, गैरयहूदियों का भी है—[30]वास्तव में यदि परमेश्वर एक ही है—तो वह ख़तना वालों को विश्वास से तथा ख़तनारहितों को भी विश्वास ही के द्वारा धर्मी ठहराएगा।

[31]तो क्या हम विश्वास के द्वारा व्यवस्था को विफल करते हैं? कदापि नहीं! इसके विपरीत, हम व्यवस्था को दृढ़ करते हैं।

इब्राहीम का धर्मी ठहराया जाना

4 तो हम इब्राहीम के विषय में क्या कहें, *जो शरीर के अनुसार हमारा पूर्वज है? उसे क्या प्राप्त हुआ? [2]क्योंकि यदि इब्राहीम कर्मों के द्वारा धर्मी ठहराया जाता, तो उसे गर्व करने का कुछ कारण होता, परन्तु परमेश्वर *के समक्ष

20 *या, उस व्यवस्था के †या, व्यवस्था से 26 *अक्षरशः, यीशु के विश्वास का है
[4:1 *या,] ने शरीर के अनुसार पाया 2 *अक्षरशः, की ओर

नहीं। 3पवित्रशास्त्र क्या कहता है? **"और इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और वह उसके लिए, धार्मिकता गिना गया।"** 4अब उसे जो काम करता है मज़दूरी देना कृपा नहीं परन्तु अधिकार माना जाता है। 5परन्तु वह जो काम नहीं करता, वरन् उस पर विश्वास करता है जो भक्तिहीन को धर्मी ठहराता है, उसका विश्वास धार्मिकता गिना जाता है, 6जिस प्रकार दाऊद भी उस मनुष्य को धन्य कहता है, जिसे परमेश्वर कर्मों के बिना धर्मी गिनता है: 7**"धन्य हैं वे, जिनके अधर्म के काम क्षमा हुए, और जिन के पाप ढांपे गए। 8धन्य है वह मनुष्य जिसके पाप का लेखा प्रभु नहीं लेगा।"** 9तो क्या यह आशीष ख़तना वालों के लिए ही है या उनके लिए भी जिनका ख़तना नहीं हुआ? क्योंकि हम कहते हैं, **"इब्राहीम का विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना गया।"** 10तो यह कैसे गिना गया? उसका ख़तना हो

होगा, इब्राहीम और उसके वंश को व्यवस्था के द्वारा नहीं, परन्तु विश्वास की धार्मिकता के द्वारा मिली। 14क्योंकि यदि व्यवस्था वाले वारिस हैं, तो विश्वास व्यर्थ ठहरा और प्रतिज्ञा निष्फल हुई 15क्योंकि व्यवस्था क्रोध उत्पन्न करती है, परन्तु जहां व्यवस्था नहीं, वहां उसका उल्लंघन भी नहीं। 16इस कारण, प्रतिज्ञा अनुग्रह के अनुसार विश्वास से मिलती है जिस से कि सब वंशजों के लिए वह निश्चित हो जाए — न केवल उनके लिए, जो व्यवस्था वाले हैं, परन्तु उनके लिए भी जो इब्राहीम के समान विश्वास वाले हैं, जो हम सब का पिता है, 17जैसा लिखा है, **"मैंने तुझे बहुत सी जातियों का पिता ठहराया है"** उसकी दृष्टि में जिस पर उसने विश्वास किया, अर्थात् परमेश्वर, जो मृतकों को जिलाता है और जो वस्तुएं हैं ही नहीं उनका नाम ऐसे लेता है मानो वे हैं। 18उसने निराशा में भी आशा रख कर विश्वास किया, इसलिए कि वह

केवल उसके लिए लिखा गया था, [24]वरन् हमारे लिए भी जिनके प्रति इसलिए गिना जाएगा कि हम वे हैं जो उस पर विश्वास करते हैं—उस पर जिसने यीशु हमारे प्रभु को मृतकों में से जिलाया। [25]वह हमारे अपराधों के कारण पकड़वाया गया और हमारे धर्मी ठहराए जाने के लिए जिलाया भी गया।

विश्वास द्वारा परमेश्वर से मेल

5 इसलिए विश्वास से धर्मी ठहराए जाकर परमेश्वर से *हमारा मेल अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा है। [2]उसी के द्वारा विश्वास से, उस अनुग्रह में जिसमें हम स्थिर हैं, हमने प्रवेश पाया है, और परमेश्वर की महिमा की आशा में हम आनन्दित होते हैं। [3]इतना ही नहीं, परन्तु हम अपने क्लेशों में भी आनन्दित होते हैं, क्योंकि यह जानते हुए कि क्लेश में धैर्य उत्पन्न होता है, [4]तथा धैर्य से खरा चरित्र, और खरे चरित्र से आशा उत्पन्न होती है; [5]आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है, उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में उंडेला गया है। [6]जब हम निर्बल ही थे तब ठीक समय पर मसीह भक्तिहीनों के लिए मरा। [7]दुर्लभ है कि किसी धर्मी मनुष्य के लिए कोई मरे; पर हो सकता है कि किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का साहस भी कर ले। [8]परन्तु परमेश्वर अपने प्रेम को हमारे प्रति इस प्रकार प्रदर्शित करता है कि जब हम पापी ही थे, मसीह हमारे लिए मरा। [9]अतः इस से बढ़कर उसके लहू *के द्वारा धर्मी ठहराए जाकर, हम उसके द्वारा परमेश्वर के प्रकोप से क्यों न बचेंगे? [10]क्योंकि जब हम शत्रु ही थे, हमारा मेल परमेश्वर के साथ उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हुआ तो उससे बढ़कर, अब मेल हो जाने पर हम उसके जीवन *के द्वारा उद्धार पाएंगे। [11]केवल यही नहीं, परन्तु हम परमेश्वर में अपने प्रभु यीशु के द्वारा आनन्दित होते हैं, जिसके द्वारा अब हमारा मेल हुआ है।

आदम से मृत्यु — मसीह से जीवन

[12]अतः जिस प्रकार एक मनुष्य के द्वारा पाप ने जगत में प्रवेश किया, तथा पाप के द्वारा मृत्यु आयी, उसी प्रकार मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया—[13]क्योंकि *व्यवस्था के दिए जाने तक पाप जगत में तो था, पर जहां व्यवस्था नहीं वहां पाप की गणना नहीं होती। [14]तथापि मृत्यु ने आदम से लेकर मूसा तक शासन किया, उन पर भी जिन्होंने आदम के अपराध के समान पाप नहीं किया था; आदम उसका *प्रतीक था जो आने वाला था, [15]परन्तु वरदान अपराध के समान नहीं है। क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण अनेक मर गए, तब उस से कहीं अधिक परमेश्वर का अनुग्रह, तथा एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के, अनुग्रह का दान बहुतों को प्रचुरता से मिला। [16]यह दान उसके समान नहीं जो एक मनुष्य के पाप करने के द्वारा आया, क्योंकि एक ओर तो एक ही अपराध के कारण न्याय आरम्भ हुआ *जिसका प्रतिफल दण्ड हुआ; परन्तु दूसरी ओर अनेक अपराधों के कारण ऐसा वरदान उत्पन्न हुआ †जिसका प्रतिफल धार्मिकता हुआ।

*हस्तलेखों के अनुसार, आओ हम मेल...रखें   9 *या, में   10 *या, में   13 *या, व्यवस्था तक   14 *या, छाया   16 *अक्षरशः, दण्ड के लिए   †अक्षरशः, धार्मिकता के कार्य के लिए

[17]जब एक ही मनुष्य के अपराध के कारण, मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा शासन किया, इस से बढ़कर वे जो अनुग्रह और धार्मिकता के दान को प्रचुरता से पाते हैं, उस एक ही यीशु मसीह के द्वारा जीवन में राज्य करेंगे। [18]अत: जिस प्रकार एक ही अपराध *का प्रतिफल सब मनुष्यों के लिए दण्ड की आज्ञा हुआ; उसी प्रकार धार्मिकता के एक ही कार्य का †प्रतिफल सब मनुष्यों के लिए धर्मी ठहराया जाना हुआ। [19]जैसे एक मनुष्य के आज्ञा-उल्लंघन से अनेक पापी ठहराए गए, वैसे ही एक मनुष्य की आज्ञाकारिता से अनेक मनुष्य धर्मी ठहराए जाएंगे। [20]व्यवस्था ने प्रवेश किया कि अपराध बढ़ जाए, परन्तु जहां पाप बढ़ा, वहां अनुग्रह में और भी कहीं अधिक वृद्धि हुई, [21]कि जैसे पाप ने मृत्यु में राज्य किया वैसे ही अनुग्रह भी धार्मिकता से अनन्त जीवन के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा राज्य करे।

6 तो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें कि अनुग्रह अधिक होता जाए? [2]कदापि नहीं! हम जो पाप के लिए मर गए फिर उस में कैसे जीवन व्यतीत करें? [3]क्या तुम नहीं जानते कि हम सब *जो बपतिस्मा के द्वारा मसीह यीशु के साथ एक हुए, †बपतिस्मा द्वारा उसकी मृत्यु में भी सहभागी हुए? [4]इसलिए हम *बपतिस्मा द्वारा उसकी मृत्यु में सहभागी होकर उसके साथ गाड़े गए हैं, जिससे कि पिता की महिमा के द्वारा जैसे मसीह जिलाया गया था, वैसे हम भी जीवन की नई चाल चलें। [5]क्योंकि यदि हम उनके साथ उसकी मृत्यु की समानता में एक हो गए हैं, तो निश्चय ही उसके जी उठने की समानता में भी एक हो जाएंगे, [6]यह जानते हुए कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, कि हमारा पाप का शरीर निष्क्रिय हो जाए, कि हम आगे को पाप के दास न रहें; [7]क्योंकि जो मर गया, वह पाप से *छूट कर निर्दोष ठहरा। [8]अब यदि हम मसीह के साथ मर गए, तो हम विश्वास करते हैं कि उसके साथ जीवित भी रहेंगे, [9]यह जानते हुए कि मसीह मृतकों में से जिलाया जाकर फिर कभी मरने का नहीं, न अब उस पर मृत्यु की प्रभुता है। [10]क्योंकि जब वह मरा, तो पाप के प्रति सदा के लिए मर गया; परन्तु अब जो जीवित है, वह परमेश्वर के लिए जीवित है। [11]इसी प्रकार तुम भी अपने आप को पाप के लिए मृतक परन्तु मसीह यीशु में परमेश्वर के लिए जीवित समझो।

[12]इसलिए पाप को अपने मरणहार शरीर में प्रभुता न करने दो, कि तुम उसकी लालसाओं को पूरा करो, [13]और न *अपने शरीर के अंगों को अधर्म के हथियार बनाकर पाप को सौंपो, परन्तु अपने आप को मृतकों में से जीवित जानकर अपने अंगों को धार्मिकता के हथियार होने के लिए परमेश्वर को सौंप दो। [14]तब पाप तुम पर प्रभुता करने नहीं पाएगा, क्योंकि तुम व्यवस्था के आधीन नहीं, परन्तु अनुग्रह के आधीन हो।

धार्मिकता के अथवा पाप के दास

[15]तो क्या हुआ? क्या हम इस कारण पाप करें कि हम व्यवस्था के आधीन नहीं परन्तु अनुग्रह के आधीन हैं? कदापि नहीं! [16]क्या तुम नहीं जानते कि किसी

18 *अक्षरशः, दण्ड के लिए †अक्षरशः, धार्मिकता के लिए 3 *या, जिन्होंने मसीह यीशु में बपतिस्मा लिया
†या, उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लिया 4 *या, उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लेने के द्वारा
7 *या, स्वतन्त्र होकर 13 *अक्षरशः, अपने अंगों को पाप के लिए

की आज्ञा मानने के लिए तुम अपने आप को दासों के समान सौंप देते हो, तो जिसकी आज्ञा मानते हो उसी के दास बन जात हो—चाहे पाप के, *जिसका परिणाम मृत्यु है, चाहे आज्ञाकारिता के, †जिसका परिणाम धार्मिकता है? [17]परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि तुम जो पाप के दास थे, अब हृदय से उस प्रकार की शिक्षा के आज्ञाकारी हो गए जिसके लिए तुम समर्पित हुए थे, [18]और तुम पाप से छुड़ाए जाकर धार्मिकता के दास हो गए हो। [19]मैं तुम्हारी शारीरिक दुर्बलता के कारण मनुष्य की रीति पर बोल रहा हूँ। जिस प्रकार तुमने अपने अंगों को अशुद्धता और व्यवस्था-उल्लंघन के दास होने के लिए सौंप दिया था *परिणामस्वरूप व्यवस्थाहीनता और अधिक बढ़ गई, उसी प्रकार अब अपने अंगों को धार्मिकता के दास होने के लिए समर्पित कर दो †कि जिसका परिणाम §पवित्रता हो। [20]क्योंकि जब तुम पाप के दास थे तो धार्मिकता की ओर से स्वतंत्र थे। [21]जिन बातों *से अब तुम लज्जित होते हो उनसे उस समय क्या †लाभ प्राप्त करते थे? क्योंकि उनका परिणाम तो मृत्यु है। [22]परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम्हें यह फल मिला जिसका परिणाम *पवित्रता और जिसका अंत अनन्त जीवन है। [23]क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।

7 हे भाइयो, क्या तुम नहीं जानते—मैं व्यवस्था जानने वालों से कह रहा हूँ—कि जब तक मनुष्य जीवित है, तब तक उस व्यक्ति पर व्यवस्था का अधिकार रहता है? [2]क्योंकि विवाहिता स्त्री, अपने पति के जीवित रहते, व्यवस्था से बंधी हुई है; परन्तु यदि उसके पति की मृत्यु हो जाए तो वह उस पति से सम्बन्धित व्यवस्था से मुक्त हो जाती है। [3]इसलिए, यदि वह अपने पति के जीवित रहते हुए किसी दूसरे की हो जाए तो व्यभिचारिणी कहलाएगी; परन्तु यदि उसके पति की मृत्यु हो जाए तो वह इस व्यवस्था से मुक्त हो जाती है, यहां तक कि यदि वह किसी दूसरे पति की भी हो जाए, वह व्यभिचारिणी न कहलाएगी। [4]इसलिए मेरे भाइयो, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के प्रति मृतक बना दिए गए थे कि तुम उसके हो जाओ जो मृतकों में से जिलाया गया कि हम परमेश्वर के लिए फल लाएं, [5]क्योंकि जब हम शरीर में थे, तो पापमय वासनाएं जो व्यवस्था के द्वारा उत्तेजित की जाती थीं, हमारे शारीरिक अंगों में मृत्यु के लिए फल उत्पन्न करने को कार्यरत थीं। [6]परन्तु अब जिस व्यवस्था से हम बंधे थे उसके प्रति मर कर उस से ऐसे मुक्त हो गए हैं कि हम लेख की पुरानी विधियों के अनुसार नहीं, परन्तु *पवित्र आत्मा की नई विधि से सेवा करते हैं।

व्यवस्था और पाप

[7]तो हम क्या कहें? क्या व्यवस्था पाप है? कदापि नहीं! इसके विपरीत व्यवस्था के बिना मैं पाप को न जान पाता, क्योंकि यदि व्यवस्था न कहती, "***लालच मत कर**," तो मैं *लालच के विषय में न जान

मृत्यु के लिए †अक्षरशः, धार्मिकता के लिए
व्यवस्थाहीनता के लिए †अक्षरशः शुद्धता के लिए §या, शुद्धता
†अक्षरशः, फल 22 *या, शुद्धता 6 *या, आत्मा 7 *या, कामुकता

पाता। [8]परन्तु पाप ने इस आज्ञा के द्वारा अवसर पाकर मुझ में हर प्रकार का *लालच उत्पन्न किया, क्योंकि व्यवस्था के विना पाप मृतक है। [9]मैं स्वयं पहिले व्यवस्था के विना जीवित था; परन्तु जव आज्ञा आई तो पाप जीवित हो उठा, और मैं मर गया; [10]और यही आज्ञा जो जीवन के लिए थी, मेरे लिए मृत्यु का कारण वन गई; [11]क्योंकि पाप ने आज्ञा के द्वारा अवसर पाकर मुझे वहकाया और उसी के द्वारा मुझे मार भी डाला। [12]इसलिए व्यवस्था पवित्र है और आज्ञा भी पवित्र, खरी और उत्तम है। [13]तो क्या वह जो उत्तम है मेरे लिए मृत्यु का कारण बनी? कदापि नहीं! वरन् पाप था—जो उस उत्तम के द्वारा मुझ में मृत्यु का कार्य करने वाला हुआ, जिससे कि पाप का, पाप होना प्रकट हो जाए कि आज्ञा के द्वारा पाप अत्यन्त ही पापमय वन जाए। [14]क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है, परन्तु मैं शारीरिक हूं तथा *पाप के हाथों विका हुआ हूं। [15]इसलिए जो मैं करता हूँ उसको समझ नहीं पाता; क्योंकि जो मैं चाहता हूँ वह नहीं किया करता, परन्तु जिस से मुझे घृणा है वही करता हूँ—[16]परन्तु यदि मैं जो नहीं चाहता वही करता हूं तो मैं यह मानते हुए व्यवस्था से सहमत हूँ कि वह भली है। [17]तो ऐसी दशा में उसका करने वाला मैं नहीं रहा, परन्तु पाप है जो मुझ में वसा हुआ है। [18]इसलिए मैं जानता हूं कि मुझ में अर्थात् मेरे शरीर में कुछ भी भला वास नहीं करता। इच्छा तो मुझ में है, परन्तु मुझ से भला कार्य वन नहीं पड़ता। [19]क्योंकि जिस भलाई की मैं इच्छा करता हूं, वह तो नहीं कर पाता; परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता, वही करता रहता हूँ। [20]परन्तु यदि मैं वही करता हूं जिसकी इच्छा नहीं करता, तो उसका करने वाला मैं नहीं हुआ, परन्तु पाप जो मुझ में बसा हुआ है। [21]तब मैं यह *सिद्धान्त पाता हूँ कि यद्यपि मैं भलाई करना चाहता हूं, बुराई मुझ में है। [22]क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व *में आनन्दपूर्वक परमेश्वर की व्यवस्था से सहमत रहता हूं, [23]परन्तु मुझे अपने अंगों में एक भिन्न व्यवस्था का वोध होता है, जो मेरे मन की व्यवस्था के विरुद्ध युद्ध करती रहती है, और पाप की व्यवस्था जो मेरे अंगों में है, उसका बन्दी बना देती है। [24]मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं! मुझे *इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा? [25]हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद हो! अतः एक ओर तो मैं स्वयं अपने मन से परमेश्वर की व्यवस्था की, परन्तु दूसरी ओर अपने शरीर से पाप की व्यवस्था की सेवा करता हूं।

पवित्र आत्मा के द्वारा जीवन

8 अतः अव उन पर जो मसीह यीशु में हैं, दण्ड की आज्ञा नहीं। [2]क्योंकि जीवन के आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में *तुम्हें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतन्त्र कर दिया है। [3]क्योंकि जो काम व्यवस्था, शरीर के द्वारा दुर्वल होते हुए, न कर सकी, उस काम को परमेश्वर ने किया; अर्थात् अपने ही पुत्र को *पापमय शरीर की समानता में तथा पाप के लिए वलिदान होने को भेज कर, शरीर में पाप को दोषी ठहराया, [4]जिससे

8 *या, कामुकता 14 *अक्षरशः, पाप के 21 *अक्षरशः, व्यवस्था 22 *या, के सम्बन्ध में
24 *या, मृत्यु की इस देह से 2 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में लिखा है, मुझे 3 *अक्षरशः, पाप का शरीर

कि व्यवस्था की मांग हम में पूरी हो सके जो शरीर के अनुसार नहीं, परन्तु आत्मा के अनुसार चलते हैं। [5]क्योंकि शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं, परन्तु आध्यात्मिक तो आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं। [6]*शरीर पर मन लगाना* तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है; [7]क्योंकि शारीरिक मन तो परमेश्वर से शत्रुता करता है। वह न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है और न ही हो सकता है। [8]जो शारीरिक हैं; वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। [9]यदि वास्तव में परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है, तो तुम शरीर में नहीं, वरन् आत्मा में हो। परन्तु यदि किसी में मसीह का आत्मा न हो तो वह उसका नहीं है। [10]यदि मसीह तुम में है तो यद्यपि शरीर पाप के कारण मृतक है; फिर भी आत्मा धार्मिकता के कारण *जीवित है। [11]यदि उसका आत्मा जिसने यीशु को मृतकों में से जीवित किया तुम में निवास करता है, तो वह जिसने मसीह यीशु को मृतकों में से जीवित किया तुम्हारी मरणहार देहों को भी अपने आत्मा *के द्वारा जो तुम में वास करता है, जीवित करेगा।

[12]इसलिए हे भाइयो, हम शरीर के ऋणी नहीं कि शरीर के अनुसार जीवन व्यतीत करें—[13]क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार जीवन बिता रहे हो तो *तुम्हें अवश्य मरना है, परन्तु यदि आत्मा के द्वारा शरीर के कार्यों को नष्ट कर रहे हो तो तुम जीवित रहोगे। [14]क्योंकि वे सब जो परमेश्वर के आत्मा के द्वारा चलाए जाते हैं, वे परमेश्वर के सन्तान हैं। [15]तुम ने दासत्व का आत्मा नहीं पाया है कि फिर भयभीत हो, परन्तु पुत्रों के समान लेपालकपन का *आत्मा पाया है, जिस से हम 'हे अब्बा! हे पिता!' कह कर पुकारते हैं। [16]आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ *मिल कर साक्षी देता है कि हम परमेश्वर* की सन्तान हैं। [17]यदि हम सन्तान हैं तो उत्तराधिकारी भी—परमेश्वर के उत्तराधिकारी और मसीह के सह-उत्तराधिकारी हैं; यदि हम वास्तव में उसके साथ दुख उठाते हैं तो उसके साथ महिमा भी पाएंगे।

भविष्य में प्रकट होने वाली महिमा

[18]क्योंकि मैं यह समझता हूँ कि वर्तमान समय के दुखों की तुलना करना आनेवाली महिमा से जो हम पर प्रकट होने वाली है, उचित नहीं। [19]क्योंकि सृष्टि बड़ी व्यग्रता से परमेश्वर के पुत्रों के प्रकट होने की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर रही है। [20]क्योंकि सृष्टि व्यर्थता के आधीन कर दी गई, परन्तु अपनी ही इच्छा से नहीं, वरन् उसके कारण जिसने उसे आधीन कर दिया, इस आशा में [21]कि *सृष्टि स्वयं भी विनाश के दासत्व से मुक्त* होकर परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतन्त्रता प्राप्त करे। [22]क्योंकि हम जानते हैं कि सम्पूर्ण सृष्टि मिलकर प्रसव-पीड़ा से अभी तक कराहती और तड़पती है। [23]और न केवल यह, परन्तु स्वयं हम भी जिनके पास आत्मा का प्रथम फल है, अपने आप में कराहते हैं और अपने लेपालक पुत्र होने और देह के छुटकारे की बड़ी उत्कण्ठा से प्रतीक्षा कर रहे हैं। [24]क्योंकि आशा में हमारा उद्धार हुआ है,

11 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में लिखा है, के कारण आत्मा 13 *या, तुम मरने पर हो

परन्तु आशा जो दिखाई देती है, आशा नहीं; क्योंकि *जो किसी वस्तु को देखता है वह उसकी आशा क्यों करेगा? 25 यदि हम उसकी आशा करते हैं जिसे नहीं देखते तो धीरज से उत्सुकतापूर्वक उस की प्रतीक्षा करते हैं।

26 इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है; क्योंकि हम नहीं जानते कि हमें प्रार्थना किस प्रकार करना चाहिए, परन्तु आत्मा स्वयं भी ऐसी आहें भर भर कर जो अवर्णनीय हैं, हमारे लिए विनती करता है, 27 और हृदयों को जाँचने वाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है, क्योंकि वह *पवित्र लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छानुसार विनती करता है।

जयवन्त से बढ़कर

28 और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं उनके लिए *वह सब बातों के द्वारा भलाई को उत्पन्न करता है, अर्थात् उन्हीं के लिए जो उसके अभिप्राय के अनुसार बुलाए गए हैं। 29 क्योंकि जिन को पहिले से उसने पहिचान के लिए दे दिया, तो वह उसके साथ हमें सब कुछ उदारता से क्यों न देगा? 33 परमेश्वर के चुने हुओं पर कौन दोष लगाएगा? परमेश्वर ही है जो धर्मी ठहराता है; 34 वह कौन है जो दोष लगाएगा? मसीह यीशु ही है जो मरा, हां, वरन् वह मृतकों में से जिलाया गया, जो परमेश्वर के दाहिनी ओर है, और हमारे लिए निवेदन भी करता है। 35 कौन हम को *मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या सताव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार? 36 जैसा लिखा है, **"तेरे लिए हम दिन भर घात किए जाते हैं; हम वध होने वाली भेड़ों के सदृश समझे जाते हैं।"** 37 परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया जयवन्त से भी बढ़कर हैं। 38 क्योंकि मुझे पूर्ण निश्चय है कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न शक्तियां, 39 न ऊंचाई, न गहराई, और न कोई सृजी हुई वस्तु हमें परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु यीशु मसीह में है, अलग कर सकेगी।

कि व्यवस्था की मांग हम में पूरी हो सके जो शरीर के अनुसार नहीं, परन्तु आत्मा के अनुसार चलते हैं। [5]क्योंकि शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं, परन्तु आध्यात्मिक तो आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं। [6]शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है; [7]क्योंकि शारीरिक मन तो परमेश्वर से शत्रुता करता है। वह न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है और न ही हो सकता है। [8]जो शारीरिक हैं; वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। [9]यदि वास्तव में परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है, तो तुम शरीर में नहीं, वरन् आत्मा में हो। परन्तु यदि किसी में मसीह का आत्मा न हो तो वह उसका नहीं है। [10]यदि मसीह तुम में है तो यद्यपि शरीर पाप के कारण मृतक है; फिर भी आत्मा धार्मिकता के कारण *जीवित है। [11]यदि उसका आत्मा जिसने यीशु को मृतकों में से जीवित किया तुम में निवास करता है, तो वह जिसने मसीह यीशु को मृतकों में से जीवित किया तुम्हारी मरणहार देहों को भी अपने आत्मा *के द्वारा जो तुम में वास करता है, जीवित करेगा।

[12]इसलिए हे भाइयो, हम शरीर के ऋणी नहीं कि शरीर के अनुसार जीवन व्यतीत करें—[13]क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार जीवन बिता रहे हो तो *तुम्हें अवश्य मरना है, परन्तु यदि आत्मा के द्वारा शरीर के कार्यों को नष्ट कर रहे हो तो तुम जीवित रहोगे। [14]क्योंकि वे सब जो परमेश्वर के आत्मा के द्वारा चलाए जाते हैं, वे परमेश्वर के सन्तान हैं। [15]तुम ने दासत्व का आत्मा नहीं पाया है कि फिर भयभीत हो; परन्तु पुत्रों के समान लेपालकपन का *आत्मा पाया है, जिस से हम 'हे अब्बा! हे पिता!' कह कर पुकारते हैं। [16]आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ मिल कर साक्षी देता है कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं। [17]यदि हम सन्तान हैं तो उत्तराधिकारी भी—परमेश्वर के उत्तराधिकारी और मसीह के सह-उत्तराधिकारी हैं; यदि हम वास्तव में उसके साथ दुख उठाते हैं तो उसके साथ महिमा भी पाएंगे।

भविष्य में प्रकट होने वाली महिमा

[18]क्योंकि मैं यह समझता हूं कि वर्तमान समय के दुखों की तुलना करना आनेवाली महिमा से जो हम पर प्रकट होने वाली है, उचित नहीं। [19]क्योंकि सृष्टि बड़ी व्यग्रता से परमेश्वर के पुत्रों के प्रकट होने की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर रही है। [20]क्योंकि सृष्टि व्यर्थता के आधीन कर दी गई, परन्तु अपनी ही इच्छा से नहीं, वरन् उसके कारण जिसने उसे आधीन कर दिया, इस आशा में [21]कि सृष्टि स्वयं भी विनाश के दासत्व से मुक्त होकर परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतन्त्रता प्राप्त करे। [22]क्योंकि हम जानते हैं कि सम्पूर्ण सृष्टि मिलकर प्रसव-पीड़ा से अभी तक कराहती और तड़पती है। [23]और न केवल यह, परन्तु स्वयं हम भी जिनके पास आत्मा का प्रथम फल है, अपने आप में कराहते हैं और अपने लेपालक पुत्र होने और देह के छुटकारे की बड़ी उत्कण्ठा से प्रतीक्षा कर रहे हैं। [24]क्योंकि आशा में हमारा उद्धार हुआ है,

10 *अक्षरशः, जीवन 11 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में लिखा है, के कारण 13 *या, तुम मरने पर हो
15 *या, पवित्र आत्मा

लेपालकपन का अधिकार, महिमा, वाचाएं, व्यवस्था, उपासना और प्रतिज्ञाएं उन्हीं की हैं। [5]पूर्वज उन्हीं के हैं और मसीह भी शरीर के अनुसार उन्हीं में से हुआ, जो सब के ऊपर युगानुयुग धन्य परमेश्वर है। आमीन।

[6]परन्तु ऐसा नहीं कि परमेश्वर का वचन व्यर्थ हो गया है, क्योंकि वे सब जो इस्राएल के वंशज हैं, इस्राएली नहीं; [7]न ही वे इब्राहीम के *वंशज होने के कारण उसकी सन्तान हैं, परन्तु लिखा है, **"इसहाक ही से तेरा वंश चलेगा।"** [8]अर्थात् शरीर के सन्तान तो परमेश्वर के सन्तान नहीं हैं, परन्तु प्रतिज्ञा के सन्तान *वंश माने जाते हैं। [9]क्योंकि प्रतिज्ञा का वचन यह है: **"मैं इसी समय पर आऊँगा, और सारा के एक पुत्र होगा।"** [10]और केवल यही नहीं, परन्तु रिबका ने भी एक मनुष्य अर्थात् हमारे पिता इसहाक से जुड़वाँ बच्चों का गर्भ धारण किया; [11]यद्यपि अब तक न तो जुड़वाँ जन्मे थे और न कुछ भला या बुरा किया था, इस अभिप्राय से कि परमेश्वर द्वारा चुनने का उद्देश्य कर्म के कारण नहीं वरन् बुलाने वाले के कारण स्थिर रहे, [12]उस से यह कहा गया था, **"ज्येष्ठ पुत्र छोटे की सेवा करेगा।"** [13]जैसा लिखा है, **"याकूब से मैंने प्रेम किया, परन्तु एसाव को अप्रिय जाना।"**

[14]तो हम क्या कहें? क्या परमेश्वर अन्यायी है? कदापि नहीं! [15]क्योंकि वह मूसा से कहता है, **"मैं जिस पर चाहूँ उसी पर दया करूँगा, और जिस पर चाहूँ उसी पर तरस खाऊँगा।"** [16]अतः यह न तो चाहने वाले पर और न दौड़-धूप करने वाले पर निर्भर है, परन्तु परमेश्वर पर जो दया करता है। [17]क्योंकि पवित्रशास्त्र फिरौन से कहता है, **"मैंने इसी अभिप्राय से तुझे खड़ा किया है, कि तुझ में अपनी सामर्थ दिखाऊँ, कि मेरे नाम का प्रचार सम्पूर्ण पृथ्वी *पर किया जाए।"** [18]अतः वह जिस पर चाहता है दया करता है, और जिसे चाहता है उसे कठोर कर देता है।

[19]तब तू मुझ से कहेगा, "वह अब भी क्यों दोष लगाता है? क्योंकि कौन उस की इच्छा का विरोध करता है?" [20]इसके विपरीत, हे मनुष्य, तू कौन है जो परमेश्वर से प्रतिवाद करता है? क्या गढ़ी हुई वस्तु गढ़ने वाले से यह कहेगी कि, "तू ने मुझे ऐसा क्यों बनाया?" [21]क्या कुम्हार को मिट्टी पर यह अधिकार नहीं कि उसी मिट्टी के लोंदे से एक बर्तन को *आदरणीय उपयोग के लिए और दूसरे को †साधारण उपयोग के लिए बनाए? [22]यदि परमेश्वर ने अपना क्रोध दिखाने और अपनी सामर्थ प्रकट करने की इच्छा से विनाश के लिए तैयार किए गए क्रोध के बर्तनों की बड़े धीरज से सही, तो क्या हुआ? [23]और उसने यह इसलिए किया कि वह अपनी महिमा का धन दया के उन पात्रों पर प्रकट करे, जिन्हें उसने पहले से ही अपनी महिमा के लिए तैयार किया था, [24]अर्थात् हमें भी, जिन्हें उसने न केवल यहूदियों में से वरन् गैरयहूदियों में से भी बुलाया। [25]जैसा वह होशे की पुस्तक में भी कहता है: **"जो मेरी प्रजा न थी उसे मैं 'अपनी प्रजा' कहूँगा और जो प्रिया न थी उसे 'प्रिया' कहूँगा।** [26]**और ऐसा होगा कि जहां उनसे यह कहा गया था, 'तुम मेरी प्रजा नहीं हो,' वहीं वे 'जीवित परमेश्वर की सन्तान' कहलाएंगे।"**

7,8 *अक्षरशः, बीज   17 *अक्षरशः, में   21 *अक्षरशः, आदर के लिए †अक्षरशः, निरादर के लिए

[27]और यशायाह इस्राएल के विषय में पुकार कर कहता है, "**यद्यपि इस्राएल की सन्तानों की संख्या समुद्र के बालू के बराबर हो फिर भी थोड़े ही बचाए जाएंगे।** [28]**क्योंकि प्रभु पृथ्वी पर अपना वचन शीघ्र ही पूर्णतया कार्यान्वित करेगा।**" [29]जैसे यशायाह ने भविष्यद्वाणी की थी, "**सेनाओं का यहोवा यदि हमारे लिए कुछ *वंश न छोड़ता तो हम सदोम के सदृश हो गए होते, और अमोरा के समान ठहरे होते।**"

इस्राएल का अविश्वास

[30]तब हम क्या कहें? कि गैरयहूदियों ने, जो धार्मिकता की खोज नहीं करते थे, धार्मिकता प्राप्त कर ली, अर्थात् वह धार्मिकता जो विश्वास *से है; [31]परन्तु इस्राएली, धार्मिकता की व्यवस्था की खोज करते हुए, उस धार्मिकता की व्यवस्था तक नहीं पहुँचे। [32]ऐसा क्यों? क्योंकि उन्होंने विश्वास से नहीं, परन्तु कर्मों *से उसकी खोज की थी। उनकी खोज ऐसी थी मानो वह कर्मों से प्राप्त होती हो। **उन्होंने ठोकर के पत्थर से ठोकर खाई,** [33]जैसा लिखा है, "**देखो, मैं सिय्योन में एक ठोकर का पत्थर और ठेस की चट्टान रखता हूँ, और जो उस पर विश्वास करेगा वह *लज्जित न होगा।**"

10 भाइयो, मेरी हार्दिक अभिलाषा और परमेश्वर से उनके लिए प्रार्थना है कि वे उद्धार पाएं। [2]उनके लिए मेरी साक्षी है कि उनमें परमेश्वर के लिए धुन तो है, परन्तु ज्ञान के अनुसार नहीं। [3]क्योंकि परमेश्वर की धार्मिकता को न जानते हुए, और अपनी ही धार्मिकता की स्थापना करने का प्रयत्न करते हुए, उन्होंने अपने आप को परमेश्वर की धार्मिकता के आधीन नहीं किया। [4]क्योंकि प्रत्येक विश्वासी के निमित्त मसीह धार्मिकता के प्रति व्यवस्था का *अन्त है।

उद्धार सब के लिए

[5]क्योंकि मूसा लिखता है कि जो व्यक्ति उस धार्मिकता पर आचरण करता है जो व्यवस्था पर *आधारित है, तो वह उसी †धार्मिकता के द्वारा जीवित रहेगा। [6]परन्तु वह धार्मिकता जो विश्वास पर *आधारित है, ऐसा कहती है, "**अपने मन में यह न कहना, 'स्वर्ग पर कौन चढ़ेगा?'**—अर्थात् मसीह को उतार लाने के लिए—[7]या '**अधोलोक में कौन उतरेगा?'**—अर्थात् मसीह को मृतकों में से जिला कर ऊपर लाने के लिए"— [8]परन्तु वह क्या कहती है? "**वचन तेरे निकट है, तेरे मुंह में, तेरे हृदय में।**" अर्थात् विश्वास का वह वचन जिसका हम प्रचार करते हैं, [9]कि यदि तू अपने मुख से यीशु को प्रभु जान कर अंगीकार करे, और अपने मन में यह विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जीवित किया तो तू उद्धार पाएगा; [10]मनुष्य तो हृदय से विश्वास करता है, जिसका परिणाम धार्मिकता होता है, और मुंह से अंगीकार करता है जिसका परिणाम उद्धार होता है। [11]क्योंकि पवित्रशास्त्र कहता है, "**जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह लज्जित न होगा।**" [12]यहूदी

29 *अक्षरशः, बीज 30 *अक्षरशः, के द्वारा 32 *अक्षरशः, के लिए
33 *अक्षरशः, लज्जा में न पड़ेगा 4 *या, उद्देश्य
5 *अक्षरशः, के द्वारा, से †अक्षरशः, इससे 6 *अक्षरशः, के द्वारा, से

और यूनानी में कोई अन्तर नहीं है, क्योंकि वही प्रभु सब का प्रभु है, और उन सब के लिए जो उसको पुकारते हैं अत्यन्त धनी है। [13]क्योंकि, "**जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।**" [14]फिर वे उसे क्यों पुकारेंगे जिस पर उन्होंने विश्वास ही नहीं किया? और वे उस पर कैसे विश्वास करेंगे जिसके विषय में उन्होंने सुना ही नहीं? भला वे प्रचारक के बिना कैसे सुनेंगे? [15]और वे प्रचार कैसे करेंगे जब तक कि भेजे न जाएं? ठीक जैसा कि लिखा है, "उनके पांव कैसे सुहावने हैं जो भली बातों का सुसमाचार *लाते हैं!"

[16]परन्तु उन सभी ने सुसमाचार पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि यशायाह कहता है, "**हे प्रभु, किसने हमारे सन्देश पर विश्वास किया?**" [17]अत: विश्वास सुनने से, और सुनना *मसीह के वचन के द्वारा होता है। [18]परन्तु मैं कहता हूँ, क्या उन्होंने वास्तव में कभी नहीं सुना? उन्होंने अवश्य सुना है: "**उनके स्वर सारी पृथ्वी पर और उनका प्रचार *संसार के कोने कोने तक पहुँच गया है।**" [19]परन्तु मैं कहता हूँ, क्या इस्राएली नहीं ज़ानते थे? निश्चय वे जानते थे! सर्वप्रथम मूसा कहता है, "**जो एक जाति नहीं है, उसके द्वारा मैं तुम में जलन उत्पन्न करूँगा और एक मूढ़ जाति के द्वारा मैं तुम में क्रोध उत्पन्न करूँगा।**" [20]फिर यशायाह बड़े साहस के साथ कहता है: "**जो मुझे खोजते नहीं थे, उन्होंने मुझे पा लिया, और जो मेरे विषय में पूछते भी न थे, मैं उन पर प्रकट हो गया।**" [21]परन्तु इस्राएल के विषय में वह कहता है, "**दिन भर मैं अपने हाथों को अनाज्ञाकारी और हठी प्रजा की ओर बढ़ाए रहा।**"

इस्राएल के बचे हुए लोग

11 अत: मैं कहता हूँ, क्या परमेश्वर ने अपनी प्रजा को त्याग दिया? कदापि नहीं! क्योंकि मैं भी तो इस्राएली हूँ, इब्राहीम के वंश और बिन्यामीन के गोत्र से हूँ। [2]परमेश्वर ने अपनी प्रजा को त्याग नहीं दिया, जिसका उसे पूर्व ज्ञान था। क्या तुम नहीं जानते कि पवित्रशास्त्र एलिय्याह के विषय में क्या कहता है, कि वह परमेश्वर से इस्राएल के विरुद्ध कैसी विनती करता है? [3]"**हे प्रभु, उन्होंने तेरे नबियों को घात किया है, उन्होंने तेरी वेदियों को ढा दिया है। मैं ही अकेला बच गया हूँ, और वे मेरे भी प्राण के खोजी हैं।**" [4]परन्तु *परमेश्वर का प्रत्युत्तर क्या था? "**मैंने अपने लिए सात हज़ार पुरुषों को रख छोड़ा है, जिन्होंने बाअल के सम्मुख घुटने नहीं टेके।**" [5]ठीक उसी तरह वर्तमान समय में भी परमेश्वर के अनुग्रहमय चुनाव के अनुसार कुछ लोग शेष हैं। [6]यदि यह अनुग्रह से हुआ, तो फिर कर्मों के आधार पर कदापि नहीं, अन्यथा अनुग्रह, अनुग्रह ही न रहा। [7]तो क्या हुआ? इस्राएली जिसकी खोज में थे, वह उन्हें प्राप्त न हुआ, परन्तु उनको हुआ जो चुने हुए थे, और शेष कठोर कर दिए गए। [8]जैसा लिखा है, "**परमेश्वर ने उन्हें आज तक भारी नींद की आत्मा में डाल रखा है, ऐसी आंखें जो न देखें और ऐसे कान जो न सुनें।**" [9]दाऊद कहता है, "**उनका भोजन उनके लिए जाल और फन्दा और ठोकर**

15 *या, प्रचार करते हैं 17 *या, मसीह के सम्बन्ध में 18 *या, बसा हुआ संसार
*अक्षरश:, स्वर्गीय वाणी ने उससे क्या कहा

और दण्ड का कारण हो जाए। [10]उनकी आंखों में अंधेरा छा जाए कि न देखें, और उनकी पीठ सदा के लिए झुकी रहें।"

कलम लगाने का उदाहरण

[11]तब मैं कहता हूँ, क्या उन्होंने गिरने के लिए ठोकर खाई? कदापि नहीं! परन्तु उनके अपराध के कारण गैरयहूदियों में उद्धार आया कि उनमें जलन उत्पन्न करे। [12]अब यदि उनका अपराध संसार के लिए धन और उनका पतन गैरयहूदियों के लिए धन-सम्पत्ति ठहरा तो उनकी परिपूर्णता से क्या कुछ न होगा! [13]परन्तु मैं तो तुमसे जो गैरयहूदी हो, कह रहा हूँ। अब, जब कि मैं गैरयहूदियों के लिए प्रेरित हूँ, तो मैं अपनी सेवा को ऐसा महत्त्व देता हूँ, [14]कि मैं किसी तरह अपने *स्वदेशी भाइयों में जलन उत्पन्न कर सकूँ और उनमें से कुछ का उद्धार करवा सकूं। [15]क्योंकि यदि उनका परित्याग संसार के मेल का कारण हुआ तो उनका ग्रहण किया जाना मृतकों में से जी उठने के अतिरिक्त और क्या होगा? [16]क्योंकि यदि भेंट की प्रथम लोई पवित्र है तो सम्पूर्ण गूँधा हुआ आटा भी। यदि जड़ पवित्र है तो डालियां भी। [17]परन्तु यदि कुछ डालियां तोड़ दी गई हों, और तू जंगली जैतून होकर उसमें कलम लगाया गया और उनके साथ जैतून वृक्ष की *जड़ के उत्तम रस का भागी हो गया हो, तो [18]डालियों के प्रति अहंकार न कर; परन्तु यदि तू अहंकार करे तो स्मरण रख कि तू जड़ को नहीं परन्तु जड़ तुझे संभालती है। [19]तो तू कहेगा, "डालियां इसलिए तोड़ डाली गई कि मैं उसमें कलम लगाया जाऊँ।" [20]बिल्कुल ठीक। वे अपने अविश्वास के कारण तोड़ दी गईं और तू केवल अपने विश्वास के कारण स्थिर है। अभिमानी न हो, परन्तु भय मान, [21]क्योंकि यदि परमेश्वर ने स्वाभाविक डालियों को नहीं छोड़ा तो वह तुझे भी नहीं छोड़ेगा। [22]इसलिए परमेश्वर की दयालुता और कठोरता पर ध्यान दो: जिनका पतन हो गया उनके लिए कठोरता, परन्तु तेरे लिए तो दया—यदि तू उसकी दया में बना रहे—अन्यथा तू भी काट डाला जाएगा। [23]वे भी यदि अपने अविश्वास में बने न रहें, तो कलम लगा दिए जाएंगे; क्योंकि परमेश्वर उन्हें फिर से कलम लगा देने में समर्थ है। [24]क्योंकि यदि तू स्वाभाविक जंगली जैतून-वृक्ष में से काटा जाकर अपने स्वभाव के विरुद्ध एक अच्छे जैतून-वृक्ष में लगाया गया तो ये जो स्वाभाविक डालियां हैं, क्यों न अपने ही जैतून-वृक्ष में अवश्य लगाई जाएंगी?

समस्त इस्राएल का उद्धार

[25]क्योंकि भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम अपने आप को बुद्धिमान समझ कर इस रहस्य से अनभिज्ञ रहो कि इस्राएल का एक भाग तब तक कठोर बना रहेगा, जब तक गैरयहूदियों की संख्या पूर्ण न हो जाए, [26]और इस प्रकार समस्त इस्राएल उद्धार पाएगा; जैसा कि लिखा है, **"सिय्योन से उद्धारकर्त्ता आएगा, वह याकूब से अभक्ति दूर करेगा, [27]और उनके साथ यही *मेरी वाचा है, जब मैं उनके पापों को दूर कर दूंगा।"** [28]*सुसमाचार की दृष्टि से तो वे तुम्हारे लिए शत्रु हैं, परन्तु †परमेश्वर के चुनाव की

---

14 *अक्षरशः, मांस में 17 *अक्षरशः, जड़ की चिकनाई 27 *अक्षरशः, मेरी ओर से
28 *अक्षरशः, सुसमाचार के अनुसार †अक्षरशः, चुनाव के अनुसार

दृष्टि से वे पूर्वजों के कारण अति प्रिय हैं; [29]क्योंकि परमेश्वर के वरदान और बुलाहट अटल हैं। [30]जिस प्रकार पहिले कभी तुम परमेश्वर के अनाज्ञाकारी थे, परन्तु अब उनकी अनाज्ञाकारिता के कारण तुम पर दया हुई है, [31]इसी प्रकार अब वे भी अनाज्ञाकारी हो गए, जिस से कि उस दया के कारण जो तुम पर की गई है, उन पर भी अब दया की जाए। [32]क्योंकि परमेश्वर ने सब को अनाज्ञाकारिता में बन्द कर रखा है कि वह सब पर दया करे।

स्तुतिगान

[33]*अहा! परमेश्वर का धन, बुद्धि और ज्ञान कितने अगाध हैं! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम्य हैं!* [34]"**क्योंकि प्रभु के मन को किसने जाना है, अथवा उसका परामर्शदाता कौन हुआ? [35]अथवा किसने उसे सर्वप्रथम कुछ दिया है जो उसे लौटा दिया जाए?**" [36]क्योंकि उसी की ओर से, उसी के द्वारा और उसी के लिए सब कुछ है। उसी की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

जीवित बलिदान बनो

12 अतः हे भाइयो, मैं परमेश्वर की दया का स्मरण दिलाकर तुमसे आग्रह करता हूँ कि तुम अपने शरीरों को जीवित, पवित्र और ग्रहणयोग्य बलिदान कर के परमेश्वर को समर्पित कर दो। यही तुम्हारी आत्मिक आराधना है। [2]इस संसार के अनुरूप न बनो, परन्तु अपने मन के नए हो जाने से तुम परिवर्तित हो जाओ कि परमेश्वर की भली, ग्रहणयोग्य और सिद्ध इच्छा को तुम अनुभव से मालूम करते रहो।

[3]क्योंकि मैं उस अनुग्रह के द्वारा जो मुझे दिया गया है, तुम में से प्रत्येक से कहता हूँ कि कोई भी अपने आप को जितना समझना चाहिए उस से बढ़ कर न समझे; परन्तु परमेश्वर के द्वारा दिए गए विश्वास के परिमाण के अनुसार ही सुबुद्धि से अपने आप को समझे। [4]क्योंकि जैसे हमारे शरीर में अनेक अंग हैं और सभी अंगों का एक ही कार्य नहीं है, [5]वैसे ही हम भी जो अनेक हैं, मसीह में एक देह हैं, और एक दूसरे के अंग हैं। [6]जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें विभिन्न वरदान मिले हैं, तो जिसको *भविष्यद्वाणी का दान मिला है,* वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे; [7]यदि सेवा का, तो सेवा में लगा रहे; जो शिक्षक है, वह शिक्षा देने में; [8]या वह जो उपदेशक है, वह उपदेश देने में; दान देनेवाला *उदारता से दे; †नेतृत्व करने वाला परिश्रम से करे, दया करने वाला प्रसन्नतापूर्वक करे।

मसीही आचार-व्यवहार

[9]प्रेम निष्कपट हो। बुराई से घृणा करो, भलाई में लगे रहो। [10]भ्रातृ-भाव से एक दूसरे से प्रेम करो, परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो। [11]प्रयत्न करने में आलसी न हो, आत्मिक उत्साह से परिपूर्ण रहो, और प्रभु की सेवा करते रहो। [12]आशा में आनन्दित रहो, क्लेश में स्थिर रहो, प्रार्थना में लवलीन रहो। [13]*पवित्र लोगों की जो आवश्यकता हो उसमें उनकी सहायता करो। †पहुनाई करने में लगे रहो। [14]अपने सताने वालों को आशिष दो पर शाप न दो। [15]आनन्द

---

8 *या, सरलता से †या, सहायता देता है

13 *अर्थात्, सच्चे विश्वासी †अक्षरशः, पीछा करना

करने वालों के साथ आनन्द करो, और रोने वालों के साथ रोओ। [16]परस्पर एक सा मन रखो। अभिमानी न हो, परन्तु दीनों से मिलजुल कर रहो। अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न बनो। [17]बुराई के बदले किसी से बुराई न करो। उन बातों का आदर करो जो सब की दृष्टि में भली हैं। [18]जहां तक तुम से बन पड़े सब के साथ यथासम्भव शान्तिपूर्वक रहो। [19]प्रियो, अपना बदला कभी न लेना, परन्तु परमेश्वर के कोप को जगह दो, क्योंकि लिखा है, "**प्रभु कहता है कि बदला लेना मेरा काम है, बदला मैं दूंगा।**" [20]परन्तु, "**यदि तेरा शत्रु भूखा हो तो उसे खाना खिला और यदि प्यासा हो तो पानी पिला; क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा।**" [21]बुराई से न हारो, परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।

अधिकारियों के प्रति आधीनता

13 प्रत्येक *व्यक्ति राज्य के अधिकारियों के आधीन रहे, क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर की ओर से न हो, और जो हैं वे परमेश्वर के द्वारा ठहराए हुए हैं। [2]इसलिए जो अधिकार का सामना करता है उसने परमेश्वर की विधि का विरोध किया है, और जिन्होंने विरोध किया है वे स्वयं दण्ड के भागी होंगे। [3]क्योंकि अधिकारी अच्छे कार्य के लिए नहीं, परन्तु बुरे कार्य के लिए भय का कारण है। क्या तुम अधिकारी से निर्भय रहना चाहते हो? तो वही करो जो अच्छा है, जिस से अधिकारी के द्वारा तुम्हारी प्रशंसा हो, [4]क्योंकि वह तेरी भलाई के लिए परमेश्वर का सेवक है। परन्तु यदि तू वह करे जो बुरा है तो डर, क्योंकि वह तलवार व्यर्थ ही नहीं धारण करता। वह परमेश्वर का सेवक है, जो परमेश्वर के प्रकोप के अनुसार बुराई करने वाले को दण्ड देने वाला है। [5]अतः केवल प्रकोप के कारण ही नहीं, परन्तु विवेक के कारण भी आधीनता में रहना अनिवार्य है। [6]इसी कारण तुम भी कर चुकाते हो, क्योंकि अधिकारी परमेश्वर के सेवक हैं जो इसी सेवा में लगे हैं। [7]इसलिए जिसे जो देना है उसे दो; जिसे कर चुकाना है, उसका कर चुकाओ; जिसे चुंगी देना है, उसे चुंगी दो; जिस से डरना चाहिए, उस से डरो; जिसका आदर करना है, उसका आदर करो।

प्रेम व्यवस्था की पूर्ति है

[8]पारस्परिक प्रेम के अतिरिक्त अन्य किसी विषय में किसी के ऋणी न बनो; क्योंकि जो *पड़ोसी से प्रेम करता है, उसने व्यवस्था को पूर्ण किया है। [9]इस कारण, "**न तो व्यभिचार करना, न हत्या करना, न चोरी करना, न ही लालच करना,**" और इनके अतिरिक्त यदि अन्य और कोई आज्ञा हो, तो सबका सारांश इस कथन में पाया जाता है, "**अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।**" [10]प्रेम पड़ोसी की बुराई नहीं करता, इसलिए प्रेम करना व्यवस्था को पूर्ण करना है।

[11]समय का ध्यान रखते हुए ऐसा ही करो। अतः तुम्हारे लिए नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुँची है, क्योंकि जिस समय हमने विश्वास किया था, उसकी अपेक्षा अब हमारा उद्धार अधिक समीप है। [12]रात्रि प्रायः बीत चुकी है, दिन

1 *अक्षरशः, आत्मा 8 *अक्षरशः, दूसरे को

निकलने पर है। अतः हम अन्धकार के कार्यों को त्याग कर ज्योति के शस्त्र धारण करें। [13]जैसा दिन में शोभनीय है वैसा ही हमारा *आचरण हो, न कि रंगरेलियों, पियक्कड़पन, संभोग, कामुकता, झगड़े और ईर्ष्या में। [14]वरन् प्रभु यीशु मसीह को धारण कर लो और शारीरिक वासनाओं की तृप्ति में मन न लगाओ।

पाप का कारण न बनें

14 जो विश्वास में निर्बल हो उसे अपनी संगति में ले लो, परन्तु उसके विचारों पर विवाद करने के लिए नहीं। [2]एक का विश्वास है कि वह सब कुछ खा सकता है, परन्तु वह जो विश्वास में निर्बल है, केवल साग-पात ही खाता है। [3]खानेवाला, न-खानेवाले को तुच्छ न जाने; और न-खानेवाला, खानेवाले पर दोष न लगाए; क्योंकि परमेश्वर ने उसे ग्रहण कर लिया है। [4]तू कौन है जो दूसरे के *सेवक पर दोष लगाता है? उसका स्थिर रहना या गिर जाना उसके †स्वामी पर ही अवलम्बित है, और वह स्थिर कर दिया जाएगा, क्योंकि प्रभु उसे स्थिर करने में समर्थ है। [5]कोई तो एक दिन को दूसरे से बढ़कर मानता है, और दूसरा प्रत्येक दिन को एक समान मानता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने मन में इस विषय पर पूर्णरूप से निश्चित हो जाए। [6]वह जो विशेष दिन को मानता है, तो प्रभु के लिए मानता है; और जो खाता है, वह प्रभु के लिए खाता है, क्योंकि वह परमेश्वर को धन्यवाद देता है; और जो नहीं खाता है, वह प्रभु के लिए नहीं खाता है, और प्रभु का धन्यवाद करता है। [7]क्योंकि हम में से न तो कोई अपने लिए जीता है और न कोई अपने लिए मरता है। [8]क्योंकि यदि हम जीवित हैं तो प्रभु के लिए जीवित हैं या यदि हम मरते हैं तो प्रभु के लिए मरते हैं; इसलिए चाहे हम जीवित रहें या मरें, हम प्रभु ही के हैं। [9]इसी कारण मसीह मरा और फिर जी भी उठा कि वह मृतकों और जीवितों दोनों का प्रभु हो। [10]पर तू अपने भाई पर क्यों दोष लगाता है? या तू फिर अपने भाई को क्यों तुच्छ जानता है? क्योंकि हम सब परमेश्वर के न्यायासन के सामने खड़े होंगे। [11]क्योंकि लिखा है, "**प्रभु कहता है, मेरे जीवन की शपथ, प्रत्येक घुटना मेरे सम्मुख टिकेगा, और प्रत्येक जीभ परमेश्वर *की स्तुति करेगी।**" [12]इसलिए, हम में से प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा।

[13]अतः हम अब से एक दूसरे पर दोष न लगाएं, पर यह निश्चय कर लें कि कोई अपने भाई के मार्ग में बाधा या ठोकर खाने का कारण न बने। [14]मैं जानता हूँ और प्रभु यीशु में मुझे निश्चय है कि कोई वस्तु अपने आप में अशुद्ध नहीं है; परन्तु जो उसको अशुद्ध समझता है, उसके लिए वह अशुद्ध है। [15]क्योंकि तेरे भोजन के कारण यदि तेरे भाई को ठोकर लगती है तो तू अब प्रेम की रीति पर नहीं चल रहा है। जिसके लिए मसीह ने प्राण दिया, तू अपने भोजन के द्वारा उसे नाश न कर। [16]अतः जो तेरे लिए भला है, उसकी *निन्दा न की जाए। [17]क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना-पीना नहीं, परन्तु धार्मिकता, मेल और वह आनन्द है जो पवित्र आत्मा में है। [18]क्योंकि जो मनुष्य इस प्रकार मसीह की सेवा करता है वह

13 *अक्षरशः, चलन 4 *या, घर के नौकर †अक्षरशः, प्रभु 11 *या, को मानेगी 16 *अक्षरशः,

परमेश्वर को ग्रहणयोग्य एवं मनुष्यों में प्रशंसनीय ठहरता है। [19]इसलिए हम उन बातों में *संलग्न रहें जिनसे मेल-मिलाप होता है तथा एक दूसरे के जीवन का निर्माण होता है। [20]भोजन के लिए परमेश्वर का काम नष्ट न कर। सब वस्तुएं शुद्ध तो हैं, परन्तु उस मनुष्य के लिए बुरी हैं जो अपने खाने से ठोकर पहुँचाता है। [21]भला तो यह है कि तू न तो मांस खाए और न तो दाखरस पीए और न कोई ऐसा कार्य करे जिस से तेरे भाई को ठोकर लगे। [22]तेरा जो विश्वास हो, उसे परमेश्वर के सम्मुख अपने तक ही सीमित रख। धन्य है वह जो उस बात में जिसे वह ठीक समझता है, अपने आप को दोषी नहीं ठहराता। [23]परन्तु वह जो सन्देह कर के खाता है, वह दोषी ठहर चुका, क्योंकि वह विश्वास से नहीं खाता; और जो कुछ विश्वास से नहीं, वह पाप है।

दूसरों की उन्नति करो

15 हम बलवानों को चाहिए कि निर्बलों की निर्बलताओं को सहें, न कि अपने आप को प्रसन्न करें। [2]हम में से प्रत्येक अपने पड़ोसी को प्रसन्न करे कि उसकी भलाई और उन्नति हो। [3]क्योंकि मसीह ने भी अपने आप को प्रसन्न नहीं किया, परन्तु जैसा लिखा है— **"तेरे निन्दकों की निन्दा मुझ को सहनी पड़ी।"** [4]पूर्व-काल में जो कुछ लिखा गया था वह हमारी ही शिक्षा के लिए लिखा गया था जिस से धैर्य एवं पवित्रशास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा हम आशा रखें। [5]अब परमेश्वर जो धैर्य एवं प्रोत्साहन देता है, तुम्हें ऐसा वरदान दे कि तुम मसीह यीशु के अनुसार आपस में एक मन रहो, [6]तुम एकचित्त और एक स्वर होकर हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर की स्तुति करो।

[7]इसलिए एक दूसरे को ग्रहण करो जैसा मसीह ने भी *हमें परमेश्वर की महिमा के लिए ग्रहण किया। [8]इसलिए मैं कहता हूँ कि मसीह ख़तनावालों के लिए सेवक बना कि परमेश्वर की सच्चाई को प्रकट करे जिस से कि पूर्वजों को दी हुई प्रतिज्ञा दृढ़ हो, [9]और गैरयहूदियों के लिए कि वे परमेश्वर की दया के प्रति उसकी महिमा करें। जैसा लिखा है, **"इसलिए मैं गैरयहूदियों के मध्य *तेरी स्तुति करूँगा, और तेरे नाम का भजन गाऊँगा।"** [10]फिर वह कहता है, **"गैर-यहूदियो, उसकी प्रजा के साथ आनन्द मनाओ।"** [11]और फिर कहता है, **"हे समस्त गैरयहूदियो, प्रभु की स्तुति करो; सब जातियां उसकी प्रशंसा करें।"** [12]फिर यशायाह कहता है, **"यिशै का मूल प्रकट होगा और वह जो गैरयहूदियों पर राज्य करने के लिए खड़ा होगा, उस पर गैरयहूदी आशा रखेंगे।"** [13]अब आशा का परमेश्वर तुम्हें विश्वास करने में सम्पूर्ण आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण करे, जिस से पवित्र आत्मा की सामर्थ से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए।

गैरयहूदियों में पौलुस की सेवा

[14]हे भाइयो, जहां तक तुम्हारा सम्बन्ध है, मैं पूर्णतया आश्वस्त हूँ कि तुम स्वयं भलाई और समस्त ज्ञान से परिपूर्ण हो तथा एक दूसरे को चिताने के योग्य भी हो। [15]परन्तु मैंने तुम्हें कुछ विषयों पर पुनः स्मरण दिलाने के लिए

19 *बहुत से प्राचीन हस्तलेखों के अनुसार, संलग्न रहते हैं   7 *कुछ हस्तलेखों में, तुम्हें   9 *या, तुझे मानूंगा

बड़े हियाव के साथ लिखा है। यह उस अनुग्रह के कारण हुआ जो परमेश्वर ने मुझे दिया था, [16]कि गैरयहूदियों के लिए मसीह यीशु का सेवक बनूं और परमेश्वर के सुसमाचार की सेवा याजक के समान करूँ कि गैरयहूदी रूपी मेरी भेंट पवित्र आत्मा से पवित्र की जाकर ग्रहण की जाए। [17]अतः मुझे मसीह यीशु में उन बातों के विषय जो परमेश्वर से सम्बन्धित हैं, बड़ाई करने का कारण प्राप्त हुआ है। [18]उन बातों को छोड़, मैं अन्य किसी बात में कहने का साहस नहीं करूँगा जो मसीह में गैरयहूदियों की आज्ञाकारिता के लिए वचन और कर्म से, [19]चिन्हों और अद्भुत कार्य की सामर्थ से, और पवित्र आत्मा की सामर्थ से,मेरे ही द्वारा पूर्ण किए, यहां तक कि मैंने यरूशलेम से लेकर चारों ओर इल्लुरिकुम तक मसीह के सुसमाचार का पूरा पूरा प्रचार किया। [20]मेरे मन की आकांक्षा यह रही है कि जहां मसीह का नाम नहीं लिया गया, वहां सुसमाचार सुनाऊँ ऐसा न हो कि दूसरे की नींव पर घर बनाऊँ। [21]परन्तु जैसा लिखा है, "**जिन्हें उसका सुसमाचार नहीं पहुँचा, वे ही देखेंगे और जिन्होंने नहीं सुना वे ही समझेंगे।**"

रोम जाने की योजना

[22]इस कारण मैं तुम्हारे पास आने से बहुधा रुका रहा। [23,24]परन्तु अब इन प्रदेशों में मेरे लिए कोई स्थान नहीं रहा, और बहुत वर्षों से, जब भी मैं स्पेन जाऊँ, मुझे तुम्हारे पास आने की लालसा है। मुझे आशा है कि मैं तुम्हारे यहां से होता हुआ जाऊँगा कि तुम्हारी संगति का क्षण भर आनन्द उठाऊँ और तुम मुझे कुछ दूर आगे पहुँचा देना, [25]परन्तु अभी तो मैं *पवित्र लोगों की सेवा करने के लिए यरूशलेम जा रहा हूँ। [26]क्योंकि मैसीडोनिया और अखाया-वासियों ने उदारता से यरूशलेम के *पवित्र लोगों के मध्य कंगालों के लिए दान दिया। [27]उन्हें ऐसा करना अच्छा लगा, और वे उनके ऋणी हैं। क्योंकि यदि गैरयहूदी उनके आत्मिक कार्यों में सम्मिलित हुए हैं तो उन्हें भी उचित है कि भौतिक वस्तुओं से उनकी सेवा करें। [28]इसलिए, मैं यह कार्य पूर्ण कर के और उनको स्वयं ही *दान सौंप कर तुम्हारे यहां होता हुआ स्पेन चला जाऊँगा। [29]और मैं जानता हूँ कि जब मैं तुम्हारे पास आऊँगा तो मैं मसीह की आशिष की परिपूर्णता के साथ आऊँगा।

[30]अब हे भाइयो, हमारे प्रभु यीशु मसीह और पवित्र आत्मा के प्रेम के द्वारा मैं तुम से विनती करता हूं कि मेरे लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने में मेरे साथ लगे रहो, [31]जिससे मैं यहूदिया के अविश्वासियों से बचा रहूँ और मेरी यरूशलेम की सेवा पवित्र लोगों को मान्य हो, [32]कि मैं परमेश्वर की इच्छा से आनन्द के साथ तुम्हारे पास आऊँ और तुम्हारी संगति से विश्राम प्राप्त करूँ। [33]अब शान्ति का परमेश्वर तुम सब के साथ रहे। आमीन।

नमस्कार और शुभकामनाएं

16 मैं तुमसे अपनी बहिन फीबे के लिए विनती करता हूँ, जो किंख्रिया की कलीसिया की सेविका है, [2]कि तुम प्रभु में उसे इस प्रकार ग्रहण करो जैसे *पवित्र लोगों को करते हो, और यदि

25,26 *अर्थात्, सच्चे विश्वासियों 28 *अक्षरशः, फल 2 *अर्थात्, सच्चे विश्वासियों को

किसी कार्य में उसे तुम्हारी आवश्यकता हो तो उसकी सहायता करो, क्योंकि वह भी वहुतों की और मेरी भी सहायक रही है।

[3]प्रिस्का और अक्विला को जो मसीह यीशु में मेरे सहकर्मी हैं, नमस्कार, [4]जिन्होंने मेरी प्राण-रक्षा के लिए स्वयं अपना जीवन भी जोखिम में डाल दिया। न केवल मैं वरन् गैरयहूदियों की सारी कलीसियाएं भी उनका धन्यवाद करती हैं। [5]उस कलीसिया को भी नमस्कार जो उनके घर में है। मसीह के लिए *एशिया के प्रथम फल मेरे प्रिय इपैनितुस को नमस्कार। [6]मरियम को, जिसने तुम्हारे लिए बहुत परिश्रम किया है, नमस्कार। [7]मेरे कुटुम्बी अन्द्रनीकुस और *यूनियास जो मेरे साथ वन्दीगृह में थे, जो प्रेरितों में प्रख्यात हैं और मुझ से पहिले मसीह में थे, नमस्कार। [8]प्रभु में मेरे प्रिय अम्पलियातुस को नमस्कार। [9]मसीह में हमारे सहकर्मी उरवानुस को तथा मेरे प्रिय इस्तखुस को नमस्कार [10]अपिल्लेस को जो मसीह में खरा निकला, नमस्कार। अरिस्तुबुलुस के घराने को नमस्कार। [11]मेरे कुटुम्बी हेरोदियोन को नमस्कार। नरकिस्सुस के घराने के जो जन प्रभु में हैं उनको नमस्कार। [12]प्रभु में परिश्रम करनेवाली त्रुफेना और त्रुफोसा को नमस्कार। प्रिया परसिस को, जिसने प्रभु में कठिन परिश्रम किया है, नमस्कार। [13]प्रभु में चुने हुए रूफुस को और उसकी माता को, जो मेरी भी माता है, नमस्कार। [14]असुंक्रितुस, फिलगोन, हिर्मेस, पत्रुवास, हिर्मास और उनके साथ के भाइयों को नमस्कार। [15]फिलुलुगुस, यूलिया, नेर्युस और उस की बहिन उलुम्पास और उनके साथ के समस्त *सन्तों को नमस्कार। [16]पवित्र चुम्बन द्वारा आपस में नमस्कार करो। तुमको मसीह की समस्त कलीसियाओं की तरफ से नमस्कार।

[17]अब हे भाइयो, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि उस शिक्षा के विपरीत जो तुमने पाई है, उसमें जो लोग फूट और *रुकावट डालते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो और उनसे दूर रहो। [18]क्योंकि ये मनुष्य हमारे प्रभु यीशु मसीह के नहीं, परन्तु अपने पेट के दास हैं; और अपनी चिकनी-चुपड़ी वातों से सीधे-सादे लोगों को वहका देते हैं। [19]तुम्हारी आज्ञाकारिता का समाचार सव लोगों तक पहुँच गया है; इसलिए मैं तुम्हारे विषय में आनन्द कर रहा हूँ, परन्तु मैं यह चाहता हूँ कि तुम भलाई के लिए बुद्धिमान और बुराई के लिए भोले बने रहो। [20]शान्ति का परमेश्वर शीघ्र शैतान को तुम्हारे पैरों तले कुचलवा देगा। हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारे साथ हो।

[21]मेरा सहकर्मी तीमुथियुस और मेरे कुटुम्बी लूकियुस, यासोन एवं सोसिपत्रुस का तुमको नमस्कार। [22]इस पत्री के लिखने वाले मुझ तिरतियुस का, प्रभु में, तुमको नमस्कार। [23]गयुस का, जो मेरा और कलीसिया का आतिथ्य करनेवाला है, तुम्हें नमस्कार। इरास्तुस जो नगर-कोषाध्यक्ष है और भाई क्वारतुस का तुमको नमस्कार। *24

परमेश्वर की स्तुति

[25]जो तुमको मेरे सुसमाचार एवं

---

5 *अर्थात्, एशिया माइनर का पश्चिमी तटवर्तीय रोमी प्रान्त 7 *या, यूनिया (स्त्रीलिंग)
15 *देखिए, पद (2) 17 *अक्षरशः, ठोकर खाने के अवसर
24 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में पद (24) भी सम्मिलित है, हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारे साथ रहे, आमीन!

यीशु मसीह के संदेशानुसार स्थिर कर सकता है, उस भेद के प्रकाश के अनुसार जो सनातन से गुप्त था, [26]परन्तु अब प्रकट हुआ है और अनन्त परमेश्वर के आज्ञानुसार नबियों के शास्त्रों द्वारा सब जातियों को बताया गया है कि वे विश्वास से आज्ञाकारी बन जाएं। [27]उसी अद्वैत बुद्धिमान परमेश्वर की, यीशु मसीह के द्वारा, युगानुयुग महिमा हो। आमीन।

१ कुरिन्थियों

कुरिन्थियों के नाम पौलुस प्रेरित की पहिली पत्री

1 पौलुस, जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित होने के लिए बुलाया गया, और हमारे भाई सोस्थिनेस की ओर से, [2]परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस में है, अर्थात् उनके नाम जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए और उन सब के साथ जो प्रत्येक स्थान पर हमारे प्रभु यीशु के नाम से प्रार्थना करते हैं पवित्र लोग होने के लिए बुलाए गए हैं—वह हमारा और उनका भी प्रभु है:

[3]हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिले।

[4]मैं तुम्हारे विषय में अपने परमेश्वर के उस अनुग्रह के लिए जो मसीह यीशु में तुम को दिया गया, परमेश्वर का निरन्तर धन्यवाद करता हूँ, [5]कि तुम मसीह में प्रत्येक बात अर्थात् सम्पूर्ण वचन और समस्त ज्ञान में धनी किए गए—[6]जैसा कि मसीह के विषय की साक्षी तुम में प्रमाणित भी हुई—[7]यहां तक कि तुम में किसी आत्मिक वरदान का अभाव नहीं है, और तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रकट होने की प्रतीक्षा उत्सुकतापूर्वक करते रहते हो, [8]जो तुम्हें अन्त तक दृढ़ भी करेगा कि हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन में निर्दोष ठहरो। [9]परमेश्वर विश्वासयोग्य है, जिसके द्वारा तुम उसके पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की संगति में बुलाए गए हो।

कलीसिया में फूट

[10]अब हे भाइयो, मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से तुमसे आग्रह करता हूं कि तुम सब एक ही बात कहो, और तुम में फूट न

हो, परन्तु तुम्हारे मन और विचारों में पूर्ण एकता हो। [11]क्योंकि हे भाइयो, खलोए के घराने के द्वारा तुम्हारे विषय में मुझे बताया गया है कि तुम में परस्पर झगड़े चल रहे हैं। [12]मेरा तात्पर्य यह है कि तुम में से कोई कहता है, "मैं पौलुस का हूं," तो कोई, "मैं अपुल्लोस का हूं," और कोई, "मैं कैफा का हूं," तथा कोई कहता है, "मैं मसीह का हूं।" [13]*तो क्या मसीह विभाजित हो गया? क्या पौलुस तुम्हारे लिए क्रूस पर चढ़ाया गया? या तुम्हें पौलुस के नाम से बपतिस्मा मिला? [14]मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि मैंने क्रिस्पुस और गयुस के अतिरिक्त तुम में से किसी को बपतिस्मा नहीं दिया, [15]कि कोई मनुष्य यह न कहने पाए कि मुझे तेरे नाम से बपतिस्मा मिला। [16]और हां, मैंने स्तिफनास के कुटुम्ब को भी बपतिस्मा दिया; इन्हें छोड़, मैं नहीं जानता कि मैंने और किसी को बपतिस्मा दिया। [17]क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए नहीं, परन्तु सुसमाचार प्रचार के लिए भेजा है, वह भी वाकपटुता के अनुसार नहीं, ऐसा न हो कि मसीह का क्रूस व्यर्थ ठहरे।

क्रूस की कथा

[18]क्योंकि क्रूस की कथा नाश होने वालों के लिए मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पाने वालों के लिए परमेश्वर की सामर्थ है। [19]क्योंकि लिखा है, **"मैं ज्ञानियों के ज्ञान को नाश करूंगा, और बुद्धिमानों की बुद्धि को व्यर्थ कर दूंगा।"** [20]कहां रहा ज्ञानी? कहां रहा शास्त्री? और कहां रहा इस युग का विवादी? क्या परमेश्वर ने इस संसार के ज्ञान को मूर्खता नहीं ठहराया? [21]क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार यह संसार अपने ज्ञान से परमेश्वर को न जान सका, तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों का उद्धार करे। [22]क्योंकि यहूदी *चिन्ह मांगते हैं और यूनानी ज्ञान की खोज में रहते हैं, [23]परन्तु हम तो क्रूस पर चढ़ाए गए *मसीह का प्रचार करते हैं, जो यहूदियों की दृष्टि में ठोकर का कारण और गैरयहूदियों के लिए मूर्खता है, [24]परन्तु उनके लिए जो बुलाए हुए हैं, चाहे वे यहूदी हों या यूनानी, मसीह परमेश्वर की सामर्थ और परमेश्वर का ज्ञान है। [25]क्योंकि परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों के ज्ञान से अधिक ज्ञानवान है, और परमेश्वर की निर्बलता मनुष्यों के बल से अधिक बलवान है।

[26]हे भाइयो, अपने बुलाए जाने पर तो विचार करो कि शरीर के अनुसार तुम में से न तो बहुत बुद्धिमान, न बहुत शक्तिमान और न बहुत कुलीन बुलाए गए। [27]परन्तु परमेश्वर ने संसार के मूर्खों को चुन लिया है कि ज्ञानवानों को लज्जित करे, और परमेश्वर ने संसार के निर्बलों को चुन लिया है कि बलवानों को लज्जित करे, [28]और परमेश्वर ने संसार के निकृष्ट और तुच्छों को, वरन् उनको जो हैं भी नहीं चुन लिया, कि उन्हें जो हैं व्यर्थ ठहराए, [29]जिससे कि कोई प्राणी परमेश्वर के सामने घमण्ड न करे। [30]परन्तु उसी के कारण तुम मसीह यीशु में हो, जो हमारे लिए परमेश्वर की ओर से ज्ञान, धार्मिकता, पवित्रता और छुटकारा ठहरा, [31]कि जैसा लिखा है, "यदि कोई गर्व करे तो वह प्रभु में करे।"

---

13 *या, मसीह विभाजित है! 22 *अर्थात्, अद्भुत चिन्ह, प्रमाण 23 *अक्षरशः, ख्रिस्तौस, अर्थात् अभिषिक्त

अधिकार सहित प्रचार

2 भाइयो, जब मैं तुम्हारे पास परमेश्वर *के विषय में गवाही देता हुआ आया तो शब्दों या ज्ञान की उत्तमता के साथ नहीं आया। [2]क्योंकि मैंने यह ठान लिया था कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह वरन् क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूं। [3]मैं निर्बलता और भय के साथ थरथराता हुआ तुम्हारे साथ रहा। [4]मेरा सन्देश और मेरा प्रचार ज्ञान के लुभाने वाले शब्दों में नहीं था, परन्तु आत्मा और सामर्थ के प्रमाण में था, [5]जिससे कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं परन्तु परमेश्वर की सामर्थ पर आधारित हो।

पवित्र आत्मा से बुद्धि

[6]फिर भी हम समझदारों में ज्ञान की बातें सुनाते हैं, परन्तु यह ज्ञान न तो इस युग का और न ही इसके शासकों का है जो मिटने वाले हैं। [7]परन्तु हम परमेश्वर के उस ज्ञान के रहस्य का वर्णन करते हैं अर्थात् उस गुप्त ज्ञान का जिसे परमेश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिए ठहराया, [8]जिस ज्ञान को इस युग के शासकों में से किसी ने न समझा: यदि वे समझ गए होते तो महिमा के प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते। [9]पर जैसा लिखा है, "**जिन बातों को आंख ने नहीं देखा और न कान ने सुना, और जो मनुष्य के हृदय में नहीं समाईं उन्हीं को परमेश्वर ने अपने प्रेम करने वालों के लिए तैयार किया है।**" [10]परन्तु परमेश्वर ने उन्हें आत्मा द्वारा हम पर प्रकट किया, क्योंकि आत्मा सब बातों को यहां तक कि परमेश्वर की गूढ़ बातों को खोजता है। [11]मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य के विचारों को जानता है, केवल उस मनुष्य की आत्मा के जो उसमें है? इसी प्रकार परमेश्वर के आत्मा को छोड़ परमेश्वर के विचार कोई नहीं जानता।

[12]हमने संसार की आत्मा नहीं परन्तु वह आत्मा पायी है जो परमेश्वर की ओर से है जिससे कि हम उन बातों को जान सकें जिन्हें परमेश्वर ने हमें सेंतमेंत दिया है। [13]उन्हीं को हम मनुष्यों के ज्ञान के सिखाए हुए शब्दों में नहीं, परन्तु आत्मा के द्वारा सिखाए हुए शब्दों में, अर्थात् आत्मिक विचारों को आत्मिक शब्दों से मिलाकर व्यक्त करते हैं। [14]परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातों को ग्रहण नहीं करता क्योंकि वे उसके लिए मूर्खतापूर्ण हैं और वह उन्हें समझ नहीं सकता क्योंकि उनकी परख आत्मिक रीति से होती है। [15]परन्तु वह जो आत्मिक है सब कुछ परखता है तौभी वह स्वयं किसी मनुष्य के द्वारा परखा नहीं जाता। [16]**क्योंकि प्रभु का मन किसने जाना है कि उसे सिखाए?** परन्तु हम में मसीह का मन है।

दलबन्दी की भर्त्सना

3 भाइयो, मैं तुमसे ऐसे बातें न कर सका जैसे आत्मिक लोगों से, परन्तु जैसे शारीरिक लोगों से, और उनसे जो मसीह में बालक हैं। [2]मैंने तुम्हें दूध पिलाया—अन्न नहीं खिलाया क्योंकि तुम इसे पचा नहीं सकते थे। वास्तव में, तुम अभी तक पचा नहीं सकते, [3]क्योंकि तुम अब तक शारीरिक हो। जबकि तुम में द्वेष और झगड़े हैं, तो क्या तुम शारी-

1 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में: के रहस्य का प्रचार करता...

रिक नहीं? और क्या तुम्हारा आचरण साधारण मनुष्यों की तरह नहीं? [4]क्योंकि जब एक कहता है, "मैं पौलुस का हूं," और दूसरा, "मैं अपुल्लोस का हूं," तो क्या तुम मनुष्य ही न हुए? [5]तो फिर अपुल्लोस क्या है? और पौलुस क्या है? केवल सेवक, जिनके द्वारा तुमने विश्वास किया, जैसा कि प्रभु ने प्रत्येक को अवसर प्रदान किया। [6]मैंने बोया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया। [7]अतः न तो बोने वाला कुछ है, और न ही सींचने वाला, परन्तु बढ़ानेवाला परमेश्वर ही सब कुछ है। [8]बोनेवाला और सींचने वाला दोनों एक समान हैं, परन्तु प्रत्येक अपने ही परिश्रम के अनुसार प्रतिफल पाएगा। [9]क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर *का खेत हो और परमेश्वर का भवन हो।

[10]परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार जो मुझे प्रदान किया गया है, मैंने एक कुशल राजमिस्त्री की भांति नींव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति सावधान रहे कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है। [11]क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता। [12]यदि कोई मनुष्य इस नींव पर सोना, चांदी, बहुमूल्य पत्थर, काठ या घास-फूस से निर्माण करे, [13]तो प्रत्येक मनुष्य का कार्य प्रकट हो जाएगा। वह दिन उसे दिखाएगा, क्योंकि वह दिन अग्नि के साथ प्रकट किया जाएगा, और वह अग्नि ही प्रत्येक मनुष्य के कार्य को परखेगी। [14]यदि किसी मनुष्य का निर्मित कार्य जो उसने किया है स्थिर रहेगा तो उसे प्रतिफल मिलेगा। [15]यदि किसी व्यक्ति का कार्य जल जाएगा तो वह हानि उठाएगा, परन्तु वह स्वयं बच जाएगा, फिर भी मानो आग से जलते जलते।

[16]क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है? [17]यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नष्ट करे तो परमेश्वर उसे नष्ट करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो।

[18]कोई अपने आप को धोखा न दे। यदि तुम में से कोई अपने आप को इस युग में में बुद्धिमान समझता है तो वह मूर्ख बने जिस से कि बुद्धिमान बन जाए। [19]क्योंकि इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के समक्ष मूर्खता है, जैसा लिखा है, "**वही है जो बुद्धिमानों को उनकी चतुराई में उलझा देता है,**" [20]और यह भी, "**प्रभु ज्ञानियों के तर्क-वितर्क को समझता है, कि वे व्यर्थ हैं।**" [21]इसलिए मनुष्यों पर कोई घमण्ड न करे, क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है, [22]चाहे पौलुस हो या अपुल्लोस या कैफा, चाहे संसार हो या जीवन या मृत्यु, चाहे वर्तमान बातें हों या आने वाली बातें—यह सब कुछ तुम्हारा है, [23]और तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर का है।

प्रेरित, परमेश्वर के भण्डारी

4 मनुष्य हमें मसीह के सेवक और परमेश्वर के रहस्यों का भण्डारी समझे। [2]इस से बढ़कर इस विषय में भण्डारी के लिए आवश्यक है कि वह विश्वासयोग्य निकले। [3]परन्तु मेरे लिए यह बहुत छोटी बात है कि तुम या कोई मानवीय न्यायालय मेरा न्याय करे। सच तो यह है कि मैं स्वयं अपना न्याय

9 *या, की खेती

नहीं करता। [4]मेरा मन मुझे किसी वात में दोषी नहीं ठहराता, फिर भी इस से मैं निर्दोष नहीं ठहरता, परन्तु मेरा न्याय करने वाला प्रभु है। [5]इसलिए, समय से पहिले किसी वात का न्याय न किया करो, वरन् जव तक प्रभु न आए तव तक ठहरे रहो, क्योंकि वह उन वातों को जो अन्धकार में छिपी हैं प्रकाश में लाएगा, और मनुष्यों की मनोभावनाओं को प्रकट करेगा। तव प्रत्येक मनुष्य की प्रशंसा परमेश्वर की ओर से होगी।

[6]हे भाइयो, मैंने इन वातों का वर्णन तुम्हारे लिए दृष्टान्त के रूप में अपने और अपुल्लोस पर लागू किया है, कि तुम हम से यह सीखो कि उन वातों से जो लिखी गई हैं आगे न वढ़ो, जिससे कि तुम में से कोई एक के पक्ष में दूसरे की उपेक्षा करके घमण्ड न करे। [7]क्योंकि कौन तुझे दूसरे से उत्तम समझता है? और तेरे पास क्या है जो तुझे नहीं मिला? यदि वह तुझे मिला है तो फिर घमण्ड क्यों करता है, मानो तुझे मिला ही नहीं? [8]तुम तो पहिले ही तृप्त हो चुके, तुम तो पहिले ही धनी हो गए, तुम हमारे बिना राजा बन चुके, भला होता कि तुम सचमुच राजा बन जाते जिससे कि हम भी तुम्हारे साथ राज्य करते। [9]क्योंकि मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर ने हम प्रेरितों को जुलूस के अन्त में रखा, उन मनुष्यों के समान जिन पर मृत्यु-दण्ड की आज्ञा हो चुकी हो, क्योंकि हम समस्त सृष्टि और स्वर्गदूतों और मनुष्यों के लिए तमाशा बन चुके हैं। [10]हम मसीह के निमित्त मूर्ख हैं, परन्तु तुम मसीह में वुद्धिमान हो। हम निर्वल हैं, परन्तु तुम वलवान हो। तुम आदरणीय हो, परन्तु हमारा आदर ही नहीं। [11]हम इस घड़ी तक भूखे-प्यासे व चिथड़ों में हैं, हमारे साथ वुरी तरह व्यवहार किया जाता है और हम मारे मारे फिरते हैं। [12]हम अपने हाथों से कठिन परिश्रम करते हैं। जव हमारी निन्दा की जाती है तो हम आशिष देते हैं। जव हम सताए जाते हैं तो सहते हैं। [13]जव हम वदनाम किए जाते हैं तो मेल करने का प्रयत्न करते हैं। हम अव तक मानो संसार का मैल व सव वस्तुओं का कूड़ा-करकट वने हुए हैं।

चेतावनी

[14]मैं तुम्हें लज्जित करने के लिए नहीं परन्तु अपने प्रिय वालक जानते हुए ये वातें लिख कर चेतावनी देता हूं। [15]यद्यपि मसीह में तुम्हारे असंख्य शिक्षक हैं, फिर भी तुम्हारे अनेक पिता नहीं होते। क्योंकि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा मैं तुम्हारा पिता वना। [16]अत: मैं तुम से आग्रह करता हूं कि तुम मेरा अनुकरण करो। [17]इसी कारण मैंने तीमुथियुस को, जो प्रभु में मेरा प्रिय और विश्वासयोग्य पुत्र है, तुम्हारे पास भेजा है। वह तुम्हें मसीह में मेरे आचरण का स्मरण कराएगा, जैसे कि मैं हर जगह, प्रत्येक कलीसिया को शिक्षा दिया करता हूं। [18]कुछ लोग घमण्ड से ऐसे फूल गए हैं मानो अब मैं तुम्हारे पास आऊंगा ही नहीं। [19]परन्तु यदि प्रभु की इच्छा हुई तो मैं तुम्हारे पास शीघ्र आऊंगा, और घमण्डियों की वातों का नहीं, परन्तु उनकी सामर्थ का पता लगा लूंगा। [20]क्योंकि परमेश्वर का राज्य वातों में नहीं, वरन् सामर्थ में है। [21]तुम्हारी क्या इच्छा है? क्या मैं तुम्हारे पास छड़ी लेकर आऊं या प्रेम और नम्रता की आत्मा से?

कुकर्मी को बहिष्कृत करो

5 यह वास्तव में सुनने में आया है कि तुम्हारे मध्य व्यभिचार होता है, और ऐसा व्यभिचार जो गैरयहूदियों में भी नहीं होता, अर्थात् एक मनुष्य अपने पिता की पत्नी को रखता है। [2]पर तुम घमण्ड से फूल गए हो, *और तुम इसके बदले शोकित नहीं होते, जिससे कि ऐसा कार्य करने वाला तुम्हारे मध्य से निकाला जाता। [3]जहां तक मेरा सम्बन्ध है यद्यपि मैं शरीर में तो नहीं फिर भी आत्मा में तुम्हारे मध्य उपस्थित हूं, और मानो उपस्थित रहकर ऐसे घृणित कार्य करने वाले व्यक्ति के विरुद्ध अपनी ओर से यह निर्णय दे चुका हूं कि [4]जब तुम हमारे प्रभु यीशु के नाम में एकत्रित हो, और *आत्मा में मैं भी तुम्हारे साथ, तो हमारे प्रभु यीशु की सामर्थ से [5]ऐसा मनुष्य शरीर के विनाश के लिए शैतान को सौंपा जाए, कि उसकी आत्मा प्रभु *यीशु के दिन में उद्धार पाए। [6]तुम्हारा घमण्ड करना अच्छा नहीं है। क्या तुम नहीं जानते कि थोड़ा सा खमीर पूरे गूंधे आटे को खमीरा कर देता है? [7]पुराना खमीर निकालकर अपने आप को शुद्ध करो कि ऐसा नया गूंधा अर्थात् अखमीरी आटा बन जाओ, जैसा कि तुम वास्तव में हो। क्योंकि हमारे फसह का मेम्ना मसीह भी बलिदान हुआ है। [8]इसलिए हम न तो पुराने खमीर से, न बुराई व दुष्टता के खमीर से, परन्तु निष्कपटता और सच्चाई की अखमीरी रोटी से फसह मनाएं।

[9]मैंने अपनी पत्री में तुम्हें लिखा है कि व्यभिचारी लोगों की संगति न करना। [10]यह नहीं कि तुम इस संसार के व्यभिचारियों, लोभियों, लुटेरों या मूर्तिपूजकों से संगति न रखो, तब तो तुम्हें संसार से निकल जाना पड़ता। [11]परन्तु मैंने वास्तव में यह लिखा है कि यदि कोई व्यक्ति भाई कहला कर व्यभिचारी, लोभी, मूर्तिपूजक, गाली देने वाला, पियक्कड़ या लुटेरा हो तो उसकी संगति न करना, वरन् ऐसे व्यक्ति के साथ भोजन भी न करना। [12]क्योंकि मुझे बाहर वालों का न्याय करने से क्या काम? क्या तुम्हें उन्हीं का न्याय नहीं करना है जो कलीसिया में हैं? [13]बाहर वालों का न्याय तो परमेश्वर *करता है। परन्तु तुम ऐसे कुकर्मी को अपने बीच में से निकाल दो।

आपसी झगड़ों का फैसला

6 जब तुम्हारे मध्य आपस में झगड़ा होता है तो क्या तुम में से ऐसा कोई है जो पवित्र लोगों के पास जाने के बदले अधर्मियों से न्याय करवाने का दुस्साहस करता है? [2]क्या तुम नहीं जानते कि पवित्र लोग जगत का न्याय करेंगे? और यदि तुम्हारे द्वारा संसार का न्याय किया जाएगा तो क्या तुम इन छोटे छोटे झगड़ों का निर्णय करने के योग्य नहीं हो? [3]क्या तुम नहीं जानते कि हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे? तो क्या हम इन सांसारिक बातों का न्याय करने के योग्य नहीं? [4]फिर जब तुम्हारे मध्य सांसारिक बातों के लिए न्यायालय हैं, क्या तुम ऐसे व्यक्तियों को न्यायी नियुक्त करते हो जिनका कलीसिया में कोई महत्व नहीं? [5]मैं तुम्हें लज्जित करने के लिए यह कह रहा हूं। क्या यह सच है कि तुम्हारे मध्य

---

2 *या, क्या...शोकित नहीं हो? 4 *अक्षरशः, मेरी आत्मा, तो हमारे प्रभु...
5 *'यीशु' शब्द कुछ हस्तलेखों के अनुसार इस पद में नहीं मिलता 13 *या, करेगा

एक भी वुद्धिमान नहीं जो अपने भाइयों के आपसी झगड़े सुलझा सके? [6]क्या भाई अपने भाई पर मुकद्दमा चलाता है और वह भी अविश्वासियों के सम्मुख? [7]तव तो वास्तव में तम्हारी पहिली हार यही है कि तुम्हारे आपस में मुकद्दमे चलते हैं। इसकी अपेक्षा तुम अन्याय क्यों नहीं सह लेते? तुम ही छल क्यों नहीं सह लेते? [8]इसके विपरीत तुम स्वयं ही अन्याय और छल करते हो, और वह भी अपने भाइयों के साथ! [9]क्या तुम नहीं जानते कि दुष्ट लोग परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी न होंगे? धोखा न खाओ: न व्यभिचारी, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न कामातुर, न पुरुपगामी, [10]न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गालियां वकने वाले, और न लुटेरे, परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी होंगे। [11]और तुम में से कुछ ऐसे ही थे, परन्तु तुम अव प्रभु यीशु मसीह के नाम में और हमारे परमेश्वर के आत्मा के द्वारा धोए गए, पवित्र किए गए और धर्मी ठहराए गए।

देह प्रभु की महिमा के लिए है

[12]सब वस्तुएं मेरे लिए उचित तो हैं, परन्तु सब वस्तुएं हितकर नहीं। सब वस्तुएं मेरे लिए उचित तो हैं, परन्तु मैं किसी वस्तु के आधीन न होऊंगा। [13]भोजन पेट के लिए और पेट भोजन के लिए है, परन्तु परमेश्वर इन दोनों का अन्त कर देगा। फिर भी देह व्यभिचार के लिए नहीं, परन्तु प्रभु के लिए है, और प्रभु देह के लिए है। [14]परमेश्वर ने न केवल प्रभु को ही जिला उठाया, वरन् वह हमें भी वैसे ही अपनी सामर्थ से जिला उठाएगा। [15]क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे शरीर मसीह के अंग हैं? तो क्या मैं मसीह के अंगों को लेकर वेश्या के अंग वना दूं? कदापि नहीं! [16]या क्या तुम यह नहीं जानते कि वह जो वेश्या से संयोग करता है उसके साथ एक तन हो जाता है? क्योंकि वह कहता है, **"वे दोनों एक तन होंगे।"** [17]परन्तु वह जो प्रभु से संगति करता है उसके साथ एक आत्मा हो जाता है। [18]व्यभिचार से भागो। अन्य सारे पाप जो मनुष्य करता है देह के वाहर होते हैं, परन्तु व्यभिचारी तो अपनी देह के विरुद्ध पाप करता है। [19]क्या तुम नहीं जानते कि तुम में से प्रत्येक की देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुम में है, और जिसे तुमने परमेश्वर से पाया है, और कि तुम अपने नहीं हो? [20]क्योंकि तुम मूल्य देकर खरीदे गए हो: इसलिए अपने शरीर के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।

संयम और विवाह

7 अव उन वातों के विषय में जो तुमने लिखीं, अच्छा तो यह है कि पुरुष, स्त्री को न छुए। [2]परन्तु व्यभिचार से बचने के लिए प्रत्येक पुरुष की अपनी पत्नी और प्रत्येक स्त्री का अपना पति हो। [3]पति अपनी पत्नी के प्रति और इसी प्रकार पत्नी अपने पति के प्रति कर्तव्य निभाए। [4]पत्नी को अपनी देह पर अधिकार नहीं, पर उसके पति को है; इसी प्रकार पति को अपनी देह पर अधिकार नहीं, पर उसकी पत्नी को है। [5]एक दूसरे को इस अधिकार से वंचित न करो, पर केवल आपसी सहमति से कुछ समय तक के लिए अलग रहो कि प्रार्थना हेतु अवसर मिले, और फिर एक साथ हो जाओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे असंयम के कारण शैतान तुम्हारी परीक्षा करे। [6]परन्तु मैं अनुमति के रूप में यह कहता हूँ, आदेश

के रूप में नहीं। [7]*फिर भी मैं चाहता हूं कि सब मनुष्य ऐसे ही हों जैसा मैं स्वयं हूं। परन्तु, प्रत्येक को परमेश्वर की ओर से विशेष वरदान मिला है, किसी को एक प्रकार का तो किसी को दूसरे प्रकार का।

[8]परन्तु मैं अविवाहितों और विधवाओं से कहता हूं कि उनके लिए ऐसा ही रहना अच्छा है, जैसा मैं हूं। [9]परन्तु यदि वे संयम न कर सकें तो विवाह कर लें, क्योंकि विवाह करना कामातुर रहने से उत्तम है। [10]परन्तु विवाहितों को मैं नहीं, वरन् प्रभु यह आदेश देता है, कि पत्नी अपने पति को न त्यागे। [11]परन्तु यदि वह त्याग भी दे तो अविवाहित रहे; या पुनः अपने पति से मेल कर ले। और पति भी अपनी पत्नी को न त्यागे। [12]शेष मनुष्यों से, प्रभु नहीं, वरन् मैं कहता हूं, कि यदि किसी भाई की पत्नी अविश्वासिनी हो और उसके साथ रहने को सहमत हो, तो वह उसे न त्यागे। [13]यदि किसी स्त्री का पति अविश्वासी हो, और उसके साथ रहने को सहमत हो, तो वह पति को न त्यागे। [14]क्योंकि अविश्वासी पति अपनी पत्नी के कारण पवित्र ठहरता है, और अविश्वासिनी पत्नी *अपने विश्वासी पति के कारण पवित्र ठहरती है, अन्यथा तुम्हारे बाल-बच्चे अशुद्ध होते, परन्तु अब तो वे पवित्र हैं। [15]यदि अविश्वासी अलग होता है तो उसे अलग होने दो। ऐसी परिस्थिति में कोई भाई या बहिन बन्धन में नहीं है, परन्तु परमेश्वर ने *हमें मेल-मिलाप के लिए बुलाया है। [16]क्योंकि, हे पत्नी, तू क्या जानती है कि तू अपने पति का उद्धार करा लेगी? या हे पति, तू क्या जानता है कि तू अपनी पत्नी का उद्धार करा लेगा?

अविवाहित और विधवाएं

[17]प्रभु ने जैसा जिसको दिया है, और परमेश्वर ने जैसा जिसको बुलाया है, वह वैसा ही चले। मैं सब कलीसियाओं को यही आदेश देता हूं। [18]क्या कोई खतने की दशा में बुलाया गया है? वह खतनाहीन न बने। क्या कोई खतनाहीन दशा में बुलाया गया है? वह खतना न कराए। [19]न खतना कुछ है और न खतनारहित होना, परन्तु परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना ही मुख्य बात है। [20]जो व्यक्ति जिस *दशा में बुलाया गया हो, वह उसी में रहे। [21]क्या तू दासता में बुलाया गया है? इसकी चिन्ता न कर। परन्तु यदि तू स्वतन्त्र हो सके तो ऐसा ही कर। [22]क्योंकि जो दासता की दशा में प्रभु में बुलाया गया है वह प्रभु का स्वतन्त्र जन है। इसी प्रकार जो स्वतन्त्रता की दशा में बुलाया गया है वह मसीह का दास है। [23]तुम दाम देकर मोल लिए गए हो, अतः मनुष्यों के दास न बनो। [24]हे भाइयो, प्रत्येक मनुष्य जिस दशा में बुलाया गया, वह उसी में परमेश्वर के साथ रहे।

[25]अब, कुंवारियों के सम्बन्ध में, प्रभु की ओर से मुझे कोई आज्ञा नहीं मिली। परन्तु प्रभु की दया से विश्वासयोग्य होने के कारण, मैं अपनी सम्मति देता हूं। [26]मेरे विचार से *वर्तमान कठिन परिस्थिति में पुरुष के लिए यही अच्छा है कि वह जिस दशा में है उसी में रहे। [27]क्या तेरे पास पत्नी है? उस से मुक्त होने का प्रयत्न न कर। क्या तेरे पास पत्नी नहीं?

---

7 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में 'फिर भी' के स्थान पर 'क्योंकि' मिलता है 14 *अक्षरशः, उस भाई
15 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में, तुम्हें 20 *अक्षरशः, बुलाहट 26 *या, आने वाली

तू उस की खोज न कर। [28]परन्तु यदि तू विवाह करे तो पाप नहीं करता। यदि कुंवारी ब्याही जाए, तो पाप नहीं करती। फिर भी ऐसों को इस *जीवन में कष्ट होगा, और मैं तुम्हें बचाना चाहता हूं। [29]परन्तु, हे भाइयो, मैं कहता हूं कि समय कम किया गया है, इसलिए अब से जिनकी पत्नी हों वे ऐसे रहें मानो कि उनकी पत्नी नहीं, [30]और रोने वाले ऐसे हों मानो रोते नहीं, और आनन्द करने वाले ऐसे हों मानो आनन्द नहीं करते। और जो मोल लेते हैं वे ऐसे हों मानो उनके पास कुछ नहीं है। [31]और संसार का उपभोग करने वाले ऐसे हों मानो वे उसमें लिप्त नहीं; क्योंकि इस संसार की रीति और व्यवहार बदलते जाते हैं। [32]परन्तु मैं यह चाहता हूं कि तुम चिन्तामुक्त रहो। अविवाहित पुरुष प्रभु की बातों की चिन्ता करता है कि वह प्रभु को कैसे प्रसन्न करे, [33]पर विवाहित पुरुष सांसारिक बातों की चिन्ता करता है कि अपनी पत्नी को कैसे प्रसन्न करे, [34]*और उसका ध्यान बंट जाता है। और जो अविवाहिता या कुंवारी है, उसे प्रभु की बातों की चिन्ता रहती है, कि वह देह और आत्मा दोनों में पवित्र हो; परन्तु जो विवाहिता है उसको सांसारिक बातों की चिन्ता रहती है, कि अपने पति को कैसे प्रसन्न रखे। [35]मैं ये बातें तुम्हारे ही लाभ के लिए कहता हूं— तुम्हें रोकने के लिए नहीं, वरन् इसलिए कि जो शोभनीय है, वही हो और तुम्हारा मन प्रभु की सेवा में निर्विघ्न लगा रहे।

*[36]यदि कोई समझता है कि वह अपनी कुंवारी कन्या के प्रति जिसकी यौवनावस्था समाप्त हो रही है, अनुचित व्यवहार कर रहा है, और वह यह भी अनुभव करता है कि उसका विवाह हो जाना चाहिए तो जैसा वह चाहता है, वैसा ही करे। वे ब्याह दी जाएं, इसमें कोई पाप नहीं। *[37]जो किसी प्रकार के दबाव में न आकर अपने मन में दृढ़ रहता है और जिसे अपने इच्छानुसार कार्य करने का अधिकार है और उसने अपने मन में अपनी कुंवारी कन्या को अविवाहित रखने का निश्चय कर लिया है, वह अच्छा करता है। *[38]अत: जो अपनी कन्या का विवाह कर देता है वह अच्छा करता है, परन्तु जो विवाह नहीं करता वह और भी अच्छा करता है। [39]जब तक किसी स्त्री का पति जीवित है तब तक वह उस से बंधी हुई है, परन्तु यदि उसका पति मर चुका है तो वह स्वतन्त्र है कि जिस से चाहे विवाह कर ले, परन्तु केवल प्रभु में। [40]पर मेरे विचार से जैसी वह है यदि वैसी ही रहे तो और भी धन्य है, और मैं समझता हूं कि मुझ में भी परमेश्वर का आत्मा है।

मूर्तियों को चढ़ाए गए चढ़ावे

8 मूर्तियों के लिए बलि की हुई वस्तुओं के विषय में: हम जानते हैं कि हम सब को ज्ञान है। ज्ञान घमण्डी बनाता है, परन्तु प्रेम से उन्नति होती है।

---

28 *अक्षरश:, शरीर 34 *कुछ हस्तलेखों में इस पद का पहिला हिस्सा इस प्रकार पाया जाता है: और पत्नी तथा कुंवारी में भी अन्तर है। अविवाहिता को प्रभु की बातों की चिन्ता... 36-38 *इन पदों का अनुवाद यह भी हो सकता है: [36]यदि कोई समझता है कि वह अपनी कुंवारी (मंगेतर) के प्रति, जो युवती हो चुकी है, अनुचित व्यवहार कर रहा है तो वह जैसा आवश्यक समझे अपने इच्छानुसार वैसा ही करे, वह पाप नहीं करता—वे विवाह कर लें। [37]परन्तु जो अपने मन में दृढ़ रहता है और किसी के दबाव में नहीं, परन्तु उसे अपनी इच्छा पर पूर्ण अधिकार है, और उसने अपने मन में अपनी (मंगेतर को) कुंवारी रखने का निश्चय कर लिया है, वह अच्छा करता है। [38]अत: जो अपनी कुंवारी मंगेतर से विवाह कर लेता है वह अच्छा करता है, परन्तु जो उससे विवाह नहीं करता वह और भी अच्छा करता है।

[2]यदि कोई समझे कि मैं कुछ जानता हूं, तो जैसा जानना चाहिए उसने वैसा अब तक नहीं जाना है। [3]परन्तु यदि कोई परमेश्वर से प्रेम करता है तो परमेश्वर उसे जानता है। [4]अतः मूर्तियों के सामने बलि की गई वस्तुओं के खाने के विषय में : हम जानते हैं कि संसार में मूर्ति का कोई अस्तित्व नहीं, और एक को छोड़ कोई परमेश्वर नहीं। [5]यद्यपि आकाश और पृथ्वी पर तथाकथित बहुत से देवता हैं, जैसे कि बहुत से देवता और प्रभु हैं भी, [6]फिर भी हमारे लिए तो एक ही परमेश्वर है, अर्थात् पिता, जिसकी ओर से सब कुछ है और जिसके लिए हम भी हैं। एक ही प्रभु यीशु मसीह है, जिसके द्वारा हम भी हैं।

[7]परन्तु सब मनुष्यों को यह ज्ञान नहीं है, पर कुछ लोग मूर्ति के सम्पर्क में रहने के कारण अब तक बलि की वस्तु ऐसे खाते हैं मानो सचमुच मूर्ति के सामने बलि की गई हो, और उनका विवेक निर्बल होने के कारण अशुद्ध हो जाता है। [8]परन्तु भोजन हमें परमेश्वर के निकट नहीं पहुंचाता। यदि हम न खाएं तो हमारी कुछ घटी नहीं और यदि खाएं तो हमारी कुछ बढ़ती नहीं। [9]सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी यह *स्वतन्त्रता निर्बलों के लिए ठोकर का कारण बन जाए। [10]यदि कोई व्यक्ति तुझ जैसे ज्ञानी को मूर्ति के मन्दिर में भोजन करते देखे और वह निर्बल हो तो क्या इस से उसके विवेक को मूर्ति के सामने बलि की हुई वस्तुएं खाने का साहस न होगा? [11]क्योंकि तेरे ज्ञान के द्वारा वह जो निर्बल है नाश हो जाएगा—अर्थात् वह भाई जिसके लिए मसीह मरा। [12]इस प्रकार भाइयों के विरुद्ध अपराध करने और उनके निर्बल विवेक को ठेस पहुंचाने के कारण, तुम मसीह के विरुद्ध पाप करते हो। [13]इसलिए यदि भोजन मेरे भाई को ठोकर खिलाता है तो मैं फिर कभी मांस नहीं खाऊंगा, जिस से मैं अपने भाई के लिए ठोकर का कारण न बनूं।

प्रेरित के अधिकार

9 क्या मैं स्वतन्त्र नहीं? क्या मैं भी प्रेरित नहीं? क्या मैंने यीशु, हमारे प्रभु को, नहीं देखा? क्या तुम प्रभु में मेरे परिश्रम के प्रतिफल नहीं हो? [2]चाहे मैं दूसरों के लिए प्रेरित न होऊं कम से कम तुम्हारे लिए तो हूं; क्योंकि तुम प्रभु में मेरे प्रेरित होने की छाप हो।

[3]मेरे परखने वालों के लिए मेरा यह प्रत्युत्तर है। [4]क्या हमको खाने-पीने का अधिकार नहीं? [5]क्या हमें यह भी अधिकार नहीं कि एक *विश्वासिनी पत्नी को अपने साथ लिए फिरें जैसे कि शेष प्रेरित, प्रभु के भाई और कैफा किया करते हैं? [6]क्या केवल मुझे और बरनाबास को ही यह अधिकार नहीं कि जीविका कमाना छोड़ें? [7]ऐसा कौन है जो अपने ही खर्च पर सेना में सेवा करता हो? कौन है जो अंगूर की बारी लगा कर उसका फल नहीं खाता? या ऐसा कौन है जो भेड़ों की रखवाली करके उनके दूध का उपयोग नहीं करता? [8]क्या मैं ये बातें मानवीय स्तर पर कह रहा हूं? या क्या व्यवस्था भी यही नहीं कहती? [9]क्योंकि मूसा की व्यवस्था में लिखा है, **"दावनी में चलते हुए बैल का मुंह मत बांधना।"** क्या परमेश्वर को केवल बैलों की ही चिन्ता है? [10]या वह सब कुछ हमारे लिए कहता है? हां, हमारे लिए ही यह लिखा

9 *अक्षरशः, अधिकार 5 *अक्षरशः, बहिन-पत्नी

गया है, क्योंकि उचित है कि हल चलाने वाला आशा से खेत जोते, और दांवने वाला फसल पाने की आशा से दांवनी करे। [11]जबकि हमने तुम में आत्मिक बातें बोईं तो क्या यह बड़ी बात है कि हम भौतिक वस्तुओं की फसल तुमसे प्राप्त करें? [12]यदि तुम पर अन्य लोग अधिकार जताते हैं तो क्या हमारा तुम पर और अधिक अधिकार नहीं? फिर भी हमने इस अधिकार का उपयोग नहीं किया, परन्तु हम सब कुछ सहते हैं कि हमारे द्वारा मसीह के सुसमाचार में विघ्न न पड़े। [13]क्या तुम नहीं जानते कि जो लोग मन्दिर में सेवा करते हैं, वे मन्दिर से खाते हैं और जो नित्य वेदी की सेवा करते हैं, वेदी की भेंट के सहभागी होते हैं? [14]इसी रीति से प्रभु ने आदेश दिया है कि वे जो सुसमाचार-प्रचार करते हैं उनकी जीविका सुसमाचार से हो। [15]परन्तु मैंने इनमें से किसी का भी उपयोग नहीं किया। मैं ये बातें इसलिए नहीं लिख रहा हूं कि यह सब मेरे लिए किया जाए, क्योंकि मेरे लिए इसकी अपेक्षा मर जाना भला है कि कोई मेरे घमण्ड को व्यर्थ ठहराए। [16]इसलिए यदि मैं सुसमाचार-प्रचार करूं तो यह मेरे लिए कोई घमण्ड की बात नहीं क्योंकि इसके लिए तो मैं विवश हूं। यदि मैं सुसमाचार-प्रचार न करूं तो मुझ पर हाय! [17]क्योंकि यदि मैं यह स्वेच्छा से करता हूं तो मेरे लिए प्रतिफल है; परन्तु यदि स्वेच्छा से नहीं करता फिर भी भण्डारीपन तो मुझे सौंपा ही गया है। [18]तो मेरा प्रतिफल क्या है? यह कि जब मैं सुसमाचार-प्रचार करूं तो उसे मुफ़्त करूं, और सुसमाचार में जो मेरा अधिकार है उसे पूर्ण रीति से उपयोग में न लाऊं।

[19]यद्यपि मैं सब मनुष्यों से स्वतन्त्र हू फिर भी मैंने अपने आप को सब का दास बना लिया है कि और भी अधिक लोगों को जीत सकूं। [20]यहूदियों के लिए मैं यहूदी जैसा बना कि यहूदियों को जीतूं। जो व्यवस्था के आधीन हैं, उनके लिए मैं स्वयं व्यवस्था के आधीन न होने पर भी व्यवस्था के आधीन बना कि जो व्यवस्था के आधीन हैं उनको भी जीतूं। [21]जो व्यवस्थारहित हैं उनके लिए मैं—जो परमेश्वर की व्यवस्था से रहित नहीं परन्तु मसीह की व्यवस्था के आधीन हूं—व्यवस्थारहित सा बन गया कि जो व्यवस्थारहित हैं उनको जीतूं। [22]मैं निर्बलों के लिए निर्बल बना कि निर्बलों को जीत लाऊं। मैं सब मनुष्यों के लिए सब कुछ बना कि किसी न किसी प्रकार कुछ का उद्धार करा सकूं। [23]और मैं सब कुछ सुसमाचार के लिए करता हूं कि अन्य लोगों के साथ उसका सहभागी बन जाऊं।

मसीही दौड़

[24]क्या तुम नहीं जानते कि दौड़ में दौड़ते तो सब ही हैं, परन्तु पुरस्कार केवल एक ही को मिलता है? तुम भी इस प्रकार दौड़ो कि जीत सको। [25]खेल प्रतियोगिता में भाग लेने वाला प्रत्येक खिलाड़ी सभी प्रकार का संयम रखता है। वह तो नष्ट होने वाले मुकुट की प्राप्ति के लिए यह सब कुछ करता है, परन्तु हम नष्ट न होने वाले मुकुट के लिए करते हैं। [26]इसलिए मैं लक्ष्यहीन सा नहीं दौड़ता, न मैं हवाई-मुक्केबाज़ी करता हूं। [27]परन्तु मैं अपनी देह को यन्त्रणा देकर वश में रखता हूं कहीं ऐसा न हो कि मैं औरों को प्रचार करके स्वयं अयोग्य ठहरूं।

में पड़ने नहीं देगा, परन्तु परीक्षा के साथ साथ बचने का उपाय भी करेगा कि तुम उसे सह सको।

इस्राएल के इतिहास से चेतावनी

10 हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम इस बात से अनभिज्ञ रहो कि हमारे सभी पूर्वज बादल की अगुवाई में चले और सब के सब समुद्र के बीच से पार हुए। [2]सब ने उस बादल और समुद्र में मूसा का बपतिस्मा लिया, [3]सब ने एक ही आत्मिक भोजन किया, [4]और सब ने एक ही आत्मिक जल पिया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे जो उनके साथ साथ चलती थी; और वह चट्टान *मसीह था। [5]परन्तु फिर भी उनमें से अधिकांश से परमेश्वर प्रसन्न नहीं हुआ—वे *जंगल में मर कर ढेर हो गए। [6]ये बातें हमारे लिए उदाहरण ठहरीं कि हम भी बुरी बातों की लालसा न करें, जैसे कि उन्होंने की थी। [7]और मूर्तिपूजक न बनो जैसे कि उनमें से कुछ थे, जैसा लिखा है, "**लोग खाने-पीने को बैठे, और खेलने-कूदने को उठे।**" [8]और न हम व्यभिचार करें, जैसे कि उनमें से बहुतों ने किया—और एक दिन में तेईस हज़ार मर गए। [9]और न हम प्रभु को परखें, जैसे कि उनमें से बहुतों ने किया—तथा सर्पों द्वारा नाश हुए। [10]न तुम कुड़कुड़ाओ, जैसे कि उनमें से बहुतों ने किया—और नाश करने वाले के द्वारा नाश किए गए। [11]ये बातें उन पर उदाहरणस्वरूप हुईं, और ये हमारी चेतावनी के लिए लिखी गईं जिन पर इस युग का अन्त आ पहुंचा है। [12]अत: जो यह समझता है कि मैं स्थिर हूं वह सावधान रहे कि कहीं गिर न पड़े। [13]तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े जो मनुष्य के सहने से बाहर है। परमेश्वर तो सच्चा है जो तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा

मूर्तिपूजा वर्जित

[14]अत: हे मेरे प्रियो, मूर्तिपूजा से भागो। [15]मैं तुम्हें बुद्धिमान समझकर कहता हूं: जो कुछ मैं तुमसे कहता हूं उसे परखो। [16]*धन्यवाद का वह कटोरा जिसके लिए हम *धन्यवाद देते हैं, क्या वह मसीह के लहू में सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह में सहभागिता नहीं? [17]जबकि रोटी एक ही है तो हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं, क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में सहभागी होते हैं। [18]जो शरीर के भाव से इस्राएली हैं उन पर ध्यान दो: क्या बलिदानों को खाने वाले वेदी के सहभागी नहीं? [19]मेरे कहने का तात्पर्य क्या है? क्या मूर्तियों के आगे बलि की हुई वस्तु कुछ है? या मूर्ति कुछ है? [20]नहीं; पर मैं यह कहता हूं कि गैरयहूदी जिन वस्तुओं की बलि चढ़ाते हैं, उन्हें परमेश्वर के लिए नहीं वरन् दुष्टात्माओं के लिए चढ़ाते हैं। मैं नहीं चाहता कि तुम दुष्टात्माओं के सहभागी बनो। [21]तुम प्रभु के कटोरे और दुष्टात्माओं के कटोरे दोनों में से नहीं पी सकते। तुम प्रभु की मेज़ और दुष्टात्माओं की मेज़ दोनों के सहभागी नहीं हो सकते। [22]क्या हम प्रभु के क्रोध को भड़काते हैं? क्या हम उस से अधिक शक्तिशाली हैं?

सब कुछ उस की महिमा के लिए

[23]सब वस्तुएं न्यायोचित तो हैं, परन्तु सब वस्तुएं लाभदायक नहीं। सब वस्तुएं

4 *यूनानी, ख्रिस्तौस, अर्थात् अभिषिक्त   5 *या, मरुभूमि, रेगिस्तान   16 *या, आशीष (मांगते)

न्यायोचित हैं, परन्तु सब वस्तुओं से उन्नति नहीं होती। [24]कोई अपने ही हित की चिन्ता न करे परन्तु दूसरों के हित की भी चिन्ता करे। [25]जो मांस बाज़ार में बिकता है, उसे खाओ, और विवेक के कारण प्रश्न न करो, [26]क्योंकि पृथ्वी और जो कुछ उसमें है सब प्रभु का है। [27]यदि कोई अविश्वासी तुम्हें आमन्त्रित करे, और यदि तुम जाना चाहो तो विवेक के कारण बिना प्रश्न किए वह सब खाओ जो तुम्हारे सम्मुख परोसा जाए। [28]परन्तु यदि कोई तुमसे कहे, "यह मूर्ति को चढ़ाया हुआ प्रसाद है," तो तुम उस बताने वाले के कारण तथा विवेक के कारण मत खाओ। [29]मेरा तात्पर्य तुम्हारे विवेक से नहीं परन्तु उस दूसरे मनुष्य के विवेक से है। भला मेरी स्वतन्त्रता उस दूसरे के विवेक से क्यों परखी जाए? [30]यदि मैं धन्यवाद देकर खाता हूं तो जिसके लिए मैं धन्यवाद देता हूं, उसके विषय में मेरी निन्दा क्यों की जाती है? [31]अतः चाहे तुम खाओ या पीओ, या जो कुछ भी करो, सब परमेश्वर की महिमा के लिए करो। [32]तुम न यहूदियों, न यूनानियों, और न परमेश्वर की कलीसिया, न किसी के लिए ठोकर का कारण बनो, [33]जिस प्रकार मैं भी सब बातों में सब मनुष्यों को प्रसन्न करता हूं और अपने ही लाभ की नहीं, परन्तु बहुतों के लाभ की चिन्ता करता हूं कि वे उद्धार पाएं।

आराधना में सिर ढांकना

11 जैसा मैं मसीह का अनुकरण करता हूं, वैसा ही तुम भी मेरा अनुकरण करो। [2]मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूं, क्योंकि तुम सब बातों में मुझे स्मरण करते हो, और परम्पराओं का पालन दृढ़ता से ठीक उसी प्रकार करते हो जिस प्रकार मैंने तुम्हें सौंपा था। [3]परन्तु मैं चाहता हूं कि तुम यह जान लो कि प्रत्येक पुरुष का सिर *मसीह है, और स्त्री का सिर पुरुष है, और *मसीह का सिर परमेश्वर है। [4]जो पुरुष सिर ढांके हुए प्रार्थना या नबूवत करता है, अपने सिर का अपमान करता है। [5]परन्तु जो स्त्री सिर उघाड़े प्रार्थना या नबूवत करती है, अपने सिर का अपमान करती है; क्योंकि वह ऐसी स्त्री के समान है जिसका सिर मूंड़ा गया हो। [6]यदि स्त्री अपना सिर न ढांके तो वह अपने बाल भी कटवा ले। परन्तु यदि स्त्री के लिए बाल कटवाना या सिर मुंड़ाना लज्जा की बात हो, तो वह अपना सिर ढांके। [7]पुरुष के लिए अपना सिर ढांकना उचित नहीं, क्योंकि वह परमेश्वर का प्रतिरूप और महिमा है, परन्तु स्त्री तो पुरुष की महिमा है। [8]पुरुष, स्त्री से नहीं परन्तु स्त्री तो पुरुष से हुई। [9]वास्तव में पुरुष, स्त्री के लिए नहीं परन्तु स्त्री तो पुरुष के लिए सृजी गई। [10]अतः स्वर्गदूतों के कारण स्त्री के लिए उचित है कि अधिकार के इस चिन्ह को अपने सिर पर रखे। [11]फिर भी, प्रभु में, न तो स्त्री बिना पुरुष के, और न पुरुष बिना स्त्री के है। [12]जिस प्रकार स्त्री तो पुरुष से हुई, उसी प्रकार पुरुष का जन्म भी स्त्री द्वारा होता है, और सब कुछ परमेश्वर से है। [13]तुम स्वयं निर्णय करो: क्या स्त्री का खुले सिर प्रार्थना करना उचित है? [14]क्या प्रकृति स्वयं नहीं सिखाती कि यदि पुरुष लम्बे बाल रखे तो यह उसके लिए लज्जाजनक है, [15]और यह भी कि स्त्री के लम्बे बाल उसकी शोभा हैं? क्योंकि

3 *यूनानी, ख्रिस्तौन, अर्थात्, अभिषिक्त

उसको बाल ओढ़नी के लिए दिए गए हैं। [16]परन्तु यदि कोई विवाद करना चाहे तो न हमारी, न परमेश्वर की कलीसियाओं की कोई *दूसरी प्रथा है।

प्रभु-भोज के विषय में

[17]परन्तु अब यह आदेश देते हुए मैं तुम्हारी प्रशंसा नहीं करता, क्योंकि तुम्हारे एकत्रित होने से भलाई के बदले बुराई ही अधिक होती है। [18]पहिली बात तो यह है: मैं सुनता हूं, कि जब तुम कलीसिया होकर एकत्रित होते हो तो तुम्हारे मध्य फूट होती है। और मैं इस बात का कुछ कुछ विश्वास भी करता हूं। [19]तुम्हारे मध्य दलवन्दी भी अवश्य होगी, जिससे कि तुम में जो खरे हैं, वे प्रकट हो जाएं। [20]अत: जब तुम एकत्रित होते हो तो यह प्रभुभोज खाने के लिए नहीं, [21]क्योंकि खाते समय प्रत्येक दूसरे से पहिले अपना भोजन झपटकर खा लेता है, जिस से कोई तो भूखा रह जाता है, और कोई मतवाला हो जाता है। [22]क्या तुम्हारे पास घर नहीं है, जहां तुम खाओ और पीओ? अथवा क्या तुम परमेश्वर की कलीसिया का अनादर करते हो। और जिनके पास कुछ नहीं है, उनको लज्जित करते हो? मैं तुम से क्या कहूं? क्या मैं तुम्हारी प्रशंसा करूं? इस बात में मैं तुम्हारी प्रशंसा नहीं करूंगा। [23]जो बात मैंने तुम्हें सौंपी है वह मुझे प्रभु से मिली थी, कि प्रभु यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया, रोटी ली, [24]और उसने धन्यवाद देकर रोटी तोड़ी और कहा, "यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिए *है: मेरे स्मरण के लिए यही किया करो।" [25]इसी प्रकार भोजन के पश्चात् उसने यह कहते हुए कटोरा भी लिया, "यह मेरे लहू में नई वाचा का कटोरा है। जब जब तुम इसमें से पीओ तब तब मेरे स्मरण के लिए यही किया करो।" [26]क्योंकि जब जब तुम इस रोटी को खाते और इस कटोरे में से पीते हो तो जब तक प्रभु न आ जाए उसकी मृत्यु का प्रचार करते हो। [27]इसलिए जो कोई अनुचित रीति से यह रोटी खाता और प्रभु के इस कटोरे में से पीता है, वह प्रभु की देह और लहू का दोषी ठहरेगा। [28]अत: मनुष्य अपने आप को परखे तब इस रोटी को खाए और इस कटोरे में से पीए। [29]क्योंकि जो खाता और पीता है, यदि उचित रीति से प्रभु की देह को पहिचाने बिना खाता पीता है तो अपने ऊपर दण्ड लाने के लिए ही ऐसा करता है। [30]इसी कारण तुम में से बहुत से निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए। [31]यदि हम अपने आप को ठीक से जांचते तो दण्ड न पाते। [32]परन्तु प्रभु दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है कि हम संसार के साथ दोषी न ठहराए जाएं। [33]अत: हे मेरे भाइयो, जब तुम भोजन करने एकत्रित होते हो, तो एक दूसरे के लिए ठहरा करो। [34]यदि कोई भूखा हो तो अपने घर में ही खा ले, ऐसा न हो कि तुम्हारा एकत्रित होना दण्ड का कारण बन जाए। मैं शेष बातों को स्वयं आकर ठीक करूंगा।

आत्मिक वरदान

12 हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि आत्मिक वरदानों के विषय में तुम अनभिज्ञ रहो। [2]तुम्हें मालूम है कि जब तुम अन्यजाति थे तब गूंगी मूर्तियों की ओर जिस प्रकार भटकाए जाते थे उसी प्रकार चलते थे। [3]इसलिए मैं तुम्हें

16 *अक्षरश:, ऐसी

24 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में: तोड़ा हुआ है

बताए देता हूं कि परमेश्वर के आत्मा के द्वारा कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं कहता कि यीशु शापित है। और न पवित्र आत्मा के बिना कोई यह कह सकता है कि यीशु प्रभु है।

[4]वरदान तो विभिन्न प्रकार के हैं, पर आत्मा एक ही है। [5]और सेवाएं भी कई प्रकार की हैं, परन्तु प्रभु एक ही है। [6]प्रभावशाली कार्य भी अनेक प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है जो सब में सब कुछ करता है। [7]परन्तु प्रत्येक को सब की भलाई के लिए आत्मिक वरदान दिया जाता है। [8]क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि का वचन और दूसरे को उसी आत्मा के द्वारा ज्ञान का वचन दिया जाता है। [9]किसी को उसी आत्मा से विश्वास का तथा किसी और को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है, [10]फिर किसी को सामर्थ के कार्यों की शक्ति और किसी को नबूवत करने, किसी को आत्माओं की परख, किसी को भिन्न भिन्न प्रकार की भाषाएं बोलने, और किसी को भाषाओं का अर्थ बताने का वरदान दिया जाता है। [11]परन्तु वही एक आत्मा ये सब कार्य करवाता है और अपने इच्छानुसार जिसे जो चाहता है अलग-अलग बांट देता है।

एक देह—कई अंग

[12]क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके कई अंग हैं, और देह के सब अंग यद्यपि अनेक हैं तौभी वे एक ही देह हैं, इसी प्रकार मसीह भी है। [13]क्योंकि हम सब ने, चाहे यहूदी हों या यूनानी, दास हों या स्वतन्त्र, एक ही आत्मा द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा पाया, और हमें एक ही आत्मा पिलाया गया। [14]क्योंकि देह तो एक अंग का नहीं पर अनेक अंगों का समूह है। [15]यदि पैर कहे, "मैं हाथ नहीं, इसलिए मैं देह का अंग नहीं," तो क्या वह इस कारण देह का अंग नहीं? [16]और यदि कान कहे, "मैं आंख नहीं, इसलिए मैं देह का अंग नहीं," तो क्या वह इस कारण देह का नहीं? [17]यदि पूरी देह आंख ही होती, तब सुनना कहां होता? और यदि सारी देह से सुनना ही होता तो सूंघना कहां होता? [18]परन्तु परमेश्वर ने सब अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक करके देह में रखा है। [19]और यदि वे सब के सब एक ही अंग होते तो देह कहां होती? [20]अंग तो अनेक हैं, परन्तु देह एक है। [21]आंख, हाथ से नहीं कह सकती कि मुझे तेरी आवश्यकता नहीं, न सिर, पांव से कि मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं। [22]इसके विपरीत देह के वे अंग जो निर्बल प्रतीत होते हैं और भी अधिक आवश्यक हैं, [23]और देह के जिन अंगों को हम कम आदर के योग्य समझते हैं उन्हीं को अधिक आदर देते हैं, और हमारे शोभाहीन अंग अत्यधिक शोभनीय हो जाते हैं, [24]जबकि हमारे शोभनीय अंगों को इसकी आवश्यकता नहीं होती। परन्तु परमेश्वर ने हमारी देह को ऐसा बनाया है कि दीन-हीन अंगों को अधिक आदर मिले, [25]कि देह में कोई फूट न पड़े, परन्तु सब अंग अपने समान एक दूसरे की चिन्ता करें। [26]और यदि एक अंग दुख पाता है तो उसके साथ सब अंग दुख पाते हैं, और यदि एक अंग सम्मानित होता है तो सब अंग उसके साथ आनन्दित होते हैं।

[27]इसी प्रकार तुम मसीह की देह हो और एक एक करके उसके अंग हो, [28]और परमेश्वर ने कलीसिया में प्रथम

प्रेरित, द्वितीय नबी, तृतीय शिक्षक, फिर सामर्थ के कार्य करने वाले, चंगा करने के वरदान वाले, परोपकारी, प्रबन्धक, तथा अन्य-अन्य भाषाएं बोलने वालों को नियुक्त किया है। [29]क्या सब प्रेरित हैं? क्या सब नबी हैं? क्या सब शिक्षक हैं? क्या सब सामर्थ के काम करने वाले हैं? [30]क्या सब को चंगा करने का वरदान मिला है? क्या सब अन्य अन्य भाषाएं बोलते हैं? क्या सब उनका अर्थ बताते हैं? [31]तुम बड़े से बड़े वरदान की धुन में रहो।

परन्तु मैं तुम्हें सब से उत्तम मार्ग दर्शाता हूँ।

प्रेम महान् है

13 यदि मैं मनुष्यों और स्वर्ग-दूतों की भाषाएं बोलूं पर प्रेम न रखूं तो मैं ठनठनाती *घन्टी और झनझनाती झांझ हूँ। [2]यदि मुझे नबूवत करने का वरदान प्राप्त हो और मैं सब भेदों तथा सब प्रकार के ज्ञान को जानूं, और यदि मुझे यहां तक पूर्ण विश्वास हो कि मैं पहाड़ों को हटा सकूँ, पर प्रेम न रखूं तो मैं कुछ भी नहीं हूं। [3]यदि मैं अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति कंगालों को खिलाने के लिए दान कर दूं, और अपनी देह *जलाने के लिए सौंप दूं, परन्तु प्रेम न रखूं, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं। [4]प्रेम धैर्यवान है, प्रेम दयालु है और वह ईर्ष्या नहीं करता। प्रेम डींग नहीं मारता, अहंकार नहीं करता, [5]अभद्र व्यवहार नहीं करता, अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुराई का लेखा नहीं रखता, [6]अधर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। [7]सब बातें सहता है, सब बातों पर विश्वास करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धैर्य रखता है। [8]प्रेम कभी मिटता नहीं। नबूवतें हों तो समाप्त हो जाएंगी, भाषाएं हों तो जाती रहेंगी; और ज्ञान हो तो लुप्त हो जाएगा। [9]क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है और हमारी नबूवतें अधूरी हैं। [10]परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा तो अधूरापन मिट जाएगा। [11]जब मैं बालक था तो बालक के समान बोलता, बालक के समान सोचता और बालक के समान समझता था, परन्तु जब सयाना हुआ तब बालकपन की बातें छोड़ दीं। [12]अभी तो हमें दर्पण में धुंधला सा दिखाई पड़ता है, परन्तु उस समय आमने-सामने देखेंगे; इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है, परन्तु उस समय पूर्ण रूप से जानूंगा, जैसा मैं स्वयं भी पूर्णरूप से जाना गया हूं। [13]पर अब विश्वास, आशा, प्रेम, ये तीनों स्थायी हैं, परन्तु इनमें सबसे बड़ा प्रेम है।

नबूवत और अन्य अन्य भाषाएं

14 प्रेम का पीछा करो और आत्मिक वरदानों की धुन में रहो, विशेषकर यह कि तुम भविष्यद्वाणी करो। [2]क्योंकि जो अन्य *भाषा में बोलता है वह मनुष्यों से नहीं परन्तु परमेश्वर से बातें करता है, क्योंकि उसकी कोई नहीं समझता, परन्तु वह आत्मा में भेद की बातें बोलता है। [3]परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है वह आत्मिक उन्नति, उपदेश तथा सान्त्वना देने के लिए मनुष्यों से बोलता है। [4]जो अन्य भाषा में बोलता है वह अपनी ही उन्नति करता है, परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है वह कलीसिया की उन्नति करता है। [5]अब

---

1 *अक्षरशः, पीतल 3 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में: इसलिए सौंप दूं कि गर्व कर सकूं, परन्तु प्रेम... 2*अक्षरशः, जीभ

मैं चाहता तो हूं कि तुम सब अन्य भाषाएं बोलते, परन्तु इससे भी बढ़कर यह कि तुम भविष्यद्वाणी करो क्योंकि जो भविष्यद्वाणी करता है, वह उससे भी बढ़कर है जो अन्य भाषाओं में बोलता तो है, पर अनुवाद नहीं कर सकता कि कलीसिया की उन्नति हो। [6]भाइयो, यदि मैं तुम्हारे पास आकर अन्य भाषाओं में बोलूं तो मुझसे तुम्हें क्या लाभ होगा जब तक कि मैं प्रकाश अथवा ज्ञान या नबूवत या शिक्षा की बातें न बोलूं? [7]इसी प्रकार निर्जीव वस्तुएं भी जिनसे ध्वनि निकलती है—चाहे बांसुरी या वीणा—यदि इनके स्वरों में अन्तर न हो, तो यह कैसे ज्ञात होगा कि बांसुरी या वीणा पर क्या बजाया जा रहा है? [8]यदि तुरही से अस्पष्ट ध्वनि निकले तो कौन युद्ध के लिए तैयारी करेगा? [9]इसी प्रकार तुम भी, यदि जीभ से साफ-साफ न बोलो तो जो बोला गया वह कैसे समझा जाएगा? तुम तो हवा से बातें करने वाले ठहरोगे। [10]इस संसार में न जाने कितने प्रकार की भाषाएं हैं, उनमें से कोई भी अर्थहीन नहीं। [11]यदि मैं किसी भाषा का अर्थ न जानूं तो मैं बोलने वाले के लिए अजनबी तथा बोलने वाला मेरी दृष्टि में अजनबी ठहरेगा। [12]इसी प्रकार तुम भी, जब कि आत्मिक वरदानों की धुन में हो, कलीसिया की उन्नति के लिए भरपूर होने का प्रयत्न करो। [13]इसलिए जो अन्य भाषा बोलने वाला हो, वह प्रार्थना करे कि अनुवाद भी कर सके। [14]क्योंकि यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूँ तब मेरी आत्मा तो प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती। [15]तो हम क्या करें? मैं आत्मा में प्रार्थना करूंगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा। मैं आत्मा से गाऊंगा, और बुद्धि से भी गाऊंगा। [16]अन्यथा यदि तू आत्मा में ही धन्यवाद करे, तो वहां उपस्थित *अनजान व्यक्ति तेरे धन्यवाद पर 'आमीन' कैसे कहेगा, क्योंकि वह तो नहीं जानता कि तू क्या कहता है? [17]तू तो भली-भांति धन्यवाद देता है, परन्तु उस से दूसरे की उन्नति नहीं होती। [18]मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि मैं तुम सबसे बढ़कर अन्य-अन्य भाषाओं में बोलता हूँ। [19]फिर भी कलीसिया में अन्य भाषा में दस हज़ार शब्दों की अपेक्षा अपनी बुद्धि से पांच शब्द ही बोलना उत्तम समझता हूं कि दूसरों को भी शिक्षा दे सकूँ।

[20]भाइयो, अपनी समझ में बच्चे न बनो। वैसे बुराई में तो शिशु बने रहो, परन्तु समझ में सयाने हो जाओ। [21]व्यवस्था में लिखा है कि प्रभु कहता है, **"मैं विदेशी भाषा बोलने वाले तथा विदेशियों के होंठों से इस जाति से बातें करूंगा, फिर भी ये मेरी नहीं सुनेंगे।"** [22]अतः अन्य भाषाएं विश्वासियों के लिए नहीं पर अविश्वासियों के लिए चिन्ह हैं, परन्तु भविष्यद्वाणी अविश्वासियों के लिए नहीं पर विश्वासियों के लिए चिन्ह है। [23]यदि सारी कलीसिया एक स्थान पर एकत्रित हो और सब अन्य भाषाओं में बोलें तथा *अन्जान या अविश्वासी मनुष्य भीतर आ जाएं, तो क्या वे यह न कहेंगे कि तुम पागल हो? [24]परन्तु यदि सब नबूवत करें तथा कोई अविश्वासी या *अन्जान व्यक्ति प्रवेश करे तो सबके द्वारा वह कायल किया जाएगा और परखा जाएगा, [25]उसके हृदय के भेद प्रकट हो जाएंगे, तब वह मुंह के

23,24 *अर्थात्, आत्मिक वरदानों से

बल गिरकर परमेश्वर की आराधना करेगा और मान लेगा कि सचमुच परमेश्वर तुम्हारे मध्य है।

उपासना में अनुशासन

[26] भाइयो, फिर क्या करना चाहिए? जब तुम एकत्रित होते हो तो प्रत्येक के मन में भजन या उपदेश या प्रकाश या अन्य भाषा या अन्य भाषा का अनुवाद होता है। सब कुछ आत्मिक उन्नति के लिए होना चाहिए। [27] यदि कोई अन्य भाषा में बोले तो दो या अधिक से अधिक तीन जन क्रम से बोलें, तथा एक व्यक्ति अनुवाद करे। [28] परन्तु यदि अनुवादक न हो तो वह कलीसिया में चुप रहे, तथा अपने आप से और परमेश्वर से बोले। [29] नबियों में से दो या तीन बोलें, तथा अन्य लोग परखें। [30] परन्तु यदि बैठे हुओं में से किसी अन्य पर ईश्वरीय प्रकाशन हो तो पहिला चुप हो जाए। [31] क्योंकि तुम सब एक-एक करके नबूवत कर सकते हो, जिससे सब सीखें और सब को शान्ति मिले। [32] नबियों की आत्माएं नबियों के वश में रहती हैं, [33] क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं परन्तु शान्ति का परमेश्वर है, *जैसा कि पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में है।

[34] स्त्रियां कलीसियाओं में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बोलने की अनुमति नहीं है। वे अधीनता से रहें जैसा कि व्यवस्था भी कहती है। [35] यदि वे कुछ सीखना चाहती हैं तो घर में अपने-अपने पति से पूछें, क्योंकि स्त्री के लिए कलीसिया में बोलना अनुचित है। [36] क्या परमेश्वर का वचन सबसे पहिले तुम्हीं से निकला? अथवा क्या वह केवल तुम्हीं तक पहुंचा है?

[37] यदि कोई व्यक्ति समझता है कि वह नबी या आत्मिक जन है, तो वह जान ले कि जो कुछ मैं तुम्हें लिख रहा हूं वह प्रभु की आज्ञा है। [38] परन्तु यदि कोई इसको न *माने तो उसकी भी न मानी जाए।

[39] इसलिए मेरे भाइयो, नबूवत करने की धुन में रहो, परन्तु अन्य भाषाएं बोलने वालों को मत रोको। [40] फिर भी सब बातें उचित रीति से और क्रमानुसार की जाएं।

मसीह का पुनरुत्थान

15 हे भाइयो, अब मैं तुम्हें वही सुसमाचार सुनाता हूं जिसका मैंने तुम्हारे मध्य प्रचार किया, जिसे तुमने ग्रहण भी किया और जिसमें तुम स्थिर हो, [2] जिसके द्वारा तुम उद्धार भी पाते हो, इस शर्त पर कि तुम उस वचन को जिसका मैंने तुम्हारे मध्य प्रचार किया दृढ़ता से थामे रहो—अन्यथा तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ। [3] मैंने यह बात जो मुझ तक पहुंची थी उसे सब से मुख्य जानकर तुम तक भी पहुंचा दी, कि पवित्रशास्त्र के अनुसार मसीह हमारे पापों के लिए मरा, [4] और गाड़ा गया, तथा पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा, [5] तब वह कैफा को, और फिर बारहों को दिखाई दिया। [6] इसके पश्चात् वह पांच सौ से अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया, जिनमें से अधिकांश अब तक जीवित हैं, पर कुछ सो गए। [7] तब वह याकूब को दिखाई दिया, और फिर सब प्रेरितों को, [8] और सब से अंत में मुझे भी दिखाई दिया, जो मानो अधूरे समय का जन्मा हूं। [9] मैं प्रेरितों में सब से छोटा हूं जो प्रेरित कहलाने के योग्य भी नहीं, क्योंकि मैंने

33 *इस पद का अगला हिस्सा 34वें पद के आरम्भ में भी आ सकता है 38 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों के अनुसार, माने तो यह अनजान हो

परमेश्वर की कलीसिया को सताया था। [10]फिर भी परमेश्वर के अनुग्रह से मैं अब जो हूं सो हूं। मेरे प्रति उसका अनुग्रह व्यर्थ नहीं ठहरा, परन्तु मैंने उन सब से बढ़कर परिश्रम किया, फिर भी मैंने नहीं, परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह ने मेरे साथ मिलकर किया। [11]अत: चाहे मैं हूं, चाहे वे हों, हम यही प्रचार करते हैं, और इसी पर तुमने विश्वास किया।

देह का पुनरुत्थान

[12]अब यदि मसीह का यह प्रचार किया जाता है कि वह मृतकों में से जिलाया गया है तो तुम में से कुछ यह क्यों कहते हैं कि मरे हुओं का पुनरुत्थान है ही नहीं? [13]यदि मरे हुओं का पुनरुत्थान नहीं है तो मसीह भी नहीं जिलाया गया। [14]और यदि मसीह जिलाया नहीं गया तो हमारा प्रचार करना व्यर्थ है; और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है। [15]इस से भी बढ़कर हम परमेश्वर के झूठे गवाह ठहरते हैं, क्योंकि हमने परमेश्वर के विषय में यह साक्षी दी कि उसने मसीह को जिला उठाया। परन्तु यदि मृतक वास्तव में जिलाए नहीं जाते तो उसने मसीह को भी नहीं जिलाया। [16]क्योंकि यदि मृतक जिलाए नहीं जाते तो मसीह भी जिलाया नहीं गया है, [17]और यदि मसीह नहीं जिलाया गया है तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है। तुम अब तक अपने पापों में पड़े हो। [18]तब तो वे भी जो मसीह में सो गए हैं, नाश हो गए। [19]यदि हमने केवल इसी जीवन में मसीह पर आशा रखी है तो हमारी दशा सब मनुष्यों से अधिक दयनीय है।

[20]पर अब मसीह तो मृतकों में से जिलाया गया है, और जो सोए हुए हैं उनमें वह पहिला फल है। [21]क्योंकि जब एक मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई तो एक ही मनुष्य के द्वारा मृतकों का पुनरुत्थान भी आया। [22]जिस प्रकार आदम में सब मरते हैं उसी प्रकार मसीह में सब जिलाए जाएंगे, [23]पर हर एक अपने क्रम के अनुसार: प्रथम फल मसीह है, तब मसीह के आगमन पर उसके लोग। [24]इसके पश्चात् अन्त होगा। उस समय वह समस्त शासन, अधिकार और सामर्थ का अन्त करके राज्य को परमेश्वर पिता के हाथों में सौंप देगा। [25]जब तक वह अपने सब शत्रुओं को पैरों तले न कर ले, उसका राज्य करना अनिवार्य है। [26]सब से अन्तिम शत्रु जिसका अन्त किया जाएगा वह मृत्यु है। [27]क्योंकि **"उसने सब कुछ उसके पैरों तले कर दिया है।"** परन्तु जब वह कहता है कि सब कुछ आधीन कर दिया गया है तो यह स्पष्ट है कि जिसने सब कुछ उसके आधीन कर दिया है वह स्वयं अलग रहा। [28]और जब सब आधीन हो जाएगा तो पुत्र स्वयं ही उसके आधीन हो जाएगा, जिसने सब कुछ उसके आधीन कर दिया, जिससे कि परमेश्वर ही सब में सब कुछ हो।

[29]अन्यथा जो मरे हुओं के लिए बपतिस्मा लेते हैं वे क्या करेंगे? यदि मृतक जिलाए ही नहीं जाते हैं तो फिर उनके लिए इन्हें क्यों बपतिस्मा दिया जाता है? [30]हम भी क्यों प्रत्येक घड़ी संकट में रहते हैं? [31]हे भाइयो, मेरे उस घमण्ड के कारण जो मसीह यीशु हमारे प्रभु में तुम्हारे लिए है, मैं दृढ़तापूर्वक कहता हूं कि मैं प्रतिदिन मरता हूं। [32]यदि मैं इफिसुस में वन-पशुओं से लड़ा तो मानवीय भाव से मुझे क्या लाभ? यदि मृतक जिलाए नहीं जाते, **तो आओ, खाएं और पिएं, क्योंकि कल तो मरना ही है।**

[33]धोखा न खाओ: "बुरी संगति अच्छे चरित्र को भ्रष्ट कर देती है।" [34]धार्मिकता के लिए सजग हो जाओ और पाप न करो, क्योंकि कुछ लोग परमेश्वर को बिल्कुल नहीं जानते। मैं कहता हूं यह तुम्हारे लिए लज्जा की बात है।

[35]परन्तु कोई कहेगा, "मृतक कैसे जिलाए जाते हैं? और वे किस प्रकार की देह में आते हैं?" [36]हे मूर्ख! जो कुछ तू बोता है जब तक वह मर न जाए जिलाया नहीं जाता। [37]और जो कुछ तू बोता है, तू वह देह नहीं बोता जो उत्पन्न होने वाली है, परन्तु निरा दाना, चाहे गेहूं का या किसी और अनाज का। [38]परन्तु परमेश्वर अपने इच्छानुसार उसे देह देता है, और हर एक बीज को उसकी विशेष देह। [39]सब शरीर एक समान नहीं, परन्तु मनुष्यों का शरीर एक प्रकार का है, पशुओं का दूसरी प्रकार का। पक्षियों का शरीर अन्य है तो मछलियों का भिन्न प्रकार का। [40]स्वर्गीय देह हैं और पार्थिव देह भी हैं, परन्तु स्वर्गीय देह का तेज और है तो पार्थिव देह का और। [41]सूर्य का तेज और है, चांद का तेज और, फिर तारों का तेज भी और है, वरन् एक तारे का तेज दूसरे से भिन्न है। [42]मृतकों का जी उठना भी ऐसा ही है। नश्वर देह बोई जाती है और अविनाशी देह जिलाई जाती है, [43]अनादर के साथ बोई जाती है और महिमा के साथ जिलाई जाती है, निर्बल दशा में बोई जाती है और सामर्थ में जिलाई जाती है, [44]स्वाभाविक दशा में बोई जाती है और आत्मिक दशा में जिलाई जाती है। जबकि स्वाभाविक देह है तो आत्मिक देह भी है। [45]इसलिए यह भी लिखा है, "पहला **मनुष्य,** आदम, **जीवित प्राणी बना,**" और अन्तिम आदम जीवनदायक आत्मा। [46]अतः पहिले आत्मिक नहीं वरन् स्वाभाविक था, और तब आत्मिक आया। [47]पहिला मनुष्य पृथ्वी से है अर्थात् पार्थिव, दूसरा मनुष्य स्वर्ग से है। [48]जैसे वह पार्थिव है, वैसे ही वे भी हैं जो पार्थिव हैं, और जैसा वह स्वर्गीय है, वैसे ही वे भी हैं जो स्वर्गीय हैं। [49]और जैसे हमने उस पार्थिव का रूप धारण किया है, वैसे ही उस स्वर्गीय का भी रूप धारण *करेंगे।

[50]हे भाइयो, मैं यह कहता हूं कि मांस और लहू परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी नहीं हो सकते, और न विनाश, अविनाशी का अधिकारी हो सकता है। [51]देखो, मैं तुम्हें एक रहस्य की बात बताता हूँ: हम सब सोएंगे नहीं परन्तु सब के सब बदल जाएंगे। [52]यह एक क्षण में, पलक मारते ही, अन्तिम तुरही के बजाए जाने के समय होगा। क्योंकि तुरही बजेगी, मृतक अविनाशी दशा में जिलाए जाएंगे और हम बदल जाएंगे। [53]क्योंकि इस नाशमान का अविनाशी को और मरणशील का अमरता को पहिनना अवश्य है, [54]परन्तु जब यह नाशमान, अविनाश को पहिन लेगा और यह मरणशील अमरता को पहिन लेगा तो यह लिखा हुआ वचन पूरा हो जाएगा: "**मृत्यु को विजय ने निगल लिया है।** [55]**हे मृत्यु, तेरी विजय कहां है? हे मृत्यु, तेरा डंक कहां?**" [56]मृत्यु का डंक तो पाप है, और पाप की शक्ति व्यवस्था है। [57]परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो हमें प्रभु यीशु मसीह के द्वारा विजयी करता है। [58]इसलिए हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो तथा प्रभु के कार्य में सर्वदा

49 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में: करें

बढ़ते जाओ, क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है।

दान के विषय में

16 पवित्र लोगों के लिए दान एकत्रित करने के सम्बन्ध में जो निर्देश मैंने गलातिया की कलीसियाओं को दिया है उसे तुम भी मानो। [2]सप्ताह के पहिले दिन तुम में से प्रत्येक अपनी आय के अनुसार अपने पास कुछ रख छोड़े कि मेरे आने पर दान एकत्रित न करना पड़े। [3]और जब मैं आऊंगा तो जिन्हें तुम चाहोगे उन्हें पत्र देकर भेज दूंगा कि तुम्हारा दान यरूशलेम पहुँचा दें। [4]यदि मेरा भी जाना उचित हुआ तो वे मेरे साथ जाएंगे।

यात्रा का कार्यक्रम

[5]परन्तु मैं मैसीडोनिया होकर तुम्हारे पास आऊंगा, क्योंकि मैं मैसीडोनिया होकर जा रहा हूँ [6]और संभव है कि मैं तुम्हारे साथ ठहरूं या शीत-ऋतु भी तुम्हारे साथ व्यतीत करूं जिससे कि जहां मुझे जाना हो वहां के लिए तुम मुझे विदा कर सको। [7]मेरी यह इच्छा नहीं कि मैं केवल मार्ग में जाते समय तुमसे मिलता जाऊं, वरन् मुझे आशा है कि यदि प्रभु ने चाहा तो कुछ समय तक तुम्हारे साथ रहूंगा भी। [8]परन्तु मैं पिन्तेकुस्त तक इफिसुस में रहूंगा, [9]क्योंकि मेरे लिए वहां प्रभावशाली सेवा करने का एक बड़ा द्वार खुला है, और विरोधी बहुत से हैं।

[10]यदि तीमुथियुस आ जाए तो ध्यान रखना कि वह तुम्हारे साथ निर्भय होकर रहे, क्योंकि वह भी मेरे समान प्रभु का कार्य कर रहा है। [11]इसलिए कोई उसे तुच्छ न जाने, परन्तु उसे कुशल से विदा करना कि वह मेरे पास आ जाए, क्योंकि मैं भाइयों के साथ उसके आने की प्रतीक्षा कर रहा हूं। [12]जहां तक हमारे भाई अपुल्लोस का सम्बन्ध है, मैंने उसे बहुत प्रोत्साहन दिया है कि वह भाइयों के साथ तुम्हारे पास आए, परन्तु इस समय उसकी बिल्कुल इच्छा नहीं थी कि आए। फिर भी अवसर मिलते ही वह आएगा।

[13]जागते रहो, विश्वास में स्थिर रहो, पुरुषार्थ करो और शक्तिशाली बनो। [14]जो कुछ करो, प्रेम से करो।

[15]भाइयो, तुम स्तिफनास के कुटुम्बियों को जानते हो कि वे अखाया के पहिले फल हैं और पवित्र लोगों की सेवा के लिए सदा तैयार रहते हैं। [16]मेरा तुमसे आग्रह है कि तुम ऐसे लोगों के आधीन रहो, और ऐसे प्रत्येक के भी जो इस काम में सहायक और परिश्रमी हैं। [17]मैं स्तिफनास और फूरतूनातुस और अखइकुस के आने से प्रसन्न हूं, क्योंकि जो तुम न कर सके उसे उन्होंने पूर्ण किया है। [18]उन्होंने तुम्हारी तथा मेरी आत्मा को सुख दिया है। अतः ऐसे मनुष्यों का आदर करो।

[19]एशिया की कलीसियाओं की ओर से तुमको नमस्कार। अक्विला और प्रिसका तथा उनके घर की कलीसिया का, तुमको प्रभु में हार्दिक नमस्कार। [20]सब भाइयों का तुम्हें नमस्कार। पवित्र चुम्बन सहित एक दूसरे का अभिवादन करो।

[21]मुझ पौलुस का अपने हाथ से लिखा नमस्कार। [22]यदि कोई प्रभु से प्रेम न रखे तो वह शापित हो। *हे प्रभु, आ! [23]प्रभु यीशु का अनुग्रह तुम पर हो। [24]मेरा प्रेम मसीह यीशु में तुम सब के साथ रहे। आमीन।

22 *अक्षरशः, मारानाथा

२ कुरिन्थियों

कुरिन्थियों के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री

शान्तिदाता परमेश्वर

1 पौलुस की ओर से जो परमेश्वर के इच्छानुसार मसीह यीशु का प्रेरित है, और भाई तीमुथियुस की ओर से, कुरिन्थुस में परमेश्वर की कलीसिया तथा अखाया के पवित्र लोगों के नाम :

[2]तुम्हें हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह और शान्ति मिले।

[3]धन्य है परमेश्वर, हमारे प्रभु यीशु मसीह का पिता, जो दयालु पिता और समस्त शान्ति का परमेश्वर है। [4]वह हमें हमारे सब क्लेशों में शान्ति देता है कि हम भी उनको जो क्लेश में हों, वैसी ही शान्ति दे सकें जैसी परमेश्वर ने स्वयं हमको दी है। [5]क्योंकि जैसे मसीह के दुख हमारे लिए अधिकाई से हैं, वैसे ही हमारी शान्ति भी मसीह के द्वारा अधिकाई से है। [6]परन्तु यदि हम क्लेश उठाते हैं तो यह तुम्हारी शान्ति और उद्धार के लिए है। यदि हमें शान्ति मिली है तो यह तुम्हारी शान्ति के लिए है, जो उन क्लेशों को धीरज से सहने में सहायक होती है जिनको हम भी सहते हैं। [7]तुम्हारे विषय में हमारी आशा सुदृढ़ है, क्योंकि हम यह जानते हैं कि जिस प्रकार तुम हमारे कष्टों में सहभागी हो उसी प्रकार हमारी शान्ति में भी हो। [8]क्योंकि हे भाइयो, हम यह नहीं चाहते कि तुम उस क्लेश से अनजान रहो जो हमको *एशिया में सहना पड़ा। हम ऐसे भारी बोझ से दब गए थे जो हमारी सामर्थ्य से बाहर था, यहां तक कि हम जीवन की आशा भी छोड़ बैठे थे। [9]वास्तव में, हमें ऐसा लगा जैसे कि हम पर मृत्यु-दण्ड की आज्ञा हो चुकी हो, जिससे कि हम अपने आप पर नहीं वरन् परमेश्वर पर भरोसा रखें जो मृतकों को जिला उठाता है। [10]उसी ने हमको मृत्यु के इतने भारी संकट से बचाया, और भविष्य में भी अवश्य बचाएगा। उसी पर हमने आशा रखी है। और वही हमें आगे भी बचाता रहेगा। [11]तुम भी इसमें अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा मिलकर हमारी
सहायता करोगे जिससे कि हम
बहुत से लोगों की प्रार्थना

---

8 *अर्थात्, रोमी साम्राज्य में एशिया माइनर का समुद्री तट का प्रान्त

उस अनुग्रह के लिए जो हम पर हुआ, धन्यवाद दिया जा सके।

यात्रा-योजना में परिवर्तन

[12]क्योंकि हमारा गर्व अर्थात् हमारे विवेक की साक्षी यह है कि हमने इस संसार में, तथा विशेषकर तुम्हारे प्रति, शारीरिक ज्ञान के अनुसार नहीं परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से पवित्रता और भक्तिपूर्ण सच्चाई से आचरण किया। [13]जो तुम पढ़ते और समझते हो उसे छोड़ हम और कुछ नहीं लिखते, और मैं आशा करता हूं कि तुम उस बात को पूर्ण रूप से समझ सकोगे [14]जिसे तुमने आंशिक रूप से समझा है कि जैसे हम तुम्हारे गर्व का कारण हैं, वैसे ही तुम भी हमारे प्रभु यीशु के दिन में हमारे गर्व का कारण ठहरो।

[15]इसी विश्वास के साथ मेरा पहिले तुम्हारे पास आने का निश्चय था कि तुम दूसरी बार *आशिष पा सको, [16]अर्थात् यह कि मैं तुम्हारे पास से होता हुआ मैसीडोनिया जाऊं और मैसीडोनिया से फिर तुम्हारे पास आऊं, और तुम से यहूदिया की यात्रा के लिए सहायता प्राप्त करूं। [17]जब मैंने ऐसा निश्चय किया तो क्या मैं दुविधा में था? अथवा जो मैं निश्चय करता हूं क्या वह शरीर के अनुसार करता हूं कि एक ही समय में 'हां, हां' कहूं और 'नहीं, नहीं' भी? [18]जैसा कि परमेश्वर विश्वासयोग्य है वैसे ही तुम्हारे प्रति हमारे वचन में 'हां' और 'नहीं' दोनों एक साथ नहीं पाए जाते। [19]क्योंकि परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में, जिसका प्रचार तुम्हारे बीच हमने अर्थात् सिलवानुस, तीमुथियुस तथा मैंने किया, उस में कभी 'हां' कभी 'न' ता नहीं है, वरन् सदा 'हां' ही 'हां' हैं। [20]क्योंकि परमेश्वर की जितनी भी प्रतिज्ञाएं हैं यीशु में 'हां' ही 'हां' हैं। इसीलिए उसके द्वारा हमारी आमीन भी परमेश्वर की महिमा के लिए होती है। [21]अब जो तुम्हारे साथ हमें मसीह में दृढ़ करता है और जिसने हमारा अभिषेक किया वह परमेश्वर है, [22]जिस ने हम पर मुहर भी लगाई और पवित्र आत्मा को बयाने में हमारे हृदयों में दिया।

[23]परन्तु मैं परमेश्वर को अपना साक्षी ठहराता हुआ कहता हूं कि मैं दूसरी बार कुरिन्थुस इसलिए नहीं आया कि तुम्हें दुख से बचाए रखूं। [24]ऐसी बात नहीं कि हम तुम्हारे विश्वास के विषय में अधिकार जताना चाहते हैं, परन्तु हम तुम्हारे आनन्द के लिए तुम्हारे सहकर्मी हैं, क्योंकि तुम विश्वास में स्थिर रहते हो।

2 मैंने अपने लिए यह निश्चय कर लिया था कि तुम्हारे पास पुनः दुख देने न आऊं। [2]क्योंकि यदि मैं तुम्हें दुख पहुंचाऊं तो मुझे सुखी कौन करेगा, सिवाय उसके जिसे मैंने दुख पहुंचाया? [3]और यही बात मैंने तुम्हें लिखी कि आकर उनसे दुख न पाऊं जिनसे मुझे आनन्द मिलना चाहिए, और मुझे तुम सब पर यह भरोसा था कि जो मेरा आनन्द है वही तुम सब का भी हो। [4]मैंने तुम्हें बड़े क्लेश और हृदय-वेदना से आंसू बहा-बहाकर लिखा था, इसलिए नहीं कि तुमको दुख पहुंचे परन्तु इसलिए कि तुम उस प्रेम को जान सको, जो मुझे विशेष कर तुम्हारे प्रति है।

अपराधी को क्षमा

[5]पर यदि किसी ने दुख दिया है तो

---

15 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में: आनन्द

उसने केवल मुझे नहीं, परन्तु यदि वढ़ा-चढ़ाकर न कहूं तो थोड़ा-वहुत तुम सब का भी दिया है। [6]ऐसे व्यक्ति के लिए वहुमत से जो दण्ड दिया गया वही पर्याप्त है। [7]इसके विपरीत तुम उसे क्षमा करो और शान्ति दो, कहीं ऐसा न हो कि वह अत्यधिक शोक में डूब जाए। [8]इसलिए मेरा तुम से आग्रह है कि तुम उसे अपने प्रेम का प्रमाण दो। [9]मैंने तुम्हें इस अभिप्राय से लिखा कि तुम्हें परखूं कि तुम हर बात में आज्ञाकारी हो या नहीं। [10]परन्तु जिसे तुम किसी बात में क्षमा करते हो उसे मैं भी क्षमा करता हूं, क्योंकि वास्तव में मैं ने जो कुछ क्षमा किया है—यदि मुझे कुछ क्षमा करने को था—मसीह की उपस्थिति में तुम्हारे कारण किया है, [11]कि शैतान हमसे कोई लाभ न उठाए, क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं हैं।

मसीही सेवक — जीवन की सुगन्ध

[12]जब मैं मसीह का सुसमाचार सुनाने के लिए त्रोआस आया, और प्रभु ने जब मेरे लिए द्वार खोला, [13]तब अपने भाई तीतुस को न पाकर मेरी आत्मा व्याकुल हो उठी, अतः उनसे विदा होकर मैं मैसीडोनिया की ओर बढ़ गया।

[14]परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो मसीह के द्वारा विजयोत्सव के जुलूस में हमारी अगुवाई करता है, और हमारे द्वारा अपने ज्ञान की मधुर सुगन्ध हर जगह फैलाता है। [15]क्योंकि उद्धार पानेवालों और नाश होनेवालों दोनों के लिए परमेश्वर के निमित्त हम मसीह की सुगन्ध हैं, [16]अर्थात् एक के निमित्त मरने के लिए मृत्यु की गन्ध, और दूसरे के निमित्त जीवन के लिए जीवन की सुगन्ध। भला इन बातों के करने योग्य कौन है? [17]हम तो उन अनेक लोगों के समान नहीं हैं, जो परमेश्वर के वचन में *हेराफेरी करते हैं, परन्तु हम मन की सच्चाई से परमेश्वर की ओर से और परमेश्वर की उपस्थिति जानकर मसीह में बोलते हैं।

मसीही सजीव-पत्र

3 क्या हम फिर अपनी प्रशंसा करने लगे? या अन्य व्यक्तियों की तरह क्या हमें भी तुमसे प्रशंसा-पत्र लेने अथवा तुम्हें देने की आवश्यकता है? [2]हमारा पत्र तो तुम ही हो, जो हमारे हृदय पर लिखा गया है और जिसे सब लोग जानते तथा पढ़ते हैं, [3]तथा यह प्रकट करते हो कि मसीह का पत्र तुम हो जिनकी हमने देख-भाल की, और जो न स्याही से, न पत्थर की पट्टियों पर, परन्तु जीवते परमेश्वर के आत्मा से हृदय-पटल पर लिखा गया है। [4]और मसीह के द्वारा परमेश्वर पर हमें ऐसा ही भरोसा है। [5]यह नहीं कि हम अपने आप में इस योग्य हैं कि समझें कि स्वयं कुछ कर सकते हैं, पर हमारी योग्यता तो परमेश्वर की ओर से है, [6]जिसने हमें नई वाचा के सेवक होने के योग्य बनाया, अक्षर की वाचा नहीं परन्तु आत्मा की, क्योंकि अक्षर तो मारता है, परन्तु आत्मा जिलाता है।

नई वाचा की महिमा

[7]परन्तु यदि मृत्यु की वह वाचा जिसके अक्षर पत्थर के पटलों पर अंकित हैं, इतने तेजस्वी रूप में आई कि इस्राएल की सन्तान भी मूसा के चेहरे

17 *या, मिलावट

जो घटता जा रहा था, एक टक होकर न देख सकी, [8]तो फिर आत्मा की वाचा और अधिक तेजोमय क्यों न होगी? [9]क्योंकि जब दोषी ठहराने वाली वाचा तेजोमय है, तो धर्मी ठहराने वाली वाचा और भी अधिक तेजोमय है। [10]वास्तव में वह जो तेजोमय था अब उस तेज के सम्मुख जो उस से बढ़कर तेजोमय है, निस्तेज हो गया, [11]क्योंकि यदि वह क्षीण होने वाला *तेजोमय था, तो वह जो स्थिर है और भी अधिक †तेजोमय है।

[12]ऐसी आशा होने के कारण हम बड़े साहस से बोलते हैं, [13]और हम मूसा के सदृश नहीं जो अपने चेहरे पर परदा डाले रहता था कि इस्राएल की सन्तान एकटक होकर उस लोप होते हुए तेज के अन्त को न देख सके। [14]परन्तु उनके मन कठोर हो गए, क्योंकि आज भी इस पुरानी वाचा को पढ़ते समय वही परदा *पड़ा रहता है, क्योंकि वह केवल मसीह में हटाया जाता है। [15]आज के दिन तक जब कभी मूसा की पुस्तक पढ़ी जाती है तो उनके हृदय पर परदा पड़ा रहता है; [16]'**परन्तु जब कभी कोई मनुष्य प्रभु की ओर फिरता है तो वह परदा हटा लिया जाता है।**' [17]अब यह 'प्रभु' तो आत्मा है, और जहां प्रभु का आत्मा है, वहां स्वतन्त्रता है। [18]और हम सब खुले चेहरे से, प्रभु का तेज मानो दर्पण में देखते हुए, प्रभु अर्थात् आत्मा के द्वारा उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश करके बदलते जाते हैं।

मिट्टी के पात्रों में धन

4 इसलिए जब हम पर ऐसी दया हुई कि हमें यह सेवा मिली, तो हम साहस नहीं खोते। [2]परन्तु हमने लज्जा के गुप्त कार्यों को त्याग दिया है और धूर्तता से नहीं चलते, न परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं। परन्तु सत्य को प्रकट करने के द्वारा हम, परमेश्वर के सम्मुख प्रत्येक मनुष्य के विवेक में अपने आप को भला ठहराते हैं। [3]यदि हमारे सुसमाचार पर परदा पड़ा है तो यह परदा उनके लिए पड़ा है जिनका विनाश हो रहा है। [4]उन अविश्वासियों की बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अन्धा कर दिया है कि वे परमेश्वर के प्रतिरूप, अर्थात् मसीह के तेजोमय सुसमाचार की ज्योति को न देख सकें। [5]हम तो अपना नहीं परन्तु मसीह यीशु का प्रचार करते हैं कि वह प्रभु है, और अपने विषय में यह कहते हैं कि हम यीशु के कारण तुम्हारे दास हैं, [6]क्योंकि परमेश्वर जिसने कहा, "अन्धकार में से ज्योति चमके," वही है जो हमारे हृदयों में चमका है कि हमें मसीह के चेहरे में परमेश्वर की महिमा के ज्ञान की ज्योति दे।

[7]परन्तु हम मिट्टी के पात्रों में यह धन इसलिए रखा हुआ है कि सामर्थ की असीम महानता हमारी ओर से नहीं वरन् परमेश्वर की ओर से ठहरे। [8]हम चारों ओर से क्लेश सहते हैं, परन्तु मिटाए नहीं जाते; निरुपाय तो हैं, परन्तु निराश नहीं होते; [9]सताए तो जाते हैं, परन्तु त्यागे नहीं जाते; गिराए तो जाते हैं, परन्तु नष्ट नहीं होते। [10]हम यीशु की मृत्यु को सदा अपनी देह में लिए फिरते हैं कि यीशु का जीवन हमारी देह में प्रकट हो। [11]हम जो जी रहे हैं, सर्वदा यीशु के कारण मृत्यु के हाथों सौंपे जाते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारे मरणशील शरीर में प्रकट हो। [12]इस प्रकार मृत्यु तो हम में, पर जीवन

---

11 *अक्षरशः तेज से †अक्षरशः, तेज में

14 *या, रहता है, क्योंकि यह प्रकट नहीं होता है कि यह केवल में हटाया जाता है

तुम में कार्य करता है। [13]इसलिए कि विश्वास का वही आत्मा हम में है, जैसा लिखा गया है उसके अनुसार, "**मैंने विश्वास किया, इसलिए मैं बोला,**" हम भी विश्वास करते हैं और इसीलिए बोलते हैं; [14]तथा यह जानते हैं कि जिसने प्रभु यीशु को जिलाया, वही हमें भी यीशु के साथ जिलाएगा, और हमें भी तुम्हारे साथ अपने सम्मुख उपस्थित करेगा। [15]क्योंकि सब वस्तुएं तुम्हारे लिए हैं कि अनुग्रह जो अधिक से अधिक लोगों में फैलता जा रहा है, परमेश्वर की महिमा के लिए धन्यवाद की वृद्धि का कारण बन सके।

[16]इसलिए हम साहस नहीं खोते, यद्यपि हमारे बाहरी मनुष्यत्व का क्षय होता जा रहा है, तथापि हमारे आन्तरिक मनुष्यत्व का दिन-प्रतिदिन नवीनीकरण होता जा रहा है। [17]क्योंकि हमारा पल भर का यह हल्का सा क्लेश एक ऐसी चिरस्थायी महिमा उत्पन्न कर रहा है जो अतुल्य है। [18]हमारी दृष्टि उन वस्तुओं पर नहीं जो दिखाई देती हैं, पर उन वस्तुओं पर है जो अदृश्य हैं, क्योंकि दिखाई देने वाली वस्तुएं तो अल्पकालिक हैं, परन्तु अदृश्य वस्तुएं चिरस्थायी हैं।

हमारा स्वर्गीय घर

5 क्योंकि हम जानते हैं कि यदि हमारा पृथ्वी पर का तम्बू सदृश घर गिरा दिया जाए तो परमेश्वर से हमें स्वर्ग में ऐसा भवन मिलेगा जो हाथों से बना हुआ नहीं, परन्तु चिरस्थायी है। [2]क्योंकि इस घर में तो हम कराहते और लालसा रखते हैं कि अपने स्वर्गीय भवन को पहिन लें [3]और इसे पहिन कर हम नंगे न पाए जाएं। [4]सचमुच, जब तक हम इस तम्बू में हैं तो बोझ से दबे हुए कराहते हैं, क्योंकि हम वस्त्र उतारना नहीं, वरन् पहिनना चाहते हैं कि जो कुछ मरणशील है, वह जीवन द्वारा निगल लिया जाए। [5]अब जिसने हमें इसी अभिप्राय के लिए तैयार किया है, वह परमेश्वर है। उसने हमें बयाने में आत्मा दिया है। [6]इसलिए हम सदा साहस रखते और यह जानते हैं कि जब तक हम देह रूपी घर में रहते हैं, प्रभु से दूर हैं—[7]क्योंकि हम रूप देख कर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं—[8]अतः हम पूर्णतः साहस रखते हैं तथा देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम समझते हैं। [9]इसलिए हमारी अभिलाषा यह है, चाहे साथ रहें या अलग रहें हम उसे प्रिय लगते रहें। [10]क्योंकि हम सब को मसीह के न्याय-आसन के समक्ष उपस्थित होना अवश्य है कि प्रत्येक को अपने भले या बुरे कामों का बदला मिले जो उसने देह के द्वारा किए।

परमेश्वर से मेल-मिलाप की सेवा

[11]अतः हम प्रभु का भय मानते हुए लोगों को समझाते हैं, परन्तु हमारी दशा परमेश्वर के सामने खुली है; और मैं आशा करता हूं कि हमारी यह दशा तुम्हारे विवेक में भी खुली है। [12]हम फिर अपनी प्रशंसा तुम्हारे सामने नहीं कर रहे हैं, परन्तु तुम्हें अवसर दे रहे हैं कि हम पर गर्व करो, और उन्हें उत्तर दे सको जो मन पर नहीं पर दिखावे पर घमण्ड करते हैं। [13]क्योंकि यदि हम बेसुध हैं तो परमेश्वर के लिए हैं, यदि चैतन्य हैं तो तुम्हारे लिए हैं। [14]क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश करता है जिस से यह निष्कर्ष निकलता है कि जब एक सब के लिए मरा, तो सब मर गए। [15]और वह सब के लिए मरा कि वे

जो जीवित हैं आगे को अपने लिए न जीएं परन्तु उसके लिए जीएं, जो उनके लिए मरा और फिर जी उठा। [16]इसलिए अब से हम किसी मनुष्य को शरीर के अनुसार न समझेंगे। यद्यपि हमने मसीह को भी शरीर के अनुसार जाना है, तथापि अब से हम उसे ऐसा नहीं जानते। [17]इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गईं। देखो, नई बातें आ गई हैं। [18]अब ये सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिसने मसीह के द्वारा हमारा मेल अपने साथ कर लिया, और हमें मेल-मिलाप की सेवा दी। [19]अर्थात् परमेश्वर, लोगों के अपराधों का दोष उन पर न लगाते हुए, मसीह में जगत का मेल-मिलाप अपने साथ कर रहा था और उसने हमें मेल-मिलाप का वचन सौंप दिया है।

[20]इसलिए हम मसीह के राजदूत हैं, मानो परमेश्वर हमारे द्वारा विनती कर रहा है; हम मसीह की ओर से तुम से निवेदन करते हैं कि परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर लो। [21]जो पाप से अनजान था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।

6 अतः उसके सहकर्मी होने के नाते, हम भी तुमसे यह आग्रह करते हैं कि परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ करने के लिए ग्रहण न करो—[2]क्योंकि वह कहता है, "**ग्रहण किए जाने के समय मैंने तेरी सुन ली, और उद्धार के दिन मैंने तेरी सहायता की।**" देखो, अभी ग्रहण किए जाने का समय है। देखो, अभी वह उद्धार का दिन है।

[3]हम किसी बात में ठोकर का कारण नहीं बनते जिससे कि हमारी सेवा पर आंच आए, [4]परन्तु हर एक बात में परमेश्वर के योग्य सेवकों के सदृश अपने आप को प्रस्तुत करते हैं, अर्थात् बड़े धैर्य में, क्लेशों में, अभावों में, संकटों में, [5]मार खाने में, बन्दी किए जाने में, उत्पातों में, परिश्रम में, जागने में, भूख में, [6]पवित्रता में, ज्ञान में, धीरज में, कृपालुता में, पवित्र आत्मा में, सच्चे प्रेम में, [7]सत्य के वचन में, परमेश्वर की सामर्थ में, धार्मिकता के हथियारों को दाएं-बाएं हाथों में लेकर, [8]आदर और निरादर में, यश और अपयश में, बदनामी और सुनामी में, धोखा देने वालों के सदृश समझे जाते हैं फिर भी सच्चे हैं, [9]अनजाने के सदृश फिर भी प्रसिद्ध, मरते हुओं के सदृश फिर भी देखो हम जीवित हैं, ताड़ना पाने वालों के सदृश फिर भी जान से मारे नहीं जाते, [10]शोकितों के सदृश परन्तु सदैव आनन्द मनाते हैं, कंगालों के सदृश परन्तु बहुतों को धनी बना देते हैं, ऐसों के सदृश समझे जाते हैं जिनके पास कुछ नहीं, फिर भी हम सब कुछ रखते हैं।

[11]हे कुरिन्थियो, *हमने तुमसे खुलकर बातें की हैं, हमारे हृदय खुले हुए हैं। [12]हम तुम्हारे लिए रुकावट के कारण नहीं हुए, परन्तु तुम स्वयं अपने में रुकावट पाते हो। [13]तुम्हें बच्चे समझकर अब मैं कहता हूं कि तुम भी इसके बदले अपने हृदय हमारे लिए खोल दो।

असमान जुए में न जुतो

[14]अविश्वासियों के साथ असमान जुए में न जुतो, क्योंकि धार्मिकता का अधर्म से क्या मेल? या ज्योति की अन्धकार से क्या संगति? [15]और मसीह का बलियाल से

11 *अक्षरशः, हमारा मुंह तुम्हारे प्रति खुला है

क्या लगाव? या विश्वासी का अविश्वासी से क्या सम्बन्ध? [16]या मूर्तियों से परमेश्वर के मन्दिर का क्या समझौता? क्योंकि हम तो जीवित परमेश्वर के मन्दिर हैं, जैसा कि परमेश्वर ने कहा, **"मैं उन में निवास करूंगा और उनमें चला फिरा करूंगा और मैं उनका परमेश्वर होऊंगा और वे मेरे लोग होंगे।"** [17]इसलिए प्रभु कहता है, **"उनमें से निकलो और अलग हो जाओ, और जो कुछ अशुद्ध है उसे न छूओ तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा; [18]और मैं तुम्हारा पिता होऊंगा और तुम मेरे बेटे और बेटियां होगे।" सर्वशक्तिमान प्रभु यह कहता है।**

7 अतः हे प्रियो, जब कि हमें ये प्रतिज्ञाएं प्राप्त हैं तो आओ, परमेश्वर के भय में पवित्रता को सिद्ध करते हुए, हम देह और आत्मा की सब अशुद्धता से अपने आप को शुद्ध करें।

पौलुस का हर्ष

[2]हमें अपने हृदय में स्थान दो। हमने किसी के साथ अन्याय नहीं किया, हमने किसी को भ्रष्ट नहीं किया, हमने किसी से अनुचित लाभ नहीं उठाया। [3]मैं तुम्हें दोषी ठहराने के लिए तो नहीं कहता; क्योंकि मैं पहिले ही कह चुका हूं कि तुम हमारे मनों में ऐसे बस गए हो कि हम तुम्हारे साथ मरने और जीने को तैयार हैं। [4]मुझे तुम पर बड़ा भरोसा है, मुझे तुम पर बड़ा गर्व है, मैं शान्ति से परिपूर्ण हूं। जब हमें सब प्रकार का कष्ट होता है तो मैं आनन्द से भर जाता हूं।

[5]मैसीडोनिया पहुंचने पर भी हमारी देह को आराम नहीं मिला, परन्तु सब ओर से हमें कष्ट झेलने पड़े—बाहर झगड़े और भीतर भय था। [6]परन्तु दुखियों को शान्ति देनेवाले परमेश्वर ने तीतुस के आने से हमें शान्ति दी; [7]और न केवल उसके आने से बल्कि उस शान्ति से भी जो उसे तुम्हारी ओर से मिली थी। उसने मेरे लिए तुम्हारी लालसा, तुम्हारे शोक और तुम्हारे उत्साह का समाचार दिया; इससे मुझे और भी अधिक प्रसन्नता हुई। [8]यद्यपि मैंने तुम्हें अपने पत्र से दुख पहुंचाया, फिर भी मुझे इसका खेद नहीं। पहिले तो अवश्य खेद हुआ—क्योंकि देखता हूं कि उस पत्र से तुम्हें दुख तो हुआ, परन्तु थोड़े ही समय के लिए—[9]अब मैं प्रसन्न हूं, इसलिए नहीं कि तुम दुखी हो, वरन् इसलिए कि इस दुख के कारण तुमने पश्चात्ताप किया। तुम तो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुखी हुए कि तुम्हें हमारे द्वारा किसी भी बात में हानि न पहुंचे। [10]क्योंकि परमेश्वर के इच्छानुसार जो दुख होता है वह ऐसा पश्चात्ताप उत्पन्न करता है जिसका परिणाम उद्धार है और जिस से पछताना नहीं पड़ता, परन्तु सांसारिक शोक तो मृत्यु उत्पन्न करता है। [11]देखो, इस शोक ने परमेश्वर के इच्छानुसार तुममें कितनी तत्परता, अर्थात् अपने को निर्दोष सिद्ध करने की कितनी उत्कण्ठा, कितना रोष, कितना भय, कितनी लालसा, कितना उत्साह तथा न्याय चुकाने की कितनी इच्छा उत्पन्न कर दी है! इन सब में तुमने अपने आप को निर्दोष प्रकट कर दिखाया। [12]यद्यपि मैंने तुम्हें लिखा, फिर भी यह उन अन्यायी के कारण नहीं, और न ही उसके कारण जिसने अन्याय सहा, परन्तु इसलिए कि हमारे लिए तुम्हारी तत्परता परमेश्वर की दृष्टि में तुम पर [illegible]

जाए। [13]इस कारण हमें शान्ति मिली।

हमारी इस शान्ति के अतिरिक्त हम तीतुस के आनन्द के कारण और भी अधिक आनन्दित हुए, क्योंकि उसकी आत्मा को तुम सव के द्वारा विश्रान्ति मिली। [14]क्योंकि यदि किसी वात में मैंने उसके सामने तुम्हारे विषय में गर्व किया तो मुझे लज्जित नहीं होना पड़ा; परन्तु जैसे मैंने तुमसे सव वातें सच सच कही थीं, वैसे ही तीतुस के सामने हमारा गर्व करना सत्य प्रमाणित हुआ। [15]जव वह तुम सव की आज्ञाकारिता को स्मरण करता है कि तुमने कैसे डरते और कांपते हुए उसे ग्रहण किया तो उसका प्रेम तुम्हारे प्रति और भी वढ़ता जाता है। [16]मैं हर्षित हूं कि प्रत्येक वात में मुझे तुम पर भरोसा है।

उदारता को प्रोत्साहन

8 हे भाइयो, अव हम तुम्हें परमेश्वर के उस अनुग्रह के विषय में बताना चाहते हैं जो मैसीडोनिया की कलीसियाओं पर हुआ। [2]संकटों की कठिन परीक्षा में उनके अपार आनन्द और घोर दरिद्रता के फलस्वरूप उनकी उदारता उमड़ पड़ी। [3]मैं साक्षी देता हूं कि उन्होंने अपनी शक्ति के अनुसार, वरन् क्षमता से भी अधिक, अपनी इच्छा से दिया। [4]और सन्तों की सहायता करने में सहयोग देने के लिए हमसे बार बार अनुनय विनय की, [5]और उन्होंने हमारी आशा से परे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार अपने आपको पहिले प्रभु को फिर हमें भी दे दिया। [6]अत: हमने तीतुस से आग्रह किया कि जैसे उसने पहिले आरम्भ किया, वैसे तुम में भी इस अनुग्रह के कार्य को पूर्ण करे। [7]परन्तु जैसे तुम सव वातों में, अर्थात् विश्वास, वचन, ज्ञान और हर प्रकार के उत्साह और *प्रेम में जिसकी प्रेरणा हमने तुम्हें दी, भरपूर हो, वैसे ही अनुग्रह के इस कार्य में भी भरपूर होते जाओ। [8]मैं यह आज्ञा-स्वरूप ही नहीं कह रहा हूं, वरन् औरों के उत्साह के द्वारा तुम्हारे प्रेम की सच्चाई को प्रमाणित करने के लिए भी कह रहा हूं। [9]क्योंकि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह को जानते हो, कि धनी होते हुए भी, वह तुम्हारे लिए निर्धन वन गया कि तुम उसकी निर्धनता के द्वारा धनी वन जाओ। [10]मैं इस वात में अपनी सलाह देता हूं, तुम पिछले वर्ष न केवल इसे करने में वरन् इसे करने की इच्छा में भी प्रथम थे। [11]तुम्हारे लिए अच्छा तो यह है कि अव इसे पूरा भी करो कि जैसे इच्छा करने में तत्पर थे, वैसे ही तुम्हारी सामर्थ के अनुसार देकर अब इसे पूरा भी करो। [12]क्योंकि यदि मन की तैयारी हो तो मनुष्य के पास जो कुछ है उसके अनुसार दान ग्रहणयोग्य होता है, न कि उसके अनुसार जो उसके पास नहीं है। [13]क्योंकि यह दूसरों के सुख और तुम्हारे कष्ट के लिए नहीं, परन्तु समानता के विचार से है—[14]तुम्हारी बहुतायत इस समय उनके अभाव की पूर्ति करे कि उनकी बहुतायत भी तुम्हारे अभाव के समय पूर्ति बन जाए जिससे कि समानता उत्पन्न हो। [15]जैसा लिखा है, "**जिसने अधिक बटोरा उसका बहुत अधिक न हुआ, और जिसने कम बटोरा उसे कुछ घटी न हुई।**"

तीतुस का कुरिन्थुस को भेजा जाना

[16]परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो

7 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में: हमारे प्रति तुम्हारा प्रेम

पहुंच सकें। [14]हम सीमा से बाहर घमण्ड नहीं कर रहे हैं, जैसे कि तुम तक न पहुंचने की दशा में होता, परन्तु हम तो मसीह का सुसमाचार सुनाते हुए तुम तक पहुंच चुके हैं। [15]हम अपनी सीमा से बाहर अर्थात् दूसरे मनुष्यों के परिश्रम पर घमण्ड नहीं करते, परन्तु हमारी आशा है कि जैसे जैसे तुम्हारा विश्वास बढ़ता जाएगा, वैसे वैसे हमारा कार्यक्षेत्र भी तुम्हारे द्वारा और भी विस्तृत होता जाएगा, [16]जिससे कि तुम्हारे क्षेत्रों से बाहर भी प्रचार करें और दूसरों की सीमा के भीतर पूर्ण किए गए कार्य पर घमण्ड न करें। [17]परन्तु जो गर्व करे, वह प्रभु में गर्व करे। [18]क्योंकि जो अपनी बड़ाई स्वयं करता है उसकी नहीं, परन्तु जिसकी बड़ाई प्रभु करता है उसी की प्रशंसा होती है।

झूठे प्रेरित और पौलुस

11 मैं चाहता हूं कि तुम मेरी थोड़ी सी मूर्खता सह लेते, परन्तु वास्तव में तुम सह भी रहे हो। [2]क्योंकि मुझे तुम्हारे लिए लगन है, परमेश्वर की सी लगन, क्योंकि मैंने तुम्हारी सगाई एक पति अर्थात् मसीह से की है कि तुम्हें एक पवित्र कुंवारी की भांति उसे सौंप दूं। [3]परन्तु मुझे भय है कि जसे सर्प ने हव्वा को अपनी धूर्तता से धोखा दिया, वैसे ही तुम्हारे मन मसीह की भक्ति की सरलता और पवित्रता से कहीं भटक न जाएं। [4]क्योंकि यदि कोई आकर किसी अन्य यीशु का प्रचार करे जिसका प्रचार हमने नहीं किया या तुम्हें कोई और आत्मा मिले जो पहिले नहीं मिली थी, अथवा कोई दूसरा सुसमाचार सुनाए जिसे तुमने ग्रहण नहीं किया था तो तुम उसकी बात सरलता से मान लेते हो। [5]मैं अपने आप को महाप्रेरितों से किसी भी तरह कम नहीं समझता। [6]भले ही मैं बोलने में निपुण नहीं, फिर भी ज्ञान में तो हूं। सच तो यह है कि हमने सब बातों में इसे हर प्रकार से तुम पर प्रकट कर दिया है।

[7]क्या मैंने तुम्हें ऊंचा उठाने के लिए अपने आप को दीन करके और मुफ़्त में सुसमाचार सुनाकर पाप किया? [8]मैंने दूसरी कलीसियाओं से मज़दूरी लेकर उन्हें लूटा कि तुम्हारी सेवा करूं। [9]और जब मैं तुम्हारे साथ था और आवश्यकता पड़ी तो मैं किसी पर भार न बना, क्योंकि जब मैसीडोनिया से भाई आए तो उन्होंने मेरी सारी आवश्यकताएं पूरी कीं और मैंने प्रत्येक बात में अपने आप को अलग रखा कि तुम पर बोझ न बनूं, और ऐसा ही करता रहूंगा। [10]यदि मसीह की सच्चाई मुझ में है तो अखाया के क्षेत्र में ऐसा गर्व करने से मुझे कोई नहीं रोक सकेगा। [11]क्यों? क्या इसलिए कि मैं तुमसे प्रेम नहीं करता? परमेश्वर तो जानता है कि मैं करता हूं! [12]परन्तु जो मैं कर रहा हूं, उसे करता ही रहूंगा कि उन लोगों को अवसर न दूं जो ऐसे अवसर की खोज में हैं कि जिस बात में वे घमण्ड करते हैं उनका आदरमान हमारे समान ही हो।

[13]क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित और धूर्त कार्यकर्त्ता हैं, तथा मसीह के प्रेरित होने का सा रूप धारण करते हैं। [14]इसमें कोई आश्चर्य नहीं, क्योंकि शैतान भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है। [15]इसलिए यदि उसके सेवक भी धार्मिकता के सेवक होने का रूप धारण करते हैं तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं, और उनका अन्त उनके कार्यों के अनुसार होगा।

वह जो बोने वाले को बीज और भोजन के लिए रोटी देता है, तुम्हें बोने के लिए बीज देगा और तुम्हारे बीज को बढ़ाएगा और तुम्हारी धार्मिकता की फसल की वृद्धि करेगा। [11]तुम सब प्रत्येक बात में धनी किए जाओगे कि उदार बनो जिस से हमारे द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद हो। [12]क्योंकि इस सेवा-कार्य के द्वारा न केवल पवित्र लोगों की घटियां पूरी होती हैं, वरन् परमेश्वर को बहुत धन्यवाद देने की भावना उमण्डती रहती है। [13]इस सेवा को प्रमाण मानकर वे परमेश्वर की महिमा करेंगे, क्योंकि तुम मसीह के सुसमाचार को आज्ञाकारिता से अंगीकार करते और उनके तथा सब के लिए उदारतापूर्वक दान देते हो। [14]और वे भी उस अपार अनुग्रह के कारण जो तुम में हुआ है प्रार्थना के द्वारा तुम्हारी बड़ी लालसा करेंगे। [15]परमेश्वर को, उसके उस दान के लिए जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद!

पौलुस का अधिकार

10 अब मैं, पौलुस, स्वयं तुमसे मसीह की नम्रता और कोमलता के द्वारा आग्रह करता हूं—मैं जो तुम्हारी उपस्थिति में दीन हूं, किन्तु अनुपस्थिति में तुम्हारे प्रति साहसी हूं। [2]मैं तुमसे निवेदन करता हूं कि जब मैं आऊं तो मुझे कुछ लोगों के प्रति जो ऐसा सोचते हैं कि हम शरीर के अनुसार चलते हैं ऐसा साहस न दिखाना पड़े जैसा मैं दिखाने का विचार करता हूं। [3]क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते हैं, तथापि हम शरीर के अनुसार युद्ध नहीं करते। [4]क्योंकि हमारे युद्ध के हथियार शारीरिक नहीं परन्तु गढ़ों को ध्वस्त करने के लिए *ईश्वरीय सामर्थ से परिपूर्ण हैं। [5]हम परमेश्वर के ज्ञान के विरुद्ध उठने वाली कल्पनाओं और प्रत्येक अवरोध का खण्डन करते हैं, और प्रत्येक विचार को बन्दी बना कर मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं। [6]जब भी तुम्हारी आज्ञाकारिता पूरी हो जाए तो सब प्रकार की अवज्ञा को दण्डित करने के लिए हम तैयार हैं। [7]*तुम तो उन्हीं बातों को देखते हो जो †आंखों के सामने हैं। यदि किसी को अपने आप में भरोसा हो कि वह मसीह का है तो वह फिर से अपने आप में इस पर विचार करे कि जैसा वह मसीह का है, वैसे ही हम भी हैं। [8]क्योंकि यदि मैं उस अधिकार के विषय में कुछ और भी घमण्ड करूं जिसे प्रभु ने तुम्हारे बिगाड़ने के लिए नहीं, परन्तु बनाने के लिए हमें दिया, तो मैं लज्जित न होऊंगा। [9]मैं नहीं चाहता कि अपने पत्रों के द्वारा तुम्हें डराने वाला ठहरूं। [10]क्योंकि उनका कहना है, "उसके पत्र तो गम्भीर और प्रभावशाली होते हैं, परन्तु उसकी व्यक्तिगत उपस्थिति प्रभावहीन और उसका प्रवचन व्यर्थ है।" [11]ऐसा व्यक्ति यह समझ ले कि अनुपस्थिति के समय हम पत्रों में जो लिखते हैं, वैसे ही उपस्थिति के समय अपने कामों में भी हैं। [12]क्योंकि हमें साहस नहीं कि हम अपनी गणना या तुलना उनके साथ करें जो अपनी प्रशंसा स्वयं करते हैं, पर जब वे अपने को अपने आप ही से नापते हैं, और अपनी तुलना अपने आप ही से करते हैं तो वे नासमझ हैं। [13]परन्तु हम अपनी मर्यादा से बाहर घमण्ड नहीं करेंगे, वरन् उसी सीमा तक घमण्ड करेंगे जिसे परमेश्वर ने हमारे लिए निर्धारित किया है, जिस से तुम तक

4 *या, परमेश्वर के सामने सामर्थी हैं 7 *या, क्या तुम उन्हीं...? †अक्षरशः, मुंह

नहीं मालूम, परमेश्वर जानता है— [4]*स्वर्गलोक में उठा लिया गया, और उसने ऐसी बातें सुनीं जो वर्णन से बाहर हैं, और जिन्हें मनुष्य को बोलने की अनुमति नहीं। [5]ऐसे मनुष्य पर मैं घमण्ड करूंगा, परन्तु अपनी दुर्बलताओं को छोड़ अपने आप पर घमण्ड न करूंगा। [6]यदि मैं घमण्ड करना चाहूं भी तो मूर्ख न ठहरूंगा, क्योंकि मैं सत्य ही कहूंगा। परन्तु मैं ऐसा नहीं करता जिस से कि कोई भी जैसा मुझ में देखता या मुझ से सुनता है उस से बढ़कर न समझे। [7]प्रकाशनों की अधिकता के कारण मैं घमण्ड न करूं, इसलिए मेरी देह में एक कांटा चुभाया गया है, अर्थात् शैतान का एक दूत, कि वह मुझे दुख दे और घमण्ड करने से रोके रहे। [8]मैंने इसके विषय में प्रभु से तीन बार प्रार्थना की कि यह मुझ से दूर हो जाए। [9]और उसने मुझ से कहा, "मेरा अनुग्रह तेरे लिए पर्याप्त है, क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है।" अतः मैं सहर्ष अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा जिससे कि मसीह की सामर्थ मुझमें निवास करे। [10]इस कारण मैं मसीह के लिए निर्बलताओं, अपमानों, दुखों, सतावों, कठिनाइयों में प्रसन्न हूं, क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूं तभी सामर्थी होता हूं।

कुरिन्थियों के विषय में चिन्ता

[11]मैं मूर्ख बना। स्वयं तुम ही ने मुझे विवश किया। वास्तव में तुम्हें तो मेरी प्रशंसा करनी चाहिए थी। यद्यपि मैं कुछ भी नहीं, फिर भी उन महाप्रेरितों से किसी भी तरह कम नहीं हूं। [12]सच्चे प्रेरित के लक्षण भी तुम्हारे मध्य में, चिन्हों, आश्चर्य-कर्मों और *चमत्कारों के साथ, बड़े धैर्य से प्रदर्शित किए गए। [13]किस बात में तुम अन्य कलीसियाओं से तुच्छ समझे गए, सिवाय इसके कि मैं तुम पर भार न बना? मेरी इस भूल को क्षमा करो।

[14]अब तीसरी बार मैं तुम्हारे पास आने को तैयार हूं, और मैं तुम पर भार न बनूंगा, क्योंकि मैं तुम्हारी किसी वस्तु को नहीं वरन् तुम्हें चाहता हूं। क्योंकि बच्चों का यह उत्तरदायित्व नहीं कि माता-पिता के लिए धन बचा रखें, परन्तु माता-पिता बच्चों के लिए बचाते हैं। [15]मैं बड़े हर्ष से तुम्हारी आत्माओं के लिए खर्च करूंगा और खर्च हो जाऊंगा। पर यदि मैं तुमसे अधिक प्रेम रखता हूं तो क्या मुझे कम प्रेम मिलना चाहिए? [16]परन्तु माना कि मैंने तुम पर बोझ नहीं डाला। फिर भी मैं धूर्त हूं, न!—मैंने धोखा देकर तुम्हें फंसा लिया! [17]मैंने तुम्हारे पास जिनको भेजा था उनके द्वारा वास्तव में क्या तुमसे कोई अनुचित लाभ उठाया? [18]मैंने तीतुस को और उसके साथ उस भाई को भी भेजा। क्या तीतुस ने तुमसे कोई अनुचित लाभ उठाया? क्या हमने भी उसी आत्मा *के द्वारा आचरण नहीं किया और उन्हीं पद-चिन्हों पर न चले?

[19]*इस समय तक तुम सोचते होगे कि हम तुम्हारे समक्ष अपने पक्ष का समर्थन कर रहे हैं। वास्तव में, परमेश्वर की उपस्थिति में, हम मसीह में बोलते रहे हैं, और हे प्रियो, यह सब तुम्हारी उन्नति के लिए ही है। [20]जब मैं तुम्हारे पास आऊं तो मुझे डर है कि जैसा मैं चाहता हूं कहीं तुम्हें वैसा न पाऊं और मैं भी वैसा न पाया

4 *शब्दशः, पाराडीसस (फिरदौस) 12 *या, सामर्थ के कार्य 18 *या, से
19 *या, क्या तुम इस समय तक यह सोचते आए कि...?

विपत्तियों के प्रति पौलुस का गर्व

16मैं फिर कहता हूं कोई मुझे मूर्ख न समझे, परन्तु यदि तुम ऐसा समझते हो तो मुझे मूर्ख समझ कर ही ग्रहण करो कि मैं भी कुछ गर्व कर सकूं। 17मैं जो कुछ कह रहा हूं वह प्रभु के इच्छानुसार नहीं, परन्तु मूर्ख के सदृश निःसंकोच होकर गर्व से कह रहा हूं। 18जबकि अनेक लोग शरीर के अनुसार घमण्ड करते हैं तो मैं भी क्यों न करूं? 19तुम इतने बुद्धिमान हो कि आनन्द से मूर्खों की सह लेते हो! 20क्योंकि जब कोई तुम्हें दास बना लेता है या बर्बाद कर देता है या तुम से अनुचित लाभ उठाता है या अपने आप को बड़ा बनाता है या तुम्हारे मुंह पर थप्पड़ मारता है तो तुम उसकी सह लेते हो। 21मैं लज्जित होकर यह कहता हूं कि हम एक दूसरे से तुलना करके निर्बल हो गए हैं। परन्तु जिस किसी बात में कोई साहस रखता है—मैं मूर्खता से कहता हूं—तो मैं भी उतना ही साहस रखता हूं। 22क्या वे ही इब्रानी हैं? मैं भी हूं। क्या वे ही इस्राएली हैं? मैं भी हूं। क्या वे ही इब्राहीम के वंशज हैं? मैं भी हूं। 23क्या वे ही मसीह के सेवक हैं?—मैं पागल की तरह कहता हूं, मैं उनसे बढ़कर हूं—अधिक परिश्रम करने में, बार बार बन्दी होने में, अनगिनित बार पीटे जाने में, बहुधा मृत्यु के जोखिम में। 24मैंने पांच बार यहूदियों से उन्तालीस उन्तालीस कोड़े खाए। 25तीन बार बेंतों से पीटा गया, एक बार मेरा पथराव हुआ, तीन बार मैं जहाज़ी दुर्घटना में फंसा, एक दिन-रात मैंने समुद्र में काटा। 26मैं बार बार यात्राओं में, नदियों के ख़तरों में, डाकुओं के ख़तरों में, अपने देशवासियों के ख़तरों में, गैरयहूदियों के ख़तरों में, नगरों के ख़तरों में, जंगल के ख़तरों में, समुद्र के ख़तरों में तथा झूठे भाइयों के मध्य होने वाले ख़तरों में रहा हूं। 27मैंने परिश्रम और कष्ट में, रात रात भर जागने में, भूख और प्यास में, अक्सर निराहार रहने में, ठण्ड में और उघाड़े रहने में दिन बिताए। 28इन *बाहरी बातों के अतिरिक्त मुझे प्रतिदिन कलीसियाओं की चिन्ता दबाए रहती है। 29किसकी निर्बलता से मैं निर्बल नहीं होता? किसके *पाप में फंसने से मैं †व्याकुल नहीं होता? 30यदि मुझे घमण्ड करना ही है तो मैं अपनी निर्बलता की बातों पर घमण्ड करूंगा। 31प्रभु यीशु का परमेश्वर और पिता, जो सदैव धन्य है, जानता है कि मैं झूठ नहीं बोल रहा हूं। 32दमिश्क में अरितास राजा की ओर से जो हाकिम था उसने मुझे पकड़ने के लिए दमिश्कियों के नगर पर पहरा बैठा रखा था, 33तब टोकरी में बैठाकर शहरपनाह की एक खिड़की में से मुझे नीचे उतार दिया गया और इस प्रकार मैं उसके हाथों में पड़ने से बच निकला।

पौलुस को दिव्य दर्शन

12 अब तो मुझे घमण्ड करना ही पड़ेगा। यद्यपि इस से कुछ लाभ नहीं, फिर भी प्रभु द्वारा दिए गए दर्शनों और प्रकाशनों में घमण्ड करूंगा। 2मैं मसीह में एक ऐसे मनुष्य को जानता हूं जो चौदह वर्ष पहिले—न जाने देह-सहित, न जाने देह-रहित, परमेश्वर ही जानता है—तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया। 3और मैं जानता हूं कि इस प्रकार यही मनुष्य—देह-सहित या देह-रहित मुझे

28 *या, अनिर्धारित

29 *अक्षरशः, ठोकर खाने से †अक्षरशः, नहीं जलता?

गलातियों
के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

1 पौलुस प्रेरित—जो न मनुष्यों की ओर से, न मनुष्य द्वारा नियुक्त हुआ, परन्तु यीशु मसीह और परमेश्वर पिता के द्वारा जिसने यीशु को मृतकों में से जीवित किया—[2]और सब भाइयों की ओर से जो मेरे साथ हैं, गलातिया की कलीसियाओं को:

[3]*हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह और शान्ति मिले, [4]जिसने हमारे पापों के लिए अपने आप को दे दिया कि हमारे परमेश्वर और पिता के इच्छानुसार, हमें इस वर्तमान बुरे *युग से छुड़ा ले। [5]उसकी महिमा सदा सर्वदा होती रहे। आमीन।

कोई दूसरा सुसमाचार नहीं

[6]मुझे आश्चर्य होता है कि परमेश्वर जिसने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उसे तुम इतने शीघ्र किसी अन्य ही सुसमाचार के लिए त्याग रहे हो। [7]वास्तव में दूसरा सुसमाचार तो है ही नहीं, परन्तु कुछ लोग हैं जो तुम्हें विचलित कर रहे हैं और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। [8]परन्तु यदि हम या कोई स्वर्गदूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हमने तुम को सुनाया है, कोई अन्य सुसमाचार तुम्हें सुनाए तो शापित हो। [9]जैसा हम पहिले कह चुके हैं, वैसा ही अब मैं फिर से कहता हूं: जो सुसमाचार तुम ने स्वीकार किया है यदि उसके विपरीत कोई सुसमाचार तुम्हें सुनाए तो वह शापित हो। [10]क्या अब मैं मनुष्यों की कृपा प्राप्त करना चाहता हूं या परमेश्वर की? या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करने का प्रयास कर रहा हूं? यदि मैं अब तक मनुष्यों को प्रसन्न करने का प्रयत्न करता रहता तो मैं मसीह का दास न होता।

सुसमाचार परमेश्वर की ओर से है

[11]भाइयो, मैं चाहता हूं कि तुम यह जान लो कि जो सुसमाचार मैंने तुम को सुनाया था वह मनुष्य का सा नहीं। [12]क्योंकि वह मुझे किसी मनुष्य से प्राप्त नहीं हुआ, न किसी ने मुझे उसकी शिक्षा दी, परन्तु वह मुझे यीशु मसीह के प्रकाशन द्वारा प्राप्त हुआ। [13]यहूदी धर्म में मेरे पूर्व आचरण के विषय में तुम सुन चुके हो कि मैं परमेश्वर की कलीसिया पर

*कुछ प्राचीन हस्तलेखों में: पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु...

4 *या, संसार

जाऊं जैसा तुम चाहते हो, और ऐसा न हो कि तुम में कलह, ईर्ष्या, क्रोध, झगड़े, निन्दा, वकवाद, अहंकार और उपद्रव पाऊं। [21]मुझे भय है, कहीं ऐसा न हो कि जब मैं फिर आऊं तो मेरा परमेश्वर मुझे तुम्हारे सामने दीन करे, और मैं उन बहुतों के लिए शोक करूं जिन्होंने पिछले दिनों में पाप किया और अपनी की हुई अशुद्धता, अनैतिकता और कामुकता से पश्चात्ताप नहीं किया।

अन्तिम चेतावनी

13 अब तीसरी बार मैं तुम्हारे पास आ रहा हूं। **प्रत्येक सत्य की पुष्टि दो या तीन गवाहों के द्वारा की जाएगी।** [2]जब मैं दूसरी बार तुम्हारे मध्य था, तभी तुमसे कह चुका था, और अब जबकि अनुपस्थित हूं तो उन सब से जिन्होंने पाप किया और शेष सब लोगों से भी पहिले से कहे देता हूं, कि यदि मैं दोबारा आऊं तो किसी को भी न छोड़ूंगा, [3]क्योंकि तुम प्रमाण चाहते हो कि मसीह मुझ में होकर बोलता है, और वह तुम्हारे प्रति निर्बल नहीं, परन्तु तुम में सामर्थी है। [4]क्योंकि सचमुच वह निर्बलता के कारण क्रूस पर तो चढ़ाया गया, फिर भी परमेश्वर की सामर्थ से जीवित है। हम भी तो उसमें निर्बल हैं, फिर भी परमेश्वर की उस सामर्थ से जो तुम्हारे लिए है हम उसके साथ जीएंगे। [5]अपने आपको परख कर देखो कि तुम विश्वास में हो या नहीं। अपने आप को जांचो! या क्या तुम अपने विषय में नहीं जानते कि यीशु मसीह तुम में है? अन्यथा तुम जांच में खोटे निकले। [6]परन्तु मेरा विश्वास है कि तुम जान लोगे कि हम स्वयं जांच में खोटे नहीं निकले हैं। [7]अब हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि तुम कोई गलती न करो, इसलिए नहीं कि हम स्वयं खरे दीख पड़ें, पर यह कि तुम वही कर सको जो ठीक है, भले ही हम खोटे जान पड़ें। [8]क्योंकि हम सत्य के विरोध में कुछ नहीं कर सकते, परन्तु केवल सत्य के लिए ही कर सकते हैं। [9]क्योंकि जब हम निर्बल और तुम सामर्थी होते हो तो हम आनन्दित होते हैं, और हम यह भी प्रार्थना करते हैं कि तुम भी सिद्ध हो जाओ। [10]इस कारण मैं तुमसे दूर रहते हुए भी इन बातों को लिख रहा हूं, कि जब मैं तुम्हारे पास आऊं तो मुझे उस अधिकार से जो प्रभु ने मुझे बिगाड़ने के लिए नहीं परन्तु बनाने के लिए दिया है, कड़ाई का व्यवहार न करना पड़े।

अन्तिम शुभकामनाएं

[11]अब अन्त में, हे भाइयो, *आनन्दित होओ, †सिद्ध होते जाओ, शान्ति प्राप्त करो, एक मन रखो, मेल-पूर्वक रहो, और प्रेम तथा शान्ति का परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा। [12]पवित्र चुम्बन से एक दूसरे का अभिवादन करो। [13]सब पवित्र लोग तुम्हें नमस्कार कहते हैं।

[14]प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे।

11 *या, नमस्कार †या, अपने आप को सम्भालो

गलातियों
के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

1 पौलुस प्रेरित—जो न मनुष्यों की ओर से, न मनुष्य द्वारा नियुक्त हुआ, परन्तु यीशु मसीह और परमेश्वर पिता के द्वारा जिसने यीशु को मृतकों में से जीवित किया—[2]और सब भाइयों की ओर से जो मेरे साथ हैं, गलातिया की कलीसियाओं को:

[3]*हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह और शान्ति मिले, [4]जिसने हमारे पापों के लिए अपने आप को दे दिया कि हमारे परमेश्वर और पिता के इच्छानुसार, हमें इस वर्तमान बुरे *युग से छुड़ा ले। [5]उसकी महिमा सदा सर्वदा होती रहे। आमीन।

कोई दूसरा सुसमाचार नहीं

[6]मुझे आश्चर्य होता है कि परमेश्वर जिसने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उसे तुम इतने शीघ्र किसी अन्य ही सुसमाचार के लिए त्याग रहे हो। [7]वास्तव में दूसरा सुसमाचार तो है ही नहीं, परन्तु कुछ लोग हैं जो तुम्हें विचलित कर रहे हैं और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। [8]परन्तु यदि हम या कोई स्वर्गदूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हमने तुम को सुनाया है, कोई अन्य सुसमाचार तुम्हें सुनाए तो शापित हो। [9]जैसा हम पहिले कह चुके हैं, वैसा ही अब मैं फिर से कहता हूं: जो सुसमाचार तुम ने स्वीकार किया है यदि उसके विपरीत कोई सुसमाचार तुम्हें सुनाए तो वह शापित हो। [10]क्या अब मैं मनुष्यों की कृपा प्राप्त करना चाहता हूं या परमेश्वर की? या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करने का प्रयास कर रहा हूं? यदि मैं अब तक मनुष्यों को प्रसन्न करने का प्रयत्न करता रहता तो मैं मसीह का दास न होता।

सुसमाचार परमेश्वर की ओर से है

[11]भाइयो, मैं चाहता हूं कि तुम यह जान लो कि जो सुसमाचार मैंने तुम को सुनाया था वह मनुष्य का सा नहीं। [12]क्योंकि वह मुझे किसी मनुष्य से प्राप्त नहीं हुआ, न किसी ने मुझे उसकी शिक्षा दी, परन्तु वह मुझे यीशु मसीह के प्रकाशन द्वारा प्राप्त हुआ। [13]यहूदी धर्म में मेरे पूर्व आचरण के विषय में तुम सुन चुके हो कि मैं परमेश्वर की कलीसिया पर

3 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में: पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु...   4 *या,संसार

जाऊं जैसा तुम चाहते हो, और ऐसा न हो कि तुम में कलह, ईर्ष्या, क्रोध, झगड़े, निन्दा, बकवाद, अहंकार और उपद्रव पाऊं। [21]मुझे भय है, कहीं ऐसा न हो कि जब मैं फिर आऊं तो मेरा परमेश्वर मुझे तुम्हारे सामने दीन करे, और मैं उन बहुतों के लिए शोक करूं जिन्होंने पिछले दिनों में पाप किया और अपनी की हुई अशुद्धता, अनैतिकता और कामुकता से पश्चात्ताप नहीं किया।

अन्तिम चेतावनी

13 अब तीसरी बार मैं तुम्हारे पास आ रहा हूं। **प्रत्येक सत्य की पुष्टि दो या तीन गवाहों के द्वारा की जाएगी।** [2]जब मैं दूसरी बार तुम्हारे मध्य था, तभी तुमसे कह चुका था, और अब जबकि अनुपस्थित हूं तो उन सब से जिन्होंने पाप किया और शेष सब लोगों से भी पहिले से कहे देता हूं, कि यदि मैं दोबारा आऊं तो किसी को भी न छोड़ूंगा, [3]क्योंकि तुम प्रमाण चाहते हो कि मसीह मुझ में होकर बोलता है, और वह तुम्हारे प्रति निर्बल नहीं, परन्तु तुम में सामर्थी है। [4]क्योंकि सचमुच वह निर्बलता के कारण क्रूस पर तो चढ़ाया गया, फिर भी परमेश्वर की सामर्थ से जीवित है। हम भी तो उसमें निर्बल हैं, फिर भी परमेश्वर की उस सामर्थ से जो तुम्हारे लिए है हम उसके साथ जीएंगे। [5]अपने आपको परख कर देखो कि तुम विश्वास में हो या नहीं। अपने आप को जांचो! या क्या तुम अपने विषय में नहीं जानते कि यीशु मसीह तुम में है? अन्यथा तुम जांच में खोटे निकले। [6]परन्तु मेरा विश्वास है कि तुम जान लोगे कि हम स्वयं जांच में खोटे नहीं निकले हैं। [7]अब हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि तुम कोई गलती न करो, इसलिए नहीं कि हम स्वयं खरे दीख पड़ें, पर यह कि तुम वही करं सको जो ठीक है, भले ही हम खोटे जान पड़ें। [8]क्योंकि हम सत्य के विरोध में कुछ नहीं कर सकते, परन्तु केवल सत्य के लिए ही कर सकते हैं। [9]क्योंकि जब हम निर्बल और तुम सामर्थी होते हो तो हम आनन्दित होते हैं, और हम यह भी प्रार्थना करते हैं कि तुम भी सिद्ध हो जाओ। [10]इस कारण मैं तुमसे दूर रहते हुए भी इन बातों को लिख रहा हूं, कि जब मैं तुम्हारे पास आऊं तो मुझे उस अधिकार से जो प्रभु ने मुझे बिगाड़ने के लिए नहीं परन्तु बनाने के लिए दिया है, कड़ाई का व्यवहार न करना पड़े।

अन्तिम शुभकामनाएं

[11]अब अन्त में, हे भाइयो, *आनन्दित होओ, †सिद्ध होते जाओ, शान्ति प्राप्त करो, एक मन रखो, मेल-पूर्वक रहो, और प्रेम तथा शान्ति का परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा। [12]पवित्र चुम्बन से एक दूसरे का अभिवादन करो। [13]सब पवित्र लोग तुम्हें नमस्कार कहते हैं।

[14]प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे।

---

11 *या, नमस्कार †या, अपने आप को सम्भालो

जाते थे, मुझे और बरनाबास को संगति का दाहिना हाथ दिया कि हम गैरयहूदियों में, और वे खतना वालों में, कार्य करें। 10उन्होंने हम से केवल यही आग्रह किया कि निर्धनों की सुधि लें। इसी कार्य को करने के लिए मैं भी उत्सुक था।

पतरस का विरोध

11परन्तु जब कैफा अन्ताकिया आया तो मैंने उसके सामने उसका विरोध किया, क्योंकि वह दोषी था। 12क्योंकि याकूब के यहां से कुछ लोगों के आने से पूर्व, वह गैरयहूदियों के साथ भोजन किया करता था; परन्तु जब वे आए तो खतना वालों के दल के भय से वह पीछे हटने और किनारा करने लगा। 13शेष यहूदियों ने भी इस कपट में उसका साथ दिया, यहां तक कि बरनाबास भी उन लोगों के कपट के कारण बहक गया। 14परन्तु यह देख कर कि वे लोग सुसमाचार के सत्य के अनुसार आचरण नहीं कर रहे हैं तो सब के सामने मैंने कैफा से कहा, "जब तुम यहूदी होकर गैरयहूदियों के सदृश आचरण करते हो और यहूदियों की तरह नहीं, तो गैरयहूदियों को यहूदियों की तरह आचरण करने के लिए क्यों विवश करते हो?"

15हम तो जन्म से यहूदी हैं, पापी गैर-यहूदियों में से नहीं। 16हम जानते हैं कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं परन्तु मसीह यीशु पर विश्वास करने से धर्मी ठहराया जाता है। इसी कारण हमने भी मसीह यीशु पर विश्वास किया है कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं परन्तु मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहराए जाएं, क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई भी मनुष्य धर्मी नहीं ठहराया जाएगा। 17अतः हम जो मसीह में धर्मी ठहराए जाने की खोज कर रहे हैं, यदि स्वयं ही पापी निकलें तो क्या मसीह पाप का सेवक है? कदापि नहीं! 18जिनको मैं एक बार नष्ट कर चुका हूं, यदि उन्हें फिर बनाता हूं तो स्वयं को अपराधी प्रमाणित करता हूं। 19क्योंकि व्यवस्था के द्वारा मैं व्यवस्था के लिए मर गया कि परमेश्वर के लिए जीवित रह सकूं। 20मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं। अब मैं जीवित नहीं रहा, परन्तु मसीह मुझ में जीवित है, और अब मैं जो शरीर में जीवित हूं, तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया। 21मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराता, क्योंकि यदि धार्मिकता व्यवस्था के द्वारा मिल सकती तो मसीह का मरना व्यर्थ होता।

आत्मा का वरदान विश्वास द्वारा

3 अरे निर्बुद्धि गलातियो, किसने तुम्हें मोह लिया? तुम्हारी आंखों के सामने यीशु मसीह तो क्रूस पर चढ़ाया हुआ प्रदर्शित किया गया था। 2मैं तुम से केवल इतना ही जानना चाहता हूं कि तुम ने आत्मा को क्या व्यवस्था के कामों से पाया, अथवा *सुसमाचार को विश्वास सहित सुनने से? 3क्या तुम इतने निर्बुद्धि हो कि आत्मा से आरम्भ करके अब देह की विधि द्वारा पूर्णता तक पहुंचोगे? 4क्या तुम ने इतने कष्ट व्यर्थ ही उठाए? क्या वे सचमुच व्यर्थ थे? 5जो तुम्हें आत्मा प्रदान करता है और तुम में *सामर्थ के काम करता है, वह क्या इसलिए करता है कि

2 *अक्षरशः विश्वास के सुनने से 5 *या, आश्चर्यकर्म

अत्यधिक अत्याचार करता और उसे नष्ट करने का प्रयत्न किया करता था। [14]मैं यहूदी धर्म में अपनी अवस्था के समकालीन *देशवासियों से अधिक प्रगति कर रहा था तथा अपने पूर्वजों की परम्परा का पालन करने में अत्यन्त उत्साही था। [15]परन्तु परमेश्वर, जिसने मुझे माता के गर्भ ही से नियुक्त किया और अपने अनुग्रह से मुझे बुलाया, [16]जब उसकी महान कृपा हुई कि अपने पुत्र को मुझ में प्रकट करे कि मैं गैरयहूदियों में उसका सुसमाचार सुनाऊं, तब मैंने तुरन्त किसी *मनुष्य से परामर्श नहीं किया, [17]और न मैं उनके पास गया जो मुझ से पहिले यरूशलेम में प्रेरित नियुक्त हुए थे, परन्तु पहिले मैं अरब को चला गया, और वहां से दोबारा फिर दमिश्क को लौट आया।

[18]फिर मैं तीन वर्ष पश्चात् कैफा से भेंट करने यरूशलेम गया और उसके साथ पन्द्रह दिन तक रहा। [19]परन्तु प्रभु के भाई याकूब के अतिरिक्त किसी अन्य प्रेरित से नहीं मिला। [20]*परमेश्वर मेरा साक्षी है कि जो कुछ मैं तुम्हें लिखता हूं उसमें कुछ भी असत्य नहीं। [21]इसके पश्चात् मैं सीरिया और किलिकिया के क्षेत्रों में गया। [22]उस समय तक यहूदिया की कलीसियाओं ने जो मसीह में हैं मुझे देखा ही नहीं था, [23]परन्तु सुना करती थीं कि जो पहिले हम पर अत्याचार किया करता था वही अब उस मत का, जिसे उसने नष्ट करने का प्रयास किया था, प्रचार करता है; [24]और वे *मेरे कारण परमेश्वर की महिमा कर रही थीं।

प्रेरितों द्वारा पौलुस को मान्यता

2 चौदह वर्ष पश्चात् मैं बरनाबास के साथ पुनः यरूशलेम को गया और तीतुस को भी साथ ले गया। [2]मैं ईश्वरीय प्रकाशन के *फलस्वरूप वहां गया, और जो सुसमाचार मैं गैरयहूदियों में प्रचार किया करता हूं वही मैंने उनके समक्ष प्रस्तुत किया, परन्तु गुप्त रूप से केवल प्रतिष्ठित लोगों को, कि कहीं मेरी इस समय की या पिछली दौड़-धूप व्यर्थ न हो जाए। [3]परन्तु किसी ने तीतुस को जो मेरे साथ था यूनानी होने पर भी खतना कराने के लिए विवश नहीं किया। [4]यह उन झूठे भाइयों के कारण ही हुआ जो चोरी से घुस आए थे कि हमारी उस स्वतन्त्रता का जो मसीह यीशु में हमें प्राप्त है, भेद लेकर हमें दास बनाएं। [5]हमने एक क्षण के लिए भी उनकी आधीनता स्वीकार न की, कि सुसमाचार की सच्चाई तुम में बनी रहे। [6]परन्तु वे लोग जो *प्रतिष्ठित समझे जाते थे, उनसे मुझे कुछ न मिला—वे कैसे थे इस से मुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, परमेश्वर †किसी का पक्षपात नहीं करता—[7]इसके विपरीत जब उन्होंने देखा कि जैसा पतरस को *खतना किए हुए लोगों में, वैसा ही मुझे खतना-रहित लोगों में सुसमाचार का कार्य सौंपा गया—[8]क्योंकि जिसने पतरस द्वारा *खतना वालों में प्रेरिताई का कार्य प्रभावपूर्ण रीति से किया उसी ने मुझ से भी गैरयहूदियों में प्रभावशाली कार्य करवाया—[9]जब उन्होंने उस अनुग्रह को पहिचाना जो मुझे दिया गया था, तो याकूब, कैफा और यूहन्ना ने, जो कलीसिया के स्तम्भ समझे

---

14 *अक्षरशः, जाति
16 *अक्षरशः, मांस और लहू
20 *अक्षरशः, देखो, परमेश्वर के सामने
24 *अक्षरशः, मुझ में
2 *अक्षरशः, अनुसार
6 *अक्षरशः, कुछ समझे जाते थे †अक्षरशः, ग्रहण नहीं करता
7 *अक्षरशः, खतने का, वैसा ही मुझे...
8 *अक्षरशः, खतने पर प्रेरिताई

धार्मिकता की प्रतीक्षा करते हैं जिसकी हमें आशा है। [6]मसीह यीशु में न खतने का कुछ महत्त्व है और न खतनारहित होने का, पर केवल विश्वास का जो प्रेम द्वारा होता है। [7]तुम तो भली-भांति दौड़ रहे थे। अब सत्य को मानने में किसने बाधा डाल दी? [8]ऐसी सीख तुम्हारे बुलानेवाले की ओर से नहीं। [9]थोड़ा सा खमीर गूंथे हुए पूरे आटे को खमीरा कर देता हैं। [10]मुझे प्रभु में तुम पर भरोसा है कि तुम किसी अन्य विचारधारा को नहीं अपनाओगे, परन्तु तुम्हें घबरा देने वाला, चाहे वह कोई क्यों न हो, दण्ड भोगेगा। [11]परन्तु हे भाइयो, यदि मैं अब तक खतना का प्रचार करता हूं तो क्यों सताया जाता हूं? फिर तो क्रूस के मार्ग पर जो ठोकर थी वह समाप्त हो गई। [12]भला होता कि जो तुम्हें विचलित कर रहे हैं वे *स्वयं अपना ही अंग काट डालते।

पवित्र आत्मा द्वारा जीवन

[13]हे भाइयो, तुम स्वतन्त्र होने के लिए बुलाए गए हो। इस स्वतन्त्रता को शारीरिक इच्छा पूर्ण करने का साधन न बनाओ, परन्तु प्रेम से एक दूसरे की सेवा करो। [14]क्योंकि सम्पूर्ण व्यवस्था इस कथन के एक ही शब्द में पूर्ण हो जाती है: **"तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।"** [15]परन्तु यदि तुम एक दूसरे को दांत से काटते और फाड़ खाते हो तो सावधान रहो कि कहीं एक दूसरे का सर्वनाश न कर दो।

[16]परन्तु मैं कहता हूं कि पवित्र आत्मा के अनुसार चलो तो तुम शारीरिक इच्छाओं को किसी रीति से पूर्ण नहीं करोगे। [17]क्योंकि शरीर तो पवित्र आत्मा के विरोध में और पवित्र आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करता है। ये तो एक दूसरे के विरोधी हैं, कि जो तुम करना चाहते हो उसे न कर सको। [18]परन्तु यदि तुम पवित्र आत्मा के चलाए चलते हो, तो व्यवस्था के आधीन न रहे। [19]अब शरीर के काम स्पष्ट हैं, अर्थात् व्यभिचार, अशुद्धता, कामुकता, [20]मूर्तिपूजा, जादूटोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, मतभेद, फूट, *दलबन्दी, [21]द्वेष, मतवालापन, रंगरेलियां तथा इस प्रकार के अन्य काम हैं जिनके विषय में मैं तुम को चेतावनी देता हूं—जैसा पहिले चेतावनी दे चुका हूं—कि ऐसे ऐसे काम करने वाले तो परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी न होंगे। [22]परन्तु पवित्र आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, दयालुता, भलाई, विश्वस्तता, [23]नम्रता व संयम हैं। ऐसे ऐसे कामों के विरुद्ध कोई व्यवस्था नहीं है। [24]और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने अपने शरीर को दुर्वासनाओं तथा लालसाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।

[25]यदि हम पवित्र आत्मा के द्वारा जीवित हैं तो पवित्र आत्मा के अनुसार चलें भी। [26]हम अहंकारी न बनें, एक दूसरे को न छेड़ें, और न ही डाह रखें।

सब के साथ भलाई करें

6 हे भाइयो, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए तो तुम जो आत्मिक हो नम्रतापूर्वक उसे सम्भालो, परन्तु सतर्क रहो कि कहीं तुम भी परीक्षा में न पड़ जाओ। [2]एक दूसरे का भार उठाओ और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूर्ण करो। [3]यदि कोई मनुष्य

---

12 *अक्षरशः, अपने आप को काट निकालते

20 *या, विधर्म

जो तुम्हारी परीक्षा का कारण थी, तुच्छ न जाना और न ही †उस से घृणा की, परन्तु तुम ने मुझे परमेश्वर के दूत वरन् स्वयं मसीह यीशु की तरह ग्रहण किया। [15]अब तुम्हारे आनन्द की वह भावना कहां गई? इस बात का मैं साक्षी हूं कि यदि सम्भव होता तो तुम अपनी आंखें तक निकाल कर मुझे दे देते। [16]क्या *सच बोलने के कारण मैं तुम्हारा शत्रु बन गया हूं? [17]वे तुम्हें प्रभावित करके मित्र बनाना तो चाहते हैं, परन्तु भले उद्देश्य से नहीं। वे तुम्हें मुझ से अलग करना चाहते हैं कि तुम उन्हीं को मित्र बना लो, [18]परन्तु यह और भी अच्छा है कि भले उद्देश्य से उत्सुकतापूर्वक मित्र बनाने का प्रयत्न हर समय किया जाए, केवल उसी समय नहीं जबकि मैं तुम्हारे साथ रहता हूं। [19]हे मेरे बच्चो, जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए, मैं तुम्हारे लिए प्रसव की सी पीड़ा में हूं। [20]इच्छा तो यह होती है कि अब तुम्हारे पास आकर और ही तरह से बोलूं, क्योंकि मैं तुम्हारे लिए दुविधा में हूं।

सारा और हाजिरा

[21]हे तुम जो व्यवस्था के आधीन रहना चाहते हो, मुझे बताओ, क्या तुम व्यवस्था की नहीं सुनते? [22]यह लिखा है कि इब्राहीम के दो पुत्र थे, एक दासी से और एक स्वतन्त्र स्त्री से। [23]परन्तु जो पुत्र दासी से उत्पन्न हुआ वह शारीरिक रीति से जन्मा; और जो पुत्र स्वतन्त्र स्त्री से हुआ वह प्रतिज्ञा के अनुसार जन्मा। [24]*इस में एक दृष्टान्त है: ये स्त्रियां मानो दो हैं, एक तो सीनै पर्वत की, †जिस ल दास ही उत्पन्न होते हैं— और वह हाजिरा है। [25]और हाजिरा मानो अरब का सीनै पर्वत है, जो वर्तमान यरूशलेम के समान है, क्योंकि वह अपनी सन्तानों सहित दासत्व में है। [26]परन्तु ऊपर की यरूशलेम स्वतन्त्र है, और वह हमारी माता है। [27]क्योंकि लिखा है, "**हे बांझ, तू जो नहीं जनती, प्रभु में आनन्द मना। तू जो प्रसव पीड़ा नहीं जानती, हर्षनाद कर, क्योंकि त्यागी हुई की सन्तान, सुहागिन की सन्तान से अधिक हैं।**" [28]और हे भाइयो, तुम इसहाक के समान प्रतिज्ञा की सन्तान हो। [29]परन्तु जैसा उस समय शरीर के अनुसार जन्मा हुआ तो आत्मा के अनुसार जन्मे हुए को सताता था, वैसा ही अब भी होता है। [30]परन्तु पवित्रशास्त्र में क्या लिखा है? "**दासी और उसके पुत्र को निकाल दे, क्योंकि दासी का पुत्र तो स्वतन्त्र स्त्री के पुत्र के साथ उत्तराधिकारी नहीं होगा।**" [31]इसलिए हे भाइयो, हम दासी की नहीं परन्तु स्वतन्त्र स्त्री की सन्तान हैं।

मसीह में स्वतन्त्रता

5 *मसीह ने स्वतन्त्रता के लिए हमें स्वतन्त्र किया है, इसलिए दृढ़ रहो और दासत्व के जुए में फिर न जुतो।

[2]देखो, मैं पौलुस तुमसे कहता हूं कि यदि खतना कराओगे तो मसीह से तुम्हें कुछ लाभ न होगा। [3]और मैं प्रत्येक को जो खतना कराता है बतलाए देता हूं कि उसे सम्पूर्ण व्यवस्था का पालन करना पड़ेगा। [4]तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से वंचित हो गए हो। [5]क्योंकि पवित्र आत्मा के द्वारा हम विश्वास से उस

उसको थूक कर निकाला 16 *या, सच्चाई से व्यवहार करके 24 *अक्षरशः, जो बातें : हैं †अक्षरशः, दासत्व की ओर 1 *इस पद को पद 4:31 के अन्तिम भाग के साथ भी इस प्रकार ... है: हम दासी स्त्री की सन्तान हैं, परन्तु स्वतन्त्र स्त्री की स्वतन्त्रता से मसीह ने हमें स्वतन्त्र किया है

इफिसियों

के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

1 पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है, *इफिसुस निवासी उन पवित्र लोगों को जो मसीह यीशु में विश्वासी हैं:

[2]हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिले।

मसीह में आत्मिक आशिषें

[3]हमारे प्रभु यीशु मसीह का पिता परमेश्वर धन्य हो, जिसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशिषों से आशीषित किया है। [4]उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पूर्व मसीह में चुन लिया कि हम उसके समक्ष प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। [5]उसने हमें अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार पहिले से ही अपने लिए यीशु मसीह के द्वारा लेपालक पुत्र होने के लिए ठहराया, [6]कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो जिसे उसने हमें उस अति प्रिय में सेंतमेंत दिया। [7]हमें, उसमें, उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् हमारे अपराधों की क्षमा, उसके अनुग्रह के धन के अनुसार मिली है, [8]जिसे उसने *समस्त ज्ञान और समझ से हमें बहुतायत से दिया है। [9]उसने हमें अपनी इच्छा का रहस्य अपने भले अभिप्राय के अनुसार जिसे उसने स्वयं निर्धारित किया था, बताया—[10]ऐसे प्रबन्ध के उद्देश्य से कि समयों के पूरे होने पर वह सब कुछ जो स्वर्ग और पृथ्वी पर है, मसीह में एकत्रित करे। [11]उसी में जो अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार सब कुछ करता है, हमने भी उसके अभिप्राय के अनुसार, पहिले से ठहराए जाकर, *उत्तराधिकार प्राप्त किया है, [12]कि हम, जिन्होंने मसीह पर पहिले से आशा रखी थी, उसकी महिमा की स्तुति के कारण हों। [13]उसी में तुम पर भी, जब तुमने सत्य का वचन सुना जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है—और जिस पर तुमने विश्वास किया—प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी। [14]वह हमारे उत्तराधिकार के बयाने के रूप में इस उद्देश्य से दिया गया है कि परमेश्वर के मोल लिए हुओं का छुटकारा हो, जिस से परमेश्वर की महिमा की स्तुति हो।

[15]इस कारण मैं भी तुम्हारे उस

---

1 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में ये दो शब्द नहीं हैं 8 *या, "समस्त ज्ञान और समझ से" नौवें पद के आरम्भ में आ सकता है 11 *या, हम चुने गए हैं, या, हम उत्तराधिकारी बन गए हैं

कुछ न होने पर भी अपने आप को कुछ समझता है तो अपने आप को धोखा देता है। [4]परन्तु प्रत्येक मनुष्य अपने काम को जांचे—तब उसे दूसरे के विषय में नहीं परन्तु अपने ही विषय में गर्व करने का अवसर मिलेगा, [5]क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपना ही बोझ उठाएगा।

[6]जो वचन की शिक्षा पा रहा है, वह अपने शिक्षक को सभी उत्तम वस्तुओं में साझी बनाए। [7]धोखा न खाओ: परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि जैसा बोओगे वैसा ही काटोगे। [8]क्योंकि जो अपने शरीर के लिए बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; परन्तु जो पवित्र आत्मा के लिए बोता है, वह पवित्र आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा। [9]हम भलाई करने में निरुत्साहित न हों, क्योंकि यदि हम शिथिल न पड़ें तो उचित समय पर कटनी काटेंगे। [10]इसलिए जहां तक अवसर मिले सब के साथ भलाई करें, विशेषकर विश्वासी भाइयों के साथ।

अन्तिम चेतावनी और शुभकामनाएं

[11]देखो, मैं कैसे बड़े बड़े अक्षरों में अपने ही हाथों से तुम्हें लिख रहा हूं। [12]जो लोग शारीरिक दिखावा चाहते हैं वे ही तुम्हारा खतना करवाने पर तुले हुए हैं, केवल इसलिए कि मसीह के क्रूस के कारण उन्हें अत्याचार न सहना पड़े, [13]क्योंकि जिनका खतना हो चुका है वे स्वयं तो व्यवस्था पर नहीं चलते, परन्तु तुम्हारा खतना इसलिए कराना चाहते हैं कि तुम्हारी शारीरिक दशा पर घमण्ड करें। [14]परन्तु ऐसा कभी न हो कि मैं किसी अन्य बात पर गर्व करूं, सिवाय प्रभु यीशु मसीह के क्रूस के, जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया जा चुका है, और मैं संसार की दृष्टि में। [15]क्योंकि न तो खतने का कुछ महत्त्व है और न खतनारहित होने का, परन्तु नई सृष्टि का। [16]जितने इस नियम पर चलेंगे उन पर और परमेश्वर के इस्राएल पर शान्ति तथा दया होती रहे।

[17]अब से मुझे कोई दुख न दे, क्योंकि मैं यीशु के दागों को अपने शरीर में लिए फिरता हूं। [18]*हे भाइयो, हमारे प्रभु यीशु* मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे। आमीन।

वंचित थे, प्रतिज्ञा की गई वाचाओं के भागीदार न थे, और आशाहीन तथा संसार में परमेश्वर-रहित थे। [13]परन्तु तुम जो पहिले मसीह यीशु से दूर थे अब मसीह के लहू *के द्वारा उसमें समीप लाए गए हो। [14]क्योंकि वह स्वयं हमारा मेल है जिसने बैर अर्थात् विभाजित करने वाली दीवार को गिराकर दोनों को एक कर दिया, [15]और अपने शरीर में बैर, अर्थात् उस व्यवस्था को जिसकी आज्ञाएं विधियों की रीति पर आधारित थीं, मिटा दिया कि दोनों से अपने में एक नए मनुष्य की सृष्टि करके मेल करा दे, [16]और क्रूस के द्वारा बैर को नाश करके दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मेल कराए। [17]**उसने आकर तुम्हें जो दूर थे और उन्हें भी जो निकट थे मेल-मिलाप का सुसमाचार सुनाया,** [18]क्योंकि उसी के द्वारा हम दोनों की, एक ही आत्मा में, पिता के पास पहुंच होती है। [19]अतः तुम अब विदेशी और अजनबी न रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के कुटुम्ब के बन गए हो। [20]और प्रेरितों तथा भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर, जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं है, बनाए गए हो। [21]जिसमें सम्पूर्ण रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है, [22]जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास-स्थान होने के लिए एक साथ बनाए जाते हो।

गैरयहूदियों में प्रचार सेवा

3 इसी कारण मैं पौलुस जो तुम गैरयहूदियों के लिए मसीह यीशु का कैदी हूं—[2]यदि तुमने वास्तव में परमेश्वर के उस अनुग्रह के प्रबन्ध की चर्चा सुनी हो जो तुम्हारे लिए मुझे सौंपा गया, [3]अर्थात् वह रहस्य जो मुझ पर प्रकाशन के द्वारा प्रकट किया गया, जैसा मैं पहिले ही संक्षेप में लिख चुका हूं, [4]जिसे पढ़कर तुम जान सकते हो कि मैं मसीह के रहस्य को कहां तक समझता हूं, [5]जो पिछली पीढ़ियों में मानव जाति को ऐसा नहीं बताया गया जैसा कि अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर पवित्र आत्मा *के द्वारा प्रकट किया गया है। [6]तात्पर्य यह है कि मसीह यीशु के द्वारा अब गैरयहूदी भी एक ही देह के अंग और सहउत्तराधिकारी तथा प्रतिज्ञा के सहभागी हैं। [7]परमेश्वर के अनुग्रह के उस दान के अनुसार जो उसकी सामर्थ के प्रभाव के अनुसार मुझे दिया गया था मैं उस सुसमाचार का सेवक बना। [8]मुझे, जो सब पवित्र लोगों में छोटे से भी छोटा हूं, यह अनुग्रह प्राप्त हुआ कि मैं गैरयहूदियों को मसीह के अथाह धन का सुसमाचार सुनाऊं, [9]और सब पर यह प्रकाशित करूं कि उस रहस्य का प्रबन्ध क्या है जो सम्पूर्ण वस्तुओं के सृजनहार परमेश्वर में युगों से गुप्त था, [10]कि अब कलीसिया के द्वारा परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो आकाश में हैं प्रकट किया जाए। [11]यह उस *अनन्त अभिप्राय के अनुसार हुआ जो उसने यीशु मसीह हमारे प्रभु में †पूरा किया, [12]जिसमें, उस पर विश्वास करने से, हमें यह साहस और भरोसा हुआ कि हमारी पहुंच परमेश्वर तक हो। [13]इसलिए मैं निवेदन करता हूं कि उन क्लेशों के कारण जो मैं

13 *या, में   5 *या, में   11 *अक्षरशः युगों के †या, स्थापित

विश्वास का समाचार सुनकर जो प्रभु यीशु में है और *तुम्हारा प्रेम जो सब पवित्र लोगों के प्रति है, [16]तुम्हारे लिए निरन्तर धन्यवाद देता हूं और अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण किया करता हूं, [17]कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर, जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी *पूर्ण पहिचान में ज्ञान और प्रकाशन की आत्मा दे। [18]मैं प्रार्थना करता हूं कि तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों, जिस से तुम जान सको कि उसकी बुलाहट की आशा क्या है, और पवित्र लोगों में उसके उत्तराधिकार की महिमा का धन क्या है, [19]और उसकी सामर्थ हम विश्वास करने वालों के प्रति कितनी महान है। ये सब उसकी उस शक्ति के कार्य के अनुसार हैं, [20]जिसे उसने मसीह में पूरा किया जब उसने उसे मरे हुओं में से जिलाकर अपनी दाहिनी ओर स्वर्गीय स्थानों में, अर्थात् [21]सब प्रकार की प्रधानता, अधिकार, सामर्थ और प्रभुता के, तथा प्रत्येक नाम के ऊपर, जो न केवल इस युग में, परन्तु आने वाले युग में भी लिया जाएगा, बैठाया। [22]उसने सब कुछ उसके पैरों तले कर दिया और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया, [23]जो उसकी देह है, और उसकी परिपूर्णता है जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।

मसीह द्वारा जीवन प्राप्ति

2 तुम तो उन अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे, [2]जिनमें तुम ले इस संसार की रीति और आकाश सन करने वाले अधिकारी अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में क्रियाशील है। [3]उन्हीं में हम सब भी पहिले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, शारीरिक तथा *मानसिक इच्छाओं को पूरा करते थे, और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे। [4]परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस महान् प्रेम के कारण जिस से उसने हमसे प्रेम किया, [5]जबकि हम अपने अपराधों के कारण मरे हुए थे उसने हमें मसीह के साथ जीवित किया—अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है—[6]और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया और स्वर्गीय स्थानों में बैठाया, [7]जिस से कि आने वाले युगों में वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए। [8]क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है—और यह तुम्हारी ओर से नहीं वरन् परमेश्वर का दान है, [9]यह कार्यों के कारण नहीं जिससे कि कोई घमण्ड करे। [10]क्योंकि हम उसके हाथ की कारीगरी हैं, जो मसीह यीशु में उन भले कार्यों के लिए सृजे गए हैं जिन्हें परमेश्वर ने प्रारम्भ ही से तैयार किया कि हम उन्हें करें।

मसीह में एक

[11]इस कारण स्मरण करो कि तुम जो शारीरिक रीति से अन्यजाति हो—और जो लोग शरीर में हाथ के किए हुए खतने से खतनावाले कहलाते हैं, वे तुम को खतना रहित कहते हैं— [12]स्मरण करो कि तुम लोग उस समय मसीह से अलग और इस्राएल की प्रजा कहलाए जाने से

15 "प्रेम" अनेक प्राचीन हस्तलेखों में नहीं मिलता

17 *या, सत्य-ज्ञान

3 *, विचारों की इच्छाओं को

होकर, प्रत्येक अंग के ठीक ठीक कार्य करने के द्वारा बढ़ती जाती है, और इस प्रकार प्रेम में स्वयं उसकी उन्नति होती है।

ज्योति की सन्तान

[17]इसलिए मैं कहता हूं और प्रभु में तुम्हें चेतावनी देता हूं कि जिस प्रकार गैरयहूदी अपने मन की अनर्थ रीति पर चलते हैं, तुम आगे को वैसे न चलो। [18]क्योंकि उस अज्ञानता के कारण जो उनमें है, और उनके मन की कठोरता के कारण, उनकी बुद्धि अन्धकारमय हो गई है, और वे परमेश्वर के जीवन से अलग हो गए हैं। [19]वे सुन्न होकर यहां तक लुचपन में लग गए कि सब प्रकार के गन्दे काम करने के लिए लालायित रहते हैं। [20]तुमने तो *मसीह को इस प्रकार नहीं जाना—[21]यदि वास्तव में तुम ने उसके विषय में सुना और जैसा यीशु में सत्य है उसमें सिखाए भी गए, [22]कि तुम पिछले चालचलन के पुराने मनुष्यत्व को उतार डालो जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है। [23]और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नए बनते जाओ, [24]और नए मनुष्यत्व को पहिन लो जो परमेश्वर के अनुरूप सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है।

[25]इस कारण तुम में से प्रत्येक, झूठ बोलना छोड़कर, अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के अंग हैं। [26]क्रोध तो करो पर पाप न करो। तुम्हारा क्रोध सूर्य अस्त होने तक बना न रहे। [27]शैतान को अवसर न दो। [28]चोरी करने वाला फिर चोरी न करे, परन्तु भलाई करने के लिए अपने हाथों से परिश्रम करे, जिससे कि आवश्यकता में पड़े हुए को देने के लिए उसके पास कुछ हो। [29]कोई अश्लील बात तुम्हारे मुंह से न निकले, परन्तु केवल ऐसी बात निकले जो उस समय की आवश्यकता के अनुसार उन्नति के लिए उत्तम हो, जिस से कि सुनने वालों पर अनुग्रह हो। [30]परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है। [31]सब प्रकार की कड़ुवाहट, रोष, क्रोध, कलह और निन्दा, सब प्रकार के बैर-भाव सहित तुम से दूर किए जाएं। [32]एक दूसरे के प्रति दयालु और करुणामय बनो, और परमेश्वर ने मसीह में जैसे तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो।

5 इसलिए प्रिय बालकों के सदृश परमेश्वर का अनुकरण करने वाले बनो, [2]और प्रेम में चलो जैसे मसीह ने भी हम से प्रेम किया और सुखदायक सुगन्धित भेंट बनकर हमारे लिए अपने आपको परमेश्वर के सम्मुख बलिदान कर दिया।

[3]जैसा पवित्र लोगों के लिए उचित है, तुम्हारे मध्य न तो व्यभिचार, न किसी प्रक के अशुद्ध काम, न लोभ का नाम तक लिया जाए, [4]और न तो घृणित कार्य, न मूर्खतापूर्ण बातें, न ठट्ठे की बातें जो शोभा नहीं देती हैं पाई जाएं, वरन् धन्यवाद ही दिया जाए। [5]क्योंकि तुम यह निश्चयपूर्वक जानते हो कि कोई व्यभिचारी, अशुद्ध जन, या लोभी मनुष्य अर्थात् मूर्तिपूजक, मसीह और परमेश्वर

20 *या, मसीह के विषय में इस प्रकार नहीं सुना

तुम्हारे कारण सह रहा हूं निरुत्साहित न होना, क्योंकि वे तुम्हारी महिमा हैं।

इफिसियों के लिए प्रार्थना

[14]इस कारण मैं उस पिता के समक्ष घुटने टेकता हूं [15]जिस से स्वर्ग और पृथ्वी पर *प्रत्येक कुल का नाम रखा जाता है, [16]कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे कि तुम उसके आत्मा के द्वारा अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवान होते जाओ, [17]और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में निवास करे कि तुम प्रेम में नींव डालकर, जड़ पकड़ कर, [18]सब पवित्र लोगों के साथ भली-भांति समझ सको कि उसकी चौड़ाई, लम्बाई, ऊंचाई और गहराई कितनी है, [19]और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है, कि तुम परमेश्वर की समस्त परिपूर्णता तक भरपूर हो जाओ।

[20]अब जो ऐसा सामर्थी है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में क्रियाशील है, कि हमारी विनती और कल्पना से कहीं अधिक बढ़कर कार्य कर सकता है, [21]उस परमेश्वर की महिमा कलीसिया में और मसीह यीशु में पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन।

मसीह की देह में एकता

4 इसलिए मैं जो प्रभु का बन्धुआ हूं तुम से निवेदन करता हूं कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए हो उसके योग्य चाल चलो, [2]अर्थात् सम्पूर्ण दीनता और नम्रता तथा धीरज के साथ प्रेम से एक ...रे के प्रति सहनशीलता प्रकट करो, ...र यत्न करो कि मेल के बन्धन में आत्मा की एकता सुरक्षित रहे। [4]एक ही देह है और आत्मा भी एक है: ठीक उसी प्रकार अपनी बुलाहट की एक आशा में तुम भी बुलाए गए थे। [5]एक ही प्रभु, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा, [6]और सब का एक ही परमेश्वर पिता है, जो सब के ऊपर और सब के मध्य और सब में है। [7]परन्तु हम में से प्रत्येक को मसीह के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह दिया गया है। [8]इसलिए वह कहता है, "**जब वह ऊंचे पर चढ़ा तो बन्धुओं के समूह को बन्धुवाई में ले गया और मनुष्यों को दान दिए।**" [9]अब इस कथन का कि वह ऊंचे पर चढ़ा, क्या अर्थ है? केवल यही कि *वह पृथ्वी के निचले स्थानों में भी उतरा था। [10]और वह जो उतरा था, स्वयं वही है जो सब आकाशों से भी ऊपर चढ़ गया कि सब कुछ परिपूर्ण करे। [11]उसने कुछ को प्रेरित, कुछ को भविष्यद्वक्ता, कुछ को सुसमाचार-प्रचारक, कुछ को पास्टर और कुछ को शिक्षक नियुक्त करके दे दिया, [12]कि पवित्र लोग सेवा कार्य के योग्य बनें और मसीह की देह तब तक उन्नति करे, [13]जब तक कि हम सब के सब विश्वास में और परमेश्वर के पुत्र के *पूर्ण ज्ञान में एक न हो जाएं, परिपक्व न बन जाएं, अर्थात् मसीह के पूरे डील-डौल तक बढ़ न जाएं। [14]अतः हम आगे को बालक न रहें जो मनुष्यों की ठग-विद्या, धूर्तता, भ्रम की युक्ति और सिद्धान्त-रूपी हवा के हर एक झोंके से उछाले और इधर-उधर घुमाए जाते हों, [15]वरन् प्रेम में सच्चाई से चलते हुए सब बातों में उसमें जो सिर है अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएं, [16]जिस से सम्पूर्ण देह, प्रत्येक जोड़ में एक साथ बन्धकर और सुगठित

..., सारे 9 *'वह' के बाद कुछ हस्तलेखों के अनुसार 'पहिले' जुड़ा हुआ है 13 *या, सिद्ध

अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम करे, और पत्नी भी अपने पति का भय माने।

माता-पिता और बच्चे

6 हे बालको, प्रभु में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो, क्योंकि यह उचित है। [2]**अपने माता-पिता का आदर कर**—यह पहिली आज्ञा है जिसके साथ प्रतिज्ञा भी है—[3]**जिससे कि तेरा भला हो और तू पृथ्वी पर बहुत दिन जीवित रहे।** [4]पिताओ, अपने बच्चों को क्रोध न दिलाओ, वरन् प्रभु की शिक्षा और अनुशासन में उनका पालन-पोषण करो।

स्वामी और दास

[5]हे दासो, जैसे तुम मसीह की आज्ञा मानते हो, उसी प्रकार डरते और कांपते हुए, निष्कपट हृदय से उनकी भी आज्ञा मानो जो शारीरिक रूप से तुम्हारे स्वामी हैं। [6]मनुष्यों को प्रसन्न करने वालों के समान दिखावटी सेवा न करो, पर मसीह के दासों के सदृश हृदय से परमेश्वर की इच्छा पूरी करो। [7]इस सेवा को मनुष्य की नहीं पर प्रभु की जानकर सुइच्छा से करो, [8]यह जानते हुए कि चाहे दास हो या स्वतन्त्र, जो जैसा अच्छा कार्य करेगा, वह प्रभु से वैसा ही प्रतिफल पाएगा। [9]हे स्वामियो, तुम भी उनके साथ ऐसा ही व्यवहार करो। यह जानते हुए कि तुम दोनों का स्वामी स्वर्ग में है और वह निष्पक्ष है। धमकियां देना छोड़ो।

आत्मिक संग्राम

[10]अतः प्रभु और उसकी सामर्थ की शक्ति में बलवान बनो। [11]परमेश्वर के सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्र धारण करो जिस से तुम शैतान की युक्तियों का दृढ़तापूर्वक सामना कर सको। [12]हमारा संघर्ष तो मांस और लहू से नहीं वरन् प्रधानों, अधिकारियों, अन्धकार की सांसारिक शक्तियों तथा दुष्टता की उन आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। [13]इसलिए परमेश्वर के समस्त अस्त्र-शस्त्र धारण करो, जिस से तुम बुरे दिन में सामना कर सको और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको। [14]**अतः सत्य से अपनी कमर कस कर और धार्मिकता की झिलम पहिन कर,** [15]**तथा पैरों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिन कर** स्थिर रहो। [16]इनके अतिरिक्त, विश्वास की ढाल लिए रहो जिस से तुम उस दुष्ट के समस्त अग्नि-बाणों को बुझा सको। [17]और उद्धार का टोप तथा आत्मा की तलवार, जो परमेश्वर का वचन है, ले लो। [18]प्रत्येक विनती और निवेदन सहित पवित्र आत्मा में निरन्तर प्रार्थना करते रहो। और यह ध्यान रखते हुए सतर्क रहो कि यत्न सहित सब पवित्र लोगों के लिए लगातार प्रार्थना करो, [19]और मेरे लिए भी प्रार्थना करो कि बोलते समय मुझे ऐसा प्रबल वचन दिया जाए कि मैं साहस से सुसमाचार के रहस्य को प्रकट कर सकूं, [20]जिसके लिए मैं जंजीर से जकड़ा हुआ राजदूत हूं। प्रार्थना करो कि जैसा मुझे बोलना चाहिए, मैं साहस से बोल सकूं।

अन्तिम नमस्कार

[21]तुखिकुस, जो प्रिय भाई और प्रभु में विश्वासयोग्य सेवक है, तुम्हें मेरी परिस्थिति के विषय में बताएगा कि तुम जान सको कि मैं किस स्थिति में हूं। [22]मैं उसे इसी अभिप्राय से तुम्हारे पास भेज रहा हूं कि तुम हमारे विषय में

के राज्य का उत्तराधिकारी नहीं हो सकता। [6]कोई तुम्हें व्यर्थ बातों से धोखा न दे, क्योंकि इन ही के कारण आज्ञा न मानने वालों पर परमेश्वर का प्रकोप पड़ता है। [7]इसलिए तुम ऐसे लोगों के सहभागी न बनो। [8]पहिले तो तुम अन्धकार थे, परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, अतः ज्योति की सन्तान के सदृश चलो— [9]क्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई, धार्मिकता और सत्य है—[10]परखो कि प्रभु किन बातों से प्रसन्न होता है। [11]अन्धकार के निष्फल कामों में सहभागी न हो वरन् इन कामों *को प्रकट करो। [12]क्योंकि जो काम गुप्त में उनके द्वारा किए जाते हैं, उनकी चर्चा भी लज्जा की बात है। [13]पर जितने कार्य प्रकट किए जाते हैं वे सब ज्योति से प्रकट होते हैं, क्योंकि जो सब कुछ *को प्रकट करता है वह ज्योति है। [14]इस कारण वह कहता है, "**हे सोने वाले, जाग और मृतकों में से जी उठ, तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी।**"

[15]इसलिए सावधान रहो कि तुम कैसी चाल चलते हो—निर्बुद्धि मनुष्यों के सदृश नहीं वरन् बुद्धिमानों के सदृश चलो। [16]समय का पूरा पूरा उपयोग करो, क्योंकि दिन बुरे हैं। [17]इस कारण निर्बुद्धि न हो, परन्तु यह जान लो कि प्रभु की इच्छा क्या है। [18]दाखरस पीकर मतवाले न बनो, क्योंकि इस से लुचपन होता है, परन्तु आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ, [19]और आपस में भजन, स्तुति-गान व आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के लिए गाते तथा कीर्तन करते रहो। [20]सदैव सब बातों के लिए प्रभु यीशु मसीह के नाम में परमेश्वर पिता को धन्यवाद दो, [21]और मसीह के भय में एक दूसरे के आधीन रहो।

पति-पत्नियों को आदेश

[22]हे पत्नियो, अपने अपने पति के ऐसे आधीन रहो जैसे कि प्रभु के आधीन हो। [23]क्योंकि पति तो पत्नी का सिर है, जिस प्रकार मसीह भी कलीसिया का सिर है और स्वयं देह का उद्धारकर्त्ता है। [24]पर जैसे कलीसिया मसीह के आधीन है, वैसे ही पत्नियां भी हर बात में अपने अपने पति के आधीन रहें। [25]हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम करो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम किया और अपने आप को उसके लिए दे दिया [26]कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए, [27]और उसे एक ऐसी महिमायुक्त कलीसिया बनाकर प्रस्तुत करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न इनके समान कुछ हो, वरन् पवित्र और निर्दोष हो। [28]इसी प्रकार उचित है कि पति भी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम करे। जो अपनी पत्नी से प्रेम करता है वह स्वयं अपने आप से प्रेम करता है। [29]कोई अपनी देह से घृणा नहीं करता, वरन् उसका पालन-पोषण करता है, जैसे कि मसीह भी कलीसिया का पालन-पोषण करता है, [30]क्योंकि हम उसकी देह के अंग हैं। [31]**अतः मनुष्य अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे।** [32]यह रहस्य तो महान है पर मैं यह बात मसीह और कलीसिया के संदर्भ में कह रहा हूं। [33]अतः तुम में से प्रत्येक

, की ताड़ना करो   13 *या, की ताड़ना करता है

होने के कारण अधिकांश भाई प्रभु में भरोसा रखते हुए परमेश्वर का वचन और भी अधिक साहस तथा निर्भयता के साथ सुनाते हैं। [15]कुछ तो ईर्ष्या और द्वेष के कारण मसीह का प्रचार करते हैं, परन्तु कुछ सद्भाव से। [16]वे जो प्रेम से प्रचार करते हैं जानते हैं कि मैं सुसमाचार की रक्षा के लिए ठहराया गया हूं। [17]अन्य लोग तो भले उद्देश्य से नहीं परन्तु अपनी स्वार्थमय अभिलाषा से यह सोचकर मसीह का प्रचार करते हैं कि बन्दीगृह में मेरे लिए क्लेश उत्पन्न हो। [18]तो क्या हुआ? केवल यह कि चाहे कपट से, चाहे सच्चाई से, मसीह का प्रचार सब प्रकार से होता है—इस कारण मैं आनन्दित हूं, और आनन्दित रहूंगा भी। [19]क्योंकि मैं यह जानता हूं कि तुम्हारी प्रार्थनाओं और यीशु मसीह के आत्मा की सहायता से इस क़ैद का प्रतिफल मेरा छुटकारा होगा। [20]मेरी हार्दिक आशा और अभिलाषा यह है कि मैं किसी बात में लज्जित न होऊं, परन्तु जैसे पूरे साहस से मसीह की महिमा मेरी देह से सदा होती रही है वैसे ही अब भी हो, चाहे मैं जीवित रहूं या मर जाऊं। [21]क्योंकि मेरे लिए जीवित रहना तो मसीह, और मरना लाभ है। [22]परन्तु यदि सदेह जीवित रहूं तो इसका अर्थ मेरे लिए फलदायी परिश्रम है; परन्तु मैं किस बात को चुनूं, यह नहीं जानता। [23]मैं इन दोनों के बीच असमञ्जस में पड़ा हूं। मेरी लालसा तो यह है कि कूंच करके मसीह के पास जा रहूं, क्योंकि यह अति उत्तम है, [24]परन्तु तुम्हारे कारण शरीर में जीवित रहना मेरे लिए अधिक आवश्यक है। [25]इसलिए कि मुझे इसका भरोसा है, मैं जानता हूं कि मैं जीवित रहूंगा, वरन् तुम सब के साथ रहूंगा जिस से तुम विश्वास में दृढ़ होते जाओ तथा उसमें आनन्दित रहो, [26]जिस से कि जो घमण्ड तुम मेरे विषय में करते हो वह मेरे फिर तुम्हारे पास लौट आने से मसीह यीशु में और अधिक बढ़ जाए।

[27]केवल इतना करो कि तुम्हारा आचरण मसीह के सुसमाचार के योग्य हो, जिस से चाहे मैं आकर तुम्हें देखूं अथवा दूर रहूं, मैं तुम्हारे विषय में यही सुनूं कि तुम एक आत्मा में स्थिर हो तथा एक मन होकर, एक साथ मिल कर सुसमाचार के विश्वास के लिए संघर्ष करते हो [28]और विरोधियों से किसी प्रकार भयभीत नहीं होते। यह उनके लिए तो विनाश का, परन्तु तुम्हारे लिए उद्धार का स्पष्ट चिन्ह है, जो परमेश्वर की ओर से है। [29]क्योंकि मसीह के कारण तुम पर यह अनुग्रह हुआ कि तुम उस पर केवल विश्वास ही न करो वरन् उसके लिए कष्ट भी सहो, [30]अर्थात् तुम भी वैसे ही संघर्ष करते रहो जैसा तुमने मुझे करते देखा और सुनते हो कि अब भी कर रहा हूं।

मसीह की दीनता का अनुकरण

2 अतः यदि तुम्हें मसीह में कुछ प्रोत्साहन, प्रेम की सान्त्वना, आत्मा की सहभागिता, प्रीति और सहानुभूति है, [2]तो मेरा आनन्द पूर्ण करने के लिए एक ही मन, एक ही प्रेम, एक ही भावना और एक ही दृष्टिकोण रखो। [3]स्वार्थ और मिथ्याभिमान से कोई काम न करो, परन्तु नम्रतापूर्वक अपनी अपेक्षा दूसरों को उत्तम समझो। [4]तुम में से प्रत्येक अपना ही नहीं, परन्तु दूसरों के हित का भी ध्यान रखे। [5]अपने में वही स्वभाव रखो जो मसीह यीशु में था,

और वह तुम्हारे हृदयों को शान्ति दे सके। [23]परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह की ओर से भाइयों को शान्ति और विश्वास सहित प्रेम मिले। [24]उन पर जो हमारे प्रभु यीशु मसीह से सच्चा प्रेम रखते हैं, अनुग्रह होता रहे।

फिलिप्पियों
के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

1 मसीह यीशु के दास पौलुस और तीमुथियुस की ओर से, मसीह में उन सब पवित्र लोगों को जो *अध्यक्षों और सेवकों सहित फिलिप्पी में रहते हैं:

[2]हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिले।

धन्यवाद और प्रार्थना

[3]जब कभी मैं तुम्हें स्मरण करता हूं, अपने परमेश्वर को धन्यवाद देता हूं, [4]तथा आनन्द के साथ तुम्हारे लिए सदा प्रार्थना करता हूं, [5]क्योंकि पहिले ही दिन से आज तक तुम सुसमाचार में मेरे सहभागी रहे हो। [6]मुझे इस बात का निश्चय है कि जिसने तुम में भला कार्य आरम्भ किया है, वही उसे मसीह यीशु के दिन तक पूर्ण भी करेगा। [7]तुम्हारे विषय में ऐसा विचार करना मेरे लिए सर्वथा उचित है, क्योंकि तुम मेरे मन में बसे हो, इसलिए कि तुम सब मेरी क़ैद में, [illegible] की रक्षा और उसके पुष्टिकरण में मेरे साथ अनुग्रह के सहभागी हो। [8]परमेश्वर इस बात में मेरा साक्षी है कि मैं मसीह यीशु के प्रेम से तुम सब के लिए कितनी लालसा करता हूं। [9]मेरी प्रार्थना यही है कि तुम्हारा प्रेम सच्चे ज्ञान और पूर्ण समझ सहित निरन्तर बढ़ता जाए, [10]जिस से कि तुम उन बातों को जो सर्वोत्तम हैं अपना लो और मसीह के दिन तक पूर्णतः सच्चे और निर्दोष बने रहो; [11]धार्मिकता के फल से जो यीशु मसीह के द्वारा प्राप्त होता है, परिपूर्ण होते जाओ, जिस से परमेश्वर की महिमा और स्तुति होती रहे।

क़ैदी होने से सुसमाचार की उन्नति

[12]अब हे भाइयो, मैं तुम्हें यह बता देना चाहता हूं कि जो कुछ मुझ पर बीता है उस से सुसमाचार की उन्नति ही हुई है, [13]यहां तक कि कैसर के *अंगरक्षकों एवं अन्य सब लोगों में यह बात प्रकट हो गई है कि मैं मसीह के लिए क़ैद में हूं। [14]मेरे वन्दी

, बिशपों और डीकनों   13 *या, राजभवन के लोगों

पर वरन् मुझ पर भी कि मुझे शोक पर शोक न हो। [28]इस कारण मैं उसे भेजने को और भी उत्सुक हुआ जिस से कि उसे फिर देख कर तुम आनन्दित हो जाओ और मेरी चिन्ता भी कम हो जाए। [29]अतः प्रभु में उसका बड़े आनन्द से स्वागत करो, ऐसे लोगों का अधिक आदर किया करो, [30]क्योंकि मसीह के कार्य के लिए वह अपने प्राण को जोखिम में डालकर मरने पर था कि मेरे प्रति तुम्हारी सेवा में जो घटी रह गई थी उसे पूर्ण करे।

सच्ची धार्मिकता

3 अतः हे मेरे भाइयो, प्रभु में आनन्दित रहो। वे ही बातें तुम को बारम्बार लिखने में मुझे तो कुछ कष्ट नहीं होता, क्योंकि इसमें तुम्हारी सुरक्षा है। [2]कुत्तों, कुकर्मियों और *झूठे खतने से सावधान रहो। [3]सच्चा खतना वाले तो हम ही हैं जो परमेश्वर के आत्मा में उपासना करते हैं, मसीह यीशु पर गर्व करते हैं और शरीर पर भरोसा नहीं रखते। [4]मैं तो शरीर पर भी भरोसा रख सकता था। यदि किसी को शरीर पर भरोसा रखने का विचार है तो मुझे उस से भी कहीं अधिक हो सकता है। [5]आठवें दिन मेरा खतना हुआ। इस्राएल जाति के बिन्यामीन गोत्र का हूं। इब्रानियों का इब्रानी, व्यवस्था के पालन की दृष्टि से फरीसी हूं। [6]उत्साह की दृष्टि से मैं कलीसिया का सतानेवाला और व्यवस्था की धार्मिकता के अनुसार निर्दोष था। [7]परन्तु जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैंने मसीह के कारण हानि समझ लिया है। [8]इस से भी बढ़कर मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के ज्ञान की श्रेष्ठता के कारण सब बातों को तुच्छ समझता हूं। जिसके कारण मैंने सब वस्तुओं की हानि उठाई है और उन्हें कूड़ा समझता हूं जिस से मैं मसीह को प्राप्त करूं [9]और मैं मसीह में पाया जाऊं। यह अपनी उस धार्मिकता से नहीं जो व्यवस्था से उत्पन्न होती है, परन्तु उस धार्मिकता से जो मसीह पर विश्वास करने से मिलती है, अर्थात् उस धार्मिकता से जो केवल विश्वास के आधार पर परमेश्वर से प्राप्त होती है, [10]जिस से कि मैं उसको और उसके जी उठने की सामर्थ को तथा उसके साथ दुखों में सहभागी होने के मर्म को जानूं, कि उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूं, [11]कि मैं भी मृतकों के पुनरुत्थान को प्राप्त कर सकूं।

मसीही का लक्ष्य

[12]यह नहीं कि मैं प्राप्त कर चुका हूं या सिद्ध हो चुका हूं, पर उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अग्रसर होता जाता हूं, जिसके लिए मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था। [13]हे भाइयो, मेरी धारणा यह नहीं कि मैं प्राप्त कर चुका हूं, परन्तु यह एक काम करता हूं, कि जो बातें पीछे रह गई हैं, उन्हें भूल कर आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ, [14]लक्ष्य की ओर दौड़ा जाता हूं कि वह इनाम पाऊं जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है। [15]अतः हम में से जितने परिपक्व हैं यही विचार रखें, और यदि किसी बात में तुम्हारा मतभेद हो तो परमेश्वर उसे भी तुम पर प्रकट कर देगा। [16]जिस स्तर तक हम पहुंच चुके हैं, उसी के अनुसार आचरण करें।

[17]भाइयो, तुम सब मिलकर मेरा

2 *या, काट के बिगाड़ने वालों से

[6]जिसने परमेश्वर के *स्वरूप में होते हुए भी परमेश्वर के समान होने को अपने अधिकार में रखने की वस्तु न समझा। [7]उसने अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया कि दास का *स्वरूप धारण कर मनुष्य की समानता में हो गया। [8]इस प्रकार मनुष्य के रूप में प्रकट होकर स्वयं को दीन किया और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु वरन् क्रूस की मृत्यु भी सह ली। [9]इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान् भी किया और उसको वह नाम प्रदान किया जो सब नामों में श्रेष्ठ है, [10]कि यीशु के नाम पर प्रत्येक व्यक्ति घुटना टेके चाहे वह स्वर्ग में हो या पृथ्वी पर या पृथ्वी के नीचे, [11]और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए प्रत्येक जीभ अंगीकार करे कि यीशु मसीह ही प्रभु है।

ज्योति सदृश चमको

[12]इसलिए मेरे प्रियो, जिस प्रकार तुम सदैव आज्ञा पालन करते आए हो, न केवल मेरी उपस्थिति में परन्तु अब उस से भी अधिक मेरी अनुपस्थिति में डरते और कांपते हुए अपने उद्धार का काम पूरा करते जाओ, [13]क्योंकि स्वयं परमेश्वर अपनी सुइच्छा के लिए तुम्हारी इच्छा और कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिए तुम में सक्रिय है। [14]सब काम बिना कुड़कुड़ाए और निर्विवाद किया करो, [15]जिस से तुम निर्दोष और भोले बनो तथा इस कुटिल और भ्रष्ट पीढ़ी के बीच परमेश्वर के निष्कलंक सन्तान बनकर संसार में ज्योति बनकर चमको। [16]जीवन के वचन को दृढ़ता से *थामे रहो जिस से मसीह के दिन मुझे इस बात का गर्व हो कि तो मेरी दौड़-धूप और न मेरा परिश्रम व्यर्थ गया। [17]यद्यपि मैं तुम्हारे विश्वास के बलिदान और उपासना पर अर्घ के समान उंडेला जाता हूं, फिर भी मैं आनन्दित हूं और तुम सब के साथ आनन्द मनाता हूं। [18]मैं निवेदन करता हूं कि तुम भी उसी प्रकार आनन्दित रहो और मेरे साथ आनन्द मनाओ।

तीमुथियुस और इपफ्रुदीतुस

[19]प्रभु यीशु में मुझे आशा है कि मैं शीघ्र ही तीमुथियुस को तुम्हारे पास भेजूंगा जिस से तुम्हारे विषय में सुनकर मुझे प्रसन्नता हो। [20]मेरे पास उसके सदृश कोई अन्य ऐसा व्यक्ति नहीं जिसे शुद्ध मन से तुम्हारे सम्बन्ध में चिन्ता हो। [21]क्योंकि सब अपने स्वार्थ की खोज में रहते हैं न कि मसीह यीशु की। [22]परन्तु तुम्हें उसकी योग्यता का प्रमाण मिल चुका है कि सुसमाचार प्रचार में उसने मेरा हाथ ऐसे बटाया है जैसे पुत्र पिता का। [23]इसलिए मैं आशा करता हूं कि अपने सम्बन्ध में ज्यों ही मुझे कुछ भी मालूम हो जाएगा, मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा। [24]और प्रभु में मुझे भरोसा है कि मैं स्वयं भी शीघ्र आऊंगा। [25]फिर भी मुझे यह आवश्यक जान पड़ा कि अपने भाई व सहकर्मी, संगी योद्धा तथा तुम्हारे *संदेशवाहक और आवश्यक बातों में मेरी सेवा करने वाले अर्थात् इपफ्रुदीतुस को तुम्हारे पास भेजूं, [26]क्योंकि तुमने उसकी बीमारी का समाचार सुन लिया था और वह तुम से मिलने के लिए अत्यन्त व्याकुल व लालायित रहता था। [27]वास्तव में, वह बीमार तो था, यहां तक कि मरने पर था। परन्तु उस पर परमेश्वर की दया हुई, और न केवल उस

7 *या, स्वभाव   16 *या, प्रस्तुत करो   25 *अक्षरशः, प्रेरित

हो, सुसमाचार प्रचार के कार्य में, जब मैं मैसीडोनिया से विदा हुआ तो तुम्हें छोड़ कोई अन्य कलीसिया लेने-देने के विषय में मेरे साथ सहभागी नहीं हुई। [16]इस प्रकार थिस्सलुनीके में भी तुमने मेरी सहायता के लिए एक बार ही नहीं वरन् अनेक बार दान भेजे। [17]यह बात नहीं कि मैं दान चाहता हूं, वरन् ऐसा फल चाहता हूं जो तुम्हारे लाभ के लिए बढ़ता जाए। [18]मेरे पास सब कुछ है और बहुतायत से है। तुमने इपफ्रुदीतुस के हाथ से जो दान भेजा उसे पाकर मैं सन्तुष्ट हूं। वह तो मनमोहक सुगन्ध और ग्रहणयोग्य बलिदान है जिस से परमेश्वर प्रसन्न होता है। [19]मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी प्रत्येक आवश्यकता पूरी करेगा। [20]हमारे परमेश्वर और पिता की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

अन्तिम नमस्कार

[21]प्रत्येक पवित्र जन को जो मसीह यीशु में है, मेरा नमस्कार। जो भाई मेरे साथ हैं, तुम्हें नमस्कार कहते हैं। [22]सब पवित्र लोगों का, विशेषकर कैसर से सम्बन्धित व्यक्तियों का, तुम्हें नमस्कार! [23]प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे।

कुलुस्सियों

के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

1 पौलुस, जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित है, और भाई तीमुथियुस की ओर से, [2]मसीह में उन पवित्र और विश्वासी भाइयों को जो कुलुस्से में रहते हैं:

हमारे पिता परमेश्वर की ओर से अनुग्रह और शान्ति मिले।

धन्यवाद और प्रार्थना

[3]हम तुम्हारे लिए सदैव प्रार्थना करते ए अपने प्रभु यीशु मसीह के पिता मेश्वर का धन्यवाद करते हैं, [4]क्योंकि हमने मसीह यीशु में तुम्हारे विश्व और सब पवित्र लोगों के प्रति तुम्हारे प्रे के विषय में सुना है। [5]यह उस आशा कारण है जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में रखी हु है, जिसके विषय में तुम पहिले ही सत्य वचन अर्थात् उस सुसमाचार में सुन चुके हो, [6]जो तुम्हारे पास पहुंचा है, और जिस प्रकार वह सारे जगत में निरन्तर फल लाता और बढ़ता जा रहा है, उसी प्रकार जिस दिन से तुमने उसे सुना और सच्चाई से परमेश्वर के अनुग्रह को समझा, वह तुम में भी कार्य करता जा रहा है। [7]उसी

अनुकरण करो, और उन्हें ध्यान से देखो जो इस रीति से चलते हैं जिसका नमूना तुम हम में देखते हो; [18]क्योंकि मैं तुम से पहिले अनेक बार कह चुका हूं और अब भी रो-रोकर कहता हूं कि ऐसे बहुत हैं जो अपने आचरण से मसीह के क्रूस के शत्रु हैं। [19]उनका अन्त विनाश है, उनका परमेश्वर पेट है, वे अपनी निर्लज्जता की बातों पर गर्व करते हैं और सांसारिक वस्तुओं पर मन लगाए रहते हैं। [20]परन्तु हमारी नागरिकता स्वर्ग की है, जहां से हम उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह के आगमन की प्रतीक्षा उत्सुकता से कर रहे हैं। [21]वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन-हीन देह का रूप बदल कर, अपनी महिमामय देह के अनुरूप बना देगा।

4 इसलिए, हे मेरे प्रिय भाइयो, तुम जो मेरे आनन्द और मुकुट हो, तुम्हें देखने को मेरा जी तरसता है। हे प्रियो, प्रभु में इसी प्रकार स्थिर रहो।

व्यवहारिक शिक्षा

[2]मैं यूओदिया और सुन्तुखे दोनों से अनुरोध करता हूं कि वे प्रभु में एक मन रहें। [3]हे मेरे सच्चे *सहकर्मी, मैं तुझ से भी निवेदन करता हूं कि तू इन महिलाओं की सहायता कर जिन्होंने मेरे साथ और क्लेमेन्स तथा मेरे अन्य सहकर्मियों सहित जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हैं, सुसमाचार के लिए संघर्ष किया है।

[4]प्रभु में सदा आनन्दित रहो, मैं फिर कहता हूं आनन्दित रहो। [5]तुम्हारी सब मनुष्यों पर प्रकट हो। प्रभु निकट है। [6]किसी भी बात की चिन्ता न करो, परन्तु प्रत्येक बात में प्रार्थना और निवेदन के द्वारा तुम्हारी विनती धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख प्रस्तुत की जाए। [7]तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।

[8]अतः हे भाइयो, जो जो बातें सत्य हैं, जो जो बातें आदरणीय हैं, जो जो बातें न्याय संगत हैं, जो जो बातें पवित्र हैं, जो जो बातें मनोहर हैं, जो जो बातें सुविख्यात हैं, अर्थात् जो जो उत्तम तथा प्रशंसनीय गुण हैं, उन्हीं का ध्यान किया करो। [9]जो कुछ तुमने मुझ से सीखा, ग्रहण किया, सुना और मुझ में देखा है, उन्हीं का अनुकरण करो और परमेश्वर जो शान्ति का स्रोत है तुम्हारे साथ रहेगा।

दान के लिए धन्यवाद

[10]मैं प्रभु में बहुत आनन्दित हूं कि इतने दिनों पश्चात् मेरे प्रति तुम्हारी चिन्ता पुनः जागृत हुई। निःसन्देह पहिले भी तुम्हें मेरी चिन्ता तो थी, परन्तु उसे प्रकट करने का अवसर नहीं मिला। [11]मैं अपने किसी अभाव के कारण यह नहीं कहता, क्योंकि मैंने प्रत्येक परिस्थिति में सन्तुष्ट रहना सीख लिया है। [12]मैं दीन-हीन दशा तथा सम्पन्नता में भी रहना जानता हूं, हर बात और प्रत्येक परिस्थिति में मैंने तृप्त होना, भूखा रहना, और घटना-बढ़ना सीख लिया है। [13]जो मुझे सामर्थ प्रदान करता है, उसके द्वारा मैं सब कुछ कर सकता हूं। [14]फिर भी तुमने भला किया कि मेरे क्लेश में सहभागी हुए। [15]हे फिलिप्पियो, जैसा कि तुम स्वयं जानते

* सिवुज़ुगस (आदमी का नाम)

गुप्त रहा पर अब उसके*पवित्र लोगों पर प्रकट हुआ है। [27]परमेश्वर ने उन पर यह प्रकट करना चाहा; कि गैरयहूदियों में उस रहस्य की महिमा का धन क्या है, अर्थात् यह कि मसीह तुम में वास करता है और यही महिमा की आशा है। [28]हम उसी का प्रचार करते हैं, हर एक मनुष्य को चिता देते हैं और समस्त ज्ञान से हर एक को सिखाते हैं, जिससे कि प्रत्येक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित कर सकें। [29]इसी अभिप्राय से मैं उसकी उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ के साथ कार्य करती है, कठोर परिश्रम करता हूं।

2 मैं चाहता हूं कि तुम जान लो कि मैं तुम्हारे तथा लौदीकिया के निवासियों के लिए और उन सब लोगों के लिए जिन्होंने व्यक्तिगत रूप से मुझे नहीं देखा, कैसा कठोर परिश्रम करता हूं, [2]जिससे कि उनके मन परस्पर प्रेम में बंध कर प्रोत्साहित हों। वे समझ की पूर्ण निश्चयता से उस समस्त धन को प्राप्त करें जिसका परिणाम परमेश्वर का रहस्य अर्थात् मसीह को पहिचानना है। [3]उसमें बुद्धि और ज्ञान के समस्त भण्डार छिपे हुए हैं। [4]यह मैं इसलिए कहता हूं कि कोई तुम्हें लुभाने वाले तर्क द्वारा धोखे में न डाल दे। [5]यद्यपि मैं शरीर में अनुपस्थित हूं, फिर भी आत्मा में तुम्हारे साथ हूं और तुम्हारे अनुशासित जीवन तथा मसीह में तुम्हारे विश्वास की दृढ़ता को देख कर आनन्दित होता हूं।

झूठी शिक्षा से सावधान

[6]इसलिए जैसे तुमने मसीह यीशु को प्रभु मान कर ग्रहण कर लिया है, वैसे ही उसमें चलते रहो, [7]तथा दृढ़ता से जड़ पकड़ते और उसमें बढ़ते हुए, जैसे तुम सिखाए गए थे वैसे ही अपने विश्वास में स्थिर होकर अत्यन्त धन्यवाद करते रहो।

[8]सावधान रहो कि कोई तुम्हें उस तत्वज्ञान और व्यर्थ की बातों के द्वारा भ्रम में न डाले जो मनुष्यों की परम्परा और जगत की प्रारम्भिक शिक्षा के अनुसार तो है, पर मसीह के अनुसार नहीं। [9]क्योंकि उसमें परमेश्वरत्व की समस्त परिपूर्णता सदेह वास करती है, [10]और तुम उसी में परिपूर्ण किए गए हो। और वही समस्त प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है। [11]उसी में तुम्हारा भी ऐसा खतना हुआ है जो हाथ से नहीं वरन् मसीह के अनुसार खतना है, जिसमें शारीरिक देह उतार दी जाती है, [12]और बपतिस्मे में तुम उसके साथ गाड़े गए और उसी के साथ जिलाए भी गए। यह उस विश्वास के द्वारा हुआ जो परमेश्वर की सामर्थ पर है जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया। [13]जब तुम अपने अपराधों और शरीर की खतना-रहित दशा में मृतक थे, तब उसने मसीह के साथ तुम्हें भी जीवित किया। उसने हमारे सब अपराधों को क्षमा किया [14]और विधियों का वह अभिलेख जो हमारे नाम पर और हमारे विरुद्ध था, मिटा डाला, और उसे क्रूस पर कीलों से जड़ कर हमारे सामने से हटा दिया। [15]जब उसने प्रधानों और अधिकारियों को उसके द्वारा निरस्त्र कर दिया, तब उन पर विजय प्राप्त करके उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया।

[16]इसलिए खाने-पीने, पर्व, नए चांद या सब्त के दिन के विषय में कोई तुम्हारा

26 *अर्थात्, सच्चे विश्वासी

की शिक्षा तुमने हमारे प्रिय संगी-दास इपफ्रास से भी पाई जो हमारी ओर से मसीह का विश्वासयोग्य सेवक है। [8]उसने भी तुम्हारे उस प्रेम के विषय में जो पवित्र आत्मा में है, हमें वताया।

[9]इसी कारण, जिस दिन से हमने इसके विषय में सुना है, तुम्हारे लिए प्रार्थना और यह विनती करना नहीं छोड़ा कि तुम समस्त आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहिचान में परिपूर्ण हो जाओ, [10]जिस से तुम्हारा चाल-चलन प्रभु के योग्य हो जाए, और सब प्रकार से उसे प्रसन्न कर सको तथा सब भले कामों से फलवन्त हो कर परमेश्वर के ज्ञान में बढ़ते जाओ, [11]और उसकी महिमामय शक्ति के अनुसार सब प्रकार की सामर्थ से बलवन्त बन सको जिस से हर प्रकार की दृढ़ता और धैर्य प्राप्त कर सको, [12]और पिता का धन्यवाद आनन्द से करते जाओ जिसने हमें इस योग्य बनाया है कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ उत्तराधिकार में सहभागी हों। [13]उसने तो हमें अन्धकार के साम्राज्य से छुड़ा कर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया है, [14]जिसमें हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है।

मसीह की श्रेष्ठता

[15]वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप तथा समस्त सृष्टि में पहिलौठा है। [16]क्योंकि उसी में सब वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की अथवा पृथ्वी की, दृश्य अथवा अदृश्य, सिंहासन अथवा साम्राज्य, शासन अथवा अधिकार— समस्त वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के सृजी गई हैं। [17]वही सब वस्तुओं *में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं। [18]वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है। वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा है, जिससे कि सब बातों में उसी को प्रथम स्थान मिले। [19]क्योंकि पिता को यही भाया कि समस्त परिपूर्णता उसी में वास करे, [20]और उसके क्रूस पर बहाए गए लहू के द्वारा शान्ति स्थापित कर के उसी के द्वारा समस्त वस्तुओं का अपने साथ मेल कर ले—चाहे वे पृथ्वी पर की हों अथवा स्वर्ग में की। [21]तुम पहिले तो अलग किए हुए और मन से वैरी थे, और बुरे कामों में लगे हुए थे, [22]फिर भी उसने अपनी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम से मेल कर लिया है कि तुम्हें अपने समक्ष पवित्र, निष्कलंक और निर्दोष बना कर उपस्थित करे—[23]यह तब ही सम्भव है यदि तुम सचमुच विश्वास में दृढ़ होकर स्थिर बने रहो और सुसमाचार की उस आशा को जिसे तुमने सुना है, न छोड़ो जिसका प्रचार आकाश के नीचे की समस्त सृष्टि में किया गया और जिसका मैं, पौलुस, सेवक बना।

कलीसिया के लिए परिश्रम

[24]अब मैं अपने दुखों में जो तुम्हारे लिए उठाता हूं, आनन्द करता हूं और मसीह के क्लेशों की घटी को उसकी देह अर्थात् कलीसिया के लिए अपने शरीर में पूर्ण करता हूं। [25]इस कलीसिया के लिए मैं परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार सेवक ठहराया गया हूं जो तुम्हारे लाभ के लिए मुझे सौंपा गया, कि मैं परमेश्वर के वचन का पूर्ण रूप से प्रचार करूं, [26]अर्थात् उस रहस्य को जो युगों और पीढ़ियों से

* के पहिले था

को, जो एकता का सिद्ध बन्ध है, धारण कर लो। [15]मसीह की शान्ति तुम्हारे हृदयों में राज्य करे जिसके लिए वास्तव में तुम एक देह में बुलाए गए; और धन्यवादी बने रहो। [16]मसीह के वचन को अपने हृदयों में बहुतायत से बसने दो, समस्त ज्ञान सहित एक दूसरे को शिक्षा और चेतावनी दो, अपने हृदयों में धन्यवाद के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ। [17]वचन या कार्य से जो कुछ करो, सब प्रभु यीशु के नाम से करो और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।

मसीही परिवार के लिए नियम

[18]हे पत्नियो, जैसा प्रभु में उचित है, अपने अपने पति के आधीन रहो। [19]हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम करो और उनके साथ कटु व्यवहार न करो। [20]हे बालको, सब बातों में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो, क्योंकि इस से प्रभु बहुत प्रसन्न होता है। [21]हे पिताओ, अपने बच्चों को क्रोध न दिलाओ, ऐसा न हो कि वे निरुत्साहित हो जाएं। [22]हे दासो, मनुष्यों को प्रसन्न करने वालों के सदृश केवल दिखावटी रूप से नहीं, वरन् प्रभु का भय मानते हुए, हृदय की सच्चाई से, उनकी सब बातों में आज्ञा मानो जो पृथ्वी पर तुम्हारे स्वामी हैं। [23]जो कुछ तुम करते हो, उस कार्य को मनुष्यों का नहीं वरन् प्रभु का समझकर तन-मन से करो, [24]यह जानते हुए कि तुम प्रभु से प्रतिफल अर्थात् मीरास पाओगे। तुम प्रभु मसीह ही की सेवा करते हो। [25]क्योंकि जो बुरा करता है वह अपनी बुराई का प्रतिफल पाएगा और यह पक्षपात-रहित होगा।

4 हे स्वामियो, अपने दासों के साथ न्यायपूर्ण और निष्पक्ष व्यवहार करो, यह जानते हुए कि स्वर्ग में तुम्हारा भी एक स्वामी है।

अन्य व्यवहारिक सलाहें

[2]प्रार्थना में लगे रहो। धन्यवादपूर्वक प्रार्थना में जागृत रहो। [3]इसके साथ ही हमारे लिए भी प्रार्थना करते रहो कि परमेश्वर हमारे लिए वचन सुनाने का ऐसा द्वार खोल दे कि हम मसीह के उस रहस्य का वर्णन कर सकें जिसके कारण मैं बन्दी भी बनाया गया हूं, [4]और यह कि मैं उसे ऐसा प्रकट कर सकूं जैसा मुझे करना भी चाहिए। [5]*समय का सदुपयोग करते हुए बाहर वालों के साथ बुद्धिमानी से व्यवहार करो। [6]तुम्हारी बातचीत सदैव अनुग्रहमयी और सलोनी हो कि तुम प्रत्येक व्यक्ति को उचित उत्तर देना जान जाओ।

अन्तिम नमस्कार

[7]तुखिकुस हमारा प्रिय भाई, प्रभु में संगी दास और विश्वासयोग्य सेवक, मेरे विषय में सब बातें तुम्हें बता देगा। [8]मैं उसे तुम्हारे पास इसी अभिप्राय से भेज रहा हूं कि वह तुम्हें हमारी परिस्थितियों से अवगत कराए और तुम्हारे हृदयों को प्रोत्साहित करे। [9]उसके साथ विश्वास-योग्य और प्रिय भाई उनेसिमुस को भेज रहा हूं जो तुम में से एक है। वे तुम्हें यहां की समस्त परिस्थितियों के विषय में बताएंगे।

[10]अरिस्तर्खुस, जो मेरे साथ बन्दी है, और मरकुस जो बरनाबास का भाई लगता है—जिसके विषय में तुम्हें आदेश

5 *अक्षरशः, समय को फिरौती चुकाना

न्यायी न बने। [17]क्योंकि ये सब आने वाली बातों की छाया-मात्र हैं, पर *मूल-तत्व तो मसीह है। [18]कोई भी झूठी दीनता से और स्वर्गदूतों की पूजा करवा के तुम्हें दौड़ के प्रतिफल से वंचित न करे। ऐसा मनुष्य देखी हुई बातों में लगा रहता है और अपनी शारीरिक समझ पर व्यर्थ फूलता है, [19]और उस सिर से दृढ़तापूर्वक जुड़ा नहीं रहता जिससे सम्पूर्ण देह जोड़ों और स्नायुओं द्वारा पोषण पा कर और सुगठित होकर परमेश्वर प्रदत्त विकास से विकसित होती जाती है।

[20]यदि तुम मसीह के साथ संसार की प्रारम्भिक शिक्षाओं के लिए मर चुके हो तो फिर क्यों उनके समान जो संसार में जीवन व्यतीत करते हैं, ऐसी विधियों से बन्धे हो जैसे, [21]'इसे हाथ में न लो, इसे मत चखो, इसे मत छुओ'? [22]ये नियम मनुष्यों के आदेशों और शिक्षाओं के अनुसार हैं—ये उन सब वस्तुओं के सम्बन्ध में हैं जो प्रयोग में आते आते नष्ट हो जाती हैं। [23]ये वे बातें हैं, अर्थात् धार्मिक आडम्बर, आत्मत्याग और कठोर शारीरिक यंत्रणा, जिनमें निसन्देह ज्ञान का नाम तो है, परन्तु इनसे शारीरिक वासनाओं को रोकने में कोई लाभ नहीं होता।

पवित्र जीवन के नियम

3 इसलिए यदि तुम मसीह के साथ जीवित किए गए तो उन वस्तुओं की खोज में लगे रहो जो स्वर्ग की हैं, जहां मसीह विद्यमान है और परमेश्वर की दाहिनी ओर विराजमान है। [2]अपना मन पृथ्वी पर की नहीं, परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर लगाओ, [3]क्योंकि तुम तो मर चुके हो और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। [4]जब मसीह, जो हमारा जीवन है, प्रकट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा में प्रकट किए जाओगे।

[5]इसलिए *अपनी पार्थिव देह के अंगों को मृतक समझो, अर्थात् व्यभिचार, अशुद्धता, वासना, बुरी लालसा और लोभ को जो मूर्तिपूजा है। [6]इन्हीं के कारण परमेश्वर का प्रकोप *आएगा। [7]और जब तुम इन बुराइयों में जीवन व्यतीत करते थे तो तुम इन्हीं के अनुसार चलते थे। [8]परन्तु अब तुम भी इन सब को अर्थात् क्रोध, रोष, बैरभाव, निन्दा और मुंह से गालियां बकना, छोड़ दो। [9]एक दूसरे से झूठ मत बोलो, क्योंकि तुमने अपने पुराने मनुष्यत्व को उसके बुरे कार्यों सहित त्याग दिया है, [10]और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृष्टिकर्त्ता के स्वरूप के अनुसार सत्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया बनता जाता है। [11]इसमें यूनानी और यहूदी, खतना और खतनारहित, बर्बर, स्कूती, पराधीन और स्वाधीन में, कोई भेद नहीं, परन्तु मसीह सब कुछ और सब में है।

[12]अतः परमेश्वर के उन चुने हुओं के सदृश जो पवित्र और प्रिय हैं, अपने हृदय में सहानुभूति, करुणा, दीनता, विनम्रता और *सहनशीलता धारण करो। [13]यदि किसी को किसी पर दोष देने का कोई कारण हो तो एक दूसरे की सह लो, और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो। जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो। [14]इन सब के ऊपर प्रेम

17 *अक्षरशः, देह 5 *अक्षरशः, पृथ्वी पर के अंगों को मार डालो 6 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में भी जोड़ा गया है—आज्ञा न मानने वालों की सन्तान पर 12 *अर्थात्, दूसरों के प्रति सहनशीलता

[5]क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल शब्दों में, परन्तु सामर्थ में, पवित्र आत्मा में और पूर्ण निश्चयता के साथ भी पहुंचा। तुम्हारे मध्य और तुम्हारे लिए हम किस प्रकार के लोग *प्रमाणित हुए, इसे तुम स्वयं जानते हो। [6]तुम वचन को बड़े क्लेश में, पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ, ग्रहण करके हमारे तथा प्रभु के अनुकरण करने वाले भी बन गए। [7]फलतः मैसीडोनिया तथा अखाया के समस्त विश्वासियों के लिए तुम आदर्श बन गए। [8]क्योंकि तुम्हारे यहां से प्रभु के वचन की न केवल मैसीडोनिया तथा अखाया में धूम मच गई है, परन्तु परमेश्वर के प्रति तुम्हारा विश्वास सर्वत्र फैल गया है। अतः हमें कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं। [9]वे स्वयं ही हमारे विषय में बताते हैं कि तुम्हारे मध्य हमारा कैसा *स्वागत हुआ तथा तुम मूर्तियों को छोड़कर परमेश्वर की ओर कैसे फिरे कि जीवित और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो, [10]तथा स्वर्ग से उसके पुत्र अर्थात् यीशु के आगमन की प्रतीक्षा करो, जिसे उसने मृतकों में से जिला उठाया, और जो हमें आने वाले प्रकोप से बचाता है।

पौलुस की प्रचार सेवा

2 भाइयो, तुम स्वयं ही जानते हो कि तुम्हारे पास हमारा आना व्यर्थ नहीं हुआ, [2]पर तुम तो जानते हो कि फिलिप्पी में दुख उठाने और दुर्व्यवहार सहने के बाद भी हमें अपने परमेश्वर में ऐसा साहस प्राप्त हुआ कि, घोर विरोध के होते हुए भी, हम तुम्हें परमेश्वर का सुसमाचार सुना सके। [3]क्योंकि हमारा उपदेश न तो भ्रम, न अशुद्धता और न छल के साथ है। [4]परमेश्वर ने अपना सुसमाचार सौंपने के लिए हमें योग्य समझा—इसीलिए हम मनुष्यों को नहीं परन्तु हृदयों के जांचने वाले परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए प्रचार करते हैं। [5]जैसा कि तुम जानते हो, हमने न तो कभी चापलूसी की और न ही लोभ के लिए कोई बहाना बनाया—परमेश्वर हमारा गवाह है—[6]और न हमने मनुष्यों से, न दूसरों से प्रशंसा चाही, यद्यपि मसीह के प्रेरित होने के कारण हम तुम पर अपना अधिकार जता सकते थे। [7]परन्तु तुम्हारे मध्य *हमने ऐसी विनम्रता दिखाई जैसे एक दूध पिलाने वाली मां अपने बच्चों का लालन-पालन कोमलता से करती है। [8]इस प्रकार तुम्हारे प्रति ममता होने के कारण हमें प्रसन्नता हुई कि न केवल तुम्हें परमेश्वर का सुसमाचार सुनाएं वरन् तुम्हारे लिए अपने प्राणों को भी दे दें, क्योंकि तुम हमारे लिए अत्यन्त प्रिय हो गए थे। [9]भाइयो, तुम्हें हमारा परिश्रम और कष्ट स्मरण होगा कि हमने तुम में से किसी पर बोझ न बनने के अभिप्राय से कैसे रात-दिन काम-धन्धा करके तुम्हें परमेश्वर का सुसमाचार सुनाया। [10]तुम इस बात के गवाह हो, और वैसे ही परमेश्वर भी है, कि हमने तुम विश्वासियों के साथ पवित्रता, धार्मिकता और निर्दोषता का व्यवहार किया। [11]तुम जानते हो कि जैसे पिता अपने बच्चों के साथ करता है, वैसे ही हम भी तुम में से प्रत्येक को उपदेश देते, प्रोत्साहित करते और आग्रहपूर्वक समझाते रहे, [12]कि तुम परमेश्वर के योग्य चाल चलो, जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है।

[13]इस कारण हम भी सर्वदा परमेश्वर

5 *अक्षरशः, हो गए 9 *अक्षरशः, प्रवेश 7 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में, हम बालक बने

दिए गए थे कि जब वह तुम्हारे पास आए तो तुम उसका स्वागत करना—[11]और यीशु भी जो यूस्तुस कहलाता है, तुम्हें नमस्कार कहते हैं। खतना किए हुओं में से केवल ये ही परमेश्वर के राज्य के लिए मेरे सहकर्मी हैं, और ये ही मेरे प्रोत्साहन का कारण बने हैं। [12]इपफ्रास, जो तुम में से है और यीशु मसीह का दास है, तुम्हें नमस्कार कहता है और सदैव अपनी प्रार्थनाओं में बड़ी लगन से प्रयास करता है कि तुम परमेश्वर की समस्त इच्छा में परिपक्व और आश्वस्त होकर स्थिर रहो। [13]मैं उसका साक्षी हूं कि उसे तुम्हारे और लौदीकिया तथा हियरापुलिस के निवासियों के प्रति गहरी चिन्ता है। [14]प्रिय वैद्य लूका तथा देमास का भी तुम्हें नमस्कार मिले। [15]उन भाइयों को जो लौदीकिया में हैं, नुमफास तथा उस कलीसिया को जो *उसके घर में है नमस्कार कहना। [16]जब यह पत्र तुम्हारे यहां पढ़ लिया जाए तब लौदीकिया की *कलीसिया* में भी पढ़ा जाए, और मेरा वह पत्र जो लौदीकिया से आए उसे तुम भी पढ़ लेना। [17]अर्खिप्पुस से कहना, "जो सेवा प्रभु में तुझे सौंपी गई है उसे सावधानी से पूरी कर।"

[18]मैं, पौलुस, यह नमस्कार अपने हाथ से लिख रहा हूं। मेरी जंजीरों को स्मरण रखना। तुम पर अनुग्रह होता रहे।

१ थिस्सलुनीकियों

थिस्सलुनीकियों के नाम
पौलुस प्रेरित की पहिली पत्री

1 पौलुस, सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से थिस्सलुनीकियों की कलीसिया को, जो पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में है:

तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिले।

विश्वास के लिए धन्यवाद

[2]हम अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण करते हुए तुम सब के लिए परमेश्वर का सदैव धन्यवाद करते हैं। [3]हम तुम्हारे विश्वासपूर्ण कार्य, प्रेमपूर्ण परिश्रम और अपने प्रभु यीशु मसीह में तुम्हारी आशा की दृढ़ता को अपने परमेश्वर और पिता के सम्मुख निरन्तर ध्यान में रखते हैं, [4]और हे भाइयो, परमेश्वर के प्रियो, हम जानते हैं कि तुम उसके चुने हुए हो।

15 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में, उनके

कारण अपने परमेश्वर के सम्मुख आनन्दित होते हैं? [10]हम रात-दिन बड़ी लगन से प्रार्थना करते हैं कि तुम्हें देखें, और तुम्हारे विश्वास की घटी पूरी करें।

[11]अब हमारा परमेश्वर और पिता स्वयं ही तथा हमारा प्रभु यीशु तुम्हारे पास आने में हमारा मार्गदर्शन करे; [12]और प्रभु करे कि तुम एक दूसरे के लिए तथा सब मनुष्यों के लिए प्रेम में उन्नति करते और बढ़ते जाओ, जैसा कि हम भी तुम्हारे लिए करते हैं; [13]कि जब हमारा प्रभु यीशु अपने सब पवित्र लोगों के साथ आए तो वह तुम्हारे हृदयों का हमारे *पिता परमेश्वर के समक्ष पवित्रता में निर्दोष ठहराए।

परमेश्वर को प्रशंसनीय व्यवहार

4 अन्त में, हे भाइयो, हम तुम से प्रभु यीशु में निवेदन करते और तुम्हें समझाते हैं कि जैसे तुमने योग्य चाल चलने और परमेश्वर को प्रसन्न करने की शिक्षा पाई है—जैसा कि तुम सचमुच चलते भी हो—वैसे ही और भी अधिक बढ़ते जाओ। [2]क्योंकि तुम जानते हो कि हम ने प्रभु यीशु *के अधिकार से तुम्हें कौन-कौन सी आज्ञाएं दी हैं। [3]परमेश्वर की इच्छा है कि तुम पवित्र बनो, अर्थात् व्यभिचार से बचे रहो, [4]कि तुम में से प्रत्येक व्यक्ति अपनी *पत्नी को आदर और पवित्रता के साथ प्राप्त करना जाने, [5]यह अन्यजातियों के समान कामुक होकर नहीं जो परमेश्वर को नहीं जानते, [6]कि इस बात में कोई भी अपने भाई का अपराध न करे और न उसे ठगे, क्योंकि प्रभु इन सारी बातों का बदला लेने वाला है, जैसा कि हमने पहिले ही तुम्हें बतलाया तथा गम्भीरतापूर्वक चिताया भी था। [7]क्योंकि परमेश्वर ने हमें अशुद्ध होने के लिए नहीं, परन्तु पवित्र होने के लिए बुलाया है। [8]परिणामस्वरूप जो इसे अस्वीकार करता है, वह मनुष्य को नहीं वरन् परमेश्वर को अस्वीकार करता है, जो तुम्हें अपना पवित्र आत्मा देता है।

[9]अब भाईचारे के प्रेम के विषय में यह आवश्यक नहीं कि कोई तुम्हें लिखे, क्योंकि एक दूसरे से प्रेम करना तुमने आप ही परमेश्वर से सीखा है। [10]क्योंकि तुम सचमुच समस्त मैसीडोनिया के भाइयों के साथ ऐसा ही व्यवहार करते हो। परन्तु भाइयो, हम तुम से आग्रह करते हैं कि और भी बढ़ते जाओ, [11]और जैसी आज्ञा हमने तुम्हें दी है, तुम शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करने की आकांक्षा रखो, अपने काम से काम रखो और अपने हाथों से परिश्रम करो, [12]जिस से बाहर वालों के साथ तुम उचित व्यवहार कर सको और तुम्हें किसी वस्तु का अभाव न रहे।

यीशु का पुनरागमन

[13]परन्तु हे भाइयो, हम नहीं चाहते कि तुम उनके विषय में अनभिज्ञ रहो जो सो गए हैं, और अन्य लोगों के समान शोकित होओ जो आशारहित हैं। [14]हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरा और जी भी उठा—इसलिए परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसके साथ ले आएगा। [15]इस कारण हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से कहते हैं कि हम जो जीवित हैं और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे, सोए हुओं से कदापि आगे न बढ़ेंगे।

13 *अक्षरशः, पिता और परमेश्वर 2 *अक्षरशः, के द्वारा 4 *या, 'देह' को आदर और पवित्रता के साथ वश में रखना जाने, अक्षरशः, 'पात्र' को...वश में रखना (प्राप्त करना) जाने

का धन्यवाद करते हैं कि जब हमारे द्वारा तुम्हें परमेश्वर के वचन का सन्देश मिला, तो तुमने उसे मनुष्यों का नहीं, परन्तु परमेश्वर का वचन समझ कर ग्रहण किया—सचमुच वह है भी—जो तुम विश्वासियों में अपना कार्य भी करता है। [14]हे भाइयो, तुम मसीह यीशु में परमेश्वर की उन कलीसियाओं के अनुकरण करने वाले बन गए जो यहूदिया में हैं, क्योंकि तुमने भी अपने देशवासियों से वैसा ही दुख सहा, जैसा उन्होंने भी यहूदियों के द्वारा सहा था, [15]जिन्होंने प्रभु यीशु और नबियों दोनों को मार डाला तथा हमें भी सताकर भगा दिया। वे परमेश्वर को अप्रसन्न करते हैं और सब मनुष्यों के विरोधी हैं, [16]क्योंकि गैरयहूदियों को उद्धार का सुसमाचार प्रचार करने में वे हमारे लिए बाधा उत्पन्न करते रहे हैं। परिणामस्वरूप वे सर्वदा अपने पाप का पैमाना भरते रहे हैं, परन्तु अब तो प्रकोप उन पर पूरी तरह आ पड़ा है।

मिलन की अभिलाषा

[17]परन्तु हे भाइयो, हम तुम से *थोड़ी देर के लिए अलग हो गए थे—आत्मा में नहीं, परन्तु केवल †शरीर में—इसलिए बड़ी लालसा के साथ तुम्हारा चेहरा देखने को और भी अधिक प्रयत्नशील रहे। [18]क्योंकि हम तुम्हारे पास आने की इच्छा रखते थे—स्वयं, मैं पौलुस, अनेक बार आना चाहता था—फिर भी शैतान विघ्न डालता रहा। [19]भला हमारी आशा या आनन्द या उल्लास का मुकुट कौन है? हमारे प्रभु यीशु के समय उसके समक्ष क्या तुम ही न होगे? [20]तुम ही हमारी महिमा और आनन्द हो।

3 इसलिए जब हम और अधिक न सह सके, तब हम ने एथेन्स में अकेले रह जाना अच्छा समझा, [2]और हमने अपने भाई और मसीह के सुसमाचार में परमेश्वर के सहकर्मी तीमुथियुस को भेजा कि तुम्हारे विश्वास में तुम्हें दृढ़ और उत्साहित करे, [3]जिस से इन क्लेशों से कोई भी विचलित न हो जाए। तुम स्वयं जानते हो कि हम इसी के लिए ठहराए गए हैं। [4]वास्तव में जब हम तुम्हारे साथ थे तो तुम्हें पहिले से ही बताया करते थे कि हमें क्लेश सहने पड़ेंगे, और हुआ भी वैसा ही, जैसा कि तुम जानते हो। [5]इस कारण जब मुझ से और न सहा गया तो मैंने तुम्हारे विश्वास का हाल जानने के लिए भी भेजा, कहीं ऐसा न हो कि परीक्षा करने वाले ने तुम्हारी परीक्षा की हो और हमारा परिश्रम व्यर्थ हो गया हो।

तीमुथियुस का विवरण

[6]परन्तु अब—जबकि तीमुथियुस तुम्हारे विश्वास तथा प्रेम का शुभ सन्देश लेकर हमारे पास लौट आया है, और उसने यह भी बताया है कि तुम हमें प्रेमपूर्वक स्मरण रखते हो और जैसे हम तुम्हें वैसे ही तुम भी हमें देखने को तरसते हो—[7]इस कारण, हे भाइयो, हमारे सारे कष्टों और पीड़ाओं में भी तुम्हारे विश्वास के कारण हमें तुम्हारे विषय में शान्ति प्राप्त हुई: [8]यदि तुम प्रभु में दृढ़ता से स्थिर रहो तो हम सचमुच जीवित हैं। [9]हम उस सारे आनन्द के बदले में परमेश्वर को कैसे धन्यवाद दें जिस से हम तुम्हारे

आत्मा, प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आगमन तक पूरी रीति से निर्दोष और सुरक्षित रहें। [24]तुम्हारा बुलाने वाला विश्वासयोग्य है और वह ऐसा ही करेगा।

[25]भाइयो, हमारे लिए प्रार्थना करो। [26]सब भाइयों को पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो। [27]मैं प्रभु की शपथ देकर अनुरोध करता हूं कि यह पत्री सब भाइयों को पढ़कर सुनाई जाए।

[28]हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारे साथ रहे।

२ थिस्सलुनीकियों

थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री

1 पौलुस, सिलवानुस तथा तीमुथियुस की ओर से थिस्सलुनीकियों की कलीसिया को, जो हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में है:

[2]पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह तथा शान्ति मिले।

धन्यवाद और प्रार्थना

[3]भाइयो, तुम्हारे लिए तो हमें सर्वदा परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, और यह उचित भी है, क्योंकि तुम्हारा विश्वास बहुत बढ़ गया है; और तुम में से हर एक का प्रेम परस्पर और भी बढ़ता जाता है। [4]इसलिए परमेश्वर की कलीसियाओं में हम स्वयं भी तुम पर गर्व करते हैं कि जितनी यातनाएँ व क्लेश तुम सहते हो उन सब में तुम्हारा धैर्य और विश्वास प्रकट होता है। [5]यह परमेश्वर के सच्चे न्याय का स्पष्ट संकेत है कि तुम परमेश्वर के राज्य के योग्य ठहराए जाओ, जिसके लिए तुम सचमुच दुख उठा रहे हो। [6]क्योंकि परमेश्वर के लिए यह न्यायसंगत है कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं, उन्हें बदले में क्लेश दे, [7]और तुम क्लेश पाने वालों को हमारे साथ *उस समय विश्राम दे *जब प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, स्वर्ग से धधकती आग में प्रकट होगा, [8]और जो परमेश्वर को नहीं जानते तथा जो हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते, उन्हें वह दण्ड दे। [9]ऐसे लोग उस दिन प्रभु की उपस्थिति तथा उसकी शक्ति के प्रताप से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे, [10]जब

7 *अक्षरशः, प्रभु यीशु के प्रकट होने पर

[16]क्योंकि प्रभु स्वयं ललकार और प्रधान स्वर्गदूत की पुकार और परमेश्वर की तुरही की आवाज़ के साथ स्वर्ग से उतरेगा, और जो मसीह में मर गए हैं, वे पहिले जी उठेंगे। [17]तब हम जो जीवित हैं और बचे रहेंगे उनके साथ हवा में प्रभु से मिलने के लिए बादलों पर उठा लिए जाएंगे। इस प्रकार हम सदैव प्रभु के साथ रहेंगे। [18]इसलिए इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो।

जागते रहो

5 अब हे भाइयो, इस बात की आवश्यकता नहीं कि समयों या कालों के विषय में तुम्हें कुछ लिखा जाए। [2]क्योंकि तुम स्वयं भलीभांति जानते हो कि जैसे रात्रि में चोर आता है, वैसे ही प्रभु का दिन भी आएगा। [3]जब लोग कह रहे होंगे, "शान्ति और सुरक्षा है," तब जैसे गर्भवती स्त्री पर सहसा प्रसव पीड़ा आ पड़ती है, वैसे ही उन पर भी विनाश आ पड़ेगा, और वे बच न सकेंगे। [4]परन्तु भाइयो, तुम अन्धकार में नहीं हो कि वह दिन तुम पर चोर के समान आ पड़े, [5]क्योंकि तुम सब ज्योति की सन्तान और दिन की सन्तान हो। हम न तो रात्रि के और न ही अन्धकार के हैं। [6]अतः हम दूसरों के समान सोते न रहें, परन्तु सजग और सतर्क रहें, [7]क्योंकि जो सोते हैं, वे रात्रि में सोते हैं, और जो नशे में चूर होते हैं, वे रात्रि में ही होते हैं। [8]परन्तु इसलिए कि हम दिन के हैं, आओ, हम विश्वास और प्रेम का कवच तथा उद्धार की आशा का टोप पहिन कर सतर्क हों। [9]क्योंकि परमेश्वर ने हमें प्रकोप के लिए नहीं, परन्तु हमारे प्रभु यीशु के द्वारा उद्धार प्राप्त करने के लिए ठहराया है, [10]जो हमारे लिए मर गया कि चाहे हम जागते या सोते हों, हम सब मिलकर उसके साथ जीवित रहें। [11]इसलिए एक दूसरे को प्रोत्साहित करो और एक दूसरे *की उन्नति करो जैसा कि तुम कर भी रहे हो।

कलीसिया का व्यवहार व उपदेश

[12]परन्तु भाइयो, हम तुमसे निवेदन करते हैं कि *उनका आदर करो जो तुम्हारे मध्य कठिन परिश्रम करते हैं और जो प्रभु में तुम्हारे ऊपर नियुक्त हैं तथा तुम्हें शिक्षा देते हैं। [13]और उनके कार्य के कारण प्रेमपूर्वक उनका अत्यन्त सम्मान करो। एक दूसरे के साथ मेल-मिलाप से रहो। [14]हे भाइयो, हम तुमसे आग्रह करते हैं कि आलसियों को चेतावनी दो, कायरों को प्रोत्साहन दो, निर्बलों की सहायता करो, सब के साथ सहनशीलता दिखाओ। [15]ध्यान रखो कि कोई बुराई के बदले किसी से बुराई न करे, परन्तु सर्वदा एक दूसरे की तथा सब लोगों की भलाई करने में प्रयत्नशील रहो। [16]सर्वदा आनन्दित रहो, [17]निरन्तर प्रार्थना करो, [18]प्रत्येक परिस्थिति में धन्यवाद दो, क्योंकि मसीह यीशु में तुम्हारे लिए परमेश्वर की यही इच्छा है। [19]आत्मा को न बुझाओ। [20]भविष्यद्वाणियों को तुच्छ न जानो। [21]सब बातों को सावधानी से परखो; जो अच्छी है उसे दृढ़तापूर्वक थामे रहो। [22]सब प्रकार की बुराई से बचे रहो।

आशीर्वाद

[23]अब शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूर्णतः पवित्र करे। और तुम्हारी

11 *या, स्थापन करो 12 *अक्षरशः, उनको जान लो जो

[16]अब स्वयं हमारा प्रभु यीशु मसीह तथा पिता परमेश्वर जिसने हमसे प्रेम किया और अनुग्रह से अनन्त शान्ति तथा उत्तम आशा दी है, [17]तुम्हारे हृदयों को भलाई के प्रत्येक कार्य तथा वचन में दृढ़ करे और शान्ति दे।

प्रार्थना के लिए विनती

3 अतः हे भाइयो, हमारे लिए प्रार्थना करो कि प्रभु का वचन शीघ्रता से फैले और महिमा पाए, जैसा तुम लोगों के मध्य हुआ, [2]और कि भ्रष्ट और दुष्ट मनुष्यों से हम बचे रहें, क्योंकि हर एक में विश्वास नहीं। [3]परन्तु प्रभु विश्वासयोग्य है। वह तुम्हें दृढ़ करेगा तथा *उस दुष्ट से तुम्हारी रक्षा करेगा। [4]हमें प्रभु में तुम पर भरोसा है कि जो भी आज्ञा हम तुम्हें देते हैं, तुम उसका पालन करते हो तथा करते भी रहोगे। [5]प्रभु तुम्हारे हृदयों की अगुवाई परमेश्वर के प्रेम तथा मसीह की दृढ़ता की ओर करे।

आलस्य के प्रति चेतावनी

[6]भाइयो, अब हम प्रभु यीशु मसीह के नाम में तुम्हें आज्ञा देते हैं कि तुम ऐसे प्रत्येक भाई से अलग रहो जो अनुचित चाल चलता है और उस शिक्षा के अनुसार नहीं जो तुमने हमसे पाई है। [7]तुम स्वयं जानते हो कि तुम्हें किस प्रकार हमारा अनुकरण करना चाहिए; क्योंकि तुम्हारे मध्य रहते हुए हम अनुचित चाल नहीं चले [8]और न हमने मुफ़्त में किसी की रोटी खाई, परन्तु रात-दिन परिश्रम व कष्ट के साथ कार्य करते रहे कि हम तुम में से किसी पर बोझ न बनें, [9]ऐसा नहीं कि हमको इसका अधिकार नहीं है, पर इसलिए कि तुम्हारे लिए अपने आप को आदर्श बनाएं, जिससे कि तुम हमारा अनुकरण करो। [10]क्योंकि जब हम तुम्हारे साथ थे तो तुम्हें यह आज्ञा दिया करते थे कि यदि कोई कार्य करना न चाहे तो वह खाने भी न पाए। [11]क्योंकि हम सुनते हैं कि तुम्हारे मध्य कुछ ऐसे हैं जो अनुचित चाल चलते हैं और कोई भी कार्य नहीं करते, परन्तु दूसरों के कार्य में हस्तक्षेप करते हैं। [12]ऐसे व्यक्तियों को हम प्रभु यीशु मसीह के नाम में आज्ञा देते हैं और समझाते हैं कि वे चुपचाप अपना कार्य करें और अपनी ही रोटी खाया करें। [13]पर हे भाइयो, तुम भलाई के काम करने के लिए साहस न छोड़ो। [14]यदि कोई हमारे इस पत्र की बातों का पालन न करे तो उस मनुष्य से सतर्क रहो, और उसकी संगति न करो कि वह लज्जित हो। [15]फिर भी उसे शत्रु न समझो, पर भाई जानकर उसे समझाओ।

अन्तिम नमस्कार

[16]अब शान्ति का प्रभु स्वयं ही तुम्हें हर एक परिस्थिति में सर्वदा शान्ति देता रहे। प्रभु तुम सब के साथ रहे।

[17]मैं, पौलुस, अपने हाथ से यह नमस्कार लिखता हूं, मेरे प्रत्येक पत्र में यही विशेष पहिचान है। मैं इसी प्रकार लिखा करता हूं। [18]हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सब पर होता रहे।

---

3 *या, बुराई

वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने और उन सब में जिन्होंने विश्वास किया है, आश्चर्य का कारण होने के लिए आएगा—और तुम में भी, क्योंकि तुमने हमारी गवाही पर विश्वास किया। [11]इसी उद्देश्य से हम सर्वदा तुम्हारे लिए प्रार्थना भी करते हैं कि हमारा परमेश्वर तुम्हें अपनी बुलाहट के योग्य *समझे, तथा भलाई की हर एक इच्छा कों और विश्वास के हर एक कार्य को सामर्थ सहित पूरा करे, [12]जिससे कि हमारे परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह के अनुसार हमारे प्रभु यीशु का नाम तुम में महिमा पाए, और तुम उसमें।

पाप-पुरुष अर्थात् विनाश का पुत्र

2 हे भाइयो, अब हम तुमसे अपने यीशु मसीह के *आगमन और उसके पास अपने एकत्र होने के सम्बन्ध में निवेदन करते हैं, [2]कि तुम किसी आत्मा, वचन या ऐसे पत्र के द्वारा जो मानो हमारी ओर से यह प्रकट करता हो कि प्रभु का दिन आ गया है, अपने मन में विचलित न होना, और न घबराना। [3]कोई तुम्हें किसी भी तरह धोखा न देने पाए, क्योंकि वह दिन उस समय तक न आएगा जब तक कि पहिले धर्म का परित्याग न हो और *पाप-पुरुष अर्थात् विनाश का पुत्र प्रकट न हो जाए, [4]जो तथाकथित ईश्वर या पूज्य कहलाने वाली प्रत्येक वस्तु का विरोध करता और अपने आप को उन सब से ऊँचा ठहराता है, यहाँ तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर स्वयं को ईश्वर प्रदर्शित करता है। [5]क्या तुम्हें स्मरण नहीं कि जब मैं तुम्हारे साथ था, तब ये बातें तुम्हें बताया करता था? [6]तुम तो जानते हो कि अपने ही समय में प्रकट होने के लिए अभी उसे क्या रोके हुए है। [7]क्योंकि अधर्म का रहस्य अभी भी कार्यशील है, और जब तक रोकने वाला हटा न दिया जाए तब तक वह उसे रोके रहेगा। [8]तब वह अधर्मी प्रकट किया जाएगा जिसे प्रभु अपने मुंह की फूंक से मार डालेगा और अपने *आगमन के तेज़ से भस्म कर देगा। [9,10]उस अधर्मी का आना नाश होने वालों के लिए, शैतान की गतिविधि के अनुसार सम्पूर्ण सामर्थ, चिन्हों, झूठे आश्चर्यकर्मों और दुष्टता के हर धोखे के साथ होगा, क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया कि उनका उद्धार हो। [11]इसी कारण परमेश्वर उन पर भरमाने वाली सामर्थ को भेजेगा कि वे झूठ की प्रतीति करें, [12]जिससे कि वे सब जिन्होंने सत्य की प्रतीति नहीं की परन्तु दुष्टता में मग्न रहे, दण्ड पाएं।

दृढ़ रहो

[13]परन्तु भाइयो, प्रभु के प्रियो, हमें तुम्हारे लिए सर्वदा परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर ने आरम्भ ही से तुम्हें चुन लिया है कि आत्मा के द्वारा पवित्र बन कर और सत्य पर विश्वास करके उद्धार पाओ, [14]जिसके लिए उसने हमारे सुसमाचार के द्वारा तुम्हें बुलाया कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त कर सको। [15]अतः भाइयो, दृढ़ रहो तथा उन रीति-विधियों में स्थिर रहो जिनकी शिक्षा तुमने हमसे मौखिक या पत्रों के द्वारा प्राप्त की है।

1:11 *या, बनाए 1:8 *या, उपस्थिति 3 *अनेक हस्तलेखों में, विधर्मी

मुझ पर दया की गई क्योंकि मैंने यह सब अविश्वास की दशा में नासमझी से किया था। [14]और हमारे प्रभु का अनुग्रह बहुतायत से हुआ, और साथ ही वह विश्वास और प्रेम भी जो मसीह यीशु में है। [15]यह एक विश्वसनीय और हर प्रकार से ग्रहणयोग्य बात है कि मसीह यीशु संसार में पापियों का उद्धार करने आया—जिनमें सब से बड़ा मैं हूं। [16]फिर भी मुझ पर इस कारण दया हुई कि मसीह यीशु मुझ सब से बड़े पापी में अपनी पूर्ण सहनशीलता प्रदर्शित करे कि मैं उनके लिए जो उस पर अनन्त जीवन के निमित्त विश्वास करेंगे, आदर्श बनूं। [17]अब युग युग के राजा—अर्थात् अविनाशी, अदृश्य और अद्वैत परमेश्वर—का आदर और महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

[18]हे मेरे पुत्र तीमुथियुस, तेरे विषय में जो भविष्यद्वाणियां पहिले ही की गई थीं उन्हीं के अनुसार मैं तुझे यह आज्ञा सौंपता हूं कि उनके द्वारा तू कुशलता से लड़, [19]और विश्वास तथा अच्छे विवेक को बनाए रख जिसकी उपेक्षा कर के कुछ लोगों का विश्वास-रूपी जहाज़ डूब गया है। [20]इन्हीं में से हुमिनयुस और सिकन्दर हैं, जिन्हें मैंने शैतान को सौंप दिया है कि उन्हें ईशनिन्दा न करना सिखाया जाए।

आराधना के विषय में निर्देश

2 अब सब से पहिले मेरा अनुरोध यह है कि विनतियां और प्रार्थनाएं, निवेदन तथा धन्यवाद सब मनुष्यों के लिए अर्पित किए जाएं, [2]विशेष रूप से राजाओं और सब पदाधिकारियों के लिए, जिससे कि हम चैन और शान्ति सहित, पूर्ण भक्ति तथा गम्भीरता के साथ जीवन व्यतीत कर सकें। [3]यह हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की दृष्टि में भला और ग्रहणयोग्य है, [4]जो यह चाहता है कि सब लोग उद्धार प्राप्त करें और सत्य को जानें। [5]क्योंकि परमेश्वर एक ही है और परमेश्वर तथा मनुष्यों के बीच एक ही मध्यस्थ भी है, अर्थात मसीह यीशु, जो मनुष्य है। [6]जिसने अपने आपको सब की फिरौती के दाम में दे दिया और इसकी साक्षी उचित समय पर दी गई। [7]मैं सत्य कहता हूं, झूठ नहीं बोलता, कि इसी अभिप्राय से मैं प्रचारक, प्रेरित और गैरयहूदियों के लिए विश्वास और सत्य का उपदेशक ठहराया गया।

[8]इसलिए मैं चाहता हूं कि हर स्थान पर पुरुष, बिना क्रोध और विवाद के, पवित्र हाथों को उठा कर प्रार्थना करें। [9]इसी प्रकार स्त्रियां भी शालीनता और सादगी के साथ उचित वस्त्रों से अपने आप को सुसज्जित करें। वे बाल गूंथने और सोने या मोतियों या बहुमूल्य वस्त्रों से नहीं, [10]वरन् अपने को भले कार्यों से संवारें जैसा कि उन स्त्रियों को शोभा देता है जो अपने आप को भक्तिन कहती हैं। [11]प्रत्येक स्त्री चुपचाप और सम्पूर्ण आधीनता से शिक्षा ग्रहण करे। [12]मैं यह अनुमति नहीं देता कि स्त्री उपदेश दे या पुरुष पर अधिकार जताए: वह चुप रहे। [13]क्योंकि आदम पहिले और हव्वा बाद में बनाई गई। [14]आदम बहकावे में न आया, परन्तु स्त्री अधिक बहकावे में आकर अपराधिनी हुई। [15]परन्तु स्त्रियां, यदि वे संयम के साथ विश्वास, प्रेम व पवित्रता में बनी रहें तो सन्तान उत्पन्न करने के द्वारा *उद्धार प्राप्त करेंगी।

15 *या, सुरक्षित रहेंगी

१ तीमुथियुस

तीमुथियुस के नाम
पौलुस प्रेरित की पहिली पत्री

1 पौलुस की ओर से, हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर और हमारी आशा मसीह यीशु की आज्ञा के अनुसार जो मसीह यीशु का प्रेरित है, [2]विश्वास में मेरे सच्चे पुत्र तीमुथियुस को:

पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से तुझे अनुग्रह, दया और शान्ति मिले।

झूठे शिक्षकों के विरोध में चेतावनी

[3]जैसा मैंने मैसीडोनिया जाते समय तुझ से इफिसुस में रहने का आग्रह किया था अब भी वहीं रह, जिस से तू वहां कुछ लोगों को आदेश दे सके कि वे अन्य प्रकार की शिक्षा न दें, [4]न उन दन्तकथाओं और असीमित वंशावलियों पर ध्यान दें, जो केवल निरर्थक विवाद को ही बढ़ाते हैं और परमेश्वर की उस योजना को पूर्ण नहीं करते जो विश्वास पर आधारित है। [5]परन्तु इस आदेश का अभिप्राय यह है कि पवित्र हृदय और शुद्ध विवेक तथा निष्कपट विश्वास से प्रेम उत्पन्न हो। [6]कुछ लोग तो इन बातों से भटक कर निरर्थक विवाद में फंस गए हैं। [7]वे व्यवस्था के शिक्षक बनना तो चाहते हैं, परन्तु जो कुछ कहते हैं न तो उसे और न उन बातों को समझते हैं जिन्हें दृढ़तापूर्वक कहते हैं। [8]परन्तु हम जानते हैं कि यदि कोई व्यवस्था का उचित उपयोग करे तो व्यवस्था भली है। [9]इस तथ्य पर ध्यान देकर कि व्यवस्था धर्मी जन के लिए नहीं परन्तु निरंकशों, उपद्रवियों, भक्तिहीनों, पापियों, अशुद्धों, अधर्मियों तथा माता-पिता की हत्या करने वालों, हत्यारों, [10]व्यभिचारियों, पुरुष-गामियों, अपहरण-कर्त्ताओं, झूठ बोलने वालों, झूठी शपथ खाने वालों तथा अन्य सब बातों के लिए बनाई गई है जो उस खरी शिक्षा के विरोध में हैं, [11]जो परमधन्य परमेश्वर के महिमामय सुसमाचार के अनुसार है और मुझे सौंपा गया है।

पौलुस पर प्रभु का अनुग्रह

[12]मैं अपने प्रभु मसीह यीशु को धन्यवाद देता हूं जिसने मुझे सामर्थ दी है, क्योंकि उसने मुझे विश्वासयोग्य समझ कर यह सेवा दी। [13]यद्यपि मैं पहिले निन्दा करने वाला, सताने वाला तथा घोर अन्धेर करने वाला व्यक्ति था, फिर भी

कुछ बनाया वह सब अच्छा है, और कुछ भी अस्वीकार करने योग्य नहीं, यदि उसको धन्यवाद के साथ खाया जाए, [5]क्योंकि वह परमेश्वर के वचन और प्रार्थना द्वारा शुद्ध हो जाता है।

[6]भाइयों को इन बातों का स्मरण दिलाकर तू मसीह यीशु का अच्छा सेवक ठहरेगा और विश्वास की बातों और उस खरी शिक्षा द्वारा जिसे तू मानता आया है तेरा पालन-पोषण होता रहेगा। [7]अभक्ति की ऐसी कथा-कहानियों से जो केवल बूढ़ियों के योग्य हैं कोई सम्बन्ध न रख, परन्तु भक्ति के लिए अपने आप को अनुशासित कर, [8]क्योंकि शारीरिक साधना से केवल थोड़ा लाभ होता है, परन्तु भक्ति सब बातों में लाभदायक है, क्योंकि इस पर वर्तमान और आने वाले जीवन की प्रतिज्ञा निर्भर है। [9]यह बात विश्वसनीय और हर प्रकार से ग्रहणयोग्य है। [10]हम इसीलिए परिश्रम और प्रयत्न करते हैं, क्योंकि हमारी आशा जीवित परमेश्वर पर स्थिर है, जो सब मनुष्यों का—विशेषकर विश्वासियों का—उद्धारकर्त्ता है। [11]इन्हीं बातों की आज्ञा और शिक्षा दे। [12]कोई तेरी युवावस्था को तुच्छ न समझे, परन्तु तू वचन, व्यवहार, प्रेम, विश्वास और पवित्रता में विश्वासियों के लिए आदर्श बन जा। [13]मेरे आने तक पवित्रशास्त्र पढ़कर सुनाने, उपदेश देने और सिखाने में लगा रह। [14]अपने उस वरदान से जो तुझ में है और जो तुझे *प्राचीनों के हाथ रखते समय नबूवत द्वारा प्राप्त हुआ था, निश्चिन्त न रह। [15]इनके लिए प्रयत्नशील रह और इन पर अपना पूरा मन लगा, जिस से तेरी प्रगति सब पर प्रकट हो जाए। [16]अपने ऊपर और अपनी शिक्षा पर विशेष ध्यान दे और इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि ऐसा करने से तू अपने और अपने सुनने वालों के भी उद्धार का कारण होगा।

14 *यूनानी, प्रिसबुतिर

विधवाओं, प्राचीनों और दासों के विषय में सुझाव

5 किसी वृद्ध को कठोरता से न डांट; वरन् उसे पिता जानकर समझा। युवकों को भाई, [2]वृद्ध महिलाओं को माता और युवतियों को बहिन जानकर पूर्ण पवित्रता से समझा। [3]उन विधवाओं का आदर कर जो वास्तव में विधवा हैं। [4]यदि किसी विधवा के बेटे-बेटियां या नाती-पोते हों तो उन्हें चाहिए कि सर्वप्रथम अपने परिवार के प्रति भक्ति का व्यवहार करें, और अपने माता-पिता को उनके उपकार का बदला दें, क्योंकि इस से परमेश्वर प्रसन्न होता है। [5]वह जो वास्तव में विधवा है और अकेली है केवल परमेश्वर पर आशा रखती है और रात-दिन निवेदन और प्रार्थना में लवलीन रहती है, [6]परन्तु वह जो भोग-विलास में पड़ गई है, जीवित होते हुए भी मृत है। [7]इन बातों का भी आदेश दिया कर जिस से उन पर कोई लांछन न लग सके। [8]परन्तु यदि कोई अपने लोगों की, और विशेषकर अपने परिवार की, देखभाल नहीं करता तो वह अपने विश्वास से मुकर गया है और एक अविश्वासी से भी निकृष्ट है। [9]उसी विधवा का नाम सूची में सम्मिलित किया जाए जो साठ वर्ष से कम न हो, एक ही पति की पत्नी रही हो, [10]भले काम करने में सुनामी रही हो, और जिसने बच्चों का पालन-पोषण किया हो,

अध्यक्ष और धर्म-सेवक

3 यह कथन सत्य है कि यदि कोई *अध्यक्ष बनने की अभिलाषा रखता है तो वह एक भला कार्य करने की इच्छा करता है। [2]इसलिए अवश्य है कि अध्यक्ष निर्दोष हो, एक ही पत्नी का पति हो, संयमी, समझदार, सम्माननीय, अतिथि सत्कार करने वाला और शिक्षा देने में निपुण हो। [3]शराबी या मारपीट करनेवाला न हो, परन्तु नम्र हो, झगड़ालू और धन का लोभी न हो। [4]वह घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, अपने बाल-बच्चों को ऐसे अनुशासन में रखता हो कि वे उसका सम्मान करें। [5]यदि कोई व्यक्ति अपने ही घर का प्रबन्ध करना नहीं जानता, तो वह परमेश्वर की कलीसिया की देखभाल कैसे करेगा? [6]वह कोई नया चेला न हो, कहीं ऐसा न हो कि अहंकार में पड़कर शैतान के समान दण्ड का भागी हो जाए। [7]कलीसिया के बाहर के लोगों में वह सुनामी हो, कहीं ऐसा न हो कि किसी दोष में पड़कर वह शैतान के फन्दे में फंस जाए।

[8]इसी प्रकार *धर्म-सेवक भी प्रतिष्ठित व्यक्ति हों, दो-मुंहे या पियक्कड़ न हों और न नीच कमाई के लोभी हों, [9]परन्तु विश्वास के भेद को निर्मल विवेक से सुरक्षित रखने वाले हों। [10]और ये भी पहिले परखे जाएं, तब यदि दोषरहित हों तो धर्म-सेवक की भांति उन्हें सेवा करने दो। [11]इसी प्रकार *स्त्रियां भी सम्माननीय हों, द्वेषपूर्ण गपशप करने वाली न हों, परन्तु संयमी तथा सब बातों में विश्वासयोग्य हों। [12]धर्म-सेवक एक पत्नी का पति हो और अपने बाल-बच्चों तथा परिवार का अच्छा प्रबन्धक हो। [13]क्योंकि जिन्होंने धर्म-सेवकों का कार्य अच्छी तरह से पूरा किया है, वे अपने लिए तो एक उच्च-सम्मान तथा उस विश्वास में जो मसीह यीशु में है, दृढ़ निश्चय प्राप्त करते हैं।

[14]मैं यह आशा करते हुए कि तुम्हारे पास शीघ्र आऊंगा तुम्हें ये बातें लिख रहा हूं। [15]यदि मेरे आने में विलम्ब हो जाए तो तुझे मालूम रहे कि परमेश्वर के परिवार में, जो जीवित परमेश्वर की कलीसिया और सत्य का स्तम्भ तथा आधार है, तेरा व्यवहार कैसा होना चाहिए। [16]और निःसन्देह भक्ति का भेद बड़ा गम्भीर है—*वह जो शरीर में होकर प्रकट हुआ, आत्मा द्वारा धर्मी प्रमाणित हुआ, स्वर्गदूतों को दिखाई दिया, गैरयहूदियों में उसका प्रचार हुआ, जगत में उस पर विश्वास किया गया और महिमा में ऊपर उठा लिया गया।

तीमुथियुस को निर्देश

4 परन्तु आत्मा स्पष्ट कहता है कि अन्तिम समय में कुछ लोग भरमानेवाली आत्माओं और दुष्टात्माओं की शिक्षा पर मन लगाने के कारण विश्वास से भटक जाएंगे। [2]ऐसा उन झूठे लोगों के पाखण्ड के कारण होगा जिनका विवेक मानो जलते लोहे से दागा गया हो, [3]जो विवाह न करने और भोजन की कुछ वस्तुओं से परे रहने की शिक्षा देंगे, जिन्हें परमेश्वर ने इसलिए बनाया है कि विश्वासी और सत्य को पहिचानने वाले धन्यवाद के साथ खाएं। [4]परमेश्वर ने जो

1 *या, बिशप
8 *या, डीकन
11 *या, डीकनों की पत्नियां अथवा धर्म सेविकाएं
6 *बाद के कुछ हस्तलेखों में, परमेश्वर

कुछ भी नहीं समझता। उसे वाद-विवाद और शब्दों पर तर्क करने का रोग है, जिससे ईर्ष्या, द्वेष, निन्दा, अश्लील भाषा, बुरे-बुरे संदेह, [5]और उन मनुष्यों के मध्य निरन्तर झगड़े उत्पन्न होते हैं जिनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है, जो सत्य से दूर हो गए हैं और जो भक्ति को लाभ का साधन मानते हैं। [6]परन्तु सन्तोष सहित भक्ति वास्तव में महान् कमाई है। [7]क्योंकि न तो हम संसार में कुछ लाए हैं, न यहां से कुछ ले जाएंगे। [8]यदि हमारे पास भोजन और वस्त्र हैं तो इन्हीं से हम सन्तुष्ट रहेंगे। [9]परन्तु जो धनवान होना चाहते हैं, वे प्रलोभन, फन्दे में, और अनेक मूर्खतापूर्ण और हानिकारक लालसाओं में पड़ जाते हैं जो मनुष्य को पतन तथा विनाश के गर्त में गिरा देती हैं। [10]क्योंकि धन का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है। कुछ लोगों ने इसकी लालसा में विश्वास से भटक कर अपने आप को अनेक दुखों से छलनी बना डाला है।

तीमुथियुस को पौलुस की चेतावनी

[11]परन्तु हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से भाग, और धार्मिकता, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धैर्य और नम्रता का पीछा कर। [12]विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़। अनन्त जीवन को पकड़े रह जिसके लिए तू बुलाया गया था और जिसकी उत्तम गवाही तू ने अनेक गवाहों के सम्मुख दी थी। [13]मैं सब के जीवनदाता परमेश्वर और मसीह यीशु की उपस्थिति में, जिसने पुन्तियुस पिलातुस के सम्मुख उत्तम साक्षी दी, तुझ को यह दृढ़ आज्ञा देता हूं [14]कि हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रकट होने तक इस आज्ञा का निष्कलंक व निर्दोष रूप से पालन कर, [15]जिसे वह उचित समय पर प्रकट करेगा—वह जो परम-धन्य है और एकमात्र सम्राट, राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु, [16]जो अमरता का एकमात्र अधिकारी है और अगम्य ज्योति में निवास करता है, जिसे किसी मनुष्य ने न तो देखा है और न देख सकता है। उसी का सम्मान और प्रभुत्व अनन्तकाल तक होता रहे। आमीन।

[17]जो इस वर्तमान संसार में धनवान हैं उन्हें आदेश दे कि वे अहंकारी न बनें और अनिश्चित धन पर नहीं, परन्तु परमेश्वर पर आशा रखें जो हमारे सुख के लिए सब कुछ बहुतायत से देता है। [18]उन्हें आदेश दे कि भले कार्य करें, भले कार्यों में धनी बनें, दानशील और उदार हों, [19]कि वे अपने लिए ऐसा धन संचय करें जो भविष्य के लिए अच्छी नींव बन जाए, जिस से वे उसको पकड़ लें जो वास्तव में जीवन है।

[20]हे तीमुथियुस, जो धरोहर तुझे सौंपी गई है उसकी रक्षा कर। जिस ज्ञान को ज्ञान कहना ही भूल है, उसके अशुद्ध बकवाद और विरोध की बातों से दूर रह। [21]उसे स्वीकार करके अनेक लोग विश्वास से भटक गए हैं।

तुम पर अनुग्रह होता रहे।

अतिथि सेवा की हो, *पवित्र लोगों के चरण धोए हों, दीन-दुखियों की सहायता की हो और अपने आप को प्रत्येक भले काम में लगाया हो। [11]परन्तु जवान विधवाओं को सूची में सम्मिलित न करना क्योंकि जब वे मसीह से बढ़कर देह की इच्छाओं को महत्व देतीं हैं तो विवाह करना चाहती हैं। [12]इस प्रकार वे दोषी ठहरती हैं, क्योंकि उन्होंने अपनी पहिली विश्वास-प्रतिज्ञा का परित्याग कर दिया है। [13]इसके साथ ही साथ वे घर घर घूम कर आलसी बनना, और न केवल आलसी रहना परन्तु गपशप करना और दूसरों के कामों में व्यर्थ हाथ डालना सीखती हैं और ऐसी बातें कहती हैं जो कहने के योग्य नहीं। [14]इसलिए मैं चाहता हूं कि जवान विधवाएं विवाह करें, सन्तान उत्पन्न करें, घर की देख-भाल करें और शत्रु को निन्दा का अवसर न दें, [15]क्योंकि कुछ तो पहिले से ही बहक कर शैतान का अनुसरण करने लगी हैं। [16]यदि किसी विश्वासी महिला के घर में विधवाएं हैं तो वह उनकी सहायता करे और कलीसिया पर भार न डाले, जिस से कलीसिया उनकी सहायता कर सके जो सचमुच विधवाएं हैं।

[17]जो प्राचीन अच्छा प्रबन्ध करते हैं वे दोगुने आदर के योग्य समझे जाएं, विशेषकर वे जो प्रचार और शिक्षा-कार्य में कठिन परिश्रम करते हैं। [18]क्योंकि पवित्रशास्त्र का कथन है, "दांवने वाले बैल का मुंह न बांधना," और "मज़दूर अपनी मज़दूरी का अधिकारी है।" [19]किसी प्राचीन के विरुद्ध दो या तीन गवाहों के विना कोई दोषारोपण न सुन। [20]जो लोग पाप करते रहते हैं, उन्हें सब के सामने डांट जिस से अन्य लोग भी पाप करने से डरें। [21]मैं तुझे परमेश्वर, मसीह यीशु और उसके चुने हुए स्वर्गदूतों की उपस्थिति में दृढ़तापूर्वक चेतावनी देता हूं कि इन सिद्धान्तों का पालन निष्पक्ष होकर कर और पक्षपात की आत्मा से कुछ न कर। [22]अति शीघ्रता से किसी पर हाथ रख कर दूसरों के पापों में सहयोगी न बन। अपने आप को पवित्र बनाए रख। [23]अब से केवल जल ही न पी, परन्तु पेट और बारम्बार होने वाले रोग के कारण थोड़े दाखरस का भी उपयोग कर लिया कर। [24]कुछ लोगों के पाप बिल्कुल प्रकट होते हैं और पहिले ही से न्याय के लिए पहुंच जाते हैं, परन्तु अन्य लोगों के पाप बाद में प्रकट होते हैं। [25]इसी प्रकार भले कार्य भी प्रकट होते हैं और जो ऐसे नहीं होते वे गुप्त नहीं रह सकते।

6 जितने लोग जूए के नीचे अर्थात् दास हैं, वे अपने स्वामियों को पूर्ण सम्मान के योग्य समझें, जिस से परमेश्वर के नाम तथा हमारी शिक्षा की निन्दा न की जाए। [2]जिनके स्वामी विश्वासी हैं वे भाई होने के कारण अपने स्वामी का अनादर न करें, परन्तु स्वामी की और अधिक सेवा करें, क्योंकि जो इसका लाभ प्राप्त करते हैं वे विश्वासी और प्रिय जन हैं। इन सिद्धान्तों को सिखाता व प्रचार करता रह।

धन का प्रेम

[3]यदि कोई भिन्न प्रकार की शिक्षा देता है और हमारे प्रभु यीशु मसीह के ठोस वचन तथा भक्ति के अनुसार शिक्षा से सहमत नहीं होता, [4]वह अहंकारी है और

*या, विश्वासी

आदर्श बनाएं रख। [14]पवित्र आत्मा के द्वारा, जो हम में निवास करता है, उस उत्तम धरोहर की रखवाली कर।

[15]तू जानता है कि वे सब जो *एशिया में हैं, मुझ से विमुख हो गए हैं, जिनमें फुगिलुस और हिरमुगिनेस हैं। [16]उनेसिफिरुस के कुटुम्ब पर प्रभु की कृपा हो, क्योंकि उसने बहुधा मुझे प्रोत्साहित किया है, और मेरी जंजीरों से लज्जित नहीं हुआ। [17]इसके विपरीत, जब वह रोम आया तो उसने बड़े यत्न से ढूंढ़ कर मुझ से भेंट की—[18]प्रभु करे कि उस दिन उसे प्रभु की ओर से दया प्राप्त हो—और जो जो सेवाएं उसने इफिसुस में की हैं, उन्हें तू भली-भांति जानता है।

उत्तम योद्धा

2 इसलिए, हे मेरे पुत्र, उस अनुग्रह में जो मसीह यीशु में है, बलवन्त हो, [2]और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के समक्ष मुझ से सुनी हैं, उन्हें ऐसे विश्वासयोग्य मनुष्यों को सौंप दे जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों। [3]मसीह यीशु के अच्छे योद्धा के समान मेरे साथ दुख उठा। [4]कोई भी योद्धा जो लड़ाई पर जाता है अपने आप को प्रतिदिन की झंझटों में इसलिए नहीं फंसाता कि वह अपने भरती करने वाले को प्रसन्न करे। [5]इसी प्रकार जब अखाड़े में जाने वाला पहलवान यदि विधि के अनुसार न लड़े तो वह *पुरस्कार नहीं पाता। [6]परिश्रमी किसान को ही सब से पहिले उपज का भाग मिलना चाहिए। [7]जो मैं कहता हूं उस पर ध्यान दे, क्योंकि प्रभु तुझे सब बातों की समझ देगा। [8]मेरे सुसमाचार के अनुसार दाऊद के वंशज मृतकों में से जी उठे यीशु मसीह को स्मरण रख। [9]इसी सुसमाचार के लिए मैं दुख उठाता हूं, यहाँ तक कि अपराधी की भांति बन्धनों में हूं, परन्तु परमेश्वर का वचन किसी बन्धन में नहीं है। [10]इस कारण मैं चुने हुए लोगों के लिए सब कुछ सह लेता हूं, कि वे भी उस उद्धार को जो मसीह यीशु में है, और उसके साथ अनन्त महिमा को, प्राप्त करें। [11]यह कथन विश्वसनीय है कि यदि हम उसके साथ मर चुके हैं तो उसके साथ जीएंगे भी। [12]यदि हम धीरज से सहें तो उसके साथ राज्य भी करेंगे। यदि हम उसका इनकार करें तो वह भी हमारा इनकार करेगा। [13]यदि हम विश्वासघाती हों, फिर भी वह विश्वासयोग्य बना रहता है, क्योंकि वह स्वयं अपना इनकार नहीं कर सकता।

उत्तम कारीगर

[14]उन्हें इन बातों का स्मरण दिला और परमेश्वर के सामने उनको चेतावनी दे कि शब्दों के बारे में तर्क-वितर्क न किया करें जो व्यर्थ है और सुननेवालों के लिए विनाश का कारण है। [15]अपने आपको परमेश्वर के ग्रहणयोग्य ऐसा कार्य करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर जिस से लज्जित होना न पड़े, और जो सत्य के वचन को ठीक ठीक काम में लाए। [16]पर सांसारिक और व्यर्थ बकवाद से दूर रह, क्योंकि इस से लोग अभक्ति में और भी बढ़ते जाएंगे, [17]और उनकी बातें सड़े घाव की तरह फैलेंगी। हुमिनयुस और फिलेतुस उन्हीं में से हैं: [18]वे यह कहकर कि पुनरुत्थान पहिले ही हो चुका है सत्य से भटक गए हैं और कुछ विश्वास को उलट-पुलट

15 *अर्थात् तत्कालीन रोमी राज्य का एक प्रदेश

5 *अक्षरशः, मुकुट

२तीमुथियुस

तीमुथियुस के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री

1 पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है, अर्थात् उस जीवन की प्रतिज्ञा के अनुसार जो मसीह यीशु में है, [2]मेरे प्रिय पुत्र तीमुथियुस के नाम :

पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से तुझे अनुग्रह, दया और शान्ति मिले।

विश्वासयोग्यता के लिए प्रोत्साहन

[3]मैं अपनी प्रार्थनाओं में रात-दिन निरन्तर तुझे स्मरण करते हुए परमेश्वर को धन्यवाद देता हूं, जिसकी सेवा मैं अपने पूर्वजों की रीति पर शुद्ध विवेक से करता हूं। [4]तेरे आंसुओं का स्मरण कर-कर के मेरी तीव्र इच्छा होती है कि तुझ से भेंट करूं और आनन्द से भर जाऊं। [5]मैं तेरे निष्कपट विश्वास को भी स्मरण करता हूं, जो पहिले तेरी नानी लोइस और तेरी माता यूनीके में विद्यमान था, और मुझे निश्चय है कि वह तुझ में भी है। [6]इसी कारण मैं तुझे स्मरण दिलाता हूं कि परमेश्वर के उस वरदान को प्रज्ज्वलित कर दे जो मेरे हाथ रखने के तुझे प्राप्त हुआ है। [7]परमेश्वर ने हमें भीरुता का नहीं, परन्तु सामर्थ, प्रेम और संयम का आत्मा दिया है। [8]अत: तू न हमारे प्रभु की साक्षी देने से, न मुझ से, जो उसका बन्दी हूं, लज्जित हो; परन्तु परमेश्वर की सामर्थ के अनुसार सु-समाचार के लिए मेरे साथ दुख उठा [9]जिसने हमारा उद्धार किया, और पवित्र बुलाहट से बुलाया, हमारे कामों के अनुसार नहीं, परन्तु अपने ही उद्देश्य और अनुग्रह के अनुसार जो मसीह यीशु में अनन्तकाल से हम पर हुआ, [10]परन्तु अब हमारे उद्धारकर्त्ता मसीह यीशु के प्रकट होने के द्वारा प्रकाशित हुआ है, जिसने मृत्यु का नाश किया और सु-समाचार के द्वारा जीवन और अमरता पर प्रकाश डाला। [11]इसी के लिए मैं प्रचारक, प्रेरित तथा शिक्षक नियुक्त किया गया। [12]और इसी कारण मैं ये सब दुख भी उठाता हूं, फिर भी मैं लज्जित नहीं, क्योंकि मैं जानता हूं कि मैंने किस पर विश्वास किया है, और मुझे पूर्ण निश्चय है कि वह मेरी धरोहर की रखवाली करने में उस दिन तक समर्थ है। [13]जो खरे वचन तू ने मुझ से सुने हैं, उनको उस विश्वास और प्रेम में, जो मसीह यीशु में है, अपना

आदर्श बनाएं रख। [14]पवित्र आत्मा के द्वारा, जो हम में निवास करता है, उस उत्तम धरोहर की रखवाली कर।

[15]तू जानता है कि वे सब जो *एशिया में हैं, मुझ से विमुख हो गए हैं, जिनमें फुगिलुस और हिरमुगिनेस हैं। [16]उनेसिफिरुस के कुटुम्ब पर प्रभु की कृपा हो, क्योंकि उसने बहुधा मुझे प्रोत्साहित किया है, और मेरी जंजीरों से लज्जित नहीं हुआ। [17]इसके विपरीत, जब वह रोम आया तो उसने बड़े यत्न से ढूंढ़ कर मुझ से भेंट की—[18]प्रभु करे कि उस दिन उसे प्रभु की ओर से दया प्राप्त हो—और जो जो सेवाएं उसने इफिसुस में की हैं, उन्हें तू भली-भांति जानता है।

उत्तम योद्धा

2 इसलिए, हे मेरे पुत्र, उस अनुग्रह में जो मसीह यीशु में है, बलवन्त हो, [2]और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के समक्ष मुझ से सुनी हैं, उन्हें ऐसे विश्वासयोग्य मनुष्यों को सौंप दे जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों। [3]मसीह यीशु के अच्छे योद्धा के समान मेरे साथ दुख उठा। [4]कोई भी योद्धा जो लड़ाई पर जाता है अपने आप को प्रतिदिन की झंझटों में इसलिए नहीं फंसाता कि वह अपने भरती करने वाले को प्रसन्न करे। [5]इसी प्रकार जब अखाड़े में जाने वाला पहलवान यदि विधि के अनुसार न लड़े तो वह *पुरस्कार नहीं पाता। [6]परिश्रमी किसान को ही सब से पहिले उपज का भाग मिलना चाहिए। [7]जो मैं कहता हूं उस पर ध्यान दे, क्योंकि प्रभु तुझे सब बातों की समझ देगा। [8]मेरे सुसमाचार के अनुसार दाऊद के वंशज मृतकों में से जी उठे यीशु मसीह को स्मरण रख। [9]इसी सुसमाचार के लिए मैं दुख उठाता हूं, यहाँ तक कि अपराधी की भांति बन्धनों में हूं, परन्तु परमेश्वर का वचन किसी बन्धन में नहीं है। [10]इस कारण मैं चुने हुए लोगों के लिए सब कुछ सह लेता हूं, कि वे भी उस उद्धार को जो मसीह यीशु में है, और उसके साथ अनन्त महिमा को, प्राप्त करें। [11]यह कथन विश्वसनीय है कि यदि हम उसके साथ मर चुके हैं तो उसके साथ जीएंगे भी। [12]यदि हम धीरज से सहें तो उसके साथ राज्य भी करेंगे। यदि हम उसका इनकार करें तो वह भी हमारा इनकार करेगा। [13]यदि हम विश्वासघाती हों, फिर भी वह विश्वासयोग्य बना रहता है, क्योंकि वह स्वयं अपना इनकार नहीं कर सकता।

उत्तम कारीगर

[14]उन्हें इन बातों का स्मरण दिला और परमेश्वर के सामने उनको चेतावनी दे कि शब्दों के बारे में तर्क-वितर्क न किया करें जो व्यर्थ है और सुननेवालों के लिए विनाश का कारण है। [15]अपने आपको परमेश्वर के ग्रहणयोग्य ऐसा कार्य करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर जिस से लज्जित होना न पड़े, और जो सत्य के वचन को ठीक ठीक काम में लाए। [16]पर सांसारिक और व्यर्थ बकवाद से दूर रह, क्योंकि इस से लोग अभक्ति में और भी बढ़ते जाएंगे, [17]और उनकी बातें सड़े घाव की तरह फैलेंगी। हुमिनयुस और फिलेतुस उन्हीं में से हैं: [18]वे यह कहकर कि पुनरुत्थान पहिले ही हो चुका है सत्य से भटक गए हैं और कुछ लोगों के विश्वास को उलट-पुलट कर देते हैं।

15 *अर्थात् तत्कालीन रोमी राज्य का एक प्रदेश
5 *अक्षरशः, मुकुट

२ तीमुथियुस

तीमुथियुस के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री

1 पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है, अर्थात् उस जीवन की प्रतिज्ञा के अनुसार जो मसीह यीशु में है, 2मेरे प्रिय पुत्र तीमुथियुस के नाम:

पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से तुझे अनुग्रह, दया और शान्ति मिले।

विश्वासयोग्यता के लिए प्रोत्साहन

3मैं अपनी प्रार्थनाओं में रात-दिन निरन्तर तुझे स्मरण करते हुए परमेश्वर को धन्यवाद देता हूं, जिसकी सेवा मैं अपने पूर्वजों की रीति पर शुद्ध विवेक से करता हूं। 4तेरे आंसुओं का स्मरण कर-कर के मेरी तीव्र इच्छा होती है कि तुझ से भेंट करूं और आनन्द से भर जाऊं। 5मैं तेरे निष्कपट विश्वास को भी स्मरण करता हूं, जो पहिले तेरी नानी लोइस और तेरी माता यूनीके में विद्यमान था, और मुझे निश्चय है कि वह तुझ में भी है। 6इसी कारण मैं तुझे स्मरण दिलाता हूं कि परमेश्वर के उस वरदान को प्रज्ज्वलित कर दे जो मेरे हाथ रखने के प्राप्त हुआ है। 7परमेश्वर ने हमें भीरुता का नहीं, परन्तु सामर्थ, प्रेम और संयम का आत्मा दिया है। 8अत: तू न हमारे प्रभु की साक्षी देने से, न मुझ से, जो उसका बन्दी हूं, लज्जित हो; परन्तु परमेश्वर की सामर्थ के अनुसार सुसमाचार के लिए मेरे साथ दुख उठा 9जिसने हमारा उद्धार किया, और पवित्र बुलाहट से बुलाया, हमारे कामों के अनुसार नहीं, परन्तु अपने ही उद्देश्य और अनुग्रह के अनुसार जो मसीह यीशु में अनन्तकाल से हम पर हुआ, 10परन्तु अब हमारे उद्धारकर्त्ता मसीह यीशु के प्रकट होने के द्वारा प्रकाशित हुआ है, जिसने मृत्यु का नाश किया और सुसमाचार के द्वारा जीवन और अमरता पर प्रकाश डाला। 11इसी के लिए मैं प्रचारक, प्रेरित तथा शिक्षक नियुक्त किया गया। 12और इसी कारण मैं ये सब दुख भी उठाता हूं, फिर भी मैं लज्जित नहीं, क्योंकि मैं जानता हूं कि मैंने किस पर विश्वास किया है, और मुझे पूर्ण निश्चय है कि वह मेरी धरोहर की रखवाली करने में उस दिन तक समर्थ है। 13जो खरे वचन तू ने मुझ से सुने हैं, उनको उस विश्वास और प्रेम में, जो मसीह यीशु में है, अपना

बना रह कि तू ने उन्हें किन लोगों से सीखा है, [15]और बचपन ही से पवित्रशास्त्र तेरा जाना हुआ है जो मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा तुझे उद्धार पाने के लिए बुद्धि दे सकता है। [16]सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और शिक्षा, ताड़ना, सुधार और धार्मिकता की शिक्षा के लिए उपयोगी है, [17]जिससे कि परमेश्वर का भक्त प्रत्येक भले कार्य के लिए कुशल और तत्पर हो जाए।

4 परमेश्वर और मसीह यीशु को गवाह जानकर जो जीवितों और मृतकों का न्याय करेगा, और उसके प्रकट होने तथा उसके राज्य के नाम में मैं तुझे आज्ञा देता हूं [2]कि वचन का प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, बड़े धैर्य से शिक्षा देते हुए ताड़ना दे, डांट और समझा। [3]क्योंकि समय आएगा जब वे खरी शिक्षा को सहन नहीं करेंगे, परन्तु अपने कानों की खुजलाहट के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार ही अपने लिए बहुत से गुरु बटोर लेंगे। [4]वे सत्य की ओर से अपने कानों को फेर लेंगे और कल्पित-कथाओं में मन लगाएंगे। [5]परन्तु तू सब बातों में संयमी रह, कष्ट उठा, सुसमाचार प्रचार का काम कर, और अपनी सेवा पूरी कर, [6]क्योंकि अब मैं अर्घ की भांति उण्डेला जाता हूं और मेरे जीवन का अन्तिम समय आ पहुंचा है। [7]मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं, मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रक्षा की है। [8]भविष्य में मेरे लिए धार्मिकता का मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु जो धार्मिकता से न्याय करने वाला है उस दिन मुझे प्रदान करेगा, और न केवल मुझे वरन् उन सब को भी जो उसके प्रकट होने को प्रिय जानते हैं।

व्यक्तिगत सन्देश

[9]मेरे पास शीघ्र आने का पूरा प्रयत्न कर, [10]क्योंकि देमास ने इस संसार के मोह में पड़कर मुझे छोड़ दिया और थिस्सलुनीके को चला गया है। क्रैसकेंस तो गलातिया को और तीतुस, दलमतिया को चला गया है। [11]केवल लूका मेरे साथ है। मरकुस को साथ लेते आना, क्योंकि सेवा-कार्य में वह मेरे लिए उपयोगी है। [12]तुखिकुस को मैंने इफिसुस भेजा है। [13]जब तू आए तो मेरा चोगा और पुस्तकें, विशेषकर चर्म-पत्र, लेते आना जिन्हें मैं त्रोआस में करपुस के यहां छोड़ आया था। [14]सिकन्दर *ताम्रकार ने मुझे बहुत हानि पहुंचाई है। प्रभु उसके कार्यों के अनुसार उसे बदला देगा। [15]तू भी उस से सावधान रह, क्योंकि उसने हमारी शिक्षा का घोर विरोध किया है।

[16]पहिली बार मेरे पक्ष के समर्थन में किसी ने भी मेरा साथ नहीं दिया, परन्तु सब ने मुझे त्याग दिया था। काश, उनको इसका लेखा न देना पड़े! [17]परन्तु प्रभु मेरे साथ खड़ा हुआ और उसने मुझे सामर्थ दी कि सुसमाचार का मेरे द्वारा पूरा पूरा प्रचार हो जिस से सब अन्यजातियां सुनें। मैं तो सिंह के मुंह से छुड़ाया गया। [18]प्रभु मुझे प्रत्येक दुष्कर्म से छुड़ाएगा और अपने स्वर्गीय राज्य में सुरक्षित पहुंचाएगा। उस की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

आशीर्वाद

[19]प्रिस्का और अक्विला को तथा उनेसिफुरुस के कुटुम्ब को नमस्कार

14 *या, ठठेरा

[19]फिर भी परमेश्वर की पक्की नींव अटल रहती है, जिस पर यह छाप लगी है, "परमेश्वर अपने लोगों को पहिचानता है," और, "हर एक जो प्रभु का नाम लेता है, वह दुष्टता से बचा रहे।" [20]बड़े घर में न केवल सोने और चांदी के, वरन् लकड़ी और मिट्टी के भी पात्र होते हैं, कुछ तो आदर के लिए और कुछ अनादर के लिए। [21]अतः यदि कोई अपने को इन बातों से शुद्ध रखे तो वह आदर के योग्य, पवित्र, स्वामी के लिए उपयोगी और हर भले काम के लिए तैयार किया हुआ पात्र होगा। [22]जवानी की अभिलाषाओं से भाग और जो लोग शुद्ध हृदय से प्रभु का नाम लेते हैं उनके साथ धार्मिकता, विश्वास, प्रेम और शान्ति का अनुसरण कर। [23]परन्तु मूर्खता और अज्ञानपूर्ण विवादों से यह जान कर अलग रह कि इन से झगड़े उत्पन्न होते हैं। [24]परमेश्वर के दास को झगड़ालू नहीं, वरन् सब पर दया करनेवाला, योग्य शिक्षक, सहनशील [25]और विरोधियों को नम्रता से समझाने वाला होना चाहिए; क्या जाने परमेश्वर उन्हें पश्चात्ताप का मन दे कि वे भी सत्य को पहिचानें, [26]और सचेत हो कर *शैतान के फन्दे से बच निकलें, जिसने उन्हें अपनी इच्छा पूर्ण करने के लिए बन्दी बना रखा है।

अन्तिम दिनों की चेतावनी

3 परन्तु ध्यान रख कि अन्तिम दिनों में कठिन् समय आएंगे। [2]क्योंकि मनुष्य स्वार्थी, लोभी, अहंकारी, उद्दण्ड, परमेश्वर की निन्दा करनेवाले, माता-पिता की आज्ञा न माननेवाले, कृतघ्न, अपवित्र, [3]स्नेहरहित, क्षमारहित, पर-निन्दक, असंयमी, क्रूर, भलाई से घृणा करने वाले, [4]विश्वासघाती, ढीठ, मिथ्याभिमानी, परमेश्वर से प्रेम करने की अपेक्षा सुख-विलास से प्रेम करने वाले होंगे। [5]यद्यपि ये भक्ति का वेश तो धारण करते हैं, फिर भी उसकी शक्ति को नहीं मानते: ऐसे लोगों से दूर रहना। [6]क्योंकि इनमें वे लोग हैं जो घरों में दबे पांव घुस जाते हैं और उन दुर्बल स्त्रियों को वश में कर लेते हैं जो पापों से दबी और अनेक प्रकार की दुर्वासनाओं में फंसी हैं, [7]जो सदा सीखती तो रहती हैं पर सत्य की पहिचान तक कभी नहीं पहुंच पातीं। [8]जैसे यन्नेस और यम्ब्रेस ने मूसा का विरोध किया, वैसे ही ये लोग भी सत्य का विरोध करते हैं। ये ऐसे मनुष्य हैं जिनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है और विश्वास के विषय में निकम्मे हैं। [9]परन्तु अब वे और अधिक उन्नति नहीं कर सकते, क्योंकि जैसे उन दोनों की अज्ञानता सब पर प्रकट हो गई थी, वैसे ही इनकी भी हो जाएगी।

तीमुथियुस को विशेष निर्देश

[10]परन्तु तू ने मेरी शिक्षा, आचरण, अभिप्राय, विश्वास, सहनशीलता, प्रेम, धैर्य, [11]सतावों और दुखों में मेरा साथ दिया, जो अन्ताकिया, इकुनियुम और लुस्त्रा में मुझ पर आए। कैसे कैसे सताव मैंने सहे, परन्तु प्रभु ने उन सब से मुझे बचाया! [12]और वास्तव में वे सब, जो मसीह यीशु में भक्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, सताए जाएंगे। [13]परन्तु दुष्ट और छली तो धोखा देते और धोखा खाते हुए बिगड़ते चले जाएंगे। [14]परन्तु तू उन बातों पर जो तू ने सीखी हैं और जिनका तुझे निश्चय हुआ है, यह जानकर

*, उस निन्दक

ही बन्द किया जाना चाहिए, क्योंकि ये नीच कमाई के लिए अनुचित बातें सिखा कर घर के घर बिगाड़ रहे हैं। 12उन में से एक ने अर्थात् उन्हीं के एक *नबी ने कहा है, "क्रीतवासी सदैव झूठे, हिंसक पशु, और आलसी पेटू होते हैं।" 13यह गवाही सत्य है। इस कारण उन्हें कड़ाई से ताड़ना दिया कर कि वे विश्वास में पक्के हो जाएं, 14और यहूदियों की कल्पित-कथाओं तथा उन लोगों के आदेशों पर ध्यान न दें जो सत्य से भटक जाते हैं। 15शुद्ध लोगों के लिए सब वस्तुएं शुद्ध हैं, परन्तु अशुद्ध तथा अविश्वासी लोगों के लिए कुछ भी शुद्ध नहीं, वरन् उनके मन और विवेक दोनों ही अशुद्ध हैं। 16वे परमेश्वर को जानने का दावा तो करते हैं पर अपने कामों से उसका इन्कार करते हैं। वे घृणित और आज्ञा न मानने वाले हैं तथा किसी भी भले कार्य के योग्य नहीं।

आचरण के लिए खरी शिक्षा

2 पर तू ऐसी बातें कहा कर जो खरी शिक्षा के अनुसार हैं। 2वृद्ध पुरुष संयमी, सम्माननीय व समझदार हों तथा वे विश्वास, प्रेम और धैर्य में पक्के हों। 3इसी प्रकार वृद्ध स्त्रियों का चाल-चलन भी पवित्र हो। वे न तो परनिन्दक हों, न मदिरासक्त, वरन् अच्छी बातें सिखाने वाली हों, 4जिस से वे युवा स्त्रियों को प्रोत्साहित करें कि वे अपने अपने पति और बच्चों से प्रेम करें, 5और वे समझदार, पवित्र, सुगृहणी, दयालु, पति के आधीन रहने वाली हों, जिससे कि परमेश्वर के वचन का निरादर न हो। 6इसी प्रकार युवकों को दृढ़तापूर्वक समझा कि वे संयमी बनें। 7भले कार्य कर के तू सब बातों में स्वयं आदर्श बन। तेरा उपदेश शुद्ध, गम्भीरतापूर्ण, खरा और दोषरहित हो, 8जिससे कि विरोधियों को हमारे विषय में कुछ भी बुरा कहने का अवसर न मिले और वे लज्जित हों। 9दासों को समझा कि वे सब बातों में अपने अपने स्वामियों के आधीन रहें, उन्हें प्रसन्न रखें तथा मुंह-जोरी न करें, 10चोरी चालाकी न करें, परन्तु पूर्णरूप से विश्वासयोग्यता प्रकट करें कि वे हर प्रकार से हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर के उपदेश की शोभा बढ़ाएं।

सदाचार का आधार

11क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तो सब मनुष्यों के उद्धार के लिए प्रकट हुआ है। 12वह हमें यह सिखाता है कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं का इनकार कर के इस युग में संयम, धार्मिकता और भक्ति से जीवन बिताएं। 13और उस धन्य आशा की, अर्थात् अपने महान् परमेश्वर यीशु मसीह उद्धारकर्त्ता की महिमा के प्रकट होने की, प्रतीक्षा करते रहें। 14उसने अपने आपको हमारे लिए दे दिया कि **हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले और हमें शुद्ध करके अपने लिए एक ऐसी निज प्रजा बना ले जो भले कार्य करने के लिए सरगर्म हो।**

15इन बातों को पूरे अधिकार के साथ कह, समझा और सिखाता रह। कोई भी तेरा निरादर न करने पाए।

विश्वास से उद्धार

3 लोगों को स्मरण दिला कि तथा अधिकारियों के आज्ञाकारी बनें, हर एक

12 *यह मुहावरा क्रीत टापू के कवि एपिमेनिडीस का समझा जाता है।

कह। [20]इरास्तुस कुरिन्थुस में रह गया, और मैं त्रुफिमुस को मीलेतुस में बीमार छोड़ आया हूं। [21]जाड़ों से पहिले आने का पूरा प्रयत्न करना। यूबुलुस और पुदेंस, लिनुस, क्लौदिया और सब भाई तुझे नमस्कार कहते हैं।

[22]प्रभु तेरी आत्मा के साथ रहे। तुम पर अनुग्रह होता रहे।

तीतुस

के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

1 पौलुस की ओर से, जो परमेश्वर के चुने हुओं के विश्वास और सत्य के उस ज्ञान के लिए जो भक्ति के अनुसार है, परमेश्वर का दास व यीशु मसीह का प्रेरित है—[2]अनन्त जीवन की उस आशा में जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने, जो झूठ नहीं बोल सकता, अनादिकाल से की है, [3]परन्तु अब उचित समय पर उसने अपने ही वचन को उस प्रचार के द्वारा प्रकट किया, जो हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार मुझे सौंपा गया था—[4]तीतुस को, जो एक ही विश्वास की सहभागिता में मेरा सच्चा पुत्र है: पिता परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्त्ता मसीह यीशु की ओर से अनुग्रह और शान्ति मिले।

प्राचीन की योग्यताएं

[5]मैं तुझे क्रीत में इस कारण छोड़ कर आया कि शेष बातों को सुधारे और मेरे निर्देश के अनुसार प्रत्येक नगर में *प्राचीनों को नियुक्त करे। [6]प्राचीन, निर्दोष हो, एक ही पत्नी का पति हो, तथा उसके बच्चे विश्वासी हों, दुराचारी और निरंकुश न हों। [7]क्योंकि *अध्यक्ष को परमेश्वर का भण्डारी होने के कारण निर्दोष होना आवश्यक है; वह न तो स्वेच्छाचारी, न क्रोधी, न पियक्कड़, न मारपीट करने वाला, और न ही नीच कमाई का लोभी हो, [8]परन्तु अतिथि-सत्कार करने वाला, भलाई का चाहने वाला, समझदार, न्यायप्रिय, भक्त व आत्मसंयमी हो। [9]वह उस विश्वासयोग्य वचन पर स्थिर रहे जो धर्मोपदेश के अनुसार है, जिससे कि वह खरी शिक्षा का उपदेश देने और विरोधियों का मुंह बन्द करने में भी समर्थ हो।

पाखण्डी शिक्षक

[10]क्योंकि ऐसे बहुत हैं जो निरंकुश, बकवादी और धोखेबाज़ हैं, विशेषकर वे जो खतना वाले हैं। [11]इनका मुंह अवश्य

, प्रिसबुतिर 7 *या, बिशप

फिलेमोन

के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

मसीह यीशु के वन्दी पौलुस तथा भाई तीमुथियुस की ओर से, प्रिय भाई एवं सहकर्मी फिलेमोन, 2और हमारी बहिन अफफिया, हमारे साथी-योद्धा अरखिप्पुस तथा तुम्हारे घर में एकत्रित होने वाली कलीसिया को:

3हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।

धन्यवाद और प्रार्थना

4मैं तुम्हें अपनी प्रार्थनाओं में स्मरण कर के अपने परमेश्वर का सदैव धन्यवाद करता हूँ, 5क्योंकि मैं तुम्हारे उस प्रेम और विश्वास की चर्चा सुनता हू जो प्रभु यीशु तथा समस्त पवित्र लोगों के प्रति है; 6और मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारे विश्वास की सहभागिता, प्रत्येक भली वस्तु के ज्ञान के द्वारा जो *तुम में मसीह के लिए है, प्रभावशाली हो। 7हे भाई, मुझे तुम्हारे प्रेम से बहुत ही आनन्द और चैन मिला है, क्योंकि तुम्हारे द्वारा पवित्र लोगों के मन हरे-भरे हो गए हैं।

उनेसिमुस के लिए प्रार्थना

8इसलिए जो उचित है, उसे करने की तुम्हें आज्ञा देने का मसीह में मुझे पर्याप्त साहस तो है, 9फिर भी उस प्रेम के कारण—मुझ वृद्ध पौलुस के लिए जो अब मसीह यीशु का वन्दी भी है—यही उचित है कि तुझ से आग्रह करूँ; 10मैं तुझ से अपने बच्चे *उनेसिमुस के लिए आग्रह करता हूँ, जिसे मैंने कारावास में जन्म दिया है; 11जो इस से पूर्व तो तेरे लिए किसी काम का न था, परन्तु अब तेरे और मेरे दोनों ही के लिए उपयोगी है। 12मैंने उसी को, अर्थात् जो मेरे हृदय का टुकड़ा है, स्वयं तुम्हारे पास भेज दिया है। 13मैं तो चाहता था कि उसे अपने ही पास रखूं कि मेरे कारावास में जो सुसमाचार के कारण है, तेरी ओर से मेरी सेवा कर सके; 14परन्तु मैंने बिना तेरी सहमति के कुछ भी करना उचित न समझा, कि तेरी यह भलाई दबाव से नहीं, वरन् स्वेच्छा से हो। 15क्योंकि क्या जाने वह तुझ से कुछ समय के लिए इसीलिए अलग हुआ हो कि वह सर्वदा तेरे पास रहे, 16पुन: अब दास की नाईं नहीं वरन् दास से भी बढ़कर विशेषकर मेरे लिए तो एक प्रिय भाई की तरह, पर तेरे लिए तो शरीर और प्रभु दोनों में इस से भी कहीं बढ़कर। 17अत: यदि तू मुझे अपना साझीदार समझता है

6 *कुछ हस्तलेखों में, हम में

10 *अर्थात्, उपयोगी

लिए तत्पर रहें, [2]किसी की बदनामी न करें, झगड़ा न करें, नम्र बनें तथा सब मनुष्यों के साथ सद्व्यवहार करें। [3]क्योंकि हम सब भी पहिले निर्बुद्धि, अनाज्ञाकारी, भ्रम में पड़े हुए तथा विभिन्न प्रकार की वासनाओं और अभिलाषाओं के दास थे, और अपना जीवन डाह व ईर्ष्या में व्यतीत करते थे। हम घृणित थे तथा एक दूसरे से बैर रखते थे। [4]पर जब हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की दया और मनुष्यों के प्रति उसका प्रेम प्रकट हुआ, [5]तो उसने हमारा उद्धार किया, यह हमारे द्वारा किए गए धर्म के कामों के आधार पर नहीं, परन्तु उसने अपनी दया के अनुसार अर्थात् पवित्र आत्मा द्वारा नए जन्म और नए बनाए जाने के स्नान से किया। [6]इसी पवित्र आत्मा को उसने हमारे उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर बहुतायत से उण्डेल दिय , [7]कि उसके अनुग्रह के द्वारा हम धर्मी ठहराए जाकर अनन्त जीवन की आशा के उत्तराधिकारी बनें।

तीतुस को व्यक्तिगत आदेश

[8]यह विश्वासयोग्य कथन है, और मैं चाहता हूँ कि तू इन बातों के विषय में दृढ़ता से बोले कि जिन्होंने परमेश्वर पर विश्वास किया है, वे भले कार्यों में लग जाने का ध्यान रखें। ये बातें लोगों के लिए भली और लाभदायक हैं।

[9]परन्तु मूर्खता के विवादों, वंशावलियों तथा व्यवस्था सम्बन्धी झगड़ों व बखेड़ों से बचा रह, क्योंकि वे अलाभदायक और व्यर्थ हैं। [10]विधर्मी मनुष्य को पहिली व दूसरी चेतावनी देकर उस से अलग हो जा, [11]और यह जान ले कि ऐसा मनुष्य पथ-भ्रष्ट हो गया है। वह अपने आप को दोषी ठहराकर पाप करता जाता है।

[12]जब मैं अरतिमास या तुखिकुस को तेरे पास भेजूँ तो मेरे पास निकुपुलिस आने का भरसक प्रयत्न कर, क्योंकि मैंने जाड़ा वहीं काटने का निश्चय किया है। [13]*वकील जेनास और अपुल्लोस की यात्रा में तू भरसक उनकी सहायता करना, कि उन्हें किसी बात की घटी न हो। [14]हमारे लोग भी अच्छे काम-धन्धे में लग जाना सीखें, कि उनकी आवश्यकताएं पूरी हों जिससे कि वे निष्फल न रहें।

[15]वे सब जो मेरे साथ हैं तुम्हें नमस्कार कहते हैं। विश्वास के कारण जो लोग हमसे प्रेम रखते हैं उन्हें भी नमस्कार कह। तुम सब पर अनुग्रह हो।

* अर्थ, मूसा की व्यवस्था का विशेषज्ञ भी हो सकता है।

में वह कहता है, "**वह अपने दूतों को पवन और अपने सेवकों को अग्नि की ज्वाला बनाता है।**" [8]परन्तु पुत्र के विषय में वह कहता है, "**हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युग-युग का है, और तेरे राज्य का राजदण्ड धार्मिकता का राजदण्ड है। [9]तू ने धार्मिकता से प्रेम और अधर्म से बैर किया है। इस कारण परमेश्वर, तेरे परमेश्वर ने, तेरे साथियों की अपेक्षा हर्ष के तेल से तेरा अधिक अभिषेक किया है।**" [10]और, "**हे प्रभु, आदि में तू ही ने पृथ्वी की नींव डाली और आकाश तेरे ही हाथों की कारीगरी है। [11]वे नष्ट हो जाएंगे पर तू बना रहता है। और वे सब वस्त्र के समान पुराने हो जाएंगे, [12]और तू उन्हें चादर के समान लपेटेगा और वे वस्त्र के समान बदल भी जाएंगे। परन्तु तू एक सा बना रहता है; और तेरे वर्षों का अन्त न होगा।**" [13]परन्तु स्वर्गदूतों में से उसने कब किसी से यह कहा, "**जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न बना दूं, तू मेरे दाहिने बैठ**"? [14]क्या वे सब, उद्धार पाने वालों की सेवा करने के लिए भेजी गई आत्माएं नहीं?

उद्धार-सम्बन्धी चेतावनी

2 इस कारण, हमें चाहिए कि जो कुछ हमने सुना है, उस पर और अधिक गहराई से ध्यान दें, ऐसा न हो कि हम उस से भटक जाएं। [2]क्योंकि यदि वह वचन जो स्वर्गदूतों द्वारा कहा गया अटल सिद्ध हुआ, और प्रत्येक अपराध और आज्ञा न मानने का ठीक-ठीक फल मिला, [3]तो हम ऐसे महान् उद्धार की उपेक्षा कर के कैसे बच सकेंगे? इसका वर्णन सर्वप्रथम प्रभु द्वारा किया गया और इसकी पुष्टि सुनने वालों ने हमारे लिए की। [4]परमेश्वर ने भी चिन्हों, चमत्कारों और विभिन्न प्रकार के आश्चर्यकर्मों तथा अपनी इच्छा के अनुसार पवित्र आत्मा के वरदानों के द्वारा इसकी साक्षी दी।

देहधारी उद्धारकर्त्ता

[5]उसने उस आने वाले जगत को जिसका वर्णन हम कर रहे हैं स्वर्गदूतों के आधीन नहीं किया। [6]परन्तु किसी ने कहीं यह कह कर साक्षी दी है, "**मनुष्य क्या है कि तू उसकी सुधि लेता है? अथवा मनुष्य का पुत्र, कि तू उसकी चिन्ता करता है?** [7]तू ने थोड़े ही समय के लिए उसे स्वर्गदूतों से कम किया। तू ने उस पर महिमा और आदर का मुकुट रखा, ***[और अपने हाथों के कामों पर उसे अधिकार दिया है।]** [8]**तू ने सब कुछ उसकी आधीनता में उसके पैरों के नीचे कर दिया है।**" अतः सब कुछ उसके आधीन करके, उसने कुछ भी नहीं रख छोड़ा जो उसके आधीन न हो। परन्तु अब तक हम सब कुछ उसके आधीन नहीं देखते। [9]परन्तु हम उसको, अर्थात् यीशु को, जो थोड़े समय के लिए स्वर्गदूतों से कम किया गया, मृत्यु का दुख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहिने हुए देखते हैं, कि परमेश्वर के अनुग्रह से वह प्रत्येक के लिए मृत्यु का स्वाद चखे। [10]क्योंकि जिसके लिए और जिसके द्वारा सब कुछ है, उसके लिए यह उचित था कि बहुत से पुत्रों को महिमा में लाने के लिए उनके उद्धार के कर्त्ता को दुख उठाने के द्वारा सिद्ध करे। [11]क्योंकि पवित्र करने वाला और पवित्र होने वाले सब एक ही मूल से हैं, इसी कारण वह उन्हें भाई कहने

7 *अनेक प्राचीन हस्तलेखों में इस पद का यह वाक्यांश नहीं मिलता

तो उसे भी उसी तरह ग्रहण कर जैसे मुझे करता है। [18]परन्तु यदि उसने तुझे किसी भी प्रकार से हानि पहुँचाई है अथवा किसी भी वस्तु के लिए वह तेरा ऋणी है तो उसको मेरे खाते में लिख लेना; [19]मैं पौलुस अपने हाथ से यह लिख रहा हूँ कि मैं इसे भर दूँगा—कहीं मुझे ऐसा कहना न पड़ जाए कि तेरा तो सम्पूर्ण जीवन ही मेरा ऋणी है—[20]हे भाई, मुझे प्रभु में अब तुझ से यह लाभ पहुँचे कि मसीह में मेरा हृदय हरा-भरा हो जाए।

[21]मैं तेरे आज्ञाकारी होने का भरोसा रखकर तुझे यह लिखता हूँ; मैं यह जानता हूँ कि जो कुछ मैं कहूँ, उस से कहीं बढ़कर तू करेगा। [22]साथ ही मेरे आवास का भी प्रबन्ध कर, क्योंकि मुझे आशा है कि तुम्हारी प्रार्थनाओं के द्वारा मैं तुम्हें दे दिया जाऊँगा।

[23]इपफ्रास, जो मसीह यीशु में मेरा संगी-बन्दी है, तुझे नमस्कार कहता है, [24]और इसी प्रकार मरकुस, अरिस्तर्खुस, देमास और लूका, जो मेरे सहकर्मी हैं।

[25]प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे।

इब्रानियों

इब्रानियों के नाम पत्री

यीशु स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ

1 प्राचीनकाल में परमेश्वर ने नबियों के द्वारा पूर्वजों से बार बार तथा अनेक प्रकार से बातें करके, [2]इन अन्तिम दिनों में हमसे अपने पुत्र के द्वारा बातें की हैं, जिसे उसने सब वस्तुओं का उत्तराधिकारी ठहराया और जिसके द्वारा उसने सम्पूर्ण सृष्टि की रचना भी की। [3]वह उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व का प्रतिरूप है, तथा अपनी ... वचन के द्वारा सब वस्तुओं को ...। वह पापों को धोकर ऊंचे पर महामहिमन् की दाहिनी ओर बैठ गया। [4]और स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम ठहरा जितना उसने उनसे श्रेष्ठ नाम प्राप्त किया। [5]क्योंकि उसने स्वर्गदूतों में से कब किसी से यह कहा, "**तू मेरा पुत्र है, आज मैंने तुझे जन्म दिया है**"? और फिर यह, "**मैं उसका पिता होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा**"? [6]और जब वह पहिलौठे को जगत में फिर लाता है तो कहता है, "**परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसे दण्डवत् करें।**" [7]और स्वर्गदूतों के विषय

तक दृढ़ता से स्थिर रहते हैं तो हम मसीह के भागीदार बन गए हैं, [15]जब कि कहा गया है, "**यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने हृदयों को ऐसा कठोर न करो, जैसा कि उन्होंने क्रोध दिलाने के समय किया था।**"

[16]क्योंकि किन लोगों ने सुनकर क्रोध दिलाया? क्या वास्तव में उन सब ने नहीं जो मूसा की अगुवाई में मिस्र से निकले थे? [17]वह किन लोगों से चालीस वर्ष तक क्रोधित रहा? क्या उनसे नहीं जिन्होंने पाप किया और जिनके शव जंगल में पड़े रहे? [18]उसने किनसे शपथ खाई कि तुम मेरे विश्राम में प्रवेश नहीं करने पाओगे? क्या उनसे नहीं जिन्होंने आज्ञा न मानी? [19]अत: हम देखते हैं कि अविश्वास के कारण ही वे प्रवेश न करने पाए।

विश्वासियों का विश्राम

4 इसलिए जब कि उसके विश्राम में प्रवेश करने की प्रतिज्ञा अब तक बनी हुई है तो हम सतर्क रहें, कहीं ऐसा न मालूम हो कि तुम में से कोई उस से वंचित है। [2]क्योंकि वास्तव में, हमें भी उन्हीं के सदृश सुसमाचार सुनाया गया, परन्तु उस सुने हुए वचन से उन्हें कुछ लाभ न हुआ, *क्योंकि सुनने वालों ने उसे विश्वास के साथ ग्रहण नहीं किया। [3]अत: हम जिन्होंने विश्वास किया है, विश्राम में प्रवेश करते हैं—जिस प्रकार उसने कहा है, "**जैसा कि मैंने अपने क्रोध में शपथ खाई, वे मेरे विश्राम में प्रवेश न करने पाएंगे।**" तथापि उसके कार्य जगत की सृष्टि के समय से पूरे हो चुके थे। [4]क्योंकि उसने सातवें दिन के विषय में कहीं इस प्रकार कहा है, "**परमेश्वर ने सातवें दिन अपने सब कार्यों से विश्राम किया,**" [5]और फिर यह भी कहा: "**वे मेरे विश्राम में प्रवेश न करने पाएंगे।**" [6]जबकि कुछ लोगों को इसमें प्रवेश करना ही है, और जिन्होंने पहिले उसका सुसमाचार सुना था, वे आज्ञा न मानने के कारण प्रवेश न कर सके, [7]इसलिए वह फिर एक दिन अर्थात् "आज का दिन" निश्चित करता है। जैसा कि पहिले कहा जा चुका है, वह दाऊद द्वारा, बहुत समय बीतने पर, फिर कहता है, "**यदि आज तुम उसकी आवाज़ सुनो, तो अपने हृदयों को कठोर न करो।**" [8]क्योंकि यदि यहोशू ने उन्हें विश्राम दिया होता, तो वह इसके पश्चात् आने वाले किसी और दिन की चर्चा न करता। [9]इसलिए परमेश्वर के लोगों के लिए सब्त का विश्राम शेष है। [10]क्योंकि जो उसके विश्राम में प्रवेश कर चुका है, वह भी अपने कार्यों से विश्राम कर चुका है जैसा कि परमेश्वर ने किया था। [11]इस लिए हम भी उस विश्राम में प्रवेश करने के लिए प्रयत्नशील रहें, कहीं ऐसा न हो कि उसी प्रकार आज्ञा न मानने के कारण किसी व्यक्ति का पतन हो जाए। [12]क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, प्रबल और किसी भी दोधारी तलवार से तेज़ है। वह प्राण और आत्मा, जोड़ों और गूदे, दोनों को आरपार बेधता और मन के विचारों तथा भावनाओं को परखता है। [13]जिसको हमें लेखा देना है, उसकी दृष्टि में कोई भी प्राणी छिपा नहीं। उसकी आंखों के सामने सब कुछ खुला और नग्न है।

बड़ा महायाजक

[14]जबकि हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है जो स्वर्गों में से होकर गया, अर्थात्

2 *अनेक हस्तलेखों के अनुसार: क्योंकि वे आज्ञाकारियों के विश्वास में सहभागी न हुए

से नहीं लजाता। 12वह कहता है, "**मैं तेरा नाम अपने भाइयों को सुनाऊंगा; सभा के बीच में मैं तेरे नाम की स्तुति गाऊंगा।**" 13और फिर, "**मैं उस पर अपना भरोसा रखूंगा।**" और फिर यह भी, "**देख, मैं और ये बच्चे भी जो परमेश्वर ने मुझे दिए हैं।**" 14अत: जिस प्रकार बच्चे मांस और लहू में सहभागी हैं, तो वह आप भी उसी प्रकार उनमें सहभागी हो गया, कि मृत्यु के द्वारा उसको जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली है, अर्थात् *शैतान को, शक्तिहीन कर दे, 15और उन्हें छुड़ा ले जो मृत्यु के भय से जीवन भर दासत्व में पड़े थे। 16क्योंकि निश्चय ही वह स्वर्गदूतों को नहीं परन्तु इब्राहीम के वंश को सम्भालता है। 17इस कारण उसके लिए यह आवश्यक हुआ कि सब बातों में अपने भाइयों के समान बने, जिससे कि वह परमेश्वर से सम्बन्धित बातों में दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक हो सके और लोगों के पापों का प्रायश्चित करे। 18जबकि उसने स्वयं परीक्षा की दशा में दुख उठाया, तो वह उनकी भी सहायता कर सकता है जिनकी परीक्षा होती है।

मूसा से श्रेष्ठ

3 इसलिए, पवित्र भाइयो, तुम जो स्वर्गीय बुलाहट में सहभागी हो, यीशु पर ध्यान दो जिसे हम प्रेरित और महायाजक मानते हैं। 2जिस प्रकार परमेश्वर के सारे घराने में से मूसा विश्वासयोग्य बना रहा, उसी प्रकार वह भी अपने नियुक्त करने वाले के प्रति विश्वासयोग्य रहा। 3जैसे घर का बनाने वाला घर की अपेक्षा अधिक आदरणीय होता है, वैसे यीशु भी मूसा की अपेक्षा कहीं बढ़कर महिमायोग्य समझा गया। 4क्योंकि प्रत्येक घर किसी न किसी के द्वारा बनाया जाता है, परन्तु सब कुछ का बनाने वाला परमेश्वर है। 5परमेश्वर के सारे घराने में से मूसा तो सेवक की भांति विश्वासयोग्य रहा कि उन बातों का साक्षी हो जिनका वर्णन बाद में होने वाला था। 6परन्तु मसीह तो पुत्र के सदृश परमेश्वर के घराने का अधिकारी है। यदि हम अपने विश्वास और आशा के गर्व को अन्त तक दृढ़ता से थामे रहते हैं तो हम ही उसका घराना हैं।

अविश्वास के प्रति चेतावनी

7अत: जैसा पवित्र आत्मा कहता है, "**यदि आज तुम उसकी आवाज़ सुनो, 8तो अपने हृदयों को ऐसे कठोर न करो जैसे जंगल में परीक्षा के दिन उन्होंने मुझे क्रोध दिलाकर किया था। 9वहां तुम्हारे पूर्वजों ने जांचकर मुझे परखा, और चालीस वर्ष तक मेरे कार्य देखे। 10अत: मैंने इस पीढ़ी से क्रोधित होकर कहा, 'इनके मन सदा भटकते रहते हैं, और इन्होंने मेरे मार्गों को नहीं पहिचाना।' 11तब मैंने अपने क्रोध में शपथ खाई, 'वे मेरे विश्राम में प्रवेश करने न पाएंगे'।**" 12हे भाइयो, सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम में से किसी का मन दुष्ट और अविश्वासी हो जाए और तुम जीवित परमेश्वर से दूर हो जाओ। 13जब तक आज का दिन कहलाता है, तुम दिन प्रतिदिन एक दूसरे को प्रोत्साहित करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम में से कोई व्यक्ति पाप के छल में पड़कर कठोर हो जाए। 14यदि हम अपने प्रथम भरोसे पर अन्त

*[illegible], निन्दक

सामर्थ का स्वाद चख चुके हैं, [6]यदि वे भटक जाएं तो उन्हें मन-परिवर्तन के लिए फिर से नया बनाना असम्भव है, क्योंकि वे अपने लिए परमेश्वर के पुत्र को पुनः क्रूस पर चढ़ाते हैं और खुले आम उसका अपमान करते हैं। [7]जो भूमि बार बार होने वाली वर्षा के पानी को पीती और जोतने-बोने वालों के लिए लाभदायक साग-पात उपजाती है, वह परमेश्वर से आशिष पाती है। [8]परन्तु यदि वह कांटे और ऊंटकटारे उपजाए तो वह निकम्मी और शापित होने पर है, और उसका अन्त जलाया जाना है।

[9]परन्तु प्रियो, यद्यपि हम इस प्रकार कहते हैं, फिर भी हमें तुम्हारे विषय में इससे भी उत्तम बातों का अर्थात् उद्धार सम्बन्धी बातों का निश्चय है। [10]क्योंकि परमेश्वर अन्यायी नहीं कि तुम्हारे काम और उस प्रेम को भूल जाए जो तुमने उसके नाम के प्रति इस प्रकार दिखाया कि पवित्र लोगों की सेवा की—और अब भी कर रहे हो। [11]हमारी इच्छा है कि तुम में से प्रत्येक अपनी आशा की पूर्ण निश्चयता को प्राप्त करने के लिए अन्त तक प्रयत्नशील रहे, [12]जिस से कि तुम आलसी न हो जाओ परन्तु उनका अनुकरण करो जो विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के उत्तराधिकारी हैं।

विश्वसनीय प्रतिज्ञा

[13]इब्राहीम से प्रतिज्ञा करते समय जब परमेश्वर ने शपथ खाने के लिए अपने से बड़ा कोई न पाया तो उसने यह कहते हुए अपनी ही शपथ खाई, [14]"**निश्चय मैं तुझे आशिष दूंगा, और निश्चय ही मैं तुझे बढ़ाऊंगा।**" [15]और इस प्रकार धीरज से प्रतीक्षा करके उसने प्रतिज्ञा प्राप्त की। [16]क्योंकि मनुष्य तो अपने से किसी बड़े की शपथ खाते हैं, और उस बात को निश्चित करने वाली यह शपथ उनके हर एक विवाद को समाप्त कर देती हैं। [17]इसी प्रकार जब परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के वारिसों पर अपने अटल उद्देश्य को और अधिक प्रकट करना चाहा तो उसने शपथ का उपयोग किया, [18]कि हमें दो अटल बातों के द्वारा, जिनमें परमेश्वर का झूठ बोलना असम्भव है, दृढ़ प्रोत्साहन मिले—अर्थात् हमें जो शरण पाने के लिए दौड़ पड़े हैं कि उस आशा को प्राप्त करें जो सामने रखी है। [19]यह आशा मानो हमारे प्राण के लिए लंगर है—ऐसी आशा जो निश्चित और दृढ़ है, और जो परदे के भीतर तक पहुंचती है, [20]जहां यीशु ने हमारे लिए अग्रदूत बन कर और मलिकिसिदक की रीति पर सदा के लिए महायाजक होकर प्रवेश किया है।

मलिकिसिदक याजक

7 यही मलिकिसिदक जो शालेम का राजा, और सर्वोच्च परमेश्वर का याजक था। जब इब्राहीम राजाओं का संहार करके लौट रहा था तो इसी ने उससे भेंट करके उसे आशिष दी। [2]इसी को इब्राहीम ने अपनी सारी लूट का दसवां अंश भी दिया। वह अपने नाम के अर्थ के अनुसार पहिले तो धार्मिकता का राजा और तब शालेम का राजा अर्थात् शान्ति का राजा है। [3]इसका न कोई पिता, न माता, और न कोई वंशावली है। इसके दिनों का न कोई आदि है और न जीवन का अन्त, परन्तु परमेश्वर के पुत्र सदृश ठहर कर यह सदा के लिए याजक बना रहता है।

[4]अब ध्यान करो कि यह

परमेश्वर का पुत्र यीशु, तो आओ, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें। [15]क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमसे सहानुभूति न रख सके। वह तो सब बातों में हमारे ही समान परखा गया, फिर भी निष्पाप निकला। [16]अत: हम साहस के साथ अनुग्रह के सिंहासन के निकट आएं कि हम पर दया हो और अनुग्रह पाएं कि आवश्यकता के समय हमारी सहायता हो।

5 प्रत्येक महायाजक मनुष्यों में से लिया जाता है और मनुष्यों के पक्ष में परमेश्वर से सम्बन्धित कार्यों के लिए नियुक्त किया जाता है कि पापों के लिए भेंट तथा बलिदान दोनों चढ़ाया करे। [2]वह नासमझ तथा भूले-भटकों के प्रति कोमलता का व्यवहार कर सकता है, क्योंकि वह स्वयं भी निर्बलताओं से घिरा रहता है। [3]इसी कारण उसे न केवल लोगों के लिए पर अपने लिए भी पापों का बलिदान चढ़ाना पड़ता है। [4]यह सम्मान कोई अपने आप नहीं लेता वरन् परमेश्वर की ओर से बुलाए जाने पर उसे प्राप्त होता है, जैसे कि हारून भी बुलाया गया। [5]इसी प्रकार मसीह ने भी महायाजक बनने का सम्मान स्वयं नहीं लिया, पर उसी ने दिया जिसने उस से कहा, "**तू मेरा पुत्र है, आज मैंने तुझे जन्म दिया है।**" [6]इसी प्रकार वह एक अन्य स्थल पर भी कहता है, "**तू मलिकिसिदक की रीति पर सदा के लिए याजक है।**" [7]अपनी देह में रहने के दिनों में मसीह ने उस से जो उसको मृत्यु से बचा सकता था उच्च स्वर से पुकार कर और आंसू बहा बहा कर प्रार्थनाएं और विनतियां कीं और आज्ञाकारिता के कारण उसकी सुनी गई। [8]पुत्र होने पर भी उसने दुख सह सह कर आज्ञा पालन करना सीखा। [9]वह सिद्ध ठहराया जाकर उन सब के लिए जो उसकी आज्ञा पालन करते हैं अनन्त उद्धार का स्रोत बन गया, [10]और परमेश्वर की ओर से मलिकिसिदक की रीति पर महायाजक नियुक्त किया गया।

भटकने का परिणाम

[11]हमें उसके विषय में बहुत कुछ कहना है, जिसका समझाना कठिन है, क्योंकि तुम ऊंचा सुनने लगे हो। [12]तुम्हें अब तक तो शिक्षक हो जाना चाहिए था, फिर भी यह आवश्यक हो गया है कि कोई तुम्हें फिर से परमेश्वर के वचन की प्रारम्भिक शिक्षा दे। तुम्हें तो ठोस भोजन की नहीं पर दूध की आवश्यकता है। [13]प्रत्येक जो दूध ही पीता है, वह धार्मिकता के वचन का अभ्यस्त नहीं, क्योंकि वह बालक है। [14]परन्तु ठोस भोजन तो बड़ों के लिए है, जिनकी ज्ञानेन्द्रियां अभ्यास के कारण भले-बुरे की पहिचान करने में निपुण हो गई हैं।

6 इसलिए हम मसीह के विषय में प्रारम्भिक शिक्षा को छोड़ कर सिद्धता की ओर बढ़ते जाएं और मरे हुए कार्यों से मन फिराने, परमेश्वर पर विश्वास करने, [2]बपतिस्मों और हाथ रखने तथा मरे हुओं के जी उठने और अनन्त न्याय की शिक्षा की नींव फिर से न डालें। [3]यदि परमेश्वर चाहे तो हम ऐसा ही करेंगे। [4]क्योंकि जो लोग एक बार ज्योति पा चुके हैं और स्वर्गिक वरदान का स्वाद चख चुके हैं तथा पवित्र आत्मा के भागी बनाए गए हैं, [5]और परमेश्वर के उत्तम वचन का तथा आने वाले युग की

ऐसा महायाजक हो जो पवित्र, निर्दोष, निर्मल, पापियों से अलग, और स्वर्गों से भी ऊंचा किया गया हो, [27]जिसे अन्य महायाजकों की भांति यह आवश्यक नहीं कि प्रतिदिन पहिले अपने पापों और फिर अपनी प्रजा के पापों के लिए बलिदान चढ़ाए, क्योंकि उसने यह कार्य अपने आप को एक ही बार बलिदान चढ़ाकर सदा के लिए पूरा कर दिया। [28]क्योंकि व्यवस्था तो निर्बल मनुष्यों को महायाजक नियुक्त करती है, परन्तु शपथ का वह वचन जो व्यवस्था के बाद आया, उस पुत्र को जो युगानुयुग के लिए सिद्ध किया गया है नियुक्त करता है।

नई वाचा का महायाजक

8 अब जो बातें हम कह चुके हैं उनमें मुख्य बात यह है कि हमारा ऐसा महायाजक है, जो स्वर्गों में महामहिमन् के सिंहासन के दाहिने विराजमान् है। [2]वह उस पवित्र स्थान और सच्चे तम्बू का सेवक बना जिसे मनुष्य ने नहीं, परन्तु प्रभु ने खड़ा किया है। [3]क्योंकि प्रत्येक महायाजक भेंट और बलिदान दोनों को ही चढ़ाने के लिए नियुक्त किया जाता है, अतः यह आवश्यक है कि चढ़ाने के लिए इस महायाजक के पास भी कुछ हो। [4]यदि वह पृथ्वी पर होता तो कदापि याजक न होता, क्योंकि व्यवस्था के अनुसार भेंट चढ़ाने वाले यहां हैं। [5]वे केवल स्वर्गीय वस्तुओं के प्रतिरूप और छाया की सेवा उसी प्रकार किया करते हैं, जिस प्रकार मूसा को, जब वह तम्बू खड़ा करने पर था, परमेश्वर की ओर से चेतावनी मिली थी, **"देख, जो नमूना तुझे पर्वत पर दिखाया गया था, उसी के अनुसार सब कुछ बनाना।"** [6]पर अब यीशु को और भी श्रेष्ठ सेवकाई प्राप्त हुई है, क्योंकि वह उस उत्तम वाचा का जो और भी उत्तम प्रतिज्ञाओं के आधार पर बान्धी गई है, मध्यस्थ ठहरा। [7]यदि पहिली वाचा निर्दोष होती, तो दूसरे के लिए अवसर ही नहीं ढूंढ़ा जाता। [8]परन्तु वह उन पर दोष लगाते हुए कहता है, **"प्रभु कहता है, देखो, वे दिन आ रहे हैं जब मैं इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने के साथ नई वाचा बांधूंगा। [9]यह उस वाचा के सदृश न होगी, जो मैंने उनके पूर्वजों के साथ उस दिन बांधी थी, जब उन्हें मिस्र देश से निकाल लाने के लिए उनका हाथ पकड़ा था। और इसलिए कि वे मेरी वाचा पर स्थिर न रहे, प्रभु कहता है, मैंने उनकी सुधि न ली। [10]फिर प्रभु कहता है उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने के साथ मैं जो वाचा बांधूंगा, वह यह है: मैं अपनी व्यवस्था को उनके मनों में डालूंगा, और उसे उनके हृदयों पर लिखूंगा, और मैं उनका परमेश्वर होऊंगा और वे मेरे लोग होंगे। [11]उनमें से कोई अपने देश-वासी को यह शिक्षा न देगा और न अपने भाई से कहेगा, 'प्रभु को पहिचान,' क्योंकि छोटे से बड़े तक सब के सब मुझे जानेंगे। [12]क्योंकि मैं उनके अधर्म के विषय में दयावन्त होऊंगा और उनके पापों को फिर कभी स्मरण नहीं करूंगा।"** [13]जब उसने कहा, 'एक नई वाचा,' तो उसने प्रथम वाचा को पुरानी ठहरा दिया, क्योंकि जो पुरानी और जीर्ण हो रही है, वह लुप्त होने पर है।

तम्बू में आराधना विधि

9 अब पहिली वाचा में भी उपासना और उस आराधनालय के नियम थे

महान् था जिसे कुलपति इब्राहीम ने अपनी अपनी लूट के सर्वोत्तम भाग का दसवां अंश दिया। [5]लेवी की सन्तानों में से जो याजक पद पाते हैं उन्हें आज्ञा मिली है कि लोगों से, अर्थात् अपने भाइयों से, यद्यपि वे इब्राहीम के वंशज हैं, व्यवस्था के अनुसार दसवां अंश लिया करें। [6]परन्तु इसने, जो उनकी वंशावली में से भी न था, इब्राहीम से दसवां अंश लिया और उसे आशिष दी जिसे प्रतिज्ञाएं मिली थीं। [7]इसमें संदेह नहीं कि छोटा बड़े से आशीर्वाद पाता है। [8]फिर एक दशा में तो नश्वर मनुष्य दसवां अंश पाते हैं, परन्तु दूसरे में वही पाता है जिसके लिए साक्षी दी जाती है कि वह जीवित है। [9]तो क्या कह सकते हैं कि दसवां अंश लेने वाले लेवी ने भी इब्राहीम के द्वारा दसवां अंश दिया, [10]क्योंकि उस समय वह अपने पिता इब्राहीम की देह में ही था जब मलिकिसिदक ने उससे भेंट की।

मलिकिसिदक के सदृश याजक

[11]यदि लेवीय याजक-पद के द्वारा सिद्धता प्राप्त होती—क्योंकि इसी आधार पर उस प्रजा को व्यवस्था मिली—तो फिर ऐसे याजक के खड़े होने की क्या आवश्यकता थी जो मलिकिसिदक की रीति के अनुसार तो हो, परन्तु हारून की रीति के अनुसार न कहलाए? [12]जब याजक-पद बदलता है तो आवश्यकता के कारण व्यवस्था में भी परिवर्तन होता है। [13]क्योंकि जिस व्यक्ति के विषय में ये बातें कही गई हैं, वह किसी ऐसे अन्य गोत्र का है, जिसमें से कोई भी वेदी का सेवक नहीं बना। [14]अतः यह प्रकट है कि हमारा प्रभु, यहूदा के गोत्र में से उत्पन्न हुआ था, ऐसा गोत्र जिसके विषय में मूसा ने याजक सम्बन्धी कोई बात नहीं कही। [15]यह बात तब और भी स्पष्ट हो जाती जब मलिकिसिदक के समान कोई दूसरा याजक खड़ा हो जाता, [16]जो शारीरिक व्यवस्था के नियम के अनुसार नहीं, परन्तु अविनाशी जीवन की सामर्थ के अनुसार नियुक्त हुआ होता। [17]क्योंकि उसके विषय में यह साक्षी दी गई है, **"तू मलिकिसिदक की रीति के अनुसार युगानुयुग याजक है।"** [18]एक ओर तो पहिली आज्ञा अपनी निर्बलता और अनुपयोगिता के कारण रद्द हो गई। [19]क्योंकि व्यवस्था द्वारा सिद्धता प्राप्त नहीं होती—तो दूसरी ओर एक ऐसी उत्तम आशा रखी गई है, जिसके द्वारा हम परमेश्वर के समीप आते हैं। [20]और जबकि मसीह की नियुक्ति शपथ बिना नहीं हुई—[21]क्योंकि वे लोग बिना शपथ के याजक ठहराए गए, परन्तु मसीह तो शपथ के साथ उसके द्वारा नियुक्त किया गया जिसने उस से कहा, **"प्रभु ने शपथ खाई है और वह अपना विचार नहीं बदलेगा, 'तू युगानुयुग याजक है'।"** [22]इसलिए यीशु एक उत्तम वाचा का *जामिन ठहरा है। [23]पहिले तो बहुत बड़ी संख्या में याजक हुआ करते थे, क्योंकि मृत्यु उन्हें बने रहने नहीं देती थी, [24]परन्तु अब इसलिए कि वह सदा के लिए बना रहता है, उसका याजक पद भी चिरस्थाई है। [25]अतः जो उसके द्वारा परमेश्वर के समीप आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार करने में समर्थ है, क्योंकि वह उनके लिए निवेदन करने को सर्वदा जीवित है।

[26]यह उचित ही था कि हमारे पास

*या, जमानत

और बकरों के लहू को पानी, लाल ऊन तथा जूफे के साथ लेकर उस पुस्तक और सब लोगों पर छिड़क दिया और कहा, [20]**"यह उस वाचा का लहू है जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने तुम्हें दी।"** [21]इसी प्रकार उसने उस तम्बू पर और सेवा के सब पात्रों पर लहू छिड़का। [22]व्यवस्था के अनुसार प्रायः सब वस्तुएं लहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं, और लहू बहाए बिना क्षमा है ही नहीं।

[23]इसलिए आवश्यक था कि स्वर्गीय वस्तुओं के प्रतिरूप इन बलिदानों के द्वारा शुद्ध किए जाते, परन्तु स्वर्गीय वस्तुएं स्वयं इनसे भी उत्तम बलिदानों के द्वारा शुद्ध की जातीं। [24]क्योंकि मसीह ने हाथ के बनाए हुए पवित्रस्थान में, जो सच्चे पवित्रस्थान का प्रतिरूप मात्र है, प्रवेश नहीं किया, वरन् स्वर्ग ही में प्रवेश किया कि अब हमारे लिए परमेश्वर के सामने प्रकट हो। [25]और यह नहीं कि वह अपने आप को बार बार चढ़ाए—जैसे कि महायाजक प्रति वर्ष लहू लेकर पवित्र स्थान में प्रवेश तो करता है, परन्तु अपना लहू लेकर नहीं— [26]अन्यथा जगत की उत्पत्ति के समय से उसे बार बार दुख भोगना पड़ता, परन्तु अब युग के अन्त में वह एक ही बार प्रकट हुआ कि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को मिटा दे। [27]और जैसे मनुष्यों के लिए एक ही बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त किया गया है, [28]वैसे ही मसीह भी, बहुतों के पापों को उठाने के लिए एक बार बलिदान होकर, दूसरी बार प्रकट होगा। पाप उठाने के लिए नहीं, परन्तु उनके उद्धार के लिए जो उत्सुकता से उसके आने की प्रतीक्षा करते हैं।

अन्तिम बलिदान

10 व्यवस्था में तो भावी अच्छी वस्तुओं का वास्तविक स्वरूप नहीं, परन्तु छाया मात्र है। अतः लोगों द्वारा निरन्तर वर्ष प्रति वर्ष चढ़ाए जाने वाले बलिदानों से समीप आने वालों को वह कभी भी सिद्ध नहीं कर सकती। [2]अन्यथा उनका चढ़ाया जाना बन्द क्यों नहीं हो जाता? आराधना करने वाले तो एक बार ही शुद्ध हो जाते और उनका विवेक उन्हें फिर पापी न ठहराता। [3]इसके विपरीत उन बलिदानों के द्वारा प्रति वर्ष पापों का स्मरण होता है। [4]क्योंकि यह असम्भव है कि बैलों और बकरों का लहू पापों को दूर करे। [5]इस कारण वह संसार में आते समय कहता है, **"तू ने बलिदान और भेंट को न चाहा, परन्तु तू ने मेरे लिए एक देह तैयार की है। [6]तू होम-बलियों और पाप-बलियों से प्रसन्न नहीं हुआ। [7]तब मैंने कहा, 'हे परमेश्वर, देख, मैं तेरी इच्छा पूरी करने आ गया हूं—पुस्तक में मेरे विषय यही लिखा हुआ है'।"** [8]उपरोक्त कथन में यह कहने के पश्चात्, **"तू ने बलिदान और भेंट, होम-बलियों और पाप-बलियों को न चाहा और न उनसे प्रसन्न हुआ,"** ये व्यवस्था के अनुसार चढ़ाए जाते हैं, [9]तब उसने कहा, **"देख, मैं आ गया हूं कि तेरी इच्छा पूर्ण करूं।"** वह पहिले को हटा लेता है कि दूसरे को स्थापित करे। [10]इसी इच्छा के द्वारा यीशु मसीह की देह के एक ही बार सदा के लिए बलिदान चढ़ाए जाने से हम पवित्र किए गए हैं। [11]प्रत्येक याजक प्रतिदिन खड़ा होकर सेवा करता तथा एक ही प्रकार का बलिदान जो पापों को कभी दूर नहीं कर सकता बार बार

जो पृथ्वी पर था। [2]क्योंकि एक तम्बू बनाया गया, जिसके पहिले भाग में दीपदान, मेज़ और भेंट की रोटियाँ थीं। यह पवित्र स्थान कहलाता है। [3]दूसरे परदे के पीछे तम्बू का वह भाग था जो परम पवित्र स्थान कहलाता है। [4]उसमें धूप जलाने के लिए सोने की एक वेदी और वाचा का सन्दूक था जो चारों ओर सोने से मढ़ा हुआ था जिसमें मन्ना से भरा हुआ सोने का मर्तबान और हारून की फूली-फली लाठी तथा वाचा की पटियां थीं। [5]उसके ऊपर तेजोमय करूब थे जो प्रायश्चित के ढक्कन पर छाया किए हुए थे, परन्तु हम इन सब बातों का यहां सविस्तार वर्णन नहीं कर सकते।

[6]जब ये वस्तुएं इस रीति से तैयार हो चुकीं तो याजक बाहरी तम्बू में निरन्तर प्रवेश कर के सेवा का कार्य सम्पन्न किया करते थे, [7]परन्तु दूसरे में केवल महा-याजक प्रवेश करता है, और वह भी वर्ष में एक ही बार, और लहू लिए बिना नहीं जाता, जिसे वह अपने और लोगों के, *अज्ञानता में किए गए पापों के लिए भेंट चढ़ाता है। [8]पवित्र आत्मा इससे यही दर्शाता है कि जब तक बाहरी तम्बू विद्यमान है, तब तक पवित्र स्थान का मार्ग प्रकट नहीं हुआ। [9]यह तम्बू तो वर्तमान समय के लिए दृष्टान्त है जिसके अनुसार ऐसी भेंटें और बलिदान चढ़ाए जाते हैं जो आराधना करने वालों के विवेक को सिद्ध नहीं कर सकते। [10]क्योंकि ये केवल खाने-पीने और नहाने-धोने की विभिन्न विधियों से सम्बन्धित शारीरिक नियम हैं, जो सुधार के समय तक के लिए ठहराए गए हैं।

मसीह के लहू की सामर्थ

[11]परन्तु जब मसीह *आने वाली अच्छी बातों का महायाजक होकर प्रकट हुआ तो उसने और भी बड़े तथा सिद्ध तम्बू में से होकर प्रवेश किया जो हाथ का बनाया हुआ अर्थात् इस सृष्टि का नहीं। [12]और बकरों तथा बछड़ों के लहू द्वारा नहीं, वरन् स्वयं अपने लहू द्वारा सदा के लिए एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश कर के अनन्त छुटकारा प्राप्त किया। [13]क्योंकि यदि अशुद्ध लोगों पर बकरों और बैलों का लहू तथा कलोर की राख का छिड़का जाना देह की शुद्धता के लिए पवित्र करता है, [14]तो मसीह का लहू, जिसने अपने आप को सनातन आत्मा द्वारा परमेश्वर के सम्मुख निर्दोष चढ़ा दिया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से और भी अधिक क्यों न शुद्ध करेगा कि तुम जीवित परमेश्वर की सेवा करो? [15]और इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, जिस से कि उस मृत्यु के द्वारा जो प्रथम वाचा के अन्तर्गत किए गए अपराधों का मूल्य चुकाने के लिए हुई, वे जो बुलाए गए हैं अनन्त उत्तराधिकार की प्रतिज्ञा को प्राप्त कर सकें। [16]क्योंकि जहां *वसीयतनामा है, वहां उसके लिखने वाले की मृत्यु का होना आवश्यक है। [17]मनुष्यों की मृत्यु के बाद ही वसीयत-नामा पक्का होता है। क्योंकि जब तक कोई जीवित रहता है तब तक वसीयत-नामा कार्यान्वित नहीं हो सकता। [18]अतः प्रथम वाचा भी बिना लहू के नहीं बांधी गई। [19]जब मूसा लोगों को व्यवस्था की प्रत्येक आज्ञा सुना चुका तब उसने बछड़ों

7 *अक्षरशः, अज्ञानताओं के लिए   11 *कुछ हस्तलेखों के अनुसार: आई हुई   16 *वसीयतनामा और वाचा के लिए एक ही यूनानी शब्द प्रयुक्त है

और भी अधिक उत्तम और चिरस्थाई सम्पत्ति है। [35]इसलिए अपना भरोसा न छोड़ो, जिसका महान् प्रतिफल है। [36]क्योंकि तुम्हें धैर्य की आवश्यकता है कि तुम परमेश्वर की इच्छा पूर्ण करके जिस बात की प्रतिज्ञा की गई थी उसे प्राप्त कर सको। [37]**क्योंकि अब थोड़ी ही देर में आने वाला आएगा और विलम्ब नहीं करेगा। [38]मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा, परन्तु यदि वह पीछे हटे तो मेरे मन को प्रसन्नता नहीं होगी।** [39]हम उन में से नहीं जो नाश होने के लिए पीछे हटते हैं, पर उनमें से हैं, जो प्राणों की रक्षा के लिए विश्वास रखते हैं।

विश्वास की विजय

11 विश्वास तो आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है। [2]इसी के कारण प्राचीनकाल के लोगों की अच्छी गवाही दी गई। [3]विश्वास ही से हम जानते हैं कि परमेश्वर के वचन के द्वारा समस्त सृष्टि की रचना ऐसी की गई कि जो कुछ देखने में आता है, वह दिखाई देने वाली वस्तुओं से नहीं बनाया गया था। [4]विश्वास ही से हाबिल ने परमेश्वर के लिए कैन से उत्तम बलिदान चढ़ाया, जिसके द्वारा उसके धर्मी होने की गवाही दी गई और परमेश्वर ने उसकी भेंटों के विषय में गवाही दी। यद्यपि हाबिल मर चुका है, फिर भी विश्वास के द्वारा अब तक बोलता है। [5]विश्वास ही से हनोक ऊपर उठा लिया गया कि वह मृत्यु को न देखे। उसका फिर पता न चला, क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया था। उसके लिए यह गवाही दी गई थी कि उठाए जाने से पूर्व, वह परमेश्वर को प्रिय था। [6]विश्वास के बिना उसे प्रसन्न करना असम्भव है, क्योंकि जो कोई परमेश्वर के पास आता है, उसके लिए यह विश्वास करना आवश्यक है कि वह है, और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है। [7]विश्वास ही से नूह ने उन बातों के विषय में जो उस समय तक दिखाई नहीं देती थीं, चेतावनी पाकर भय के साथ अपने परिवार के बचाव के लिए जहाज़ बनाया। इस प्रकार उसने संसार को दोषी ठहराया, और उस धार्मिकता का उत्तराधिकारी हुआ जो विश्वास के अनुसार है। [8]विश्वास ही से इब्राहीम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसे स्थान को चला गया जो उसे उत्तराधिकार में मिलने वाला था। वह नहीं जानता था कि मैं कहां जा रहा हूं, फिर भी चला गया। [9]विश्वास ही से वह प्रतिज्ञा के देश में परदेशी होकर रहा, अर्थात् परदेश में इसहाक और याकूब के साथ जो उसी के समान प्रतिज्ञा के उत्तराधिकारी थे, तम्बुओं में रहा। [10]वह उस स्थिर नींव वाले नगर की प्रतीक्षा में था जिसका रचने और बनाने वाला परमेश्वर है। [11]विश्वास ही से सारा ने अवस्था ढल जाने पर भी गर्भ धारण की सामर्थ पाई, क्योंकि उसने प्रतिज्ञा करने वाले को विश्वासयोग्य जाना। [12]इसी कारण एक ही मनुष्य से, जो मृतप्राय था, आकाश के तारों और सागर-तट की बालू के समान असंख्य सन्तान उत्पन्न हुईं।

[13]ये सब विश्वास की दशा में मरे। इन्होंने प्रतिज्ञा की गई बातों को प्राप्त नहीं किया, परन्तु उन्हें दूर ही से देख कर उनका अभिवादन किया और मान लिया कि हम पृथ्वी पर परदेशी और पराए हैं। [14]जो ऐसा कहते हैं वे यह स्पष्ट कर देते हैं

चढ़ाता है। [12]परन्तु यह याजक तो पापों के बदले सदा के लिए एक ही बलिदान चढ़ा कर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा, [13]और उसी समय से वह प्रतीक्षा कर रहा है, **कि उसके शत्रु उसके चरणों की चौकी बन जाएं,** [14]क्योंकि उसने एक ही बलिदान के द्वारा उनको जो पवित्र किए जाते हैं सदा के लिए सिद्ध कर दिया है। [15]और पवित्र आत्मा भी हमें गवाही देता है; क्योंकि यह कहने के बाद, [16]"**प्रभु कहता है कि मैं उन दिनों के बाद जो वाचा उन से बांधूंगा, वह यह है कि मैं अपने नियम उनके हृदय में डालूंगा, और उनके मनों पर उन्हें लिखूंगा।**" वह आगे कहता है, [17]"**मैं उनके पापों और उनके अधर्म के कामों को फिर स्मरण न करूंगा।**" [18]अब जहां इनकी क्षमा हो गई है तो वहां पाप के लिए कोई बलिदान बाकी न रहा।

साहस के साथ परमेश्वर तक पहुंच

[19]इसलिए हे भाइयो, जब हमें यीशु के लहू के द्वारा एक नए जीवित मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का साहस हुआ है, [20]जो उसने परदे अर्थात् अपनी देह के द्वारा हमारे लिए खोल दिया है, [21]और जबकि हमारा एक ऐसा महान् याजक है जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है, [22]तो आओ, हम सच्चे मन और पूर्ण विश्वास के साथ, और विवेक का दोष दूर करने के लिए हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर, परमेश्वर के समीप आएं। [23]आओ, हम अपनी आशा के अंगीकार को अचल होकर दृढ़ता से थामे रहें, क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है, वह विश्वासयोग्य है। [24]और ध्यान रखें कि किस प्रकार प्रेम और भले कार्यों में एक दूसरे को उत्साहित कर सकते हैं, [25]और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ो, जैसा कि कितनों की रीति है, वरन् एक दूसरे को प्रोत्साहित करते रहो, और उस दिन को निकट आते देख कर और भी अधिक इन बातों को किया करो।

[26]यदि सत्य का ज्ञान प्राप्त करने के बाद भी हम जानबूझकर पाप करते रहें तो फिर पापों के लिए कोई बलिदान शेष न रहा, [27]परन्तु दण्ड की भयानक प्रतीक्षा और **अग्नि-ज्वाला शेष है जो विरोधियों को भस्म कर देगी।** [28]जो कोई मूसा की व्यवस्था का उल्लंघन करता है, वह दो या तीन लोगों की गवाही पर बिना दया के मार डाला जाता है। [29]तो तुम्हीं सोचो कि वह व्यक्ति और भी कितने कठोर दण्ड का भागी होगा, जिसने परमेश्वर के पुत्र को पैरों से रौंदा और वाचा के लहू को, जिस के द्वारा वह पवित्र ठहराया गया, अपवित्र समझा और अनुग्रह के आत्मा का अपमान किया है! [30]क्योंकि हम उसे जानते हैं जिसने कहा, "**बदला लेना मेरा काम है, बदला मैं ही दूंगा।**" और फिर यह, "**प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा।**" [31]जीवित परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयंकर बात है।

[32]परन्तु उन दिनों का स्मरण करो, जब तुम ज्योति प्राप्त करने के पश्चात् घोर कष्टों के संघर्ष में स्थिर रहे थे। [33]कभी कभी तो तुम निन्दा और क्लेश के द्वारा लोगों के सम्मुख तमाशा बने, और कभी तो जो सताए गए थे उनके साथ भागीदार बने। [34]क्योंकि तुम ने बन्दियों के साथ सहानुभूति दिखाई और अपनी सम्पत्ति के जब्त किए जाने को यह जान कर सहर्ष स्वीकार किया कि तुम्हारे पास

गए। [37]उनका पथराव हुआ। आरे से चीर कर उनके दो टुकड़े कर दिए गए। *उनकी परीक्षा की गई। तलवार के घाट उतारे गए। वे दरिद्रता, क्लेश और दुख भोगते हुए भेड़ और बकरियों की खाल पहिने इधर-उधर भटकते फिरे— [38]संसार उनके योग्य नहीं था। वे रेगिस्तानों, पर्वतों, गुफाओं और पृथ्वी की दरारों में छिपते फिरे। [39]यद्यपि विश्वास ही के कारण इन सब की अच्छी गवाही दी गई, फिर भी उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तु को प्राप्त न किया। [40]क्योंकि परमेश्वर ने हमारे लिए पहिले ही से एक उत्तम बात ठहराई थी कि वे हमारे बिना *सिद्धता प्राप्त न करें।

परमेश्वर द्वारा ताड़ना

12 इस कारण जबकि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हमें घेरे हुए है, तो आओ, प्रत्येक बाधा और उलझाने वाले पाप को दूर करके वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है धीरज से दौड़ें, [2]और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर अपनी दृष्टि लगाए रहें, जिसने उस आनन्द के लिए जो उसके सामने रखा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुख सहा, और परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर जा बैठा। [3]इसलिए उस पर ध्यान करो जिसने पापियों का अपने विरोध में इतना विद्रोह सह लिया कि तुम थक कर निरुत्साहित न हो जाओ। [4]पाप से लड़ते हुए तुमने ऐसा संघर्ष नहीं किया कि तुम्हारा लहू बहा हो, [5]और तुम उस उपदेश को जो तुम्हें पुत्र मानकर दिया गया है, भूल गए हो: "**हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हल्की बात न समझ, और जब वह तुझे झिड़के तो हताश न हो।** [6]**क्योंकि प्रभु जिससे प्रेम करता है उसकी ताड़ना भी करता है, और जिसे पुत्र बना लेता है, उसे कोड़े भी लगाता है।**" [7]तुम दुख को ताड़ना समझ कर सह लो, क्योंकि परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ व्यवहार करता है। वह कौन सा पुत्र है जिसकी ताड़ना उसका पिता नहीं करता? [8]पर यदि वह ताड़ना जो सब की होती है, तुम्हारी नहीं हुई तो तुम पुत्र नहीं, परन्तु व्यभिचार की सन्तान ठहरे। [9]फिर यह कि जब शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना करते थे तो हमने उनका आदर किया, तब क्यों न आत्माओं के पिता के और भी अधिक आधीन रहें, जिससे कि हम जीवित रहें? [10]क्योंकि उन्होंने थोड़े समय के लिए जैसा भी उन्हें उत्तम जान पड़ा हमारी ताड़ना की, परन्तु वह हमारे भले के लिए ताड़ना करता है, कि हम उसकी पवित्रता में सहभागी हो जाएं। [11]सब प्रकार की ताड़ना कुछ समय के लिए सुखदायी नहीं, परन्तु दुखदायी प्रतीत होती है, फिर भी जो इसके द्वारा प्रशिक्षित हो चुके हैं, उन्हें बाद में धार्मिकता का शान्तिदायक फल प्राप्त होता है। [12]इसलिए शिथिल हाथों और निर्बल घुटनों को सबल बनाओ, [13]और अपने पैरों के लिए सीधे मार्ग बनाओ, जिससे कि वह अंग जो लंगड़ा है जोड़ से न उखड़े वरन् चंगा हो जाए।

सावधान रहो

[14]सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो, और उस पवित्रता के खोजी बनो, जिसके बिना प्रभु को कोई भी नहीं देख पाएगा। [15]ध्यान रखो कि कोई परमेश्वर

37 *कुछ हस्तलेखों में 'उनकी परीक्षा की गई' नहीं मिलता है 40 *या, पूर्णता को

कि वे तो अपने निज देश की खोज में हैं। [15]यदि वे उस देश के विषय सोचते जिस से वे निकले थे तो उन्हें लौट जाने का अवसर होता। [16]पर वे एक उत्तम अर्थात् स्वर्गिक देश के अभिलाषी हैं। इसलिए परमेश्वर उनका परमेश्वर कहलाने से नहीं लज़ाता, क्योंकि उसने उनके लिए एक नगर तैयार किया है।

[17]विश्वास ही से इब्राहीम ने परखे जाते के समय इसहाक को वेदी पर चढ़ाया, अर्थात् जिसे प्रतिज्ञाएं मिली थीं वही अपने एकलौते पुत्र को बलि चढ़ाने पर था। [18]उसी से यह कहा गया था, "**इसहाक से तेरा वंश चलेगा।**" [19]उसने यह मान लिया कि परमेश्वर, लोगों को मरे हुओं में से जीवित करने में समर्थ है—जहां से उसने, दृष्टान्त के रूप में, उसे पा भी लिया। [20]विश्वास ही से इसहाक ने याकूब और एसाव को भविष्य में होने वाली बातों के विषय में आशिष दी। [21]विश्वास ही से याकूब ने अपनी मृत्यु के समय यूसुफ के प्रत्येक पुत्र को आशिष दी, और अपनी लाठी के सिरे पर सहारा लेकर उपासना की। [22]विश्वास ही से यूसुफ ने अपनी मृत्यु के समय इस्राएल की सन्तानों के निर्गमन की चर्चा की, और अपनी अस्थियों के विषय में आदेश दिए। [23]विश्वास ही से मूसा को, जब वह पैदा हुआ था, उसके माता-पिता ने तीन महीने तक छिपा रखा, क्योंकि उन्होंने देखा कि बालक सुन्दर है, और वे राजा की आज्ञा से न डरे। [24]विश्वास ही से मूसा ने बड़े हो जाने पर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाना अस्वीकार कर दिया। [25]उसने पाप के क्षणिक सुख भोगने की अपेक्षा, परमेश्वर की प्रजा के साथ दुख भोगना ही अच्छा समझा। [26]उसने मसीह के कारण निन्दित होने को मिस्र के धन के भण्डारों की अपेक्षा बढ़कर समझा, क्योंकि वह प्रतिफल पाने की आस लगाए था। [27]विश्वास ही से उसने राजा के क्रोध की चिन्ता न करते हुए मिस्र देश को छोड़ दिया, क्योंकि वह अनदेखे को मानो देखते हुए दृढ़ बना रहा। [28]विश्वास ही से उसने फसह के पर्व और लहू छिड़कने की विधि को माना, जिससे कि वह जिसने पहिलौठों का नाश किया, उन्हें छूने न पाए। [29]विश्वास ही से वे लाल समुद्र में से ऐसे पार हो गए मानो सूखी भूमि पर चलकर गए हों, और जब मिस्रियों ने भी वैसा ही करना चाहा तो वे डूब मरे। [30]विश्वास ही से यरीहो की शहरपनाह भी ढह गई जब वे सात दिन तक उसकी परिक्रमा कर चुके। [31]विश्वास ही से राहाब वेश्या भी आज्ञा न मानने वालों के साथ नाश नहीं हुई, क्योंकि उसने गुप्तचरों को कुशलता से रखा था।

[32]इससे अधिक और क्या कहूं? क्योंकि समय नहीं कि मैं गिदोन, बाराक, शिमशोन, यिफतह, दाऊद, शमूएल और नबियों का वर्णन करूं, [33]जिन्होंने विश्वास ही से राज्य जीते, धार्मिकता के कार्य किए, प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं प्राप्त कीं, सिंहों के मुंह बन्द किए, [34]आग की ज्वाला को शान्त किया, तलवार की धार से बच निकले, निर्बलता में बलवान किए गए, युद्ध में वीरता दिखाई, विदेशी सेना को मार भगाया। [35]स्त्रियों ने पुनरुत्थान के द्वारा अपने मृतकों को पुनः जीवित पाया। कुछ को यातनाएं दी गईं, परन्तु उन्होंने छुटकारा न चाहा जिससे कि वे एक उत्तम पुनरुत्थान को प्राप्त करें। [36]कई लोग ठट्ठों में उड़ाए जाने, कोड़े खाने वरन् बन्धनों व क़ैद में पड़ने के द्वारा परखे

उसी में सन्तुष्ट रहो, क्योंकि उसने स्वयं ही कहा है, "**मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा और न ही कभी त्यागूंगा।**" [6]इसलिए हम साहसपूर्वक कहते हैं, "**प्रभु मेरा सहायक है, मैं नहीं डरूँगा। मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?**"

[7]अपने अगुओं को स्मरण रखो, जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया, और ध्यान से उनके चालचलन के परिणाम को देखकर उनके विश्वास का अनुकरण करो। [8]यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक-सा है। [9]नाना प्रकार की विचित्र शिक्षाओं से विचलित न हो, क्योंकि हृदय का अनुग्रह से दृढ़ रहना भला है, न कि चढ़ावे की भोजन वस्तुओं से जिन से उनको कुछ लाभ न हुआ जो उनमें लिप्त रहे। [10]हमारी एक ऐसी वेदी है, जहां से तम्बू की सेवा करने वालों को खाने का कोई अधिकार नहीं। [11]क्योंकि महायाजक जिन पशुओं का लहू पाप-बलि के लिए पवित्र स्थान में ले जाता है, उनकी देह छावनी के बाहर जलाई जाती है। [12]इसलिए यीशु ने भी लोगों को अपने लहू द्वारा पवित्र करने के लिए शहर के फाटक के बाहर दुख उठाया। [13]इसलिए आओ, उसकी निन्दा अपने ऊपर लिए हुए छावनी के बाहर उसके पास निकल चलें। [14]क्योंकि यहां हमारा कोई स्थायी नगर नहीं, परन्तु हम उस नगर की खोज में हैं, जो आने वाला है। [15]अतः हम यीशु के द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान परमेश्वर को सर्वदा चढ़ाया करें, अर्थात् उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं। [16]भलाई करना और *उदारता दिखाना न भूलो, क्योंकि ऐसे बलिदानों से परमेश्वर प्रसन्न होता है। [17]अपने अगुओं की आज्ञा मानो और उनके आधीन रहो, क्योंकि वे तुम्हारे प्राणों की यह जानकर चौकसी करते हैं, कि उन्हें उसका लेखा देना है। उन्हें यह कार्य आनन्द के साथ करने दो, न कि आहें भरते हुए, क्योंकि इससे तुम्हें कोई लाभ न होगा।

[18]हमारे लिए प्रार्थना करते रहो, क्योंकि हमें निश्चय है कि हमारा विवेक शुद्ध है: हम सब बातों में अच्छी चाल चलने की इच्छा रखते हैं। [19]मैं आग्रह करता हूं कि तुम और भी अधिक ऐसा ही किया करो कि मैं तुम्हारे पास फिर शीघ्र आ सकूं।

[20]अब शान्तिदाता परमेश्वर जिसने भेड़ों के महान् रखवाले हमारे प्रभु यीशु को सनातन वाचा के लहू द्वारा मृतकों में से जीवित कर दिया, [21]तुम्हें सब भले गुणों से परिपूर्ण करे, जिससे तुम उसकी इच्छा पूरी करो, और जो कुछ उसकी दृष्टि में प्रिय है, वह यीशु मसीह के द्वारा हमारे अन्दर पूरा करे। उसी की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

[22]हे भाइयो, मैं तुमसे आग्रह करता हूं कि इस उपदेश के वचन को धीरज से सुन लो, क्योंकि मैंने तुम्हें संक्षेप में लिखा है। [23]तुम्हें यह ज्ञात हो कि हमारा भाई तीमुथियुस रिहा कर दिया गया है। यदि वह शीघ्र आ गया तो मैं भी उसके साथ आकर तुमसे मिलूंगा। [24]अपने सब अगुओं और सब पवित्र लोगों को नमस्कार कहना। इटलीवासी तुम्हें नमस्कार कहते हैं।

[25]तुम सब पर अनुग्रह हो।

16 *अक्षरशः, सम्पत्ति द्वारा सहायता करना

के अनुग्रह से वंचित न रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट का कारण न बने, जिससे कि बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएं। [16]तुम में से कोई भी व्यक्ति दुराचारी या एसाव के सदृश न हो जिसने एक बार के भोजन के लिए अपने पहिलौठेपन का अधिकार बेच डाला। [17]तुम जानते हो कि इसके बाद जब उसने आशिष प्राप्त करनी चाही तो अयोग्य गिना गया और आंसू बहा बहाकर ढूंढ़ने पर भी उसे पश्चात्ताप करने का अवसर न मिला।

[18]क्योंकि तुम उस पर्वत के पास नहीं आए जिसे छुआ जा सके, और न प्रज्वलित अग्नि, न अन्धकार, न काली घटा और न बवण्डर के पास, [19]और न ही तुरही-नाद अथवा ऐसी किसी आवाज़ के पास आए जिसके सुनने वालों ने बिनती की कि अब आगे को उन्हें ऐसा और कोई शब्द सुनाई न पड़े। [20]क्योंकि वे इस आज्ञा को सह न सके: **"यदि कोई पशु भी पर्वत को छुए तो उसका पथराव किया जाए।"** [21]वह दृश्य इतना भयंकर था कि मूसा ने कहा, **"मैं अत्यन्त भयभीत हूं और कांपता हूं।"** [22]परन्तु तुम तो सिय्योन पर्वत के और जीवित परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम में तथा असंख्य *स्वर्गदूतों के पास, [23]और महासभा अर्थात् उन पहिलौठों की कलीसिया के समीप जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हैं, और सब के न्यायाधीश परमेश्वर और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं की उपस्थिति में, [24]तथा नई वाचा के मध्यस्थ यीशु के और छिड़काव के उस लहू के पास आए हो, जो हाबिल के लहू की अपेक्षा उत्तम बातें कहता है। [25]सावधान रहो और उस बोलने वाले का इनकार न करो, क्योंकि जब वे लोग पृथ्वी पर चेतावनी देने वाले की अनसुनी करके न बच सके तो स्वर्ग से चेतावनी देने वाले की अनसुनी कर के हम बिल्कुल न बच सकेंगे। [26]उस समय उसकी वाणी ने पृथ्वी को हिला दिया, परन्तु अब उसने यह कहकर प्रतिज्ञा की है, **"एक बार फिर मैं न केवल पृथ्वी को वरन् आकाश को भी हिला दूंगा।"** [27]और यह कथन, "एक बार फिर," उन वस्तुओं के हटाए जाने की ओर संकेत करता है, जो सृजी हुई होने के कारण हिलाई जा सकती हैं, जिससे कि जो वस्तुएं हिलाई नहीं जा सकती हैं, वे बनी रहें। [28]अत: जब हमें ऐसा राज्य मिलने पर है जो अटल है तो आओ, हम कृतज्ञ होकर आदर और भय सहित परमेश्वर की ऐसी उपासना करें जो उसे ग्रहणयोग्य हो, [29]क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग है।

ग्रहणयोग्य सेवा

13 भाईचारे का प्रेम बना रहे। [2]अतिथि-सत्कार करना न भूलो, क्योंकि इसके द्वारा कुछ लोगों ने अनजाने में ही स्वर्गदूतों का आदर-सत्कार किया है। [3]बन्दियों की ऐसी सुधि लो जैसे तुम भी उनके साथ बन्दी हो, और उनकी भी सुधि लो जिनके साथ दुर्व्यवहार होता है, क्योंकि तुम्हारी भी देह है। [4]विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, तथा *विवाह-बिछौना निष्कलंक रहे, क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा। [5]तुम्हारा जीवन धन-लोलुपता से मुक्त हो। जो तुम्हारे पास है

22 *या, स्वर्गदूतों के उत्सव सम्मेलन...के समीप

4 *अक्षरश:, विवाह शैय्या

प्रिय भाइयो, धोखा न खाओ। [17]प्रत्येक अच्छी वस्तु और हर एक उत्तम दान तो ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जो कभी बदलता नहीं और न छाया के समान परिवर्तनशील है। [18]उसने अपनी ही इच्छा से सत्य के वचन के द्वारा हमें जन्म दिया जिस से हम उसके सृजे गए प्राणियों में मानो प्रथम फल हों।

सुनना और करना

[19]हे मेरे प्रिय भाइयो, यह तो तुम जानते ही हो। अत: प्रत्येक व्यक्ति सुनने के लिए तो तत्पर, बोलने में धीरजवन्त, और क्रोध करने में धीमा हो। [20]क्योंकि मनुष्य का क्रोध परमेश्वर की धार्मिकता का निर्वाह नहीं कर सकता। [21]इसलिए सारी मलिनता तथा समस्त दुष्टता को दूर करके उस वचन को नम्रता-पूर्वक ग्रहण कर लो जो तुम में बोया गया है और जो तुम्हारे प्राणों को बचा सकता है। [22]परन्तु अपने आप को वचन पर चलने वाले प्रमाणित करो न कि केवल सुनने वाले, जो स्वयं को धोखा देते हैं। [23]यदि कोई मनुष्य वचन का सुनने वाला हो और उस पर चलने वाला न हो तो वह उस मनुष्य के समान है जो अपना प्राकृतिक मुख दर्पण में देखता है। [24]जब वह अपने आप को देखकर चला जाता है तो तुरन्त भूल जाता है कि मैं कैसा था। [25]परन्तु जो व्यक्ति स[illegible]ता की सिद्ध व्यवस्था को लगन [illegible]ा रहता है और उस पर बना [illegible] वह सुन कर भूल नहीं जाता, [illegible] कार्य करता है—इसलिए [illegible] पाएगा। [26]यदि कोई अपने [illegible] समझे और अपनी जीभ [illegible] न लगाए पर अपने हृदय [illegible] तो उसकी भक्ति व्यर्थ है। [27]हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है कि अनाथों और विधवाओं की व्यथा में उनकी सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें।

पक्षपात का पाप

2 हे मेरे भाइयो, हमारे महिमायुक्त प्रभु यीशु मसीह पर तुम्हारा विश्वास एक दूसरे के प्रति पक्षपात की भावना से न हो। [2]यदि कोई मनुष्य सोने की अंगूठी और मूल्यवान वस्त्र पहिने तुम्हारी आराधना-सभा में आए, उसमें एक निर्धन भी मैले-कुचैले कपड़े पहिने चला आए, [3]और तुम उस मूल्यवान वस्त्र पहिने हुए व्यक्ति की ओर विशेष ध्यान देकर कहो, "आप यहां इस अच्छी जगह पर बैठिए," और उस निर्धन से कहो, "तू वहां खड़ा हो जा या मेरे पैर के पास बैठ," [4]तो क्या तुमने आपस में भेद-भाव न किया और बुरे उद्देश्य से न्याय करने वाले न ठहरे? [5]हे मेरे प्रिय भाइयो, सुनो। क्या परमेश्वर ने इस संसार के निर्धनों को विश्वास में धनी और उस राज्य के उत्तराधिकारी होने के लिए नहीं चुना जिसकी प्रतिज्ञा उसने अपने प्रेम करने वालों से की है? [6]इस प्रकार तुमने उस निर्धन का अपमान किया। क्या ये धनी ही तुम पर अत्याचार करके तुम्हें कचहरियों में घसीट कर नहीं ले जाते? [7]क्या वे उस उत्तम नाम की निन्दा नहीं करते जिस नाम से तुम जाने जाते हो? [8]फिर भी, पवित्रशास्त्र के अनुसार यदि तुम उस राजकीय व्यवस्था को कि, "**तुम अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखो**[illegible] करते हो तो ठीक ही करते हो [illegible] तुम पक्षपात करते हो तो [illegible]

याकूब

याकूब की पत्री

1 परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के दास याकूब का उन बारहों गोत्रों को नमस्कार पहुंचे जो तित्तर-बित्तर होकर रहते हैं।

परीक्षाओं का महत्त्व

[2]हे मेरे भाइयो, जब तुम विभिन्न परीक्षाओं का सामना करते हो तो इसे बड़े आनन्द की बात समझो, [3]यह जानते हुए कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है, [4]पर धीरज को अपना पूरा कार्य करने दो कि तुम पूर्ण तथा सिद्ध हो जाओ, जिससे कि तुम में किसी बात की कमी न रहे।

[5]यदि तुम में से किसी को बुद्धि की कमी हो तो वह परमेश्वर से मांगे और उसे दी जाएगी, क्योंकि वह प्रत्येक को बिना उलाहना दिए उदारता से देता है। [6]पर विश्वास से मांगे और तनिक भी सन्देह न करे, क्योंकि जो सन्देह करता है वह समुद्र की लहर के समान है, जो हवा से उठती और उछलती है। [7]ऐसा मनुष्य यह आशा न रखे कि उसे परमेश्वर से कुछ प्राप्त होगा, [8]क्योंकि दुचित्ता होने के कारण वह अपनी सारी चाल में अस्थिर है।

धनी और निर्धन

[9]वरन् दीन भाई अपने उच्च पद पर गर्व करे, [10]और धनी अपनी हीन दशा पर, क्योंकि वह घास के फूल की भांति समाप्त हो जाएगा। [11]सूर्य उदय होते ही कड़ी धूप पड़ती है और घास को सुखा देती है: उसका फूल झड़ जाता है और उसकी सुन्दरता जाती रहती है। इसी प्रकार धनी भी धन के लिए परिश्रम करते हुए धूल में मिल जाएगा। [12]धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में स्थिर रहता है, क्योंकि खरा निकल कर वह जीवन के उस मुकुट को प्राप्त करेगा जिसे प्रभु ने अपने प्रेम रखने वालों को देने की प्रतिज्ञा की है। [13]कोई भी व्यक्ति परीक्षा के समय यह न कहे कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से है। क्योंकि बुरी बातों से न तो परमेश्वर की परीक्षा की जा सकती है और न वह स्वयं किसी की परीक्षा करता है। [14]परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषाओं द्वारा खिंचकर व फंसकर परीक्षा में पड़ता है। [15]जब अभिलाषा गर्भवती होती है तो पाप को जनती है, और जब पाप हो जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है। [16]मेरे

जहाज़ भी यद्यपि इतने बड़े होते हैं और तीव्र वायु द्वारा चलाए जाते हैं, फिर भी एक छोटी सी पतवार द्वारा नाविक के इच्छानुसार संचालित किए जाते हैं। [5]वैसे ही जीभ भी, यद्यपि शरीर का एक छोटा सा अंग है, फिर भी बड़ी बड़ी डींगें मारती है। देखो एक छोटी सी चिनगारी कितने बड़े वन में आग लगा देती है! [6]और जीभ भी एक अग्नि अर्थात् अधर्म का एक लोक है। हमारे अंगों में स्थित यह जीभ सारे शरीर को कलंकित करती और हमारे जीवन की गति में आग लगा देती है, और *नरक की अग्नि में जलती रहती है। [7]क्योंकि प्रत्येक जाति के पशु-पक्षी, रेंगने वाले जन्तु, और समुद्री जीव पाले जा सकते हैं तथा मानव जाति द्वारा वश में किए गए हैं, [8]पर जीभ को कोई भी, वश में नहीं कर सकता। यह एक ऐसी बुराई है जो कभी शान्त नहीं रहती तथा प्राण-नाशक विष से भरी है। [9]इसी से हम अपने प्रभु और पिता की प्रशंसा करते हैं, और इसी से हम मनुष्यों को शाप देते हैं, जो परमेश्वर की समानता में बनाए गए हैं। [10]एक ही मुंह से आशीर्वाद और शाप दोनों ही निकलते हैं। हे मेरे भाइयो, ऐसा नहीं होना चाहिए। [11]क्या सोते के एक ही मुंह से मीठा और खारा जल दोनों ही निकलते हैं? [12]हे मेरे भाइयो, क्या अंजीर के वृक्ष में जैतून, या अंगूर की लता में अंजीर लग सकते हैं? वैसे ही खारे सोते से मीठा जल नहीं निकल सकता।

स्वर्गीय ज्ञान

[13]तुम में ज्ञानवान और समझदार कौन है? जो ऐसा हो वह अपने कार्यों को अच्छे चालचलन से उस नम्रता सहित प्रकट करे जो ज्ञान से उत्पन्न होती है। [14]परन्तु यदि तुम्हारे हृदय में कटु ईर्ष्या और स्वार्थमयी आकांक्षा हो तो गर्व न करना, और न सत्य के विरोध में झूठ ही बोलना। [15]यह तो वह ज्ञान नहीं जो ऊपर से उतरता है, वरन् सांसारिक, स्वाभाविक और शैतानी है। [16]क्योंकि जहां डाह और स्वार्थमयी आकांक्षा होती है, वहां बखेड़ा तथा हर प्रकार की बुराई भी होती है। [17]पर जो ज्ञान ऊपर से आता है, वह पहिले तो पवित्र होता है, फिर मिलनसार, कोमल, विचारशील, करुणामय और अच्छे फलों से लदा हुआ, स्थिर और कपट-रहित होता है। [18]मेल-मिलाप कराने वाले उस बीज को जिसका फल धार्मिकता है मेल के साथ बोते हैं।

संसार से मित्रता

4 तुम्हारे बीच होने वाले लड़ाइयों और झगड़ों का कारण क्या है? क्या इनका कारण वे भोग-विलास नहीं जो तुम्हारे अंगों में परस्पर लड़ाई करते रहते हैं? [2]तुम लालसा तो करते हो, पर पाते नहीं—इसलिए हत्या करते हो। तुम डाह करते हो, और जब प्राप्त करने में असमर्थ होते हो तो लड़ते झगड़ते हो। तुम्हें इसलिए नहीं मिलता कि तुम मांगते नहीं। [3]तुम मांगते तो हो पर पाते नहीं, क्योंकि बुरे उद्देश्य से मांगते हो, कि अपने भोग विलास में उड़ा दो। [4]हे व्यभिचारिणियो, क्या तुम नहीं जानतीं कि संसार से मित्रता करना परमेश्वर से शत्रुता करनी है? अतः यदि कोई संसार से मित्रता रखना चाहता है तो वह अपने आप को परमेश्वर का शत्रु ...
[5]या तुम सोचते हो कि ...

6 *यूनानी, गहिन्ना

और व्यवस्था तुम्हें अपराधी ठहराती है। [10]क्योंकि जो कोई सम्पूर्ण व्यवस्था का पालन करता हो और फिर किसी एक भी बात में चूक जाए तो वह सारी व्यवस्था का दोषी ठहरता है। [11]इसलिए जिसने यह कहा, "**व्यभिचार न करना,**" उसी ने यह भी कहा है, "**हत्या न करना।**" इसलिए यदि तुमने व्यभिचार तो नहीं किया पर हत्या की तो तुम व्यवस्था का उल्लंघन करने वाले ठहरे। [12]तुम उन लोगों की भांति बोलो और काम करो जिनका न्याय स्वतन्त्रता की व्यवस्था के अनुसार होगा। [13]क्योंकि जिसने कोई दया नहीं दिखाई उसका न्याय भी बिना दया के होगा। दया, न्याय पर विजयी होती है।

विश्वास और कार्य

[14]हे मेरे भाइयो, यदि कोई कहे कि मैं विश्वास करता हूं, पर कर्म न करे, तो इस से क्या लाभ? क्या ऐसा विश्वास उसका उद्धार कर सकता है? [15]यदि किसी भाई या बहिन के पास कपड़े न हों और उन्हें प्रतिदिन के भोजन की आवश्यकता हो, [16]और तुम में से कोई उनसे कहे, "कुशल से चले जाओ, गरम और तृप्त रहो," पर उन्हें वह वस्तु न दे जो उनके शरीर के लिए आवश्यक है तो क्या लाभ? [17]वैसे ही विश्वास भी, यदि उसके साथ कार्य न हो, तो अपने आप में मृतक है। [18]परन्तु कोई कह सकता है, "तुम विश्वास करते हो और मैं कार्य करता हूं। तुम मुझे अपना विश्वास बिना कार्य के दिखाओ, और मैं अपना विश्वास तुम्हें अपने कार्यों द्वारा दिखाऊंगा।" [19]तुम्हारा विश्वास है कि परमेश्वर एक ही है तो तुम ठीक करते हो: दुष्टात्माएं भी विश्वास करती और थरथराती हैं। [20]परन्तु हे मूर्ख, क्या तू इस बात को मानने के लिए तैयार है कि कार्य के बिना विश्वास *व्यर्थ है? [21]क्या हमारा पिता इब्राहीम कार्यों द्वारा उस समय धर्मी न ठहराया गया जब उसने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर चढ़ाया? [22]अत: तुमने देखा कि विश्वास उसके कार्यों में प्रकट हो रहा था और कार्यों के परिणाम-स्वरूप उसका विश्वास सिद्ध हुआ, [23]और पवित्रशास्त्र का यह लेख पूर्ण हुआ: "**इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और यह विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना गया,**" तथा वह परमेश्वर का मित्र कहलाया। [24]अत: तुम देखते हो कि मनुष्य केवल विश्वास से नहीं वरन् कर्मों से धर्मी ठहराया जाता है। [25]वैसे ही राहाब वेश्या भी, जब उसने दूतों को अपने घर में उतारा और दूसरे मार्ग से विदा किया, तो क्या कार्यों से धर्मी न ठहरी? [26]अत: जैसे शरीर आत्मा के बिना मृतक है, ठीक वैसे ही विश्वास भी कार्य बिना मृतक है।

जीभ एक आग

3 हे मेरे भाइयो, तुम में से बहुत शिक्षक न बनें, यह जानते हुए कि हम शिक्षक और भी कठोरतम दण्ड के भागी होंगे। [2]क्योंकि हम सब कई बातों में चूक जाते हैं। जो अपनी बातों में नहीं चूकता, वही सिद्ध मनुष्य है और सारी देह पर भी नियंत्रण रख सकता है। [3]यदि हम अपने वश में करने के लिए घोड़ों के मुंह में लगाम लगाएं तो हम उनके सारे शरीर को भी नियंत्रण में रख सकते हैं। [4]देखो,

* प्राचीन हस्तलेखों में, मृत

[6]तुमने धर्मी मनुष्य को अपराधी ठहरा कर मार डाला, वह तुम्हारा प्रतिरोध नहीं करता।

धैर्य

[7]इसलिए हे भाइयो, प्रभु के आगमन तक धैर्य रखो। देखो, कृषक भूमि की मूल्यवान उपज के लिए प्रथम और अन्तिम वर्षा होने तक धैर्य बांधे ठहरा रहता है। [8]तुम भी धैर्य बांधे रहो। अपने हृदयों को दृढ़ करो, क्योंकि प्रभु का आगमन निकट है। [9]भाइयो, एक दूसरे के प्रति दोष न लगाओ, जिससे कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए। देखो, न्यायी द्वार ही पर खड़ा है। [10]भाइयो, यातना और धैर्य के लिए भविष्यद्वक्ताओं को आदर्श समझो, जिन्होंने प्रभु के नाम से बातें की थीं। [11]देखो, धैर्य रखने वालों को हम धन्य समझते हैं। तुमने अय्यूब के धैर्य के विषय में तो सुना ही है, और प्रभु के व्यवहार के परिणाम को देखा है कि प्रभु अत्यन्त करुणामय और दयालु है।

[12]पर मेरे भाइयो, सब से श्रेष्ठ बात यह है कि तुम शपथ न खाना, न तो स्वर्ग की और न पृथ्वी की और न किसी और वस्तु की। पर तुम्हारी बातें हां की हां और नहीं की नहीं हों, जिससे कि तुम दण्ड के योग्य न ठहरो।

विश्वासपूर्ण प्रार्थना

[13]क्या तुम में से कोई दुखी है? तो वह प्रार्थना करे। क्या कोई प्रसन्न है? तो वह स्तुति के भजन गाए। [14]क्या तुम में कोई रोगी है? यदि है तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए और वे उस पर तेल मल कर प्रभु के नाम से उसके लिए प्रार्थना करें, [15]और विश्वासपूर्ण प्रार्थना के द्वारा रोगी चंगा हो जाएगा और प्रभु उसे उठा खड़ा करेगा; और यदि उसने पाप किए हों तो वे भी क्षमा कर दिए जाएंगे। [16]इसलिए तुम परस्पर अपने पापों को मान लो और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिससे कि चंगाई प्राप्त हो। धर्मीजन की प्रभाव-शाली प्रार्थना से बहुत कुछ हो सकता है। [17]एलिय्याह भी हमारे ही जैसे स्वभाव का मनुष्य था; और उसने वर्षा न होने के लिए गिड़गिड़ा कर प्रार्थना की; और साढ़े तीन वर्षों तक धरती पर वर्षा न हुई। [18]उसने फिर प्रार्थना की, और आकाश से भारी वर्षा हुई, और भूमि ने अपनी उपज दी।

[19]मेरे भाइयो, यदि तुम में से कोई सत्य से भटक जाए और कोई उसको फेर लाए, [20]तो वह यह जान ले कि जो कोई भटके हुए पापी को फेर लाएगा, वह उस के प्राण को मृत्यु से बचाएगा और अनेक पापों पर पर्दा डालेगा।

ही यह कहता है: *"उस आत्मा को जिसे परमेश्वर ने हमारे भीतर निवास करने के लिए बनाया है, क्या वह उसकी बड़ी ईर्ष्या से कामना नहीं करता?" [6]वरन् वह और भी अधिक अनुग्रह देता है। इसलिए कहता है, "**परमेश्वर घमण्डियों का विरोध करता पर दीन लोगों पर अनुग्रह करता है।**" [7]इसलिए परमेश्वर के आधीन हो जाओ। शैतान का सामना करो तो वह तुम्हारे पास से भाग जाएगा। [8]परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा। हे पापियो, अपने हाथ शुद्ध करो। और हे दुचित्तो, अपने हृदयों को पवित्र करो। [9]शोकित होओ, विलाप करो और रोओ। तुम्हारी हंसी आंसुओं में, और तुम्हारा हर्ष, विषाद में बदल जाए। [10]प्रभु के सामने दीन बनो तो वह तुम्हें प्रतिष्ठित करेगा।

[11]हे भाइयो, एक दूसरे के विरोध में न बोलो। जो अपने भाई के विरुद्ध बोलता या उस पर दोष लगाता है, वह व्यवस्था के विरुद्ध बोलता है और व्यवस्था पर दोष लगाता है। पर यदि तुम व्यवस्था पर दोष लगाते हो तो तुम उस पर चलने वाले नहीं वरन् उसके न्यायी ठहरे। [12]व्यवस्था का देने वाला और न्यायी तो एक ही है, जो बचाने अथवा नाश करने की सामर्थ रखता है। पर तुम कौन होते हो जो अपने पड़ोसी पर दोष लगाते हो?

भविष्य की चिन्ता

[13]सुनो, तुम जो यह कहते हो, 'आओ, हम आज या कल अमुक नगर में जाकर वहां एक वर्ष बिताएंगे और व्यापार करके लाभ उठाएंगे,' [14]फिर भी यह नहीं जानते कि *कल तुम्हारे जीवन का क्या होगा। तुम तो भाप के समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती और फिर अदृश हो जाती है। [15]पर इसके विपरीत तुम्हें यह कहना चाहिए, 'यदि प्रभु की इच्छा हो तो हम जीवित रहेंगे और यह अथवा वह काम भी करेंगे।' [16]पर अब तुम अपनी धृष्टता पर डींग मारते हो, और ऐसी डींगें मारना बुरा है। [17]इसलिए जो कोई उचित काम करना जानता है और नहीं करता, उसके लिए यह पाप है।

धनवानों को चेतावनी

5 हे धनवानो, सुनो, तुम अपने ऊपर आने वाली विपत्तियों पर चिल्ला-चिल्ला कर रोओ। [2]तुम्हारा धन बिगड़ गया है और तुम्हारे वस्त्रों को कीड़े खा गए हैं। [3]तुम्हारे सोना-चान्दी में जंग लग गया है, और उनका जंग तुम्हारे विरुद्ध गवाही देगा और अग्नि की भांति तुम्हारा मांस खा जाएगा। तुमने अन्तिम दिनों में धन-संचय किया है। [4]देखो! जिन मज़दूरों ने तुम्हारे खेतों को काटा और जिनकी मज़दूरी को तुमने रोक रखा है, उनकी वह मज़दूरी तुम्हारे विरुद्ध चिल्ला रही है, और फसल काटने वालों की चिल्लाहट सेनाओं के प्रभु के कानों तक पहुंच गई है। [5]तुमने पृथ्वी पर विलासपूर्ण जीवन व्यतीत किया और तुम अत्यधिक भोग-विलास में लगे रहे; तुमने अपने हृदय को पाल-पोस कर वध के दिन के लिए मोटा-ताज़ा किया है।

---

*या, जिस आत्मा को परमेश्वर ने हमारे भीतर बसाया, उसकी ईर्ष्यालु प्रवृत्ति है, या, वह आत्मा जिसे परमेश्वर ने बसाया बड़ी ईर्ष्या से कामना करता है 14 *या, कल क्या होगा। तुम्हारा जीवन क्या है?...

[12]उन पर यह प्रकट किया गया कि वे इन बातों में अपनी नहीं परन्तु तुम्हारी सेवा करते थे, जिन बातों का समाचार अब तुम्हें उन लोगों द्वारा मिला, जिन्होंने स्वर्ग से भेजे गए पवित्र आत्मा की प्रेरणा से तुम्हें सुसमाचार सुनाया। स्वर्गदूत भी इन बातों को देखने की बड़ी लालसा करते हैं।

पवित्रता की बुलाहट

[13]अतः कार्य करने के लिए अपनी बुद्धि की कमर कस कर आत्मा में संयमित हो जाओ। अपनी पूरी आशा उस अनुग्रह पर रखो जो तुम्हें यीशु मसीह के प्रकट होने पर दिया जाने वाला है। [14]आज्ञाकारी बच्चे के सदृश अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के अनुसार आचरण न करो। [15]परन्तु जैसे तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी समस्त आचरण में पवित्र बनो, [16]क्योंकि यह लिखा है, **"तुम पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।"** [17]पर जबकि तुम 'हे पिता' कहकर उस से प्रार्थना करते हो जो बिना पक्षपात के, प्रत्येक का न्याय उसके कामों के अनुसार करता है, तो तुम *पृथ्वी पर रहने का अपना समय भय सहित व्यतीत भी करो। [18]क्योंकि तुम जानते हो कि उस निकम्मे चाल-चलन से जो तुम्हें अपने पूर्वजों से प्राप्त हुआ, तुम्हारा छुटकारा सोने या चांदी जैसी नाशवान वस्तुओं से नहीं, [19]परन्तु निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने, अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ है। [20]वह तो सृष्टि की उत्पत्ति से पहिले ही जाना गया था, परन्तु तुम्हारे लिए इन अन्तिम दिनों में प्रकट हुआ। [21]तुम उसके द्वारा परमेश्वर में विश्वासी हो। परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जिलाया और महिमा दी—इसलिए तुम्हारा विश्वास और आशा परमेश्वर पर है।

[22]जबकि तुमने भाईचारे के निष्कपट प्रेम के लिए सत्य का पालन करके अपनी आत्माओं को पवित्र किया है तो *हृदय की सच्ची लगन के साथ एक दूसरे से प्रेम करो, [23]क्योंकि तुमने नाशमान नहीं वरन् अविनाशी बीज से, अर्थात् परमेश्वर के जीवित तथा अटल वचन द्वारा, नया जन्म प्राप्त किया है। [24]क्योंकि, **"सब प्राणी घास के सदृश हैं, और उनकी सारी शोभा घास के फूल के सदृश है। घास सूख जाती है, और फूल झड़ जाता है, [25]परन्तु प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहता है।"** और यही वचन है जिसका तुम्हें सुसमाचार सुनाया गया था।

2 इसलिए सब प्रकार का बैर-भाव, छल और पाखण्ड, द्वेष और हर प्रकार की निन्दा को दूर रख कर, [2]नवजात शिशुओं के समान शुद्ध आत्मिक दूध के लिए लालायित रहो, जिससे कि तुम उद्धार में बढ़ते जाओ, [3]क्योंकि तुमने प्रभु की कृपा का स्वाद चख लिया है।

जीवित पत्थर और चुनी प्रजा

[4]अब उस जीवित पत्थर के पास आकर जिसे मनुष्यों ने तो ठुकरा दिया था, परन्तु जो परमेश्वर की दृष्टि में चुना हुआ और मूल्यवान है, [5]तुम भी जीवित पत्थरों के समान एक आत्मिक भवन बनते *जाते हो, जिस से पुरोहितों का एक पवित्र समाज बन कर ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर

17 *अक्षरशः, परदेशी की भाँति रहने 22 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में: शुद्ध हृदय की 5 *या, जाओ

१ पतरस

पतरस की पहिली पत्री

1 यीशु मसीह के प्रेरित, पतरस की ओर से, तुम परदेशियों के नाम जो पुन्तुस, गलातियां, कप्पदुकिया, एशिया और बिथुनिया में तित्तर-बित्तर होकर रह रहे हो, [2]और पिता परमेश्वर के पूर्व-ज्ञान के अनुसार तथा आत्मा के पवित्र करने के द्वारा यीशु मसीह की आज्ञा पालन करने और उसके लहू से छिड़के जाने के लिए चुने गए हो:

तुम्हें अनुग्रह और शान्ति बहुतायत से मिले।

एक जीवित आशा

[3]हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर की स्तुति हो, जिसने यीशु मसीह के मृतकों में से जिला उठाने के द्वारा, अपनी अपार दया के अनुसार, एक जीवित आशा के लिए हमें नया जन्म दिया, [4]कि उस उत्तराधिकार को प्राप्त करें जो अविनाशी, निष्कलंक और अमिट है और तुम्हारे लिए स्वर्ग में सुरक्षित है। [5]तुम्हारी रक्षा परमेश्वर की सामर्थ के विश्वास से उस उद्धार के लिए की जो अन्तिम समय में प्रकट होने [6]इससे तुम अति आनन्दित होते हो, भले ही तुम्हें अभी कुछ समय के लिए विभिन्न परीक्षाओं के द्वारा दुख उठाना पड़ा हो [7]कि तुम्हारा विश्वास —जो आग में ताए हुए नश्वर सोने से भी अधिक बहुमूल्य है—परखा जाकर यीशु मसीह के प्रकट होने पर प्रशंसा, महिमा, और आदर का कारण ठहरे। [8]तुमने तो उसे नहीं देखा, तौभी तुम उस से प्रेम करते हो। और यद्यपि तुम उसे अभी भी नहीं देखते, फिर भी उस पर विश्वास करते हो और ऐसे आनन्द से आनन्दित होते हो जो वर्णन से बाहर और महिमा से परिपूर्ण है, [9]और अपने विश्वास के प्रतिफल-स्वरूप अपनी आत्माओं का उद्धार प्राप्त करते हो।

[10]इसी उद्धार के विषय उन नबियों ने सावधानीपूर्वक खोजबीन और जांच-पड़ताल की, जिन्होंने उस अनुग्रह की जो तुम पर होने वाला था, भविष्यद्वाणी की थी। [11]वे इस बात की खोज में लगे हुए थे कि मसीह का आत्मा, जो हम में विद्यमान है और जिसने मसीह के दुखों व उसके पश्चात् होने वाली महिमा की भविष्यद्वाणी की है, वह किस व्यक्ति या किस समय की ओर संकेत कर रहा है।

न्याय करता है। [24]उसने स्वयं अपनी ही देह में क्रूस पर हमारे पापों को उठा लिया, जिस से हम पाप के लिए मरें और धार्मिकता के लिए जीवन व्यतीत करें, क्योंकि उसके घावों से तुम स्वस्थ हुए हो। [25]तुम तो भेड़ों की भांति भटक रहे थे, परन्तु अब अपनी आत्मा के चरवाहे और *अध्यक्ष के पास लौट आए हो।

मसीही दम्पति

3 इसी प्रकार हे पत्नियो, अपने अपने पति के आधीन रहो जिस से यदि उनमें से कुछ वचन का पालन न करते हों, [2]तो वे तुम्हारे पवित्र और सम्माननीय चाल-चलन को ध्यानपूर्वक देखकर वचन बिना ही अपनी अपनी पत्नियों के व्यवहार से जीते जाएं। [3]तुम्हारा श्रृंगार केवल दिखावटी न हो, जैसे बालों को गूंथना, सोने के आभूषण, और विभिन्न प्रकार के वस्त्र पहिनना, [4]वरन् यह तुम्हारा आंतरिक व्यक्तित्व हो, जो नम्र और शान्त मन वाले अविनाशी आभूषणों से सुसज्जित हो, जिसका परमेश्वर की दृष्टि में बड़ा मूल्य है। [5]क्योंकि पूर्वकाल में पवित्र स्त्रियां भी जो परमेश्वर में आशा रखती थीं अपने अपने पति के आधीन रहकर अपने को इसी रीति से सजाती-संवारती थीं। [6]इस प्रकार सारा, इब्राहीम को स्वामी कहकर उसके आधीन रहती थी। यदि तुम भी बिना भयभीत हुए वही करो जो उचित है तो उसकी बेटियां ठहरोगी।

[7]इसी प्रकार, हे पतियो, तुम में से प्रत्येक अपनी पत्नी के साथ समझदारी से रहे, उसे निर्बल पात्र जाने, क्योंकि वह स्त्री है। वह जीवन के अनुग्रह में उसे संगी वारिस जानकर उसका आदर करे, जिस से तुम्हारी प्रार्थना में बाधा न पहुँचे।

भलाई के कारण कष्ट

[8]अन्ततः सब के सब एक मन, कृपालु, भाइयों से प्रेम करने वाले, दयालु और नम्र बनो। [9]बुराई का बदला बुराई से न दो, न गाली के बदले गाली दो, पर आशिष ही दो, क्योंकि तुम इसी अभिप्राय से बुलाए गए हो कि उत्तराधिकार में आशिष प्राप्त करो। [10]क्योंकि, **"जो जीवन की इच्छा रखता है, और अच्छे दिन देखना चाहता है, वह अपनी जीभ को दुष्टता की बातों से, और अपने होठों को छल की बातों से रोके रहे। [11]वह दुष्टता से फिर कर भलाई करे, और शान्ति को ढूंढ़ कर उसका पीछा करे। [12]क्योंकि प्रभु की आंखें धार्मियों की ओर लगी रहती हैं और कान उनकी प्रार्थनाओं की ओर लगे रहते हैं। परन्तु प्रभु का मुंह उनके विरुद्ध रहता है जो दुष्टता का कार्य करते हैं।"**

[13]यदि तुम अपने आप को भलाई के लिए उत्साही प्रमाणित करो तो तुम्हें हानि पहुँचाने वाला कौन है? [14]फिर भी यदि धार्मिकता के लिए कष्ट सहो तो धन्य हो। ***उनकी डांट-डपट से न तो भयभीत हो और न ही दुखित हो,** [15]परन्तु मसीह को पवित्र प्रभु जानकर अपने हृदय में रखो। अपनी आशा के विषय पूछे जाने पर प्रत्येक पूछने वाले को सदैव नम्रता व श्रद्धा के साथ उत्तर देने को तत्पर रहो। [16]और अपना विवेक शुद्ध बनाए रखो जिससे कि उन बातों में जिनमें तुम्हारी निन्दा होती है, वे लोग जो मसीह में तुम्हारे अच्छे चाल-चलन को तुच्छ

---

25 *या, बिशप

14 *या, उस बात से जिससे वे डरते हैं न तो भयभीत हो, अक्षरशः, उनके भय से

को ग्रहणयोग्य हों। [6]क्योंकि पवित्रशास्त्र में लिखा है: "**देखो, मैं सिय्योन में एक चुना हुआ पत्थर, अर्थात् कोने का एक बहुमूल्य पत्थर, स्थापित करता हूं, और जो उस पर विश्वास करता है, वह कभी निराश न होगा।**" [7]अतः तुम विश्वासियों के लिए यह पत्थर बहुमूल्य है, परन्तु अविश्वासियों के लिए: "**जिस पत्थर को कारीगरों ने ठुकरा दिया था, वही कोने का पत्थर बन गया,**" [8]और, "**ठेस लगने का पत्थर तथा ठोकर खाने की चट्टान,**" क्योंकि वचन का पालन न करके वे ठोकर खाते हैं और इसी विनाश के लिए वे नियुक्त भी किए गए थे। [9]परन्तु तुम **एक चुना हुआ वंश, राजकीय याजकों का समाज, एक पवित्र प्रजा, और परमेश्वर की निज सम्पत्ति हो,** जिस से तुम उसके महान् गुणों को प्रकट करो जिसने तुम्हें अंधकार से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है। [10]एक समय तुम तो **प्रजा न थे** पर अब **परमेश्वर की प्रजा** हो। उस समय तुम पर **दया न हुई थी,** पर अब **दया हुई है।**

मसीही उत्तरदायित्व

[11]हे प्रियो, मैं तुम से आग्रह करता हूं कि अपने आप को परदेशी व यात्री जानकर उन शारीरिक वासनाओं से दूर रहो जो आत्मा के विरुद्ध युद्ध करती हैं। [12]अन्यजातियों के मध्य अपना चालचलन उत्तम बनाए रखो, जिस से वे जिन बातों में कुकर्मी कहकर तुम्हारी निन्दा करते हैं, उन्हीं बातों में तुम्हारे भले कामों को देख कर *न्याय के दिन परमेश्वर की महिमा करें।

[13]प्रभु के लिए प्रत्येक मानवीय शासनप्रबन्ध के आधीन रहो, चाहे राजा के, जो अधिकारी है, [14]या राज्यपालों के जो उसके द्वारा कुकर्मियों को दण्ड और सुकर्मियों की प्रशंसा करने के लिए भेजे जाते हैं। [15]क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यही है कि तुम भले काम करके अज्ञानता की बातें बोलने वाले मूर्ख मनुष्यों का मुंह बन्द कर दो। [16]स्वतन्त्र मनुष्यों के समान कार्य करो, पर अपनी स्वतन्त्रता को बुराई के लिए आड़ न बनाओ। परमेश्वर के दासों की भांति उसका उपयोग करो। [17]सब का आदर करो, भाइयों से प्रेम रखो, परमेश्वर का भय मानो, और राजा का सम्मान करो।

[18]हे सेवको, आदरपूर्वक अपने स्वामियों के आधीन रहो—केवल उन्हीं के नहीं जो भले और विनम्र हैं, परन्तु उनके भी जो निर्दयी हैं। [19]क्योंकि यदि कोई परमेश्वर के प्रति शुद्ध विवेक के कारण दुख उठाते हुए अन्याय को धीरज से सहता है तो वह प्रशंसा का पात्र है। [20]जब तुम पाप करते हो और तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार होता है, तब यदि तुम बड़े धैर्य से सहते हो तो इसमें प्रशंसा की क्या बात है? परन्तु उचित कार्य करके सताए जाने पर, यदि धीरज से सहते हो तो इस से परमेश्वर प्रसन्न होता है। [21]तुम इसी अभिप्राय से बुलाए गए हो, क्योंकि मसीह ने भी तुम्हारे लिए दुख सहा और तुम्हारे लिए एक आदर्श रखा कि तुम भी उसके पद-चिन्हों पर चलो। [22]**उसने न तो कोई पाप किया और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली।** [23]उसने गाली सुनते हुए गाली नहीं दी, दुख सहते हुए धमकियां नहीं दीं, पर अपने आप को उसके हाथ सौंप दिया जो धार्मिकता से

*या, भेंट करने के दिन, अर्थात् यीशु का पुनर्आगमन

तुम पर घट रही है। [13]परन्तु जैसे जैसे तुम मसीह के दुखों में सहभागी होते रहते हो, आनन्दित रहो, जिससे कि उसकी महिमा के प्रकट होते समय भी तुम आनन्द से उल्लसित हो जाओ। [14]यदि मसीह के नाम के कारण तुम्हारी निन्दा की जाती है तो तुम धन्य हो, क्योंकि महिमा का आत्मा, जो परमेश्वर का आत्मा है, तुम में वास करता है। [15]किसी भी प्रकार तुम में से कोई हत्यारा, चोर, दुष्टता का कार्य करने वाला, तथा दूसरों के कार्यों में हस्तक्षेप कर के तंग करने वाला होकर दुख न उठाए। [16]पर यदि कोई मसीही होने के कारण दुख उठाता है, तो वह लज्जित न हो, वरन् अपने इस नाम के लिए परमेश्वर की महिमा करे। [17]क्योंकि समय आ गया है कि परमेश्वर के घराने से ही न्याय का आरम्भ हो। अतः यदि न्याय का आरम्भ हम से ही होगा तो उनका क्या परिणाम होगा जिन्होंने परमेश्वर के सुसमाचार का पालन नहीं किया? [18]**यदि धर्मी व्यक्ति कठिनाई से ही उद्धार प्राप्त करेगा, तो ईश्वर-रहित और पापी मनुष्य की क्या दशा होगी?** [19]इसलिए वे भी जो परमेश्वर के इच्छानुसार दुख उठाते हैं, उचित कार्य करते हुए अपने अपने प्राण को विश्वासयोग्य सृष्टिकर्त्ता के हाथों में सौंप दें।

प्राचीनों और नवयुवकों को आदेश

5 इसलिए मैं जो तुम्हारा *सह-प्राचीन हूं, मसीह के दुखों का साक्षी हूं और उस प्रकट होने वाली महिमा का भी सहभागी हूं, मैं तुम्हारे मध्य *प्राचीनों को प्रोत्साहित करता हूं, [2]कि अपने मध्य में स्थित परमेश्वर के झुंड की रखवाली करो—और यह किसी दबाव से नहीं, पर स्वेच्छा से तथा परमेश्वर की इच्छा के अनुसार, तुच्छ कमाई के लिए नहीं वरन् उत्साहपूर्वक करो। [3]जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर प्रभुता न जताओ, परन्तु अपने झुण्ड के लिए आदर्श बनो। [4]जब प्रधान रखवाला प्रकट होगा तो तुम वह अजर महिमा का मुकुट पाओगे। [5]इसी प्रकार हे नवयुवको, तुम भी प्राचीनों के आधीन रहो और तुम सब के सब, एक दूसरे के प्रति विनम्रता धारण करो, क्योंकि **परमेश्वर अभिमानियों का तो विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है।**

[6]इसलिए परमेश्वर के सामर्थी हाथ के नीचे दीन बनो, जिससे कि वह तुम्हें उचित समय पर उन्नत करे। [7]अपनी समस्त चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि वह तुम्हारी चिन्ता करता है। [8]संयमी और सचेत रहो। तुम्हारा शत्रु शैतान गर्जने वाले सिंह की भांति इस ताक में रहता है कि किसको फाड़ खाए। [9]विश्वास में दृढ़ रहकर उसका विरोध करो, और यह जान लो कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं इसी प्रकार की यातना सह रहे हैं। [10]तुम्हारे थोड़ी देर यातना सहने के पश्चात् सारे अनुग्रह का परमेश्वर जिसने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिए बुलाया—वह स्वयं ही तुम्हें सिद्ध, दृढ़, बलवन्त और स्थिर करेगा। [11]उसी का अधिकार युगानुयुग रहे। आमीन।

अन्तिम नमस्कार

[12]मैंने *सिलवानुस के द्वारा, जिसे मैं

1 *या, प्रेसबुतिर   12 *अर्थात्, सिलास

जानते हैं, लज्जित हों। [17]क्योंकि यदि परमेश्वर की इच्छा यही हो तो उत्तम यह है कि तुम उचित काम करने के लिए दुख उठाओ, न कि अनुचित काम के लिए। [18]मसीह भी सब के पापों के लिए एक ही बार मर गया, अर्थात् अधर्मियों के लिए धर्मी, जिस से वह हमें परमेश्वर के समीप ले आए। शरीर के भाव से तो वह मारा गया, परन्तु आत्मा के भाव से जिलाया गया। [19]उसी में उसने जाकर उन बन्दी आत्माओं को सन्देश सुनाया, [20]जो एक समय आज्ञा न मानने वाले थे, अर्थात् उन दिनों में जब परमेश्वर का धैर्य ठहरा रहा और नूह का वह जहाज़ बन रहा था जिसमें कुछ ही लोग, अर्थात् आठ व्यक्ति ही, जल से सुरक्षित निकले थे। [21]यह पूर्व संकेत बपतिस्मे का है, जिसका अर्थ शरीर की गन्दगी दूर करना नहीं, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के आधीन होना है। अब तो बपतिस्मा तुम्हें यीशु मसीह के पुनरुत्थान द्वारा बचाता है। [22]वह स्वर्ग में जाकर परमेश्वर के दाहिने ओर विराजमान है, और स्वर्गदूत, अधिकारी और शक्तियां उसके आधीन कर दिए गए हैं।

मसीह का आदर्श

4 इसलिए, जबकि मसीह ने शरीर में *दुख उठाया तो तुम भी इसी अभिप्राय से हथियार धारण करो, क्योंकि जिसने शरीर में दुख उठाया है, वह पाप से छूट गया है। [2]इसलिए शरीर में अपना शेष जीवन मनुष्यों की अभिलाषाओं में नहीं, वरन् परमेश्वर के इच्छानुसार व्यतीत करो। [3]क्योंकि अतीत का जो समय तुमने विषय-भोग, कामुकता, पियक्कड़पन, रंगरेलियों, मद्यपान-गोष्ठियों तथा घृणित मूर्तिपूजाओं में गंवाकर अन्यजातियों के इच्छानुसार कार्य किया, वही पर्याप्त है। [4]इन सब बातों में उनको आश्चर्य होता है कि तुम ऐसे भारी दुराचार में अब उनका साथ नहीं देते, अतः वे तुम्हारा अपमान करते हैं। [5]परन्तु वे उसी को लेखा देंगे जो जीवितों और मृतकों का न्याय करने को तैयार है। [6]इसलिए मरे हुओं को भी सुसमाचार इस अभिप्राय से सुनाया गया कि—यद्यपि शरीर में उनका न्याय मनुष्यों के अनुसार हो—वे आत्मा में परमेश्वर के इच्छानुसार जीवित रहें।

[7]सब बातों का अन्त निकट है। अतः समझदार होकर प्रार्थना के लिए तत्पर रहो। [8]सब से बढ़कर, एक दूसरे के प्रति प्रेम में सरगर्म रहो, क्योंकि प्रेम असंख्य पापों को ढांप देता है। [9]बिना कुड़कुड़ाए एक दूसरे की पहुनाई करो। [10]जबकि प्रत्येक को एक विशेष वरदान मिला है, तो उसे परमेश्वर के विविध अनुग्रह के उत्तम भण्डारियों के समान एक दूसरे की सेवा में लगाओ। [11]जो भी उपदेश दे, वह ऐसे दे मानो परमेश्वर ही का वचन देता हो। जो सेवा करे, उस सामर्थ से करे जो परमेश्वर देता है, जिससे सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की महिमा हो। महिमा और अधिकार युगानुयुग उसी का है। आमीन।

मसीही होना — दुख उठाना

[12]हे प्रियो, यह दुख-रूपी अग्नि-परीक्षा जो तुम्हारे मध्य इसलिए आई कि तुम्हारी परख हो—इसे यह समझकर अचम्भा न करना कि कोई अनोखी घटना

*अर्थात्, मृत्यु का दुख

बातों के प्रयत्न में जब तक रहोगे, तुम कभी ठोकर न खाओगे, [11]और इसी प्रकार *हमारे प्रभु यीशु मसीह के अनन्त राज्य में प्रवेश के लिए तुम्हारा बड़ा स्वागत होगा।

पवित्रशास्त्र का स्रोत

[12]यद्यपि तुम इन बातों को पहिले से ही जानते हो तथा उस सत्य में जो तुम्हारा है स्थिर भी किए गए हो, तथापि मैं तुम्हें इनका स्मरण दिलाने के लिए सदैव तैयार रहूँगा। [13]मैं जब तक इस डेरे में हूं, यह उचित समझता हूं कि इन बातों का स्मरण दिलाकर तुम्हें उत्साहित करता रहूं। [14]क्योंकि यह जानता हूं कि मेरे डेरे के गिराए जाने का समय अति निकट है, जैसा कि हमारे प्रभु यीशु मसीह ने भी मुझ पर प्रकट कर दिया है। [15]मैं ऐसा प्रयत्न भी करूँगा कि मेरे जाने के पश्चात् तुम किसी भी समय इन बातों का स्मरण कर सको। [16]जब हमने तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के सामर्थ और आगमन का समाचार दिया, तो हमने चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों का सहारा नहीं लिया, क्योंकि हम उसके महात्म्य के आंखों देखे गवाह थे। [17]जब उसने परमेश्वर पिता से आदर और महिमा प्राप्त की, तो उसके लिए प्रतापी महिमा की ऐसी वाणी हुई: "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अति प्रसन्न हूं"—[18]और जब हम उसके साथ पवित्र पर्वत पर थे तो स्वयं हमने स्वर्ग से यही वाणी सुनी। [19]अतः नबियों का जो वचन हमारे पास है, वह और भी अधिक प्रमाणित हुआ। इस पर ध्यान देकर तुम अच्छा करोगे मानो कि यह अंधेरे में चमकता हुआ एक दीपक है, जो उस समय तक चमकता है जब तक पौ न फटे और तुम्हारे हृदय में भोर का तारा उदय न हो। [20]पर पहिले यह जान लो कि पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी व्यक्तिगत विचारधारा का विषय नहीं है, [21]क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, परन्तु लोग पवित्र आत्मा की प्रेरणा द्वारा परमेश्वर की ओर से बोलते थे।

झूठे शिक्षक

2 परन्तु उन लोगों के मध्य झूठे नबी भी उठ खड़े हुए जैसा कि तुम्हारे मध्य भी झूठे उपदेशक होंगे जो गुप्त रूप से घातक और विधर्मी शिक्षा का प्रचार करेंगे, यहां तक कि उस स्वामी को भी अस्वीकार करेंगे जिसने उन्हें मोल लिया है, और इस प्रकार वे शीघ्र ही अपने ऊपर विनाश ले आएंगे। [2]बहुत से लोग तो उनकी विषय-वासना का अनुसरण करेंगे तथा उनके कारण सत्य के मार्ग की निन्दा होगी। [3]वे लोभ में आकर झूठी बातें बनाएंगे और तुमसे अनुचित लाभ उठाएंगे। दण्ड की आज्ञा तो उन पर पहिले से ही हो चुकी है, और उनका विनाश सोया हुआ नहीं।

[4]जबकि परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को जिन्होंने पाप किया न छोड़ा, पर उन्हें *नरक में डाल दिया और न्याय के दिन के लिए अंधेरे †कुण्डों में बन्दी बना रखा है, [5]तथा उस प्राचीन जगत को भी न छोड़ा, परन्तु भक्तिहीनों के संसार पर जल-प्रलय भेजा, फिर भी धार्मिकता के प्रचारक नूह को अन्य सात व्यक्तियों सहित बचा लिया, [6]और जबकि उसने सदोम और अमोरा के नगरों को

4 *यूनानी, तारतरस †कुछ प्राचीन हस्तलेखों में, जन्जीरों में

विश्वासयोग्य भाई मानता हूं, तुम्हें प्रोत्साहित करते और इस बात की साक्षी देते हुए संक्षेप में लिखा है कि यही परमेश्वर का सच्चा अनुग्रह है। इसी में दृढ़ बने रहो। [13]*वह जो बाबुल में है और तुम्हारे साथ चुनी हुई है, तुम्हें नमस्कार कहती है, और उसके साथ मेरा पुत्र मरकुस भी। [14]प्रेम के चुम्बन से एक दूसरे को नमस्कार कहो।

तुम सब को जो मसीह में हो, शान्ति मिले।

२ पतरस

पतरस की दूसरी पत्री

1 शमौन पतरस की ओर से, जो यीशु मसीह का दास और प्रेरित है, उन लोगों के नाम जिनको हमारे *परमेश्वर, उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की धार्मिकता द्वारा हमारे ही समान बहुमूल्य विश्वास प्राप्त हुआ:

[2]परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु के पूर्णज्ञान के द्वारा तुम में अनुग्रह और शान्ति बहुतायत से बढ़ती जाए।

मसीही बुलाहट और चुनाव

[3]उसकी ईश्वरीय सामर्थ ने उसी के पूर्ण ज्ञान के द्वारा जिसने हमें अपनी महिमा और सद्भावना के अनुसार बुलाया है, वह सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें प्रदान किया है। [4]क्योंकि उसने इन्हीं के कारण हमें अपनी बहुमूल्य और उत्तम प्रतिज्ञाएं दी हैं, जिससे कि तुम उनके द्वारा उस भ्रष्ट आचरण से जो वासना के कारण संसार में है, छूट कर ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी हो जाओ। [5]इसी कारण से प्रयत्नशील होकर, अपने विश्वास में सद्गुण तथा सद्गुण में ज्ञान, [6]और ज्ञान में संयम, संयम में धीरज और धीरज में भक्ति, [7]तथा अपनी भक्ति में भ्रातृ-स्नेह, और भ्रातृ-स्नेह में प्रेम बढ़ाते जाओ। [8]क्योंकि यदि ये गुण तुम में बने रहें तथा बढ़ते जाएं तो हमारे प्रभु यीशु मसीह के पूर्ण ज्ञान में ये तुम्हें न तो अयोग्य और न निष्फल होने देंगे। [9]क्योंकि जिसमें ये गुण नहीं, वह अंधा है, अदूरदर्शी है। वह अपने पहिले के पापों से धुलकर शुद्ध होने को भूल बैठा है। [10]अतः हे भाइयो, अपने बुलाए जाने और चुने जाने की निश्चयता का और भी अधिक प्रयत्न करते जाओ, क्योंकि इन

*कुछ हस्तलेखों में लिखा है: वह कलीसिया जो

परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हो चुका है। इसी से हम जानते हैं कि हम उस में हैं: [6]जो कहता है कि मैं उस में बना रहता हूँ तो वह स्वयं भी वैसा ही चले जैसा कि वह चलता था।

[7]प्रियो, मैं तुम्हें कोई नई आज्ञा नहीं लिख रहा हूँ, परन्तु वही पुरानी आज्ञा जो आरम्भ से ही तुम्हें मिली है; यह पुरानी आज्ञा वही वचन है जो तुम सुन चुके हो। [8]फिर भी मैं तुम्हें एक नई आज्ञा लिख रहा हूँ जो उस में और तुम में सत्य है; क्योंकि अन्धकार मिटता जा रहा है और सत्य-ज्योति चमक रही है। [9]जो कोई यह कहता है कि मैं ज्योति में हूँ फिर भी अपने भाई से घृणा करता है, वह अब तक अन्धकार ही में है। [10]जो कोई अपने भाई से प्रेम करता है, वह ज्योति में बना रहता है, और उसमें कोई ठोकर का कारण नहीं। [11]परन्तु जो कोई अपने भाई से घृणा करता है, वह अन्धकार में है और अन्धकार में चलता है, और नहीं जानता कि कहां जा रहा है, क्योंकि अन्धकार ने उसकी आंखें अन्धी कर दी हैं।

[12]बच्चो, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ, क्योंकि तुम्हारे पाप उसके नाम के कारण क्षमा हुए हैं। [13]पितरो, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ, क्योंकि तुम उसको जानते हो जो आदि से है। युवको, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ, क्योंकि तुमने उस दुष्ट पर विजय पाई है। बच्चो, मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है, क्योंकि तुम पिता को जानते हो। [14]पितरो, मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है, क्योंकि तुम उसको जानते हो जो आदि से है। युवको, मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है, क्योंकि तुम बलवान हो, और परमेश्वर का वचन तुम में बना रहता है, तथा तुमने उस दुष्ट पर विजय पा ली है। [15]संसार से प्रेम न करो, और न उन वस्तुओं से जो संसार में हैं। यदि कोई संसार से प्रेम करता है तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। [16]क्योंकि वह सब जो संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, आँखों की लालसा और जीवन का अहंकार, पिता की ओर से नहीं परन्तु संसार की ओर से है। [17]संसार तथा उसकी लालसाएं भी मिटती जा रही हैं, परन्तु वह जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है सर्वदा बना रहेगा।

[18]बच्चो, यह अन्तिम घड़ी है; और जैसा तुमने सुना था कि मसीह-विरोधी आने वाला है, वैसे ही अब अनेक मसीह-विरोधी उठ खड़े हुए हैं; इसी से हम जानते हैं कि यह अन्तिम घड़ी है। [19]वे निकले तो हम ही में से, परन्तु वास्तव में हम में से नहीं थे; क्योंकि यदि वे हम में से होते तो हमारे साथ रहते; परन्तु वे निकल इसलिए गए कि यह प्रकट हो जाए कि वे सब हम में से नहीं हैं। [20]परन्तु तुम्हारा अभिषेक तो उस पवित्र से हुआ है, और तुम *सब जानते हो। [21]मैंने तुम्हें इसलिए नहीं लिखा कि तुम सत्य को नहीं जानते, वरन् इसलिए कि तुम उसे जानते हो, *क्योंकि कोई झूठ, सत्य की ओर से नहीं। [22]झूठा कौन है केवल वह जो यीशु के मसीह होने का इन्कार करता है? यही मसीह-विरोधी है, अर्थात् जो पिता और पुत्र का इन्कार करता है। [23]जो पुत्र का इन्कार करता है, उसके पास पिता नहीं; जो पुत्र को मान लेता है, उसके पास पिता भी है। [24]जहां तक तुम्हारा सम्बन्ध है, तुमने जो आरम्भ से सुना है, उसे अपने में बना रहने दो। जो कुछ तुमने आरम्भ से

20 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में, सब कुछ

21 *या, और यह कि कोई झूठ

१ यूहन्ना

यूहन्ना की पहली पत्री

1 उस जीवन के वचन के सम्बन्ध में जो आदि से था, जिसे हमने सुना, जिसे हमने अपनी आंखों से देखा, वरन् जिसे ध्यानपूर्वक देखा और हमारे हाथों ने स्पर्श किया—[2]वह जीवन प्रकट हुआ; हमने उसे देखा है और उसकी साक्षी देते हैं, और तुम्हें उस अनन्त जीवन का समाचार सुनाते हैं जो पिता के साथ था और हम पर प्रकट हुआ—[3]जिसे हमने देखा और सुना, उसी का समाचार हम तुम्हें भी सुनाते हैं, कि तुम भी हमारे साथ सहभागिता रखो; वास्तव में हमारी यह सहभागिता पिता के और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है। [4]और ये बातें हम इसलिए लिखते हैं कि हमारा आनन्द पूरा हो जाए।

[5]वह समाचार जो हमने उससे सुना है और तुमको सुनाते हैं, वह यह है, कि परमेश्वर ज्योति है और उसमें कुछ भी अन्धकार नहीं। [6]यदि हम कहें कि उसके साथ हमारी सहभागिता है फिर भी अन्धकार में चलें, तो हम झूठ बोलते हैं और सत्य पर आचरण नहीं करते; [7]परन्तु यदि हम ज्योति में चलें जैसा वह स्वयं ज्योति में है, तो हमारी सहभागिता एक दूसरे से है, और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें *सब पाप से शुद्ध करता है। [8]यदि हम कहें कि हम में पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं, और हम में सत्य नहीं है। [9]यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। [10]यदि हम कहें कि हमने पाप नहीं किया तो उसे झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं।

2 मेरे बच्चो, मैं तुम्हें ये बातें इसलिए लिख रहा हूँ कि तुम पाप न करो। परन्तु यदि कोई पाप करता है तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात् यीशु मसीह जो धर्मी है; [2]वह स्वयं हमारे पापों का प्रायश्चित है, और हमारा ही नहीं वरन् समस्त संसार के पापों का भी। [3]यदि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, तो इसी से हमें ज्ञात होता है कि हम उसे जान गए हैं। [4]जो कहता है, "मैं उसे जान गया हूँ," और उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करता, वह झूठा है, और उसमें सत्य नहीं; [5]परन्तु जो उसके वचन का पालन करता है, उसमें सचमुच

*या, प्रत्येक पाप

मृत्यु में बना रहता है। [15]प्रत्येक जो अपने भाई से घृणा करता है, वह हत्यारा है; और तुम जानते हो कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन वास नहीं करता। [16]हम प्रेम को इसी से जानते हैं, कि उसने हमारे लिए अपना प्राण दे दिया। अतः हमें भी भाइयों के लिए अपना प्राण देना चाहिए। [17]परन्तु जिस किसी के पास इस संसार की सम्पत्ति है और वह अपने भाई को आवश्यकता में देख कर भी *उसके प्रति †अपना हृदय कठोर कर लेता है तो उसमें परमेश्वर का प्रेम कैसे बना रह सकता है? [18]बच्चो, हम कथन अथवा जीभ से ही नहीं, वरन् कार्य तथा सत्य द्वारा भी प्रेम करें। [19]इसी से हम जानेंगे कि हम सत्य के हैं और हम उसके सम्मुख उन बातों में अपने हृदयों को आश्वस्त कर सकेंगे, [20]जिन बातों में हमारा हृदय हमें दोषी ठहराता है; क्योंकि परमेश्वर हमारे हृदय की अपेक्षा कहीं महान् है आर वह सब कुछ जानता है। [21]प्रियो, यदि हमारा हृदय हमें दोषी न ठहराए, तो परमेश्वर के सम्मुख हमें साहस होता है; [22]और जो कुछ हम मांगते हैं, उस से पाते हैं, क्योंकि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते और वे ही कार्य करते हैं जो उसकी दृष्टि में प्रिय हैं। [23]उसकी आज्ञा यह है कि हम उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें और एक दूसरे से ठीक वैसा ही प्रेम करें जैसी कि उसने हमें आज्ञा दी है। [24]जो उसकी आज्ञाओं का पालन करता है, वह परमेश्वर में बना रहता है, और वह उसमें। और इसी से, अर्थात् उस आत्मा से जिसे उसने हमें दिया है, हम जानते हैं कि वह हम में बना रहता है।

4

प्रियो, प्रत्येक आत्मा की प्रतीति न करो, परन्तु आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं या नहीं; क्योंकि संसार में अनेक झूठे नबी निकल पड़े हैं। [2]परमेश्वर के आत्मा को तुम इससे जान सकते हो: प्रत्येक आत्मा जो यह मानती है कि यीशु मसीह देह-धारण कर के आया है, वह परमेश्वर की ओर से है; [3]और प्रत्येक आत्मा जो यीशु को नहीं मानती वह परमेश्वर की ओर से नहीं है; यही तो मसीह-विरोधी की आत्मा है, जिसके विषय में तुम सुन चुके हो कि वह आने वाला है और अब भी संसार में है। [4]बच्चो, तुम परमेश्वर से हो और तुम उन पर विजयी हुए हो; क्योंकि वह जो तुम में है, उस से जो संसार में है, कहीं बढ़कर है। [5]वे संसार के हैं, इसलिए संसार की बातें बोलते हैं, और संसार उनकी सुनता है। [6]हम परमेश्वर से हैं; वह जो परमेश्वर को जानता है, हमारी सुनता है; और जो परमेश्वर से नहीं, हमारी नहीं सुनता। इसी से हम सत्य की आत्मा और भ्रान्ति की आत्मा को पहिचानते हैं।

[7]प्रियो, हम आपस में प्रेम करें, क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है। प्रत्येक जो प्रेम करता है, परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है और परमेश्वर को जानता है। [8]वह जो प्रेम नहीं करता परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। [9]परमेश्वर का प्रेम हम में इसी से प्रकट हुआ कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को संसार में भेज दिया कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। [10]प्रेम इस में नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, परन्तु इसमें है कि उसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के

---
17 *अक्षरशः उस से †अक्षरशः अपनी आंत

सुना है, यदि वह तुम में बना रहे तो तुम भी पुत्र में और पिता में बने रहोगे। [25]जो प्रतिज्ञा स्वयं उसने हम से की है, वह यह है, अर्थात् अनन्त जीवन। [26]मैंने ये बातें तुम्हें उन लोगों के सम्बन्ध में लिखी हैं जो तुम्हें धोखा देने का यत्न कर रहे हैं। [27]पर जहां तक तुम्हारा सम्बन्ध है, वह अभिषेक जो तुमने उस से प्राप्त किया है, तुम में बना रहता है, और तुम्हें इस बात की आवश्यकता नहीं कि कोई तुम्हें सिखाए; परन्तु जिस प्रकार उसका वह अभिषेक तुम्हें सब बातों के विषय में सिखाता है, और सत्य है और झूठ नहीं, और जैसा कि उसने तुम्हें सिखाया है, तुम उसमें बने रहो। [28]अतः हे बच्चो, उसमें बने रहो; जिस से कि जब वह प्रकट हो तो हमें साहस हो और उसके आगमन पर हमें उसके सम्मुख लज्जित न होना पड़े। [29]यदि तुम जानते हो कि वह धर्मी है तो यह भी जानते हो कि प्रत्येक जो धार्मिकता पर आचरण करता है, उस से उत्पन्न हुआ है।

3 देखो, पिता ने हमें *कैसा महान प्रेम प्रदान किया है कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं; और वही हम हैं। इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि संसार ने उसे भी नहीं जाना। [2]प्रियो, हम परमेश्वर की सन्तान हैं; और अब तक यह प्रकट नहीं हुआ कि हम क्या होंगे। पर यह जानते हैं कि जब वह प्रकट होगा तो हम उसके सदृश होंगे, क्योंकि हम उसको ठीक वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। [3]प्रत्येक जो उस पर ऐसी आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है जैसा कि वह पवित्र है। [4]प्रत्येक जो पाप करता है वह व्यवस्था का उल्लंघन करता है; क्योंकि पाप व्यवस्था का उल्लंघन है। [5]तुम जानते हो कि वह इसलिए प्रकट हुआ कि पापों को हर ले जाए; और उसमें कोई भी पाप नहीं। [6]जो उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं करता; जो पाप करता है, उसने न तो उसे देखा है और न ही उसे जानता है। [7]बच्चो, कोई तुम्हें धोखा न दे। जो धार्मिकता का आचरण करता है, वह धर्मी है, ठीक वैसा ही जैसा वह धर्मी है। [8]जो पाप *करता है वह शैतान से है, क्योंकि शैतान आरम्भ से ही पाप *करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इस अभिप्राय से प्रकट हुआ कि वह शैतान के कार्य को नष्ट करे। [9]जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप *नहीं करता, क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है; और वह पाप नहीं कर सकता, क्योंकि वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है। [10]इसी से परमेश्वर के सन्तान और शैतान के सन्तान जाने जाते हैं कि जो कोई धार्मिकता पर आचरण नहीं करता, वह परमेश्वर से नहीं, और वह भी नहीं जो अपने भाई से प्रेम नहीं करता। [11]क्योंकि जो समाचार तुमने आरम्भ से सुना, वह यह है कि हम एक दूसरे से प्रेम करें—[12]कैन के समान नहीं, जो उस दुष्ट से था, और जिसने अपने भाई की हत्या की। उसने किस कारण से उसकी हत्या की? उसके कर्म तो दुष्ट और उसके भाई के कर्म धार्मिकता के थे।

[13]भाइयो, यदि संसार तुमसे घृणा करता है तो आश्चर्य न करना। [14]हम जानते हैं कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में आ पहुंचे हैं, क्योंकि हम भाइयों से प्रेम रखते हैं। वह जो प्रेम नहीं रखता

1 *अक्षरशः, किस प्रकार का प्रेम   8 *या, करता रहता है   9 *या, करता नहीं रहता

उसे झूठा ठहराता है, क्योंकि उसने उस साक्षी पर विश्वास नहीं किया जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दी है। [11]वह साक्षी यह है कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है, और यह जीवन उसके पुत्र में है। [12]जिसके पास पुत्र है उसके पास जीवन है; जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं उसके पास वह जीवन भी नहीं।

[13]मैंने तुमको जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, ये बातें इसलिए लिखी हैं कि तुम जानो कि अनन्त जीवन तुम्हारा है। [14]और जो साहस हमें उसके सम्मुख होता है वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगें, तो वह हमारी सुनता है। [15]यदि हम जानते हैं कि जो कुछ हम उस से मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं कि जो कुछ हमने उस से मांगा वह हमें प्राप्त हो चुका है। [16]यदि कोई अपने भाई को ऐसा पाप करते देखे जिसका परिणाम मृत्यु न हो, तो वह प्रार्थना करे और परमेश्वर उसके कारण उन्हें जिन्होंने ऐसा पाप किया हो जिसका परिणाम मृत्यु नहीं है, जीवन देगा। ऐसा पाप तो है जिसका परिणाम मृत्यु है; मैं यह नहीं कहता कि वह इस बात के लिए निवेदन करे। [17]सब प्रकार की अधार्मिकता पाप है, परन्तु ऐसा पाप भी है जिसका परिणाम मृत्यु नहीं होता।

[18]हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है वह पाप नहीं करता; परन्तु *वह जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसकी रक्षा करता है और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता। [19]हम जानते हैं कि हम परमेश्वर से हैं, और सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है। [20]हम जानते हैं कि परमेश्वर का पुत्र आ चुका है; और उसने हमें समझ दी है, कि हम उसे जो सत्य है जान सकें, और हम उसमें हैं जो सत्य है, अर्थात् उसके पुत्र यीशु मसीह में। यही सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन है। [21]बच्चो, अपने आप को मूर्तियों से बचाए रखो।

२ यूहन्ना

यूहन्ना की दूसरी पत्री

मुझ प्राचीन की ओर से, उस चुनी हुई महिला तथा उसके बच्चों के नाम जिनसे मैं *सत्य में प्रेम रखता हूं; और न केवल मैं, वरन् वे सब भी जो सत्य को जानते हैं, [2]अर्थात् उस सत्य के कारण जो हम में बना रहता है, और सर्वदा हमारे साथ रहेगा:

[3]अनुग्रह, दया और शान्ति, परमेश्वर

18 *अर्थात्, प्रभु यीशु   1 *या, यथार्थ

प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा। [11]प्रियो, यदि परमेश्वर ने हमसे ऐसा प्रेम किया तो हमको भी एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए। [12]परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा; यदि हम एक दूसरे से प्रेम करें तो परमेश्वर हम में बना रहता है, और उसका प्रेम हम में सिद्ध होता है। [13]इसी से हम जानते हैं कि हम उसमें बने रहते हैं और वह हम में, क्योंकि उसने अपने आत्मा में से हमें दिया है। [14]हमने उसे देखा है, और साक्षी देते हैं कि पिता ने पुत्र को संसार का उद्धारकर्त्ता कर के भेजा। [15]जो कोई यह मान लेता है कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है तो परमेश्वर उसमें और वह परमेश्वर में बना रहता है। [16]जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, उसे हम जान गए हैं और उस पर विश्वास किया है। परमेश्वर प्रेम है; जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है, और परमेश्वर उसमें। [17]इसी से प्रेम हम में सिद्ध होता है कि न्याय के दिन हमें साहस हो; क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही हम भी संसार में हैं। [18]प्रेम में भय नहीं होता; परन्तु सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है, क्योंकि भय में दण्ड निहित है, और जो भय करता है वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ। [19]हम इसलिए प्रेम करते हैं, क्योंकि उसने पहिले हमसे प्रेम किया। [20]यदि कोई कहे, "मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूं," और अपने भाई से घृणा करे तो वह झूठा है; क्योंकि जो अपने भाई से जिसे उसने देखा है, प्रेम नहीं करता तो वह परमेश्वर से जिसे उसने नहीं देखा, *प्रेम नहीं कर सकता। [21]हमें उस से यह आज्ञा मिली है कि जो परमेश्वर से प्रेम करता है, वह अपने भाई से भी प्रेम करे।

5 जो कोई विश्वास करता है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है; और जो *पिता से प्रेम करता है, वह उस से भी प्रेम करता है जो उस से उत्पन्न हुआ है। [2]जब हम परमेश्वर से प्रेम करते और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं तो इसी से हम जानते हैं कि हम परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम करते हैं। [3]क्योंकि परमेश्वर का प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करें; और उसकी आज्ञाएं बोझिल नहीं हैं। [4]क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है; और वह विजय जिसने संसार पर जय प्राप्त की यह है—हमारा विश्वास। [5]और वह कौन है जो संसार पर विजयी होता है, सिवाय उसके जो यह विश्वास करता है कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है? [6]यह वही है जो जल और लहू के द्वारा आया, अर्थात् यीशु मसीह; केवल जल *द्वारा ही नहीं, वरन् जल और लहू *द्वारा। [7]और पवित्र आत्मा ही है जो साक्षी देता है, क्योंकि पवित्र आत्मा सत्य है। [8]साक्षी देने वाले तीन हैं; *आत्मा, जल और लहू; और इन तीनों में सहमति है। [9]यदि हम मनुष्यों की साक्षी मान लेते हैं तो परमेश्वर की साक्षी कहीं बढ़कर है; क्योंकि परमेश्वर की साक्षी यह है, कि उसने अपने पुत्र के विषय में साक्षी दी है। [10]जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है, वह स्वयं में साक्षी रखता है; वह जो परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता

20 *कुछ हस्तलेखों में, कैसे प्रेम कर सकता? 1 *अक्षरश:, उत्पन्न करने वाले से 6 *या, में, या से
8 *कुछ हस्तलेखों में, विशेषकर वल्गेट में, यह भी जोड़ा जाता है: स्वर्ग में, पिता, वचन और पवित्र आत्मा, और ये एक हैं। ये तीन पृथ्वी पर साक्षी देते हैं, अर्थात् आत्मा...

३ यूहन्ना

यूहन्ना की तीसरी पत्री

मुझ प्राचीन की ओर से प्रिय गयुस के नाम, जिस से मैं *सत्य में प्रेम रखता हूं। [2]हे प्रिय, मेरी प्रार्थना है कि जैसे तेरी आत्मा उन्नति कर रही है, वैसे ही तू सब बातों में उन्नति करे और स्वस्थ रहे। [3]क्योंकि मैं बड़ा आनन्दित *हुआ जब भाइयों ने आकर तेरे सत्य की साक्षी दी, अर्थात् यह कि तू किस प्रकार सत्य में चल रहा है। [4]*मेरे लिए इस से बढ़कर और आनन्द की बात नहीं कि यह सुनूं कि मेरे बच्चे सत्य पर चल रहे हैं।

[5]हे प्रिय, तू भाइयों के लिए जो कुछ कर रहा है उसे विश्वासयोग्यता से पूरा कर रहा है, और विशेष कर जब वे परदेशी हैं; [6]उन्होंने कलीसिया के सामने तेरे प्रेम की साक्षी दी है, और अच्छा होगा यदि तू उन्हें इस प्रकार विदा करे जैसे परमेश्वर को सोहता है। [7]क्योंकि वे उस नाम के लिए निकले हैं और गैरयहूदियों से कुछ नहीं लेते। [8]इसलिए हम ऐसे लोगों को *संभालें, जिस से कि हम भी सत्य †में सहकर्मी हों।

[9]मैंने कलीसिया को कुछ लिखा था, परन्तु दियुत्रिफेस जो उनमें प्रमुख बनने की लालसा रखता है, हमारी नहीं मानता। [10]इसलिए, यदि मैं आऊं तो उसके उन कार्यों की जो वह करता है, याद दिलाऊंगा। वह अनुचित रूप से हमारे विरुद्ध बुरी-बुरी बातें कहकर दोष लगाता है; और इतने ही से संतुष्ट नहीं, वह न तो स्वयं भाइयों को ग्रहण करता वरन् उन्हें जो ग्रहण करना चाहते हैं मना करता और कलीसिया से निकाल देता है। [11]प्रिय, बुराई का नहीं परन्तु भलाई का अनुकरण करना। जो भलाई करता है वह परमेश्वर से है; पर जो बुराई करता है उसने परमेश्वर को नहीं देखा। [12]दिमेत्रियुस के विषय सब ने, यहां तक कि सत्य ने भी, अच्छी साक्षी दी है; और हम भी साक्षी देते हैं, और तू जानता है कि हमारी साक्षी सच्ची है।

[13]मैं तुझे बहुत कुछ लिखना तो चाहता था, परन्तु स्याही और कलम से नहीं। [14]मुझे आशा है कि तुझ से शीघ्र भेंट होगी; तब हम आमने-सामने बातचीत करेंगे। तुझे शान्ति मिले। मित्रगण तुझे नमस्कार कहते हैं। वहां प्रत्येक मित्र को नाम ले लेकर नमस्कार कहना।

---

1 *या, यथार्थ   3 *या, हूं जब भाई आकर तेरे सत्य की साक्षी देते हैं
4 *अक्षरश:, इन बातों से बढ़कर मेरा कोई आनन्द नहीं कि सुनूं...   8 *या, स्वागत करें †या, के लिए

पिता और पिता के पुत्र यीशु मसीह की ओर से हमारे साथ सत्य और प्रेम में बने रहेंगे।

[4]मुझे तेरे कुछ बालकों को देखकर बड़ा आनन्द हुआ है कि वे उस आज्ञा के अनुसार जो पिता से हमें प्राप्त हुई है, सत्य पर चलते हैं। [5]अब हे महिला, मैं तुझ से निवेदन करत हुए कोई नई आज्ञा के रूप में नहीं लिखता, परन्तु वही जो आरम्भ से हमें मिली है, कि हम परस्पर प्रेम करें। [6]प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं के अनुसार चलें। यह वही आज्ञा है जिसे तुमने आरम्भ से सुना है, जिस पर तुम्हें चलना चाहिए। [7]क्योंकि संसार में बहुत से भरमाने वाले निकल पड़े हैं जो यह नहीं मानते कि यीशु मसीह देह धारण करके आया है। यही तो भरमाने वाला और मसीह-विरोधी है। [8]अपने प्रति सावधान रहो, ऐसा न हो कि जो कुछ *हमने कमाया उसे गंवा दो, वरन् यह कि तुम पूरा प्रतिफल प्राप्त करो। [9]जो कोई *बहुत दूर भटक जाता है और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं; जो उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता और पुत्र दोनों ही हैं। [10]यदि कोई तुम्हारे पास आए और यही शिक्षा न दे, तो न उसे अपने घर में आने दो और न नमस्कार करो; [11]क्योंकि जो ऐसे मनुष्य को नमस्कार करता है, वह उसके कुकर्मों में सहभागी होता है।

[12]मुझे बहुत सी बातें तुम्हें लिखनी हैं, पर कागज़ और स्याही से लिखना नहीं चाहता; परन्तु मुझे आशा है कि मैं तुम्हारे पास आकर आमने-सामने बातें करूंगा, जिस से कि *तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए। [13]तेरी चुनी हुई बहिन के बच्चे तुझे नमस्कार कहते हैं।

---

*कुछ हस्तलेखों में, तुमने

9 *अक्षरशः, आगे जाता

12 *कुछ हस्तलेखों में, हमारा

भाँति जिन बातों को स्वभाव ही से जानते हैं, उन्हीं के द्वारा नाश हो जाते हैं। [11]उन्हें धिक्कार है! क्योंकि उन्होंने कैन का अनुसरण किया, और मज़दूरी के लिए बिना विचारे बिलाम की सी भूल कर बैठे, और कोरह के समान विद्रोह करके नाश हो गए।

[12]ये मनुष्य *समुद्र तल की छिपी चट्टान हैं, जो तुम्हारे प्रीति-भोजों में तुम्हारे साथ निधड़क खाते-पीते हैं, केवल अपना ही ध्यान रखते हैं, निर्जल बादल हैं जिन्हें हवा उड़ा ले जाती है, पतझड़ के फलहीन वृक्ष हैं जो दो बार सूख चुके और जड़ से उखड़ गए हैं, [13]समुद्र की प्रचण्ड लहरें हैं जो फेन के समान अपनी लज्जा उछालते हैं, डंवाडोल तारे हैं जिनके लिए घोर अंधकार सदा के लिए ठहराया गया है।

[14]हनोक ने भी, जो आदम से सातवीं पीढ़ी में था, इनके विषय में यह नबूवत की: "देखो, प्रभु अपने लाखों पवित्र जनों के साथ आया, [15]कि सब का न्याय करे, और सब भक्तिहीनों को उनके सब अभक्ति के काम जो उन्होंने भक्तिहीन होकर किए, और उन सब कठोर बातों के विषय में जो भक्तिहीन पापियों ने उसके विरोध में कही हैं, दोषी ठहराए।" [16]ये कुड़कुड़ाने वाले, दोष ढूंढ़ने वाले, अपनी वासनाओं के अनुसार चलने वाले, घमण्ड भरी बातें करने वाले और अपने लाभ के लिए लोगों की चापलूसी करने वाले लोग हैं।

प्रयत्नशील बने रहो

[17]पर हे प्रियो, तुम उन बातों को अवश्य स्मरण रखो जिन्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेरित पहिले ही से कह चुके हैं। [18]वे तुम से कहा करते थे, "अन्त के दिनों में ऐसे ठट्ठा करने वाले होंगे जो अपनी अभक्तिपूर्ण बुरी अभिलाषाओं के चलाए चलेंगे।" [19]ये वे हैं जो फूट डालते, सांसारिक एवं आत्मारहित हैं।

[20]पर हे प्रियो, तुम अपने अति पवित्र विश्वास में गठकर, पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए, [21]अपने आपको परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखो, और अनन्त जीवन के लिए उत्सुकता से हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया की बाट जोहते रहो। [22]जो सन्देह करते हैं *उन पर दया करो, [23]औरों को आग में से झपट कर निकालो, और डरते हुए अन्य लोगों पर दया करो, यहाँ तक कि शरीर द्वारा कलंकित वस्त्रों से भी घृणा करो।

आशीर्वचन

[24]अब जो ठोकर खाने से तुम्हारी रक्षा कर सकता है, और अपनी महिमा की उपस्थिति में तुम्हें निर्दोष और आनन्दित करके खड़ा कर सकता है। [25]उस अद्वैत परमेश्वर हमारे उद्धारकर्ता की महिमा, गौरव, पराक्रम एवं अधिकार, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जैसा सनातन काल से है, अब भी हो और युगानुयुग रहे। आमीन।

---

12 *या, धब्बे हैं 22 *कुछ हस्तलेखों में, उनको समझाओ

यहूदा

यहूदा की पत्री

यीशु मसीह के दास और याकूब के भाई, *यहूदा की ओर से उन बुलाए हुओं के नाम जो परमेश्वर पिता में प्रिय तथा यीशु मसीह के लिए सुरक्षित हैं:

[2]तुम्हें दया, शान्ति और प्रेम बहुतायत से प्राप्त होता रहे।

अभक्तों का पाप और दण्ड

[3]हे प्रियो, जब मैं उस उद्धार के विषय तुम्हें लिखने का हर संभव प्रयत्न कर रहा था जिसमें हम सब सहभागी हैं, तो मैंने यह लिखना और अनुरोध करना आवश्यक समझा कि तुम उस विश्वास के लिए यत्नपूर्वक संघर्ष करते रहो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सदा के लिए सौंपा गया था। [4]क्योंकि कितने ऐस मनुष्य चुपके से आ घुसे हैं जो बहुत पहिले से अपराध के दोषी *ठहराए जा चुके हैं। वे अधर्मी हैं, जो परमेश्वर के अनुग्रह को लुचपन में बदल डालते हैं और हमारे अद्वैत स्वामी और प्रभु अर्थात् यीशु मसीह को अस्वीकार करते हैं।

[5]अब मैं तुम्हें याद दिलाना चाहता हूं, यद्यपि तुम सब बातों को पहिले ही से जानते हो, कि *प्रभु ने मिस्र से एक कुल को बचाने के पश्चात् उनको जिन्होंने विश्वास नहीं किया किस प्रकार नाश कर दिया, [6]और जिन स्वर्गदूतों ने अपने पद को स्थिर न रखकर अपने निज निवास को छोड़ दिया, उसने उनको अनन्त बन्धनों में जकड़ कर उस भीषण दिन के न्याय के लिए अन्धकार में रखा है। [7]जिस रीति से सदोम और अमोरा और उनके आस-पास के नगर, जो इनके समान ही घोर अनैतिकता में लीन होकर पराए शरीर के पीछे लग गए थे, वे कभी न बुझने वाली अग्नि के दण्ड में पड़ कर उदाहरण-स्वरूप ठहरे हैं।

[8]फिर भी, ये स्वप्नदर्शी, उसी प्रकार शरीर को अशुद्ध करते, प्रभुता को तुच्छ जानते और *स्वर्गदूतों की निन्दा करते हैं। [9]परन्तु प्रधान स्वर्गदूत मीकाईल ने, जब मूसा के शव के विषय में शैतान से वाद-विवाद किया, तो अपमान-जनक शब्दों का प्रयोग करने का दु:साहस न किया, पर कहा, "प्रभु तुझे डांटे।" [10]पर ये लोग जिन बातों को नहीं समझते उनकी निन्दा करते हैं, और अविवेकी पशुओं की

---

1 *यूनानी, इकूदास   4 *या, होने के विषय में लिखे गए हैं

5 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में, यीशु   8 *अक्षरश:, महिमामय (प्राणियों)

है, उसे पुस्तक में लिख और सातों कलीसियाओं अर्थात् इफिसुस, स्मुरना, पिरगमुन, थूआतीरा, सरदीस, फिलादेलफिया और लौदीकिया को भेज दे।

[12]तब मैं *उसे, जो मुझ से बोल रहा था, देखने को मुड़ा और फिरकर मैंने सोने के सात दीपदान देखे, [13]और उन दीपदानों के मध्य मनुष्य के पुत्र सदृश एक पुरुष को देखा जो पैरों तक चोगा पहिने और छाती पर एक सुनहरा पट्टा बांधे हुए था। [14]उसका सिर तथा बाल ऊन सदृश श्वेत तथा हिम के समान उज्ज्वल थे और उसकी आंखें आग की ज्वाला के सदृश थीं। [15]उसके पैर ऐसे चमकदार पीतल के समान थे जो भट्ठी में तपाकर चमकाया गया हो। उसकी वाणी महाजलनाद जैसी थी। [16]वह दाहिने हाथ में सात तारे लिए था, और उसके मुख से दोधारी तेज़ तलवार निकलती थी। उसका मुख-मण्डल मध्यान्ह के सूर्य के सदृश दमक रहा था।

[17]जब मैंने उसे देखा तो मृतक के समान उसके पैरों पर गिर पड़ा। तब उसने अपना दाहिना हाथ मुझ पर रखा और कहा, "भयभीत न हो; मैं ही प्रथम, अन्तिम और जीवित हूं; [18]मैं मर गया था और देख, मैं युगानुयुग जीवित हूं। मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां मेरे पास हैं। [19]इसलिए जो बातें तू ने देखी हैं, जो बातें हो रही हैं और जो बातें इनके पश्चात् होनेवाली हैं, उन्हें लिख ले। [20]उन सात तारों का रहस्य जो तू ने मेरे दाहिने हाथ में देखे और सात स्वर्ण दीपदानों का रहस्य यह है: सात तारे, सात कलीसियाओं के दूत हैं, और वे सात दीपदान सात कलीसियाएं हैं।

12 *अक्षरशः, उस आवाज़ को

इफिसुस की कलीसिया

2 [1]"इफिसुस की कलीसिया के दूत को यह लिख:

वह जो अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिए है और वह जो सात स्वर्ण दीपदानों के मध्य चलता-फिरता है, यह कहता है: [2]'मैं तेरे कार्यों, परिश्रम और धैर्य को जानता हूं, और यह भी कि तू दुष्ट लोगों की सहन नहीं कर सकता और जो अपने आप को प्रेरित कहते हैं पर हैं नहीं, तू ने उन्हें परखा और झूठा पाया है। [3]तुझ में धैर्य है और तू मेरे नाम के कारण दुख उठाते-उठाते थका नहीं। [4]पर मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है कि तूने अपना पहिला सा प्रेम छोड़ दिया है। [5]इसलिए स्मरण कर कि तू कहां से गिरा है और मन फिरा और पहिले के समान कार्य कर—अन्यथा मैं तेरे पास आता हूं और यदि तू मन न फिराए तो तेरे दीपदान को उसके स्थान से हटा दूंगा। [6]पर इतना अवश्य है कि तू नीकुलइयों के कार्यों से घृणा करता है जिनसे मैं भी घृणा करता हूं। [7]जिस के कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है। जो जय पाए उसे मैं जीवन के वृक्ष में से जो परमेश्वर के *स्वर्ग में है खाने को दूंगा।'

स्मुरना की कलीसिया

[8]"स्मुरना की कलीसिया के दूत को लिख:

जो प्रथम तथा अन्तिम है, जो मर गया था, और अब जी उठा है, यह कहता है: [9]'मैं तेरे क्लेश और दरिद्रता को जानता हूं—पर तू धनवान है—तथा उनकी ईश-निन्दा को भी जानता हूं जो अपने

7 *यूनानी, परादीस (फिरदौस)

प्रकाशितवाक्य

यूहन्ना का प्रकाशितवाक्य

प्राक्कथन

1 यीशु मसीह का प्रकाशन, जिसे परमेश्वर ने उसे इसलिए दिया कि अपने दासों को वे बातें दिखाए जो शीघ्र होनेवाली हैं। उसने अपना स्वर्गदूत भेजकर इन्हें अपने दास यूहन्ना को बताया, [2]जिसने परमेश्वर के वचन और यीशु मसीह की गवाही दी, अर्थात् उन सारी बातों की भी जिन्हें उसने देखीं। [3]धन्य है वह जो इस नबूवत के वचनों को पढ़ता है, और धन्य हैं वे जो सुनते हैं तथा इसमें लिखी हुई बातों का पालन करते हैं, क्योंकि समय निकट है।

आशीर्वाद

[4]यूहन्ना की ओर से उन सात कलीसियाओं के नाम जो एशिया में हैं, उसकी ओर से जो है, जो था और जो आनेवाला है, तथा *उन सात आत्माओं की ओर से जो उसके सिंहासन के समक्ष हैं; [5]और यीशु मसीह की ओर से जो विश्वासयोग्य साक्षी, मृतकों में से जी उठने वालों में पहिलौठा, और पृथ्वी के राजाओं का शासक है, तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। जो हम से प्रेम रखता है और जिसने अपनें लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया, [6]और हमें एक राज्य तथा अपने पिता परमेश्वर के लिए याजक बनाया, उसकी महिमा तथा सामर्थ युगानुयुग हो। आमीन। [7]**देखो, वह बादलों के साथ आने वाला है, हर एक आंख उसे देखेगी, वरन् वे भी देखेंगे जिन्होंने उसे बेधा था, और पृथ्वी के समस्त कुल उसके कारण विलाप करेंगे।** हां, आमीन।

[8]प्रभु परमेश्वर, जो है, जो था, जो आनेवाला है और जो सर्वशक्तिमान है, यह कहता है, "मैं ही अलफा और ओमेगा हूं।"

यूहन्ना को मसीह का दर्शन

[9]मैं यूहन्ना, जो तुम्हारा भाई और यीशु के कारण क्लेश, राज्य और धीरज में तुम्हारा सहभागी हूँ, परमेश्वर के वचन और यीशु की गवाही के कारण पतमुस नामक द्वीप में था। [10]मैं प्रभु के दिन आत्मा में आ गया और मैंने अपने पीछे तुरही की ध्वनि-सा एक बड़ा शब्द यह कहते सुना, [11]कि जो कुछ तू देखता

*या, उस सातगुनी आत्मा (प्रक 3:1; 4:5; 5:6; यश 11:2, और जक 4:2,6 देखिए)

जानते हैं, यद्यपि नहीं जानते, मैं तुम पर और अधिक भार नहीं डालता। [25]फिर भी जो कुछ तुम्हारे पास है, उसे मेरे आने तक दृढ़तापूर्वक थामे रहो। [26]जो जय पाए और जो मेरे कार्यों को अन्त तक करता रहे, **उसे मैं *जाति-जाति पर अधिकार दूंगा। [27]वह उन पर लोहे के राजदण्ड से शासन करेगा, जैसे कुम्हार के बर्तन टूट कर टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं,** वैसे ही मैंने भी अपने पिता से अधिकार पाया है। [28]मैं उसे भोर का तारा प्रदान करूंगा। [29]जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।'

3 "सरदीस की कलीसिया के दूत को लिख:

जिसके पास परमेश्वर की *सात आत्माएं और सात तारे हैं, वह यह कहता है: 'मैं तेरे कार्यों को जानता हूं, कि तू जीवित तो कहलाता है, पर है मरा हुआ। [2]जागृत हो, और जो वस्तुएं शेष रह गई हैं और मिटने पर हैं, उन्हें दृढ़ कर, क्योंकि मैंने अपने परमेश्वर की दृष्टि में तेरे किसी कार्य को पूर्ण नहीं पाया। [3]इसलिए स्मरण कर कि तू ने कैसी शिक्षा प्राप्त की और सुनी थी—उसमें बना रह और मन फिरा। इसलिए यदि तू जागृत न रहे, तो मैं चोर के सदृश आऊंगा, और तू जान न पाएगा कि मैं किस घड़ी तुझ पर आ पड़ूंगा। [4]पर सरदीस में तेरे पास *कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने अपने वस्त्र अशुद्ध नहीं किए हैं। वे श्वेत वस्त्र पहिने हुए मेरे साथ चलेंगे-फिरेंगे, क्योंकि वे इस योग्य हैं। [5]वह जो जय पाए, उसे इसी प्रकार श्वेत वस्त्र पहिनाया जाएगा। मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक में से न मिटाऊंगा, वरन् अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों के समक्ष उसका नाम मान लूंगा। [6]जिस के कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।'

फिलादेलफिया की कलीसिया

[7]"फिलादेलफिया की कलीसिया के दूत को यह लिख:

जो पवित्र व सच्चा है, और जिसके पास दाऊद की कुंजी है—वह खोलता है तो कोई बन्द नहीं कर सकता, तथा बन्द करता है तो कोई खोल नहीं सकता—वह यह कहता है: [8]'मैं तेरे कार्यों को जानता हूं। देख, मैंने तेरे लिए एक द्वार खोल रखा है जिसे कोई बन्द नहीं कर सकता। यद्यपि तेरी सामर्थ थोड़ी तो है, फिर भी तू ने मेरे वचन का पालन किया है और मेरे नाम का इन्कार नहीं किया। [9]देख, जो शैतान की सभा के हैं, और अपने आप को यहूदी कहते हैं जब कि हैं नहीं, पर झूठ बोलते हैं—मैं उन्हें बाध्य करूंगा कि वे आकर तेरे चरणों पर झुकें और जानें कि मैंने तुझ से प्रेम किया है। [10]इसलिए कि तू ने मेरे धैर्य के वचन का पालन किया है, मैं भी परखे जाने की घड़ी में तुझे बचा रखूंगा, अर्थात् उस घड़ी में जो सारे संसार पर आनेवाली है कि पृथ्वी के निवासी परखे जाएं। [11]मैं शीघ्र आनेवाला हूं। जो कुछ तेरे पास है, उसे थामे रह कि कोई तेरा मुकुट छीन न ले। [12]जो जय पाए उसे मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर में एक स्तम्भ बनाऊंगा। वह वहां से फिर कभी बाहर न निकलेगा, और मैं अपने परमेश्वर का नाम और अपने परमेश्वर के नगर अर्थात् नए यरूशलेम का नाम, जो मेरे परमेश्वर की ओर से

---

26 *या, गैरयहूदी   1 *या, सातगुनी आत्मा (प्रक 1:4 देखिए)   4 *अक्षरशः कुछ नाम

स्वर्ग से उतरने वाला है, और अपना नया नाम भी, उस पर लिखूंगा। [13]जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।'

लौदीकिया की कलीसिया

[14]"लौदीकिया की कलीसिया के दूत को लिख:

जो आमीन, विश्वासयोग्य और सच्चा गवाह है और परमेश्वर की सृष्टि का मूल कारण है, वह यह कहता है: [15]'मैं तेरे कार्यों को जानता हूं कि तू न तो ठण्डा है न गर्म। भला होता कि तू ठण्डा या गर्म होता! [16]इसलिए कि तू गुनगुना है, न ठण्डा है और न गर्म, मैं तुझे अपने मुंह से उगल दूंगा। [17]तू कहता है कि मैं धनवान हूं और धनी हो गया हूं, और मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं। पर तू नहीं जानता कि तू अभागा, तुच्छ, दरिद्र, अन्धा और नंगा है। [18]इसलिए मैं तुझे सम्मति देता हूं कि आग में शुद्ध किया हुआ सोना मुझ से मोल ले कि तू धनी हो जाए, और श्वेत वस्त्र ले ले कि पहिन कर तेरे नंगेपन की लज्जा प्रकट न हो, और अपनी आंखों में लगाने के लिए सुरमा ले ले कि तू देख सके। [19]मैं जिनसे प्रेम करता हूं उनको डांटता और ताड़ना देता हूं—इसलिए सरगर्म हो और मन फिरा। [20]देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं। यदि कोई मेरी आवाज़ सुनकर द्वार खोले तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ। [21]जो जय पाए उसे मैं अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठने दूंगा, जैसे मैं भी जय पाकर पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठा हूं। [22]जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है'।"

स्वर्गीय सिंहासन

4 इन बातों के पश्चात् मैंने दृष्टि की, और देखो, स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ है। तुरही की ध्वनि के समान जो प्रथम आवाज़ मैं ने सुनी, उसने कहा, "यहां ऊपर आ, और मैं तुझे उन बातों को दिखाऊंगा जिनका इनके पश्चात् होना अवश्य है।" [2]मैं तुरन्त आत्मा में आ गया, और देखो, स्वर्ग में एक सिंहासन रखा था और उस पर कोई बैठा हुआ था। [3]वह जो बैठा था यशब और माणिक्य के सदृश दिखाई देता था, और उस सिंहासन के चारों ओर पन्ना के सदृश एक मेघ-धनुष दिखाई देता था। [4]उस सिंहासन के चारों ओर चौबीस सिंहासन थे, और उन सिंहासनों पर मैंने चौबीस प्राचीनों को श्वेत वस्त्र पहिने तथा सिर पर सोने के मुकुट धारण किए हुए देखा। [5]उस सिंहासन से बिजलियां, गर्जन और बादलों की गड़गड़ाहट निकलती हैं, और सिंहासन के सामने आग के सात दीप जल रहे थे, जो परमेश्वर की *सात आत्माएं हैं, [6]तथा सिंहासन के सामने स्फटिक के समान मानो कांच का समुद्र था, और सिंहासन के मध्य और चारों ओर चार प्राणी थे जिनके आगे पीछे आंखें ही आंखें थीं। [7]पहिला प्राणी सिंह के सदृश, दूसरा प्राणी बछड़े के सदृश और तीसरे प्राणी का मुख मनुष्य के समान और चौथा प्राणी उड़ते उकाब के सदृश था। [8]इन चारों प्राणियों में से प्रत्येक के छः छः पंख थे। उनके चारों ओर तथा भीतर आंखें ही आंखें थीं। वे दिन-रात यह कहते नहीं

5 *प्रक 1:4 देखिए

थकते: "पवित्र, पवित्र, पवित्र, प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान है, जो था, और जो है, और जो आने वाला है।" [9]जब जब ये प्राणी उसकी जो सिंहासन पर विराजमान और युगानुयुग जीवित है, महिमा, आदर और धन्यवाद करते, [10]तब तब ये चौबीसों प्राचीन, उसके सामने जो सिंहासन पर बैठा है, गिर पड़ते और उसकी जो युगानुयुग जीवित है, वन्दना करते और यह कहते हुए अपने-अपने मुकुट सिंहासन के सामने डाल दिया करते हैं: [11]"हे हमारे प्रभु और परमेश्वर, तू ही महिमा, आदर और सामर्थ के योग्य है, क्योंकि तू ने ही सब वस्तुओं को सृजा, और उनका अस्तित्व और उनकी सृष्टि तेरी ही इच्छा से हुई।"

मुहरबन्द पुस्तक और मेम्ना

5 जो सिंहासन पर बैठा था उसके दाहिने हाथ में मैंने एक पुस्तक देखी जो भीतर-बाहर लिखी हुई थी तथा सात मुहर लगाकर बन्द की गई थी। [2]फिर मैंने एक बलवान स्वर्गदूत को देखा जो ऊंची आवाज़ से प्रचार कर रहा था, "इस पुस्तक को खोलने और उसकी मुहरों को तोड़ने के योग्य कौन है?" [3]पर स्वर्ग में या पृथ्वी पर या पृथ्वी के नीचे उस पुस्तक को खोलने और पढ़ने के योग्य कोई न मिला। [4]इस पर मैं फूट-फूटकर रोने लगा, क्योंकि उस पुस्तक को खोलने या पढ़ने योग्य कोई न मिला। [5]तब उन प्राचीनों में से एक ने मुझ से कहा, "मत रो! देख, यहूदा के कुल का वह सिंह जो दाऊद का मूल है, विजयी हुआ है, कि इस पुस्तक को और उसकी सात मुहरों को खोले।

[6]और मैंने सिंहासन और उन प्राचीनों के बीच में, चारों प्राणियों सहित, मानो एक बलि किया हुआ मेम्ना खड़ा देखा। उसके सात सींग और सात नेत्र थे। ये परमेश्वर की *सात आत्माएं हैं जो समस्त पृथ्वी पर भेजी गई थीं। [7]उसने आकर उसके दाहिने हाथ से जो सिंहासन पर बैठा था, वह पुस्तक ले ली। [8]जब उसने पुस्तक ले ली तो वे चार प्राणी और चौबीस प्राचीन उस मेम्ने के सामने गिर पड़े। उनमें से प्रत्येक के हाथ में वीणा और धूप से भरे सोने के कटोरे थे, जो पवित्र लोगों की प्रार्थनाएं हैं। [9]और उन्होंने यह नया गीत गाया: "तू इस पुस्तक के लेने और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है, क्योंकि तू ने वध होकर अपने लहू से प्रत्येक कुल, भाषा, लोग और जाति में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है। [10]और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिए एक राज्य और याजक बनाया और वे पृथ्वी पर राज्य करेंगे।" [11]फिर मैंने देखा, तो सिंहासन, प्राणियों और प्राचीनों के चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का शब्द सुना, जिनकी संख्या लाखों और करोड़ों में थी, [12]और वे ऊंची आवाज़ से कह रहे थे, "वध किया हुआ मेम्ना सामर्थ, धन, बुद्धि, शक्ति, आदर, महिमा और धन्यवाद के योग्य है।" [13]फिर मैंने सब सृजी हुई वस्तुओं को जो स्वर्ग में, पृथ्वी पर, पृथ्वी के नीचे और समुद्र और उनमें की सब वस्तुओं को यह कहते सुना, "जो सिंहासन पर बैठा है उसका, और मेम्ने का धन्यवाद और आदर, महिमा तथा राज्य युगानुयुग रहे।" [14]और चारों प्राणी 'आमीन' कहते रहे, तथा प्राचीनों ने दण्डवत् करके उपासना की।

---

6 *प्रक 1:4 देखिए

मुहरों का खोला जाना

6 जब मैंने देखा कि मेम्ने ने उन सात मुहरों में से एक को खोला, तब मैंने उन चार प्राणियों में से एक को गर्जन के समान शब्द में कहते सुना, "*आ!" [2]मैंने दृष्टि की, और देखो, एक श्वेत घोड़ा था, और जो उस पर बैठा था वह धनुष लिए हुए था। उसे एक मुकुट दिया गया, और वह जय प्राप्त करता हुआ निकला कि और भी जय प्राप्त करे।

[3]जब उसने दूसरी मुहर खोली तो मैंने दूसरे प्राणी को यह कहते सुना, "आ!" [4]तब लाल रंग का एक और घोड़ा निकला। उसके सवार को यह अधिकार दिया गया कि वह पृथ्वी पर से मेल-मिलाप उठा ले कि लोग एक दूसरे को घात करें, और उसे एक बड़ी तलवार दी गई।

[5]जब उसने तीसरी मुहर खोली, तो मैंने तीसरे प्राणी को यह कहते सुना, "आ!" तब मैंने दृष्टि की, और देखो, एक काला घोड़ा था और उसके सवार के हाथ में एक तराज़ू था। [6]मैंने उन चारों प्राणियों के मध्य से मानो एक शब्द को यह कहते सुना, "एक *दीनार का †किलो भर गेहूं तथा एक *दीनार का तीन †किलो जौ, पर तेल और दाखरस की हानि न करना।"

[7]जब उसने चौथी मुहर खोली, तो मैंने चौथे प्राणी का शब्द यह कहते सुना, "आ!" [8]मैंने दृष्टि की, और देखो, एक हल्के पीले रंग का घोड़ा था; उसके सवार का नाम था 'मृत्यु'; और अधोलोक उसका अनुसरण कर रहा था। उन्हें पृथ्वी के एक चौथाई भाग पर यह अधिकार दिया गया था कि तलवार, दुर्भिक्ष, महामारी, और पृथ्वी के हिंसक पशुओं द्वारा संहार करें।

[9]जब उसने पांचवीं मुहर खोली, तो मैंने वेदी के नीचे उनके प्राणों को देखा जो परमेश्वर के वचन तथा उसकी निरन्तर गवाही के कारण वध किए गए थे। [10]वे उच्च स्वर से पुकार कर कह रहे थे, "हे पवित्र और सच्चे प्रभु, तू कब तक न्याय न करेगा? तथा कब तक पृथ्वी के निवासियों से हमारे रक्त का प्रतिशोध न लेगा?" [11]उनमें से प्रत्येक को श्वेत चोगा दिया गया, और उनसे कहा गया, "थोड़ी देर तक और विश्राम करो, जब तक कि तुम्हारे संगी दासों और भाइयों की, जो तुम्हारे सदृश वध होने वाले हैं, गिनती पूरी न हो जाए।"

[12]जब उसने छठवीं मुहर खोली, तब मैंने देखा कि एक बड़ा भूकम्प हुआ, और बाल से बने कम्बल के समान सूर्य काला और सम्पूर्ण चन्द्रमा लहू के सदृश हो गया। [13]आकाश के तारे पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे बड़ी आंधी से हिलकर अंजीर के वृक्ष से कच्चे फल गिर पड़ते हैं। [14]आकाश फटकर ऐसे हट गया जैसे चर्म-पत्र लिपट जाता है, और प्रत्येक पर्वत तथा द्वीप अपने स्थान से हट गया। [15]तब पृथ्वी के राजा, प्रधान, सेनापति, धनवान, सामर्थी, और प्रत्येक दास और प्रत्येक स्वतंत्र व्यक्ति पहाड़ों की गुफाओं और चट्टानों में जा छिपे। [16]और पर्वतों तथा चट्टानों से कहने लगे, "हम पर गिर पड़ो और हमें उसकी दृष्टि से जो सिंहासन पर बैठा है, तथा मेम्ने के प्रकोप से छिपा लो, [17]क्योंकि उनके प्रकोप का भयानक

1 *कुछ हस्तलेखों में, आ और देख!

*चांदी का सिक्का, लगभग एक दिन की मज़दूरी †यूनानी, खोइनिक्स (अर्थात् यूनानी नपुआ)

दिन आ गया है, और कौन है जो उनका सामना कर सकता है?"

इस्राएल के 1,44,000

7 इसके पश्चात् मैंने चार स्वर्गदूतों को पृथ्वी के चार कोनों पर खड़े देखा, जो पृथ्वी की चारों हवाओं को थामे हुए थे कि पृथ्वी, समुद्र अथवा किसी वृक्ष पर हवा न चले। [2]फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को जीवित परमेश्वर की मुहर लिए हुए पूर्व से ऊपर आते देखा। उसने उन चारों स्वर्गदूतों से, जिन्हें पृथ्वी और समुद्र को हानि पहुंचाने का अधिकार दिया गया था, ऊंची आवाज़ से पुकार कर कहा, [3]"जब तक हम अपने परमेश्वर के दासों के माथों पर मुहर न लगा लें, तब तक पृथ्वी, समुद्र या वृक्षों को हानि न पहुंचाना।" [4]तब मैंने उन लोगों की संख्या सुनी जिन पर छाप दी गई थी, अर्थात् एक लाख चौवालीस हज़ार। इस्राएली सन्तानों के प्रत्येक गोत्र में से इन पर मुहर लगाई गई थी। [5]यहूदा के गोत्र से बारह हज़ार पर, रूबेन के गोत्र से बारह हज़ार पर, गाद के गोत्र से बारह हज़ार पर, [6]आशेर के गोत्र से बारह हज़ार पर, नप्ताली के गोत्र से बारह हज़ार पर, मनश्शे के गोत्र से बारह हज़ार पर, [7]शमौन के गोत्र से बारह हज़ार पर, लेवी के गोत्र से बारह हज़ार पर, इस्साकार के गोत्र से बारह हज़ार पर, [8]जबूलून के गोत्र से बारह हज़ार पर, यूसुफ के गोत्र से बारह हज़ार पर, बिन्यामीन के गोत्र से बारह हज़ार पर मुहर दी गई।

सिंहासन के सम्मुख जनसमूह

[9]इसके पश्चात् मैंने दृष्टि की, और देखो, प्रत्येक जाति, समस्त कुल, लोग और भाषा में से लोगों की एक विशाल भीड़ जिसे कोई गिन नहीं सकता था श्वेत वस्त्र पहिने तथा हाथों में खजूर की डाली लिए सिंहासन और मेम्ने के सामने खड़ी थी, [10]और लोग ऊंची आवाज़ से पुकार कर कह रहे थे, "सिंहासन पर विराजमान हमारे परमेश्वर और मेम्ने से ही उद्धार है!"

[11]सिंहासन के, प्राचीनों के, और चारों प्राणियों के चारों ओर समस्त स्वर्गदूत खड़े हुए थे। उन्होंने सिंहासन के सामने मुंह के बल गिरकर और यह कहकर परमेश्वर की वन्दना की, [12]"आमीन। हमारे परमेश्वर की स्तुति, महिमा, ज्ञान, धन्यवाद, आदर, सामर्थ, और शक्ति, युगानुयुग हो। आमीन।"

[13]इसके पश्चात् प्राचीनों में से एक ने मुझ से पूछा, "ये जो श्वेत वस्त्र धारण किए हुए हैं, कौन हैं, और कहां से आए हुए हैं?"

[14]मैंने उत्तर दिया, "हे मेरे प्रभु, तू ही जानता है।" उसने मुझ से कहा, "ये वे हैं जो उस महाक्लेश में से निकल कर आए हैं। इन्होंने अपने वस्त्र मेम्ने के लहू में धोकर श्वेत किए हैं। [15]इस कारण ये परमेश्वर के सिंहासन के सामने हैं और उसके मन्दिर में दिन-रात उसकी सेवा करते हैं। जो सिंहासन पर बैठा है वह उन पर अपनी छाया करेगा। [16]वे फिर कभी भूखे और प्यासे न होंगे, उन पर न धूप और न ही तपन होगी, [17]क्योंकि मेम्ना जो सिंहासन के मध्य है, उनका चरवाहा होगा। और जीवन-जल के सोतों के पास वह उनकी अगुवाई करेगा, और परमेश्वर उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा।"

सातवीं मुहर

8 जब उसने सातवीं मुहर खोली तब स्वर्ग में आधे घण्टे तक सन्नाटा छा गया। [2]तब मैंने सात स्वर्गदूत देखे जो परमेश्वर के समक्ष खड़े रहते हैं, और उन्हें सात तुरहियां दी गईं।

[3]फिर एक और स्वर्गदूत स्वर्ण-धूपदान लिए वेदी के समीप खड़ा हो गया। उसे बहुत धूप दिया गया कि वह उसे सिंहासन के समक्ष स्थित स्वर्ण-वेदी पर पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के साथ चढ़ाए। [4]और धूप का धुआं, पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के साथ स्वर्गदूत के हाथ से ऊपर परमेश्वर के समक्ष पहुँचा। [5]तब स्वर्गदूत ने धूपदान लिया और वेदी की आग से भरकर उसे पृथ्वी पर फेंक दिया, फिर बादल का गर्जन, भीषण नाद, बिजली की चमक तथा भूकम्प हुआ।

प्रथम चार तुरहियां

[6]तब सातों स्वर्गदूत जिनके पास सात तुरहियां थीं उन्हें फूंकने के लिए तैयार हुए।

[7]पहिले ने तुरही फूंकी, और लहू से मिश्रित ओले व आग उत्पन्न हुए, जो पृथ्वी पर फेंक दिए गए। इस से पृथ्वी की एक तिहाई तथा वृक्षों की एक तिहाई भस्म हो गई, तथा सारी घास भी भस्म हो गई।

[8]दूसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी, और मानो आग से जलती हुई महापर्वत के सदृश कोई वस्तु समुद्र में डाल दी गई, जिससे समुद्र का एक तिहाई लहू हो गया। [9]समुद्र के एक तिहाई प्राणी मर गए और जहाज़ों की एक तिहाई नष्ट हो गई।

[10]तीसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी तो एक विशाल तारा मशाल के सदृश जलता हुआ आकाश से गिरा, और वह नदियों और जल के सोतों की एक तिहाई पर जा गिरा। [11]वह तारा नागदौना कहलाता है। इस से जल का एक तिहाई नागदौना हो गया। इस जल के कड़ुवे हो जाने के कारण बहुत-से मनुष्यों की मृत्यु हो गई।

[12]चौथे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी तो सूर्य की एक तिहाई, चन्द्रमा की एक तिहाई तथा तारों की एक तिहाई पर विपत्ति आई, जिस से इनका एक तिहाई अन्धकारमय हो गया कि दिन का एक तिहाई और वैसे ही रात्रि का भी एक तिहाई प्रकाशमान न हो।

[13]जब मैंने फिर देखा तो आकाश के बीच में एक उकाब को उड़ते और ऊंची आवाज़ में यह कहते सुना, "उन तीन स्वर्गदूतों के तुरही के शब्दों के कारण, जिनका फूंका जाना अभी शेष है, पृथ्वी के रहनेवालों पर हाय, हाय, हाय!"

पांचवीं तुरही

9 जब पांचवें स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी, तो मैंने स्वर्ग से पृथ्वी पर एक तारा गिरता हुआ देखा; और उसे अथाह कुण्ड की कुंजी दी गई। [2]उसने अथाह कुण्ड को खोला, और उस कुण्ड का धुआं बड़ी भट्ठी के धुएं के समान निकला। सूर्य और वायुमण्डल दोनों उस कुण्ड के धुएं से अंधकारमय हो गए। [3]इस धुएं में से पृथ्वी पर टिड्डियां निकलीं। उनको ऐसी शक्ति दी गई जैसी पृथ्वी के बिच्छुओं में होती है। [4]उन्हें आदेश दिया गया कि वे न तो पृथ्वी की घास, न कोई हरी वस्तु, न किसी वृक्ष को हानि पहुंचाएं, परन्तु उन्हीं मनुष्यों को हानि पहुंचाएं जिनके माथों पर परमेश्वर की मुहर नहीं है। [5]उन्हें किसी को मार

डालने की नहीं, वरन् पांच माह तक घोर पीड़ा देने की अनुमति दी गई थी। यह ऐसी पीड़ा थी जैसी बिच्छू के डंक मारने से मनुष्य को होती है। [6]उन दिनों मनुष्य मृत्यु की खोज करेंगे, पर पाएंगे नहीं। वे मृत्यु की अभिलाषा तो करेंगे, परन्तु मृत्यु उनसे दूर भागेगी। [7]इन टिड्डियों का स्वरूप युद्ध के लिए तैयार किए हुए घोड़ों जैसा था। उनके सिरों पर मानो स्वर्ण-मुकुट थे, और उनके मुख मनुष्यों के मुख जैसे थे। [8]उनके बाल स्त्रियों के बाल के समान तथा उनके दांत सिंहों के दांत के समान थे। [9]उनके कवच लोहे के कवच जैसे थे। उनके पंखों की आवाज़ ऐसी थी जैसी रथों और युद्ध में जाते हुए बहुत-से घोड़ों के दौड़ने से होती है। [10]उनकी पूंछें बिच्छुओं की सी थीं। उनमें डंक थे। उनकी पूंछों में मनुष्यों को पांच माह तक पीड़ा देने की शक्ति थी। [11]उन पर एक राजा था जो अथाह कुण्ड का दूत था। इब्रानी भाषा में उसका नाम *अबद्दोन और यूनानी में *अपुल्लयोन है।

[12]पहिली विपत्ति बीत चुकी। इसके पश्चात् दो विपत्तियां और आने वाली हैं।

छठवीं तुरही

[13]जब छठवें स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी, तब मैंने सोने की वेदी जो परमेश्वर के सम्मुख है उसके चार सींगों में से एक शब्द सुना। [14]वह छठवें स्वर्गदूत से, जिसके पास तुरही थी, कह रहा था, "उन चार स्वर्गदूतों को जो फरात महानदी के निकट बंधे हैं, खोल दे।" [15]वे चार स्वर्गदूत जो इसी घड़ी, दिन, महीने और वर्ष के लिए रखे गए थे, मुक्त कर दिए गए कि वे मानवजाति की एक तिहाई को मार डालें। [16]सेना के घुड़सवारों की संख्या बीस करोड़ थी; मैंने उनकी गिनती सुनी। [17]और मुझे दर्शन में घोड़े और उनके सवार इस प्रकार दिखाई दिए: वे सवार कवच पहिने थे जो अग्नि, धूम्रकांत तथा गन्धक के रंगों के समान थे। घोड़ों के सिर सिंहों के सिरों के सदृश थे और उनके मुंह से अग्नि, धुआं और गन्धक निकलते थे। [18]इन तीन महामारियों से, अर्थात् उन के मुख से निकलने वाली अग्नि, धुआं और गन्धक से मनुष्य जाति की एक तिहाई नष्ट हो गई। [19]उन घोड़ों की सामर्थ उनके मुंह और पूंछ में थी, क्योंकि इनकी पूंछें सर्पों के सदृश थीं और उनमें सिर थे। इन्हीं से वे हानि पहुंचाते थे। [20]फिर भी शेष मनुष्यों ने, जो इन महामारियों से न मरे थे, **अपने हाथों के कामों से मन न** फिराया कि वे **भूत-प्रेत तथा सोने, चांदी, पीतल, पत्थर, और काठ की प्रतिमाओं** की पूजा न करें, **जो न तो देख सकतीं, न सुन सकतीं और न चल सकती हैं;** [21]न उन्होंने हत्या के कार्यों से, न जादू-टोनों से, न व्यभिचार से; और न चोरी करने से मन फिराया।

स्वर्गदूत और छोटी पुस्तक

10 फिर मुझे एक और शक्तिशाली स्वर्गदूत बादल ओढ़े हुए स्वर्ग से उतरते दिखाई दिया। उसके सिर पर मेघ-धनुष था। उसका मुख सूर्य जैसा और उसके पांव अग्नि के खम्भे के सदृश थे। [2]उसके हाथ में खुली हुई एक छोटी सी पुस्तक थी। उसने अपना दाहिना पांव समुद्र पर तथा बायां पृथ्वी पर रखा। [3]वह ऊंची आवाज़ से ऐसे चिल्लाया जैसे सिंह

---

11 *अर्थात्, विनाशक

दहाड़ा हो। जब वह चिल्लाया तो गर्जन के सात शब्द सुनाई दिए। [4]जब गर्जन के सातों शब्द हो चुके तो मैं लिखने पर था, परन्तु मुझे आकाश से एक शब्द यह कहते सुनाई दिया, "जो बातें गर्जन के सातों शब्दों ने कही हैं उन पर मुहर लगा दे और उन्हें न लिख।" [5]तब जिस स्वर्गदूत को मैंने समुद्र और पृथ्वी पर खड़ा देखा था उसने **अपना दाहिना हाथ स्वर्ग की ओर उठाया,** [6]**और उसकी शपथ खाकर जो युगानुयुग जीवित है और जिसने स्वर्ग और उसकी सब वस्तुओं, पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं तथा समुद्र और उसकी सब वस्तुओं को सृजा है,** कहा कि अब और देर न होगी। [7]पर सातवें स्वर्गदूत के आवाज़ देने के दिनों में जब वह तुरही फूंकने पर होगा तो परमेश्वर का वह रहस्य पूरा हो जाएगा—जिसकी सूचना उसने अपने दास नबियों को दी थी। [8]तब मैंने उस आवाज़ को जो स्वर्ग से सुनाई दी थी, मुझ से फिर यह कहते सुना, "जा, उस स्वर्गदूत के हाथ से जो समुद्र और पृथ्वी पर खड़ा है, उस खुली हुई पुस्तक को ले ले।" [9]तब मैंने उस स्वर्गदूत के पास जाकर कहा कि यह छोटी पुस्तक मुझे दे दे। उसने मुझ से कहा, "ले, इसे खा ले। यह तेरा पेट तो कड़वा कर देगी, पर तेरे मुंह में मधु-सी मीठी लगेगी।" [10]मैंने उस पुस्तक को स्वर्गदूत के हाथ से लेकर खा लिया। वह मेरे मुंह में मधु जैसी मीठी लगी; पर जब मैं उसे खा चुका, तो मेरा पेट कड़वा हो गया। [11]इसके पश्चात् मुझ से कहा गया कि तुझे बहुत से लोगों, जातियों, भाषाओं और राजाओं के समक्ष फिर

करनी पड़ेगी।

दो गवाह

11 फिर मुझे नापने के लिए एक छड़ी दी गई और किसी ने कहा, "उठ, परमेश्वर के मन्दिर तथा वेदी को और उसमें उपासना करने वालों को नाप ले। [2]और मन्दिर का बाहरी आंगन छोड़ दे। उसे मत नाप, क्योंकि वह गैरयहूदियों को दिया गया है। वे बयालीस माह तक पवित्र नगर को रौंदेंगे। [3]मैं अपने दो गवाहों को अधिकार दूंगा और वे टाट ओढ़े हुए एक हज़ार दो सौ साठ दिनों तक नबूवत करेंगे।" [4]ये जैतून के वे दो वृक्ष और दो दीपदान हैं जो पृथ्वी के प्रभु के समक्ष खड़े रहते हैं। [5]यदि कोई उन्हें हानि पहुंचाना चाहता है, तो उनके मुख से आग निकलकर उनके शत्रुओं को भस्म कर देती है; और यदि कोई उन्हें हानि पहुंचाना चाहे, तो इसी प्रकार अवश्य मार डाला जाएगा। [6]उन्हें यह अधिकार है कि आकाश को बन्द कर दें जिससे कि उनकी नबूवतों के दिनों में वर्षा न हो; और उन्हें सारे जल पर अधिकार है कि उसे लहू बना दें, तथा जब जब चाहें, पृथ्वी पर सब प्रकार की महामारी भेजें। [7]जब वे अपनी साक्षी दे चुकेंगे, तो वह पशु जो अथाह कुण्ड में से निकलेगा, उनसे युद्ध करेगा और उन पर विजयी होकर उन्हें मार डालेगा। [8]और उनके शव उस महानगर की सड़क पर पड़े रहेंगे जो आत्मिक रूप से सदोम और मिस्र कहलाता है, जहां उनका प्रभु भी क्रूस पर चढ़ाया गया था। [9]और जातियों, कुलों, भाषाओं और राज्यों में से लोग साढ़े तीन दिन तक उनके शवों को देखते रहेंगे; पर उन शवों को कब्रों में रखने न देंगे। [10]पृथ्वी के निवासी उनकी मृत्यु से प्रसन्न

होंगे और आनन्द मनाएंगे और एक-दूसरे को उपहार भेजेंगे, क्योंकि इन दोनों नबियों ने पृथ्वी के निवासियों को सताया था। [11]परन्तु साढ़े तीन दिन के पश्चात् परमेश्वर की ओर से जीवन के श्वांस ने उनमें प्रवेश किया। वे अपने पैरों पर खड़े हो गए, और उनके दर्शकों पर बड़ा भय छा गया। [12]तब उन्हें स्वर्ग से एक ऊंची आवाज़ सुनाई दी, "यहां ऊपर आ जाओ।" और वे अपने शत्रुओं के देखते-देखते बादलों में स्वर्ग को चले गए। [13]उसी घड़ी एक बड़ा भूकम्प हुआ और नगर का दसवां भाग गिर पड़ा, और सात हज़ार लोग उस भूकम्प में मारे गए तथा शेष ने भयभीत होकर स्वर्ग के परमेश्वर की महिमा की।

[14]दूसरी विपत्ति बीत चुकी। देखो, तीसरी शीघ्र ही आने वाली है।

सातवीं तुरही

[15]सातवें स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी, और स्वर्ग में ऊंचे शब्द होने लगे जो कह रहे थे, "संसार का राज्य हमारे प्रभु और उसके मसीह का राज्य बन गया है और वह युगानुयुग राज्य करेगा।" [16]तब चौबीस प्राचीन, जो परमेश्वर के समक्ष अपने अपने सिंहासनों पर बैठे थे, मुंह के बल गिरे, और यह कहते हुए परमेश्वर की वन्दना की, [17]"हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, जो है और जो था, हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि तू अपनी महान् सामर्थ को लेकर राज्य करने लगा है। [18]जातियां क्रोधित हुई, और तेरा प्रकोप आ पड़ा और वह समय आ पहुंचा कि मृतकों का न्याय हो, और तेरे दासों, नबियों, पवित्र लोगों और तेरे नाम का भय मानने वाले, छोटे-बड़ों को प्रतिफल मिले, और पृथ्वी के नष्ट करने वालों का नाश किया जाए।"

[19]तब परमेश्वर का मन्दिर जो स्वर्ग में है, खोला गया। उसके मन्दिर में वाचा का सन्दूक दिखाई दिया तथा बिजलियों की चमक और बादलों की गड़गड़ाहट के शब्द और भूकम्प हुए और भयंकर ओला-वृष्टि हुई।

स्त्री और अजगर

12 फिर स्वर्ग में एक बड़ा चिन्ह दिखाई दिया। एक स्त्री सूर्य पहिने थी। उसके पैरों के नीचे चन्द्रमा तथा सिर पर बारह तारों का एक मुकुट था। [2]वह गर्भवती थी, तथा बच्चे को जन्म देने के लिए प्रसव-पीड़ा के कारण चिल्ला रही थी। [3]एक और चिन्ह स्वर्ग में दिखाई दिया: और देखो, लाल रंग का एक विशाल अजगर था। उसके सात सिर और दस सींग थे, तथा उसके सिरों पर सात मुकुट थे। [4]उसकी पूंछ ने आकाश के तारों का एक तिहाई भाग खींचकर पृथ्वी पर फेंक दिया। वह अजगर उस स्त्री के समक्ष खड़ा हो गया जो बच्चे को जन्म देने वाली थी, कि जब बच्चे का जन्म हो तो वह उसको खा जाए। [5]उसने एक पुत्र को जन्म दिया, जो लोहे के दण्ड से सब जातियों पर शासन करेगा। उस स्त्री का वह बच्चा परमेश्वर और उसके सिंहासन के पास उठा लिया गया। [6]तब वह स्त्री जंगल में भाग गई जहां परमेश्वर ने उसके लिए एक स्थान तैयार किया था कि एक हज़ार दो सौ साठ दिन तक वहां उसका पोषण किया जाए।

[7]फिर स्वर्ग में युद्ध हुआ। मीकाएल और उसके दूत अजगर से लड़े। अजगर और उसके दूत भी लड़े, [8]परन्तु प्रबल

न हुए और फिर उन्हें स्वर्ग में स्थान न मिला। [9]तब वह बड़ा अजगर नीचे गिरा दिया गया, अर्थात् वही पुराना सांप जो इबलीस और शैतान कहलाता है और जो सम्पूर्ण संसार को भरमाता है। वह पृथ्वी पर नीचे गिरा दिया गया और उसके साथ उसके दूत भी गिरा दिए गए। [10]तब मैंने स्वर्ग में एक बड़ा शब्द यह कहते सुना, "अब हमारे परमेश्वर का उद्धार, सामर्थ और राज्य तथा उसके मसीह का अधिकार प्रकट हुआ है, क्योंकि हमारे भाइयों पर दोष लगानेवाला, जो हमारे परमेश्वर के समक्ष रात-दिन उनको दोषी ठहराता था, नीचे गिरा दिया गया है। [11]और वे मेम्ने के लहू के कारण और अपनी साक्षी के वचन के कारण उस पर विजयी हुए हैं, क्योंकि मृत्यु सहने तक भी उन्होंने अपने प्राणों को प्रिय न जाना। [12]इस कारण हे स्वर्गो और तुम जो उनमें रहते हो, आनन्दित हो। पृथ्वी और समुद्र पर हाय, क्योंकि *शैतान अति क्रोधित होकर तुम्हारे पास उतर आया है, क्योंकि वह जानता है कि उस का समय थोड़ा ही है।"

[13]जब अजगर ने देखा कि मैं पृथ्वी पर गिरा दिया गया हूं, तो उस स्त्री को जिस ने पुत्र को जन्म दिया था, सताने लगा। [14]पर उस स्त्री को एक बड़े उकाब के दो पंख इसलिए दिए गए कि वह अजगर के सामने से जंगल में उस स्थान को उड़ जाए जहां एक काल, कालों और अर्द्ध-काल तक उसका पालन-पोषण किया जाए। [15]फिर सांप ने उस स्त्री के पीछे अपने मुंह से नदी के सदृश जल बहाया कि उसे जल-प्रवाह में बहा ले जाए। [16]पर पृथ्वी ने स्त्री की सहायता की और अपना मुंह खोलकर उस नदी को जिसे अजगर ने अपने मुंह से बहाया था पी लिया। [17]और अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ; और उसकी शेष सन्तान से जो परमेश्वर की आज्ञा मानती है, और यीशु की गवाही पर स्थिर है, युद्ध करने निकला।

समुद्र में से निकला पशु

13 और वह समुद्र की बालू पर जा खड़ा हुआ। तब मैंने एक पशु को समुद्र में से निकलते देखा, जिसके दस सींग और सात सिर थे। उसके सींगों पर दस मुकुट थे तथा उसके सिरों पर ईश-निन्दा के नाम लिखे थे। [2]जो पशु मैं ने देखा वह चीते के सदृश था। उसके पैर भालू जैसे और उसका मुख सिंह के समान था। उस अजगर ने उसे अपनी सामर्थ, अपना सिंहासन तथा अपना महान् अधिकार दे दिया। [3]तब मैंने उसके सिरों में से एक पर ऐसा भारी घाव देखा मानो वह उस से मरने पर हो, पर उसका प्राण-घातक घाव अच्छा हो गया। इस पर सारी पृथ्वी के लोग अचम्भा करते हुए उस पशु के पीछे चल पड़े। [4]उन्होंने अजगर की पूजा की क्योंकि उसने अपना अधिकार पशु को दे दिया था। उन्होंने यह कह कर पशु की पूजा की, "इस पशु के सदृश कौन है? कौन इसके साथ युद्ध कर सकता है?" [5]उसे एक ऐसा मुंह दिया गया जिससे कि वह अंहकारपूर्ण और ईश-निन्दक शब्द बोले, तथा उसे बयालीस महीनों तक कार्य करने का अधिकार दिया गया। [6]उसने परमेश्वर के विरुद्ध निन्दा करने के लिए अपना मुंह खोला कि उसके नाम, उसके तम्बू अर्थात उनके विरुद्ध जो स्वर्ग में निवास करते हैं

*, डिआबोलस, अर्थात् निन्दक

निन्दा करे। [7]उसे पवित्र लोगों के साथ युद्ध करने और उन पर विजय पाने का अधिकार दिया गया तथा प्रत्येक कुल, लोग, भाषा और जाति पर उसे अधिकार दिया गया। [8]पृथ्वी के सब निवासी उसकी पूजा करेंगे, अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति जिसका नाम *उस मेम्ने के जीवन की पुस्तक में जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात किया गया है नहीं लिखा गया है। [9]जिसके कान हों, वह सुन ले। [10]वह जो बन्दी होने के लिए ठहराया गया है, वन्दीगृह में डाला जाएगा, और जो तलवार से मारता है वह तलवार से मारा जाएगा। पवित्र लोगों का धीरज और विश्वास भी इसी में है।

पृथ्वी में से निकला पशु

[11]फिर मैंने पृथ्वी में से एक और पशु को निकलते देखा। मेम्ने के से उसके दो सींग थे, और वह अजगर के समान बोलता था। [12]उस पहिले पशु *की उपस्थिति में वह उसके सब अधिकार काम में लाता था। वह पृथ्वी और उसके निवासियों से उस पहिले पशु की जिसका घातक घाव अच्छा हो गया था, पूजा करवाता था। [13]वह बड़े-बड़े चमत्कार दिखाता था, यहां तक कि लोगों के समक्ष स्वर्ग से पृथ्वी पर अग्नि बरसा देता था। [14]इन चमत्कारों के द्वारा जिन्हें उस पशु *के समक्ष दिखाने की शक्ति उसे प्राप्त थी, वह पृथ्वी के निवासियों को धोखा देता और उनसे कहता था कि उस पशु की मूर्ति स्थापित करो, जिस पर तलवार का घाव लगा था, और जो पुनः जीवित हो गया था। [15]उसे पशु की मूर्ति में प्राण डालने का अधिकार दिया गया, जिस से पशु की वह मूर्ति बोलने लगे और जितने उस पशु की मूर्ति की पूजा न करें, उन्हें मरवा डाले। [16]उसने छोटे-बड़े, धनी-निर्धन, स्वतंत्र और दास—सब के दाहिने हाथ या माथे पर छाप लगवा दी। [17]और उसने यह प्रबन्ध किया कि जिसके पास उस पशु का नाम या उसके नाम की संख्या की छाप हो, उसको छोड़ और कोई व्यक्ति लेन-देन न कर सके। [18]बुद्धिमानी इसी में है: जिसे समझ हो वह उस पशु की संख्या का हिसाब लगा ले, क्योंकि यह संख्या किसी मनुष्य की है; और उसकी संख्या छः सौ छियासठ है।

मेम्ना और 1,44,000

14 फिर मैंने दृष्टि की, और देखो, वह मेम्ना सिय्योन पर्वत पर खड़ा था, और उसके साथ एक लाख चवालीस हज़ार व्यक्ति थे जिनके माथे पर उसका और उसके पिता का नाम लिखा था। [2]और मैंने स्वर्ग से अपार जल अर्थात् बड़े गर्जन जैसी आवाज़ सुनी। वह आवाज़ जो मैंने सुनी ऐसी थी मानो वीणा-वादक अपनी वीणाएं बजा रहे हों। [3]वे सिंहासन के सम्मुख तथा चारों जीवित प्राणियों और प्राचीनों के सम्मुख एक नया गीत गा रहे थे। उन एक लाख चवालीस हज़ार के अतिरिक्त जो पृथ्वी पर से मोल लिए गए थे, कोई भी वह गीत नहीं सीख सकता था। [4]ये वे हैं जिन्होंने अपने आप को स्त्रियों के साथ भ्रष्ट नहीं किया क्योंकि वे कुंवारे हैं। ये वे ही हैं जो मेम्ने के पीछे पीछे जहां कहीं वह जाता है चलते हैं। ये परमेश्वर और

---

8 *या, जगत की उत्पत्ति के समय से उस घात किए हुए मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखा नहीं गया।
12 *या, की ओर से   14 *या, की ओर से

मेम्ने के लिए प्रथम फल होने को मनुष्यों में से मोल लिए गए हैं। [5]उन में झूठ नहीं पाया गया और वे निर्दोष हैं।

तीन स्वर्गदूत

[6]फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को मध्य आकाश में उड़ते देखा। उसके पास पृथ्वी पर रहने वाली हर जाति, कुल, भाषा और लोगों को सुनाने के लिए अनन्त सुसमाचार था। [7]उसने ऊंची आवाज़ से कहा, "परमेश्वर से डरो और उसकी महिमा करो; क्योंकि उसके न्याय का समय आ पहुंचा है। उसी की उपासना करो जिसने स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र और जल के सोते बनाए।"

[8]तब एक और स्वर्गदूत यह कहते हुए आया, "गिर पड़ा, महान् बाबुल गिर पड़ा, जिसने अपने कुकर्म की वासनामय मदिरा सब जातियों को पिलाई थी।"

[9]उनके पश्चात् एक तीसरा स्वर्गदूत ऊंची आवाज़ से यह कहता हुआ आया, "यदि कोई उस पशु और उसकी मूर्ति की पूजा करे और अपने माथे या हाथ पर उसकी छाप लगवाए, [10]तो वह भी परमेश्वर के प्रकोप की वह मदिरा जो उसके क्रोध के कटोरे में भरपूर उंडेली गई है पीएगा, और पवित्र स्वर्गदूतों और मेम्ने की उपस्थिति में उसे आग और गंधक की घोर यातना सहनी पड़ेगी। [11]उनकी यातना का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा; और उन्हें जो पशु की और उसकी मूर्ति की पूजा करते हैं और उसके नाम की छाप लेते हैं, दिन और रात कभी चैन न मिलेगा।" [12]पवित्र लोगों का जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु पर विश्वास रखते हैं, इसी में है।

[13]फिर मैंने स्वर्ग से एक शब्द यह कहते हुए सुना, "लिख, 'धन्य हैं वे मृतक, जो अब से प्रभु में मरते हैं'। आत्मा कहता है, 'हां, क्योंकि वे अपने परिश्रमों से विश्राम पाएंगे, और उनके कार्य उनके साथ जाएंगे'।"

प्रकोप की क़टनी

[14]मैंने दृष्टि की, और देखो, एक उज्ज्वल बादल और उस बादल पर मानव-पुत्र के सदृश कोई बैठा था। उसके सिर पर स्वर्ण-मुकुट तथा हाथ में तेज़ हंसिया थी। [15]तब एक और स्वर्गदूत मंदिर में से निकला और ऊंची आवाज़ से, उस से जो बादल पर बैठा था, कहने लगा, "अपनी हंसिया लगाकर फसल काट इसलिए कि कटनी की घड़ी आ पहुंची है, क्योंकि पृथ्वी की फसल पक चुकी है।" [16]और वह जो बादल पर बैठा था उसने अपनी हंसिया पृथ्वी पर लगाई; और पृथ्वी की फसल काटी गई।

[17]तब एक और स्वर्गदूत उस मन्दिर में से निकला जो स्वर्ग में है; और उसके पास भी एक तेज़ हंसिया थी। [18]फिर वेदी से एक और स्वर्गदूत निकला जिसे अग्नि पर अधिकार था। उसने जिसके हाथ में तेज़ हंसिया थी उस से ऊंची आवाज़ में कहा, "अपनी तेज़ हंसिया लगाकर पृथ्वी की दाखलता से दाख के गुच्छे काट ले, क्योंकि उसके दाख पक चुके हैं।"

[19]उस स्वर्गदूत ने अपनी हंसिया पृथ्वी पर लगाई और पृथ्वी की दाखलता से दाख के गुच्छे काटकर परमेश्वर के प्रकोप के विशाल रसकुंड में डाल दिए। [20]और नगर के बाहर उस रसकुण्ड में दाख रौंदे गए और रसकुंड से इतना

लहू बहा कि उसकी ऊंचाई घोड़ों की लगामों तक और उसकी दूरी *तीन सौ किलोमीटर तक थी।"

सात दूत – सात विपत्तियां

15 फिर मैंने स्वर्ग में एक और महान् और अद्‌भुत चिन्ह देखा। सात स्वर्गदूत थे जिनके पास सात अन्तिम विपत्तियां थीं, क्योंकि इनके समाप्त हो जाने पर परमेश्वर का प्रकोप पूर्ण हो जाता है।

[2]और मैंने मानो अग्नि-मिश्रित कांच का एक समुद्र देखा; और उनको भी जो उस पशु, उसकी मूर्ति तथा उसके नाम के अंक पर विजयी हुए थे, परमेश्वर की वीणाएं लिए हुए उस कांच के समुद्र पर खड़े देखा। [3]वे परमेश्वर के दास मूसा का गीत और मेम्ने का गीत यह कहते हुए गा रहे थे: "**हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, तेरे काम महान् और अद्‌भुत हैं। हे *जाति-जाति के राजा, तेरे मार्ग धर्म-संगत और सच्चे हैं। [4]हे प्रभु, कौन तेरा भय न मानेगा, और तेरे नाम की महिमा न करेगा? क्योंकि तू ही पवित्र है। सब जातियां आकर तेरी उपासना करेंगी**, क्योंकि तेरे न्याय के कार्य प्रकट हो गए हैं।"

[5]इन बातों के पश्चात् मैंने देखा कि स्वर्ग में साक्षी के तम्बू का मन्दिर खोला गया, [6]और वे सात दूत जिनके पास सात विपत्तियां थीं, मलमल के शुद्ध व चमकदार वस्त्र पहिने हुए तथा अपने सीने पर स्वर्णिम पट्टियां बांधे हुए मंदिर से निकले। [7]और उन चारों प्राणियों में से एक ने सात स्वर्गदूतों को युगानुयुग जीवते परमेश्वर के प्रकोप से भरे हुए सात स्वर्ण के कटोरे दिए। [8]तब मंदिर परमेश्वर की महिमा और सामर्थ के धुएं से भर गया; और जब तक उन सात स्वर्गदूतों की सात विपत्तियां समाप्त न हुईं, कोई मंदिर में प्रवेश न कर सका।

प्रकोप के सात कटोरे

16 मैंने मंदिर में एक ऊंची आवाज़ को सात स्वर्गदूतों से यह कहते सुना, "जाओ और परमेश्वर के प्रकोप के सातों कटोरों को पृथ्वी पर उंडेल दो।"

[2]अतः पहिले स्वर्गदूत ने जाकर अपना कटोरा पृथ्वी पर उंडेल दिया। इससे उन मनुष्यों पर जिन पर पशु की छाप थी और जो उसकी मूर्ति की पूजा करते थे, बुरे और कष्टदायक फोड़े निकल आए।

[3]दूसरे स्वर्गदूत ने जब अपना कटोरा समुद्र में उंडेल दिया, तो समुद्र मरे हुए मनुष्य के लहू के समान हो गया और उसमें का प्रत्येक जल-जन्तु मर गया।

[4]तीसरे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा नदियों और जल-स्रोतों पर उंडेला; और वे लहू बन गए। [5]तब मैंने जल के स्वर्गदूत को यह कहते सुना, "हे पवित्र, तू जो है और जो था, तू न्यायी है क्योंकि तू ने इन बातों का न्याय किया है; [6]क्योंकि मनुष्यों ने पवित्र लोगों और नबियों का लहू बहाया था, पर तू ने उन्हें पीने के लिए लहू दिया है। वे इसी योग्य हैं।" [7]फिर मैंने वेदी में से यह शब्द सुना, 'हां, हे प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, तेरे न्याय सत्य और उचित हैं।'

[8]चौथे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा सूर्य पर उंडेला और मनुष्यों को अग्नि से झुलसाने का उसे अधिकार दिया गया।

---

20 *यूनानी, 1600 स्टादिया

3 *कुछ हस्तलेखों में, युगों के राजा

[9]और मनुष्य भयंकर ताप से झुलस गए। तब उन्होंने परमेश्वर के नाम की निन्दा की जिसको इन विपत्तियों पर अधिकार है, परन्तु मन न फिराया कि उसे महिमा दें।

[10]पांचवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा पशु के सिंहासन पर उंडेला और उसके राज्य पर अंधेरा छा गया। पीड़ा के मारे लोगों की जीभ ऐंठने लगीं। [11]और वे अपनी पीड़ा और फोड़ों के कारण स्वर्ग के परमेश्वर की निन्दा करने लगे, फिर भी उन्होंने अपने अपने कामों से पश्चात्ताप न किया।

[12]छठवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा महा नदी फरात पर उंडेल दिया। इस से उसका जल सूख गया कि पूर्व दिशा के राजाओं के लिए मार्ग तैयार हो जाए। [13]फिर मैंने उस अजगर के मुंह, उस पशु के मुंह, और उस झूठे नबी के मुंह से तीन अशुद्ध आत्माओं को मेंढकों के रूप में निकलते देखा। [14]ये चिन्ह दिखाने वाली दुष्टात्माएं हैं, जो जाकर समस्त संसार के राजाओं को सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस महान् दिन के युद्ध के लिए एकत्र करती हैं—[15]देखो, मैं चोर के समान आता हूं। धन्य है वह जो जागृत रहकर अपने वस्त्रों की रक्षा करता है कि नंगा न फिरे और लोग उसकी नग्नता को न देखें—[16]और उन्होंने उनको उस स्थान में एकत्र किया जो इब्रानी भाषा में हर-मगिदोन कहलाता है।

[17]सातवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा वायु पर उंडेल दिया, और मंदिर के सिंहासन से एक बड़ा शब्द हुआ, "हो चुका!" [18]तब बिजली चमकी, आवाज़ और गर्जन हुआ, तथा एक ऐसा बड़ा भूकम्प आया जैसा पृथ्वी पर मनुष्य की उत्पत्ति से लेकर अब तक कभी न आया था: वह भूकम्प इतना बड़ा और शक्तिशाली था। [19]इससे महानगरी के तीन टुकड़े हो गए, और राज्य-राज्य के नगर धराशायी हो गए। तब परमेश्वर ने महानगरी बाबुल का स्मरण किया कि अपने भयंकर प्रकोप की मदिरा उसे पिलाए। [20]सब द्वीप टल गए तथा पर्वतों का पता तक न चला। [21]*मन-मन भर वज़न के ओले आकाश से मनुष्यों पर पड़ने लगे। तब ओले पड़ने की इस विपत्ति के कारण लोगों ने परमेश्वर की निन्दा की, क्योंकि यह विपत्ति अत्यन्त कठोर थी।

पशु पर सवार स्त्री

17 जिन सात स्वर्गदूतों के पास सात कटोरे थे उनमें से एक ने आकर मुझ से कहा, "यहां आ, मैं तुझे उस बड़ी वेश्या के दंड को दिखाऊंगा। जो बहुत से जल पर बैठी है, [2]जिसके साथ पृथ्वी के राजाओं ने व्यभिचार किया और जिसके व्यभिचार की मदिरा से पृथ्वी के रहनेवाले मतवाले हो गए।" [3]तब वह आत्मा में मुझे एक निर्जन प्रदेश में ले गया जहां मैंने एक स्त्री को किरमिजी रंग के एक पशु पर बैठे देखा जो निन्दा के नामों से भरा हुआ था, जिसके सात सिर और दस सींग थे। [4]वह स्त्री बैंजनी और किरमिजी रंग के वस्त्र पहिने तथा सोने, बहुमूल्य रत्नों और मोतियों से सुसज्जित थी, और वह अपने हाथ में एक सोने का कटोरा लिए थी जो उसके व्यभिचार की अशुद्ध और घृणित वस्तुओं से भरा था। [5]उसके माथे पर एक नाम अर्थात् एक भेद

*यूनानी तलंतिआया, अर्थात् तलंत जैसा, एक तलंत लगभग 30 किलोग्राम

लिखा था, "महान् बाबुल: वेश्याओं और पृथ्वी की घृणित वस्तुओं की जननी।" [6]मैंने उस स्त्री को पवित्र लोगों के लहू और यीशु के साक्षियों के लहू से मतवाली देखा। उसे देख कर मैं अत्यन्त चकित हुआ। [7]तब उस स्वर्गदूत ने मुझ से कहा, "तू क्यों चकित होता है? मैं तुझे उस स्त्री और उस पशु का, जिस पर वह सवार है, जिसके सात सिर और दस सींग हैं, रहस्य बताऊंगा। [8]जिस पशु को तू ने देखा, वह था तो, परन्तु अब नहीं है। वह अथाह कुंड से अपने विनाश के लिए निकलने वाला है। पर पृथ्वी के निवासी जिनके नाम जगत की उत्पत्ति से जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे गए, उस पशु को जो था और अब नहीं है पर आनेवाला है, देख कर अचम्भा करेंगे। [9]बुद्धि की बात तो यह है कि वे सातों सिर सात पर्वत हैं जिन पर वह स्त्री बैठी है। [10]वे सात राजा भी हैं, जिनमें से पांच का पतन हो चुका है, एक अभी है, और दूसरा अब तक नहीं आया है। जब वह आएगा तो उसका कुछ समय तक रहना आवश्यक है। [11]जो पशु पहिले था, और अब नहीं है, वह स्वयं आठवां है। वह उन सातों में से एक है जिसका विनाश निश्चित है। [12]जो दस सींग तू ने देखे हैं वे दस राजा हैं जिन्हें अब तक राजसत्ता नहीं मिली है, पर वे उस पशु के साथ घड़ी भर के लिए राजकीय अधिकार पाएंगे। [13]इन सब का एक ही अभिप्राय है, कि वे अपनी शक्ति एवं अधिकार पशु को सौंप दें। [14]वे मेम्ने के साथ युद्ध करेंगे और मेम्ना उन पर विजयी होगा, क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है: और जो उसके साथ हैं वे बुलाए हुए, चुने हुए और विश्वासी लोग हैं। [15]फिर उसने मुझ से कहा, "जो जल तू ने देखे, और जिन पर वह वेश्या बैठी है, वे तो लोग, भीड़, जातियां, और भाषाएं हैं। [16]और जो दस सींग तथा पशु तू ने देखे, वे उस वेश्या से बैर करेंगे, उसे उजाड़ और नग्न करेंगे, और उसका मांस खा जाएंगे और उसे अग्नि में भस्म कर देंगे। [17]क्योंकि परमेश्वर ने अपना अभिप्राय पूर्ण करवाने के लिए उनके मनों को एकमत किया कि जब तक परमेश्वर के वचन पूर्ण न हो जाएं, तब तक वे पशु को अपने शासन का अधिकार सौंप दें। [18]यह स्त्री जिसे तू ने देखा, वह महानगरी है जो पृथ्वी के राजाओं पर राज्य करती है।

बाबुल का पतन

18 इसके पश्चात् मैंने एक और स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा जिसे बड़ा अधिकार प्राप्त था। उसके तेज से पृथ्वी प्रकाशित हो उठी। [2]उसने उच्च स्वर से पुकार कर कहा, "गिर पड़ी, महानगरी बाबुल गिर पड़ी! वह दुष्टात्माओं का निवास और सब प्रकार की अशुद्ध आत्माओं का अड्डा और प्रत्येक अशुद्ध तथा घृणित पक्षी का अड्डा बन गई है। [3]क्योंकि सब जातियों ने उसके व्यभिचार की *वासना की मदिरा पी है, और पृथ्वी के राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया है तथा पृथ्वी के व्यापारी उसके भोग-विलास के धन से धनवान हो गए हैं।"

[4]फिर मैंने स्वर्ग से एक और शब्द को यह कहते सुना, "हे मेरे लोगो, उसमें से निकल आओ, जिससे कि तुम उसके पापों के सहभागी न बनो और तुम पर उसकी

3 *अधिकतर हस्तलेखों में, कोप

विपत्तियां न आ पड़ें, [5]क्योंकि उसके पापों का ढेर स्वर्ग तक पहुंच गया है, और परमेश्वर ने उसके अधर्म के कामों को स्मरण किया है। [6]जैसा उसने तुम्हारे साथ किया है, वैसा तुम भी उसके साथ करो। उसके कामों के अनुसार उसे दुगुना बदला दो। जिस कटोरे में उसने मदिरा मिश्रित की है, उसी में उसके लिए दुगुनी मिश्रित करो। [7]उसने जिस सीमा तक अपनी बड़ाई की और भोग-विलास किया, उसी सीमा तक उसे यातनाएं और पीड़ाएं दो; क्योंकि वह अपने मन में कहती है, 'मैं रानी होकर बैठी हूं। विधवा नहीं हूं। मैं कभी शोक में नहीं पड़ूंगी।' [8]इस कारण एक ही दिन में उस पर विपत्तियां आएंगी, अर्थात् *महामारी, शोक और अकाल, और वह अग्नि से भस्म कर दी जाएगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर जो उसका न्याय करता है, सर्वशक्तिमान है।

[9]पृथ्वी के राजा जिन्होंने उसके साथ व्यभिचार किया और उसके साथ भोग-विलास का जीवन बिताया, जब उसके जलने का धुआं देखेंगे, तब उसके लिए रोएंगे और विलाप करेंगे। [10]उसकी पीड़ा से भयभीत होकर वे दूर ही खड़े होकर कहेंगे, 'हाय! हाय! हे महान् और दृढ़ नगरी बाबुल! तुझे घण्टे भर में ही दंड मिल गया है।' [11]पृथ्वी के व्यापारी उसके लिए रोएंगे और शोक करेंगे, क्योंकि अब कोई उनका माल मोल नहीं लेता: [12]अर्थात् सोना, चांदी, रत्न, मोती, मलमल, और बैंजनी, रेशमी, और किरमिजी कपड़े, और अनेक प्रकार के सुगंधित काठ, और हाथी-दांत, बहुमूल्य लकड़ी, पीतल, लोहे, और संगमरमर से बनी प्रत्येक वस्तु, [13]तथा दालचीनी, मसाले, धूप, इत्र, लोबान, और मदिरा, जैतून का तेल, मैदा और गेहूं, गाय-बैल, भेड़-बकरियां, घोड़े, रथ, दास, और मनुष्य भी। [14]जिस फल को प्राप्त करने की तुझे तीव्र आकांक्षा थी, वह तुझ से दूर हो गई है, और तेरी सब विलासमय तथा वैभवशाली वस्तुएं मिट चुकी हैं और मनुष्य उन्हें फिर कभी न पा सकेंगे। [15]इन वस्तुओं के व्यापारी जो उसके कारण धनी हो गए थे, उसकी पीड़ा के कारण डर के मारे दूर खड़े होकर रोएंगे और विलाप करेंगे, [16]और कहेंगे, 'हाय! हाय! महान् नगरी, जो मलमल, बैंजनी और किरमिजी वस्त्र पहिनती थी और स्वर्णरत्नों और मोतियों से सुसज्जित थी! [17]घण्टे भर में ही उसका ऐसा बड़ा धन नष्ट हो गया।' और जहाज़ का प्रत्येक कप्तान और प्रत्येक यात्री तथा मल्लाह और वे सब लोग जो समुद्र से जीवन निर्वाह करते हैं, दूर खड़े रहे, [18]और उसके जलने के धुएं को देख कर चिल्ला उठे, 'कौन सी नगरी इस महानगरी के सदृश है'? [19]उन्होंने अपने अपने सिर पर धूल डाली और चिल्लाते, रोते और विलाप करते हुए कहा, 'हाय! हाय! महान् नगरी, जिसकी सम्पत्ति से सब जहाज़वाले धनवान हो गए थे! अब घण्टे भर में ही वह उजड़ गई! [20]हे स्वर्ग और हे पवित्र लोगो, प्रेरितो और नबियो, उस पर आनन्द करो, क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारे पक्ष में और उसके विरोध में निर्णय दिया है'।"

[21]तब एक बलवान स्वर्गदूत ने चक्की के पाट के समान एक विशाल पत्थर को उठाकर यह कहते हुए समुद्र में फेंक दिया: "इसी प्रकार महानगरी बाबुल भी बलपूर्वक फेंक दी जाएगी, और

* हस्तलेखों में, मृत्यु

उसका पता भी न चलेगा। 22और तुझ में वीणा-वादकों, संगीतज्ञों, बांसुरी बजानेवालों और तुरही फूंकने वालों के स्वर फिर कभी सुनाई न देंगे, न किसी कला का शिल्पी तुझ में फिर कभी पाया जाएगा, न तुझ में किसी चक्की की ध्वनि कभी सुनाई देगी; 23न दीपक का प्रकाश फिर कभी तुझ में चमकेगा और न दूल्हा-दुल्हिन के स्वर तुझ में सुनाई देंगे; तेरे व्यापारी संसार के महान् व्यक्ति थे और तेरी जादूगरी से सब जातियां भरमाई गई थीं। 24नबियों, संतों और पृथ्वी पर घात किए गए लोगों का लहू उसमें पाया गया।"

जय जयकार

19 इन बातों के पश्चात् मैंने स्वर्ग में मानो एक बड़े जन समूह को उच्च स्वर से यह कहते सुना: "हल्लिलूय्याह! उद्धार, महिमा और सामर्थ हमारे परमेश्वर ही के हैं, 2क्योंकि **उसके निर्णय सच्चे और धर्ममय हैं,** क्योंकि उसने उस बड़ी वेश्या का जो अपने व्यभिचार से संसार को भ्रष्ट करती थी, न्याय किया है **और अपने दासों के लहू का बदला उससे लिया है।**" 3उन्होंने फिर दूसरी बार कहा, "**हल्लिलूय्याह! उस का धुआं अनन्तकाल तक ऊपर उठता रहेगा।**" 4तब चौबीसों प्राचीनों और चारों प्राणियों ने परमेश्वर को जो सिंहासन पर बैठा था, गिर कर दंडवत् किया और कहा, "**आमीन। हल्लिलूय्याह!**" 5और सिंहासन से यह कहते हुए एक आवाज़ सुनाई दी, "**हे सब उसके दासो, चाहे छोटे हो या बड़े, जो उसका भय मानते हो, हमारे परमेश्वर की स्तुति करो।**" 6फिर मैंने मानो एक विशाल जनसमूह की आवाज़ तथा समुद्र की लहरों और बादल के घोर गर्जन को यह कहते सुना, "हल्लिलूय्याह! **क्योंकि प्रभु हमारा सर्वशक्तिमान परमेश्वर राज्य करता है।** 7आओ, हम आनन्दित और हर्षित हों और उसकी स्तुति करें, क्योंकि मेम्ने का विवाह आ पहुंचा है और उस की दुल्हिन ने अपने आप को तैयार कर लिया है। 8उसे चमकदार, स्वच्छ और महीन मलमल पहिनने को दिया गया है"—यह मलमल तो संतों के धर्ममय कार्य हैं—9फिर उसने मुझ से कहा, "लिख, 'धन्य हैं वे जो मेम्ने के विवाह के भोज में आमंत्रित हैं'।" उसने मुझ से कहा, "ये परमेश्वर के सत्य वचन हैं।" 10तब मैं उसकी उपासना करने के लिए उसके पैरों पर गिर पड़ा। परन्तु उसने मुझ से कहा, "ऐसा न कर: मैं तो तेरा और तेरे उन भाइयों का संगी दास हूं जो यीशु की साक्षी में स्थिर हैं। परमेश्वर की उपासना कर, क्योंकि यीशु की गवाही भविष्यद्वाणी की आत्मा है।"

सफेद घोड़े का सवार

11फिर मैंने आकाश को खुला देखा, और देखो, एक श्वेत घोड़ा है, और उसका सवार विश्वासयोग्य और सत्य कहलाता है। वह धार्मिकता से न्याय और युद्ध करता है। 12उसके नेत्र आग की ज्वाला हैं। उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं। और उसका एक नाम उस पर लिखा हुआ है जिसे उसके अतिरिक्त और कोई नहीं जानता। 13वह लहू में डुबोया हुआ वस्त्र पहिने है, और उसका नाम 'परमेश्वर का वचन' है। 14स्वर्ग की सेनाएं श्वेत, स्वच्छ और महीन मलमल पहिने, श्वेत घोड़ों पर उसके पीछे पीछे

चलती हैं। [15]उसके मुख से एक चोखी तलवार निकलती है कि वह उस से जाति-जाति का संहार करे। वह लौह-दंड से शासन करेगा, और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की मदिरा का रसकुंड रौंदेगा। [16]उसके वस्त्र और जांघ पर यह नाम लिखा है: **"राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु।"**

[17]फिर मैंने एक स्वर्गदूत को सूर्य में खड़े देखा। उसने आकाश के मध्य उड़ने वाले सब पक्षियों से ऊंचे शब्द से चिल्लाकर कहा, "आओ, परमेश्वर के बड़े भोज के लिए एकत्रित हो जाओ, [18]कि तुम राजाओं, सेनापतियों और शक्तिशाली पुरुषों का मांस, घोड़ों और उनके सवारों का मांस, तथा स्वतंत्र और दासों, छोटों व बड़ों, सब मनुष्यों का मांस खा सको।"

[19]फिर मैंने पशु और पृथ्वी के राजाओं और उनकी सेनाओं को एकत्रित होते देखा कि उस घोड़े के सवार और उसकी सेना से युद्ध करें। [20]वह पशु पकड़ा गया, और उसके साथ वह झूठा नबी भी जो उसकी *उपस्थिति में चमत्कार दिखा कर उनको छलता था जिन पर पशु की छाप थी तथा जो उसकी प्रतिमा की पूजा करते थे। ये दोनों उस गंधक से धधकती आग की झील में जीवित डाल दिए गए। [21]बाकी सब उस घुड़सवार के मुख से निकलती तलवार से मारे गए और सब पक्षी उनका मांस खाकर तृप्त हुए।

हज़ार वर्ष का राज्य

20 तब मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जिसके हाथ में अथाह-कुंड की कुंजी और एक बड़ी जंजीर थी। [2]उसने उस अजगर, उस पुराने सांप को, जो इबलीस और शैतान है, पकड़ा और हज़ार वर्ष के लिए बांध दिया, [3]और उसे अथाह-कुंड में डालकर बन्द कर दिया तथा उस पर मुहर लगा दी कि जब तक हज़ार वर्ष पूरे न हो जाएं, वह जातियों को धोखा न दे। इन बातों के पश्चात् उसे थोड़े समय के लिए छोड़ा जाना आवश्यक है।

[4]तब मैंने सिंहासन देखे, और लोग उन पर बैठ गए और उन्हें न्याय करने का अधिकार दिया गया। मैंने उन लोगों की आत्माओं को देखा, जिनके सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए थे, और जिन्होंने न पशु न उसकी मूर्ति की पूजा की थी, न अपने मस्तकों और हाथों पर उसकी छाप लगवाई थी; वे जीवित होकर मसीह के साथ हज़ार वर्ष तक राज्य करते रहे। [5]वे मृतक जो बाकी रह गए थे हज़ार वर्ष पूर्ण होने तक जीवित न हुए। यह प्रथम पुनरुत्थान है। [6]धन्य और पवित्र वे हैं जो प्रथम पुनरुत्थान के भागी हैं: इन पर दूसरी मृत्यु का कोई अधिकार नहीं, परन्तु वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे और उसके साथ हज़ार वर्ष तक राज्य करेंगे।

शैतान का विनाश

[7]हज़ार वर्ष पूर्ण होने पर शैतान कैद से छोड़ दिया जाएगा। [8]वह पृथ्वी के चारों कोनों की जातियों को अर्थात् गोग और मागोग को भरमाने और उनको एकत्रित करके युद्ध करने निकलेगा। उनकी गिनती समुद्र की बालू के सदृश होगी। [9]उन्होंने *सम्पूर्ण पृथ्वी पर निकल कर

20 *या, उसके अधिकार द्वारा

9 *अक्षरश:, पृथ्वी की चौड़ाई

पवित्र लोगों की छावनी और प्रिय नगरी को घेर लिया। तब स्वर्ग से आग ने गिरकर उन्हें भस्म कर दिया। [10]उनको भरमाने वाला शैतान उस अग्नि और गंधक की झील में डाल दिया गया जहां वह पशु और झूठा नबी भी डाले गए थे। वे अनन्तकाल तक दिन-रात पीड़ा में तड़पते रहेंगे।

श्वेत महासिंहासन

[11]फिर मैंने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उसे देखा जो उस पर बैठा था। उसकी उपस्थिति से आकाश और पृथ्वी भाग गए और उन्हें कोई स्थान न मिला। [12]तब मैंने छोटे बड़े सब मृतकों को सिंहासन के समक्ष खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गईं, तथा एक और पुस्तक खोली गई जो जीवन की पुस्तक है, और उन पुस्तकों में लिखी हुई बातों के आधार पर सब मृतकों का न्याय उनके कामों के अनुसार किया गया। [13]समुद्र ने उन मृतकों को जो उसमें थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने अपने मृतक दे दिए। उनमें से प्रत्येक का न्याय उसके कामों के अनुसार किया गया। [14]मृत्यु और अधोलोक आग की झील में डाले गए। यह आग की झील दूसरी मृत्यु है। [15]जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में फेंक दिया गया।

नया यरूशलेम

21 तब मैंने नया आकाश और नई पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी मिट गई थी, और कोई समुद्र भी न रहा। [2]फिर मैंने पवित्र नगरी, नए यरूशलेम को परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से उतरते देखा; वह ऐसी सजाई गई थी जैसी दुल्हिन अपने पति के लिए सिंगार किए हो। [3]तब मैंने सिंहासन से एक ऊंची आवाज़ को यह कहते सुना, "देखो, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है, वह उनके मध्य *निवास करेगा। वे उसके लोग होंगे तथा परमेश्वर स्वयं उनके मध्य †रहेगा, [4]और वह उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; फिर न कोई मृत्यु रहेगी न कोई शोक, न विलाप और न पीड़ा रहेगी। पहिली बातें बीत गई हैं।" [5]तब जो सिंहासन पर बैठा था, उसने कहा, "देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं!" फिर उसने कहा, "लिख, क्योंकि ये वचन विश्वसनीय और सत्य हैं।" [6]उसने मुझ से फिर कहा, "हो चुका। मैं अलफा और ओमेगा, आदि और अन्त हूं। जो प्यासा हो उसे मैं जीवन के जल के सोते से मुफ़्त पिलाऊंगा। [7]जो जय प्राप्त करे वह इन बातों का वारिस होगा, और मैं उसका परमेश्वर होऊंगा और वह मेरा पुत्र होगा। [8]परन्तु डरपोकों, अविश्वासियों, घृणितों, हत्यारों, व्यभिचारियों, जादूगरों, मूर्तिपूजकों और सब झूठों का भाग उस झील में होगा जो आग और गंधक से जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है।"

[9]फिर जिन सात दूतों के पास सात अंतिम विपत्तियों से भरे सात कटोरे थे, उनमें से एक ने मेरे पास आकर कहा, "यहां आ, मैं तुझे दुल्हिन अर्थात् मेम्ने की पत्नी दिखाऊंगा।" [10]तब वह मुझे आत्मा में एक विशाल और ऊंचे पर्वत पर ले गया और उसने पवित्र नगरी

3 *मूल. डेरा डालेगा † कुछ प्राचीन प्रतिलिपियों में यह भी जोड़ा गया है, और उनका परमेश्वर होगा

यरूशलेम को स्वर्ग में से परमेश्वर के पास से नीचे उतरते हुए दिखाया। [11]परमेश्वर की महिमा उसमें थी। उसकी चमक अत्यन्त बहुमूल्य पत्थर अर्थात् उस यशब के समान थी जो स्फटिक सदृश उज्ज्वल था। [12]उसकी शहरपनाह विशाल तथा ऊंची थी, जिसके बारह फाटक थे जिन पर बारह स्वर्गदूत थे। उन फाटकों पर इस्राएलियों के बारह गोत्रों के नाम लिखे थे। [13]पूर्व की ओर तीन फाटक, उत्तर की ओर तीन फाटक, दक्षिण की ओर तीन फाटक, और पश्चिम की ओर तीन फाटक थे। [14]नगर की शहरपनाह की बारह आधारशिलाएं थीं, जिन पर मेम्ने के बारह प्रेरितों के बारह नाम लिखे थे।

[15]जो मुझ से बातें कर रहा था उसके पास नगर और उसके फ़ाटकों और शहरपनाह को नापने के लिए सोने का एक मापदण्ड था। [16]नगर वर्गाकार बसा था। उसकी लम्बाई, चौड़ाई के बराबर थी। उसने उस मापदण्ड से नगर को नापा तो वह *दो हज़ार चार सौ किलोमीटर निकला। उसकी लम्बाई, चौड़ाई और ऊंचाई एक समान थी। [17]उसकी शहरपनाह को स्वर्गदूत ने मनुष्यों की उस नाप के अनुसार नापा जो स्वर्गदूतों की भी है तो वह एक सौ चवालीस हाथ निकली। [18]शहरपनाह यशब की बनी थी, और नगर स्वच्छ कांच के सदृश शुद्ध सोने का था। [19]उस नगर की नींव के पत्थर सब प्रकार के बहुमूल्य पत्थरों से सुसज्जित थे। नींव का पहिला पत्थर यशब, दूसरा नीलम, तीसरा स्फटिक, चौथा मरकत, [20]पांचवां गोमेद, छठवां माणिक्य, सातवां पीत-मणि, आठवां पेरोज, नवां पुखराज, दसवां लहसनिया, ग्यारहवां धूम्रकांत, और बारहवां चंद्रकांत का था। [21]बारह फाटक बारह मोतियों के थे; प्रत्येक फाटक एक एक मोती का था। नगर की सड़क पारदर्शक कांच के सदृश चोखे सोने की बनी थी। [22]मैंने नगर में कोई मन्दिर न देखा, क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मेम्ना ही मंदिर है। [23]उस नगर को सूर्य और चांद के प्रकाश की आवश्यकता नहीं, क्योंकि परमेश्वर की महिमा ने उसे आलोकित किया है और मेम्ना उसका दीपक है। [24]सब जातियां उसके प्रकाश में चलेंगी, और पृथ्वी के राजा अपने प्रताप को उसमें लाएंगे। [25]उसके फाटक दिन के समय कभी बन्द न होंगे, क्योंकि वहां रात्रि न होगी। [26]वे जातियों के वैभव और सम्मान को उसमें लाएंगे; [27]परन्तु कोई भी अपवित्र वस्तु या कोई घृणित कार्य अथवा झूठ पर आचरण करने वाला उसमें प्रवेश न करेगा, परन्तु केवल वे जिनके नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।

जीवन जल की नदी

22 फिर उसने मुझे जीवन के जल की नदी दिखाई, जो स्फटिक के समान *स्वच्छ थी और जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर, [2]नगर के मुख्य मार्ग के बीच बहती है। नदी के दोनों किनारों पर जीवन का वृक्ष था, जिसमें बारह प्रकार के फल लगते थे। वह प्रति माह फलता था, और इस वृक्ष की पत्तियां जाति-जाति की चंगाई के लिए थीं। [3]फिर वहां

*यूनानी में, 12 हज़ार स्तादिया

*अक्षरशः, चमकदार

कोई शाप न रहेगा, पर इस नगर में परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन होगा और उसके दास उसकी सेवा करेंगे। 4वे उसके मुख को देखेंगे और उसका नाम उनके मस्तकों पर होगा। 5फिर कोई रात न होगी। उन्हें न दीपक,न सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें प्रकाश देगा, और वे युगानुयुग राज्य करेंगे।

6तब उसने मुझ से कहा, "ये बातें विश्वसनीय और सत्य हैं। प्रभु ने, जो नबियों के आत्माओं का परमेश्वर है, अपने स्वर्गदूत को भेजा कि अपने दासों को वे बातें दिखा दे जिनका शीघ्र पूरा होना अवश्य है।"

यीशु का पुनरागमन

7"देख, मैं शीघ्र आने वाला हूं। धन्य है वह जो इस पुस्तक की नबूवत के वचन को मानता है।"

8मैं वही यूहन्ना हूं जिसने ये बातें सुनीं और देखीं। जब मैंने सुना और देखा, तब मैं उस दूत की उपासना करने के लिए उसके चरणों पर गिर पड़ा जिसने ये बातें मुझे दिखाई थीं। 9पर उसने मुझ से कहा, "ऐसा मत कर। मैं तेरा, तेरे भाई नबियों का, और जो इस पुस्तक की बातों पर मन लगाते हैं उनका संगी दास हूं। परमेश्वर ही की उपासना कर।"

10उसने मुझ से कहा, "इस पुस्तक की नबूवत की बातों पर मुहर न लगा, क्योंकि समय निकट है। 11जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे। जो अशुद्ध है, वह अशुद्ध ही बना रहे। जो धर्मी है, वह धर्म के कार्य ही करता रहे। जो पवित्र है, वह पवित्र ही बना रहे। 12देख, मैं शीघ्र आने वाला हूं। प्रत्येक मनुष्य को उसके कामों के अनुसार देने को प्रतिफल मेरे पास है। 13मैं अलफा और ओमेगा, प्रथम और अंतिम, आदि और अंत हूं।"

14धन्य हैं वे जो अपने वस्त्रों को धो लेते हैं जिससे कि वे जीवन के वृक्ष के अधिकारी हों, और फाटकों से नगर में प्रवेश कर सकें। 15पर कुत्ते, जादू-टोना करने वाले, व्यभिचारी, हत्यारे, मूर्ति-पूजक, और सब जो झूठ को चाहते व उस पर आचरण करते हैं, बाहर रहेंगे।

16"मुझ यीशु ने अपने स्वर्गदूत को भेजा है कि वह तुम्हें कलीसियाओं के लिए इन बातों की साक्षी दे। मैं दाऊद का मूल वंश और भोर का चमकता हुआ तारा हूं।"

17आत्मा और दुल्हिन दोनों कहती हैं, "आ!" और सुनने वाला भी कहे, "आ!" जो प्यासा हो, वह आए। जो चाहता है, वह जीवन का जल बिना मूल्य ले।"

18मैं प्रत्येक को जो इस पुस्तक की नबूवत के वचनों को सुनता है गवाही देता हूं: यदि कोई इनमें कुछ बढ़ाएगा तो परमेश्वर इस पुस्तक में लिखी विपत्तियों को उस पर बढ़ाएगा। 19यदि कोई इस नबूवत की पुस्तक के वचनों को घटाएगा तो परमेश्वर इस पुस्तक में लिखित जीवन के वृक्ष और पवित्र नगरी से उसका भाग छीन लेगा।

20जो इन बातों की साक्षी देता है, वह यह कहता है: "हां, मैं शीघ्र आने वाला हूं।" आमीन। हे प्रभु यीशु, आ!

21प्रभु यीशु का अनुग्रह *सब के साथ रहे। आमीन।

---

21 *कुछ प्राचीन हस्तलेखों में 'सब' के स्थान पर 'पवित्र लोगों' पाया जाता है